ईमानवाले

(आदिश्री गुरुग्रंथ साहिबजी के आलोक में)

डॉ० के० पी० अग्रवाल

साहित्य प्रकाशन दिल्ली

IMANWALE

by

Dr. K.P. Aggarwal

ISBN : 81-7857-102-1

Price : Inland : Rs. 450/-
Foreign : $ 30

Edition : 2002

Published by
Sahitya Prakashan, Delhi-110006

Printed at
S.N. Printers, Naveen Shahdara, Delhi-32

e-mail : yogendrapalsahitya@yahoo.com
website : www.bookglacier.com

मूल्य : 450 रुपये मात्र
प्रथम संस्करण : 2002

ईमानवाले — डॉ के पी

लेखकीय

पिछले पचपन वर्षों से मुझे एक समर्पित विद्यार्थी की तरह विश्व साहित्य, इतिहास एवं विश्व के विभिन्न पंथों के सिद्धांतों के अध्ययन की गम्भीर रुचि रही है। गत दस वर्षों में मैंने आदि श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ का विशेष अध्ययन किया और इनमें प्रतिपादित सिद्धांतों को वेदांत की कसौटी पर कसा। विश्व इतिहास के परिप्रेक्ष्य में कुरान शरीफ में प्रतिपादित सिद्धांतों का व्यक्ति, समाज और देश के स्तरों पर परिपालन को भी परखा-निरखा। अल्लाह एवं कुरान को मानने वालों का व्यवहार भी, जिन्हें कुरान शरीफ ने "ईमानवाले" नाम से सम्बोधित किया है, "गैर ईमानवालों" के प्रति इस्लाम के उद्‌भव के बाद के इतिहास के संदर्भ में और एक प्रत्यक्षदर्शी के नाते भी समझने का प्रयास किया।

श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी के अध्ययन में मैंने पाया कि इस महान् ग्रंथ के सम्पादक और संकलनकर्त्ता गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने, जिनकी अपनी स्वयं की वाणी गुरु ग्रंथ साहिबजी का लगभग एक तिहाई हिस्सा है, अपनी, अपने पूर्व के गुरुओं तथा सन्त कबीर, नामदेव और रविदास जी आदि की इस्लाम सम्बंधी वाणियों को गुरु ग्रंथ साहिबजी में स्थान दिया। इस्लाम सम्बन्धी वाणियां चौदह सौ तीस पृष्ठों के श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी की समस्त वाणियों का लगभग दो प्रतिशत है। गुरु ग्रंथ साहिबजी का रचनाकाल सन् 1601 से सन् 1604 तक का था। अतः इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम सम्बन्धी वाणियां लिखने वाले सभी गुरु और अन्य इस्लाम के भारत पर आक्रमण, इस्लाम का या "ईमानवालों" का भारत के विशाल भूभाग पर अधिकार और इस प्रक्रिया में "ईमानवालों" और "गैरईमानवालों" के प्रति कुरान के सिद्धांतों एवं शरीयत के अनुसार कठोर और अमानुषिक व्यवहार के प्रत्यक्षदर्शी थे। सन्त नामदेव जी का काल तो श्री गुरुनानक देव जी के काल से 300 वर्ष पूर्व का अर्थात् बारहवीं से तेरहवीं शताब्दी था।

एक परम उच्चकोटि के अध्यात्म प्रधान ग्रंथ श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम सम्बन्धी वाणी को इस प्रकार स्थान देना, जो ग्रंथ में शुरु से लेकर आखिर तक बीच-बीच में आती है, अपने में एक अभूतपूर्व घटना थी। श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी में आई इन संतों की वाणियां पढने से कोई भी पाठक इनकी देश और धर्म के प्रति अपार निष्ठा और उन पर इस्लाम द्वारा हो रहे प्रहार और चोट की गहन पीड़ा का अनुमान लगा सकता है। अपनी इस वेदना को उन्होंने निर्भयतापूर्वक अपनी वाणी में व्यक्त किया और उस समय के आहत समाज के रिसते घावों पर न केवल अपनी अध्यात्मवाणी द्वारा संजीवनी बूटी के समान धैर्य का मलहम लगाया बल्कि उसे भविष्य में लक्ष्मण के समान पुनः और भी बलवान होकर इन आक्रान्ताओं को अपनी शक्ति से पराभव करने का अडिग संकल्प भी प्रदान किया।

श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी जी का अभिन्न अंग होने के कारण इन सब वाणियों ने श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी में स्थायी स्थान प्राप्त कर लिया है। ग्रंथ साहिबजी के पाठ के साथ-साथ आज इनका भी हजारों हजारों घरों और गुरुद्वारों में पाठ होता रहा है

पिछले चौदह सो वर्षो का इस्लाम का इतिहास साक्षी है कि जिस देश और समाज पर आक्रमणो द्वारा "ईमानवाले" या मुसलमान प्रभावी हुए उस देश और समाज की सस्कृति और सभ्यता भी उनके अपने पूर्वजों द्वारा प्रतिपालित धर्म और मान्यताओं के साथ नष्ट हो गई और जहां ये पूरी तरह सफल न हो सके वहां आज भी इस्लाम उनके साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से संघर्षरत है।

प्रश्न यह है कि आखिर इस्लाम के इस कठोर और असहनशील रुख और आचरण का कारण क्या है? मुझे इस प्रश्न का उत्तर यह मिला कि श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी में प्रतिपादित जो धर्म समूह हैं, जो मान्यताएं है, जो सिद्धान्त निर्धारित हैं वे कुरान शरीफ द्वारा प्रतिपादित मान्यताओं और सिद्धांतों से बिल्कुल भिन्न ही नही, बल्कि विपरीत भी हैं।

बहुत ही संक्षेप में कहूं तो श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी की यह मान्यता है कि परमात्मा सर्वव्यापी है। वह घट घटवासी एवं अन्तर्यामी रूप में इस समस्त जड़चेतनमयी सृष्टि में और प्रत्येक प्राणी के हृदय में स्थित है। कुरान शरीफ में अल्लाह का ऐसा कोई लक्षण वर्णित नहीं है। श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी के अनुसार जीव चौरासी लाख जड़-चेतनमयी योनियों में अपने कर्मानुसार जन्म-मरण के चक्र में भरमता रहता है। कुरान शरीफ के अनुसार मनुष्य जाति को छोड़कर 'रूह' या जीव की सत्ता अन्य किसी प्राणी में नहीं है और न ही वहां कर्म विधान की कोई स्वतंत्र सत्ता है। समस्त प्राणियों में परमात्मा और आत्मा का साथ-साथ वास मानने के कारण श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी की सहज कामना है "सरबत का भला" समस्त प्राणियों का कल्याण। वेदशास्त्रों में आई "सर्वे भवन्तु सुखिनः" "सर्वभूत हितेरताः" की कामना श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी की मान्यतानुसार प्रत्येक मानव का सहज धर्म होना चाहिए। कुरान शरीफ में प्राणीमात्र की बात तो दूर रही, समस्त मानव जाति (जिसमें गैरईमानवाले भी शामिल हों) के ही कल्याण की कामना सम्बन्धी कोई भी आयत नहीं है।

श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी की मान्यता है कि जीव परमात्मा का ही अभिन्न अंग है इसलिए ज्ञान, भक्ति, नामजप और गुरुकृपा द्वारा वह परमात्मा को इसी जन्म में प्राप्त कर सकता है। कुरान शरीफ में इस दर्शन की कोई भी कल्पना नहीं है। वहां "ईमानवालों" का परम लक्ष्य मरने के बाद कुरान वर्णित बहिश्त या स्वर्ग ही है, जिसे वह अल्लाह, उनके पैगम्बर हजरत मोहम्मद, अल्लाह द्वारा मोहम्मद साहब को भेजी गई आयतों तथा कयामत पर "ईमान" लाकर प्राप्त कर सकता है और जो इस प्रकार ईमान नहीं लाएंगे उनको मरने के बाद कयामत के दिन सदा रहने वाले दोजख या नरक की सजा मिलेगी।

मेरी यह मान्यता है कि किसी भी "भाव" को ठीक से समझने के लिए उसके मूलग्रंथ को ही पढ़ना चाहिए। अपनी इसी मान्यता के आधार पर प्रस्तुत पुस्तक में समस्त सामग्री कुरान शरीफ और श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी से उसके मूलरूप में प्रस्तुत की गई है। इसके पीछे मेरा उद्देश्य यह है कि "ईमानवाले" और "गैरईमानवाले" समाज की युवा पीढ़ियां इन ग्रंथों में निहित भिन्न दर्शनों को सत्य और अपने विवेक की कसौटी पर कसें और परखें और कोई ऐसा मार्ग निकालें या चयन करें कि विश्व में चौदह सौ वर्षों से चली आ रही यह निरर्थक हिंसा और असहनशीलता की भयावह परिपाटी समाप्त हो और समस्त मानवता समरसतापूर्ण वातावरण में सबके कल्याण की भावना रखते हुए अपना जीवन यापन कर सके।

डॉ के पी

पुरोवाक्

कुरान शरीफ और श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के तुलनात्मक अध्ययन पर आश्रित 'ईमानवाले' प्रस्तुत ग्रंथ के रचयिता डॉ. के. पी. अग्रवाल से मेरी भेंट अक्सर होती रहती है। इनमे बातचीत के दौरान मैंने पाया कि इन्होंने कुरान और गुरुग्रंथ साहिब जी का बड़ी रुचि से गहन अध्ययन किया है और वह अपने निष्कर्षों को बहुत ही प्रभावपूर्ण रीति से प्रस्तुत करते हैं। मैंने सोचा कि इनके अध्ययन के क्रम को बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि इनके निष्कर्षों पर अन्य लोग भी विचार करें। मुझे प्रसन्नता है कि उन्होंने मेरे इस सुझाव को कि वह अपने निष्कर्षों को पुस्तकबद्ध करके प्रकाशित करें, स्वीकार किया जो अब पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है।

कुरान मूलतः अरबी भाषा का ग्रंथ है जिसमें हजरत मुहम्मद साहब को प्रकट हुई आयते सग्रहीत हैं। कहते हैं कि संसार में एक लाख चौबीस हजार नबी गुजरे, उनमे से तीन हजार तेरह रसूल हुए, जिनको किताब मिली। चार हजार सहीफे नाजिल हुए। बाज नबियों पर कई-कई सहीफें नाजिल हुए। इन नबियों में से चार अरब में हुए—हूद, सालेह, शुऐब और मुहम्मद रसूल। हजरत मुहम्मद इस परम्परा में अंतिम नबी थे। उनका जन्म 570 ई. में और निधन आठ जून 632 ईस्वी को हुआ था। इस प्रकार वह बासठ वर्ष जिए। कहा जाता है कि कुरान में जो आयतें संग्रहीत हैं वह उन्हें अल्लाह से उसके दूत जिबरील के माध्यम से तेईस वर्षो तक तब से प्राप्त होती रहीं जब वह लगभग चालीस वर्ष के थे। कुरान में कुल छः हजार दो सौ छत्तीस आयतें हैं जिन्हें एक सौ चौदह सूरों में विभक्त करके प्रस्तुत किया गया है। मुहम्मद साहब पढ़े लिखे नहीं थे। ये आयतें उनके अनुयायी जब-तब उपलब्ध साधनों पर लिखते जाते थे। इन आयतों के संकलन का काम मुहम्मद साहब के निधन के बाद शुरू हुआ और इनका सम्पादन हजरत उस्मान के समय में पूर्ण हुआ जो तीसरे खलीफा (643 ई. से 655 ई.) थे। यह वह समय था जब इस्लाम के नाम से एक नया मजहब पूरी तरह अस्तित्व में आ चुका था और अरब की सीमाओं से निकलकर पूर्व में ईरान और पश्चिम में मिस्र तक फैल चुका था। इस प्रकार इन आयतों का संकलन और कुरान नामक ग्रंथ के रूप में सम्पादन जिस उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया गया वह विशेष ही था। इस बारे में मौलाना सदरूद्दीन इस्लामी साहब फर्माते हैं—

"निश्चय ही इन खुदाई हिदायतों और पैगामों को एक स्थायी पुस्तक के रूप में लाने के लिए एक दूसरा ही क्रम चाहिए था जिसमें आह्वान की पूर्णता के बाद की परिस्थितियों को भी दृष्टि में रखा गया हो ऐसा करना उन लोगों की दृष्टि से भी जरूरी था जो अभी तक ईमान नहीं लाये थ या जो आगे पैदा होने वाले थे और इस कुरान के सम्बोधित जन बनने

वाले थे।...इस बुनियादी परिवर्तन का खुला तकाजा था कि अब कुरान उनके लिए उतरने के क्रम के बजाए एक नये क्रम के साथ जिसमें मजहबी तथ्यों को समझाने, शरियत के हुक्मों को बयान करने और महजब की आत्मा को स्पष्ट कर देने के लिए श्रेष्ठ शैली और सुन्दर अभिव्यक्ति पाई जाती हो, ताकि वे अल्लाह के कलाम (वाणी) को अलग-अलग बेजोड़ और बिखरे हुए अंशों के रूप में देखने और उसकी शिक्षाओं को फैली हुई हिदायतों का योग पाने के बजाए, व्यवस्थित रूप में उसे देख सकें। ...अगर कुरान को उतरने के क्रम के अनुसार ही संकलित कर दिया जाता तो वह 'वरूये मुहम्मदी' और 'हिदायते इलाही' का एक 'रोजनामचा' तो जरूर बन जाता और 'उतरने का इतिहास' जानने वालों के लिए वह बड़ी दिलचस्पी की चीज भी होती, मगर फिर भी जरूरी था कि हिदायत चाहने वालों के लिए वह साक्षात हिदायत न होती और उसकी कितनी ही हकीकतें गुम होकर रह जातीं।" (कुरान मजीद का परिचय, पृष्ठ 75-77 प्रकाशक इस्लामी साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली-2)

कुरान के संकलन कार्य को और अधिक स्पष्ट करते हुए वह आगे लिखते हैं—जब नबी सल्ल॰ की वफात के बाद पहले ही साल बनू हुनैफा नामक कबीले से यमामा नामक स्थान पर मुसलमानों की लड़ाई हुई और इसमें कुरान के बहुत से हाफिज़ शहीद हो गये तो हज़रत उमर को तुरंत यह विचार हुआ कि हमें कुरान की हिफाज़त का प्रबंध पूरी सावधानी के साथ कर लेना चाहिए। इस विचार के आते ही आप हजरत अबूबक्र के पास आए, जो उस समय खलीफा और रसूल के उत्तराधिकारी थे। पूरी स्थिति बताते हुए हजरत उमर ने यह प्रस्ताव रखा कि अलग-अलग चीजों पर लिखे कुरान को एक जगह इकट्ठा करा दीजिए। पहले तो उन्होंने यह मजबूरी दिखाई कि जब नबी सल्ल॰ ने कुरान को एक जगह जमा नहीं कराया, बल्कि उम्मत को सिर्फ याद करा देने और लिखा देने को ही काफी समझा, तो मैं ऐसा क्यों करूं? ...जब हजरत उमर ने मसलहतों की ओर ध्यान दिलाया तो जल्दी ही उन्होंने भी इस जरूरत को महसूस कर लिया और इसके लिए अमली कदम उठा दिया। हजरत जैद इब्ने साबित को, जो प्यारे रसूल सल्ल॰ के लगातार साथ रहने के कारण लिखने वालों में सबसे आगे थे, बुलाया और उन्होंने कुरान को क्रमवार लिखने और तैयार कर देने का हुक्म दिया। कुछ और प्रसिद्ध सहाबियों के साथ हजरत जैद ने यह काम करना शुरू किया। हजरत उमर ने मस्जिदे नबुवी के सामने खड़े होकर आम एलान कर दिया कि जिस व्यक्ति ने जितनी भी सरतें लिख रखी हों, वह हमारे पास लायें...लेकिन सावधानी बरतने और किसी प्रकार का सन्देह न रहने देने के लिए उन्होंने दूसरी और आमगवाहियों का जुटाना भी जरूरी समझा. जब पूरा कुरान लिखा जा चुका तो खलीफा-ए-रसूल और अमीरूल मोमिनीन होने की हैसियत से हजरत अबूबक्र की हिफाजत में उसे रख दिया गया। उनके देहावसान के बाद दूसरे खलीफा हजरत उमर के पास कुरान की यह प्रति रही। जब आपकी भी मृत्यु हो गई तो चूंकि आपने अपना कोई उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया था इसलिए आपकी सुपुत्री हजरत हफ्सा ने, जो उम्मुल मोमिनीन और प्यारे रसूल की धर्मपत्नी थीं, इसे अपनी अमानत में रखा। यह मानो कुरान मजीद की 'सरकारी प्रति' थी— इस तरह एक समय तक कुरान पूरे का पूरा एक प्रति की सी हालत में जमा होकर खिलाफत केन्द्र में मौजूद रहा और आमलोगों का विश्वास

अपनी स्मृति पर और अपने निजी लिखें अंशों पर रहा, यहां तक की तीसरे खलीफा हजरत उस्मान का समय आया, जबकि इस्लाम अरब-सीमाओं से निकलकर पूरब में ईरान और पश्चिम में मिस्र तक फैल चुका था और भारी संख्या में जो लाखों से आगे बढकर करोड़ों तक पहुची जारही थी, अजमी (गैर-अरबी) उसे अपना चुके थे और अपनाये चले जारहे थे। ये लोग अरबी बिल्कुल नहीं जानते थे, इसलिए कुरान-पाठ में काफी गलतियां करने लगे, यहां तक कि सीरिया और ईराक के लोग भी इससे बचे न रहे। आर्मीनिया और आजर-बाइजान की लडाई के मौके पर इन दोनों जगहों के लोग इकट्ठा हो गये तो हजरत हुजैफा को यह देखकर बड़ी परेशानी हुई कि कुरान पढ़ने के ढंग और स्वर में ये लोग बड़ी भिन्नता प्रकट कर रहे हैं। लडाई से वापस आकर आपने हजरत उस्मान को इस स्थिति से अवगत कराया और उनका ध्यान इस ओर खींचा ...हजरत उस्मान ने समय की इस जरूरत को फौरन महसूस किया ओर यह तय कर लिया कि असल कुरान की नकल सही कुरैशी पाट के मुताबिक तमाम इस्लामी प्रांतों में भेज दी जाए ताकि उसी के अनुसार लोग कुरान पढ़ें और आपस में कोई अन्तर न पैदा होने दें। इस आदेश से आपने हजरत हफसा के पास से वह संदूक मंगवाया जिसमें हजरत अबूबक्र की लिखाई हुई प्रति रखी हुई थी और हजरत जैद इब्न साबित को तीन और महान सहादियों, हजरत अब्दुल्लाह इब्न जुबैर, सईद इब्दुल आस और अब्दुर्रहमान इब्न हारिस के साथ उचित आदेश देकर इस महान कार्य पर नियुक्त किया। जब कई नकलें हो गई तो आपने एक-एक नकल मिस्र, कूफ्रा, बसरा, मक्का, सीरिया, यमन और बहरैन के गवर्नरो के पास भिजवा दीं और लिख भेजा कि यह प्रति सही पाठ के अनुसार लिखवा दी गई है, लोगो को आदेश दिया जाए कि इसी प्रति के अनुसार कुरान का पाठ करें। एक नकल मदीना मे खुद अपने पास रख ली जिसका नाम 'इमाम' था। ...'कुरान के जमा' करने के सिलसिले मे ये दो बातें हैं जो नबी की वफात के वाद अन्जाम पाईं, मगर जाहिर है कि कुरान क्रम एव सकलन के अल्लाह की ओर से होने पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।"

इस प्रंसग में 'कुरान कैसे पढ़ें' नामक पुस्तिका के लेखक सैय्यद अबुल आबा मौद्दी की टिप्पणी भी ध्यान देने योग्य है। वह लिखते हैं—

"फिर अगर कुरान को उसके उतरने के क्रम पर संकलित किया जाता तो वह क्रम बाद के लोगों के लिए केवल उसी दशा में सार्थक हो सकता था जबकि कुरान के साथ उसके उतरने का पूरा इतिहास और उसके एक-एक अंश के साथ उसके उतरने का विवरण और कारण लिखकर लगा दिया जाता और वह अनिवार्य रूप से कुरान का एक परिशिष्ट बनकर रहना। ...सच तो यह है कि कुरान के वर्तमान क्रम पर जो लोग आपत्ति करते हैं वे लोग इसके ध्येय एवं उद्देश्य को न केवल नहीं जानते, बल्कि कुछ इस भ्रम में पड़े जाने पड़ते हैं कि यह पुस्तक इतिहास और सामाजिक ज्ञान के छात्रों मात्र के लिए ही उतरी है।" (पृष्ठ 26)

इन टिप्पणियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि ये प्रयास नहीं होते तो हम एक ऐसे विचारक के विचारों से अनभिज्ञ रह जाते जिसने "परमसत्य" को ढूंढ निकालने में कुछ योगदान किया था। जब प्रश्न यह कि इन प्रयासों से क्या हमें उसकी प्राप्ति हुई? श्री एन जी दाऊद का कुछ भिन्न मत है जिन्होंने 'कुरान' का अंग्रेजी में अनुवाद किया है वह इसकी भूमिका में लि- ते हैं

"यह दुर्भाग्य है कि कुरान की कथावस्तु को पुस्तक का रूप देते समय उसके सम्पादक या सम्पादकों ने इतिहास के किसी क्रम का अनुसरण नहीं किया। उसके अध्याय सामान्यत आकार के अनुसार रखे गये, सबसे बड़ा पहले और सबसे छोटा अन्त में रखा गया। नॉलडेकि, ग्रिम, रॉडवेल और बेल ने इन अध्यायों को इतिहास के क्रम के अनुसार व्यस्थित करने का प्रयत्न किया है लेकिन विद्वानों में यह सहमति है कि सटीक रूप में ऐतिहासिक क्रम रखना कुछेक अध्यायों में से आयतों की काट-छांट किये बिना एक असंभव कार्य है; क्योंकि मदीना में जो आयतें उतरी हैं उन्हें उन आयतों के अध्यायों में रखा गया है जो बहुत पहले मक्का मे उतरी थीं।

श्री दाऊद ने अपने अनुवाद में परम्परागत कुरान में प्राप्त अध्यायों का क्रम बदला है और शीर्षकों का अनुवाद भी किया है। कुरान के हिन्दी अनुवादों में परम्परागत क्रम और शीर्षक मिलते हैं। मेरा अपना मत है कि यदि आयतों के अनुसार 'कुरान' ग्रंथ तैयार किया जाता तब कहीं मानव समाज की यथार्थ सेवा होती। श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिंदी में इसका अनुवाद सन् 1875 में किया था जो पहली बार हरिश्चन्द्र चन्द्रिका जिल्द 2 सं. 8-12 में अपूर्ण प्रकाशित हुआ और इस समय 'भारतेन्दु समग्र' नामक ग्रंथ में उपलब्ध है। यहां इन अनुवादों के विषय में चर्चा विषयान्तर होगी। लेकिन एक बात ध्यान रखने की यह है कि कुछ विद्वानों की राय है कि कुरान की शब्दावली को समझे बिना जो टीका टिप्पणी की जाती है वह विद्वत्जनोचित नहीं कही जाएगी। संतोष की बात है कि कुछ अनुवादकों ने पादटिप्पणियां आदि देकर विषय को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इस प्रसंग में मुझे 'विश्व इतिहास की झलक' नामक पुस्तक का एक अंश याद आता है कि 'शब्द और वाक्य हमें भुलावे में डाल देते हैं और जब हम उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल दूसरी जगह देखते हैं तो हम समझने लगते हैं कि उनके अर्थ भी वही होंगे।'

जैसाकि ऊपर कहा जाचुका है कि कुरान मूलतः अरबी भाषा का ग्रंथ है जिसे वर्गविशेष के लोग अपनी मजहबी किताब मानते हैं, जिन्हें मुसलमान कहना रूढ़ि बन गई है। यह नाम किस प्रकार रूढ़ि बन गया यह अनुसंधान का विषय है। कुरैशों ने यह नाम क्योंकर अपनाया? क्या इसकी पृष्ठभूमि में कोई राजनीति नहीं थी? ध्यान देने की बात यह है कि जिबरील के माध्यम से मुहम्मद को प्राप्त अल्लाह की आयतों का संकलन और सम्पादन अबूबक्र (632-634 ई.) और उमर (634-643 ई.) के खलीफा काल में हुआ था जबकि अरबों ने पूर्वी रोमन साम्राज्य और ईरान के सासानी बादशाहों को हटा दिया और यहूदियों के पवित्र शहर यरूशलम पर कब्जा कर लिया था तथा सारे सीरिया, ईराक और ईरान अरबों के नये साम्राज्य के अंग बन चुके थे। राजनीति एक ऐसे यथार्थ सत्य की भूमि है जिसका संस्पर्श पाकर मघों का निर्मल जल भी गंदला हो जाता है। मुसलमान शब्द के इस भ्रम से अनुवादक भी नहीं बच सके हैं। श्री नन्द कुमार अवस्थी ने एक आयत का जो अनुवाद किया है वह इस प्रकार है—'ऐ ईमानवालों! अल्लाह से डरते रहो जैसाकि उससे डरने का हक है और मुसलमान रहकर ही मरना।' श्री अवस्थी ने अन्य स्थलों पर इस शब्द का अनुवाद 'फर्माबरदार' आज्ञाकारी सेवक आज्ञाकारी अनुवर्ती आदि किया है जब मूल अरबी के शब्दों के अर्थ पर मतैक्य नहीं है तब

किसी अनुवाद के आधार पर तुलनात्मक विवेचन करना खतरे से खाली नहीं कहा जाएगा। कुरान की एक आयत इस शब्द भ्रम को बड़ी सुन्दरता से स्पष्ट करती है—(ऐ पैगम्बर!) तुम इन लोगों से कहो कि तुम अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान (दयालु) कहकर पुकारो, उसके सब नाम अच्छे हैं। और (ऐ पैगम्बर!) तू अपनी नमाज बहुत जोर से न (चिल्लाकर) पढ़ ओर धीमी (बिल्कुल दबी) आवाज से बल्कि इनके बीच की राह पकड़ो।'

'कुरान' शब्द क्या है, यह एक रोचक विषय है। सूरतुल हिर्जार में इस शब्द का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में हुआ है। क्या अरबी में कुरान का अर्थ 'धर्मग्रंथ' या कुछ ओर है जो हमें सन्मार्ग या सत्य के दर्शन कराता हो? इस शब्द का प्रयोग अनेक स्थलों पर हुआ हे जिनसे हमें इसके स्वरूप और उद्देश्य की जानकारी मिलती है। वह कुछ इस प्रकार है—'यह कुरान...खुदाई पैगाम है, ...तुझको तो कुरान एक हिकमतवाले और सब कुछ जानने वाले (अल्लाह) से मिलता है। ...और कुरान को हमने थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। ...हिम्मतवाले इस (तत्त्वज्ञान) कुरान की कसम... यह कुरान तो निरी शिक्षा है...। ...अगर हमने यह कुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि अल्लाह के डर के मारे वह झुक गया और फट गया होता, ...तू तो बस कुरान से उसे समझाए जो हमारे (अजाब के) वायदे से डरता है।'

कुरान में दो तरह के आयतें बताई गई हैं—एक मुहकम, दूसरी मुतशाबिह। मुहकम वह है जिनके अर्थ बिल्कुल साफ हैं और इसलिए उनको समझना आसान बताया गया है। मुतशाबिह उन आयतों को कहा गया है जिनकी रचना ऐसी है कि जिसके कई अर्थ निकल सकते हैं। कहा गया है कि 'तो जिन लोगों के दिलों में कजी (कुटिलता) है वह कुरान की उन्ही मुतशाबिह आयतों के पीछे हो लेते हैं, ताकि उनके असली मतलब की खोज में पड़ें और इस तरफ फसाद पैदा करें...।' कुरान की दूसरी सूरा सूरतुल-बकरति में पहली आयत से उन्तीसवी आयत तक संसार में प्राप्त मनुष्य की तीन कोटियों और उन पर अल्लाह के संदेश के अलग-अलग प्रभाव का वर्णन है। यह सूरा कुरान की आत्मा कही जाती है। ऐसे लोगो मे पहली कोटि में वे लोग हैं जो अल्लाह की अनुकम्पा से हमेशा फले-फूलेंगे। दूसरे वे लोग हैं जिन्होंने कुफ्र अपना रखा है अर्थात् जिन्हें सत्य की बात सुनने, बोलने और देखने से परहेज है। तीसरे वे लोग हैं जो कपट का आचरण करते हैं। कुरान की शब्दावली में इन्हें क्रमश मुसलमान, काफिर और मुनाफिक कहा गया है। एक और कोटि मुशरिकों की है अर्थात् वह जो बहुदेववादी हैं। यहां उन आयतों को भी ध्यान में रखना चाहिए जिनमें आदमी की प्रकृति का वर्णन है। इनमें से कुछ ये हैं—...और मनुष्य तो कमजोर पैदा ही किया गया है। ...बेशक आदमी कमजोर-दिल पैदा हुआ है। जब उसको तकलीफ पहुंचती है तो घबड़ा उठता है और जब भलाई पहुंचती है तो अपने तईं (अच्छे कामों से) रोक लेता है। ...भला कहीं मनुष्य को मनमानी मुराद भी मिली है? ...तुम्हारी भांति-भांति की लालसा यानी तलब की चढ़ाचढ़ी ने तुम्हें भरमाये रखा है यहां तक कि तुम कब्र में जा पहुंचो। ...बात यह है अगर तुम यकीन करना जानते होते तो इस भरम में न पड़ते! ...बेशक मनुष्य अपने परवरदिगार का बड़ा कृतघ्नी (नाशुक्रा) है और वह इसको खूब जानता भी है। ...आदमी तो बड़ा सरकश है। इसलिए कि वह अपने तईं बेपरवा (स्वयंसिद्ध) दिखता है कुछ नहीं अल्लाह ने कुछ आदमी को जो हुक्म दिया उसने उसकी तामील नहीं की

पूजा-पद्धति और मानव संगठन के अपने प्रभावकारी रूप के लिए इस्लाम में बहुत से ऐसे कारक देखने को मिलते हैं जिनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा जा सकता। इनमें से यहां केवल कुछ अंशों का उल्लेख किया गया है। किन्तु आपस में मिलकर भी ये सभी कारक इस्लाम को 'धर्म' का स्वरूप नहीं दे पाते। यदि भारतीय शब्द-रूपकों का प्रयोग करें तो यह कहा जासकता है कि यद्यपि भौतिकतावाद पर इस्लाम का योगदान दिखाई पड़ता है, तब भी दर्शन की राह पर यह बहुत दूर तक नहीं जापाया है। अन्य कारकों के साथ-साथ इसका एक प्रमुख कारक इस्लाम के प्रादुर्भाव के समय "अरबी राष्ट्रवाद" के विकास का एक चरण भी रहा है। अपने देश, काल और परिस्थितियों से जुड़ा यह चरण इस्लाम में जड़वत् होकर रह गया है। यही कारण है कि जहां-जहां इस्लाम गया खड्ग की धार के आधार पर उसने वहां के मूल निवासियों पर अपनी आस्थाएं-मान्यताएं थोपीं।

यहां यह पुनः रेखांकित करना आवश्यक है कि अरब मरूभूमि में इस्लाम के जन्म के साथ ही उसके बिस्तारवादी कारक "अरब राष्ट्रवाद" का भी जन्म हुआ था। इस "अरब राष्ट्रवाद" में हिंसा तथा परराष्ट्रघृणा जैसे कई तत्त्व न केवल शताब्दियों से इस्लाम की परम्परा और उसके कर्मकाण्डों में उपस्थित रहे हैं; अपितु उनका बहुत कम बदला हुआ रूप आज भी देखने को मिल सकता है। सनातन भारतीय राष्ट्रीयता या राष्ट्रदर्शन के "उदार चरितानाम् तु वसुधेव कुटुम्बकम्" के शाश्वत वैश्विक उदारवाद के विपरीत "अरब राष्ट्रवाद" में परराष्ट्रघृणा (जीनोफोबिया) जैसे तत्त्व आरम्भ से ही उपस्थित रहे हैं। यहूदियों तथा अन्य लोगों के प्रति स्वय पैगम्बर हजरत मोहम्मद के विचारों तथा आचरण में भी यह कारक स्पष्टतः झलकता है। इसीलिए यद्यपि इस्लाम के अनुयायी इसे शांति के पंथ के रूप में प्रचारित करते हैं; किन्तु उनका मजहबी, ऐतिहासिक तथा भौगोलिक आचरण किसी अन्य ओर ही इशारा करता प्रतीत होता है।

यह अकारण नहीं है कि सोवियत संघ के विघटन और कम्यूनिज्म के पतन के पश्चात् आज विश्व में जितने भी संघर्ष चल रहे हैं, उनमें से यदि कुछ एक अपवादों को छोड़ दिया जाय तो अधिकांश में इस्लामी मतावलम्बी एक पक्ष अवश्य हैं। कई उदाहरण ऐसे भी हैं जहां वे एक ही संघर्ष में एकाधिक पक्षों में भी सम्मिलित हैं। फिलिपीन्स से आरम्भ करें और ग्लोब पर पश्चिम की ओर चलते जाएं तो मलेशिया एवं इण्डोनेशिया में अल्पसंख्यकों पर धार्मिक जुल्म, चीन के उत्तरी-पश्चिमी प्रान्त सिंक्यांग में उइगुर अलगाववाद, भारत में कश्मीर में आतंकवाद, रूस में चेचन्या का अलगाववाद, पाकिस्तान में घटते-मिटते हिन्दू, अफगानिस्तान के संघर्ष, यूरोप में सर्बिया और अल्बानिया में चल रहा संघर्ष, इंग्लेंड में मीरपुरी मुसलमानों द्वारा हिंसा का तांडव, पश्चिम एशिया में इजरायल के अस्तित्व पर फिलिस्तीनी आंतकवादी हमला और अब महासागरों से दोनों ओर से रक्षित अमेरिका पर बिन लादेनी आक्रमण आज के विश्व में अन्य मतावलम्बियों के साथ चल रहे इस्लाम के संघर्षों की एक लम्बी सूची का हिस्सा मात्र है। इस सूची को आगे और न बढ़ाकर (यद्यपि इसे आगे और भी बढ़ाया जा सकता है; क्योंकि अफ्रीका में इस्लामी विस्तारवाद को इसमें शामिल नहीं किया गया है) यदि इसे ही तनिक अन्य ढग स देखा जाय तो स्पष्ट होगा कि विश्व के लगभग हर अन्य

मतावलम्बियों से मुसलमान दो-दो हाथ कर रहे हैं। कहीं ये मूल निवासियों पर जुल्म ढा रहे है तो कहीं ईसाइयों पर, कहीं हिन्दुओं पर तो कहीं बौद्धों पर। कहीं इनका निशाना यहूदी बन रहे हैं तो कहीं पूर्वी ईसाई परम्परावादी। और तो और इन्होंने अधर्मी कम्युनिस्टों और डालरधर्मी अमेरिकनों को भी नहीं छोड़ा। एक विराट प्रश्न जो आज समस्त मानवता के समक्ष मुंह बाए खड़ा है वह यह है कि आखिर इस्लाम में ऐसा क्या है कि जो इसे हर अन्य मतावलम्वी के विरूद्ध न केवल हथियार उठाने के लिए प्रेरित करता है, अपितु उसको निरीह जनता और अबोध बच्चों तक पर जुल्म ढाने से नहीं रोकता।

इस्लाम के इतिहास के अलावा उसकी परम्परा और उस परम्परा में निहित चिन्तनधारा पर यदि एक सरसरी दृष्टि डाली जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लामी विस्तारवाद तथा आतंकवाद के मूल स्रोत कहां है। यह सर्वज्ञात तथ्य है कि इस्लाम की मूल परम्परा कुरान तथा हदीस से ही प्रकट होती है। कुरान उस ज्ञान का संकलन है जिसे अल्लाह ने पैगम्बर हजरत मोहम्मद को प्रकट (रिवील) किया था और हदीस में हजरत मोहम्मद साहब द्वारा कही गई "उक्तियां" तथा उनके द्वारा किए गए "कार्यों" का वर्णन है। हदीस को कुरान का क्रियात्मक स्वरूप भी कहा जाता है। यद्यपि हदीस हजरत पैगम्बर के इस संसार से चले जाने के दो सौ वर्षों के बाद संकलित की गई फिर भी मुसलमानों में इसकी महत्ता बहुत अधिक मानी जाती है। जो मुसलमान अपना जीवन इस्लामी ज्ञान, परम्परा और इतिहास के इन स्रोतों के जितना अधिक निकट रहकर जीता है वह उतना ही अच्छा मुसलमान माना जाता है। फिर भी कुरान का जैसा महत्त्व और उसके जैसा स्थान इस्लामी वाङमय के किसी अन्य ग्रंथ अथवा परम्परा को प्राप्त नहीं है। इसलिए हर मुस्लिम नेता चाहे छिपेतौर पर जहांगीर और जिन्नाह की तरह इस्लामी पद्धति से जीवन न जीता हो; किन्तु प्रकटतौर पर कुरान के निकटतम जीवन जीने ओर उसी से प्रेरणा लेने का दावा तो करता ही है। अतः कुरान के अध्ययन के बिना इस्लाम के विषय में कोई बहस करना तो दूर उसके विषय में जानकारी रखने का दावा करना भी बेमानी तथा दुराग्रह प्रतीत होता है।

इस्लामी परम्परा से सम्पृक्त और इस विवेचन से सम्बन्धित एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि हजरत पैगम्बर मोहम्मद के लगभग दो सौ वर्ष बाद इस्लाम के तत्कालीन दीनी (पांथिक) नेतृत्व ने एक परम्परा यह डाली कि लिखे हुए से इतर इस्लाम की कोई भी अन्य व्याख्या मान्य नहीं होगी। उन्होंने हजरत मोहम्मद के समय से चली आ रही "इज्तिहाद" अर्थात् वाङमय की व्याख्या के अधिकार को समाप्त कर दिया। इस विषय में श्री अरूण शौरी अपनी विख्यात पुस्तक 'दि वर्ल्ड ऑफ फतवाज' (नई दिल्ली ए.एस.ए., 1995) में पृष्ठ 31 पर लिखते हैं कि "इज्तिहाद" वह माध्यम था जिससे मुस्लिम समाज तब तक कड़े नियमो में से कुछ ढील निकालकर कुछ राहत पालेता है। पांथिक नेतृत्व उलेमा ने इज्तिहाद की समाप्ति इस आधार पर की थी कि अब विश्वसनीय व्याख्या करने योग्य मुसलमान उपलब्ध नही रहे हे। उन्होंने यह घोषणा भी करदी कि अब इसके बाद से इस्लामी वांग्मय की केवल वही व्याख्या होगी जो उस समय तक लिखित रूप में उपलब्ध थी। इसका एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण परिणाम यह है कि इस्लाम की युगानुकूल व्याख्या के द्वार बंद हो गए इसके कारण इस्लामी

दीनी (पांथिक) परम्परा का जड़वत् हो जाना अवश्यम्भावी हो गया। इसी कारण कुरान शरीफ और हदीस में लिखित किसी भी वाक्य अथवा शब्द पर कोई बहस, चर्चा या उसकी व्याख्या नही की जासकती।

इस्लाम का अपना विश्वदर्शन (वर्ल्ड विजन) भी उसी समय जड़वत् हो गया था। यद्यपि उस समय इस्लाम के मानने वालों को विश्व के भूगोल का सीमित ज्ञान था फिर भी उनके विस्तारवाद ने समस्त ज्ञात जगत को अपनी आकांक्षाओं में लपेट लेने का प्रयास किया। यही कारण है कि इस्लाम ने विश्व को दो भागों "दार-उल इस्लाम" अर्थात इस्लामी राज्य तथा "दार-उल हरब" अर्थात् गैरइस्लामी राज्य में विभाजित किया। स्पष्ट ही है कि संघर्ष और परराष्ट्रघृणा की भावनाएं इस दृश्यावलि के मूल आधार हैं। इस्लाम मानवता को भी इसी प्रकार दो भागों में बांटता है। एक "ईमानवाले" अर्थात् मुसलमान, दूसरे "गैरईमानवाले" अर्थात् काफिर, जिनका इस्लाम पर विश्वास नहीं है। इन दोनों में अन्तर का आधार मात्र इतना ही है कि एक वर्ग इस्लाम में विश्वास रखता है और दूसरा नहीं रखता। उपरिलिखित इस्लामी विश्व दृश्यावलि की ही भांति इस विचार में भी यह कारक दृढ़ता के साथ जुड़ा हुआ है कि जो वर्ग अभी इस्लाम में विश्वास नहीं करता उसे येन-केन-प्रकारेण इस्लाम में विश्वास करने के लिए बाध्य करना। यहां यह स्पष्ट रूप से समझ लिया जाना चाहिए कि इस्लाम मे "लक्ष्य एक, पंथ अनेक" या "एकं सद् विप्राः बहुधाः वदन्ति" वाली बात नहीं है। इस्लाम मे केवल यह भावना निहित है कि केवल एक ही मार्ग है और केवल वही सही मार्ग है और उसी मार्ग पर सभी को लाना है। जो इस एकमात्र सही मार्ग पर नहीं चल रहे हैं वे गलत हैं और उन्हे किसी भी तरह से इस मार्ग पर लाना है। इस्लाम के मानने वालो का यही आग्रह विश्व मे बहुलता और विविधता को कायम न रहने वाली शक्तियों में प्रमुख है। रोचक तथ्य यह है कि बहुलता और विविधता विरोधी इस्लामी शक्तियां न केवल इस्लाम के पांथिक वाङ्मय से ऊर्जा प्राप्त करती हैं, अपितु इस्लाम का वह युद्धतंत्र भी खड़ा करती है जिससे समस्त विश्व पर इस्लामी एकलतंत्र अर्थात् मुसलमानों तथा 'गैरईमानवालों' अर्थात् काफिरों (जिनमें मुशरिक अर्थात् देवप्रतिमा उपासक भी सम्मिलित हैं) के आपसी सम्बंधों के विषय में स्पष्ट मान्यताएं प्रस्तुत करता है। वह यह स्पष्ट आदेश भी देता है कि सच्चे मुसलमानों को काफिरों के साथ किस प्रकार के व्यक्तिगत तथा सामाजिक संबंध रखते हैं? इस विषय में कुरान क्या कहती है, यह समझने के लिए उसकी कुछ उन आयतों का अवलोकन-अध्ययन करना जरूरी हे जिनके बारे में यह कहा जाता है कि वे ईमानवालों (मुसलमानों) तथा गैरईमानवालों (काफिरों) के बीच संदेह या नफरत का बीजारोपण करती हैं। इस संदर्भ में कुरान शरीफ के पारा 10 और शूरा 9 की पंचम आयत का जिक्र किया जाता है। यह आयत कहती है कि 'फिर जब हराम के महीने बीत जाएं तो मुशरिकों (मूर्तिपूजकों) को जहां कहीं पाओ कत्ल करो और उन्हें पकड़ो, और उन्हें घेरो, और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे तौबा कर लें और नमाज कायम कर लें और जकात दें तो उनका मार्ग छोड़ दो। निस्सदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है ' स्पष्टत इस आयत को मानने वाला समाज एक ऐसा समाज होगा जिसमें "निन्दक नियरे राखिए आगन कुटी छवाय" महात्मा कबीर

अथवा "मेरे आलोचक मेरे परममित्र हैं" (गांधीजी) जैसे क्षमाशील और उदार चरित्र के विचारो के लिए कोई स्थान नहीं होगा। यहां मुशरिकों अर्थात् मूर्तिपूजकों के लिए वध का यह आमआदेश सदा युद्ध में रत रहने वाले समुदाय की मानसिकता को प्रतिबिम्बित करता है। यह तो ऊपर लिखा ही जा चुका है कि 'दार-उल-हरब' का अर्थ वह क्षेत्र है जहां इस्लाम की सत्ता स्थापित किया जाना है। इस्लामी विश्व दृश्यावलियां विश्व को 'दार-उल-इस्लाम' और 'दार-उल-हरब' में स्पष्ट रूप से बांटती है। इस प्रकार के वध के सामान्य आदेशों पर 'दार-उल-इस्लाम' में कोई भी रोक नहीं लगा सकता। दूसरी ओर 'दार-उल-हरब', क्योंकि वह इस्लामी विस्तारवाद का संघर्ष क्षेत्र है और संघर्ष में विपक्षी का वध जायज है इसलिए वहा यह आदेश मुसलमानों द्वारा किसी अन्य मतावलम्बी की मजहब के नाम पर हत्या करने को जायज ठहराने में सक्षम है। इस आयत से यह स्पष्ट होता है कि क्यों श्री अरूण शौरी जैसे लेखक भी इसे रक्तपिपासु कहने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

इसी प्रकार पारा 5 शूरा 4 की आयत 101 काफिरों को केवल शत्रु ही नही बताती, अपितु इस कारक पर बल देने के लिए स्पष्ट तौर पर जोर देकर कहती है कि निस्संदेह काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। मुसलमानों के ठेकेदार यह कह सकते हैं कि यहां "काफ़िर" की परिभाषा करना आवश्यक है, किन्तु इस संदर्भ में ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि भारत मे एक हजार वर्ष से अधिक समय से संघर्षरत रहने वाले इस्लाम के किसी एक भी मान्य नेता ने आज तक यह नहीं कहा कि वे हिन्दुओं को काफ़िर नहीं मानते। छद्म सेकुलरवाद से पीडित हिन्दू स्वयं को काफ़िर न मानते हों तो न मानें। इस संदर्भ में उनकी राय का कोई महत्त्व नहीं है, इस संदर्भ में महत्त्व मुस्लिम नेतृत्व की राय का है और तथ्य यह है कि आज तक किसी मान्य मुसलमान नेता ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्ष में यह नहीं कहा कि हिन्दू काफ़िर नहीं है। भारत पर कदम रखने के पल से ही मुस्लिम सुल्तान और बादशाह, अमीर और उमरा और आलिम हिन्दुओं को काफ़िर बताते आए हैं।

कुरान में गैर मुसलमानों को केवल 'नापाक" और खुला दुश्मन ही नहीं बताया गया है; बल्कि मुसलमानों को यह आदेश भी दिया गया है कि हे ईमान लाने वालों! उन काफ़िरों से लडो जो तुम्हारे आसपास हैं और चाहिए कि वे तुममें सख्ती पाएं (पारा 11, शूरा 9, आयत 123)। कुरान में बहुलता और विविधता का कितना विरोध किया गया है तथा अपने विचार से इत्तर विचार रखने वालों के लिए किस प्रकार की यातनाओं का प्रावधान किया गया है यह इस्लामी आयतों से मतभिन्नता रखने वाले लोगों के लिए नियम दण्ड से स्पष्ट हो जाता है। पारा पंचम और शूरा चतुर्थ की छप्पनवीं आयत स्पष्ट लिखती है कि जिन लोगों ने हमारी 'आयतों' का इन्कार किया, उन्हें हम जल्द अग्नि में झोंक देंगे। जब उनकी खालें पक पाएगी तो हम उन्हें दूसरी खालों से बदल देंगे ताकि वे यातना का रसास्वादन कर लें। निःसंदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वदर्शी है। और भी रोचक तथ्य यह है कि इस प्रकार का व्यवहार केवल विदेशी अथवा अपने परिवार एवं समाज से अन्यतर लोगों के लिए ही सुरक्षित नहीं रखा गया- अपितु वह अपने निकटतम सगे-संबंधियों तक के लिए भी मान्य है। पारा दशम शूरा नवम की आयत्त क्रमाक तेईस इस विषय में को स्पष्ट निर्देश देती है कि हे

ईमानलानेवालों अर्थात् मुसलमानों! अपने बापों और भाइयों को अपना मित्र न बनाओ यदि वे "ईमान" की अपेक्षा "कुफ्र" को पसंद करें। और तुममें से जो कोई उनसे मित्रता का नाता जोडेगा तो ऐसे ही लोग जालिम होंगे।

जब इन निकट के लोगों तक के लिए यह निर्देशित कर दिया गया है कि यदि वे "ईमान" न लाएं तो उनसे मित्रता का नाता जोड़ने से कोई भी "जालिम" बन जाएगा तो अन्य समुदायों की बात ही क्या है? यों भी इस्लाम की लिखे हुए के अतिरिक्त अन्य कोई व्याख्या मान्य नहीं है फिर भी यहां "ईमान" शब्द को लेकर इस्लाम के गैरइस्लामी या सत्य कहें तो इस्लाम के काफ़िर झण्डाबरदार इसे "धर्म" बताकर यह कह सकते हैं कि ये आयतें "धर्मविरोधियों" के लिए हैं। किन्तु कुरान में इसकी भी समुचित व्यवस्था दी गई है। मैत्री करने से सम्बंधित एक अन्य आयत (6-5-51) में यहूदियों और ईसाइयों से, जिनमें नवोदित इस्लाम का भौगोलिक और सांस्कृतिक दोनों रूपों से निकटतम सम्बंध पड़ता था, स्पष्टतः मैत्री की वर्जना की गई है। यह आयत कहती है कि हे ईमान लाने वालो तुम "यहूदियों" और "ईसाइयों" को मित्र न बनाओ। ये आपस में एक दूसरे के मित्र हैं और जो कोई तुममें उनको मित्र बनाएगा, वह उन्हीं में से होगा। निःसंदेह अल्लाह जुल्म करने वालों को मार्ग नहीं दिखाता। इस आयत से यह स्पष्ट है कि कुरान में "ईमान" शब्द की व्याख्या "धर्म" अथवा नैतिक मानदण्डों के समुच्चय के रूप में नहीं; अपितु मुसलमानों की एक समूह या समुदाय के रूप में पहचान बनाने के लिए की गई है। इस पहचान को बाकायदा ईसाई तथा यहूदी समुदायों से भिन्न पहचान के रूप में स्थापित किया गया है। साथ ही इस पहचान के निर्माण के समय ही इसमें उपरोक्त दोनों समुदायों के लिए विशेषतौर पर तथा अन्य किसी समुदाय के लिए सामान्य निर्देश के तौर पर विरोधी और विपरीत संस्कार आरम्भ से ही डाल दिए गए है। यही कारण है कि मुसलमानों से इतर हर समुदाय से जजिया लेने का निर्देश भी कुरान मे दिया गया है। इस विषय से संबंधित आयत (10-9-29) कहती है कि : "किताब वाले" जो न अल्लाह पर "ईमान" लाते हैं और न अंतिम दिन पर, न उसे हराम कहते हैं, जिसे अल्लाह और उसके "रसूल" ने हराम ठहराया है और न सच्चे दीन को अपना दीन बनाते हैं, उनसे लड़ो, यहां तक कि वे अप्रतिष्ठित होकर अपने हाथ से जजिया देने लगें। (मौलाना मुहम्मद फारूख खां (अनुवादक) पवित्र कुरान नई दिल्ली, मधुर सन्देश संगम, 1998, पृ. 161)। आयत (17-21-98) कहती है कि निश्चय ही तुम और वह जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो जहन्नम का ईंधन हो। तुम उसके घाट उतरोगे।

काफिरों के लिए वध के ये आदेश केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं हैं। कुरान में दिए गए आदेशों में व्यापक स्तर पर युद्ध करने के आदेश भी हैं। आयत क्रमांक (28-66-9) कहती हैं कि ऐ नबी, काफिरों और मुनाफिकों के साथ जिहाद करो और उनके साथ सख्ती से पेश आओ और उनका ठिकाना जहन्नम है और अंततः पहुंचने की बुरी जगह है। अवश्य हम कुफ्र वालों को यातना का मजा चखाएंगे और अवश्य ही उन्हें सबसे बुरा बदला देंगे उस कर्म का जो वे करते थे (24-41-27) वे इस जहन्नुम की आग में सदा रहेंगे यातना उनके लिए स्थायी बताई गई है 10-9-68 इसी प्रकार 24-41 28 आयत जहन्नुम

की आग को अल्लाह के शत्रुओं का घर बताती है। जिसका कारण यह बताया गया है कि वे हमारी आयतों से इन्कार करते हैं।

आयत (21-32-22) में कहा गया है कि और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों द्वारा चेताया जाए और फिर वह उनसे मुंह फेर ले। निश्चय ही ऐसे अपराधियो से बदला लेना है। पारा पंचम और शूरा चतुर्थ की आयत क्रमांक नवासी मुसलमानों को यह समझाती है कि वे काफ़िर चाहते हैं कि जिस तरह से वे काफ़िर हुए हैं उसी तरह तुम भी काफिर हो जाओ, फिर तुम एक जैसे हो जाओ, तो उनमें से किसी को साथी न बनाना जब तक कि वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें और यदि वे इससे फिर जाएं तो उन्हें जहां कहीं पाओ पकडो और उनका कत्ल करो और उनमें से किसी को साथी और सहायक न बनाना।

इस्लाम में युद्ध करके काफ़िरो के कत्लेआम और उन पर की जाने वाली हिंसा के लिए कई प्रकार से मुसलमानों को लुभाया गया है। इसमें जहां परलोक में जन्नत का लालच दिया गया है वहीं इहलोक में माले गनीमत (लूट) का लालच भी दिया गया है। हिंसा और युद्ध के लिए उकसाते हुए मजहबी आधार पर आह्वान किए गए हैं। जैसे दशम पारा तथा अष्टम शूरा की पैंसठवीं आयत कहती है कि हे नबी, ईमानवालों को लड़ाई पर उभारो। यदि तुम्हारे बीस जमे रहने वाले होंगे तो वे दो सौ पर प्रभावी होंगे और यदि तुममे सौ हों तो वे एक हजार काफ़िरों पर भारी रहेंगे, क्योंकि वे नासमझ लोग हैं। दशम पारा और नवम शूरा की चौदहवी आयत हिंसा के लिए उकसाते हुए कहती है कि उन काफिरों से लड़ो! अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हे यातना देगा और रूसवा करेगा और उनके मुकाबले में तुम्हारी सहायता करेगा और ईमानवालों के दिल ठंडे करेगा।

मजहव के नाम पर उकसाने के अलावा माले गनीमत (लूट का माल) का भी वायदा किया गया है। यह वायदा उनसे है जो इस्लाम के नाम पर हिंसा करने को प्रस्तुत हों। पारा छब्बीस और शूरा अड़तालीस की बीसवीं आयत स्पष्ट वायदा करती है : कि अल्लाह ने तुमसे बहुत सी गनीमतों (लूट) का वायदा किया है जो तुम्हारे हाथ आएंगी। एक अन्य आयत (10-8-69) जो लूट के माल को भोगने के समय होने वाली मानसिक और नैतिक दुविधा से लूटपाट करने वाले मुसलमानों को मुक्ति प्रदान करती है में लिखा गया है तो जो कुछ गनीमत (लूट) का माल तुमने हासिल किया है, उसे हलाल और पाक समझकर खाओ।

इलहोक में लूट के माल का वायदा करने के बाद परलोक में जन्नत का वायदा भी किया गया है और काफिरों और मुनाफिकों की जगह जहन्नुम तय की गई है (28-66-9, 24-41-27, 24-41-28 तथा 10-9-68)। पारा ग्यारह तथा शूरा नौ की एक सौ ग्यारहवीं आयत मुसलमानों के लिए जन्नत का वायदा करते हुए कहती है कि निःसंदेह अल्लाह ने ईमानवालों (मुसलमानों) से उनके प्राणों और उनके माल इसके बदले में खरीद लिया है कि उनके लिए जन्नत है। वे अल्लाह के मार्ग पर लड़ते हैं तो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं।

जहां मित्रता पर इतने प्रतिबंध हों और शत्रुता को इतना बढ़ावा और जहां शांति और भ्रातृत्व के भाव केवल अपने समुदाय तथा उन लोगों के लिए सुरक्षित हों जो अल्लाह उसके रसूल और उसकी किताब के अलावा किसी अन्य पर कोई निष्ठा न रखते हों और हिंसा को

इतना स्पष्ट और खुला बढ़ावा दिया जाता है तो स्पष्ट है कि वहां बहुलता और विविधता पास भी नहीं फटक सकती। सारा का सारा इस्लामी इतिहास और वर्तमान साक्षी है कि इस्लाम सभी पर मात्र अपना ही मार्ग थोंपने में विश्वास रखता है। उसमें "नाना पन्थाः" वाली भावना को कहीं भी स्वीकार नहीं किया जाता। वह केवल एक मार्ग की ही बात करता है जिसकी जानकारी केवल इस्लाम के झण्डाबरदारों को ही है। जहां एकलता की ऐसी नकारात्मक भावना को प्रश्रय ही नहीं बढ़ावा भी दिया जाता हो वहां परराष्ट्रघृणा (जीनोफोबिया) न जन्मे, ऐसा हो ही नहीं सकता। इस संदर्भ में ही नहीं है। इसी के साथ एक तथ्य यह भी है कि कुरान मे इस प्रकार के तथा इससे भी अधिक रक्तपिपासु संदर्भों की कमी नहीं है।

वास्तव में इस्लाम में विस्तारवादी पुट आरम्भ से ही रहा है। स्वयं पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब ने अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए कई युद्ध किए। अन्य पंथों के संस्थापकों अथवा धर्मगुरुओं द्वारा साम्राज्य स्थापित करने अथवा उनके विस्तार के लिये युद्ध करने के उदाहरण इतिहास में किसी महत्त्वपूर्ण स्तर पर तो नहीं ही मिलते। इस्लाम के मतावलम्बियों के लिए उनका यही व्यवहार आने वाले समय में विस्तारवाद तथा परराष्ट्रघृणा का आधार बना। इस विस्तारवाद का एक नकारात्मक पहलू यह भी था कि इसमें युद्ध की किसी नैतिक व्यवहार संहिता का अभाव था। वास्तव में अभाव से भी अधिक उसे नकार देने का कारक महत्त्वपूर्ण था। यह इस्लाम की रीति-नीति और क्रियान्वयन दोनों ही में समान रूप से स्पष्ट होने वाला कारक है। जहां कुरान स्वयं घोर हिंसात्मक आचरण को बढ़ावा देती है, वहीं स्वयं पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब का आचरण और उनके बाद के इस्लामी नेतृत्व द्वारा इन तीनों कारकों के अनुसार इस्लाम का विस्तार किया जाना इसी दिशा में इंगित करता है।

इस्लामी विस्तारवाद का सर्वप्रथम शिकार उस समय का प्रचलित अरबी पंथ, उस काल की अरबी परम्पराएं और तत्कालीन अरबी लोग सभी हुए। उस समय काबा के देवालय में स्थापित तीन सौ साठ देवी-देवताओं की मूर्तियां पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब ने स्वयं ही तुड़वा या जलवा डाली थीं। उसी समय की अरबी मान्यताओं और परम्पराओं का केवल नकारात्मक चित्रण ही तत्कालीन तथा परवर्ती मुसलमान विद्वानों ने किया है। इस्लाम के उद्भव से पूर्व अरब में देवियों की भी पूजा की जाती थी और अल उजा, अल लात तथा अल मनात नाम की तीन प्रमुख देवियों के विषय में जानकारी मिलती भी है। इससे स्पष्ट है कि महिलाओं का स्थान उस काल के अरबी समाज में परवर्ती मुस्लिम काल से अच्छा रहा होगा। इस्लाम ने न केवल देवियों की पूजा पर प्रतिबंध लगा दिया; अपितु मुस्लिम समाज में नारी का स्थान भी पहले से कहीं नीचे ला दिया। रूढ़िवादी इस्लामी समुदायों में नारी का स्थान समस्त विश्व के लिए आज भी चिन्ता का विषय बना हुआ है। हां, यह अवश्य है कि इस्लामी कृपा पर जीवित कम्युनिस्टों के नारी आन्दोलन इन तथ्यों की घोर अनदेखी करते हैं और इस्लामी समाजों में नारी की घोर पीड़ा से अपने राजनीतिक स्वार्थों के चलते मुख मोड़ रहते हैं।

इस्लाम के जन्म के साथ ही परराष्ट्रघृणा को जो सैलाब चला उसने कुछ ही समय में महान ईरानी सभ्यता, मध्य एशिया की जनजातियों तथा राज्यों और यूरोप में स्पेन तक के क्षेत्र को तबाह कर डाला जहां-जहां ये इस्लामी लड़ाके गए इन्होंने न केवल हत्या और

लूटमार के माध्यम से अपनी राजनीतिक सत्ता स्थापित की; अपितु वहां के मूल निवासियों का जबरन मतान्तरण भी किया। बलात् मतान्तरण के साथ-साथ स्थानीय परम्पराओं को भी समाप्त कर दिया गया। उस समय ज्ञात विश्व के सबसे बड़े पुस्तकालय विशेषतः अलक्षेन्द्रिया का महान पुस्तकालय तथा भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा विद्यापीठों के अपरिमित ज्ञान के भण्डार ग्रंथागार जला डाले गए। नगरों में हिंसा और हत्या का नंगा नाच करने के बाद उन्हें भी जला डाला गया। मुस्लिम आक्रमणकारियों का यह इतना प्रिय तरीका था कि एक सुल्तान अलाउद्दीन गौर को तो बाकायदा "जहानसोज" अर्थात् विश्व को जलाकर खाक कर देने वाला कहा जाता है और मुस्लिम तथा मुस्लिमपरस्त इतिहासकार और लेखक उसे महिमामण्डित करके उसका स्मरण करते हैं।

इस्लाम की इस बढ़ती हुई आंधी को उस समय विश्व में केवल दो स्थानों पर रोका जा सका। पश्चिम में इसकी सीमा स्पेन की महारानी ईसाबेला महान ने तय की और मुस्लिम आक्रमणकारियों को स्पेन से मार भगाया। पूर्व में भारत ने इस्लाम को आगे बढ़ने से रोका। यद्यपि स्पेन के विपरीत भारत में यह संघर्ष बहुत लम्बा चला और आज भी चल रहा है। इस युद्ध और संघर्ष के काल में भारत ने बहुत कुछ गंवाया है; किन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि भारत ने न केवल अपने धर्म, अपनी संस्कृति और अपनी मूल चिति को सुरक्षित रखा है; अपितु चीन तथा दक्षिण पूर्व एशिया को भी इस्लामी आक्रमण से भरसक बचाए रखा है। यही कारण है कि चीन में इस्लाम उत्तर की ओर से आया न कि भारत होकर। दक्षिण पूर्व एशिया मे भी इस्लाम भारत होकर नहीं; अपितु समुद्र के मार्ग से ही पहुंच सका है।

पैगम्बर मोहम्मद की मृत्यु के बीच वर्षों के भीतर ही मुसलमानों ने जहां सीरिया, फिलिस्तीन, मिश्र और ईरान पर कब्जा कर लिया था, वहीं भारत आज तक भी इस्लामी विस्तारवाद को चुनौती देता खड़ा है। भारत पर पहला इस्लामी आक्रमण उस्मान द्वारा वर्ष 636-637 ईस्वी में सागर मार्ग में किया गया था। उस समय के खलीफा उमर थे। स्थल मार्ग से भी 643-44 ईस्वी तक आक्रमण होने लगे थे। सर्वप्रथम अब्दुल्ला बिन अमर बिन रबी ने किरमान से मकरान तक के क्षेत्र पर हमला किया था। वह सिन्धु तक कभी नहीं पहुंच सका। सन् 712 में जब मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर हमला किया तब तक भारत पर आक्रमणों का सिलसिला छिहत्तर वर्ष पुराना हो चला था। बीस वर्षों में सीरिया, फिलिस्तीन, मिस्र और ईरान पर कब्जा कर लेने वाले इस्लामी लड़ाके छिहत्तर वर्षों में भारत के सीमान्त प्रान्त पर भी कब्जा नहीं कर पाए और उसके बाद सन् 1000 में महमूद गजनवी के आने तक उन्हें भारत पर कोई विशेष उल्लेखनीय सफलता नहीं मिल सकी। भारत के कुछ हिस्से में स्थायी राज्य पहली बार वे 1192 में तराइन की दूसरी लड़ाई में विजय के बाद ही स्थापित कर सके। सन् 636 से 1192 तक इस्लाम को भारत में न घुसने देने का साढ़े पांच सौ वर्षों का गौरवमयी इतिहास भले ही सरकारी पाठ्यपुस्तकों में कुछ एक पृष्ठों में निपटा दिया जाता हो और बाद मे पांच सौ वर्षों के चित्रण को बच्चों को रटवाया जाता हो, सत्य यह है कि उसी महान् संघर्ष के चलते भारत की आत्मा दूषित होने से बची रही थी।

सन् 1192 में तराइन की दूसरी लड़ाई से लेकर छः दिसम्बर 1992 को अयोध्या में बाबरी ढांचे की सफाई तक का आठ सौ वर्षों का संघर्ष पहले से चले आरहे संघर्ष का ही एक

आयाम था। यह वह काल था जब इस्लामी विस्तारवादी शक्तियां भारत की सत्ता प्राप्त करने मे तो सफल हो गईं, किन्तु भारतराष्ट्र और समाज को अपने अधीन करने मे सफल नहीं हो सकीं। इस काल का संघर्ष सबसे भीषणतम संघर्ष था। इसी काल ने दिल्लीपति पृथ्वीराज को अंधा होते देखा तो इसी काल ने हजारों पद्मिनियों को अपनी शील रक्षा के लिए अग्नि में भस्म होते भी देखा। इसी काल ने हिन्दुओं की जनसंख्या कम होते देखा तो इसी काल ने महाराणा प्रताप के सूर्य का महाप्रताप भी देखा। इसी काल ने गुरु तेगबहादुर जैसे बलिदानी को देखा तो शिवाजी और गुरु गोविन्दसिंह जैसे महान स्वतंत्रता सेनानी भी देखे। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि भारतमाता ने यदि इन जैसे वीर सुपूत न जन्मे होते तो यह सनातन राष्ट्र कब का फिलिस्तीनियों, मिस्रियों, तुर्की, ईरानियों और मध्यएशियाई कबीलों की तरह इतिहास का अंग बनकर रह गया होता।

इस्लामी विस्तारवाद द्वारा आरम्भ किए गए हमलो की यह नवीन शृंखला भी, जिसका आरम्भ 11 सितम्बर को अमेरिका पर हुए आतंकवादी हमले से हुआ है, अपने चरित्र और प्रणाली की दृष्टि से नवीन नहीं है। हिंसा, हत्या, परराष्ट्रघृणा तथा मजहबी निष्ठा उसके गुण-दोषों का मूर्त रूप हैं। जब तक सभ्य विश्व इस्लाम के इस चरित्र की ओर ध्यान नहीं देगा शांति की हर पहल धोखे से हुई हार में बदल जाने के लिए अभिशप्त रहेगी। आधुनिक आतंकवाद इस्लामी विस्तारवाद का ही नवीनतम संस्करण है। जब तक इस्लाम और इस्लामी विस्तारवाद के मूल चरित्र पर ध्यान नहीं दिया जाएगा आतंकवाद के विरूद्ध की जाने वाली हर लड़ाई कमजोर और बेमानी साबित होगी। इस सम्पूर्ण संदर्भ में इस तथ्य पर पुनः-पुनः सोचने-विचारने की जरूरत है कि क्योंकि कुरान शरीफ की प्रत्येक आयत अल्लाह का निर्देश है, इसलिए उन्हें मानना और उन पर अमल करना प्रत्येक ईमानवाले या मुसलमान के लिए अनिवार्य है। अतएव यह स्वाभाविक है कि कुरान शरीफ में गैरईमानवालों के लिए (जिन्हें कुरान में काफिर, मुन्किर, मुनाफिक और मुशरिक कहा गया है) जो भी हिंसात्मक और गैरहिंसात्मक निर्देश हैं उनका हर ईमानवाला पूरी तरह से पालन करे, फिर चाहे वे ईमानवाले किसी भी देश या समाज में क्यों न रहते हों। यही कारण है कि आज भी इस्लाम गैरईमानवालों के विरूद्ध की जाने वाली कार्रवाई में देश और समाज की सीमाएं नहीं मानता।

आतंकवादी तो प्रत्येक देश, समाज और मजहब में होते हैं। परन्तु जब ईमानवाले आतंकवादी गैरईमानवालों के प्रति आतंकवादी अभियान करते हैं तब गैरईमानवालों का यह सोचना स्वाभाविक हो जाता है कि विश्व का प्रत्येक "ईमानवाला" आतंकवादियों के साथ सहानुभूति क्यों रखता है और उनकी मदद करने के लिए तत्पर क्यों रहता है?

इस समय सारा विश्व जो "ईमानवाले" और "गैरईमानवाले" दो भागों में स्पष्टतः बंटा दिखाई दे रहा है, इसके पीछे कुरान द्वारा निर्धारित मूल इस्लामिक सिद्धांत है। यदि विश्व को इस भयावह परिणामकारी आपसी टकराहट से बचाना है तो "ईमानवालों" को ही इसका समाधान निकालना होगा।

मकर संक्रांति
युगाब्द 5103 विक्रमी 2058
14 जनवरी सन् 2002 ईस्वी

— भानुप्रताप शुक्ल

विषय सूची

आदि श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी और इस्लाम

1 0 इन दिनों कुछ व्यक्ति, जिनमें कुछ सिख विद्वान भी शामिल हैं, यह विचार व्यक्त कर रहे हैं कि सिख धर्म और इस्लाम में काफी निकटता और समानता है, और इस कारण इन दोनों के समुदायों में आगे चलकर सहज समन्वय स्थापित हो सकता है। किन्तु इस प्रकार का विचार तथ्य पर आधारित न होने के कारण नितान्त सारहीन एवं भ्रामक है। सत्य तो यह है कि सिख धर्म और इस्लाम की मान्यताएं, एक दूसरे से बिलकुल भिन्न ही नहीं हैं, बल्कि एक दूसरे के विपरीत भी हैं। इन दोनों धर्मों में निकटता और समानता बतलाने वाले व्यक्तियो ने, मेरे विचार से, न तो ग्रंथ साहिबजी ही का अध्ययन किया है और न ही कुरान शरीफ़ का। इस पुस्तक में इसी भ्रम का सप्रमाण निराकरण करने का प्रयास किया गया है।

1 1 आरम्भ में ही मैं इस बात को स्पष्ट कर दूँ कि ग्रंथ साहिबजी में कुछ मुस्लिम सतो की वाणी अवश्य है पर इसमें कुरान शरीफ़ की 6236 आयतों में से एक भी आयत नही है और न किसी आयत विशेष की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से चर्चा ही है। मुस्लिम संतों की कोई भी ऐसी वाणी ग्रंथ साहिबजी में नहीं है जो सिख गुरुओं के मत के अनुकूल न हो और जो वैदान्तिक ज्ञान, वैराग्य, प्रेम और भक्ति से सम्पन्न न हो। इन्हें मुस्लिम संत न कहकर यह कहना सत्य होगा कि ये केवल मुस्लिम घरों में जन्म लेने वाले या मुस्लिम घरों में पालित सत थे। कर्म से, वाणी से और मन से ये मुस्लिम कहलाने वाले सभी संत परम भागवत थे। इसकी विस्तार से चर्चा हम यथास्थान करेंगे।

1 2 ग्रंथ साहिबजी में 1430 पृष्ठ हैं और इसमें किसी न किसी रुप में इस्लाम की चर्चा पृष्ठ 24 से शुरु होकर पृष्ठ 1412 तक मिलती है। गुरु नानक जी के जन्म 1469 ई. से लेकर गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज के 1708 में महाप्रयाण तक का लगभग 250 वर्षों का काल भारत में मुगल शासन के आदि और अन्त का काल था। पिछले इस्लामी शासक वंशो के समान मुगल शासन का समय भी भयानक अत्याचारों से परिपूर्ण था। सभी दसों सिख गुरु इसके प्रत्यक्षदर्शी थे और भुक्तभोगी भी थे। जहाँ इस काल के अन्य महान सत जैसेकि चैतन्य महाप्रभु, बल्लभाचार्य, रामानुजाचार्य, तुलसी, सूर आदि ने इस्लाम के अत्याचारों के प्रत्यक्षदर्शी होते हुए भी अपनी रचनाओं में इनकी कोई प्रत्यक्ष चर्चा नहीं की, वहां इन गुरुओं ने अपनी वाणी में इनका खुल्लमखुल्ला प्रतिरोध किया और उसकी भरपूर कीमत भी अपने बलिदानो स चुकाई।

1 3 ग्रथ साहिबजी में इस्लाम सबधी वाणी को चार भागों में बाँटा जा सकता है 1 वह

वाणी जिसमें बाबर व अन्य इस्लामी शासकों के अत्याचार का प्रत्यक्षदर्शी वर्णन है, और इन अत्याचारों के विरुद्ध भगवान से शिकायत की गई है और उन्हें उलाहना भी दी गयी है, (2) वह वाणी जिसमें इस्लाम के प्रतीकों को जैसे नमाज, रोजा, हज, सुन्नत हलाल, खुदा, अल्लाह, काजी, मुल्ला, बांग, पीर, मुसलमान, कुरान आदि शब्दों को एक व्यापक आध्यात्मिक अर्थ देकर उनका स्पष्ट रुप से वेदांत के साथ समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है। वर्तमानकालीन इस्लाम के कट्टर स्वरुप को देखते हुए यह भी अपने में एक बहुत बड़े खतरे से भरा काम था। (3) तीसरी वह वाणी जिसमें इस्लाम के सिद्धान्तों की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आलोचना की गई है और (4) चौथी वह वाणी जिसमें इस्लाम की स्पष्ट और खुले शब्दों में निन्दा की गई और सबको हिन्दू ही बने रहने का आह्वान किया गया है। इनमें कबीर की वाणी प्रमुख है। और संत नामदेव जी को मुसलमान बनाने के असफल प्रयत्न की पूरी गाथा को एक इस्लाम विरोधी उदाहरण के रुप प्रस्तुत किया गया है।

1 4 अगर आज ऐसी वाणी कोई अपने शब्दों में लिखे और प्रकाशित करे तो निश्चय ही उस व्यक्ति के लिए मृत्युदण्ड के सैकड़ों फतवे उसी दिन विश्वभर में जारी हो जाएंगे। पर इस्लाम संबंधी इस वाणी को, जो ग्रंथ साहिबजी का अभिन्न अंग है, प्रत्येक नानकपंथी चाहे वह केशधारी हो या सहजधारी ग्रंथ साहिबजी का पाठ करते समय आज भी पाठ करता है और आगे भी करता रहेगा। विश्व की कोई भी दुर्दान्त से दुर्दान्त शक्ति ग्रंथ साहिबजी से इस्लाम संबंधी वाणियों को निकाल नहीं सकती और न ही निकालने में समर्थ है। इसके लिए सिख गुरुओं ने और खालसा ने अपने अभूतपूर्व बलिदानों द्वारा भरपूर कीमत दी है।

1 5 ग्रंथ साहिबजी के 4949 पद या शब्द छह गुरुओं द्वारा रचित है। यानी ये पद नानकदेव जी, गुरु अंगददेव जी, गुरु अमरदास जी, गुरु रामदास जी, गुरु अर्जुनदेव जी और गुरु तेगबहादुर जी की वाणी है। ग्रंथ साहिबजी में कुल 15 भक्तों की वाणी है, जिसमें भक्त कबीर जी के 540 पद, नामदेव जी के 60, रविदास जी के 41 और शेख फरीद जी के 122 पद हैं। भक्त त्रिलोचन और भक्त धन्ना जी के चार चार पद हैं। भक्त जयदेव जी और भक्त भीखन जी के दो-दो और भक्त वेणी जी के तीन पद ग्रंथ साहिबजी में हैं। शेष छह भक्त यानी स्वामी रामानन्द जी, भक्त सूरदास जी, परमानन्द जी, सधना जी, पीपा जी और भक्त सैणजी के एक-एक ही पद हैं। पंद्रह चारण और भाटों के 122 पद मिलाकर कुल 5873 पद है। गणना की भिन्न रीतियों के कारण विद्वानों द्वारा इन पदों की संख्या में थोड़ा बहुत अन्तर हो सकता है।

1 6 ग्रंथ साहिबजी में ऊँ "ओं" (ਓ) शब्द 569 बार आया है, हरिनाम शब्द लगभग 10,000 बार, राम नाम 2400 बार आया है। "राम" शब्द के अन्तर्गत "रघुनाथ", राजाराम, रघुपति, राजा रामचन्द्र, "जसरथ राइ नंद" आदि, शब्द भी आ जाते हैं। ब्रह्म, परब्रह्म और ब्रह्मज्ञान शब्द का प्रयोग लगभग 550 बार ग्रंथ साहिबजी में जीव के परम लक्ष्य के रुप में हुआ है। गुरु शब्द लगभग 8836 बार, स्मृति शास्त्र वेद और पुराण (का अधिकतर एक साथ ही या फिर वेद शब्द का अकेला ही 360 बार (ग्रंथ साहिबजी) में उल्लेख हुआ है। **परब्रह्म** के निर्गुण स्वरुप को दर्शाने वाले नाम जैसे आत्मा **भगवान निरंजन**

निराकार, जगदीश, करतार, "नाम" पुरुष आदि का ग्रंथ साहिबजी में लगभग 7000 बार प्रयोग हुआ है। ग्रंथ साहिबजी में उस परब्रह्म परमेश्वर के भगवान कृष्ण के अवतार लीला सम्बंधी नामों का लगभग 1550 बार गुनगान किया गया है। ये प्रमुख नाम हैं : मुरारी, माधव, गोपाल, जगन्नाथ, कृष्ण, ठाकुर, दामोदर, मोहन, बनवारी, केसव, मधुसूदन, विष्णु, गोविन्द, सालिगराम आदि हैं।

1 7 पौराणिक शब्द जैसे कलि, यम, धर्मराज, चित्रगुप्त, भवजल, बैकुंठ, चरणकमल, बोहिथ, पाप-पुण्य, जम की फांस, रसातल, पाताल आदि 1700 बार ग्रंथ साहिबजी में आए हे। वेदान्तिक शब्द जैसे नेति-नेति, सोहं, ब्रह्मानन्द, त्रिगुन, माया, तुरीय, जीवनमुक्त, घटाकाश, महाकाश, विश्वरुप परमानंद, अमृतपद, अहं, परमपद, पुरषोत्तम, निर्वाण आदि शब्द ग्रंथ साहिबजी में लगभग 1200 बार आये हैं। परमात्मा को पति रुप में अपना प्रियतम मान एक परम सती नारी की भांति उसके प्रेम की अनन्य उपासना भारत के निगफ्रनिया संतो की साधना का एक अभिन्न अंग रही है। जीव परमात्मा का सनातन अंश है और अन्ततः उसे अपने मूल से ही मिलना है या अपने मूल परमात्मा से अलग होने का भ्रम दूर होना है।

1 8 अपनी इस अलगाव की टीहन को या विरह को जीव ज्ञात या अज्ञात भाव से सदेव अनुभव करता रहता है और इस अध्यात्मिक टीहन या पीड़ा का अन्त परमात्मा को या परमपद को पाकर ही होता है। यह प्रिया-प्रीतम भाव की उपासना सम्पूर्ण ग्रंथ साहिबजी मे मिलती है। इससे संबंधित शब्द जैसेः पिर, प्यार, कंत, प्रीतम, पति, खसम, सोहागिन, नारी कामणी, गुणवती, सेज, शृंगार, मिलन, विरह, अंक, मिलाई, प्रेम, प्यार, साजन, रमण, सुन्दरी, भरतार आदि ग्रंथ साहिबजी में लगभग 2500 बार आए हैं।

1.9 ग्रंथ साहिबजी ने ज्ञान, भक्ति, प्रेम और भगवत कृपा की अनन्यता को समझाने के लिए शास्त्रों में वर्णित भक्त प्रह्लाद की कथा, तथा द्रोपदी की रक्षा, गज का उद्धार तथा अजामिल जैसे पापी की परमगति पाने की चर्चा बार-बार की है। और कलियुग में मुक्ति का सरलतम और अमोघ उपाय भगवान का नाम जप और सतगुरु की कृपा बतलाया है।

2.0 आरम्भ में अपने शिष्य को गुरु गद्दी देते समय सिख गुरु अपनी शब्द रचना को भी उसके हाथ में देते थे जिसे पोथी कहा जाता था। ये पोथी शिष्य को अपने गुरु से गुरु पदवी के साथ एक आध्यात्मिक उत्तराधिकार की धरोहर स्वरुप मिलती थी। पहली बार तीसरे गुरु अमरदास जी की देखरेख में प्रथम तीन गुरुओं की वाणियों को संग्रहीत किया गया। किन्तु ग्रंथ साहिबजी को पूर्ण रूप पांचवे गुरु अर्जुनदेव जी ने दिया। इस महान् कार्य को उन्होंने 1601 में आरम्भ कर अमृतसर के रामसर के किनारे 1604 में पूरा किया। पहले इसका नाम पोथी था। तत्पश्चात इसे "ग्रंथ साहिबजी" कहा गया। आज जो ग्रंथ साहिबजी का स्वरुप हे वह इसे गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने 100 साल बाद 1705 में दमदमा साहब में दिया था। यह स्वरुप देते समय उन्होंने इसमें अपने पिता तथा नवें गुरु तेगबहादुर जी की वाणी को विभिन्न रागों के अन्तर्गत संग्रहीत किया तथा साथ ही ग्रंथ के शुरु में "आदि" शब्द लगाया, जिससे इसका पूरा वर्तमान नाम "आदि श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी" सम्पन्न हुआ। और सन् 1708 में अपने परलोक गमन के पूर्व गुरु गोविन्द सिह जी ने देहधारी गुरु की परम्परा समाप्त करते

हुए "आदि श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी" को हुजूर साहब नांदेड़ में गुरुगद्दी पर प्रतिष्ठित किया।

21 ग्रंथ साहिबजी का गुरु की गद्दी पर आसीन होने का यह स्पष्ट अर्थ है कि इसका एक-एक पद, एक-एक पंक्ति, एक एक अक्षर सिक्ख गुरुओं द्वारा पूरी तरह से शोधित है और प्रमाणित है। तीन सिक्ख गुरुओं गुरु अमरदास जी, गुरु अर्जुनदेवजी और गुरु गोविन्द सिंह जी ने तो इसमें निहित वाणी का विशेष मंथन किया और गुरु अर्जुनदेव जी ने इसे जो वर्तमान स्वरुप प्रदान किया उसकी पूर्णाहुति दसवें और अन्तिम गुरु गोविन्द सिंह जी ने की। इससे यह निर्विवाद प्रमाणित हो जाता है कि गुरु ग्रंथ साहिबजी में जो इस्लाम सम्बंधित अन्य संतों, जैसे कबीर और नामदेव जी के विचार संकलित हैं वे भी उनकी अन्य वाणियों की तरह सिक्ख गुरुओं द्वारा मान्य और अनुमोदित हैं और गुरुवाणी के अभिन्न अंग हैं।

22 सिख गुरुओं ने उस समय के भारत में सत्तारुढ़ बलशाली मदान्ध इस्लाम को ग्रंथ साहिबजी में लिखित रुप से दी गई निर्भय चुनौती की बड़ी भारी कीमत चुकाई। 1604 में गुरु अर्जुनदेव जी द्वारा ग्रंथ साहिबजी के संकलन के साथ ही सिख गुरुओं और सिख समाज के अभूतपूर्व बलिदान का जो सिलसिला शुरु हुआ तो उसका अन्त भारत में मुगल सत्ता के अन्त के साथ 1801 में पंजाब में महाराज रणजीत सिंह के राज्याभिषेक के साथ हुआ। 1606 में, अर्थात ग्रंथ साहिबजी के संकलन के दो वर्ष के भीतर ही जहांगीर द्वारा गुरु अर्जुनदेव जी की निर्मम हत्या के पीछे कोई राजनीति का पहलू नहीं था जैसा कि कुछ इतिहासकार कहते है। मूल कारण तो ग्रंथ साहिबजी में लिखित रुप से इस्लाम को दी गई गुरुओं की चुनौती ही थी—और वह भी सत्तारुढ़ इस्लामी साम्राज्य को सैन्य शक्ति से विहीन संतो द्वारा।

23 तत्पश्चात गुरु हरगोविन्द जी का शस्त्र ग्रहण करना और उनके लम्बे कारावास, गुरु तेगबहादुर जी का जनमानस पर छा जाने वाला दधीचि के समान बलिदान, गुरु गोविन्द सिंह जी के दो छोटे बालकों का दीवार में चुना जाना और दोनो बड़े पुत्रों की युद्ध में प्राणाहुति, बंदा का अनुपम शौर्य और बलिदान, और उसके बाद सिक्खों के हाथ 1767 में अहमदशाह अब्दाली की पूर्ण पराजय के समय का इतिहास, गुरु गोविन्द सिंह जी द्वारा स्थापित खालसा का इस्लाम के साथ सतत संघर्ष और बलिदान का सिलसिला भारत के सम्पूर्ण इतिहास की एक पीड़ा भरी किन्तु गौरवमयी गाथा है।

24 इसके पूर्व कि हम ग्रंथ साहिबजी में आएँ और इस्लाम संबंधी शब्दों की विवेचना करें, यह उचित होगा कि हम ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ़ में प्रतिपादित सिद्धान्तों में तत्वत क्या भेद है इसका गहराई और विस्तार से अध्ययन कर लें। दोनों के मूल भेदों को समझे बिना ग्रंथ साहिबजी में आई इस्लाम संबंधी वाणी का मर्म भी ठीक से समझना कठिन होगा। आज यह कहना फैशन बन गया कि सब धर्म बराबर हैं, सभी धर्मों का एक सा ही उपदेश और एक ही लक्ष्य है। हमारे बहुत से विद्वान भी हर मंच से यही बात प्रतिपादित करते हैं। किन्तु यह सत्य से बहुत दूर है। वास्तविकता यह है कि वेद-शास्त्रों से उद्भूत और हिन्दू धर्म के विभिन्न पंथों और संप्रदायों में संतो द्वारा प्रचारित जो भी उपासनाएँ हैं वह ईस्लाम, ईसाई और यहूदी धर्मों से बिलकुल अलग ही नहीं बल्कि विपरीत हैं। उनके लक्ष्य भी भिन्न हैं और साधन और मार्ग भी भिन्न हैं और ऐसी दशा में यह स्वाभाविक ही है कि उनके फल भी भिन्न ही

हों। मेरा यह निश्चित विचार है कि जो लोग यह कहते हैं कि सब धर्म बराबर हैं उन्होने न तो हिन्दू शास्त्रों का जिसमें मै आदि श्री ग्रंथ साहिबजी को भी सम्मिलित मानता हूँ और न कुरान या बाईबिल का ही अध्ययन किया है।

2.5 हिरण्यकश्यप ने भी महान तप किया था और प्रह्लाद ने भी। किंतु हिरण्यकश्यप असुर कहलाया और प्रह्लाद परम भागवत। आखिर क्यों? हिरण्यकश्यप ने ब्रह्मा रुपी शक्ति से वर पाकर त्रिलोक का राज्य और वैभव पाया था। पर उसकी समझ में यह कभी नहीं आया कि ब्रह्मा से भी भिन्न और स्वयं ब्रह्मा में व्याप्त और उसे नियमन करने वाली एक सर्व व्यापी सत्ता है. और प्रह्लाद उसी सर्व व्यापी ब्रह्मसत्ता का उपासक है और उसी के आश्रित है। अपनी सीमित उपासना के आश्रय और बल पर वह सर्वमयी सत्ता के उपासक का बाल भी बाँका न कर सका और अन्ततः परमात्मा में भिन्नता के दर्शन के कारण, और उससे उत्पन्न घृणा और द्वेष के कारण वह मारा गया। हिरण्यकश्यप की कथा तलवार के बूते अपनी सीमित उपासना को दूसरे पर बलपूर्वक लादने का विश्व में सबसे प्रथम उदाहरण है। और हिरण्यकश्यप की कथा के पीछे (ग्रंथ साहिबजी में हिरण्यकश्यप की पूरी कथा चार बार आई है और पचास स्थलों पर इस कथा को श्रद्धा से स्मरण किया गया है) यह एक मूल और स्पष्ट वैदिक सिद्धांत है। इसका प्रतिपादन वृहदारण्यक उपनिषद् के दूसरे अध्याय के चतुर्थ ब्राह्मण और चौथे अध्याय के पंचम ब्राह्मण में महर्षि याज्ञवल्क्य जी ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को उपदेश देते समय किया है। याज्ञवल्क्य जी कहते हैं :

"ब्राह्मण जाति उसे परास्त कर देती है, जो ब्राह्मण जाति को आत्मा से भिन्न समझता है। क्षत्रिय जाति उसे परास्त कर देती है जो क्षत्रिय जाति को आत्मा से भिन्न मानता है। लोक उसे परास्त कर देते हैं जो लोकों को आत्मा से भिन्न समझता है। देवता उसे परास्त कर देते है जो देवताओं को आत्मा से भिन्न समझता है। वेद उसे परास्त कर देते हैं जो वेदों को आत्मा से भिन्न समझता है। भूत उसे परास्त कर देते हैं जो भूतों को आत्मा से भिन्न समझता है। सब उसे परास्त कर देते हैं, जो सबको आत्मा से भिन्न जानता है। यह ब्राह्मण, यह क्षत्रिय, ये लोक, ये देव, ये वेद, ये भूत ये सब कुछ जो भी है यह सब आत्मा ही हैं।"

और यही उपनिषद् अपने प्रथम अध्याय के चतुर्थ ब्राह्मण में परमात्मा या ब्रह्म की आत्मरुप से उपासना करने वाले के लिये कहता है...."वह यह सर्व हो जाता है। उसके पराभव मे देवता भी समर्थ नहीं होते, क्योंकि वह उनकी आत्मा ही हो जाता है।"

हिरण्यकश्यप की सीमित उपासना प्रह्लाद की "सर्व" की उपासना से भिन्न ही नहीं वरन् विपरीत भी थी। आज भारत के किसी भी हिन्दू या सिख के लिए यह असम्भव है कि वह यह कहे कि हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद के धर्म समान थे और उनके फल भी समान थे।

2.6 हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद के उदाहरण में दोनों के गुरु, मंत्र, उपासना विधि और उपासना के लक्ष्य ही भिन्न थे। इसलिए उनके फल भी विपरीत हुए तो उसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। किन्तु जहाँ दो व्यक्तियों के गुरु या उपदेश भी एक ही हों, लक्ष्य भी एक ही हो वहाँ भी उपदेश को ठीक प्रकार से हृदयंगम न करने से फल कितना विपरीत हो जाता है या यह कहें धर्म की मूल शैली ही कितनी भिन्न हो जाती है इसका उदाहरण छान्दोग्य

उपनिषद् के आठवें अध्याय के सातवें से बारहवें खण्डों से स्पष्ट है। प्रजापति के पास देवताओं के राजा इन्द्र और असुरों के राजा विरोचन दोनों ही आत्मज्ञान की प्राप्ति या आत्मा के सच्चे स्वरुप को जानने के लिए शिष्य भाव से आए और उनके पास 32 वर्षों तक ब्रह्मचर्यपूर्वक रहे।

"बत्तीस वर्ष बाद उनसे प्रजापति ने पूछा तुम यहाँ किस इच्छा से रहते हो। उन्होंने कहा कि हमने श्रीमान् का यह वाक्य परम्परा से सुना है कि जो आत्मा पापरहित, जरारहित, मृत्युरहित, शोकरहित, क्षुधारहित, तृषारहित, सत्यकाम और सत्य संकल्प है, उसका अन्वेषण करना चाहिए और उसे विशेष रुप से जानने की इच्छा करनी चाहिए। जो इस आत्मा का अन्वेषण कर उसे विशेष रुप से जान लेता है, वह सम्पूर्ण लोक और समस्त भोगों को प्राप्त कर लेता है। उसी आत्मा को जानने की इच्छा करते हुए हम यहां रह रहे हैं।"

प्रजापति ने दोनों को एक साथ एक ही उपदेश दिया। तब वे दोनों शान्तचित्त ही चले गये। प्रजापति ने उन्हें गया देखकर कहा "ये दोनों ही आत्मा को उपलब्ध किये बिना जा रहे है, देवता हो या असुर जो कोई ऐसे निश्चयवाले होंगे, उन्हीं का पराभव होगा।" विरोचन शान्तचित्त से असुरों के पास पहुंचा और उनको यह आत्मविद्या सुनायी--"इस लोक में यह शरीर पूजनीय है और शरीर से ही इस लोक और परलोक दोनों लोकों को प्राप्त कर लेता है।" उपनिषद् के अनुसार विरोचन प्रजापति के उपदेश का सही मर्म न समझ पाया। उसने विपरीत ही ज्ञान ग्रहण किया। इसलिए शिष्टजन, "अरे! यह तो आसुर (आसुरी स्वभाव वाला) ही है," ऐसा कहते हैं। यह उपनिषद् असुरों की ही है। वे ही मृतक पुरुष के शरीर को भिक्षा (गंधा-पुष्प-अन्नादि) वस्त्र और अलंकार से सुसज्जित करते हैं और इसके द्वारा हम परलोक प्राप्त करेंगे--ऐसा मानते है।" यहाँ यह बतलाना सामयिक होगा कि इस्लाम और ईसाई धर्म में यह कहा गया है कि परलोक में स्वर्ग या नरक के भोग कयामत के समय कब्रा से पुनः उठाये गये इन्हीं शरीर से भोगने पड़ेगें। और परलोक स्वर्ग-नरक तक ही सीमित है। उधर इन्द्र को मार्ग में अपने समझे हुए उपदेश के पालन में भय हुआ और तीन बार प्रजापति के पास आत्मा के ज्ञान के लिए लौट कर आये। अन्ततः प्रजापति से पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। इस प्रकार हम देखते हैं कि किस प्रकार एक ही गुरु का एक ही उपदेश दो व्यक्तियों की भिन्न धारणा शक्ति के कारण दो बिलकुल ही भिन्न और परस्पर टकरावबाले धर्मों में बदल गया।

2 7 छान्दोग्य उपनिषद् का ही एक और उदाहरण यहाँ पर्याप्त होगा। इस उदाहरण में उद्दालक आदि छह ऋषि राजा अश्वपति के पास परमात्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए शिष्य भाव से आते हैं। इस उपनिषद् के पांचवें अध्याय के ग्यारहवें से चौबीसवें खण्डों में इसकी चर्चा है। राजा पहले ऋषि उपमन्यु के पुत्र प्राचीनशाल से पूछते हैं कि "तुम किस आत्मा की उपासना करते हो" वह बोला--पूज्य राजन् मैं द्युलोक यानी स्वर्ग की या प्रकाशमान लोकों की उपासना करता हूँ" राजा ने उत्तर दिया "तुम जिस आत्मा की उपासना करते हो यह निश्चय ही "सुतेजा" नाम से प्रसिद्ध वैश्वानर आत्मा है। इसी से तुम्हारे कुल में सुत, प्रसुत और आसुत दिखायी देते हैं तुम उस का भक्षण करते हो और प्रिय का दर्शन करते हो जो इस वैश्वानर आत्मा की इस प्रकार करता है वह अन्न भक्षण करता है प्रिय का दर्शन

करता है और उसके कुल में ब्रह्मतेज होता है। यह वैश्वानर आत्मा का मस्तक है। ऐसा राजा ने कहा और यह भी कहा कि—यदि तुम मेरे पास आते तो तुम्हारा मस्तक गिर जाता"।

ऊपर दिये प्रश्नोत्तर से यह स्पष्ट है कि सीमित भाव से की गई उपासना का भी सासारिक वैभव की दृष्टि से भारी फल है। अन्न, धान तेज प्रियजनों का सहवास आदि सब कुछ मिल जाता है पर उससे परमपद की प्राप्ति या सच्चिदानन्दमय परमात्मा नहीं मिल सकता। उसकी सीमित उपासना का फल या पद भी सीमित ही है जहां से उसका पतन मस्तक गिरने के समान अवश्यम्भावी है।

28 राजा ने अन्य पांच ऋषियों से भी यही प्रश्न पूछा। सबने अपनी-अपनी उपासना उन्हे बतलायी। राजा ने उनकी सीमित उपासनाओं के अलग-अलग फल बतलाते हुए उनके दुष्परिणामों की गति भी बतलायी और अन्त में उन्हें उस सर्वव्यापी परमात्मसत्ता का उपदेश देते हुए कहा : "तुम सब लोग इस वैश्वानर आत्मा को अलग सा जानकर अन्न भक्षण करते हो। "यही मैं हूँ' इस प्रकार अभिमान का विषय होनेवाले इस प्रादेशमात्र (वैश्वानर) आत्मा जो उपासना करता है वह समस्त लोकों में, प्रणियों में और समस्त आत्माओं में अन्न भक्षण करता है। ....क्योंकि जो इस वैश्वानर को इस प्रकार जानने वाला पुरुष अग्निहोत्र करता है उसका समस्त लोक, सारे भूत और सम्पूर्ण आत्माओं में हवन हो जाता है।"

इस प्रसंग से यह स्पष्ट हो जाता है कि धर्म की गति कितनी गहन और कितनी भिन्न-भिन्न फल देनेवाली है।

29 यहाँ गीता में भगवान कृष्ण द्वारा वर्णित ज्ञान के तीन भेदों की चर्चा बड़ी महत्त्व की है। ज्ञान के इन मापदण्डों या कसौटी पर विश्व का कोई भी समाज या व्यक्ति विशेष अपने अध्यात्म के धरातल को सही रुप में माप सकता है। गीता के अठारहवें अध्याय के श्लोक 20,21 और 22 में भगवान ने अर्जुन को उपदेश देते हुए ज्ञान का विवेचन इस प्रकार किया है '

"जिस ज्ञान से मनुष्य भिन्न-भिन्न सब भूतों में एक अविनाशी परमात्म भाव हो विभागरहित समभाव से देखता है, उस ज्ञान को तो तू सात्विक जान।" गीता 18/20। और जिस ज्ञान के द्वारा मनुष्य सम्पूर्ण भूतों में भिन्न-भिन्न प्रकार के अनेक भावों को अलग-अलग जानता है उस ज्ञान को तू राजस जान"। गीता 18/21

"और जिस ज्ञान से मनुष्य एक कार्य रूप शरीर में ही संपूर्ण के सदृश आसक्त है, तथा जो बिना युक्ति वाला और तात्विक अर्थ से रहित और तुच्छ है वह ज्ञान तामस कहा गया है"। 18/22

संक्षेप में जिस ज्ञान से मनुष्य सब भूतों में, यानी समस्त जड़-चेतनमयी सृष्टि में एक ही परमात्मा को व्याप्त देखता है, वह सात्विक ज्ञान है। जिस ज्ञान से मनुष्य सब में भिन्नता देखता है वह राजस ज्ञान है। और शरीर को ही आत्मा मानकर उसके द्वारा प्राप्त इस लोक और परलोकों के भोगों को ही सर्वस्व मानकर उसमें आसक्त रहता है, जो तर्क रहित और तत्व अर्थ से रहित है, ऐसा अल्प ज्ञान तामस ज्ञान है।

ज्ञान को धारण करने वाली बुद्धि में भी तीन भेद भगवान कृष्ण ने इस अध्याय के 30,31 और 32 श्लोकों में अर्जुन को बतलाए जो धर्म के मर्म को ठीक प्रकार से समझने के

लिए आवश्यक हैं। सात्विकी बुद्धि वह है जो प्रवृति मार्ग (अर्थात गृहस्थ आश्रम में रहते हुए राजा जनक और गुरु नानक देव जी की भांति निष्काम भाव से अपनी बुद्धि से लोक शिक्षा या जन कल्याण के लिए कर्म करते हुए रहना) और निवृत्ति मार्ग (अर्थात् शुकदेव जी और गुरु नानक के बड़े पुत्र श्रीचन्द्र जी महाराज की तरह संन्यास आश्रम में रहना) दोनों को ही जानती है तथा कर्तव्य और अकर्तव्य, भय और अभय तथा बन्धन और मोक्ष को भी तत्वतः जानती है। जिस बुद्धि से मनुष्य को न तो धर्म और अधर्म का ही, और न ही कर्तव्य और अकर्तव्य का ही यथार्थ ज्ञान होता है वह राजसी बुद्धि है। तामसी बुद्धि वह है जो अधर्म को ही धर्म मानती है, तथा सम्पूर्ण अर्थों का विपरीत ही अर्थ जानती है।

3.0 भगवान ने गीता के चौदहवें और सोलहवें अध्यायों में स्पष्ट किया है कि सतोगुण मनुष्य को दैवी सम्पदा की ओर उठाता हुआ परमात्मा तक ले जाता है, रजोगुण काम, भोग और हिंसायुक्त कर्मों में जीव को उलझाता हुआ दुःखमय आवागमन के चक्र में डालता है और तमोगुण जीव को अज्ञान के अंधकार से ढकता हुआ अधोगति की ओर ले जाता है।

गीता के उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है ज्ञान और बुद्धि के भेद से भी धर्मों की धारणा बिलकुल भिन्न हो जाती है और धर्मों की भिन्नता से उनके द्वारा प्राप्त होनेवाले फल भी बिलकुल अलग-अलग होते हैं। इसलिए यह कहना कि सब धर्म समान हैं और सभी धर्मों का एक ही लक्ष्य है या उनके द्वारा सब एक ही लक्ष्य तक पहुँचते हैं, बिलकुल सारहीन और अज्ञान से पूर्ण बात है।

❑

क़ुरान शरीफ़ में अल्लाह के लक्षण

3 1 कुरान शरीफ़ से जो कुछ भी इस लेख में लिया गया है या जो भी आयतें इसमे दी गई हैं वे सब कुरान शरीफ़ के हिन्दी में प्रकाशित "शेरवानी संस्करण" से ली गयी हैं। यह लखनऊ किताबघर, प्रभाकर निलयम, 405/128, चौपटियां रोड, लखनऊ-3 द्वारा 1980 में प्रकाशित चतुर्थ संस्करण है और इसका मुद्रण लखनऊ पब्लिशिंग हाउस में हुआ है। इसकी भूमिका इस्लाम के प्रसिद्ध विद्वान् जनाब अली मियां साहब ने लिखी है। अपनी भूमिका के अन्तिम पैरा में अली मियां साहब कहते हैं :

"यह हकीकत है कि उन हिन्दू भाइयों के अलावा जो हिन्दी के सिवा किसी जबान से फायदा नहीं उठा सकते खुद मुसलमानों में भी बड़ी तादाद है जो अब हिन्दी में ही लिखते पढ़ते हैं। उनको उनके मजहब से भी वाकिफ कराने का जरिया अब बहुत जगह हिन्दी ही रह गई है। अल्लाह का कलाम और अल्लाह का पैगाम हर इन्सान तक हर जबान में पहुंचाना चाहिये इसलिये भी हम अवस्थी जी के शुक्रगुजार हैं कि उन्होंने एक मुफीद खिदमत अंजाम दी। खुदा इससे सबको फायदा पहुँचाये और अवस्थी जी की मेहनत ठिकाने लगाये।"

इस प्रकार इस्लाम के इस माने हुए विद्वान् अली मियां के अनुसार कुर्आन शरीफ़ का यह हिन्दी अनुवाद केवल हिन्दी भाषा जानने वाले मुसलमानों के लिए भी अपने मजहब इस्लाम को ठीक से समझने के लिए भी मुफीद यानी लाभकारी और प्रमाणस्वरुप है। इसके लिये अली मियां साहब कुरान शरीफ़ के इस हिन्दी अनुवाद के लिये नन्दकुमार अवस्थी के शुक्रगुजार भी हैं।

इस संस्करण के अनुसार कुरान शरीफ़ में कुल 6236 आयतें हैं और 114 सूर या अध्याय हैं। आयतों की गणना या आगे जाकर विभिन्न विषयों से संबंधित जो आयतों की सख्या दी गई है वह मेरी गणना है। इसमें यदि कोई गलती हो तो विद्वजन मेरी भूल समझकर क्षमा करेंगें।

3 2 वैसे कुरान शरीफ़ में अधिकतर बड़ी आयतों में एक ही आयत में कई विषय एक साथ ही आ जाते हैं। जैसे एक ही आयत में ईमानवाले और काफ़िरों के लक्षण, जिहाद, बहिश्त, दोजख, कयामत और अल्लाह के गुणों की चर्चा हो जाती है। इसलिए जहां मैनें यह कहा है कि कुरान शरीफ़ में "अमुक विषय पर इतनी" आयतें हैं तो उसका अर्थ यह समझना चाहिए कि उन आयतों में वह विषय मेरी निगाह में ज्यादा छाया हुआ है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि किस विषय पर कितनी आयतें हैं इस पर अपनी-अपनी निगाह में महत्त्व की दृष्टि से भेद हो सकता है, पर यह निश्चित है कि उन-उन आयतों में उस विषय की चर्चा अवश्य है। आयतों का सदर्भ देते समय पहले सूर का फिर उस सूर की आयत या आयतों के नम्बर दिये

गए हैं। उदाहरण के लिए यदि दूसरे सूर की पहली दो आयतों का सदर्भ देना है तो वहां 2/1.2 लिखा जायेगा। या फिर इसी सूर की एक सौ आठवीं और एक सौ नवमी आयतों का सदर्भ है तो वहां 2/108.109 लिखा जायेगा।

कुरान शरीफ में जो आयतें हैं, जिसे "किताब अर्थात् अल्लाह का ज्ञान भी कहा गया है—या ऐसे भी आया है कि "किताब" या "कुरान" उतरी, सब स्वयं अल्लाह की वाणी या आदेश हैं जो उन्होंने अपने फरिश्ते गब्रील के द्वारा हजरत मोहम्मद साहब के पास भेजी हैं। इसलिए कुरान में जो भी आयतें हैं फिर वह चाहे समाज या परिवार के या व्यक्ति के नियमों से संबंध रखती हों वे सब अल्लाह के ही आदेश के अन्तर्गत आती हैं। यही मुख्य कारण है कि कुरान में निर्देशित कोई भी बात इस्लाम के अनुसार अपरिवर्तनीय है। और साथ ही अल्लाह से उतरी इन आयतों को सारी मानव जाति में, विशेषकर अरब प्रदेशों की जातियों मे फैलना, पहुंचना और मनवाना ये अल्लाह के पैगम्बर और उनके अनुयायियों का प्रमुख कर्तव्य है। इसकी विस्तार से चर्चा उचित स्थान पर की जायेगी।

3.3 इसके विपरीत ग्रंथ साहिबजी में 6 गुरुओं 15 अन्य संतों 4 चारण भाटों तथा 11 श्रद्धालु भाटों, इस प्रकार 36 महान् सिद्धों, संतो और श्रद्धालु भाटों की वाणी है। ग्रंथ साहिबजी में आदेश के रुप में परब्रह्म परमात्मा की न कोई वाणी है और न ही कोई आज्ञा ही। इसलिए इसमें कोई पैगम्बर के माध्यम होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। हां, सगुण रुप मे परमात्मा के अवतार रुप से कहीं-कही भक्त के साथ सीधा संवाद है, पर उसमें कोई पैगाम या आदेश नहीं है। जैसे कि जब बादशाह संत नामदेव जी को बंदी खाने में डाल देता है तब उनको भगवान विष्णु गरुड़ पर चढ़कर दर्शन देते हैं तथा वार्तालाप करते हैं। 1165-66। ग्रंथ साहिबजी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं ही ज्ञान, भक्ति और प्रेम को आधार बनाते हुए, वेद शास्त्रों का प्रमाण लेते हुए और सिद्ध या सच्चे गुरु की कृपा का आश्रय लेकर परमात्मा को पाने का प्रयत्न करना चाहिये और इसे ही जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाना चाहिये।

3 4 संक्षेप में इस्लाम का मुख्यतम आधार अल्लाह, अल्लाह के द्वारा उतारी गई कुरान, किताब या आयतों और आखिरत या कयामत तथा उनके पैगम्बर हजरत मुहम्मद को मानना या उन पर पूरा ईमान लाना है, और उसी मे मनुष्य का परम कल्याण निहित है। और ग्रंथ साहिबजी का मुख्यतम आधार परमात्मा को मानना ही नहीं "जानना" है उसे प्राप्त करना है। इस विषय की चर्चा हम यथास्थान करेंगे।

3 5 अल्लाह के कुछ मुख्य लक्षण सारे कुरान शरीफ में लगभग हर अध्याय की आयतों के शुरु या अन्त में आते रहते हैं। उदाहरण के लिए वे इस प्रकार हैं। "निहायत दयावान बेहद मेहरबान"1/2 "सारे संसार का पालनहार" 1/2 "जजा (अन्तिम न्याय) के दिन का मालिक" 1/3 "बेहद समाई वाला और सब कुछ जानते वाला" 2/115 —"वही सब सुनता और जानता है" 2/137, वह हर चीज का जानकार है 2/29, 5/97 "अल्लाह सब कुछ सुनता देखता है" 4/134 "वह बड़ा सूक्ष्मदर्शी और बेहद रहमवाला है" 6/103 "वह तो दिलों के अन्दर तक की बातें जानने वाला है " 11 5

"तुम्हारा परवरदिगार वड़ा जबर्दस्त पर साथ ही बेहद रहम वाला है।" 26/9.68.104 122.140.159.175.191

"अल्लाह बड़ा जानकार और बड़ा हिकमत वाला है।" 4/04, वही सब बातों को जानने वाला बड़ा जोरावर और बेहद मेहरबान है 32/6 अल्लाह बड़ा बख्शनेवाला और बेहद मेहरबान है। 33/73.35/28.3/31.4/25 3/35.4/147.2/182.2/235.3/129

"जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है सब अल्लाह का ही है। और (लोगों) जो तुम्हारे दिल में है अगर उसको जाहिर करो तो या छिपाओ, अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा, फिर वह जिसको चाहे बख्शेगा और जिसको चाहे सज़ा देगा। और अल्लाह हर चीज पर काबू रखता है" 2/284, 4/126-171,34/1,35/2

"ऐ अल्लाह! बेशक तू हर चीज पर समर्थ है"— 3/26, 5/120

"क्या तुमको मालूम नही' कि आसमानों और जमीन में अल्लाह की ही हुकूमत है, जिसकी चाहे सजा दे और जिसको चाहे क्षमा करे, और अल्लाह हर चीज पर ताकतवर है" 5/4, "जो दुनिया जहान का परवरदिगार है" 10/10

"बेशक तुम्हारा परवरदिगार सजा देने में तेज है, और बेशक वह बड़ा वख्शने वाला और मेहरबान है" 6/165, 17/44

"अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य नहीं वह चैतन्य व जगत को सम्भालने वाला है" 3/2 "उसने तुम पर सच्ची किताब उतारी, जो उसकी तसदीक करती है, जो उससे पहले उतर चुकी है, और इसी तरह उसने तौरात और इंजील उतारी थी" 3/3

"और तुम्हारे परवरदिगार से जर्रा भी छिपा नहीं रहता, न जमीन में और न आसमानो मे, और जर्रे से छोटी या बड़ी रोशन किताब (लौह-महफूज) में सब कुछ मौजूद है।" 10/61 "सारी रचना का पैदा करने वाला और पूरा जानकार और उसी के पास अदृष्ट की कुजियॉ है जिनको उसके सिवाय कोई नही जानता। जो जंगल और नदी में है वह सब जानता है। और कोई पत्ता तक नहीं गिरता जो उसे मालूम नहीं" 6/59, 6/3,6/132,23/92

अल्लाह के बारे में जो अन्य लक्षण कुरान शरीफ़ में अल्लाह ने बतलाए हैं उनमे से कुछ निम्न लिखित है :

"वही है जो मां के पेट में जैसी चाहता है तुम लोगों की सूरतें बनाता है। उसके सिवाय कोई ईबादत के काबिल नहीं, वह बड़ा जबरदस्त और बड़ा हिकमतवाला है" 3/6

"ऐ पालनहार तू उस दिन, जिस के आने में कुछ भी शक नहीं, सब लोगों को अपने दरवार में जमा करेगा। बेशक अल्लाह अपने वादे के खिलाफ नहीं करता" 3/9

"जाने रहो कि अल्लाह की मार सख्त है और यह कि अल्लाह क्षमा करने वाला रहीम भी है" 5/98

अल्लाह को न मानने वाले कहते हैं इस रसूल के परवरदिगार की तरफ से इस पर कोई निशानी क्यों नहीं उतरी? कहो कि अल्लाह निशानी उतारने में शक्तिमान है।" 6/37 "अल्लाह जिसे चाहे उसे भटका दे और जिसे चाहे सीधो रास्ते पर लगा दे" 6/39, "और उसी पर ²र चीज का भार है " 6/102

"और ऐ पैगम्बर, तुम्हारी तरफ जो हुक्म भेजा है उसी पर चले जाओ और उसी पर जमे रहो, यहां तक कि अल्लाह फैसला कर दे। और वह सब से बेहतर फैसला करने वाला है।" 10/109

अल्लाह अपने बनाये आदमियों पर अफसोस जाहिर करते हुए कहते हैं : "और तुमको हर चीज में से कुछ दिया जो तुमने मांगा, अल्लाह के एहसानों को गिनना चाहो तो पूरा-पूरा गिन न सकोगे। बेशक मनुष्य बड़ा बेइन्साफ और बड़ा नाशुक्र है" 14/34

"(ऐ पैगम्बरों) हमारे सेवकों को चेता दो कि मैं ही असल माफ करने वाला और बेहद रहमवाला हूं" 15/49

"और (साथ ही यह भी चेता दो कि, हमारी मार बड़ी दुःख की मार है।" 15/50

3.6 अल्लाह के जो लक्षण कुरान शरीफ से दिये हैं वे ग्रंथ साहिबजी में दिये गए परमात्मा के मुख्य लक्षणों से बिलकुल भिन्न हैं या फिर वे गौण रुप से परमात्मा की विभिन्न रुपों में वर्णित शक्तियों के अंश हैं। कुरान वर्णित अल्लाह के लक्षणों में यह भी कहीं नहीं कहा गया है कि अल्लाह प्रत्येक प्राणी के हृदय में निवास करता है, या वह अन्तरयामी रुप से जड़ चेतन में व्याप्त है, या वह घट-घट वासी है। या वह पशु या फिर कीट पतंग जैसी अधम योनि के प्राणियों में भी उनके अन्तर्यामी के रुप में वास कर रहा है।

गुरु ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि—

"स्थावर जंगल कीट पतंगम, घट-घट राम समाना रे"—सबै घट राम बोलै"... "घट-घट अंतरि ब्रह्म समाहूं", वासुदेव जल थल महि रविआ"॥ 259

इसकी चर्चा आगे विस्तार से होगी।

3.7 अब हम आगे अल्लाह का सृष्टि रचना करने का क्या स्वरुप है, सृष्टि में उसके पहचान की क्या-क्या निशानियाँ है, उसके मानने वालों या ईमानवालों के प्रति अल्लाह का क्या स्वरुप है और न मानने वालों के प्रति क्या, इसकी चर्चा करेंगे। इनके अतिरिक्त कुरान शरीफ में अल्लाह की जो अन्य विशेषताएँ दी हैं उनका भी प्रमाण सहित उल्लेख किया जायेगा।

❑

ग्रंथ साहिबजी में परमात्मा के लक्षण

38 आइये सबसे पहले यह देखें कि ग्रंथ साहिबजी ने परमात्मा के क्या लक्षण बतलाए है और कुरान शरीफ़ में अल्लाह के क्या लक्षण दिये हैं।

परब्रह्म परमात्मा के सभी लक्षण बतलाना असम्भव सा कार्य है। ग्रंथ साहिबजी के मूल मत्र में जिससे "ग्रंथ" शुरु होता है, ये लक्षण बड़े स्पष्ट हैं। "ओं सतिनाम करता पुरुखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरु प्रसादि"। (1) अर्थात् परमात्मा ओंकार स्वरुप है और इस अक्षर ओंम् से समस्त सृष्टि एवं ब्रह्मांडों की रचना हुई है। ग्रंथ साहिबजी आगे चलकर कहते हैं "ओं अंकारी सम सृसटि उपाई सभुखेलु तमासा तेरा बड़िआई (106) "ओं अकार आदि में जाना।" 340, "ओ अंकारि एको रवि रहिआ सभुएकस माहि समावेगो॥" "एको रुप एको बहुरंगी सभु एकतु, बचन चलावैगो" 1310.... "ओअंकारि ब्रह्मा उतपति. ओअंकारि वेद निरमाए॥ ओनम अखरु त्रिभवण सार॥" 929-30

अर्थात "ओं ही आदि शब्द है, ओं से सारी सृष्टि और सृष्टि रचयिता ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई है, "ओं" सबमें रम रहा है और "ओं' में ही सब समाएगें, "ओं' ही नाना प्रकार की बहुरगी सृष्टि रुप है, वेदों की उत्पत्ति "ओं' से ही, और "ओं' से ही गुरु प्राणियों का उद्धार करता है, और यह "ओं' अक्षर ही त्रिभुवन का यानी पृथ्वी, अन्तरिक्ष और स्वर्गलोक या द्यूलोक और जागृत स्वप्न और सुषुप्ति का सार है।

यहाँ यह बतलाना सामयिक है कि ग्रंथ साहिबजी का प्रत्येक मुख्य अध्याय या उप-अध्याय ओं से ही शुरु होता है।

ग्रंथ साहिबजी ने ऊपर बतलाया कि "ओं' से ही वेद उत्पन्न हुए। और वेद कहते है "यह "ओं' अक्षर अविनाशी परमात्मा है। यह सम्पूर्ण जगत् उसका ही उपाख्यान है। भूत, वर्तमान और भविष्य यह सब का सब ओंकार ही है।

39 कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय की दूसरी बल्ली के 15, 16 और 17 वें मंत्रों में ओंकार की महिमा बतलाते हुए यमराज नचिकेता से कहते है :

"सम्पूर्ण वेद जिस परम पद का बार बार प्रतिपादन करते हैं और सम्पूर्ण तप जिस पद का लक्ष्य कराते हैं, जिसको चाहने वाले साधकगण ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं वह पद मैं सक्षप में तुम्हें बतलाता हूँ—वह ओं ऐसा एक अक्षर है। यह अक्षर ही ब्रह्म है और यह अक्षर ही परब्रह्म है। इसी अक्षर को जानकर जो जिसको चाहता है उसको वही मिल जाता है। यही श्रेष्ठ आलम्बन है, यही सबका अन्तिम आश्रय है, इस आलम्बन को जानकर ब्रह्मलोक मे महिमान्वित होता है।"

भगवान् कृष्ण गीता के सातवें अध्याय के आठवें श्लोक में कहते हैं कि "प्रणव

सर्ववेदेषु" अर्थात सम्पूर्ण वेदों में ओंकार हूँ और गीता के सत्रहवें अध्याय के तेईसवें श्लोक मे "ओं तत् सत्" को ही ब्रह्म का नाम कहा है।

इस प्रकार ग्रंथ साहिबजी के अनुसार "ओं" परब्रह्म परमात्मा रूप ही है और समस्त सृष्टि उसी से उत्पन्न होकर उससे अभिन्न है और ओं के द्वारा जीव परमात्मा को सहज ही प्राप्त कर सकता है।

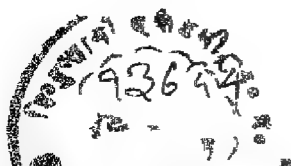
4 0 **"सतिनाम"** यह दूसरा लक्षण है। अर्थात् वह परमात्मा सत्य स्वरूप है, परम सत्य है। ओर जैसा कि भगवान कृष्ण गीता के दूसरे अध्याय के सोलहवें श्लोक में कहते हैं इस सत्य का कभी अभाव नहीं होता, वह हर काल में हर स्थान में है। "जपु" जी की पहली पौड़ी म गुरु नानक देव जी ने इसी परम त्रिकाल अबाधित सत्य का वर्णन इस प्रकार किया है।" "आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥" यह सत्य स्वरूप परमात्मा या यह परम सत्य सृष्टि रचना के पूर्व में था सृष्टि रचना के बाद युगों युगों में भी रहा है, आज भी यही सत्य है और आगे भी यही सत्य रहेगा।

4 1 **"करता"** वह परमात्मा ही समस्त सृष्टि का सृजन, पालन और संहार करता है। ब्रह्म दर्शन में महर्षि व्यास ने इसे ब्रह्म का एक मुख्य लक्षण माना है।

4 2 **"पुरुखु"** समस्त चड़ चेतनमयी सृष्टि में वह परमात्मा अन्तरयामी रूप से पूरा हुआ यानी व्याप्त या ओतप्रोत है, इसलिए वह पुरुष है, पुरुषोत्तम है या पूरण पुरुष विधाता है, जैसा कि ग्रंथ साहिबजी स्थान-स्थान पर कहते हैं। गीता के पंद्रहवें अध्याय का नाम ही पुरुषोत्तम योग है, जिसमें यही भाव दर्शाया गया है।

4 3 **"निरभउ"** वह परमात्मा भय रहित है यानी अभय है। भय तो किसी दूसरे से ही होता है। जब समस्त सृष्टि ही उस परमात्मा से पैदा हुई है तो किसी दूसरे के होने का प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसी स्थिति में "निरभय" या अभय परमात्मा का विशिष्ट लक्षण बन जाता है। यह जीव ही सृष्टि में अज्ञान के कारण भिन्न-भिन्न भाव देखता है और इसलिए भय ग्रसित रहता है। जब वह परमात्मा को जान लेता है तब वह अभय पद को या परम गति को प्राप्त करता है। गज उद्धार के प्रसंग में ग्रंथ साहिबजी कहते हैं "नाहन गुनु नाहनि कछु बिदिआ धरम कउन गजि कीना ॥ नानक बिरदु राम का देखो अभै दान तिहि दीना ॥" 902, और ग्रंथ साहिबजी अन्त में कहते हैं : "भै काहु कह देत नहि नहि भै मानत आनि" कहु नानक सुन रे मना गिआनी ताहि बखानि।" (1427) और यही बात दर्शाते हुए वेद कहते हैं "अभय ही ब्रह्म है, जो ऐसे जानता है वह अभय ब्रह्म ही हो जाता है।" बृहदारण्यकोपनिषद् 4/4/25। कुछ विद्वान "निरभउ' शब्द का अर्थ भव-रहित मान में करते हैं। यानि वह परमात्मा इस संसार से अत्यन्त परे है; यह लक्षण भी परमात्मा पर यथार्थ रूप में घटता है क्योंकि ब्रह्म इस त्रिगुणमयी माया से अत्यन्त परे और विशुद्ध निर्मल तत्व है। इसलिए ग्रंथ साहिबजी ने और संतो ने परमात्मा को तुरियातीत माना है।

4.4 **"निरवैरु"** वह परमात्मा किसी का बैरी नहीं है। बैर या घृणा का उसमें कोई प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि सभी सृष्टि उसी से उत्पन्न हुई है और उसी में स्थित है तथा वह अन्तरयामी स्वय सभी जड़ चेतन में व्याप्त है—जैसा कि ग्रंथ साहिबजी कहते हैं



"सबै घटि रामु बोल रामा बोलै॥
अस्थावर जंगम कीट पतंग घटि घटि रामु समाना रे" (988)

प्रमाण स्वरुप वेदवाणी कहती है : "जो मनुष्य सम्पूर्ण प्राणियों को परमात्मा में ही निरन्तर देखता है और सम्पूर्ण प्राणियों में परमात्मा को देखता है वह कभी भी किसी से घृणा नहीं करता।" (ईशावास्योपनिषद् 6)

4 5 "अकाल मूरति" यहां "मूरति" शब्द का प्रयोग "पुरखु" के पर्यायवाची के रूप मे हुआ है। वह परम पुरुष या परमात्मा काल से बाधित नहीं है। वह सब कालों में भूत, वर्तमान और भविष्य में सर्वदा विद्‌यमान है। इसलिए वह अकाल पुरुष या अकाल मूर्ति है। वह "सत्य की श्री" से विभूषित अकाल पुरुष है, जिसे संक्षेप में "सत श्री अकाल" कहते हैं। यहाँ अकाल मूरति का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि वह परमात्मा काल से तो बाधित नहीं है, परन्तु अन्य सब से भी बाधित नहीं है। वह "देश" से भी बाधित नहीं है क्योंकि वह सभी स्थानो मे भी एक साथ है। वह "रूप" से भी बाधित नहीं है क्योंकि वह सबमें अन्तरयामी होने के कारण हर रूप में अभिव्यक्त हो सकता है। नरसिंह अवतार की कथा के संदर्भ में ग्रथ साहिबजी कहते है :

"ओइ परम पुरख देवाधिदेव ॥
भगति हेत नरसिंह भेंव" (1194)

वह नाम से भी बाधित या बंधा नहीं है। उसे किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है बशर्ते पुकारने का लक्ष्य वह स्वयं हो।

4 6 "अजूनी" वह समस्त योनियों से अत्यन्त परे है। वह न किसी का कार्य है और न ही कारण। उसके जो भी जन्म आदि सगुन अवतारों के रूपों में प्रसिद्ध हैं वे सब दिव्य अर्थात् अलौकिक हैं जैसाकि भगवान कृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय के नौवें श्लोक में कहा है।

4 7 "सैभं" वह स्वयंभू है। वह परमात्मा न किसी से प्रकट हुआ है, न किसी से प्रकाशित होता है और न किसी के आश्रित है। जैसा कि प्रश्नोपनिषद् के चतुर्थ प्रश्न के ग्यारहवें मन्त्र मे कहा गया है "जिसमें समस्त प्राण, पांचों महाभूत, सम्पूर्ण इन्द्रिय और अन्तकरण के सहित जीवात्मा आश्रय लेते हैं, हे प्रिय! उस अविनाशी परमात्मा को जो कोई जान लेता है, वह सर्वज्ञ है, वह सर्वस्वरूप परमेश्वर में प्रविष्ट हो जाता है।"

4.8 "गुरु प्रसादि" और वह परमात्म गुरु की कृपा से प्राप्त होता है। हम इस विषय की चर्चा आगे विस्तार से करेंगें। यहाँ नानक देव जी की चुनौती भरी वाणी का देना अवसर-अनुकूल होगा : "माई रे गुरु बिनु गिआन न होइ ॥ पूछहु ब्रह्मे नारदै बेदब्याआसै कोई ॥ 59

4 9 वैसे तो परमात्मा के अन्य बहुत से महत्वपूर्ण लक्षण ग्रंथ साहिबजी में आए हैं जिनकी चर्चा यथास्थान होगी पर यहा दो और प्रमुख लक्षण देना उचित होगा।

"परमात्मा पूर्ण है" उसमें रंच मात्र भी भेद नहीं क्योंकि वह पूर्ण है : "आदि पूरन मधि पूरन अंति पूरन परमेसरहा" ॥ 705 "पारब्रह्म पूरन परमेसुर" 209 और पूर्ण शब्द की महिमा वेदों की वाणी में इस प्रकार है—"ओं पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते ॥" शान्ति पाठ

अर्थात् वह परमात्मा सब प्रकार से पूर्ण है। यह जगत भी पूर्ण ही है क्योंकि उस पूर्ण परमात्मा से ही यह पूर्ण उत्पन्न हुआ है। पूर्ण से पूर्ण को निकाल लेने पर भी पूर्ण ही बचा रहता है।

50 "आनन्दमूल" संसार के सभी सुखों का वह परमात्मा ही मूल है :

"आनंद मूलु धिआइओ पुरखोतुम अनुदिन अनद अनंदे"। (800) जैसा कि वेद कहते है कि यह जीवात्मा परमात्मा के कारण ही आनन्दयुक्त होता है। "यदि वह आनन्दस्वरूप आकाश की भांति व्यापक परमात्मा न होता तो कौन जीवित रह सकता, कोन प्राणों की चेष्टा कर सकता। निःसंदेह यह परमात्मा ही सबको आनन्द प्रदान करता है।" तैत्तिरीयोपनिषद्--आनन्दवल्ली सप्तम अनुवाक्।

51 परब्रह्म परमात्मा की सत्ता ही एक मात्र सत्य है, इस परमात्म सत्ता से परे अन्य कुछ भी नहीं है। जीव अपने अज्ञान के कारण ही भेद देखता है। तत्वतः तो भेद नाम की कोई चीज है ही नहीं। किसी ज्ञानी गुरु की कृपा से जब जीव के अज्ञान का परदा हट जाता है तो उसे सर्वत्र अभेद उस सच्चिदानन्दमय परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। तत्व की ये मूल बाते सारे ग्रंथ साहिबजी पर आदि से अंत तक छाई हुई है।

"पारब्रह्म प्रभु एक है दूजा नाही कोई। घटि इको बाहरि इको थान थनंतरि आपि।
..थान थनंतरि रवि रहिआ पारब्रह्म प्रभु सोइ। सभना दाता एकु है दुजा नाही कोई।"

45 महला 5

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज की उपरोक्त वाणी अत्यन्त स्पष्ट है--कि परब्रहम परमात्मा के अतिरिक्त अन्य दूसरा कोई है ही नहीं और यह कि परमात्मा थान थनंतरि यानी सर्वत्र कण-कण में व्याप्त है।

52 वह परब्रहम परमात्मा एक होते हुए भी अनन्त रूपों में व्याप्त हो रहा है और उसके अनन्त रुप भी तत्वतः एक ही हैं, इसी भाव को दर्शाते गुरु नानक जी कहते हैं :

"सहस तब नैन नन नैन हहि ताहि कउ सहस मूरति नना एक तूही ॥
सहस पथ विमल नन एक पद गंध बिनु सहस तब गंध इब चलत मोही ॥ 13

वेदान्त भाव में सहत्र शब्द अनंत का वाचक है। नानक जी कहते हैं हे प्रभु। आपके इस विचित्र कौतुक को देखकर मैं मोहित हो रहा हूं अर्थात् मेरी बुद्धि मानो भ्रमित हो रही है।

और यह **"पारब्रह्म अपरंपर देवा ॥ अगम अगोचर अलख अभेवा ॥"** 98 म.5 और यह परमात्मा पूर्ण है यानी सब जड़ चेतन, में पूर रहे हैं, पूर्ण रुप से व्याप्त हैं। सारे ब्रह्माड और विश्व उसी में स्थित हैं। इसलिये जन्म मृत्यु के भय को पार करने के लिए अरे मन या हे प्राणी तू सीधे परमात्मा की ही शरण ग्रहण कर, उन्हीं का नाम जप :

"पारब्रहम पूरन परमेसुर मन ता की ओट गहीजै रे ॥
जिन धारे ब्रह्मांड खंड हरि तो को नाम जपीजै रे ॥ 209 म.5

यह परमात्मा ही तीनों कालों में रहने वाला है और उसके अतिरिक्त सब झूठ है यानी अन्य किसी भी वस्तु की कोई सत्ता है ही नहीं' ·

"अगम अगोचर अपर अपारा पारब्रह्म परधानो ॥
आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सब मानो ॥" 437 म

यह परमात्मा ही सभी ज्योतियों का आधार है, माया से परे, आनन्दमय सभी के हृदय वास करने वाला और सभी देवताओं या देवशक्तियों का भी देवता है :

"तू सभि घट भोगहि आदि तुधु लेपु न लाहरा ॥
तू पुरखु अनंदी अनंत सभ जोति समाहरा ॥
तू सभ देवा महि देव विधाते नरहरा ॥" 1096 म 5

3 एक परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कोई सत्ता है ही नहीं', इसी भाव को दर्शनिवाली निम्न वाणियां हमारे सामने ग्रंथ साहिबजी का रहस्य प्रकट करती है :

(1) "तूं जुगजुग एको सदासदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥" म 4

(2) "तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जिऊ जंत सभि तेरा खेलु ॥" । म.4

और इस सृष्टि के रुप में भी वह आप ही सजा हुआ है :

'आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु॥ आपे जाल मणकडा आपे अंदरि लालु॥" 23 म

वह परमात्मा ही मछुवरा और मछली बना हुआ और स्वयं पानी भी है और मछली पकडने वाला जाल भी।

(4) "थान थनंतरि रवि रहिआ प्रभु मेरा भरपूरि ॥" 48 म. 51

(5) "हरि जलि थाले महीअलि भरपूरि ॥ दूजा नाहि कोई ॥" 89 म 4

जैसा कि वेद कहते हैं "एकं अद्वितीय" वह परमात्मा अकेला ही है, दूसरा कोई है ही नहीं'।

(6) "तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाडा जीउ ॥" 103 म.5

(7) "आपे करे कराए आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥
तुझ ते बाहरि कहु न होवै तू आपे कारै लाणिआ ॥ 125 म 3

"आपे आपि आपि मिलि रहिआ सहजे सहज समावणिआ ॥" 115 म.3

थान थनंतरि तूं है तूं है इको इक वरतावणिआ ॥" 131 म 5

(8) "एक तूही एकतुही ॥ न देव दानवा नरा न सिध साधिका धरा ॥
असति एक दिगरि कुई ॥ एक तुई एक तुई ॥" 143 म. 1

अर्थात हे प्रभु तुझे छोड़कर दूसरा कौन है एक तू ही है, एक तू ही है।

(9) "एकै एकै एक तू ही ॥ एकै एक तू राइआ ॥
तउ किरपा ते सुख पाइआ ॥ 834 म 5

"नाना रुप सदा हरि तेरे तुझ ही महि समाही ॥" 162 म.3

"नानक ततु तत सिउ मिलिआ पुनरपि जनमि न आही ॥" 162 म_

"ओम गुरमुखि कीओ अकारा ॥ एकहि सूति ॥" 250 म.5

"एकहि आपि करावनहारा ॥" 251 म 5

(10) "सदा सदा तु एकु है तुधु दूजा खेलु रचाइआ ॥" 139 म 1

"आदि जुगादि हुणि होवत नानक एकै सोइ ॥" 254 म 5,

"सरब निरंतरि आपे आपि ॥" 412

जब सर्वत्र परमात्म सत्ता ही है तो तत्वतः न तो मेरा कभी जीव भाव था, न है, और न आगे होगा ही :

"ना हउ ना मै ना हउ होवा नानक सबहु बिचारि ॥" 139 म 1

54 ग्रंथ साहिबजी कहते हैं : कि जैसे स्वर्ण के आभूषण स्वर्ण से भिन्न नहीं हैं, जिस प्रकार जल की तरंग, फेन बुदबुदा जल से, जैसे दर्पण या जल में पड़ा प्रतिबिंब बिंब से भिन्न नही है, इसी प्रकार जीव अपने विशुद्ध स्वरुप में परमात्मा से भिन्न नहीं है। जिस प्रकार हजारों घड़ों में सीमित सा दीखने वाले आकास महाकास से भिन्न नहीं है क्योंकि घट के फूटने पर घटाकास और महाकास एक ही हो जाते हैं, ऐसे ही आत्मा और परमात्मा की तत्वत स्थिति है। जैसे काठ में अग्नि और दूध में घी पूर्ण रुप से व्याप्त है ऐसे ही परमात्म सर्वत्र उपलब्ध है।

1. "एकै कनिक अनिक भांति साजी बहु परकार रचाइओ ॥
   कहु नानक भरम गुरि खोई है इव ततै ततु मिलाइओ ॥" 205 म 5

2. "जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जलते भिन्न न होइ ॥
   इह परपंचु पारब्रहम की लीला बिचरत आन न कोइ ॥" 485 नामदेव

3. "जिउ प्रतिबिंबु बिंब कउ मिली है उदक कुंभ बिगराना ॥
   कहु कबीर ऐसा गुण भ्रम भागा तउ मनु सुंनि समाना ॥" 475 कबीर जी 4

   "जल बिचहु बिंब उठालिओ जल माहि समाईआ ॥" 696 म 5

4. जल ते उठहि अनिक तरंगा ॥ कनिक भूखन कीने बहु रंगा ॥" 736 म

   "सहस घटा महि एकु आकासु घट फूटे ते ओही प्रगासु ॥

5. "आपे कासट आपि हरि पिआरा विचि कासट अगनि रखाइआ ॥" 606 म 4

   "सगल बनसपति महि बैसंतरु सगल दूध महि घीआ ॥
   उँच नीच महि जोति समाणा घटि घटि माधउ जीआ ॥" 617 म 5

55 यदि इस सारे ब्रह्मांड में वही परमात्मा निवास करता है जो कि इस जीव के शरीर रूपी पिण्ड में है तो ब्रह्मांड और पिण्ड में अन्तर कहां रह गया। मनुष्य अंतरमुखी होकर हृदय में ही सब कुछ पा सकता है :

1. "जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥
   पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होई लखावै ॥" 695 भक्त पीपा जी

2. "काइआ अंदरि सभु किहु वसै जिसु खंड मंडल पाताला ॥
काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करै प्रतिपाला ॥
काइआ अंदरि आपे वसै अलखु न लखिआ जाई ॥......
काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ-ओपति जितु संसार ॥
सचै आपणा खेलु रचाइआ आवगउणु पासारा ॥" 754 म 3

3. "सागर महि बूंद बूंद महि सागर कवणु बुझै विधि जाणै ॥
...ऐसा गिआनु विचारै कोई ॥ तिस ते मुकति परम गति होई ॥ 878/79 म 1

5 6 समस्त ग्रंथ साहिबजी में आदि से अंत तक अद्वैतवाद का यह शाश्वत सिद्धांत कि परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कोई सत्ता है नही', पूरी तरह से छाया हुआ है। इसके कुछ ओर उदाहरण देकर हम इस प्रसंग को यहां समाप्त करते हैं :

(1) "तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥" 93 रैदास जी

भक्त रैदासजी कहते हैं कि हे परमात्मन् मेरे तेरे में ऐसा ही अंतर है जैसा स्वर्ण और उसके आभूषण में है, जैसा जल और उसकी तरंग में है।

(2) "हम किछु नाही एकै ओही ॥ आगे पाछै एको सोई ॥
नानक गुरि खोए भ्रम भंगा ॥ हम ओइ मिलि होए इक रंगा ॥" 391 म 5

नानक जी कहते हैं कि गुरु कृपा से जब अज्ञान का परदा हट गया तो मैं और परमात्मा एक ही रंग हो गए। वास्तव में "मैं" कभी था ही नही', केवल "वही' परमात्मा ही सदैव था।

(3) "अचरज कथा महा अनूप ॥ प्रातमा पारब्रहमु का रुपु ॥" 868 म 5

और इस एकत्व की दिव्य अवस्था में जीव आश्चर्यपूर्वक अनुभव करता है कि आत्मा तो स्वयं पारब्रह्म का ही रुप है।

(4) "और इस प्रकार अज्ञान का अंधकार नष्ट हो जाने पर निर्मल बुद्धि में परमात्म ज्ञान प्रकाशित हो उठा तब भक्त क्या देखता कि भगवान और भक्त दोनों एक ही हैं :

"काटे अगिआन तिमर निरमलिआ बुधि बिगास विवेका ॥
जिउ जल तरंग फेनु जल होई है सेवक ठाकुर भए एका ॥" 1209 म 5

(5) "तो ऐसी स्थिति में हरजिन यानी भक्त पुरुष कैसा होना चाहिए गुरु ग्रंथ साहिबजी उत्तर देते हैं स्वयं हरि के समान ही :

"हरि जनु ऐसा चाहिए जैसा हरि ही होइ ॥
जो प्रानि निस दिनु भजै रुप राम तिह जानु ॥
हरि जन हरि अंतरु नहीं नानक साची मानु ॥" 1427 म 9

(6) "और यह परमपद इस ज्ञान से प्राप्त होता है :

"पसरिओ आपि होइ अनंत तरंग ॥
लखे न जाहि पारब्रह्म के रंग ॥" 275 म.5

"अविनासी नाही किछु खंड ॥ धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥" 282 म.5

"ब्रह्ममहि जनु जन महि पारब्रह्मु ॥ एकहि आपि नहीं कहु भरमु ॥" 287 म 5
"जीअजंत के ठाकुरा आपेवरतणहार ॥ नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार ॥
".... तुम ते भिनं नहीं किहु होइ ॥ आपन सूति सभु जगत परोइ ॥" 292 म 5

और यह जो सरगुन-निर्गुन, या निराकार-साकार का भेद दिखलाई देता है, तत्वत उसकी कोई सत्ता है ही नहीं। ब्रह्म में यह भेद अज्ञान के कारण दिखलाई पड़ता है। इन निर्गुण और सगुण के एकत्व का प्रतिपादन करते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि निगुण परमात्मा ही अपना सगुण स्वरुप धारण कर लेता है, निर्गुण से ही सगुण की उत्पत्ति तथा विस्तार होता है, उस एक पुरुषोत्तम ने ही निर्गुण-सगुण नाम अपने पर थाप रखे हैं, आदि।

(7) "निरगुन आपि सरगुनु भी ओही ॥ कलाधरि जिनि सगली मोही ॥" 287 म 5

(8) "निरंकार आकार आपि निरगुन सरगुन एक ॥ एकहि एक बखाननो नानक एक अनेक ॥ "भिनं भिनं त्रैगुण बिसथारं ॥ निगुन से सरगुन द्रसटारं ॥" 250 म 5

(9) "सरगुन निरगुन निरंकार सुन समाधि आपि ॥ आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जाप ॥" 290 म 5

(10) "सरगुण निरगुण थापे नाउ ॥ दुह मिलि एकै कीनो ठाउ ॥" 387 म 5

(11) "निरंकार महि आकार समावै ॥ अकल कला सचु साचि टिकावै ॥" 414 म 1

(12) "निरगुन हरिआ ॥ सरगुन धरिआ ॥ अनिक कोठरिआ ॥ भिनंभिनं भिनंभिन करिआ ॥ ...रासि मंडलु कीनो आखारा ॥ सगलो साज रखिओ पासारा ॥" 746 म 5

(13) "आपि ही गुपत आपि परगटना ॥ आप ही घट घट आपि अलिपना ॥" 803 म 5

(14) "मैं नाही प्रभु सभु किछु तेरा ॥ ईधै निरगुन ऊधै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा ॥" 827 म 5

(15) "सभु करता सभु भुगता ॥ ...ओपति करता परलउ करता ॥
....निरगुन करता सरगुन करता ॥ गुरप्रसादि नानक सम द्रसटा" 862 म 1

(16) "निरंकारि आकारु उपाइआ ॥" 1065 म 3

(17) "करण कारण एकु ओही जिनि किआ आकारु ॥" 50 म 5

(18) "अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुन ते सरगुणु थीआ ॥" 940 म 1

5 7 ऊपर ग्रंथ साहिबजी ने जीव ही नहीं समस्त सृष्टि को परमात्मा का ही अभिन्न स्वरूप देखलाया है। इस्लाम के सिद्धांतों में इसकी कोई कल्पना ही नहीं है, और कुरान शरीफ में वर्णित अल्लाह, दुनिया और रुह के स्वरुप ग्रंथ साहिबजी की मान्यता भिन्न ही नहीं बिलकुल वेपरीत भी है। कुरान शरीफ में रुह द्वारा अल्लाह को प्राप्त करने की या उस तक पहुचने की तात्विक रुप से या व्यावहारिक रुप से कोई चर्चा नहीं है--फिर रुह अल्लाह के साथ एकत्व प्राप्त करे इस बात की चर्चा करना तो व्यर्थ की चेष्टा होगी

5 8 कुरान शरीफ में अल्लाह के सर्वव्यापी रुप की कल्पना नहीं है कुरान शरीफ के

अनुसार अल्लाह ने इस सारी सृष्टि को बनाया, आदमी को मिट्टी से बनाकर उसमें रुह फूँकी, वह सब कुछ जाननेवाला है और सब कुछ करने में समर्थ है, उसी ने फरिश्ते, और जिन्न बनाए, उसके बनाए फरिश्तों में से एक उसकी अवज्ञा करने के कारण "शैतान" कहलाया, अल्लाह ही ने स्वर्ग नरक बनाए और अपनी बात इन्सान तक पहुँचाने के लिए समय-समय पर पैगम्बर भेजे आदि। पर यह अल्लाह गुरु साहिबजी के परमात्मा की तरह स्वयं सृष्टि रुप मे नहीं सजा हुआ है, और इसलिये सृष्टि के कण-कण में व्याप्त नहीं है। कुरान शरीफ़ ने उसे मुख्य रूप में सातवें आसमान में अपने तख्त पर ही आसीन दिखलाया है। न कि प्रत्येक प्राणी के घट-घट में उनके हृदयों में जैसा कि ग्रंथ साहिबजी ने परमात्मा को दर्शाया है।

5.9 कुरान शरीफ़ के अनुसार रुह केवल इन्सान में है, अन्य प्राणियों में नहीं। उनमें केवल जान मात्र है। उधर ग्रंथ साहिबजी के अनुसार प्रत्येक प्राणी में जिसमें कीट और पंतग जेसे प्राणी भी आ जाते हैं, सभी वनस्पतियों यानी पेड़ पौधो में और पत्थर और पर्वत आदि जड पदार्थों में भी आत्मा का वास है। और इस आत्म सत्ता के वास के साथ-साथ उस सर्वव्यापी पारब्रह्म परमात्मा का भी उनमें उनके अन्तर्यामी रूप में निवास है। भक्त प्रह्लाद की कथा के माध्यम से, जिसमें पत्थर के खंभ को फाड़कर भगवान प्रकट हुए, ग्रंथ साहिबजी ने इसी मूल वेदान्तिक सिद्धांत को बार-बार स्थापित किया है। परमात्मा अन्तर्यामी रुप से हर जड चेतन वस्तु में स्थित ही नहीं है वरन् वह इनका नियमन भी करता है। अन्तर्यामी रुप की एक झलक हमने बृहदारण्यक उपनिषद् मे वर्णित महर्षि याज्ञवल्क्य और उद्दालक के संवाद के अनुसार आरम्भ में दी है। यहाँ प्रसंग के अनुसार उसको जरा विस्तार से बतलाना आवश्यक है। याज्ञवल्क्य जी उद्दालकजी को उनके प्रश्न के उत्तर में कहते हैं :

समस्त पंच महाभूतों, दिशाओं, सूर्य, चंद्र, तारा गण, तम, तेज, स्वर्गलोक आदि जड़ वस्तुओं का वह परमात्मा ही अर्न्तयामी है। जैसे कि :

1. "जो आकाश में रहने वाला आकाश के भीतर है, आकाश जिसे नहीं जानता, आकाश जिस का शरीर है और जो भीतर रहकर आकाश का नियमन करता है, वह तेरा आत्मा अन्तर्यामी अमृत है"।

2. वह समस्त भूतों यानी प्राणियों का भी अन्तर्यामी है यह बतलाते हुए कहते हैं · "जो समस्त भूतो में रहने वाला समस्त भूतों के भीतर है, समस्त भूत जिसे नहीं जानते, समस्त भूत जिसके शरीर हैं, और जो भीतर रहकर समस्त भूतों का नियमन करता है, वह तेरा आत्मा अन्तर्यामी है।"

3. और वह परब्रह्म परमात्मा समस्त प्राणों का भी अन्तर्यामी है, यह बतलाते हुए याज्ञवल्क्य जी कहते हैं :

"जो प्राणों में रहने वाला प्राणों के भीतर है, प्राण जिसे नहीं जानता, प्राण जिसका शरीर है, और जो भीतर रहकर प्राणों का नियमन करता है, वह तेरा आत्मा अन्तर्यामी अमृत है।"

इसी प्रकार वह सभी कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों यानी आँख, नाक, कान, त्वचा, वाक मन आदि का भी अन्तर्यामी है के लिये

"जो मन में रहने वाला मन के भीतर है मन जिसे नहीं जानता मन जिसका शरीर

है, और जो भीतर रहकर मन का नियमन करता है वह तेरा आत्मा अन्तर्यामी है।"

इस तत्वज्ञान का संदेश स्पष्ट है। वह अन्तर्यामी परब्रह्म परमात्मा ही सबके आत्मरूप से स्थित है और अपनी-अपनी देह में आत्मभाव रखने वाला जीव तत्वतः अन्तर्यामी परमात्मा का ही अभिन्न स्वरुप है।

60 इसी महत ज्ञान को जनवाणी में उतारते हुए गुरु ग्रंथ साहिबजी कहते हैं :

"सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥ घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥
धारनि माहि आकास पइआल ॥ सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥
वनि तनि परबति है पारब्रह्मु ॥ पउण पाणी बैसंतर माहि ॥
चरि कुटं दहदिसे समाहि ॥ तिस ते भिन्न नहीं को ठाउ ॥
गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥ 293/294 म 5

यानी वह परमात्मा अन्तर्यामी रूप से पृथ्वी, पाताल, आकाश और सभी लोक, वन, तिनकों, पर्वतों, हवा, पानी और आग, चारों दिशाओं में घट-घट वासी के रूप में व्याप रहा है। उससे भिन्न कुछ भी नहीं है। गुरु कृपा से प्राप्त इस ज्ञान द्वारा नानक परमानंद में मगन है। और तत्वज्ञान के साक्षी के रूप में वेद पुराण और स्मृतियों का प्रमाण देते हुए नानक जी कहते हैं चंद्र, सूर्य और नक्षत्रों में भी वही परमात्मा अन्तर्यामी रूप से विद्यमान है :

"वेद पुरान सिंमृति महि देखु। ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥" 294 म 5

"सुख निधान प्रभु एकु है अविनासी सुणिआ ॥
जलि थाले महि अति पूरिआ घटि-घटि हरि भणिआ ॥

ऊँच नीच सभ इक समानि कीट हसती वाणिआ ॥ 319 म 5

कीट से लेकर हाथी तक में वह परब्रह्म ही अन्तर्यामी रूप में स्थित है। इसलिये घट-घट व्यापी उस परमात्मा को नमन करते हुए कहते हैं :

"घट घट अंतरि पारब्रह्मु नमसकारिआ ॥" 08 म 5

"रसना जपि जपि जीवै सुआमी ॥ पारब्रहम प्रभु अन्तर्यामी ॥" 07 म.5

"तेरा कीता जिसु लगै मीठा ॥
"घटि घटि पारब्रहमु तिनि जनि डीठा ॥
थान थनंतरि तू है तू है इको इकु वरतावणिआ ॥" 31 म 5

वह परब्रहम परमात्मा किस प्रकार से घट-घट वासी बना हुआ है, किस प्रकार पूर्ण रूप से अन्तर्यामी बना हुआ है, इसके विभिन्न दिव्य स्वरूपों की झलकियाँ ग्रंथ साहिबजी इस प्रकार दर्शाते है :

1. **"करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥"** 266 म 5
2. **"सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥"**
   तू घटि-घटि अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥" 548 म 4
3. **"बटक बीज महि रवि रहिओ जा को तीनि लोक बिसथार ॥"** 340 कबीर जी

कबीर जी की इस वाणी में परमात्मा की सर्वव्यापकता को बट बीज के वैदिक ग से दर्शाया गया है। जिस प्रकार बट का महान वृक्ष उत्पन्न होने से पूर्व अपने नन्हे मे ही समाया हुआ था, उसकी अपने बीज से अलग सत्ता कभी नहीं थी। इसी प्रकार न लोकों वाली सृष्टि परमात्मा के एक अंश मात्र से ही उत्पन्न हुई है और उसी मे है।

"अतरि एको बाहरि एको सभ महि एकु समाइऐ ॥
घटि अवघटि रविआ सभ ठाई हरि पूरन ब्रह्मु दिखाइऐ ॥" 528 म 5

"जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥ घटि घटि पूरन ब्रह्म प्रगास ॥" 277 म 5

"तू सभि-घट भोगहि आपि तुधु लेपु न लाहरा ॥
तू पुरखु अनंदी अनंत सभ जोति समाहरा ॥" 1096 म 5

"घट घट अंतरि ब्रह्मु लुकाइआ घटि घटि जोति सबाई ॥" 597 म ।

"एकु हमारा अन्तर्यामी ॥ घर एका मैं टिक एकसु की सिरि साहा बड पुरखु सुआमी ॥" 1347 म 5

"आपे जलु आपे थलु थम्हनु आपे किआ घटि घटि वासा ॥
आपे नरु आपे फुनि नारी आपे सारि आप ही पासा ॥" 1403 म.4

"जल थल पूरि रहिआ बनवारी घटि घटि नदरि निहालें ॥" 79 म 5

"सभु को आसै तेरी बैठा ॥ घट घट अंतरि तूं है बुठा ॥" 97 म 5

"अगम अगोचर साहिब मेरा ॥ घट घट अंतरि वरतै नेरा ॥" 106 म 5

"घटि घटि रमईआ रमत राम राइ ॥ 172 म.4

"जग महि आइआ सो परवाणु ॥ घटि घटि अपण सुआमी जाणु ॥" 198 म.5

"जाचिकु जाचै नामु तेरा सुआमी घट घट अंतरि सोई रे ॥ 209 म 5

"आदि अंते मधि पूरन सरवत्र घटि घटि आही ॥" 548

और इस अन्तर्यामी की आनन्दमयी स्थिति का अत्यन्त भावमय और भक्तिमय वर्णन जुनदेव जी महाराज की वाणी में इस प्रकार मिलता है :

"पूछउ संत मेरो ठाकुर कैसा ॥
..... अंग अंग सुखदाई पूरन ब्रहमाई थान थनंतर देसा ॥
बंधन ते मुकता घटि घटि जुगता कहि न सकउ हरि जैसा ॥ 1237 म 5

जब यह परब्रह्म परमात्मा निकट से निकट हृदय में ही विराजमान हैं, तब उसे बाहर की क्या आवश्यकता है। उसे बाहर ढूँढना तो व्यर्थ का ही श्रम है। गुरु तेगबहादुर जी प्रसिद्ध और उद्बोधाक वाणी हम सबके हृदय में सदैव गूँजती रहती है

1 "काहे रे बन खोजन जाई ॥ सरब निवासी सदा अलेपा तोही संग समाई ॥
पुष्प मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतर घट ही खोजहु भाई ॥ 684 म 9

जैसे पुष्प में सुगन्ध निरंतर बसी रहती है जैसे दर्पण में पुरुष की छाया दीखती है वैसे यह हरि, यह परमात्मा तुम्हारे हृदय में निरंतर बस रहा है। उसे क्यों जंगलों में जाकर खोजता , उसे तो तू हृदय में ही खोज।

2 यही बात शेख फरीद भी कहते है :
"फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोडेहि ॥
बसी रबु हिआले ऐ जंगल किआ ढूंढेहि ॥" 1378 शेख फरीद

3 "सभ किछु घट महि बाहरि नाही ॥ बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥" 02 म 5

4 "मेरा प्रभु भरपूरि रहिआ सभ थाई ॥ गुर परसादी घर ही महि पाई ॥" 126 म 3

5 "घर महि धरती धउलु पाताला ॥ घर ही महि प्रीतमु सदा है बाला ॥"

6 "ढढा ढूँढत कह फिरहु ढुढनु इआ मन माहि ॥
संगि तुहारै प्रभु बसै बनु बनु कहा फिराहि ॥" 256 म 5

7. "किआ जंगलु ढूढी जाइ मैं घरि बनु हरीआवला ॥
सचि टिकै घरि आई सबदि उतावला ॥" 420 म. 1

नानक जी कहते हैं मेरे हृदय में ही हरा भरा वन है। मैं परमात्मा को बाहर के जगल क्यों ढूँढने जाऊँ।

8 "बाहर भेखि न पाईऐ प्रभु अन्तरजामी ॥" 099 म 5

9 "सभ कै संगी नाही दूरि ॥ ....मनि तनि वसि रहे गोपाल ॥" 988 म.5

2 नीचे हम परमात्मा के घट-घट वासी संबंधित कुछ अन्य मार्मिक वाणियाँ दे रहे हैं जिससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि ग्रंथ साहिबजी कुरान शरीफ़ से कितना भिन्न हैं .

1 "घटि घटि सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥" 772

2 "सभि महि रवि रहिआ सो प्रभु अन्तरजामी राम ॥" 775

3 "घटि घटि वासी सख निवासी नेरै ही ते नेरा ॥" 784

4 "अगम अगोचर रुपु न रेखिआ ॥ खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ॥" 838

5. "जह देखा तह अन्तर्यामी ॥ निमख न विसरहु प्रभु मेरे सुआमी ॥" 085

6 "अविगत नाथु अगोचर सुआमी ॥ पूरि रहिआ घट अंतरजामी ॥"

7. "घटि घटि आतम रामु है प्रभि खेलु किओ रंगि रीति ॥" 136

8 "तू जानहि सभ विधि बूझहि आपे जन नानक के प्रभु घटि घटे घटि घटे घटि हरि घाट ॥" 1297

9. "घटि घटि पूरि रहिआ प्रभु एको गुरमुखि परगटु हरि हरि नामु ॥" 1334

10. "घटि घटि रमईआ रमत राम राई सभ वरतै सभ महि ईक ॥" 336

11. "अकुल पुरखु इकु चलितु उपाइआ ॥ घटि घटि अंतरि ब्रह्मु लुकाइआ ॥"

12. "घट घट में हरि जू वसै संतन कहिओ पुकारि ॥
"कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पार ॥" 1426 म.9

13. "एक बिना दूजा नहीं जानै ॥ घट घट अंतरि पारब्रह्मु पछानै ।" 751 म 5

14. "पारब्रह्म आजोनी संभउ सरब धान घट बीठा ॥" 1212 म 5

15. "जह जह देखा तह तह सुआमी ॥ तू घटि घटि रविआ अन्तर्यामी ॥
और नामदेव जी का यह मार्मिक और भक्ति तथा ज्ञान से भरा शब्द तो हम नित ही सुनते है

सभै घट रामु बोले रामा बोलै ॥ राम बिना को बौले रे ॥
एकल माटी कुंजर चींटी भाजन है बहु नान्हा रे ॥
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥" 988 नामदेव जी

6 3 जब इस प्रकार वहाँ परब्रह्म परमात्मा अन्तर्यामी रूप से सबमें ओत-प्रोत है, तब नानक जी कहते हैं किससे बैर, किससे भय, कौन शत्रु और कौन पराया है। नानक जी सभी को परमात्मवत् मानकर उनके चरणों में अपना शीश नवाते हैं।

1. "ना को मेरा दुसमन रहिआ ना हम किस के बैराई ॥
ब्रह्म पसारुपसरिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ॥
सभु मो मीतु हम आपन कीना हम सभना को साजन ॥
दूर पराइओ मन का विरहा ना मेलु किओ मेरे राजन ॥" 67 म.5

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि मैं किसी को शत्रु नहीं, वरन् सबको अपना मित्र मानता हूँ। मैने उन्हें अपना मित्र बना लिया, और मैं भी उनका मित्र हूँ।

2. "भय काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आनि ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानी ॥" 1427 म 9

और गुरु तेगबहादुर जी ने इस ज्ञान को अपने जीवन में सार्थक करके दिखलाया। उन्होंने स्वय कभी किसी को भय नहीं दिया। वे तो सबको संसार सागर में डूबने के भय से बचाने के लिए ही आए थे। और न स्वयं ही किसी से भयभीत हुए। औरंगजेब जैसा बलवान और दुर्दांत बादशाह भी अपनी समस्त क्रूरता से उन्हें भयभीत नहीं कर सका। गुरु महाराज जी सहज सिद्ध के समान, महर्षि दधीचि के समान, अपने जीवन की बलि देकर समस्त हिन्दू समाज को भयरहित कर गये।

3. "बबा बैरु न करीऐ काहू ॥ घटि घटि अपणा सुआमी जाणु ॥"

4. तो ऐसी स्थिति में ब्रह्मज्ञानी गुरु रामदास जी महाराज सभी को ब्रह्म रूप मान उनके चरणों में अपना शीष नवाते हैं

"एक जोति एको मनि बसिआ सभ ब्रह्म द्रिसटि इकु कीजै ॥
आतम रामु सभ एकै है पसरे सभ चरन तले सिरु दीजै ॥" 1325 म.4

कुरान शरीफ की सभी बातें जिनकी हम आगे भी विवेचना करेगें, ग्रंथ साहिबजी की इस शिक्षा के विरुद्ध और विपरीत हैं।

"इस अध्याय का समापन हम इस वेद मंत्र से करते हैं :

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥ ईशावास्योपनिषद्। 6

अर्थात् "परन्तु जो मनुष्य सम्पूर्ण प्राणियों को परमात्मा में निरन्तर देखता है, और सम्पूर्ण प्राणियों में परमात्मा को देखता है उसके पश्चात् वह किसी से घृणा नहीं करता।"

अल्लाह की नियामतें

6.4 कुरान शरीफ के 55वें अध्याय में अल्लाह ने बड़े ही भावनात्मक रुप से 98 आयतो मे अपनी नियामतों का वर्णन किया है। इन्सानों और जिन्नों को प्रत्यक्ष सम्बोधित करते हुए उन्हे नरक और स्वर्ग की भी विशद् झलकी इन नियामतों में दर्शायी है।

"और उसी ने सृष्टि के फायदे के लिए जमीन बिछा दी है।" 10 "कि उसमें मेवे है और खजूर के पेड़ हैं जिनके मेवों पर कुदरती गिलाफ चढ़े होते हैं"—और अनाज जिसके साथ भूसा है और खुशबूदार फूल हैं"—12 "फिर तुम दोनों अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे" 13 "(उसी ने) मनुष्य को ठीकरे की तरह खनखनाती मिट्टी से पैदा किया" 14 "और जिन्नों को (बनाया) आग की लौ से" 15 "फिर तुम दोनो अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे" 16 "दानों (नदियों में) से मोती और मूगे निकलते हैं"—22 "फिर तुम दोनों अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।"—23 "और उसी के जहाज जो दरिया मे पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े रहते है" —24 "फिर तुम कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे"—21

"ऐ जिन्नों और आदमियों के गिरोहो, अगर तुमसे हो सके कि आसमानों और जमीन के किनारे से (अल्लाह की गिरफ्त से) निकल भागो तो निकल कर देखो। मगर तुम निकल नही सकोगे"33 "फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।" 34

"और तुम पर आग के शोले और धुआँ छोड़ा जावेगा और तुम मदद न पा सकोगे।" 35 "फिर (कयामत के दिन) जब आसमान फटे और तेल की तलछट की मानिन्द लाल हो जाय।" 37 "फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।" 38

"गुनाहगारों को उनकी सूरत से पहचान लिया जायगा फिर मत्थे के बाल और पैरों के बल पकड़े जायेंगे और उनको खींचकर नरक में ले जायेगें।" 41 "फिर तुम अपने परवरदिगार की किन नियामतों को झुठलाओगे।" 42 "यही दोज़ख है जिसको गुनाहगार झुठलाते हैं।"43 "दोज़ख में और खौलते हुए पानी में फिरते हैं।" 44 "फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।" 45

"और जो मनुष्य अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता है उसको (बहिश्त के) दो बाग मिलेंगे।" 46 "फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।"47

"(वह बाग) जिसमें बहुत सी टहनियां हैं।" 48 "इनमें दो चश्में बहते होंगे।" 50 "इन पर मेवे की दो किस्में होंगी।" 52

" यह जन्नतवाले बिछौने पर तकिये लगाये बैठे) होंगे जिनके अस्तर ताफ्ते के

होगें और दोनों बागों के मेवे (बहुतायत से) झुक रहे होंगे।" 54

"उनमें (लजाती नीची) निगाहवाली (पाक हूरें) होंगी। उनसे और पहिले न तो किसी मनुष्य ने हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने।" 56 "वे (हूरें क्या गोया) लाल और मूंगे है।" 58 "फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।" 59 "और इन दो बागों के सिवाय और दो बाग हैं।" 62 "फिर ऐ (इन्सानों और जिन्नों) तुम दोना अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।" 63 "दोनों (बाग) हरियाली से खूब गहरे सब्ज हैं।" 64 "उनमे दो चश्में उबलते होंगें।" 66

"उन दोनों (बागो) में मेवे और खजूरें और अनार (होंगे)।" 68 "उन सब में नेक खूबसूरत औरतें होंगी।" 70 "फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।" 71

"हूरें जो अपने-अपने खेमों में छिपी बैठी हैं।" 72 "(इन जन्नतवालों से) पहले न तो किसी इन्सान ने उन हूरों को हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने।" 74 "फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।" 75 "जन्नतवाले, यहाँ सब्ज कालीनों और उम्दः उम्दः फर्शों पर तकिये लगाये बैठे होंगे।" 76 "फिर ए इन्सानों और जिन्नो, तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।" 77 "(ऐ पैगम्बर) तुम्हारे परवरदिगार का नाम बड़ा बरकतवाला, बेहद बड़ाईवाला और एहसान करने वाला है।" 78

6 5 ग्रंथ साहिबजी में उपरोक्त बतलाए गए अल्लाह के लक्षण, निशानियाँ और नियामतो की कल्पना तक नहीं है। वहां परब्रहम परमात्मा के निर्गुण-सरगुण भाव, घट-घट वासी भाव, सर्व भाव, माता-पिता मित्र भाव, सभी प्राणियों के प्रति मित्र भाव, लीला भाव, आनन्द भाव, अवतार भाव, परब्रह्म भाव, प्रिया-प्रीतम भाव आदि की चर्चा है जो आगे चलकर यथास्थान विस्तारपूर्वक की जायेगी। जीव के स्वरुप, माया, अवतार भाव और ज्ञान भक्ति और प्रेम और वैराग्य का ग्रंथ साहिबजी में जो स्वरुप वर्णित है उनकी भी चर्चा और वर्णन आगे चलकर विस्तारपूर्वक की जायेगी।

❑

अल्लाह द्वारा सृष्टि रचना

6 6 "निसन्देह तुम्हारा परवरदिगार अल्लाह है जिसने छह दिन में जमीन और आसमानो को पैदा किया, फिर अर्श (तख्त) पर जा बिराजा। वही रात से दिन को ढक लेता है, वह जल्दी से उसे आकर ढक लेती है। और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा और तारों को पैदा किया कि वह सब अल्लाह की हुक्मबरदारी में लगे हैं। जान लो हर चीज अल्लाह ही की सिरजी हुई है और हुक्म भी अल्लाह ही का है। वही संसार का पालनेवाला और बड़ी बरकत "वाला है" 7/54—(इसलिए) अपने परवरदिगार से गिड़गिड़ाकर और चुपके-चुपके दुआ करते रहो।" 7/55

बेशक तुम्हारा परवरदिगार वही अल्लाह है, जिसने छह दिन में आसमानों और जमीन को बनाया, फिर अर्श पर जा बिराजा। 10/3

"और हमने आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के लिए उसको तारों से सजाया" 15/16 "और हमने जमीन को फैलाया और हमने उसमें बोझ यानी पहाड़ डाल दिये और हमने इससे हर एक चीज तालमेल के साथ पैदा की।" 15/19

"अगर जमीन आसमानों में अल्लाह के सिवाय और कोई पूजित होते तो जमीन-आसमान-दोनो अस्त व्यस्त हो जाते। तो जैसी-जैसी बातें ये लोग बनाते हैं अल्लाह जो अर्श (तख्त) का मालिक है इनके पाक है।" 21/22

"जिसने आसमानों और जमीन और जो कुछ उनके बीच में है सबको छह दिन में पैदा किया, फिर तख्त पर जा बिराजा।" 25/59

"और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके बीच में है छह दिनो मे बनाया और हम थके नहीं।" 50/38

"और सूरज व चांद को तुम्हारे काम में लगाया और रात-दिन को तुम्हारी सेवा में लगाया।" 14/33 "और तुमको हर चीज में से कुछ दिया जो तुमने मांगा और अगर अल्लाह के एहसानों को गिनना चाहो तो पूरा पूरा गिन न सकोगे। बेशक मनुष्य बड़ा बेइन्साफ और नाशुका (कृतघ्नी) है।" 14/34

"वही है जिसने छह दिन में आसमानों और जमीन को बनाया फिर तख्त पर कायम हुआ। जो चीज जमीन में दाखिल होती है और जो चीज जमीन के बाहर आती है और जो चीज आसमान से उतरती है और जो चीज आसमान की तरफ चढ़ती है वह सब जानता है।" 57/4

6.7 और किस प्रकार आसमान और जमीन को अलग किया यह बतलाते हुए अल्लाह कहते हैं; "क्या जो लोग इन्कार करने वाले हैं उन्होंनें नहीं देखा कि आसमान और जमीन जो पहले आपस में मिले जुले थे फिर हमने उनको अलग-अलग किया और हमने पानी से तमाम चीजें बनाई तो क्या यह भी लोग ईमान नहीं लाते " 21/30

अब हम अल्लाह द्वारा कुरान शरीफ में अपनी पहचान या अपनी स्थिति की प्रामाणिकता दर्शानेवाली जो निशानियाँ बतलाई गई हैं उनकी विस्तार से चर्चा करेंगे। साथ ही कुरान शरीफ के 55 वे अध्याय में मनुष्यों और जिन्नों को सम्बोधन करते हुए अल्लाह ने अपनी जो नियामतें बतलाई हैं उनका भी वर्णन करेंगे ताकि हम अल्लाह के स्वरुप को और भी स्पष्ट रुप से कुरान के अनुसार समझ सकें।

6.8 लगभग 200 आयतों में अल्लाह ने उन चीजों या उन मूल बातों का वर्णन किया है जिनमें अल्लाह के होने की निशानियाँ देखी जा सकती हैं। और फिर निशानियों के सहारे अल्लाह पर, उसके पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहिब पर और अल्लाह की आयतों पर ईमान लाकर अपना जीवन सफल कर परलोक में स्वर्ग या बहिश्त का अधिकारी बन सकता है। हमने नीचे भिन्न-भिन्न निशानियों को देने का प्रयत्न किया है और जो निशानियाँ दोहराई गई हैं उनकी आयतों के नम्बर मात्र दिये हैं :

"बेशक ईमान लाने वालों के लिए आसमानों और जमीन में निशानियाँ हैं।" 45/3 "और (लोगों) तुम्हारी पैदाइश में और जानवरों में जिनको (जमीन पर) बिखेरता रहता है, उन लोगों के लिए जो यकीन रखते हैं निशानियाँ हैं।" 45/4

"अल्लाह ही है जिसने नदी को तुम्हारे वश में कर दिया है ताकि अल्लाह के हुक्म से उसमें जहाज चलें और तुम लोग उसकी कृपा से रोजी ढूँढो और शायद तुम अल्लाह का शुक्र मानों।" 45/12 "और जो कुछ आसमानों में है और जमीन में है उसमें अपने हुक्म से उन सब को तुम्हारे काम में लगा रखा है। बेशक इनमें उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं, निशानियाँ हैं।" 45/13

बेशक आसमानों और जमीन के पैदा करने में, और रात और दिन के आने जाने में, और कश्तियों में जो लोगों के फायदे की चीजें समुद्र में लेकर चलती हैं, और मेह में जिसको अल्लाह ने आकाश से बरसाया है....और बादल में....उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं, निशानियाँ हैं।" 2/164

6.9 आयतें 2/258,259,260 में हजरत इब्राहिम के प्रसंग में वर्णित अल्लाह की निशानियाँ बतलाते हुए आयत 2/260 में आता है : "इब्राहिम ने (अल्लाह) से निवेदन किया कि ऐ मेरे परवरदिगार मुझको दिखा कि तू मुर्दो को कैसे जिन्दा करेगा—(अल्लाह ने) फर्माया तो चार पक्षी लो और उनको अपने पास हिला मिला लो, फिर एक-एक पहाड़ी पर उनका एक एक भाग रख दो फिर उनको बुलाओ तो वह तुम्हारे पास दौड़ आएगें।"

7.0 ईसा की चर्चा करते हुए कुरान शरीफ आयत 3/47,48 में कहते हैं कि ईसा कहेंगे कि "मै तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ से तुम्हारे पास निशानियाँ लेकर आया हूँ, कि मैं तुम्हारे सामने मिट्टी से पक्षी की शक्ल बनाकर फिर उसमे फूँक मारता हूं तो अल्लाह के हुक्म से सचमुच पक्षी हो जाता है। और अल्लाह ही की हुक्म से जन्म के अन्धों और कोढ़ियों को भला चंगा और मुर्दो को जिन्दा करता हूँ....अगर तुममें ईमान है तो बेशक इन बातों में तुम्हारे लिए पूरी निशानियाँ हैं।" 3/49, 5/110 से 113

7.1 अल्लाह ही दाने और गुठली को फोड़ने वाला है मुर्दे से जिन्दा और जिन्दा से मुर्दा

निकालता है–" 6/95–"उसी के लिए प्रातः काल पौ फटती है और उसी ने आराम के लिए रात और हिसाब से सूरज और चांद को रखा है–6/96–"वही है जिसने तुम लोगों के लिए तारे बनाए ताकि जंगल और समन्दर के अंधेरे में उनसे राह पाओ–" 6/97 –"और वही है जिसने तुम सबको एक शरीर आदम से पैदा किया–" 6/98 –"और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया, हर किस्म के अंकुर निकाले–हरियाली निकाल खड़ी की उनसे हम गुँथे हुए दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे में से जो गुच्छे झुके पड़ते हैं और अंगूर के दाने निकलते है और जैतून व अनार तो उसका फल और फल का पकना देखो–निसन्देह जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिए इनमें निशानियाँ हैं।" 6/99

72 "इसी तरह हम (कयामत के दिन) मुर्दो को भी निकालकर खड़ा करेंगे। यह सब हमारी कुदरत देखकर शायद तुम ध्यान दो।" 7/57

"और वही है जिसने जमीन को फैलाया और उसने पहाड़ और नदी बनाई और उसमें हर तरह के फलों की दो दो किस्में (नर-मादा) पैदा की, रात को दिन ढांपता है, बेशक इन (अलौकिक) बातों में, उन लोगों के लिए जो ध्यान रखते हैं, निशानियाँ हैं।" 13/3

"हर मादा जो (बच्चा) पेट में लिए हुए है उसको अल्लाह जानता है और पेट का घटना-बढ़ना उसको मालूम रहता है। और उसके पास हर चीज का (सही) आंकड़ा है।"

"वही है जो बिजली की चमक तुम लोगों को दिखाता है जिससे डर भी होता है और उम्मीद भी होती है और भारी बादलों को उठाता है।" 13/12 "और वह कड़कती बिजलिया भेजता है फिर जिस पर चाहता है उस पर उन्हें गिरा देता है।" 13/13

"और उसी ने चारपायों को पैदा किया जिनसे तुम लोगों के जाड़े से बचने के सामान और बहुत फायदे हैं और उन चौपायों में से तुम कुछ को खाते हो।" 16/5" –और उसने घोडों, खच्चरों और गधों को पैदा किया ताकि तुम उन पर सवार हो और तुम्हारी शोभा हो"– 16/8 "वही है जिसने नदी को तुम्हारे अधीन लगा रखा है ताकि उसमें से मछलियाँ निकालकर उनका ताजा मांस खाओ और उसमें से जेवर मोती वगैरह निकालो जिनको तुम लोग पहनते हो" –16/14 –"और पहाड़ जमीन पर गाड़े ताकि (जमीन) तुम्हे लेकर किसी तरफ झुक न पडे और नदियां और रास्ते बनाये ताकि जा सको।" 16/15

"और (लोगो) तुम्हारे लिए चौपायों में भी सोचने (समझने) की जगह है कि उनके पेट मे जो गोबर और खून (वगैरह भरा) है उसमें से हम तुमको खालिस दूध पिलाते हैं जो पीने वालो को भला लगता है" –16/66

"तुम्हारे घरों को ठिकाना बनाया और चौपायों की खालों से तुम्हारे लिए डेरे बनाए।" 16/80

73 "क्या तुमने नहीं ध्यान दिया कि अल्लाह ने उन चीजों को, जो जमीन में हैं, तुम लोगो के बस में दिया है और किश्ती उसके हुक्म से नदी में चलती है और आसमान को जमीन पर गिरने से थामें है सिवाय इसके कि उसी का हुक्म हो जाय।" 22/65

"और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया और तुम इन्सान होकर फैले हो" 30/20 "तो अल्लाह की रहमत की निशानियों को देख कि जमीन को

उसके मरे होने के बाद कैसे जिलाता है। बेशक यह (अल्लाह) मुर्दों को जिन्दा कर देने वाला है।" 30/50

"और इनके लिए एक निशानी रात है, कि हम उनमें से दिन को खींच निकालते है, फिर यह लोग अंधेरे में रह जाते हैं।" 36/37– "न तो सूरज ही से बन पड़ता है कि चाँद को पकड़ ले और न रात ही दिन से आगे आ सकती है।" 36/40

7 4 "लोगों के मरने के समय अल्लाह उनकी जानों को कब्ज कर लेता और जो लोग मरे नही उनकी (जाने सोते समय) नीद में–बेशक जो ध्यान दें उनके लिए इसमें निशानियां है।" 39/42 "क्या इनको मालूम नहीं कि अल्लाह जिसकी रोजी चाहता है बढ़ा देता है और नपी तुली कर देता है। बेशक इसमें ईमानवालों के लिए निशानियाँ हैं।" 39/52

"और जो कुछ आसमानों में है और जमीन है उसने अपने हुक्म से उन सबको तुम्हारे काम में लगा रखा है। बेशक इनमें उन लोगों के लिए जो ध्यान देते हैं निशानियां है।" 45/13

"और हमने आसमानों को अपने बल से बनाया और हमको सब सामर्थ्य है।" 51/47 "और हमी ने जमीन को बिछाया सो (देखो) हम क्या खूब बिछाने वाले हैं।" 51/48

"सो (लोगों बस) अल्लाह की तरफ लपको। बेशक मैं उसकी तरफ से ... को माफ तौर पर डर सुनाने वाला हूँ।" 51/50

7 5 "और हमने अपने पैगम्बरों को खुले-खुले चमत्कार देकर भेजा और उनकी मारिफत किताबें उतारी और तराजू (यानी शरीयत) उतारी ताकि लोग इन्साफ पर कायम रहें। और लोहा पैदा किया जिसमें (लड़ाई की) जोखिम है और लोगों के लिए फायदे भी हैं और एक फायदा यह भी है कि अल्लाह उन लोगों को मालूम कर लें कि कौन अनदेखे उसकी और उसके रसूलों की मदद करता है।" 57/25

"तो क्या ऊँटों की तरफ नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं।" 88/17 "और आसमानों की तरफ (नहीं देखते) कैसा ऊँचा बनाया है।" 88/18 "और पहाड़ों की तरफ कि वह कैसे खड़े किये गये हैं।" 88/19 "और जमीन की तरफ (क्या नजर नहीं डालते) कि कैसी साफ बिछायी गई है।" 88/20

"तो (ऐ पैगम्बर) याद दिलाये जा, बस तेरा काम ही याद दिलाते रहना है।" 88/21

ऊपर दी गई आयतों में अल्लाह ने प्रकृति के तमाम रूपों और पशु-पक्षियों आदि के द्वारा अपनी निशानियाँ बतलाई हैं। और साथ ही यह भी स्पष्ट कहा है कि ये सब ईमानवाले मनुष्यों के भोग के लिए हैं।

अन्य आयतों में जिनमें मुख्यतः ऊपर दी गई निशानियाँ पुनः पुनः बतलाई गई हैं वे निम्न हैं :

7/57, 58 10/5, 6, 13/24.4, 14/32.33, 16/6.7, 9 से 13, 16, 17, 18, 65.67 से 70 78.79.80 से 82, 17/12, 21/31, 32.33, 22/5.6.18.63, 23/17 से 22, 24/41 से 46, 25/45 से 50.53.61.62, 27/86, 29/19.20, 30/19 से 27.46 से 50.54, 31/10.29.30 34, 34/2, 35/9.12.13.27.28, 36/33 से 36.38.39.41 से 46.80.81, 37/5.6.21, 45/3 4 5.12, 50/6 से 11, 51/49, 80/25 से 32

□

सृष्टि की उत्पत्ति और जीव का स्वरूप

76 ग्रंथ साहिबजी में कुरान शरीफ़ में वर्णित फरिश्तों, जिन्नों और शैतान की कोई कल्पना ही नहीं है। चर्चा की बात तो दूर रही, ग्रंथ साहिबजी के अनुसार तो चींटी या कीट पतंग से लेकर देवताओ के राजा इंद्र तक सभी प्राणी और स्वयं सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी भी चौरासी लाख योनियों के अंतर्गत आ जाते हैं। इस प्रकार ग्रंथ साहिबजी के अनुसार फरिश्ते, जिन्न ओर शैतान भी इन्हीं चौरासी लाख योनियों में विभिन्न प्रकार की शक्तियो से सम्पन्न जीव योनियां ही मानी जाएंगीं।

और न ही ग्रंथ साहिबजी में परमात्मा द्वारा अपने पर विश्वास लाने या दिलवाने के लिए कोई कसमें खाई गई हैं।

ग्रंथ साहिबजी में वर्णित सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय और जीव के स्वरुप का बडे गहराई एवं विस्तार से वर्णन किया गया है। जीवों के विभिन्न स्वरुप उनका वास्तविक स्वरूप और जीवों के इस देह में आने के मुख्य लक्ष्य की चर्चा ग्रंथ साहिबजी में पग-पग पर आती है।

ग्रंथ साहिबजी में वर्णित सृष्टि की उत्पत्ति और लय तथा जीव के तत्त्व स्वरूप को सही रूप में समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम ग्रंथ में बार-बार चर्चित माया और उसके तीनों गुणों-यानी सत, रज और तम को पहले समझ लें। और साथ ही माया से उत्पन्न अहकार और द्वैतभाव की, जिनसे ऊपर उठने का ग्रंथ साहिबजी बार-बार उपदेश देते हैं, ओर भी दृष्टिपात करलें। माया और उसके तीनों गुणों का शास्त्रीय स्वरुप इस प्रकार है :

77 सृष्टि रचना के पूर्व एक मात्र अद्वितीय ब्रह्म ही सर्वत्र बिराजमान था। ब्रह्म के अश मात्र में सृष्टि रचना के समय ब्रह्म से अव्यक्त यानि मूल प्रकृति का प्रादुर्भाव हुआ। अक्षर ब्रह्म से उत्पन्न होने के कारण प्रकृति भी तत्त्वतः ब्रह्म ही है। उस अव्यक्त प्रकृति से महत्तत्व उत्पन्न हुआ। और महत्तत्व से सात्विक, राजस और तामस भेद वाला त्रिगुणमय अहंकार उत्पन्न हुआ। शुद्ध सत्वप्रधान प्रकृति माया कहलाती है। उस शुद्ध सत्वप्रधान माया में प्रतिबिम्बित चेतन बह्मा कहा गया है। यह माया सर्वज्ञ ईश्वर की अपने अधीन रहने वाली उपाधि है। माया को वश में रखना, एक होना और सर्वज्ञत्व ये ईश्वर के लक्षण हैं। सात्विक समष्टि रुप और सब लोकों के साक्षी होने के कारण वे ईश्वर सृष्टि करने या न करने तथा अन्यथा करने मे समर्थ हैं।

78 अहंकार से उत्पन्न तमोगुण से पांचों महाभूत आकाश, वायु अग्नि, जल और पृथ्वी तथा उनकी पांच तन्मात्राएं शब्द, स्पर्श, तेज, रस और गंध उत्पन्न हुई। इसी प्रकार राजस अहकार से इन्द्रिया और सात्विक अहकार से इन्द्रियां के देवों की उत्पत्ति हुई इस प्रकार प्रकृति या माया और उससे उत्पन्न तीनों गुणों से ये पचभूतों की देही और

इन्द्रियों आदि से वह परमात्मा या यह ब्रह्म आवृत है, छिपा हुआ है। इस प्रकार अपने अन्दर ही छिपे हुए ब्रह्म को, अपने ही सच्चे स्वरुप को संसार में आसक्त मनुष्य देख नहीं पाते।

7.9 माया की दो शक्तियां है, एक विक्षेप और दूसरी आवरण। विक्षेप शक्ति समस्त ब्रह्मांड की सृष्टि करती है। माया की आवरण शक्ति अभेद में भेद दर्शाती है और इसलिए ससार-बन्धन का मुख्य कारण है। माया की इस आवरण शक्ति के नष्ट होने पर भेद या द्वैत भाव भी नष्ट हो जाता है और जीव अपने सच्चे स्वरूप में स्थित हो जाता है। अस्ति (है), भाति अर्थात् (प्रतीत होता है) और प्रिय (आनन्दमय) ये तीनों ब्रह्म के लक्षण हैं और नाम और रूप ये दोनों जगत् के स्वरुप हैं। इन नाम और रुप के संबंध में ही सच्चिदानन्द परब्रह्म जगद्रूप बनता है और कारणरूपा प्रकृति या माया में चेतन की छाया का समावेश होने से व्यवहारिक जगत् में कार्य करनेवाला जीव प्रकट होता है। इस प्रकार एक ही परम चेतन ब्रह्म माया के संयोग से जीवत्व और ईश्वरत्व के भावों को प्राप्त हो जाता है। जीव जब माया के तीनों गुणों से ऊपर उठकर तुरीय या चौथी अवस्था को प्राप्त कर लेता है तब अपने स्वाभाविक ब्रह्म स्वरुप में ब्रह्म रहता हुआ ही स्थित हो जाता है। जीव नाना योनियों में भ्रमण करता हुआ भी तत्वतःब्रह्म ही है। गुरु से ज्ञान प्राप्त होने पर केवल उसका ब्रह्म से अलग होने के भ्रम का निवारण हो जाता है। ग्रंथ साहिबजी में जीव और सृष्टि के विषय में यही मूल ज्ञान निहित है जिसका हम आगे के लेखन में प्रमाणपूर्वक विवेचन करेंगे। ग्रंथ साहिबजी ने समस्त सृष्टि की उत्पत्ति आदि "ओं" शब्द से जो कि परमात्मा का निकटतम नाम है मानी है, इसलिए सृष्टि भी परमात्मरूप ही है :

"ओं अंकारि सभ सृष्टि उपाई ॥ सभु खेलु तमासा तेरी वडिआई ॥" 1061

एक ओंकार से ही समस्त ब्रह्मांड, चारों वेद समस्त प्रकार के जीव, और सारे लोक उत्पन्न हुए :

"ओं अंकारि उतपती ॥ कीआ दिनस सभ राती ॥

इस ओंकार से ही स्वयं सृष्टि निर्माता ब्रह्मा उत्पन्न हुए और ओं ही इस ब्रह्मांड का सार है

"ओं अंकारि ब्रह्मा उतपति ॥ ओं अंकारि कीआ जिनि चिति ॥
ओं अंकारि सैल जुग भए। ओं अंकारि वेद निरमए ॥
वणु, तृणु त्रिभवण पाणी ॥ चारि वेद चारे खाणी ॥
खंड दीप सभि लोआ ॥ एक कवावै ते सभि होआ ॥" 1003 म 5

8.0 सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व का दृष्य खींचते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं।

"अरबद नरबद धुंधूकारा ॥ धरणि न गगन हुकमु अपारा ॥
ना दिनु रैनि न चंदु न सूरजु सुन समाधि लगाइदा ॥" 1035 म. 1

यानी उस समय न गगन था और न धरती ही और न सूर्य और चंद्रमा ही थे। उस समय परमात्म इच्छा ही सर्वत्र व्याप्त थी और अरबों वर्षों की अवधि वाला अंधकार ही अंधकार था या मानों अंधकार से अंधकार ढका था। इसी शब्द में आगे यह भी दर्शाया गया कि उस समय न पवन था न पानी ही और न कोई प्राणियों की योनियां ही थीं। न सृष्टि की उत्पत्ति थी और न प्रलय और न ही स्वर्ग नरक पाताल नदियाँ और समुद्र ही थे।

जब बाह्य जगत ही नहीं था तब पाप-पुण्य, हर्ष-शोक, मोह, बंधन, मैत्री और बैरमयी आतरिक सृष्टि का भी प्रश्न नहीं था। यह भाव बड़े विस्तार से गुरु अजुनदेव जी महाराज ने ग्रथ साहिबजी के पृष्ठ 290 और 291 में दर्शाया है—इसके अंश इस प्रकार हैं :

"जब अकारु इहु कहु न दृष्टेता ॥ पाप पुन तब कह ते होता ॥
जब धारी आपन सुन समाधि ॥ तब बैर विरोध किसु संगि कमाति ॥" 290 म 5

"जब एकहि हरि अगम अपार ॥ तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥ म 5

जब एकहि एक एक भगवंता ॥ तह कउनु अचिंत किसु लागै चिंता ॥" 291 म 5

81 और जब सृष्टि रचना की इच्छा हुई तब उस परमात्मा से त्रिगुणमयी माया का विस्तार हुआ और उससे पाप-पुण्यमयी सृष्टि कोटि-कोटि ब्रह्मांडों के रुप में सज गई। पंच तत्वों यानी आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी से लाखों-लाखों योनियों के जीवों का निर्माण हुआ। जैसे एक ही मिट्टी से कुम्हार नाना प्रकार के मिट्टी के बरतनों का निर्माण करता है उसी प्रकार मूल रुप में तो एक ब्रह्म रूप से ही सृष्टि बनी है। यह उस परमात्म का आनन्दमय खेल है, जो अपनी इच्छानुसार इस खेल को समेट कर अपने में ही वापस मिला लेता है। और यह लीला का व्यापार बार-बार अनन्त काल से घटित होता आ रहा है—

"जब आपि रचिओं परपंचु अकारु ॥ तिहु गुण महि कीनो विसथारू ॥
पाप पंनु तह भई कहावत ॥ कोउ नरक कोऊ सुरग बछावत ॥
आल जाल माइआ जंजाल ॥ ....आपनि खेलु आपि करि देखै ॥
खेलु संकोचु तउ नानक एकै" 291/92 म 5

और किस प्रकार इस त्रिगुणमयी सृष्टि में ब्रह्मांडों आदि की रचना हो रही है यह बतलाते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं—

"कई कोटि खाणी अरु खंड ॥ कई कोटि अकास ब्रह्मंड ॥
कई कोटि होए अवतार। कई जगुति कीनो बिसथार ॥
कई कोटि पाताल के वासी ॥ कई कोटि नरकसुरग निवासी ॥
.... माटी एक सगल संसारा ॥ बहु बिधि भाडे घडै कुम्हारा ॥
पंचु ततु मिली देही का आकारा ॥ घटि बधि को करै बिचारा ॥" 1128 म 3
"कई बार पसरिओं पासार ॥ सदा सदा इकु एकंकार ॥
कई कोटि कीने बहु भाति ॥ प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥" 276 म 5

82 "प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति" यह जो ग्रंथ साहिबजी के मूल सिद्धांतों का एक भाग है, यह इस्लाम के सिद्धांतों के बिलकुल विपरीत है। इसकी अलग से विस्तारपूर्वक चर्चा वेदांतभाव के अंतर्गत होगी।

माया से उत्पन्न तीनों गुणों से निर्मित ये समस्त सृष्टि और उससे उत्पन्न जन्म-मरण आदि के महाकष्टों से छुटकारा इन तीन गुणों के ऊपर चौथे या तूरीय पद में ही स्थित होकर पाया जा सकता है यही परमात्म प्राप्ति का मार्ग है जिसका ग्रंथ साहिबजी में बार-बार विवेचन हुआ है यथा

1. त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखी चउथा पद पाइ — 30 म. 3
2. माइआ मोहु जगतु सबाइआ ॥ त्रै गुण दीसहि माहे माइआ ॥ — 129 म. 3
3. इनि माइआ त्रै गुण बसि कीने ॥ आपन मोह घटें घटि दीने ॥ — 251 म. 5
4. त्रैगुण बरतहि सगल संसारा हउमै विचि पति खोई ॥
   गुरमुखि होवे चउथा पदु चीनै राम नामि सुख होई ॥ — 604 म. 3
5. त्रैगुण माइआ मोहि बिआपै तुरिआ गुणु है गुरमुखि लहीआ ॥ — 833 म. 4
6. चउदसि चउथे थावहि लहि पावै ॥ राजस तामस सत काल समावै ॥ — 840 म. 1
7. त्रैगुण माइआ मोहि बिआपै तुरिआ गुणु है गुरमुखि लहीआ ॥ — 833 म. 4
8. मन रे त्रै गुण छोडि चउथे चितु लाइ ॥ — 603 म. 3
9. जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदास ॥
   कहु नानक सुनु रे मना तिहि घटि ब्रह्म निवासु ॥ — 1427 म. 9

83 हमने ऊपर ग्रंथ साहिबजी में वर्णित सृष्टि की उत्पत्ति और उसके लय के रहस्य का सक्षेप में पाठकों के सामने रखा है और इसी संदर्भ में सृष्टि को उत्पन्न और लय करनेवाली परमात्मा की सहज शक्ति जो आदि प्रकृति या माया नाम से जानी जाती है उसको अपने त्रिगुणमय स्वरुप के साथ देखा। ग्रंथ साहिबजी में वर्णित ये सब वर्णन वेद-शास्त्र सम्मत हैं। स्वयं ग्रंथ साहिबजी वेद प्रमाण देते हुए कहते है : "वेदु पुकारै त्रिविधि माइआ ॥ मनमुख न बूझाई दूजै भाइआ ॥" 128 म. 3

"हरि आगिआ होए वेद पापु पुनु बिचारिआ ॥
ब्रहमा बिसनु महेसु त्रैगुण बिसथारिआ ॥" — 1094 म. 5

"त्रैगुण बिखिआ अंधु है माइआ मोह गुबार ॥
लोभी अन कए सेबदे पडे वेदा करहि पुकार ॥ — 130 म.3

84 अब हम यहां ग्रंथ साहिबजी में वर्णित जीव के स्वरूप पर विचार करते हैं। कुरान शरीफ के अनुसार केवल मनुष्य जाति में ही "रुह" या जीव है। शेष प्राणियों में यानी पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि में रुह नहीं है, इसलिए कुरान शरीफ वर्णित कुछ अपवाद छोड़कर ये सब अन्य प्राणी मनुष्य जाति के भोग्य हैं। और समस्त मनुष्य जाति अल्लाह द्वारा मिट्टी से निर्मित आदम और हौवा की संतान है। उसका अल्लाह से सीधा कोई भी सम्बन्ध नहीं है। इसके विपरीत ग्रंथ साहिबजी के अनुसार प्रत्येक प्राणी में परमात्मा का ही जीव रुप में वास है। गीता के अध्याय 15 के श्लोक 7 में भगवान कृष्ण ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा है कि इस लोक में जीव मेरा सनातन अंश है : "ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः"। केवल प्रकृति के भोगों में आसक्त होने के कारण जीव अपना सच्चा स्वरुप भूला हुआ है। अत: तत्वत: जीव जन्म-मरण सुख-दुख मान-अपमान आदि-द्वन्द्वों से अत्यन्त परे है।

ग्रंथ साहिबजी ने पशु-पक्षी आदि में ही नहीं स्थावर अर्थात न चलने फिरने वाले प्राणी

जैसे वृक्ष, लता, पौधों आदि तथा जड़ पदार्थों में अर्थात् पत्थर, पर्वतों आदि में भी जीव की सत्ता मानी है। और यह स्पष्ट रूप में बार-बार कहा है कि अपने कर्मो और कामनाओं के अनुसार चौरासी लाख योनियों में घूमता हुआ जीव कीट से लेकर देवताओं के राजा इंद्र तक की योनियों में जन्म ग्रहण करता रहता है, जिसमें जड़ और स्थानर योनियाँ भी शामिल है। मनुष्य योनि में जन्म मिलने पर और परमात्म ज्ञान होने पर वह इस जन्म-मरण के अनंत चक्र से जिसमें वह स्वयं अपनी वासना के कारण बंधा है, मुक्ति पाकर अपने सहज परमानद परमात्मस्वरुप में सदैव के लिए स्थिर हो जाता है।

8 5 कुरान शरीफ़ में "रुह' के बारे में उपरोक्त भाव की कल्पना भी नहीं है। साथ ही ग्रथ साहिब में जीव का यह विभिन्न योनियों में भ्रमण उसकी कामनाओं की पूर्ति और उसके कर्मो के फल के अनुसार ही निर्धारित होता है—किसी मान्यता के आधार पर नहीं। यह भी कुरान शरीफ़ के सिद्धांत के बिलकुल विरुद्ध है। क्योंकि इस्लाम में मनुष्य का केवल एक जन्म है और एक ही मरन; और मरन के बाद उसको स्वर्ग या नरक मिलना उसकी अल्लाह और उसके पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब की मान्यता पर निर्भर करता है। कर्म और उसके फल का इससे कोई संबंध नहीं है और न ही कर्म और कामना इस्लाम में अगले जन्मों की निर्णायक हैं। इन विषयों की हम आगे चलकर यथास्थान विस्तार से चर्चा करेंगे।

8 6 परमात्मा से जीव की उत्पत्ति बतलाते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं :

"ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥
हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखइया ॥
कहै नानकु स्रसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता जू जग माहि आइआ ॥"
921 म 3

"तुमहि पठाए ता जग महि आए ॥ तू पिता सभि बारिक थारे ॥" 1081 म 5

"जेता जीउ पिंडु सभु तेरा तू अंतरजामी पुरखु भगवानु ॥" 734 म 4

"अंडज जेरज सेतज उतभुजा प्रभ की इह किरति॥" 816 म 5

अंडे से, जेर से, पसीने से और जमीन फोड़कर पैदा होने वाले (जैसे पेड़ पौधे आदि) ये चार प्रकार से पैदा होने वाले सभी प्राणी परमात्मा की ही कारीगरी या अंश है। और यह जीव अपने कर्मानुसार नाना योनियों में जन्म लेता रहता है, यह समझाते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते है :

पसु पंखी भूत अरु प्रेता ॥ बहु विधि जोनि फिरत अनेता ॥
भ्रमत भ्रमत प्रभ सरनी आइआ ॥ दीनानाथ जगत पित माइआ ॥ 1005 म. 5
"असथावर जंगम कीट पतंगा ॥ अनिक जनम कीट बहु रंगा ॥
ऐसे घर हम बहुतु बसाए ॥ जब हम राम गरभ होई आए ॥ 325/26 कबीर जी

अर्थात् हजारों जन्म कीट पतंग, पेड़ पौधो तथा अन्य चलने फिरनेवाली योनियों में बिताकर तब कहीं बड़े भाग्य से यह मानव जन्म मिला है।

"पसु पखी बिरख बहु बिधि जोनि भ्रमिओं अति भारी 1388 म 5

"बड़े भागि इहु सरीरु पाइआ ॥ माणस जनमि सबदि चितुलाइआ ॥ 1065 म 3

"फिरत फिरत मानुखु भइआ खिन भंगन देहादि ॥
इह अवसर से चूकिआ बहु जोनि भ्रमादि ॥" 805 म.5

पिछले चार शब्दों में ग्रंथ साहिबजी ने यह बिलकुल स्पष्ट कर दिया है कि लाखों योनियों में भटकने के बाद बड़े भाग्य से मिले इस मनुष्य शरीर को पाकर यदि परमात्मभक्ति नहीं की तो जीव फिर से अनंत योनियों में अपनी कामनाओं के अनुसार भटकने को विवश हो जाता है। उपनिषदों ने बार-बार यह चेतावनी दी है कि यदि इसी मानव जीवन में परमात्मा को नहीं जाना तो जीव अनेक कल्पों तक नाना योनियों और नाना लोकों में भटकने को विवश हो जाता है। इस प्रकार शास्त्रों और ग्रंथ साहिबजी ने मानव जन्म का मुख्य उद्देश्य परमात्म प्राप्ति ही माना है।

ग्रंथ साहिबजी ने और शास्त्रों चौरासी लाख योनियां मानी हैं।

1. "लख चउरासिह भरमदे भ्रमि भ्रमि होई खुआरु ॥"
2. "पूरबि लिखिआ कमावणा कोई न मेटनहारु" 27 म. 3
3. "लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥
   नानक नामु सभाले तू सो दिनु नेडा आइओई ॥" 50 म 5
4. "लख चउरासीह जीउ उपाए ॥
   जिस नो नदरि करे तिसु गुरु मिलाए ॥" 110 म 3
5. "लख चउरासीह जोनि फिरहि ॥
   गोविंद लोक नहीं जनमि मरहि ॥" 211 म 5
6. "लख चउरासीह भ्रमते भ्रमते दुलभ जनमु अब पाइओ ॥
   रे मूड तू होछै रसि लपटाइओ ॥" 1017 म 5

ग्रंथ साहिबजी में वर्णित चौरासी लाख योनियों में पत्थर की चट्टानें और पर्वत भी जीव की योनियों में आ जाते हैं, जहां घोरतम तमोगुनी जड़ अवस्था में जीव युगों युगों तक सुप्त पड़ा रहता है। गुरु अर्जुनदेव जी महराज के निम्न शब्द में इन अति घोर योनियों का दिग्दर्शन कराते हुए हम इस प्रसंग का उपसंहार करते हैं :

"कई जनम भए कीट पतंगा ॥ कई जनम गज मीन कुरंगा ॥
कई जनम पंखी सरप होइओ ॥ कई जनम हैवर बृख जोइओ ॥
मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥ चिरकाल इह देह संजरीआ ॥
कई जनम सैल गिरि करिआ ॥ कई जनम गरभ हरि खरिआ ॥
कई जनम साख करि उपाइआ ॥ लख चउरासीह जोनि भ्रमाइआ ॥
साध संगि भइओ जनमु परापति ॥ करि सेवा भजु हरि हरि गुरमति ॥
176 म. 5

गुरु महाराज जी मनुष्यों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि तू अनेक जनमों में बार-बार कीट हुआ कई कई जनमों में तू भुनगा हाथी मछली हिरण हुआ अनेक जनम

तूने पक्षी, सर्प, घोड़ा और बैल की योनियों मे बिताया। और कई जनमों में तू पत्थर और पहाड हुआ। और अनेक जनमों में तू मां के गर्भ में ही नष्ट हुआ। और कई जनम पेड़ों के रुप मे पैदा हुआ और इस प्रकार चौरासी लाख यानियों में पैदा होता हुआ तू इस मनुष्य योनि में आया है। यह मनुष्य योनि ही है जहां तुझे परमात्मा से मिलने का दुर्लभ अवसर मिला है। इस मनुष्य जन्म को पाकर तू इसे संतों की संगति में व्यतीत कर और गुरु कृपा से हरि भजन कर।

8 7 ग्रंथ साहिबजी के अनुसार प्रत्येक प्राणी में न केवल जीव का ही वास है वरन् प्रत्येक प्राणी के हृदय में उसके अन्तर्यामी के रुप में भी परमात्मा का वास है। यह बात भी कुरान शरीफ़ के सिद्धांतों के विपरीत है और न इस बात की वहां कोई कल्पना ही है। गीता के 10वे अध्याय के 20वें श्लोक में परमात्मा को सभी जीवों में अन्तर्यामी रूप में स्थित बतलाया हे। उपनिषदों में पग-पग पर इसकी स्पष्ट चर्चा है। श्वेताश्वतरोपनिषद् के चौथे अध्याय के छठे मन्त्र में जीव और परमात्मा को परस्पर सखा भाव से शरीर रुपी वृक्ष का आश्रय लेकर साथ-साथ रहने वाले दो पक्षियों के रुप में दर्शाया है :

"द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।"

ग्रंथ साहिबजी ने हर कदम पर परमात्मा को घट-घटवासी दिखलाते हुए परमात्मा के अन्तर्यामी रुप को दिखलाया है, जिसकी हम आगे चलकर अलग से विवेचना करेंगे। यहां हम ग्रथ साहिबजी में आए परमात्मा के अन्तर्यामी स्वरूप की कुछ झलक प्रस्तुत करते हैं :

1. "बाहर भेखि न पाईए प्रभु अंतरजामी॥ — 1099 म 5
2. "जम की कहु नाहि त्रास सिमरे अंतरजामी॥ — 1230 म 5
3. "एकु हमारा अंतरजामी॥ घर एका में टिक एकसु की सिरि साहा बड़पुरखु सुआमी॥ — 1347 म. 5
4. "सभ महि एकु निरंजन करता — 998 म 4
5. "काहे रे बन खोजन जाई॥ सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई॥"
   पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई॥
   तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई॥" — 684 म 9

8 8 अन्तर्यामी के रुप में परमात्मा न केवल साक्षी और द्रष्टा के ही रूप में अवस्थित है बल्कि वह सबके नियन्ता के रूप में भी सर्वदा वर्तमान है। वह जड़ से जड़तम वस्तु का भी उसके अन्तर्यामी रुप में उसका नियन्ता है। यह बात ग्रंथ साहिबजी में बार बार वर्णित भक्त प्रह्लाद की कथा से स्पष्ट हो जाती है। जब हिरण्यकश्यप अपने पुत्र प्रह्लाद से हाथ मे तलवार लेकर पूछता है कि क्या तेरा हरि या परमात्मा इस पत्थर के खंभे में भी है तो वह प्रह्लाद सम्पूर्ण ज्ञानमयी दृढ़ता के साथ कहता है कि पिताजी! मैं उसे खंभे में प्रत्यक्ष रुप से देख रहा हूं। यही नहीं, मैं हरि को आपकी तलवार में और आप में भी देखता हू। हिरण्यकश्यप अपनी सीमित उपासना के कारण परमात्मा के सर्वव्यापी और अन्तर्यामी रुप से निपट अपरिचित था इसलिए प्रह्लाद की "सर्व" उपासना से पराजित हो अपनी ही अज्ञानता से मारा गया प्रह्लाद ने ज्यों ही कहा कि मेरा हरि इस खंभे में भी है भगवान तत्काल नरसिंह

रूप में पत्थर के खंभं से प्रकट हो गए :

1. "खिन महि मैआन रुपु निकसिआ थम्ह उपाडि ॥" 1133 म 3
2. "थंम्हु उपाडि हरि आपु दिखाइया। अहंकारी दैत मारि पचाइआ ॥" 1154 म 1
3. "पीत पीतंबर त्रिभवण धणी थंभ माहि हरि भाखै ॥" 1165 नामदेव जी
4. "प्रभ थंम ते निकसै के बिसथार॥ ओई परम पुरखु देवाधिदेव ॥
भगति हेत नरसिंह भेख ॥" 1194 कबीर जी

89 जैसा कि हमने ऊपर दिखलाया ग्रंथ साहिबजी के अनुसार पत्थर और पहाड़ में भी जीवात्मा का वास है तथा साथ ही अन्तर्यामी के रूप में परमात्मा का भी। इस तत्व ज्ञान का अत्यन्त स्पष्ट विवेचन बृहदारण्यक उपनिषद् में जनक की सभा में महर्षि याज्ञवल्क्य और महर्षि उद्दालक के प्रश्नोत्तर के रुप में हुआ है। उद्दालक के अन्तर्यामी संबंधी प्रश्न के उत्तर मे याज्ञवल्क्य जी बोलें :

"जो पृथ्वी में रहने वाला पृथ्वी के भीतर है पृथ्वी जिसे नहीं जानती है, पृथ्वी जिसका शरीर है, और जो भीतर रहकर पृथ्वी का नियमन करता है वह तेरा अन्तर्यामी आत्मा अमृत है।"

इसी प्रकार याज्ञवल्क्य जी ने समस्त भूतों, दिशाओं, सूर्य, द्युलोक, तेज, तम, नक्षत्र और चंद्रमा के लिए भी अलग-अलग कहा कि इन सबका एक ही अन्तर्यामी है और वह तेरा भी अन्तर्यामी अमृत है। इसी प्रकार प्राण, मन और समस्त इंद्रियों और भूतों यानी प्राणियों के लिए भी अलग-अलग कहा। जैसे प्राण का अन्तर्यामी बतलाते हुए याज्ञवल्क्य जी बोले "जो प्राण में रहने वाला प्राण के भीतर है, प्राण जिसे नहीं जानता, प्राण जिसका शरीर है, और जो भीतर रहकर प्राणों को नियमन करता है, वह तेरा अन्तर्यामी आत्मा अमृत है।" इस तत्वज्ञान के उपदेश का समापन करते हुए याज्ञवल्क्य जी कहते हैं : "वह दिखाई न देने वाला किन्तु देखने वाला है, सुनाई न देने वाला किन्तु सुनने वाला है, मनन में न आने वाला किन्तु मनन करने वाला है, जानने में न आने वाला किन्तु विशेष रुप से जानने वाला है। यह तेरा आत्मा अन्तर्यामी अमृत है।"

निश्चय ही परमज्ञानी भक्त प्रहलाद ने उस समय अपने पिता से यही वैदिक ज्ञानमयी वाणी का आश्रय लेकर कहा होगा कि पिताजी "जो खंभे में रहने वाला खंभे के भीतर है, खंभा जिसे नहीं जानता, खंभा जिसका शरीर है, और जो भीतर रहकर खंभे का नियमन करता है वही आपका भी और आपकी तलवार का भी अन्तर्यामी अमृत है"। और यह भी निश्चित वैदिक तत्वज्ञान है कि कोई भी अपने अन्तर्यामी और नियंता की हिंसा नहीं कर सकता। जो भी अन्तर्यामी की शरण हो गया उसकी रक्षा अन्तर्यामी ही तत्काल करता है। इस संदर्भ में ग्रंथ साहिबजी प्रमाण देते हुए कहते है :

"जो सरनि परै तिस की पति राखै जाइ पुछहु वेद पुराणी हे ॥ 1070

जैसा कि ऊपर दर्शाया गया ग्रंथ साहिबजी में जीव का लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति है, जबकि कुरान शरीफ में लक्ष्य बहिश्त यानी कुरान वर्णित स्वर्ग की कुरान के अनुसार स्वर्ग शाश्वत है जबकि ग्रंथ साहिबजी के अनुसार यह एक भोगयोनि है जो पुण्यों के

फलस्वरुप मिलती है। इसकी चर्चा आगे हम यथास्थान करेंगे।

9 0 ग्रंथ साहिबजी के अनुसार जीव को यह परमात्म प्राप्ति परमात्मा को केवल मानने से नही वरन जानने से, उसका आत्मसाक्षात्कार करने से ही सम्भव है और यह आत्मज्ञान या परमात्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान वैराग्य, सत्‌संगति और ज्ञानी गुरु की कृपा से ही सम्भव है। चारों युगो में मनुष्य के सामर्थ्य के अनुसार इसके साधन भिन्न हो जाते हैं। किन्तु परमात्मा का नाम स्मरण सबसे प्रधान और सरल साधन है, विशेषकर कलियुग में :

1. **"सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥**
   तीनो युग तीनों दिडै कलि केवल नाम अधार ॥" 346 रविदास जी
2. **"कलिजुग महि नामु निधानु भगती खटिआ हरि ऊतम पदु पाइआ ॥"** 513 म. 3
3. **"जुग चारे नामि बडिआई होई ॥ जि नामि लागै सो मुकति होवै गुर बिनु नाम न पावै कोई॥ "** 880 म. 3
4. **"कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ गुरमुखि जपीए लाइ धिआना ॥"** 1075/76 म. 5

इसके विपरीत इस्लाम में जीव या रुह के लिए अल्लाह पर, उसके पैगम्बर मोहम्मद साहब पर और अल्लाह द्वारा अपने पैगम्बर मोहम्मद पर उतारी गई आयतें या कुरान या किताब पर और कयामत या अखिरत पर ईमान लाना ही पहली और अन्तिम शर्त है। और इन पर ईमान लाने से ही या ईमानवाले बनने से ही मनुष्य को इस लोक के सुख भोग और परलोक में कयामत के बाद मिलने वाले बहिश्त में शाश्वत निवास मिलता है।

❑

आदम की उत्पत्ति, रूह

9.1 इस्लाम को ठीक से समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम कुरान शरीफ़ में वर्णित "आदम" और उनकी बीबी "हौवा" की उत्पत्ति, तथा बाद में इन्सानों की पैदाइश तथा "रूह" का स्वरुप समझ लें। लगभग 70 आयतों में इनका वर्णन हुआ है।

"--(कि अल्लाह ने) मिट्टी से आदम के शरीर को बनाकर फिर उसको हुक्म दिया कि "हो" वह हो गया" 3/59-- "(ऐ आदम की सन्तान) उसी ने तुम लोगों को एक जीव (आदम) से पैदा किया, फिर उसी से उसकी बीबी को पैदा किया"--39/6 "ऐ लोगों! अपने परवरदिगार से डरो कि जिसने तुम सबको एक ही जान (आदम) से पैदा किया फिर उसमें उसका जोड़े हौवा को पैदा किया और उन दो से तमाम मर्द और औरतें फैला दीं"4/1

यहां यह उल्लेखनीय है कि कुरान शरीफ़ में कई स्थानों पर अल्लाह ने कहा है कि "जब हम किसी चीज को चाहते हैं तो हमारा कहना उसके बारे में इतना ही होता है कि हम उसको फर्मा देते है कि "कुन" "हो" और वह हो जाता है" 16/40 सो अल्लाह ने "कुन" या ("हो") यह शब्द कहकर मिट्टी से बने आदम को बना दिया।

यह "कुन" शब्द कुरान शरीफ़ में सृष्टि रचना के क्रम में या कयामत के समय कब्रा से मुर्दों को जिला उठाने के संदर्भ में कई अन्य स्थानों में आया है जैसे आयत संख्या2/117, 3/47, 6/73, 36/82, 40/68

9.2 आदम और हौवा के जन्नत या स्वर्ग से निकाले जाने की कथा कुरान शरीफ़ में इस प्रकार है : "फिर हमने फरिश्तों से कहा कि आदम के आगे सज्दः करो तो सभी ने सज्दः किया मगर इबलीस (कि) उसने इनकार किया।" 20/116 "तो हमने आदम से कहा कि हे आदम यह इबलीस तुम्हारी बीबी का दुश्मन है तो ऐसा न हो कि कहीं तुम दोनो को जन्नत से निकलवा दे, फिर तुम तकलीफ में पड़ जाओगे।" 20/117 "और यहां जन्नत में तो तुमको ऐसी सुविधा है कि न तो तुम भूखे रहोगे और न नंगे।" 20/118 "और न प्यासे रहोगे और न धूप से बेचैन होगे।" 20/119 "फिर शैतान ने आदम को बहकाया--"20/120 "चुनांचे दोनों ने उस दरख्त के फल को खा लिया और आदम ने अपने परवरदिगार का हुक्म टाला और भटक गया।" 20/121 "फिर उनके परवरदिगार ने उनको संवारा और उनपर कृपा की और राह दिखलाई।" 20/122

"फर्माया कि तुम दोनों (यानी इन्सान और शैतान) यहां (जन्नत) से उतर आओ, तुममें से एक दूसरे के दुश्मन होंगे, फिर अगर तुम्हारे या तुम्हारी औलादों के पास मेरी तरफ से राह पहुँचे तो जो मेरी राह पर चलेगा वह न भटकेगा और न दुख पायेगा " 20/123 "और जिसने मेरी याद में मुँह मोड़ा तो उसकी जिन्दगी हर तरह की तंगी में गुजरेगी और कयामत

के दिन हम उनको अंधे उठावेंगे" 20/124 इस प्रसंग से सम्बंधित अन्य आयतें इस प्रकार है 2/30 से 31, 7/11, 18 से 27, 15/27 से 43

रुह के बारे में कुरान शरीफ़ में आता है "और ऐ पैगम्बर रुह की बाबत तुमसे पूछते है तो वह कह दो कि रुह मेरे परवरदिगार ही की तरफ से आती है इतना मान लेना काफी है और तुम लोगों को थोड़ा ही इल्म दिया गया है।" 17/85

9 3 और मनुष्य की उत्पत्ति के संबंध में अल्लाह कहते हैं : "और हमने सड़े हुए गारे से जो (सूखकर) खनखनाने लगता है आदमी को पैदा किया" 15/26 "और हमने जिन्नों को उससे पहले लू की आग से पैदा किया" 15/27 "और जबकि तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तो से कहा कि सड़े खनखनाते हुए गारे से आदमी को पैदा करने वाला हूँ।" 15/28 "तो जब मै उसको पूरा बना चुकूं और उसमें अपनी रुह फूंक दूं तो तुम उसके आगे सजदे में गिर पडना।" 15/29 "हमने ही (इन आदम के बेटों का) लसदार मिट्टी से पैदा किया है।" 37/11 "और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया।" 30/20

"लोगों, अगर तुमको मरने के बाद जी उठने में शक है तो तुमको मालूम हो कि हमने तुमको मिट्टी से, फिर बूंद से, फिर खून के लोथड़े से फिर बोटी से पैदा किया--और पेट मे हम जिसको चाहते हैं एक नियत समय तक ठहराये रहते हैं फिर तुमको बच्चों की शक्ल मे निकालते हैं--" 22/5, 23/12, 13, 14

"उसने जो चीज बनाई खूब ही बनाई और आदमी की पैदाइश को गारे की मिट्टी से शुरु किया" 32/7 "फिर नाचीज निचोड़ (यानी वीर्य) से उसकी संतान चलाई 32/8 "फिर उसको दुरुस्त किया और उसमें अपनी तरफ से रुह फूँकी और तुम लोगों के लिए कान आखे और दिल बनाये। लेकिन तुम बहुत ही थोड़ी भलाई मानते हो!" 32/9 मनुष्य की उत्पत्ति से संबन्धित आयतें 6/2, 16/4, 25/54, 35/11, 36/77, 37/11, 40/67, 75/31 से 39, 76/1,2, 77/20, 80/18 से 23

9.4 परन्तु कुरान शरीफ़ के अनुसार अल्लाह को आदमी बनाकर कोई संतोष और प्रसन्नता नहीं हुई। बल्कि अल्लाह को उस पर अफसोस ही हुआ कि सब चीजें देने के बाद भी वह अल्लाह के अनगिनत अहसानों को नही मानता:--"बेशक मनुष्य बड़ा बेइन्साफ और बडा नाशुक्रा कृतघ्नी है"14/34

और अल्लाह को यह प्रतीत हुआ कि "आदमी जिस तरह जल्दी से भलाई मांगता है उसी तरह बुराई मांगने लगता है और आदमी बड़ा जल्दबाज पैदा हुआ है।"17/11 "और वह (अपनी नाचीज हस्ती को भूलकर) बड़ी बड़ी हुज्जतें करने लगा।" 36/77 "--और कहने लगा जब हड्डियां गल गई तो उनको कौन जिला खड़ा करेगा।" 36/77

और मनुष्य की नाशुकी से कुपित अल्लाह कहते हैं : "आदमी पर मार वह कैसा नाशुक्रा है!" 80/17 ......"कुछ नहीं, अल्लाह ने जो कुछ आदमी को हुक्म दिया उसने उसकी तामील नहीं की।" 80/23।

❑

फरिश्ते, जिन्न और शैतान

95 इसके पूर्व कि हम ग्रंथ साहिबजी में वर्णित जीव के स्वरुप और मनुष्य की उत्पत्ति की चर्चा करें, यह उचित होगा कि हम इस स्थल पर कुरान शरीफ़ में वर्णित फरिश्ते, जिन्न और शैतान के स्वरुपों को समझ लें। इस्लाम में फरिश्ते और शैतान का मजहबी महत्व इसी बात से समझा जा सकता है कि लगभग 150 आयतों में इनकी चर्चा आई है।

कुरान शरीफ़ में फरिश्तों का सर्वोपरि महत्व इसी बात से स्थापित हो जाता है कि समस्त कुरान शरीफ़ या उसकी सारी आयतें अल्लाह ने अपने पैगम्बर हज़रत मोहम्मद के पास फरिश्ता जिबरील के ही माध्यम से भेजीं, और फरिश्ते ही अल्लाह के बंदे और उनके सबसे नजदीक रहने वाले हैं। और फरिश्ते ही अल्लाह के हुक्म से पहले भेजे हुए पैगम्बरों पर अत्याचार करने वालों या उनको न मानने वालो को अल्लाह के हुक्म से उन पर अजाब आदि गिराकर सजा देते आए हैं।

"(ऐ पैगम्बर) कहो जो शख्स जिबरील फरिश्ते का दुश्मन हो, तो उसको मालूम हो कि उसने तो कुरान अल्लाह के हुक्म से तुम्हारे दिल में उतारा है।"—2/97 और "जो कोई अल्लाह का दुश्मन हो और उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिबरील का और मीकाईल (फरिश्ते) का, तो अल्लाह भी ऐसे काफ़िरों का दुश्मन है।" 2/98

इन आयतों में अल्लाह ने स्पष्ट किया कि कुरान फरिश्ते जिबरील ने अल्लाह के हुक्म से उतारी तथा जो जिबरील को नहीं मानता या उससे द्वेष या दुश्मनी करता है, तो स्वयं अल्लाह ऐसे लोगों या काफ़िरों का दुश्मन है।

96 प्रश्न उठता है कि फरिश्ते कौन हैं और अल्लाह से उनके सम्बन्ध का क्या स्तर है। इसके उत्तर में कुरान शरीफ में आता है : "और (कोई-कोई) कहते हैं कि दयालु (अल्लाह) औलाद रखता है, तो उसकी जात पाक है। (फरिश्ते) जिनको ये बेटे-बेटियाँ समझते हैं अल्लाह की औलाद नहीं (बल्कि वे अल्लाह के) बन्दे हैं जिनको इज्जत मिली है।" 21/26 "उसके आगे बढ़कर बात नहीं कर सकते और उसके हुक्म पर चलते हैं।"—21/27 "इनका अगला पिछला हिसाब सब उसको मालूम है और वे (फरिश्ते किसी) की सिफारिश नहीं कर सकते, सिवाय उसके लिए जिससे वह यानी अल्लाह राजी हो और वह (खुद) अल्लाह के डर से कापते रहते हैं।" 21/28

97 और फरिश्ते अमर होते हैं, यह बात कुरान शरीफ़ में शैतान-आदम संवाद में इस प्रकार आती है कि शैतान ने आदम और हौवा को बहकाते हुए कहा कि "तुम्हारे परवरदिगार ने जो इस दरख्त (के फल खाने) से तुमको मना किया है तो इसका कारण यही है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम दोनों फरिश्ते बन जाओ या हमेशा जीनेवालों (अमर) में से हो जाओ "

7/21 और ये फरिश्ते अल्लाह के बहुत ही करीब रहते हैं और ईमानवालों के गुनाह को अल्लाह से बख्शवाते रहते हैं; "जो (फरिश्ते) तख्त को उठाए हुए हैं और जो तख्त के आसपास हैं अपने परवरदिगार की तारीफ के साथ तरजीह (स्तुति और भजन) करते और उस पर ईमान रखते हैं और ईमानवालों के लिए (अल्लाह के गुनाह) बख्शवाते हैं।" 40/7 और उन ईमानवालों के लिए अल्लाह से कहते हैं।" और ऐ हमारे परवरदिगार, उनको (जन्नत के) बसने के बागों में दाखिल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है। 40/8

9.8 और फरिश्तों का मुख्य कार्य बतलाते हुए कुरान शरीफ़ में कहते हैं :" और जो फरिश्तों को (अपना) पैगाम पहुंचाने पर मुकर्रर करनेवाला है जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार (तक) पर हैं–" 35/1

और अल्लाह की मेहरबानियों का स्वाद चखने के बाद भी "जो हमारी आयतों से (जान बचाने की) चालें चलने लगते हैं। तो (ऐ नबी) कहो अल्लाह जियादा चालें चलने वाला है। (वह फरमाता हैं) हमारे भेजे हुए फरिश्ते तुम्हारी सब चालें लिखते जाते हैं" 10/21

और ये फरिश्ते अल्लाह के ही हुक्म से पैगम्बरों को पैगाम पहुंचाने आते हैं। यह बात बतलाते हुए फरिश्ता जिबरील ने हजरत मोहम्मद साहिब को कहा : "हम फरिश्ते तुम्हारे पालनकर्ता के बिना हुक्म (दुनिया) में नहीं आते।" 19/64

9.9 गुनाहगारों या काफ़िरों के लिए फरिश्तों का स्वरुप बतलाते हुए अल्लाह कहते है "जिस दिन लोग फरिश्तों को देखेगें उस दिन गुनाहगारों को कोई खुशी न होगी और फरिश्तो को देखकर चिल्ला उठेंगें कि या पनाह! किसी आड़ में हो जाय।" 25/22 "जिस दिन आसमान फटकर नमूदार होगा और फरिश्ते (पर फरिश्ते) उतारे जायेंगे।" 25/25 "उस दिन रहमान (उस अल्लाह ही) का सच्चा राज्य होगा। और वह दिन काफ़िरों पर (बहुत) कठिन होगा।" 25/26

10.0 और फरिश्तों द्वारा प्राण-हरण तथा कयामत के समय का विशेष कार्य बतलाते हुए अल्लाह फरिश्तों की कसम खाते हुए कहते हैं :

"और उन (फरिश्तों) की कसम जो (काफ़िरों के जिस्म में) घुसकर सख्ती से रुह निकालते हैं। 79/1 "और उन (फरिश्तों) की जो (ईमानवालों की जान) आसानी से निकाल लेते हैं।" 79/2 "और उन फरिश्तों की जो (आसमान और जमीन के बीच) तैरते फिरते हैं।" 79/3 "और फिर दौड़कर आगे बढ़ते हैं।" 79/4 "फिर जैसा (अल्लाह का) हुक्म होता है बन्दोबस्त करते है।" 79/5

10.1 कुरान शरीफ़ में अन्य पैगम्बरों के संदर्भ में भी फरिश्तों द्वारा कार्य-कलापों की चर्चा है। जैसेकि इब्राहिम को बुढ़ापे में बेटा होने की खबर देने के लिए आना या फिर पैगम्बर लूत को दुश्चरित्र लोगों से बचाने के लिए फरिश्तों का आना और उनको तथा उनके परिवार को (सिवाय उनकी बीबी के) बचाकर अन्यों को अजाब से नष्ट करना। फरिश्तों से संबंधित कुछ अन्य प्रमुख आयतें इस प्रकार हैं : 11/68 से 81, 15/51 से 66, 16/49, 50, 25/21, 29/31 से 34, 41/38, 51/26, 27

10 2 कुरान शरीफ़ ने यह तो नहीं बतलाया कि फरिश्ते कैसे पैदा हुए पर जिन्नों की उत्पत्ति कैसे हुई यह बतलाते हुए कुरान शरीफ़ में अल्लाह कहते है : "और हमने सड़े हुए गारे से जो (सूखकर) खनखनाने लगता है आदमी को पैदा किया" 15/26 "और हमने जिन्नों को उससे पहले लू की आग से पैदा किया।" 15/27

10 3 जहां अल्लाह ने कुरान शरीफ़ में फरिश्तों के कई महत्वपूर्ण कार्य बतलाए हैं, और जिन्हें अपने नजदीक रहनेवाले कहा है, वहां जिन्नों के जिम्मे कोई कार्य विशेष नहीं है। बल्कि जिन्न अपने बुरे कामों के कारण या अपनी अलग पूजा करवाने के कारण पशु के समान हैं और नरक के ही अधिकारी हैं: "और हमने बहुतेरे जिन्न और मनुष्य दोजख ही (को आबाद करने) के लिए पैदा किये हैं। उनके दिल तो हैं (मगर) उनसे समझते नहीं, और (उनके) आंख है (मगर) उनसे देखते नहीं, और (उनके) कान हैं मगर सुनते नहीं। यह पशुओं की तरह हैं, बल्कि उनसे भी ज्यादा भटके हुए, यही बेखबर हैं।" 7/179

और जिन्नों को भी कयामत के दिन इन्सानों की तरह अल्लाह के सामने फैसले के लिए खड़ा होना है, और साथ ही अल्लाह को यह पसन्द नहीं कि मनुष्य जिन्नों को पूजें या जिन्न अपने को पुजवायें। "और इन लोगों ने अल्लाह में और जिन्नों में नाता ठहराया है हालांकि जिन्नों को अच्छी तरह मालूम है वह (भी इन्सानों की तरह फैसले के दिन अल्लाह के रुबरु) हाजिर किये जायेंगें।" 37/158 "सो तुम और (जिन्न) जिनकी तुम पूजा करते हो।" 37/161 "(वे सब) अल्लाह के खिलाफ किसी को वहका नहीं सकते।" 37/162 "हां, सिर्फ उसी को जो (नरक) की आग में जानेवाला है।" 37/163 जिन्नों पर कुछ अन्य आयतें 6/128,130,100 इसी विषय से संबंधित हैं।

10 4 "शैतान" का इस्लाम में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसी ने सबसे पहले इस्लाम के मूल पुरुष आदम को, जिसे स्वयं अल्लाह ने मिट्टी से बनाकर और उसमे रुह फूँककर पैदा किया था, और उसकी बीबी हौवा को अल्लाह के हुक्म के खिलाफ बरगलाया था जिसके कारण उन्हें बहिश्त से निकलना पड़ा। यह शैतान वास्तव में पहले फरिश्ता इबलीस था जिसने अल्लाह का यह हुक्म कि तुम सब फरिश्ते "आदम" को दण्डवत करो मानने से उनके मुँह पर ही साफ इन्कार कर दिया जिस पर उसको भी अल्लाह ने फटकारकर बहिश्त से निकाल दिया। इस पर उसने अल्लाह से मोहलत मांगकर कयामत तक "आदम" की संतान को भटकाने का या अल्लाह के विरुद्ध ले जाने का अपना संकल्प अल्लाह के ही सामने दृढ़तापूर्वक व्यक्त किया। शैतान के चंगुल से केवल वही बच पायेगा जो अल्लाह को मानेंगे और बाकी न माननेवाले शैतान सहित नरक या दोजख में जायेंगे। यह प्रसंग कुरान शरीफ़ में बार-बार आया है। यथा:

"और हमने ही तुमको पैदा किया और तुम्हारी सूरत बनाई और फिर हमने फरिश्तों को आज्ञा दी कि आदम को सज्दः करो तो वे आदम के आगे झुक गये, मगर इबलीस झुकनेवालों में न हुआ।" 7/11, "इबलीस से अल्लाह ने पूछा कि मेरे हुक्म देने पर भी तुमको किसी चीज ने सज्दः करने से रोका (तो वह) बोला मैं आदम से बेहतर हूं (क्योंकि) मुझको तूने आग से पैदा किया और उसको मिट्टी से पैदा किया।" 7/12 "(अल्लाह) ने फर्माया कि तू यहाँ से उतर जा क्योंकि तेरी यह हस्ती नहीं कि जन्नत में रहकर घमण्ड कर सके सो

निकल, तू जलीलों में से है।" 7/13 "वह बोला जिस दिन लोग उठा खड़े किये जायेंगे उस दिन तक की जिन्दगी की मुझे मोहलत दें। 7/14 "(अल्लाह ने) कहा कि तुझको मोहलत दी गई।" 7/15 "इस पर शैतान बोला कि जैसा तुमने मुझको गुमराह किया है मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर इन (आदम की संतानो) की घात में जा बैठूँगा।" 7/16 "फिर उन पर आगे से पीछे से और दाहिनी तरफ से और बांई तरफ से आउँगा और (मेरे भटकाने से) उनमें तू ज्यादातर शुक्रगुजार नहीं पावेगा।" 7/17 "(अल्लाह ने) फरमाया कि तू जलील मरदूद होकर यहा से निकल जा। आदम के बेटों में से जो तेरी पैरवी करेगा मैं बिला शक तुम (और तुम पर चलने वाले उन) सबसे दोजख को भर दूँगा। 7/18

शैतान पर अन्य आयतें 2/30 से 36, 168, 169, 5/90, 91, 4/117 से 121, 6/142, 7/21 से 30, 17/61 से 65, 18/50,51 38/71 से 85, 14/22, 15/26 से 42, 16/98, 99, 100, 17/61 से 65 23/97, 98 35/5, 6, 37/7, 8, 9

□

अल्लाह द्वारा कसमें

10 5 कुरान शरीफ़ में लगभग 125 स्वतंत्र आयतों में अल्लाह द्वारा खाई हुई कसमों की चर्चा है। 36वें अध्याय से लेकर आगे के अध्यायों के शुरु ही की आयतों में अधिकतर ये कसमें आती हैं। ये कसमें अपनी माननेवालों को अल्लाह द्वारा अपने किये गए वादों या हुक्मों की अटलता दर्शाने के लिए हैं। अल्लाह द्वारा ये कसमें अपनी आयतों या कुरान की सच्चाई, अपने पैगम्बर मोहम्मद साहिब की प्रामाणिकता, कयामत के आने के वायदे और उस समय सभी मरने वालों को पुनः कब्रों से उठाकर अपने सामने फैसले के लिए इकट्ठा करने, अपने फरिश्तों के कार्यों आदि से सम्बंधित हैं।

"हिकमतवाले इस कुरान की कसम" 36/2 "साद और नसीहत भरे कुरान की कसम" 38/1 "इस वाजहे (स्पष्ट) किताब की कसम।" 43/2

....."कुरान मजीद की कसम (कि मुहम्मद तुम हमारे पैगम्बर हो)" 850/1

"कसम उन लोगों की जो परे बांध कर कतारों में खड़े होते हैं 37/1 "फिर झिड़ककर डाटनेवालों की कसम।" 37/2 "फिर जिक्र (यानी कुरान) पढ़ने वालों की कसम"37/3 "बेशक तुम्हारा हाकिम एक अल्लाह है।" 37/4

"कसम है उडाकर बिखेरनेवाली (हवाओं) की" 51/1, "फिर (बादलों का) बोझ उठानेवालियों की।" 51/2 "फिर नर्मी से चलनेवालियों की" 52/3 "फिर हुक्म से (हर चीज को) बांटनेवालियो की 51/4 "बेशक (कयामत का) जो वादा तुमको मिला यह सच है।" 51/5

10.6 "तो (ऐ पैगम्बर) आसमान और जमीन के परवरदिगार की कसम यह सच है जैसा कि तुम बोलते हो।" 51/23

"कसम है तुर (पहाड़) की" 52/1 "और लिखी किताब की" 52/2 "बड़े पन्नों में" 52/3 "और बैतुल-मामूर (फरिश्तों का आसमानी काबा) की", 52/4 "और ऊँची छत आसमान की।" 52/5 "और उमड़ते हुए दरिया की (कसम है)।" 52/6 "बेशक तेरे परवरदिगार का अजाब होकर रहेगा।" 52/7

"तारे की कसम जब यह नीचे आये।", 53/1 "तुम्हारा साथी (यह मुहम्मद रास्ते से) न तो बहका और न बेराह चला।" 53/2 "सो मैं तारों के डूबने की कसम खाता हूं 56/75, "और समझो तो यह बड़ी कसम है।" 56/78 "कि बेशक यह कद्र का कुरान है।" 56/77 "तो जो कुछ तुम देखते हो मैं उन चीजों की कसम खाता हूँ।" 69/38 "और जो कुछ तुम नहीं देखते उसकी भी" 69/39 "कि बेशक यह (कुरान) एक फरिश्ते आली का पैगाम है।" 69/40

10 7 "हां-हां चाँद की कसम" 74/32 "और रात की (कसम) जब वह गुजरने लगे " 74/33

"और सुबह की (कसम) जब वह रोशन हो।" 74/34 "कि यह (नरक की) आग बड़ी चीज मे से है।" 74/35

"मैं उन तारों की कसम खाता हूँ जो (चलते-चलते) पीछे हटने लगते हैं।" 81/15 "ओर जो चलते-चलते गायब हो जाते हैं।" 81/16

"तो मैं शाम की सुर्खी की कसम खाता हूं" 84/6 "और चांद की कसम जब वह पूरा (उदय) हो" 84/18 "कि तुम दर्जा ब दर्जा मंजिल को तै करोगे" 84/19 "तो इन काफिरों को क्या हुआ कि ईमान नहीं लाते।" 84/20

"लौट फेर वाले आसमान की कसम।" 86/11 "और फट जाने वाली जमीन की कसम" 86/12 "जरुर यह कलाम बिलकुल दो टूक (सच और झूठ को जुदा करने वाला) है।" 86/13 "और यह कुछ हँसी की बात नहीं है।" 86/14

"मैं इस शहर (मक्का) की कसम खाता हूं" 90/1 "कसम है पैदा करने वाले आदम की और उसकी औलाद की।" 90/3

"और जीव की (कसम) और जिसने उसे नखसिख सब तौर पर दुरुस्त बनाया।" 91/7 "और उसकी कसम जिसने नर और मादा को बनाया।" 92/3। इस पैरा से प्रतीत हो रहा है कि यहां अल्लाह स्वयं अपनी की कसम खा रहे हैं।

10.8 "फुफकारते हुए सरपट दौड़ने वाले घोड़ों की कसम" 100/1 "फिर जो (पथरीली जमीन पर टापें) मारकर चिनगारियां निकालते हैं।" 100/2 "फिर सुबह को छापा जा मारते है।" "फिर उस दौड़ में गुबार उड़ाते हैं।" 100/4 "फिर उसी वक्त (दुश्मनों) की फौज में जा घुसते हैं।" 100/5 "तो क्या इनको मालूम नहीं कि जब वे जो कब्रों में हैं (कयामत के दिन) उठा खड़े किये जायेंगे।" 100/9 अल्लाह द्वारा खाई गई कसमों से संबंधित कुछ अन्य आयतें निम्न हैं : 68/1, 75/1, 2, 3, 4, 5, 81/17, 18, 19, 84/19, 85/1, 2, 3, 89/1 से 5, 91/1 से 6, 8, 92/1, 2, 93/1, 2, 95/1, 2, 3।

□

ईमानवाले या मुसलमान

10.9 कुरान शरीफ की लगभग 450 आयतें मुसलमान या ईमानवालों से संबंधित है। कुरान में मुसलमान का अर्थ है अल्लाह पर ईमानलाना, उसकी इबादत करना और अल्लाह का हुक्मबरदार बनना। और हजरत मोहम्मद पहले मुसलमान बने :

"(ऐ पैगम्बर) इन लोगों से कहो कि मुझे हुक्म मिला है कि अल्लाह ही की इबादत करु एक मात्र अल्लाह की इबादत" 39/11 "और मुझे यही आज्ञा मिली है कि मैं सबसे पहिला मुसलमान (हुक्मबरदार) बनूं।" 39/12

11.0 और हजरत मोहम्मद का दीन वही दीन है जो उनसे पहले इब्राहिम, इस्माईल, इसहाक और याकूब का दीन था। "और कौन है जो इब्राहिम के दीन से मुंह फेरे, सिवा उसके जो अपनो को बेअकली के सुपुर्द कर दे।" 2/130 "और इसकी (बाबत) इब्राहिम अपने बेटों को वसीयत कर गऐ, और इसी तरह याकूब भी कि ए मेरे बेटों बेशक अल्लाह ने इस दीन को तुम्हारे लिए पसंद फर्माया है, तो तुम मुस्लिम (अल्लाह के अनुवर्ती) होने की हालत ही में मरो।" 2/132 इसी बात को और स्पष्ट करते हुए अल्लाह हजरत मोहम्मद से कहते हैं : "उसने तुमको (अपने काम के लिए) चुन लिया है और दीन में तुम पर किसी तरह की तंगी नहीं रखी। तुम्हारे बाप (यानी पूर्वज) इब्राहिम का दीन (ही तुम्हारा दीन) है। उसने तुम्हारा नाम पहले मुस्लिम रखा था और इस (कुरान) ने भी (तो उसके रास्ते में मेहनत और जिहाद करो) ताकि पैगम्बर तुम्हारे मुकाबिले में गवाह हो....। पस नमाज कायम रखो और जकात दो और अल्लाह ही का सहारा मजबूती से पकड़ो वही तुम्हारा दोस्त है सो खूब ही दोस्त है और खूब ही मददगार है।" 22/78

इस्लाम में पूरे आने का आदेश देते हुए कुरान शरीफ में अल्लाह कहते हैं : "ऐ ईमानवालो, इस्लाम में पूरे-पूरे आ जाओ, और शैतान के कदमों पर मत चलो। बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।" 2/208 इस आयत में स्पष्ट भय दिखलाया गया है कि इस्लाम का न मानने का अर्थ है शैतान के मार्ग पर चलना।

मुसलमान का अर्थ और अधिक स्पष्ट करते हुए कुरान शरीफ कहते हैं : "रसूल उस (किताब) पर ईमान लाये जो उनके परवरदिगार की तरफ से उन पर उतरी है, और ईमानवाले भी सब उस पर ईमान लायें। और वे सब अल्लाह और उसके फरिश्तों और उसकी किताबों और उसके पैगम्बरों पर ईमान रखते हैं।" 2/285

11.1 ईमानवालों के विशेष कर्तव्य और उनकी विशिष्टता बतलाते हुए कुरान शरीफ में अल्लाह कहते है

1. "ऐ ईमानवालो, अल्लाह से डरते रहो जैसा कि उससे डरने का हक है और मुसलमान रहकर ही मरना।" 3/102 "और तुम सब मजबूती से अल्लाह की रस्सी पकड़े रहो और आपस में फूट न पैदा करना। और अपने ऊपर अल्लाह का वह एहसान याद रखो कि जब तुम आपस में दुश्मन थे फिर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत पैदा कर दी और तुम उसकी कृपा से भाई-भाई हो गए और तुम आग के गढ़े (नरक) के किनारे खड़े थे फिर उसने तुमको उससे बचा लिया। इसी तरह अल्लाह अपने हुक्म तुमसे खोल-खोल कर बयान करता है ताकि तुम (सच्चे) मार्ग पर रहो।" 3/103

2. "तुम लोग सबसे श्रेष्ठ उम्मत (संगत) हो जो लोगों के लिए पैदा की गई है।" 3/110

3. "ऐ ईमानवालो, अपने लोगों को छोड़कर (किसी गैर को) अपना भेदी मत बनाओ कि यह लोग तुम्हारे साथ बुराई करने में कुछ उठा नहीं रखेंगे और वह चाहते हैं कि तुमको तकलीफ पहुंचे।" 13/118

4. "और अल्लाह और रसूल का कहना मानों ताकि तुम पर दया की जाय।" 3/132

5. इस बात की चर्चा करते हुए कि अल्लाह ने ईमानवालो को काफिर पर विजय दिलवाई और उसकी कृपा से उन्होंने काफ़िरों को कत्ल किया और फिर अल्लाह ने तुमको हरवाया भी, कुरान शरीफ़ कहते हैं। "क्योंकि अल्लाह को तुम्हारी जांच मंजूर थी और (फिर भी) अल्लाह ने तुम्हारा कसूर माफ कर दिया। और ईमानवालों पर अल्लाह की कृपा रहती है।" 3/152

6. "ऐ ईमानवालो! (आपस में) एक दूसरे का माल बेजा मत खाओ, हां, आपस मे रजामंदी से तिजारत करो, और आपस में एक दूसरे को कत्ल मत करो। बेशक अल्लाह तुम पर मेहरबान है।" 4/29 "और जो जोर जुल्म से ऐसा करेगा हम उसको जल्दी ही आग मे झोकेंगे। और यह अल्लाह के लिए साधारण बात है।" 4/30

7. "अगर तुम उन बड़े-बड़े पापों से, जिनसे तुमको मना किया जाता है, बचते रहोगे तो हम तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देंगे और तुमको इज्जत की जगह (बहिश्त) में दाखिल करेंगे।" 4/31

8. "ऐ ईमानवालो! अल्लाह का हुक्म मानों, और पैगम्बर का हुक्म मानों, और तुममे से जो हाकिम है उनका हुक्म मानों।" 4/59 "और जो पैगम्बर हमने भेजा उसके भेजने से हमारा मतलब यही रहा है कि अल्लाह के हुक्म से उसकी आज्ञाएं मानी जावें।" 4/64 "ऐ ईमानवालो! अल्लाह के हुक्म पर चलो और रसूल के हुक्म पर चलों।" 47/33 "और जो लोग अल्लाह और रसूल का हुक्म मानें, तो ऐसे ही लोग उनके साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने एहसान किया यानी नबी और सिद्दीक़ और शहीद और नेक बन्दे, और यह लोग अच्छे साथी है।" 4/69 "और हुक्म मानों अल्लाह का, हुक्म मानों उसके रसूल का।" 64/12 "और जो कोई अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा पर चले और अल्लाह से डरे और उस (की अवज्ञा) से बचता रहे तो ऐसे ही लोग मुराद को पहुँचेगे।" 24/52 "(ऐ पैगम्बर) कहो कि अल्लाह का हुक्म मानो और पैगम्बर का हुक्म मानो।" 24/54 "और जब अल्लाह और उसका पैगम्बर कोई बात ठहरा दे तो किसी ईमानवाले मर्द या औरत को हक नहीं कि अपने

मामले में वह कोई अधिकार रखे। और जिसने अल्लाह और उसके पैगम्बर का हुक्म नहीं माना, वह जाहिरा राह भूल कर भटक गया।" 33/36

9. "ऐ ईमानवालो, (हर वक्त) अपना बचाव रखो और फिर अलग-अलग गिरोह बांध कर निकलो या इकट्ठे होकर निकलो।" 4/71

"किसी ईमानवाले को जेबा नहीं कि ईमानवालो को कत्ल करे, सिवा गलती से। और जो ईमानवालों को गलती से मार डाले तो एक ईमानवाला गुलाम आजाद कर दे और कत्ल हुए के वारिसों को खून की कीमत दे। फिर अगर कत्ल किया हुआ उन आदमियों में का हो जो तुम मुसलमानों के दुश्मन हैं, और (वह कत्ल करने वाला) खुद ईमानवाला हो तो एक ईमानवाला गुलाम आजाद करना होगा (खून की कीमत न देनी होगी) और जिस हत्यारे को यह ताकत न हो, तो लगातार दो महीने रोजे रखे कि तौबा का यह तरीका अल्लाह का ठहराया हुआ है।" 4/92

इस आयत में ईमानवाले और गैर-ईमानवालों के जीवन और प्राण की कीमत का भेद पूर्णरूप से स्पष्ट है। और प्रायश्चित्त के स्वरुप गुलाम की मुक्ति भी अल्लाह ने ईमानवाल यानी मुसलमान की ही मांगी है। आगे वाली आयत से यह और भी स्पष्ट हो जाता है

"और जो ईमानवाले को जानबूझकर मार डाले तो उसकी सजा दोजख है जिसमें वह हमेशा रहेगा। और उस पर अल्लाह का गजब प्रकोप होगा और उस पर अल्लाह की लानत और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा अजाब तैयार कर रखा है।" 4/93

11 2 किसी मुसलमान द्वारा गैर-मुसलमान को दोस्त बनाना या उसकी मदद करना अल्लाह की निगाह में महान अपराध है। यथा: "ऐ ईमानवालो, ईमानवाले को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ। क्या तुम अल्लाह के प्रति खुला अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो।" 4/144 "और तुम्हें क्या उम्मीद थी कि तुम पर (कुरान जैसी) किताब उतारी जायगी सिवाय इसके कि यह तेरे पालनकर्ता की कृपा से दी गई सो तू काफ़िरों को मददगार न हो।" 28/86

यदि ईमानवाले हो गए तब उसके लिए बड़ी बरकत है सजा का तो प्रश्न ही नहीं : "मगर जिन लोगों ने तौबा की और अपनी दशा सुधार ली और अल्लाह का मजबूत सहारा पकड़ा और अल्लाह के आज्ञाकारी हो गये तो यह लोग ईमानवालों के साथ होंगे। और अल्लाह ईमानवालों को बड़ा सवाब देगा।"4/147 "अगर तुम शुक्रगुजार हो और (उस पर) ईमान लाओ तो अल्लाह को तुम्हें सजा देने से क्या और अल्लाह कदरदान और जाननेवाला है।" 4/147

"ऐ ईमानवालो, (जब तुम ईमान ला चुके हो तो तुमको चाहिए कि अल्लाह के तमाम हुक्मों पर चलने का) करार पूरा करो।" 5/1 "और जिन लोगों ने (दीन से) इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह दोजखी हैं।" 5/10

"बस तुम्हारे तो यही मित्र हैं अल्लाह और अल्लाह का पैगम्बर, और मुसलमान जो नमाज कायम करते हैं।" 5/55 "और जो अल्लाह के पैगम्बर और मुसलमानों का दोस्त होकर रहेगा तो अल्लाह वालों ही की जय (निश्चित) है " 5 56 "और अल्लाह का हुक्म मानो और पैगम्बर का हुक्म मानो और (बेहुक्मी) से बचते रहो " 5/92 "बेशक हमने शैतानों को उन्हीं

लोगों का दोस्त बनाया है जो ईमान नहीं लाते।" 7/27 "ईमानवाले तो वही हैं कि जब अल्लाह का नाम आवे तो उनके दिल काँप उठे।" 8/2 "ऐ ईमानवालों! अल्लाह के हुक्म पर चलो और उसके पैगम्बर के और (उसका हुक्म) सुन लेने पर उससे मुँह न मोड़ो।" 8/20 "ऐ ईमानवालो! अल्लाह और रसूल की अमानत में खियानत न करो, और न आपस में धरोहरे मारो।" 8/27 "और बेशक अल्लाह उनको जान लेगा जो लोग ईमान लाये हैं और बेशक जान लेगा उनको जो दगाबाज हैं।" 29/11

"और जो लोग तुममें से ईमान लाये हैं उनके लिए (हमेशा) रहमत है। और जो अल्लाह के पैगम्बर (के दिल) को चोट पहुँचाते हैं उनको दुखदाई सजा होनी है।" 9/61 "क्या इन्होंने अभी तक इतनी बात भी नही समझी कि जो अल्लाह और उसके पैगम्बर का विरोध करता है उसके लिए दोजख की आग है, जिसमें वह हमेशा रहेगा।" 9/63 "और जिन लोगो ने जुल्म सहने के बाद अल्लाह के लिए देश छोड़ा हम उनको जरुर संसार में अच्छा ठिकाना देंगे और आखिरात का बदला तो कहीं बढ़कर है। काश उनको (यह) मालूम होता।" 16/41 आगे की दो आयतों में अल्लाह ने यह सिद्धांत निर्णीत किया कि यदि ईमान लाने के बाद किसी को जोर जबरदस्ती ईमान छोड़ना पड़ा पर मन से ईमान वाले रहे तो माफी है। पर यदि खुशी से कुफ्र किया तो उन पर अल्लाह का कोप है।

"जो शख्स ईमान लाने के बाद (किसी जोर जब्र से) कुफ्र करे (तब तो बख्शिस की गुंजाइश है) बशर्ते उसका दिल ईमान की तरफ से संतुष्ट हो, लेकिन जो (ईमान लाने के बाद) दिल खोलकर (खुशी-खुशी) कुफ्र करे तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का कोप है और उसके लिए बड़ी सख्त सजा है।" 16/106 ......"यह इस वजह से कि उन्होंने संसार के जीवन को आखिरात पर पसन्द किया और अल्लाह मुन्किरों को हिदायत नहीं दिया करता।" 16/107

ईमानवालों के लिये यह अनिवार्य है कि वो कयामत या आखिरात पर यकीन रखे। यदि कोई व्यक्ति कयामत पर यकीन नहीं रखता तो उसके लिए अल्लाह की ओर सख्त सजा तैयार है :

"और जो लोग आखिरात (के दिन) का यकीन नहीं रखते उनके लिए हमने सख्त अजाब तैयार रखा है।" 17/10

11 3 अल्लाह की आयतो पर ईमान लाने वाले ही मुसलमान बन सकते हैं शेष लोग तो मुर्दो, अंधों और बहरों के ही समान हैं :

"तो (ऐ पैगम्बर) तुम न तो मुर्दों को सुना सकते हो और न बहरों ही को अपनी आवाज सुना सकते हो जबकि वह पीठ फेर कर (विमुख) हो जाय।" 30/52 "और तू न अंधों को उल्टे रास्ते से सीधे रास्ते पर ला सकता है। तू तो बस उन्हीं लोगों को सुना सकता है जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं सो वही मुस्लिम (फर्माबरदार) हैं।" 30/53 अल्लाह के अनुसार ईमानवाले और गैर-ईमानवाले कभी बराबर नहीं हो सकते "तो क्या ईमान लाने वाला उसके बराबर है जो नाफर्मान है कभी बराबर नहीं हो सकते।" 32/18

11 4 अल्लाह के पैगम्बर मोहम्मद साहब की बात न मानने वाले काफिर हैं जिनका ठिकाना दोजख है और उनकी बात को सच मानने वाले ही ईमानवाले या परहेजगार हैं यही नेकी

है जिसके बदले में अल्लाह उनको मन चाही चीजें देगा और उनके बुरे कामों को उनसे उतार देगा और उनकी हर तरह से मदद करेगा :

"फिर उससे जालिम कौन जो अल्लाह से झूठ बोले और सच्ची बात जब उसके पास पहुँची तो उसको झुठलाए। क्या काफ़िरों का दोजख ही ठिकाना नहीं है।" 39/32 ..."और जो सच बात लेकर आया (यानी मोहम्मद साहब) और (जिसने उसको) सच माना वही लोग परहेजगार हैं।" 39/33 "वह जो चाहेंगे उनके परवरदिगार के यहाँ उनके लिए मौजूद होगा। नेकी करनेवालों का यही बदला है।" 39/34 "ताकि अल्लाह उनके बुरे कामों को जो उन्होंने किये उनसे उतार दे और उनके नेक कामों के बदले में जो उन्होंने किये उनको प्रतिफल दे।" 39/35 ...."हम दुनिया की जिन्दगी में अपने पैगम्बरों की और ईमानवालों की मदद करते हैं और उस दिन (आखिरात में भी) मदद करेंगे जबकि गवाह खड़े होंगे।" 40/51 .. "और अन्धा और देखनेवाले बराबर नहीं और न ईमानवाले जो नेक काम करते हैं बुरा काम करने वालों के (बराबर हैं) तुम बहुत कम ध्यान देते हो।" 40/58 "हम दुनिया में और आखिरात में तुम्हारे मददगार हैं। और जिस चीज को तुम्हारा जी चाहे और जो तुम मांगो वहाँ (बहिश्त) मे मौजूद होगी।" 41/31

11 5 उपरोक्त आयतों में एक और बात स्पष्ट हो जाती है कि ईमानवाले बन जाने के बाद मन की सभी इच्छाओं, वासनाओं और कामनाओं की पूर्ति का विशेषकर परलोक में, अल्लाह की ओर से पूर्ण आश्वासन है। ईमानवाले बन जाने से मन दिव्य होकर वासनाओं और इच्छाओं से ऊपर उठकर आध्यात्ममय हो जाता है इस प्रकार का इशारा कुरान शरीफ़ में कही नही आता है। और "नेक" काम करने का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अर्थ अल्लाह और उनके रसूल हजरत मोहम्मद पर ईमान लाना ही है।

इसी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए अल्लाह कहते हैं :

"फिर हमने तुमको दीन के रास्ते (शरीअत) पर लगाया सो तुम उस पर चलो और नादानों की ख्वाहिशों पर मत चलो।" 45/18 "यह अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम न आवेंगे। और जालिम एक दूसरे के दोस्त हैं और परहेजगारों (ईमानवालों) का दोस्त अल्लाह है।" 45/19 "वह जो बदी कमाते है, क्या वह समझते हैं कि क्या हम उनको उन लोगों के बराबर कर देगें जो ईमानवाले और नेक कार्य करते रहे और उनकी (व इनकी क्या) जिन्दगी ओर मौत यकसा होगी? यह बुरे दावे है जो वे करते है।" 45/21 "बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है फिर इसी विश्वास पर जमे रहे तो न तो उन पर डर होगा और न वह उदास होंगे।" 46/13 ..."यही बहिश्त के हकदार है और उसमें हमेशा रहेंगे।" 46/14

स्वाभाविक है कि अल्लाह की अपने मानने वालों पर अपार कृपा और रहम है। यह रहम इतना अधिक है कि यदि ईमानवाले किन्ही परम्परागत आत्म-संयम के कुछ कठोर से दीखने वाले नियमों का पालन करने में अपने को असमर्थ पाते हैं, तो अल्लाह को ऐसे नियमों से ईमानवालों को मुक्त कर देता है। पहले रोजों के दिनों का यह अनिवार्य नियम था कि रमजान के महीने में मुसलमान स्त्री-पुरुष आपस में सहवास नहीं करेंगे। किन्तु जब अल्लाह ने पाया कि ईमानवाले इतना सयम नहीं बरत पा रहे हैं और रोजों की रातों में भी आदमी चोरी

छिपे अपनी बीवियों के पास जाते हैं तो अल्लाह का यह हुक्म कुरान शरीफ़ में मुसलमानो के लिए उतरा :

"(मुसलमानो) रोजों की रातों में अपनी बीवियों के पास जाना तुम्हारे लिए जायज कर दिया गया है, वह तुम्हारी पोशाक हैं तुम उनकी पोशाक हो। अल्लाह ने जाना, तुम अपनी जानों से खिनायत करते थे (चोरी-चोरी उनके पास जाने से अपना दीनी नुकसान करते थे) सो उसने तुम पर दया की दृष्टि की और तुम्हारे अपराध दरगुजर किये। पस, अब (रोजो मे रात के वक्त) उनके साथ मिलो और जो (नतीजा) अल्लाह ने तुम्हारे लिए ठहरा दिया है (यानी औलाद) उसकी चाहना करो, और खाओ पिओ यहाँ तक कि (रात की) काली धारी से सुबह की सफेद धारी तुमको साफ दिखाई देने लगे। फिर रात (आने) तक रोजां पूरा करो।" 2/187

116 नीचे दी जा रही दो आयतों में अल्लाह ने ईमान लानेवालों के पापों को क्षमा करने की बात बिल्कुल स्पष्ट कर दी है :

"और जो ईमान लाये और उन्होनें भले काम किये और (कुरान) जो मुहम्मद पर उतरा है, उस पर ईमान लाये .....अल्लाह ने उनके पाप उन पर से उतार दिये और उनकी हालत दुरुस्त कर दी।" 47/2 "यह इसलिये कि काफ़िर झूठ पर चले और जो ईमान लाये वह अपने परवरदिगार के रास्ते पर चले।" 47/3

मुहम्मद साहब और ईमानवालों का उत्साह बढ़ाते हुए अल्लाह कहते हैं :

"(ऐ मुहम्मद) हमने तेरे हक में फतह का फैसला कर दिया—फतह भी साफ खुली हुई है।" 48/1 "और अल्लाह तुझे मदद दे—भारी मदद।" 48/3 "उसी ने ईमान वालों के दिलो मे चैन डाली ताकि उनके ईमान के साथ और ईमान बढ़े।" 48/4

117 मुसलमान या ईमानवाले को पुनः परिभाषित करते हुए और उन पर जिहाद भी लाजिमी करते हुए कुरान शरीफ़ में आता है : ईमानवाले वह हैं जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाये और फिर शक में डांवाँडोल नहीं हुए और अल्लाह की राह में अपनी जानो माल से जिहाद किया। यही सच्चे ईमानवाले हैं। 49/15

ईमानवालों के लिए अल्लाह की राह में अपना धन खर्च करना अनिवार्य माना गया है। यही नहीं अल्लाह ने हर कदम पर इस्लाम की राह में यानी की जिहाद में धन खर्च को प्रोत्साहित करते हुए ऐसे धन खर्च को दूना करके वापस देने का वायदा किया है और न खर्च करने वालो को धिक्कारा है। कुरान शरीफ़ के 57वें अध्याय या सूर में इसकी बड़ी खुली चर्चा है. "और तुमको क्या हो गया है कि अल्लाह पर ईमान नहीं लाते हाँलाकि पैगम्बर तुमको तुम्हारे परवरदीगार पर ईमान लाने के लिए बुला रहे हैं और अगर तुमको यकीन आए तो अल्लाह तुमसे (इसका) पक्का अहद ले चुका है।" 57/8 "और तुमको क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते और हालाँकि आसमानों और जमीन का वारिस अल्लाह ही है। तुममें से जिन लोगों ने फतह (मक्का) से पहिले खर्च किया जिहाद में लड़े वह (दूसरे लोगों के) बराबर नहीं। यह लोग दर्जे में उनसे बढ़कर हैं जिन्होंने (मक्का की फतह के) बाद माल) खर्च किये और लड़े " .57/10

"ऐसा कौन है जो अल्लाह को खुशदिली से (केवल अल्लाह के लिए) उधार दे फिर वह उसको उसके लिए दूना कर दे और उसके लिए इज्जत का बदला है।" 57/11

"बेशक खैरात करने वाले मर्द और खैरात करने वाली औरतें और (जो लोग) अल्लाह को खुशदिली से उधार देते हैं उन्हें दूना मिलेगा और इज्जत का बदला मिलेगा।" 57/18

"......और जो लोग काफिर हुए और हमारी आयतों को झुठलाते रहे यही लोग दोजखवाले हैं।" 57/19 "अगर तुम अल्लाह को खुशदिली से कर्ज दो तो वह तुमको उसका दूना बदले में देगा और तुम्हारे गुनाह माफ करेगा......।" 64/17 लोगों अपने परवरदिगार की बख्शिस की तरफ लपको और बहिश्त की तरफ(लपको) जिसका फैलाव है जैसे आसमान और जमीन का फैलाव। (और वह) उन लोगों के लिए तैयार है जो अल्लाह और उसके पैगम्बरो पर ईमान लाते हैं.....।" 57/21 "ऐ ईमानवालों, अल्लाह से डरते रहो और उसके पैगम्बर (मुहम्मद साहब) पर ईमान लाओ कि वह अपनी कृपा से तुमको दोहरा हिस्सा दे...। 57/28

11.8 इसी लाभ की बात को आगे बढ़ाते हुए अल्लाह कहते हैं : "हे ईमानवाले मैं तुमको ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुमको दुखदाई अजाब से बचा दे।" 61/10 (और वह व्यापार यह है कि) अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जानों से जिहाद करो।" 61/11

"(ऐसा करोगे तो) वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें (जन्नत के) बागों में दाखिल करेगा।" ...... 61/12 "और एक और चीज देगा जिसे तुम चाहते हो (यानी) अल्लाह की तरफ से मदद और थोड़े ही दिनों में जीत होगी। और ईमानवालों को (इसकी) खुशखबरी सुना दो।" 61/13 "जहन्नम वाले और जन्नतवाले (कभी) बराबर नहीं, जन्नत वाले ही कामयाब हैं।" 59/20

"हमने तुझे कौसर (यानी बहिश्ती हौज) अता किया है।" 108/1 "सो अब अपने परवरदिगार की नमाज पढ़ और कुर्बानी दे।" 108/2 "बेशक तेरे दुश्मन का कोई (नाम लेनेवाला) न रहेगा।" 108/3 "जब कि अल्लाह की मदद और फतह आई।" 110/1 "और तूने लोगों को देखा कि अल्लाह के दीन में गिरोह के गिरोह दाखिल हो रहे हैं।" 110/2 "तो अपने परवरदीगार की हम्द (गुणानुवाद) के साथ तस्बीह करने में लग जा और उससे पापों की क्षमा मांग। निसन्देह वह बड़ा तौबा कबूल करने वाला है।" 110/3

11.9 कुरान शरीफ़ में अल्लाह और उसके पैगम्बर, और अल्लाह द्वारा भेजी गई आयतों पर ईमान लाने का अनिवार्य फल कुरान वर्णित बहिश्त या स्वर्ग है, और न लाने का परिणाम दोजख या नरक है। कुरान शरीफ की लगभग 500 आयतों में स्वर्ग और नरक का विस्तृत वर्णन किया गया है जिसकी चर्चा अलग से की जायेगी। ऊपर ईमानवालों की चर्चा के संदर्भ में हमने बहिश्त और दोजख की थोड़ी सी झलकी देखी। नीचे ईमान न लानेवालों को मिलने वाले दोजख या नरक से संबंधित कुछ आयतों के साथ इस प्रसंग को समाप्त करते हैं .

"यकीनन जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया हम उनको जल्दी ही (दोजख) की आग में झोंकेंगे। जब उनकी खालें जल जावेंगी हम उनको दूसरी खाल बदल देंगे ताकि वह बराबर) अजाब का मजा चखते रहें " 4/56 "जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे

काम किये हम उनको ऐसे बागों में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे हमेशा रहेंगे। उनमें उनके लिए बीबियाँ साफ सुथरी होंगी और हम उनको घनी छाहों में ले जाकर रखेंगे।" 4/57 "ईमानवाले मर्दो और ईमानवाली औरतों से अल्लाह ने (बहिश्त के) बागों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वह उनमें हमेशा रहेंगे, और (वादा किया है) सदा रहनेवाली जन्नत में बढ़िया मकानों का.....।" 9/72 "यही (रहमान के खास बन्दे) हैं जिनको (उनके सब्र के) बदले में (जन्नत में रहने को) ऊंचें महल मिलेंगे और दुआ और सलाम के साथ वहाँ उनका इस्तकबाल किया जायेगा। 25/75

"और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उनको हम जन्नत के (हवादार झरोखेवाले) महलों में जगह देगें जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और उनमें वे हमेशा रहेगें।" 29/58 "जो हमारी आयतों पर ईमान लाये और आज्ञाकारी रहे।" 43/69 "(ऐसे बन्दों) तुम और तुम्हारी बीबियाँ जन्नत में जा दाखिल हों, ताकि तुम्हारी (वहां) इज्जत की जावे।" 43/70, "उन पर सोने की रकाबियाँ और प्यालों का दौर चलेगा और जिस चीज को (उनका) जी चाहे और जो भी नजर में भली मालूम हो वहां (जन्नत में) मौजूद होगी। और तुम हमेशा वहीं रहोगे।" 43/71

कुछ अन्य आयतें जिनमें "ईमानवालों" की चर्चा है :

3/103 से 107, 114, 163, 164, 191 से 195, 199, 200, 4/26 से 29, 36 से 45, 64 से 71, 105 से 112, 131 से 135, 5/5, 10, 93, 105, 6/32, 71, 72, 159 से 164, 7/27, 28, 29, 8/2, 3, 4, 20 से 30, 9/71, 72, 13/20, 21, 22, 23 से 31,14/27, 30, 31, 16/30, 31, 90 से 97, 17/9, 19/96, 21/101 से 106, 22/35, 44, 23/1 से 11, 24/51, 55, 56, 25/70 से 77, 28/67, 84, 85, 86, 29/9, 44, 56, 30/29, 30, 37, 31/8, 9, 22, 32/15, 17, 19, 20, 33/1, 2, 35, 43, 48, 58, 70, 71, 34/37, 38, 35/29, 36/25, 37/37 से 49, 171 से 175, 39/22, 23, 39, 53, 54, 61, 62, 40/7, 8, 9, 14, 15, 67, 41/8, 30, 31, 32, 42/22 से 26, 13, 14, 15, 36, 37, 38, 43/68 से74, 47/2, 15, 36, 48/3, 5, 6, 29, 49/9 से 13, 50/31 से 35, 51/15, 16, 56/88 से 95, 57/12 से 21, 58/19 से 22, 66/6, 7, 8, 69/34, 35, 70/22 से 35, 98/7, 8,।

❑

पैगम्बर मुहम्मद साहिब

12.0 जैसा कि हमने ऊपर देखा ईमानवालों या मुसलमानों के लिए यह अनिवार्य है कि वे अल्लाह के पैगम्बर हजरत मुहम्मद पर भी ईमान लाएं। समस्त कुरान शरीफ अल्लाह की तरफ से फरिश्ता गबरील के माध्यम से हजरत मुहम्मद पर ही उतरा था—अतः अल्लाह ने समस्त आयतें या अपने आदेश उन्हीं को सम्बोधित किये हैं। यहां नीचे हम केवल उन्हीं विशिष्ट आयतों को दे रहे हैं जो सीधे हजरत मुहम्मद और उनके कार्यों से संबंधित हैं :

"और ऐ मुहम्मद जो किताब (यानी कुरान) तुम पर उतारी गई है और जो तुमसे पहले (इंजील, जबूर तौरेत वगैरः) उतारी गई उनको जो मानते हैं और आखिरत पर यकीन करते हैं।" 2/4 "यही लोग अपने परवरदिगार की ओर से सही राह पर हैं और यही सफल हैं।" 2/5 "(ऐ पैगम्बर) ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुमको ठीक-ठीक पढ़कर सुनाते हैं। और (ऐ मुहम्मद) बेशक तुम भेजे हुओं (यानी पैगम्बरों) में से हो।" 2/252 "रसूल उस (किताब) पर ईमान लाये जो उनके परवरदीगार की तरफ से उन पर उतरी है, और ईमानवाले भी सब (उस पर ईमान लाये) और वे सब अल्लाह और उसके फरिश्तों और उसकी किताबों और उसके पैगम्बरों पर ईमान रखते हैं....।" 2/285 हजरत मुहम्मद वास्तव में पैगम्बरों में से एक हैं, इस बात की शपथ खाते हुए अल्लाह कहते हैं : "हिकमतवाले इस कुरान की कसम" 36/2, "बेशक तू पैगम्बरों में से है।" (36/3) और अल्लाह जिसको चाहता है अपने पैगम्बरों में चुन लेता है :

"....अलबत्ता अल्लाह अपने पैगम्बरों में से जिसको चाहता है चुन लेता है। तो तुम अल्लाह और उसके पैगम्बरों पर ईमान लाओ.... ।" 3/179, "और (ऐ पैगम्बर) हमने तुमको दुनिया-जहान के लोगों पर कृपा करके भेजा है।" 21/107, "और (ऐ पैगम्बर) अल्लाह की राह में मेहनत करो.... उसने तुमको (अपने काम के लिए) चुन लिया है और..... तुम्हारे बाप (यानी पूर्वज) इब्राहीम का दीन (ही) तुम्हारा दीन है। और लोगो, उसने तुम्हारा नाम पहले (यानि पहली किताबों में भी) मुस्लिम रखा था और इस (कुरान) में भी।" 22/78

".....और (ऐ पैगम्बर) हमने तुझको लोगों की तरफ पैगाम पहुंचाने वाला बनाकर भेजा है और(इस पर) अल्लाह की गवाही काफी है।" 4/79, "जिसने पैगम्बर का हुक्म माना उसने अल्लाह (ही) का हुक्म माना। 4/80 "ऐ लोगों, पैगम्बर तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से ठीक बात लेकर आ चुके हैं। बस ईमान लाओ, तुम्हारा भला होगा और अगर न मानोगे तो जो कुछ आसमानों और जमीन में है अल्लाह ही का है। और अल्लाह बड़ा जानने वाला और हिकमतवाला है।" 4/170 और पैगम्बर हजरत मुहम्मद को निर्देश देते हुए अल्लाह कहते हैं :

"और (ऐ पैगम्बर) जो कुछ अल्लाह ने तुम पर उतारा है तुम भी उसी के मुताबिक इन लोगों को हुक्म दो और जो कुछ सच्ची बात तुमको पहुँची हैं उसे छोड़कर इनकी (मनचाही) ख्वाहिशों की पैरवी मत करो......" 5/48 "और (ऐ पैगम्बर) जो किताब अल्लाह ने (तुम पर) उतारी है उसी के मुताबिक इन लोगों को हुक्म दो, और उनकी इच्छाओं की पैरवी न करो.....।" 5/49 जैसाकि हमने ऊपर देखा पैगम्बर के नाते हजरत मुहम्मद का मुख्य कार्य लोगों तक अल्लाह का पैगाम पहुंचाना था। और उन्हें अल्लाह के दीन में आने का संदेश देना था। यदि वह नहीं माने तो पैगम्बर का यह भी काम था कि वे लोगों को अल्लाह के अजाब या कोप से डराएं। न मानने वालों की पैगम्बर पर कोई जिम्मेदारी नहीं थी।

"ऐ पैगम्बर, हमने तुमको (हक की) गवाही देने वाला और (ईमानवालों) को खुशखबरी देनेवाला व (अन्याइयों को अल्लाह के अजाब से) डराने वाला बनाकर भेजा है।" "तो (ऐ पैगम्बर) याद दिलाए जा, तेरा बस काम ही (लोगों को सचेत करना और) याद दिलाते रहना है।" 88/21, "तू उन पर दरोगा तो नहीं है।" 88/22, "मगर जो मुँह फेरे और इन्कार करे" 88/23 "तो अल्लाह उसको बड़ा अजाब देगा।" 88/24 "बेशक इनको हमारी तरफ फिर लौटकर आना है।" 88/25, "फिर उनसे हिसाब लेना बेशक हमारा काम है।" इस विषय की चर्चा यानी पैगम्बर का काम केवल अल्लाह का पैगाम देना है, जिन अन्य आयतों में है, वे कुछ ये हैं: 5/92, 99, 6/50, 7/188, 10/15, 16, 17, 11/12, 13/7, 36, 40, 17/93, 18/110, 25/56, 57, 29/152, 34/46 से 50, 35/23, 24, 38/65, 70, 39/41, 42/4, 6, 8, 46/9, 48/8, 51/50, 53/56, 50/2, 45।

12.1 हजरत मुहम्मद साहब पर अल्लाह की आयतें या कुरान कई वर्षों तक उतरता रहा। उस समय मुहम्मद साहब के विरोधी उन पर फबती कसते थे या ताने मारते थे कि कुरान मुहम्मद ने खुद गढ़ लिया है, या वह शायर या बावला है, या कोई जादूगर है। वह कहते थे कि यदि मुहम्मद पैगम्बर है तो वह कोई चमत्कार क्यों नहीं दिखलाता या इस पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतरा, आदि आदि। कुरान शरीफ़ में इसकी विशद चर्चा है और इन सबका प्रतिवाद करते हुए अल्लाह का हजरत मुहम्मद को विशिष्ट आश्वासन और उनके उत्तर बताए है और साथ ही चेतावनी भी दी हैं। आगे के पैरा में इसी की सप्रमाण चर्चा है।

(1) "और (काफ़िर) कहते हैं कि यह कैसा पैगम्बर है जो (साधारण आदमियों की तरह) खाना खाता है और बाजारों में फिरता है। इसके पास कोई फरिश्ता क्यों नहीं भेजा गया कि इसके साथ रहकर (न मानने वालों को डराता)"। 25/7, "या इस पर कोई खजाना बरसा होता या इसके पास एक बाग होता कि उससे खाया करता। और जालिम (आपस में) कहते हें तुम तो ऐसे आदमी के पीछे हो गये हो जिस पर किसी ने जादू कर दिया है।" 25/8, "ऐ पैगम्बर" तुम्हारी बाबत कैसी-कैसी मिसालें देते हैं सो (बिलकुल) गुमराह हो रहे हैं और फिर राह पर नहीं आ सकते।" 25/9

(2) "और काफ़िर कहते हैं" कि तुम भेजे हुए (यानी रसूल) नहीं हो, तो (इनसे) कहो कि मेरे और तुम्हारे बीच बस अल्लाह गवाह है, और (या फिर वह शख्स) गवाह है जिसके पास किताब है।" 13/43. "ऐ पैगम्बर." जिस तरह हमने और पैगम्बर भेजे थे इसी तरह हमने

तुमको भी एक उम्मत (गिरोह) में भेजा है जिससे पहले और (उम्मतें) गुजर चुकी हैं ताकि जो (खुदाई पैग़ाम) हमने तुम पर भेजा है, वह उनको सुनाओ.....तो (ऐ नबी), कहो वही मेरा परवरदिगार है, उसके सिवाय किसी की बन्दगी नहीं...... ।" 13/30

(3) "और तुम्हारा जी इस बात से तंग न हो कि ये कहते हैं कि इस शख्स पर कोई खजाना क्यों नहीं उतारा, या उसके साथ कोई फरिश्ता क्यों नहीं आया। सो (ऐ नबी), तुम (तो सिर्फ़) डराने वाले हो और जिम्मे तो हर चीज अल्लाह ही के है।" 11/12

(4) "(ऐ पैगम्बर) क्या ये काफ़िर कहते है कि (तुमने) कुरान को अपने दिल से गढ़ लिया है, तो इनसे कहो कि तुम (भी) इसी तरह की दस सूरतें गढ़ लाओ, और अल्लाह के सिवाय जिसको तुमसे बुलाते बन पड़े बुला लो (कि तुम्हारे लिए ऐसी सूरतें गढ़ दें) अगर तुम (अपने इस कहने में) सच्चे हो।" 11/13, ".....कहते हैं कि कुरान को पैगम्बर ने खुद (अपने मन से) गढ़ लिया है, तो तुम (उनको) जबाब दो कि अगर मैंने खुद गढ़ लिया है तो मेरा गुनाह मुझ पर है और जो गुनाह तुम करते हो उस पर मेरा कुछ जिम्मा नहीं।" 11/35 "बल्कि (जालिम) कहने लगे कि यह तो उड़ते हुए सपने हैं बल्कि इसकी अपनी मनगढ़न्त है, बल्कि यह शायर है...... ।" 21/5

(5) इससे भी तीव्र कही फबती की चर्चा करते हुए और उसका उत्तर बतलाते हुए अल्लाह कहते है :

"और जब तुम इन लोगों के पास (कुछ अरसे तक) कोई आयत नहीं लाते तो कहते हैं कि क्यों कोई आयत (अपनी तरफ से) तुमने न गढ़ ली।" 7/203, (तो ऐ रसूल) (तुम इनसे) कह दो कि मैं तो जो कुछ मेरे परवरदिगार के यहाँ से मेरी तरफ आती है उसी पर चलता हूँ ।" 7/204 "और अक्सर लोग यकीन लानेवाले नहीं अगर्चे तू कितना ही चाहे।" 12/103 "और तू उनसे उस (हिदायत पहुँचाने) के बदले में कुछ मजदूरी नहीं माँगता..." 12/104

(6) "क्या लोगों को इस बात का ताज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं" में से एक आदमी की तरफ इस बात का पैगाम भेजा कि लोगों को डराओ और ईमानवालों को खुशखबरी सुनाओ कि उनके परवरदिगार के पास उनके लिये बड़ा दरजा (सम्मान) है। काफ़िर कहने लगे वह तो खुलासा जादूगर है।" 10/2 "(और मक्केवाले) कहते हैं इस नबी को उसके परवरदिगार की तरफ से कोई चमत्कार क्यों नहीं दिया गया तो (ऐ रसूल) तुम कहो कि गैब की (छिपी) खबर तो बस अल्लाह को ही है तो तुम इन्तजार करो(अल्लाह के हुक्म का), मैं भी तुम्हारे साथ इन्तजार करनेवालों में हूँ।" 10/20 "और (ऐ पैगम्बर) तुम्हारी तरफ जो हुक्म भेजा है उसी पर चलते जाओ और उसी पर जमे रहो, यहां तक कि अल्लाह फैसला कर दे। और वह सब से बेहतर फैसला करने वाला है।" 10/109

(7) किस प्रकार के चमत्कार दिखाने की माँग हजरत मुहम्मद पर होती थी, और उसका उत्तर अल्लाह ने क्या बतलाया यह निम्न आयतों से स्पष्ट है :

"और (ऐ पैगम्बर) मक्का के काफिर तुमसे कहते है कि हम तो उस वक्त तक तुम पर ईमान लानेवाले नहीं जब तक हमारे लिए जमीन से कोई चश्मा न बहा निकालो।" 17/90 "या खजूरों और अंगूरों का कोई बाग तुम्हारे हो और उसके बीचोबीच तुम नहरें जारी कर

दिखाओं" 17/91, "या जैसा तुम कहा करते हो आसमान के टुकड़े-टुकड़े हम पर ला गिराओ या अल्लाह और फरिश्तों को लाकर सामने खड़ा करो।" 17/92 "या कोई तुम्हारा सोने का घर हो जाय या तुम आसमान में चढ़ जाओ.... (तो ऐ पैगम्बर) कह दो कि सुब्हानल्लाह। मैं क्या चीज हूँ सिवाय एक इन्सान (उस अल्लाह का) पैगाम लानेवाला।" 17/93

(8) "और (ऐ मुहम्मद तुझसे) लोग कहते हैं कि ऐ शख्स ऐसे! कि जिस पर नसीहत उतरी है, तू तो पागल है।" 15/6, "अगर तू सच्चा है तो फरिश्तों को हमारे सामने (हमारे विश्वास के लिए) क्यों नहीं ले आता।" 15/7, "सो (ऐ पैगम्बर) हम फरिश्तों को (यूं) ही नही उतारा करते, सिवाय हक के साथ अर्थात् जब किसी कौम की तबाही का फैसला हो जाता है)। 15/8, "हमी ने यह शिक्षा (कुरान) उतारी है और हमी उनके निगहबान हैं।" 15/9

(9) आखिर में हम इस विषय पर उन आयतों को दे रहे हैं जिनमें अल्लाह उन लोगो को फटकार बतलाते है जो मुहम्मद साहब और कुरान को न मानने के कारण अल्लाह द्वारा भेजे गए अजाब में पकड़े गए। यहाँ यह बतलाना उचित होगा कि कुरान शरीफ में शुरु से लगभग आखिर तक हजरत मुहम्मद की पैगम्बरी पर लोगों द्वारा शक उठाई जाने वाली आयते आती रहती हैं और अल्लाह द्वारा ऐसे लोगों पर सदैव फटकार रही है। "तुम इस (कुरान) से अकड़ते हुए उसे (यानी रसूल को) किस्सा कहनेवालों की तरह छोड़कर चल देते थे।" 23/67, "तो क्या इन लोगों ने इस कलाम (कुरान) पर गौर नहीं किया या यह कि वह (यानी मुहम्मद) कोई ऐसी बात लाया है जो कभी इनके अगले बाप दादों के पास नहीं आई थी।" 23/68, "या यह कहते हैं कि इसको जूनून है (नहीं), बल्कि इनका रसूल सच बात लेकर इनके पास आया है और उनमें से बहुतों को सच बात बुरी लगती है।" 23/70, क्या तुम इनसे (इनको हिदायत पहुँचाने के बदले) कुछ मजदूरी मॉगते हो सो (ऐसा तो है नहीं)......। 23/72

(10) "और (ऐ पैगम्बर) तू तो इनको सीधी राह पर बुलाता है।" 23/73

(11) "तो (ऐ पैगम्बर) इन लोगों को समझाओं कि अपने परवरदिगार की कृपा से तू न तो काहिल है और न दीवाना।" 52/29, "क्या काफ़िर कहते हैं कि यह (रसूल नहीं बल्कि एक) शायर है (और) हम उसकी बाबत जमाने की गर्दिश की राह देख रहे हैं?" 52/30, "तो (ऐ पैगम्बर) तू कह कि तुम राह देखों मैं भी तुम्हारी राह देख रहा हूँ।" 52/31, "क्या इनकी अक्लें इनको ऐसा सिखाती हैं या यह लोग (आदतन) शरीर हैं।" 52/32, "या (ऐ नबी तुम्हारी निस्वत ये लोग) कहते हैं कि इसने (कुरान) अपने आप बना लिया है। कुछ नहीं इनको (अल्लाह पर ईमान नही हैं)।" 52/33, "फिर (अपने इस कहने में यह) अगर सच्चे है तो इसी तरह का कोई कलाम बना ले आवें।" 52/34, "क्या वे आप ही आप बन गये हैं, या (उनका कोई सिरजनहार नहीं और अपने को खुद) वही बनानेवाले हैं।" 52/35

(12) अल्लाह यहाँ कसम खाते हुए मुहम्मद साहब की पैगम्बरी की प्रमाणिकता देते हुए अपने द्वारा फरिश्ता जिब्रील के माध्यम से भेजी हुई आयतों का बहुत ही स्पष्ट वर्णन करते हैं :

"तारे की कसम जो यह नीचे आये।" 53/1, "तुम्हारा साथी (मुहम्मद रास्ते से) न तो बहका और न बेराह चला।" 53/2, "वह अपनी मनमानी बातें नहीं कहता।" 53/3, "यह तो

हुक्म है जो उसे भेजा जाता है।" 53/5 "निहायत ताकतवर (फरिश्तः जिब्रील) ने उसे सिखलाया है।" 53/5 "बड़े जोरवाले ने, फिर वह (रसूल को) प्रत्यक्ष (भी) नजर आये।" 53/6 "और वह आसमान के ऊँचे किनारे पर था।" 53/7 "फिर वह नजदीक हुआ और करीब बढ़ा। 53/8 "फिर दो कमान बराबर या उससे भी कम फर्क रह गया। 53/9 "फिर अल्लाह ने अपने बन्दे(मुहम्मद) पर हुक्म जो वह्य (संदेश) भेजना था सो भेजा।" 53/10 "(पैगम्बर के) दिल ने देखी हुई चीज में कोई गलती नहीं की।" 53/11 "अब क्या तुम उससे इस पर झगड़ते हो जो उसने देखा।" 53/12 "और उन्होंने उनको दूसरी बार भी उतरते देखा।" 53/13 "अतिम हद की बेरी के पास।" 53/14 "उस बेरी के पास (हमेशा) रहने की जगह बहिश्त है।" 53/15 "जब छा रहा था उस बेरी पर जो छा रहा था (यानी नूर-इलाही)" 53/16 "(रसूल की) निगाह न बहकी न हद से बढ़ी।" 53/17 "बेशक उन्होंने अपने परवरदिगार की कितनी ही बड़ी निशानियाँ देखीं।" 53/18

"और (ए पैगम्बर) इसी तरह हमने अपने हुक्म से तेरी तरफ एक फरिश्ता (जिब्रील को) भेजा। इससे पहले तू न जानता था कि किताब क्या चीज है और ईमान क्या चीज है .." 42/52

(13) "नून कलम की और जो कुछ वे लिखते हैं उसकी कसम।" 68/1

"तू अपने परवरदिगार की कृपा से दीवाना नहीं है।" 68/2 "और बेशक तुझको कभी न खत्म होने वाला अज्र (प्रतिफल) है।" 68/3 "और बेशक तेरा अखलाक (आचार) बहुत श्रेष्ठ है।" 68/4 "तो जल्दी ही तू देखेगा और वे (काफ़िर) भी देख लेगें।" 68/5 "कि तुममें से अब कौन (दीवाना और) गुमराह हो रहा है।" 68/6

12 2 अन्त में हम यहाँ उन आयतों को उद्धृत करते हैं जो अल्लाह ने हजरत मुहमद पर फबतियाँ करने वालों को कठोरतम और मानों अंतिम उत्तर देते हुए कहीं है।

"तो जो कुछ तुम देखते हो मैं उन चीजों की कसम खाता हूं।" 69/38 "और जो तुम नहीं देखते (उसकी भी)।" 69/39, कि बेशक "यह तो (निःसंदेह) संसार के परवरदिगार का उतारा हुआ है।" 69/43 "और अगर यह (पैगम्बर अल्लाह से) हमारे (नाम) पर कोई बात बना लाता।" 69/44 "तो हम (जरुर) उसका दाहिना हाथ पकड़ते।" 69/45 "फिर उसकी गर्दन की रग काट डालते।" 69/46, "फिर तुममें (मुझको) इससे कोई रोकनेवाला नहीं हैं।" 69/47 यह (कुरान) एक फरिश्ते आली का पैगाम है।" 69/40 और न तुमको अपने हाथ से लिखना ही आता था। अगर ऐसा तुम करते होते तो बेशक ये झूठा ठहरानेवाले लोग शक कर सकते थे (कि यह किताब तुम्हारी गढ़ी हुई है) 29/48

28 2 हजरत मुहम्मद को भी कुरान शरीफ में अल्लाह ने स्थान-स्थान पर सावधान किया है और चेतावनी दी है ताकि वह अल्लाह के बतलाये मार्ग से भटक न जाय। रसूल को तो हर हालत में अल्लाह की बतलाई राह में दृढ़ता से चलना है :

(1) "और (ऐ रसूल) कह दो मुझको (तो यह) हुक्म मिला है कि सबसे पहले, मैं आज्ञाकारी बनूँ (ऐ रसूल तुम) मुशरिकों (किसी को भी अल्लाह का साझी बनाने वाले) में न हो जाना।" 6/14, "कहो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की नाफ़र्मानी करुं तो मुझको के) एक बड़े दिन की सख्त सजा से डर लगता है " 6/15

(2) "काफ़िरों की हठधर्मी की बाबत अल्लाह हजरत मुहम्मद को कहते हैं इनको कोई बडे से बड़ा चमत्कार भी दिखा दो तो भी ये ईमान लानेवाले नहीं। और यहीं पैगम्बर को सावधान करते हुए अल्लाह कहते हैं : ....तो देखो तुम कहीं नादानों में न हो जाना (कि लगो खुदाई इन्तजाम अपने हाथों में लेने)" 6/35, "यह अल्लाह की हिदायत है, अपने बन्दों मे से जिसको चाहे उस राह पर चलाये। और अगर यह (पैगम्बर भी) शिर्क करते होते तो इनका (सारा) किया धरा इनके लिए अकारथ हो जाता।" 6/88 ".....और (ऐ पैगम्बर) वह लोग जिनको हमने (तुमसे पहले) किताब दी है, इस बात को (अच्छी तरह) जानते हैं कि कुरान हकीकत में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से उतरा है, (सो खबरदार कहीं) तुम शक करने वालो मे न हो जाना।" 6/114

(3) "सो (ऐ पैगम्बर) जैसा तुमको हुक्म हुआ है (उस पर) कायम रहे....और हद से न बढ़ना......। 11/112, "और जिन लोगों ने जुल्म किया उनकी ओर मत झुकना, नही तो (दोजख की) आग तुम्हारे लगेगी। 11/113

(4) "और (ऐ रसूल इस) कुरान के उतरने से पहले न तो तुम कोई किताब पढ़ते थे। तो (ऐ पैगम्बर) तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे को (पूज्य मानकर) न पुकारने लगना वरना तुम भी अजाब में फँस जाओगे।" 26/213, ऐ पैगम्बर, "और तुम्हें क्या उम्मीद थी कि तुम पर (कुरान जैसी) किताब उतारी जायेगी। सिवाय इसके कि यह तेरे पालनकर्ता की कृपा से दी गयी सो तू काफ़िरों का मददगार न हो।" 28/86 "और ऐसा न हो कि जब अल्लाह के हुक्म तुम पर उतर चुके हैं उसके बाद ये (काफ़िर) तुमको उनसे रोकने में कामयाब हो जॉय और मुशरिकों में न हो जाना।" 28/87

(5) "ऐ नबी अल्लाह से डरते रहो और काफ़िरों और मुनाफिकों (दगाबाजों) का कहा न मानना....।" 33/1, "और काफिरों और (दगाबाज) मुनाफिकों का कहा न मान और उनके दुःख देने की तरफ धयान न दे और अल्लाह पर भरोसा रखो.....।" 33/48

(6) "तो (ऐ पैगम्बर अल्लाह के दीन पर) तू सब्र से कायम रह, बेशक अल्लाह का वायदा सच्चा है और ऐसा न हो कि जो लोग यकीन नहीं रखते वे तुझको (ईमान से) डगमगा दे।" (30/60)

आखिर में मुहम्मद साहब को भी ग्रसित करने को तत्पर कमजोरी, जिसकी ओर अल्लाह ने इशारा किया और उनको कड़ी चेतावनी दी, से संबंधित आयतें निम्नलिखित है :

"और (ऐ पैगम्बर) जो हमने हुक्म (कुरान) तुम्हारी तरफ भेजा है तो लोग तो तुमको इससे बिचलाने में लगे थे ताकि इस (कुरान) को छोड़कर तुम कुछ और झूठ हमारे नाम पर गढ लो, और तब वह लोग तुमको दोस्त बना लेते।" 17/73 "और अगर हम तुम्हें मजबूत न बनाये रखते तो तू भी थोड़ा इनकी तरफ को झुकने ही लगा था।" 17/74 "ऐसा होता तो हम तुझको जीते में दुहरी सजा और मरने के बाद भी दुहरी (सजा का) मजा चखाते फिर तुमको हमारे मुकाबले में कोई मददगार नहीं मिलता।" 17/75

"ऐ पैगम्बर" यह तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से सत्य (प्रकट) है। तो कहीं तुम भी शक करनेवालों में से न हो जाना " 3/60

उपरोक्त आयतों से पाठक स्वयं अल्लाह और उनके पैगम्बर के आपसी संबंधों और स्तरों का अनुमान लगा सकते हैं।

12 3 कुरान शरीफ़ में यह कहा गया है कि मुहम्मद साहब के आने की घोषणा हजरत ईसा बहुत पहले कर चुके थे और यह कि वह बिना पढ़े लिखे थे : "और जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ इसराईल के बेटो! मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ कि तौरात जो मुझसे पहले उतरी है उसकी तस्दीक (पुष्टि) करता हूं और एक (और) पैगम्बर की खुशखबरी देता हूं जो मेरे बाद आयेगा उसका नाम अहमद होगा।".....61/6, "हम यहाँ पाठकों को बतलादें कि हजरत मुहम्मद का एक नाम अहमद भी था। "वही है जिसने अनपढ़ों मे उन्हीं में से एक (मुहम्मद) को पैगम्बर बनाकर भेजा है कि वह उनको उस (अल्लाह) की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाता है और उनको पाक करता है....और इससे पहले तो यह (अरब के लोग) जाहिरा गुमराही थे।" 62/2

"वह जो ताबेदार उस रसूल के हुए जो उम्मी (बे पढ़े लिखे) पैगम्बर हैं.... ।" 7/57

12 4 मुहम्मद साहब पर कुछ विशेष आयतें भी है जो निम्नलिखित है—

(1) "काफ-कुरान मजीद की कसम (कि मुहम्मद) तुम हमारे पैगम्बर हो।"

(2) "मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वे काफ़िरों के हक में बडे सख्त हैं (और) आपस में रहमदिल हैं..... ।" 48/29

(3) "मगर जिसको रसूल चुन लिया तो उसके आगे पीछे (अल्लाह) निगहबान (सरक्षक होकर) चलता है।" 72/27, "ताकि वह (अल्लाह) जानले कि उन्होंने अपने रब के पैगाम पहुँचा दिये.... ।" 72/28

(4) "(ऐ मुहम्मद) हमने तेरे हक में फतह का फैसला कर दिया—फतह भी साफ खुली हुई।" 48/1 "ताकि अल्लाह तेरे अगले और पिछले पाप क्षमा करे और तुझ पर अपनी निआमतें पूरी करें और तुझको सीधी राह पर चलाये।" 48/2

"और अल्लाह तुझे मदद दे—भारी मदद।" 48/3

(5) "ऐ चादर ओढ़े हुए (पैगम्बर)।" 74/1, "उठो और लोगों को सचेत करो।" 74/2, "और अपने परवरदिगार की बढ़ाई (का बखान) करो।" 74/3 "और अपने कपड़ों को पाक रखो।" 74/4, "और नापाकी से अलग रहो।" 74/5 "(ऐ पैगम्बर) हमने तुझ पर धीरे-धीरे कुरान उतारा।" 76/23 "सो तू अपने परवरदिगार के हुक्म की सब्र से राह देख और उनमें से किसी गुनाहगार नाशुक्रे का कहा न मान।" 76/24

12 5 स्पष्ट है कि अल्लाह व उनके पैगम्बर हजरत मुहम्मद पर ईमान लाये बिना कोई भी व्यक्ति मुसलमान या ईमानवाला नहीं कहा जासकता। कुरान शरीफ़ में हजरत मुहम्मद का बहुत ही विशिष्ट स्थान है। वे पिछले पैगम्बरों से वरिष्ठ दिखलाए गए हैं। ईमानवालों को उनके प्रति और उनकी बीबियों के प्रति किन मर्यादाओं का पालन करना चाहिए इसका भी निर्देश कुरान शरीफ़ में दिया है। ये मर्यादाएं निम्नलिखित हैं—

(1) "इन रसूलों (जिनको हम समय-समय पर भेजते रहे हैं) में से हमने किसी पर किसी को श्रेष्ठता दी है (मसलन) इनमें कोई तो ऐसे हैं जिनके साथ अल्लाह ने बातचीत की

और किन्हीं के दर्जे (और तरह पर) ऊँचे किये....।" 2/253 "....और हमने कुछ पैगम्बरों की कुछ पर बढ़ती दी और हमी ने दाउद को जबूर दी।" 17/55

(2) "ईमानवाले वह हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाये हैं। और जब किसी ऐसी बात के लिए, जिसमें लोगों के जमा होने की जरुरत है, पैगम्बर के पास होते है तो जब तक पैगम्बर की इजाजत न ले लें (मजलिस से उठकर) नहीं जाते हैं। (ऐ पैगम्बर) जो तुमसे इजाजत ले लेते हैं, हकीकत में वही लोग हैं जो अल्लाह पर और उसके पैगम्बर पर ईमान रखते हैं। फिर जब यह लोग अपने किसी काम के लिए तुमसे (जाने की) इजाजत माँगे तो तुम इनमें से जिसको चाहो इजाजत दे दिया करो। और अल्लाह से उनके लिए क्षमा माँगो। अल्लाह बड़ा बख्शनेवाला बेहद मेहरबान है।" 24/62

(3) "(और लोगों जब) पैगम्बर (तुममें से किसी को बुलाएं तो उन) के बुलाने को आपस में (मामूली बुलावा) न समझो जैसा तुममें से एक को एक बुलाया करता है। अल्लाह उन लोगों को खूब जानता है जो तुममें से (रसूल की) आँख बचाकर (मजलिस से) चुपचाप खिसक जाते हैं। तो जो लोग रसूल की आज्ञा के विरुद्ध काम करते हैं उनको इससे डरना चाहिए कि (कहीं ऐसा न हो कि) उन पर कोई आफत आपड़े या उन पर (कोई और) सख्त अजाब आ जाय।" 24/63

(4) "ऐ ईमानवालो, तुम जब आपस में कान में बात करो तो (इन मुनाफिकों की तरह) गुनाह की और जियादती की और पैगम्बर की बेहुक्मी की बातें (एक दूसरे के कान में) न किया करो, हां, नेकी और परहेजगारी की (बातें करो) और अल्लाह से डरते रहो जिसके सामने जमा होना है।" 58/9

(5) "यह कानाफूसी तो एक शैतान की हरकत है ताकि जो ईमान लाये हैं (उन्हें) दुःख पहुंचे....।" 58/10

(6) ऐ ईमानवाले! जब तुमसे कहा जावे कि मजलिस में खुलकर बैठो तो तुम खुलकर बैठो (और) अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी कर देगा। और जब कहा जाय उठ खड़े हो तो उठ खडे हुआ करो कि जो लोग तुममें से ईमान रखते हैं, और जिन्हें इलम दिया गया है, अल्लाह उनके दर्जे ऊँचे करेगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी (पूरी) खबर है।" 58/11

(7) "ऐ ईमानवाले! जब तुमको पैगम्बर के कान में कोई बात कहनी हो तो अपनी बात कहने से पहिले कुछ खैरात कर दिया करो। यह तुम्हारे ही हक में भलाई है और ज्यादा पाक है। फिर अगर तुम यह न कर सको तो अल्लाह क्षमा करने वाला मेहरबान है।" 58/12, "तो ऐ लोगों क्या तुम (पैगम्बर से) कान में कोई बात कहने से पहले कुछ खैरात देने से डर गये तो जब तुम (ऐसा) न कर सके और (फिर भी) अल्लाह ने तुमको माफ कर दिया तो (कम से कम यही करो कि) नमाजें कायम करो और जकात दो और अल्लाह और उसके पैगम्बर का हुक्म मानो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है।" 58/13

(8) "ऐ ईमानवालो! पैगम्बर के घरों में न जाया करो, सिवाय (उस मौके के कि तुमको खाने के लिए) आने की इजाजत दी जाय कि तुमको खाना तैयार होने की राह न देखनी पड़े मगर जब तुम बुलाये जाओ तब जाओ फिर जब खा चुको तो अपनी-अपनी राह

लो और आपस में बातों में न लग जाओ। तुम्हारी इस बात से पैगम्बर को दुःख होता है और पैगम्बर तुमसे ऐसी हिदायत करने में शरमाते हैं। और अल्लाह ठीक बात बताने में शर्म नहीं करता। और जब पैगम्बर की बीवियों से तुम्हें कोई वस्तु माँगनी हो तो पर्दे के बाहर (खड़े रहकर) उनसे माँगो। इससे तुम्हारे दिल और उनके दिल पाक रहेंगे। और तुम्हें शोभा नहीं देता कि अल्लाह के पैगम्बरों को दुःख दो और न तुमको यह शोभा देता है कि उनके बाद कभी उनकी बीवियों से निकाह करो। बेशक तुम्हारा ऐसा करना अल्लाह के नजदीक बड़ा (गुनाह का) काम है। 33/53

(9) "जो लोग अल्लाह को और उसके रसूल को दुःख देते हैं उन पर दुनिया और आखिरात में अल्लाह की फटकार है और अल्लाह ने उनके लिए जिल्लत की सजा तैयार कर रखी है।" 33/57

(10) "ऐ पैगम्बर, अपनी बीबियों से कह दो कि अगर तुम दुनिया का जीना या वहां की रौनक चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दिलाकर अच्छी तरह से विदा कर दूँ। 33/28

(11) "अगर तुम अल्लाह और उसके पैगम्बर और आखिरत के घर को चाहनेवाली हो तो तुममे से जो नेकी पर हैं उनके लिये अल्लाह ने बड़ा अज्र (बदला) तैयार कर रखा है।" 33/29

(12) "ऐ पैगम्बर की बीवियों! तुममे से जो कोई बदकारी करेगी जाहिरा उसके लिए दोहरी सजा की मार दी जायेगी, और अल्लाह के नजदीक यह मामूली बात है।" 33/30

(13) "और जो तुममे से अल्लाह और उसके पैगम्बर की फर्माबरदारी करेगी और भले काम करेगी उसको उसका दुगुना अज्र (प्रतिफल) देंगे....।" 33/31

(14) "ऐ पैगम्बर की बीवियो! तुम और औरतों की तरह नहीं हो। अगर तुम्हें परहेजगारी मंजूर हो तो तुम दबी जबान (किसी मर्द के साथ) बात न किया करो, न (ऐसा कि) जिसके दिल में (बुरी वासना का) रोग है वह तुममे (किसी तरह की) आशा पैदा कर ले और (अगर बात करना ही तो) तुम माकूल बात कहो।" 33/32 "और अपने घरों में ठहरो और (अपना बनाव-शृंगार आदि) न दिखाती फिरो....नमाज कायम रखो और जकात देती रहो और अल्लाह और उसके पैगम्बर की फरमाबरदार रहो। अल्लाह यही चाहता है कि तुम (रसूल के सभी) घरवालों से नापाकी दूर रखे और तुमको पाक-साफ बनाये।" 33/33

(15) "और जब अल्लाह और उसका पैगम्बर कोई बात ठहरा दे तो किसी ईमानवाले मर्द या औरत को हक नहीं कि अपने मामले में कोई अधिकार रखे। और जिसने अल्लाह और उसके पैगम्बर का हुक्म नहीं माना, वह जाहिरा राह भूलकर भटक गया।" 33/36

(16) "और (ऐ मुहम्मद) जब तू उस (जैद) से जिस पर अल्लाह ने और तूने कृपा की थी कहता था कि तू अपनी जोरु (जैनब) को अपने पास रहने दे और अल्लाह से डर और तू अपने दिल में एक बात को छिपाता था जिसको अल्लाह जाहिर कर देना चाहता था और तू लोगों से डरता था हालांकि तुझे अल्लाह से ही डरना चाहिए। फिर जब जैद को उस (बीवी) से कोई सरोकार नहीं रहा(और उसने उसको तलाक दे दी) तो हमने (ऐ मुहम्मद) तेरा निकाह उस औरत से करा दिया ताकि मुसलमानों को अपने मुँहबोले बेटों (दत्तक पुत्र) की जोरुओं से निकाह कर लेने में कोई तगी (रोक) न रहे जबकि उन (मुँहबोले बेटों) का उन बीवियों

से कोई सरोकार न रह जाय। और अल्लाह का हुक्म पूरा होना ही था।" 33/37

(17) "अल्लाह ने पैगम्बर के लिए जो बात ठहरा दी हो उसमें (पैगम्बर के लिए) कुछ हर्ज नहीं। जो (पैगम्बर) पहले हो चुके हैं उनमें भी अल्लाह का यही दस्तूर रहा है और अल्लाह का हुक्म मुकर्रर हो चुका है।" 33/38

(18) "ऐ नबी! हमने तेरी बीबियाँ तुझ पर हलाल की जिनके मिहर तू दे चुका है और लौडियाँ जिन्हें अल्लाह (माले गनीमत में) तेरी तरफ लाया और तेरे चचा की बेटियों और तेरे बुआ की बेटियाँ और तेरे मामा की बेटियाँ और तेरे मौसियों की बेटियाँ जो तेरे साथ देश त्याग कर आई हैं और वह ईमानवाली औरतें (भी) जिन्होंने अपने को पैगम्बर को दे दिया (यानी बगैर मिहर निकाह से आना चाहें) (और) पैगम्बर भी उनको निकाह में लेना चाहें (तो यह हुक्म) खास तेरे लिए है, आम मुसलमानों के लिए नहीं। हमने जो मुसलमानों पर उनकी बीवियों और उनके हाथ के माल (यानी लौडियों) का हक (मिहर) ठहरा दिया है (वह) हमको मालूम है (वह उनको देना वाजिब है) (और ऐ पैगम्बर) आम मुसलमानों के मुकाबले तुमको यह विशेषता इसलिए है कि तुम पर (किसी तरह की) तंगी न रहे....." 33/50

(19) "(और ऐ पैगम्बर) तुम्हारे लिए यह भी रिआयत है कि (अपनी बीवियों मे से जिसको चाहो अलग रखो और जिसको चाहो अपने पास रखो)। और जिसको तुमने अलग कर दिया था उनमें से किसी को फिर (अपने पास) बुलवा लो तो तुम पर कोई पाप नही। इस तौर पर जियादा सम्भव है कि उनकी आँखें टेढ़ी रहें और उदास न हों और जो (कुछ भी) तुम उनको दे दोगे उसे लेकर सबकी सब राजी रहेंगी। और जो कुछ तुम लोगों के दिलो में है, अल्लाह जानता है और अल्लाह सब कुछ जानने वाला और सहनशील है।" 33/51

(20) (ऐ पैगम्बर इस वक्त के) बाद से (दूसरी) औरतें तुमको हलाल नहीं और न यह (दुरुस्त है) कि इनको बदलकर दूसरी बीवियाँ कर लो अगर्चे उनकी खूबसूरती तुमको अच्छी ही क्यों न लगे, मगर बाँदियाँ (और भी आ सकती हैं) और अल्लाह हर चीज का देखने वाला है।" 33/52

अल्लाह द्वारा परदे का हुक्म

(21) "ऐ पैगम्बर अपनी बीवियों और अपनी बेटियों और मुसलमानों की औरतो से कह दो कि (बाहर निकलते समय या गैरों के सामने परदा करें और) अपनी चादरों को (मुँह तक) लटका लिया करें। इससे पहचानी जायेंगी (कि नेकबख्त हैं) और कोई शरारती (उनको) न सतावे..... ।" 33/59

(22) "ऐ पैगम्बर! अपनी बीवियों को खुश करने के लिए तू अपने ऊपर उस चीज को क्यों हराम करता है जो अल्लाह ने तेरे लिए हलाल की है... ।" 66/1 "तुम लोगों के लिए अल्लाह ने तुम्हारी कसमों के (किन्हीं सूरतों में) खोल डालने का भी हुक्म रखा है। और अल्लाह ही तुम्हारा मालिक है.... । 66/2 "और जब पैगम्बर ने अपनी बीवियों में से किसी से एक बात चुपके से कही, फिर जब उसने (अपनी सौत पर) उसकी खबर (जाहिर) कर दी और अल्लाह ने इस बात को (नबी से) जाहिर कर दिया.... फिर जब (नबी ने) वह उस बीवी को जता दिया कि तुमने हमारी छिपकर कही बात जाहिर कर दी तो उसने (हैरत में) पूछा कि

तुमको यह किसने बताया। (नबी ने) कहा मुझको उस खबर रखनेवाले और जाननेवाले (अल्लाह) ने बताया।" 66/3 "अगर तुम दोनों (हफ्स और आयशा) अल्लाह की तरफ तोबा करो (तो बेहतर है) क्योंकि तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं। और अगर तुम दोनों पैगम्बर पर चढ़ाई करोगी तो अल्लाह और जिब्रील और नेकबख्त ईमानवाले उसके दोस्त हैं, और उसके यार (दूसरे) फरिश्ते भी उसके मददगार हैं।" 66/4

(23) "अभी अगर(पैगम्बर) तुम सबको तलाक दे दें तो अजब नहीं कि उसका परवरदिगार तुम्हारे बदले उसको तुमसे अच्छी बीबियां दे जो हुक्म उठानेवाली, ईमानवाली, तौबा करने वाली, नमाज में खड़ी रहने वाली (और हमेशा अजिजी से) इबादत करने वाली, रोजा रखने वाली, ब्याही (यानी विधवा या तलाक पाई) हुई या क्वारी हों।" 66/5

हजरत मुहम्मद से संबंधित कुछ अन्य आयतें : 3/161, 6/104, 135, 11/12, 15/88, 89, 94 से 99, 16/43, 44, 17/54, 21, 107 से 112, 23/51 से 61, 93 से 96, 27/91, 92, 93, 29/52 से 55, 33/3, 35/4, 36/4, 6, 11, 37/171, 172, 173, 38/86, 87, 88, 46/35, 51/50 से 55, 52/47, 48, 57/9, 72/20 से 28, 80/1 से 11।

□

कुरान-आयत-किताब

12.6 इस्लाम में मुसलमान कहलाने के लिये मूलभूत शर्ते है : अल्लाह पर ईमान लाना, अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद साहिब पर ईमान लाना, कुरान पर ईमान लाना और आखिरात या कयामत पर ईमान लाना। हम अल्लाह और पैगम्बर मुहम्मद की चर्चा विस्तार से कर चुके है। यहाँ हम अब विस्तार से कुरान शरीफ़ में वर्णित अल्लाह द्वारा भेजी गई आयतों या स्वय कुरान शरीफ़ या किताब के स्वरूप की चर्चा करेंगे।

(यह पुस्तक है, कुछ भी सन्देह नहीं है, इसमें हिदायत है) अल्लाह का डर रखनेवालो को।" 2/2, "और उनको (जो अनदेखे पर ईमान रखते और नमाज कायम करते और जो कुछ हमने उनको दे रखा है उसमें से राह खुदा में) खर्च करते हैं। 2/3 "और (ऐ मुहम्मद) जो (किताब या कुरान) तुम पर उतारी गई और जो तुमसे पहले उतारी गई हैं उनको जो मानते हे और आखिरत पर यकीन करते हैं।" 2/4 "(ऐ पैगम्बर) यह आयतें और हिकमत भरी नसीहतें हम तुमको सुना रहे है।" 3/58 यह (कुर्आन) लोगों (को समझाने) के लिए पूरा बयान (विवरण) है और (अल्लाह से) डरने वालों के लिए हिदायत और नसीहत है। 3/138 "ऐ लोगों! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ से हुज्जत आ चुकी और हमने तुम पर जगमगाती हुई रोशनी (कुरान) उतार दी।" 4/174 "सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये उन्होंने उसी का मजबूत (सहारा) पकड़ा तो अल्लाह उनको जल्द अपनी कृपा और दया मे ले लेगा, और उनको अपनी तरफ की सीधी राह पर पहुँचा देगा।" 4/175

"ये हिकमतवाली किताब की आयते हैं।" 10/1, "यह (कुरान) एक किताब है जिसकी आयतें पक्की हैं, और हिकमतवाले और खबरदार अल्लाह की ओर से साफ-साफ बयान की गयी है।" 11/1 (ऐ मुहम्मद) यह किताब हमने तुम पर इसलिए उतारी है कि लोगो को अंधेरों से निकालकर उजाले में लाओ (यानि) उनके परवरदिगार के हुक्म से उस जबर्दस्त ओर तारीफ के लायक अल्लाह की राह की तरफ (लाओ)।" 14/1, "यह आयतें हैं किताब की और खुले कुरान की।" 15/1, "कोई दिन (होगा कि ये) काफ़िर लालसा करेंगे कि वह मुसलमान होते।" 15/2 "कसम है रौशन किताब की।" 44/2, "हमने एक मुबारक रात मे इसको उतारा....बेशक हम ही कह सुनाने वाले हैं।" 44/3 (दुनिया की) हर पुख्ता बात उसी रात को फैसला हुआ करती है।" 44/4, "हमारे खास हुक्म से(ऐ पैगम्बर) बेशक हम ही (कुरान को रसूल के जरिए) भेजने वाले हैं।" 44/5 "यह तेरे परवरदिगार की मेहरबानी है। वह (सब कुछ) सुनता और जानता है।" 44/6

12 7 और मुबारक की या कद्र की रात का खुलासा करते हुए अल्लाह कहते हैं "हमने यह (कुरान) कद्र की रात से शुरु किया " 97/1 और तू क्या जाने कद्र की रात क्या

है।" 97/2, (कद्र की रात हजार महीनों से बढ़कर है।" 97/3) "उसमें फरिश्ते और रूह अपने परवरदिगार की आज्ञा से(जमीन पर) उतरते हैं, हर काम पर" 97/4 "सलामती.... वह (रात) सुबह तक (सलामती की रहती है)।" 97/5 पुनः कुरान की प्रमाणिकता की साक्षी एक बड़ी कसम द्वारा देते हुए अल्लाह कहते है : "सो मैं तारों के डूबने की कसम खाता हूं।" 56/75 . "और समझो तो यह बड़ी कसम है।" 56/76, "कि बेशक यह कद्र का कुरान है।" 56/77, "छिपी किताब (लोह महफूज) में लिखा हुआ है।" 56/78, "उसको वही छूते हैं जो पाक हैं।" 56/79 "संसार के परवरदिगार से उतारा गया है।" 56/80। और ऐसे कुरान को अपनाने में सुस्ती प्रदर्शित करने पर या इसको झुठलाने पर अपना रोष दिखलाते हुए अल्लाह कहते हैं और अब क्या तुम इस कलाम से सुस्ती करते हो।" 56/81 "और अपना हिस्सा यही लेते हो कि झुठलाते हो।" 56/82

12 8 कुरान की भारी महिमा बतलाते हुए अल्लाह कहते हैं : "(ऐ पैगम्बर) अगर हमने यह कुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि वह अल्लाह के डर के मारे झुक गया और फट गया होता। हम यह मिसालें लोगों के लिए बयान फर्माते हैं शायद वह ध्यान दें।" 59/21

"(ऐ पैगम्बर) क्या ये (काफ़िर) कहते हैं कि (तुमने) कुरान को अपने दिल से गढ़ लिया है तो इनसे कहो कि तुम (भी) इसी तरह की दस सूरत गढ़ लाओ, और अल्लाह के सिवाय जिसको तुमसे बुलाते बन पड़े बुला लो।" 11/13, "पस अगर (काफ़िर) तुम्हारा कहना न कर सके (तो उनसे कहो कि अब अच्छी तरह) जान लो कि यह (कुरान) अल्लाह ही के इलम से उतरा है, और यह कि उसके सिवाय किसी की इबादत नहीं करनी चाहिए, तो क्या अब तुम (अल्लाह का) हुक्म मानने को तैयार हो।" 11/14 "हमी ने यह शिक्षा (कुरान) उतारी है और हमीं उनके निगहबान (संरक्षक) हैं।" 15/9 और यह बात स्पष्ट करते हुए कि कुरान शैतान की तरफ से नहीं उतरा है और न यह शैतान के बस की बात है। अल्लाह पैगम्बर से कहते हैं : "और इस (कुरान) को जैसा वह लोग ख्याल करते हैं शैतान लेकर नहीं उतरे।" 26/210 "और न यह काम उनके बस का है।" 26/211, "वह तो (हक की राह देखने) सुनने से दूर रखे गये हैं।" 26/212 " तो (ऐ पैगम्बर) तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे को (पूज्य मानकर) न पुकारने लगना वरना तुम भी अजाब में फँस जाओगे।" 26/213

12.9 पुनः लोगों को आश्वासन देते हुए कि पैगम्बर पर कुरान अल्लाह के नजदीकी फरिश्ता जिब्रील के माध्यम से ही उतरा है और यह किसी शैतान का कहा हुआ नहीं" है। अल्लाह कहते है: मैं उन (सितारों) की कसम खाता हूं जो (चलते-चलते) पीछे हटने लगते हैं।" 81/15, और जो चलते चलते गायब हो जाते है।" 81/16 और रात की कसम जब वह जाने को हो।" 81/17, "और सुबह की (कसम) जिस वक्त उसकी पौ फटती है।" 81/18 बेशक यह (कुरान) एक प्रतिष्ठित फरिश्ते का पैगाम है।" 81/19, "शक्तिवाला और अर्श के मालिक (अल्लाह) के नजदीक उसका बड़ा रुतबा है।" 81/20, "सरदार और अमानतदार (भरोसेवाला) है।" 81/21, "और (ऐ मक्कावालों) तुम्हारे दोस्त (मुहम्मद यह कुछ) बावले नहीं हैं।" 81/22," और बेशक उन्होनें इन (जिब्रील) को आसमान के खुले किनारे पर देखा है।" 81/23 "और यह (कुरान) किसी शैतान मरदूद का कहा हुआ नहीं है " 81/25 "फिर तुम किधर बहके) चले जा रहे हो।" 81/26

कुरान की आयतों को न माननेवाले अरबों को कुरान शरीफ़ में अल्लाह ने बार-बार सावधान किया है और न मानने पर भयानक परिणाम से डराया भी है, "और यह किताब हमने उतारी है जो बरकतवाली है, तो इस पर चलो और डरते रहो, शायद तुम पर रहम किया जाय।" 6/135, "(और ऐ मुशकारिन अरब! हमने यह कुरान उतारा) इसलिये कहीं यह न कह बैठों कि हमसे पहले बस (यहूदी व नसरानी इन) दो ही गिरोहों पर किताब उतरी थी ओर (तुमको यह कहने का मौका मिल जाय कि) हम तो उसके पढ़ने-पढ़ाने से बिलकुल बेखबर थे।" 6/156 ....तो उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाये और उनसे कतराये।" और जो लोग हमारी आयतों से कतराते हैं हम उनके कतराने के बदले मे उनको बड़ी दुखदाई सजा देंगे।" 6/157

13.0 कुरान को एक प्रकट सत्य बतलाते हुए अल्लाह का कहना है कि यह ईमानवालो के लिये मेहरबानी है और जालिमों के लिये नुकसानदायक : "और (ऐ पैगम्बर) लोगों से एलान कर दे कि सत्य प्रकट हो गया और असत्य मिट गया। बेशक असत्य तो मिटनेवाला होता ही है।" 17/81 "और हम कुरान के द्वारा ऐसी बातें उतारते हैं जो ईमानवालों के लिए ईलाज और मेहरबानी हैं और जुल्म करने वालों को तो इससे (उल्टे) नुकसान ही बढ़ता है।" 17/82

13.1 पर कुरान के इन सारे फायदों के बावजूद मक्केवाले व अन्य लोग पैगम्बर के विरुद्ध और अल्लाह की आयतों के खिलाफ चालें चलने लगते हैं और उनकी नफरत बढ़ती ही जाती है "और जब लोगों को तकलीफ पहुँचाने के बाद हम मेहरबानी का स्वाद चखा देते है तो बस हमारी आयतों से (जान बचाने की) चालें चलने लगते हैं। तो (ऐ नबी) कहो अल्लाह (तुम्हारे मुकाबले) जियादः चाल चलने वाला है। हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) तुम्हारी सब चाले लिखते जाते हैं।" 10/21 "....तो (ऐ पैगम्बर) देखो (उन) जालिमों का कैसा अन्त हुआ।" 10/39 "और हमने इस कुरान में तरह-तरह की बातें बयान की ताकि लोग समझें मगर इससे उनकी नफरत ही बढ़ती जाती है।" 17/41

13 2 कुरान शरीफ़ के बारे में एक महत्वपूर्ण बात बतलाते हुए अल्लाह कहते हैं : (लोगों) जितनी मुसीबतें जमीन पर उतरती हैं और जो तुम पर उतरती हैं (उनमें कोई ऐसी नहीं जो) उनके दुनिया में पैदा होने से पहले हमने किताब (लोहे महफूज) में न लिख रखी हो। बेशक यह अल्लाह के लिए आसान काम है।" 57/22

13 3 कुरान उतरने के समय जो विशेष सावधानी एवं संयम की आवश्यकता होती है उसका भी कुरान शरीफ़ में निर्देश है : "(ऐ पैगम्बर वह्य उतरते समय) अपनी जुबान न चलाने लगो कि उसके (याद करने के) लिए जल्दी करो।" 75/16, "उसका जमा करना और पढना हमारे जिम्मे है।" 75/17

"फिर जब हम उसको (जिब्रील के द्वारा) पढ़ा करें तो तू भी (उसको) सुनाकर और उसी तरह पढ़ा कर। 75/18, "फिर उसका बयान खुलासा करना हमारे जिम्मे है।" 75/19

13 4 और आयतें अल्लाह द्वारा निरस्त भी की जा सकती हैं और बदलें में दूसरी आयतें लाई जा सकती, या आयतें उठाई जा सकती हैं। और ऐसा कुरान जिन्न मिलकर भी बना लाने में असमर्थ है " ऐ पैगम्बर) हम कोई आयत मन्सूख (निरस्त) कर दें या बुद्धि से उसको

उतार दें तो उससे अच्छी या वैसी ही (आयत) ले आते हैं। क्या तुमको मालूम नहीं कि अल्लाह हर चीज पर समर्थ है।" 2/106 "और (ऐ पैगम्बर) अगर हम चाहें तो जो (कुरान के जरिये) हमने तुम्हारी तरफ हुक्म भेजा है उसको उठा लें, फिर तुमको उसके (वापस लाने के लिए हमारे मुकाबले में कोई मददगार न मिलेगा।" 17/86, "मगर (यह जो कुछ तुमको मिला है सिर्फ) तुम्हारे परवरदिगार ही की मेहरबानी से कायम है. बेशक तुम पर उसकी बड़ी मेहरबानी है।" 17/87, (ऐ पैगम्बर) इन लोगों से कहो कि अगर सब आदमी और जिन्न जमा हो कि ऐसा कुरान बना लायें तो भी ऐसा न बना सकेंगे, अगर्चे उनमें एक दूसरे की बड़ी मदद करे।" 17/88

अल्लाह की आयतों को न माननेवालों को दोजख की आग में तो हमेशा रहना ही है। पर कुरान के सातवें अध्याय में ऐसे गुमराहों की जीभ निकाले कुत्ते से जो उपमा दी है वह गौर करने लायक है : "और (ऐ पैगम्बर) इन लोगों को उस शख्स का हाल पढ़कर सुनाओ कि हमने उसको अपनी (आयतें) दीं, फिर वह उन आयतों को छोड़ बैठा, फिर शैतान उसके पीछे लगा और वह गुमराहों में हो गया। 7/175, "और अगर हम चाहते तो उन (आयतों) के जरिए उसका दर्जा ऊँचा करते मगर उसने तो धरती की ओर गिरना चाहा और अपने दिल की ख्वाहिशों के पीछे लग गया। तो उसका हाल कुत्ते जैसा हो गया कि अगर उस पर बोझ लादो तो जीभ बाहर लटकाये रहे, और उसको (उसी की दशा पर) छोड़ रखो तो भी जीभ लटकाये रहे। यही मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया। तो (ए पैगम्बर उनसे) यह किस्से बयान करो शायद वे ध्यान दें।" 7/176

13 5 कुरान अरबी भाषा में ही क्यों उतारा गया इसका विस्तारपूर्वक उत्तर अल्लाह ने कुरान शरीफ़ में दिया है : "हमने इस कुरान को अरबी भाषा में उतारा है, ताकि तुम (अपनी मादरी जबान में उसे बखूबी) समझ सको।" 12/2, "और (ऐ नबी) इसी तरह हमने यह अरबी में हुक्म (यानी कुरान तुम पर) उतारा है और अगर इसके बाद भी जबकि तुमको यह इल्म पहुँच चुका है तुमने इनकी इच्छाओं की पैरवी की तो अल्लाह के सामने न कोई तुम्हारा हिमायती होगा और न कोई बचानेवाला।" 13/37 "और जब कभी हमने कोई पैगम्बर भेजा तो उसी की कौम की जबान में भेजा ताकि वह उनको समझा सके। फिर अल्लाह जिसको चाहता है भटकाता और जिसको चाहता है राह देता है....।" 14/4 "......और (यह कुरान) साफ अरबी भाषा में है।" 16/103 "तो हमने इस (कुरान) को तुम्हारी जबान में आसान कर दिया है ताकि तुम इससे परहेजगारों को खुशखबरी सुनाओ और झगड़ालुओं को सजा से डराओ।" 19/97, "और ऐसे ही हमने अरबी जबान में कुरान उतारा है.....और उसमें तरह तरह की चेतावनी दी ताकि लोग बचकर चलें या यह (कुरान) उनके लिये कुछ समझ पैदा करे।" 20/113 "और यह (कुरान) जहान के परवरदिगार का उतारा हुआ है।" 26/192 "इसको अमानतदार फरिश्तः (जिब्राईल) लेकर आया है।" 26/193 "साफ अरबी जबान में।" 26/195 "और हमने लोगों के लिए इस कुरान में सभी तरह की मिसालें बयान की हैं, कि शायद यह लोग शिक्षा पकड़ें।" 39/27 "कुरान अरबी में (है और) उसमें कजी नहीं यह इसलिये कि शायद वे समझें और अल्लाह का भय रखें " 39/28 "और अगर इस कुरान को (अरबी के सिवाय) दूसरी

जबान में उतारते तो कहते कि इसकी आयतें अच्छी तरह खोलकर क्यों नहीं समझाई गई? जबान तो विदेशी और हम अरबी....।" 41/44 "और इसी तरह अरबी (जबान में) कुरान हमने (तेरी तरफ) उतारा ताकि तू मक्का के रहनेवालों को और जो लोग मक्का के आसपास है उनको (अल्लाह के अजाब से सचेत करे) और कयामत के दिन (की मुसीबत) से डरावे जिसमें कुछ शक नहीं, एक फरीक (पक्ष) जन्नत में और एक फरीक (दोजख की) आग मे होगा।" 42/7 "हमने इस कुरान को अरबी जबान में रखा है ताकि (अपनी मादरी जबान मे सरलता से) समझ लो।" 43/3, "सो हमने इस (कुरान) को तेरी बोली में आसान कर दिया है, शायद वे याद रखें।" 44/58, "तो अब तू भी राह देख वे भी राह देखते हैं।" 44/59 "और इस (कुरान से) पहिले मूसा की किताब (तौरात) राह बताने वाली और रहमतवाली थी। और यह किताब (कुरान) अरबी भाषा में उसकी तसदीक (पुष्टि) करती है कि अन्यायी डराये जावें और नेकीवालों को खुशखबरी सुनाई जाय।" 46/12

कुरान, आयत और किताब के उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि ये सब स्वय अल्लाह की वाणी या हुक्म हैं और इनको हटाना, इनमें कोई परिवर्तन करना या बदलना केवल अल्लाह के ही हाथ में है, ईमानवालें या मुसलमानों के हाथ में भी नहीं, चाहे वो इसे कहीं करना भी चाहें। इस विषय पर कुछ अन्य आयतें : 2/23, 5/101, 102, 103, 6/91, 92, 93, 105, 106, 155, 7/2, 3, 9, 35, 36, 75, 174, 11/17, 35, 12/104, 13/19, 14/52, 16/64, 17/9, 18/1 से 6, 27, 29, 54, 55, 21/1 से 5, 10, 50, 22/16, 24/1, 25/1, 26/2, 27/2, 6, 75, 76, 77, 28/2, 49, 50, 51, 86, 29/45 से 51, 31/2, 3, 4, 32/2, 3, 34/6 से 9, 35/31, 32, 36/2, 5, 69, 70, 38/29, 87, 39/1, 2, 40/2, 3, 4, 41/2, 3, 4, 6, 41, 42, 43, 45, 52, 53, 42/17, 43/45, 45/2, 6, 8, 9, 46/2, 54/17, 57/25, 28, 29, 69/40 से 48, 51, 52, 76/23, 29

13.6 ऊपर हमने कुरान शरीफ की आयतों की मदद से ईमानवाले या मुसलमान, पैगम्बर हजरत मोहम्मद और कुरान, आयत या किताब का स्वरूप विस्तार से दिखलाने का प्रयत्न किया। ग्रंथ साहिबजी में इनकी या इनसे मिलते हुए किन्हीं अन्य स्वरूपों की कोई कल्पना भी नहीं है। ग्रंथ साहिबजी में तो मनुष्य का परम लक्ष्य स्वयं परमात्मा की प्राप्ति करना है—इस लोक के भोग और परलोक के बहिश्त या स्वर्ग की नहीं। और इस लक्ष्य की प्राप्ति किसी देव शक्ति या उसके पैगम्बर या उस शक्ति के हुक्म मानने पर निर्भर नहीं है। उस परमानन्द परमात्मा को तो ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, और किसी ज्ञानी गुरु की कृपा से प्राप्त किया जा सकता है। यह ग्रंथ साहिबजी की एवं शास्त्रों की दृढ़ मान्यता है कि परमात्मा को जाने बिना जीव के दुखों का अन्त होना असम्भव है। अन्तर्यामी रुप से स्थित इस परमात्मा को पाने का स्वाभाविक हक केवल मनुष्यमात्र का ही नहीं प्राणीमात्र का है। मनुष्य योनि की महत्ता तो इसलिये अधिक दर्शायी गई है कि इस योनि में परमात्म प्राप्ति का एक सहज और दुर्लभ अवसर मिलता है।

❑

लीला कैवल्यं

13 7 प्रश्न उठता है कि यदि एक परमात्म सत्ता ही अन्दर और बाहर पूर्ण रूप से व्याप्त है, तो क्यों इस जन्म मृत्यु, सुख दुःख आदि द्वंद्वों से व्याप्त विश्व की रचना की गई। ग्रंथ साहिबजी के अनुसार ये सब द्वंद्व हमें अपने अज्ञान के कारण भासते हैं। वास्तव में तो यह समस्त रचना उस परब्रह्म की अपनी लीला मात्र, खेल और प्रपंच मात्र ही है। जैसे समुद्र अपनी अनन्त लहरों में आलोड़ित होता रहता है और ये अलग दिखती लहरें, फेन और बुदबुदे तत्वतः तो जल मात्र ही है, वैसे ही अनन्त भिन्नता धारण की हुई यह सृष्टि तत्वतः ब्रह्म ही है। यह सृष्टि मात्र भगवत् लीला है, इसकी कुछ झलक हमने ऊपर पदों में देखी है। नीचे हम इस तथ्य को और अधिक स्पष्ट करने वाली ग्रंथ साहिबजी की वाणी दे रहे हैं :

1. "जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन्न न होई ॥
   इहु परपंचु पारब्रह्म की लीला विचरत आन न होई ॥" 485 नामदेव जी

2. "आपे वेद पुराण सभि सासत आपि कथै आपि भीजै ॥
   आपे ही बहि पूजे करता आपि परपंचु करीजै ॥" 551 म 4

3. "बासुदेव बसत सभ ठाइ ॥ लीला किछु लखी न जाइ ॥" 897 म 5

4. "आपन खेलु आपि करि देखै ॥ खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥" 292 म.5

5. "हरि सरु सागरु हरि है आपे इहु जगु है सभु खेलु खेलईआ ॥
   जिउ जल तरंग जलु जलहि समावहि नानक आपे आप रमईआ ॥" 335 म.4

6. "तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ ॥" 109 म.5

7. "तूं आपे खेल करहि सभि करते किआ दूजा आखि बखाणीऐ ॥" 138 म.2

8. "तूं करता पुरखु अगमु है आपि सृष्टि उपाती ॥
   रंग परंग उपारजना बहु बहु विधि भाती ॥
   तूं जाणहि जिनि उपाईऐ सभु खेलु तुमाती ॥" 138 म.1

9. "सदा सदा तूं सचु है तुधु दूजा खेल रचाइआ ॥" 139 म. 1

10. "सभु कीता तेरा वरतदा तूं अन्तरजामी ॥
    हम जंत बिचारे किआ करह सभु खेलु तुम सुआमी ॥" 167 म 4

11. "ना किछु आवत ना किछु जावत सभु खेलु कीओ हरि राइओ ॥" 209 म 5

12. "खेलत खेलत आइओ अनिक जोनि दुख पाइ ॥
 खेद मिटे साधू मिलत सतिगुर बचन समाई ॥" 261 म 5

13. "अपना खेलु आपि करनैहारु ॥ दूसर कउनु कहै बिचारु ॥" 280 म 5

14. "जाकी लीला की मिति नाहि ॥ सगल देव हारे अवगाहि ॥" 284 म 5

15. "आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥ आगिआकारी कीनी माइआ ॥" 294 म 5

16. "तू आपे सिसटि करता सिरजनहारिआ ॥
 तुधु आपे खेलु रचाइ तुधु आपि सवारिआ ॥" 642 म 4

17. "तुधु आपे जगतु उपाई कै आपि खुलु रचाइआ ॥
 त्रै गुण आदि सिरजिआ माइआ मोहु बधाइआ ॥" 643 म 4

इस जगत रूपी खेल की रचना में प्रकृति या माया के तीन गुण सत्व, रज और तम के द्वारा सभी अपनी-अपनी कामना और अपने अपने कर्मों के प्रभाव से मोह को प्राप्त हो रहे हैं। और इस प्रकार संसार-बंधन में जकड़े हुए सुख और दुःख आदि द्वंद्वों की मार सह रहे है।

"काठ की पुतरी कहा करे बपुरी खिलावनहारो जानै ॥" 206 म.5

काठ की पुतली जिस प्रकार पुतली बनाने वाले के तंतुओं से नियंत्रित रहती है, ठीक उसी प्रकार यह समस्त जड़ चेतन सृष्टि उस अन्तर्यामी रूप में स्थित परमात्मा से नियंत्रित है। जिस प्रकार बाजीगर के खेल बाजीगर के अधीन केवल खेल मात्र हैं, इसी प्रकार यह जग रचना भी है।

"बाजीगर जैसे बाजी पाइ ॥ नाना रुप भेख दिखलाई ॥
 सांगु उतारि थंम्हिओ पासारा ॥ तब एको एकंकारा ॥" 736 म.5

और जब बाजीगर अपना स्वांग या खेल समाप्त कर देता है, तब सारी जादुगिरी की रचना समाप्त होकर केवल जादूगर ही रह जाता है। इसी प्रकार जब जीव परमात्म ज्ञान में जाग उठता है तब यह संसार रुपी खेल उसके लिये समाप्त हो जाता है और केवल ओंकार स्वरुप परमात्म सत्ता ही रह जाती है।

"मेरे प्रभि साचै इकु खेलु रचाइआ ॥
 कोइ न किस ही जेहा उपाइआ ॥" 1056 म 3

मेरे प्रभु ने इस खेल में कोई भी एक जैसा उत्पन्न नहीं किया है।

"सभु ब्रह्म पसारु पसरिओ आपे खेलंता ॥" 1095 म 5

"अनिक माइआ जा की लखी न जाइ ॥
 अनिक कला खेलै हरि राइ ॥" 236 म.5

"सुपनतरू संसारु सभु बाजी सभु बाजी खेलु खिलावैगो ॥
....संतहु राम नामु धनु संचहु लै खरचु चले पति पावैगो ॥
 धानु है रिद अंतरि धानु गुर सरणाई पावैगो ॥" 1311 म 4

इस ससार रुपी बाजी से जो स्वप्न के समान मिथ्या है छुटकारा पाने के लिये संतों

और गुरु की शरण में जाओ। उन्हीं से राम नाम रुपी धन संचित करो तभी परलोक में तुम्हारी प्रतिष्ठा बनेगी। और यह राम नाम रुपी धन तो सदैव तुम्हारे हृदय में ही स्थित है। इस प्रकार ग्रंथ साहिबजी के अनुसार यह समस्त जगत परब्रह्म परमात्मा की लीला का अभिन्न अंग है-- ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार जल में तंरगें, पृथ्वी में वनस्पतियां, मकड़ी में जाला, सूर्य में किरणें स्थित हैं।

13.8 "प्रश्न उठता है कि क्या वह सर्वव्यापी परमात्मा की उससे उत्पन्न यह समस्त जड़-चेतनमयी सृष्टि दुःख और कष्टों में ही निहित हैं। क्या वह सर्व शक्तिमान परमात्मा समस्त प्राणियों पर मानों बलपूर्वक शासन कर उन्हें प्रताड़ित कर रहा है और डराकर रख रहा हैं? क्या वह परमात्मा अपने को न मानने या जाननेवालों का शत्रु है और उन्हें दण्डित ही करता रहता है? क्या यह सृष्टि दुख और पाप से सनी हुई है? ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि "नहीं", यह सृष्टि आनन्द स्वरुप परमात्मा से उत्पन्न होने के कारण तत्वतः आनन्द रुप ही है। जीव अपनी अज्ञानता के कारण ही माया से ठगा होने के कारण ही दुखी है।

❑

ग्रंथ साहिबजी "आनन्द भाव"

13.9 "ग्रंथ साहिबजी में वर्णित परमानन्द को सही रुप में समझने के लिए आवश्यक है कि हम वेदों में बतलाए गए ब्रह्म के आनन्दस्वरुप की महिमा की एक झलक देख लें।

(1) मनुष्य लोक का एक आनन्द बतलाते हुए वेद कहते हैं—"कि कोई श्रेष्ठ आचरणवाला युवक हो, वेदों का अधययन कर चुका हो, शासन में अत्यन्त कुशल हो, उसके सम्पूर्ण अंग और इन्द्रियाँ सर्वथा दृढ़ हों, तथा वह सब प्रकार से बलवान हो, फिर उसे यह धन से परिपूर्ण सम्पूर्ण पृथ्वी प्राप्त हो जाय, तो वह मनुष्यलोक का एक आनंद है।" (तैत्तिरियोपनिषद अष्टम अनुवाक)

(2) "फिर इसी अनुवाक में वेद आगे कहते हैं—"जो मनुष्यलोक सम्बन्धी एक सौ आनन्द है वह मानव-गन्धर्वों का एक आनन्द है।"

(3) "जो मानव-गन्धर्वों के एक सौ आनन्द हैं वह देवजातीय गंधवों का एक आनन्द है।"

(4) "वे जो देवजातीय गंधवों के एक सौ आनन्द हैं, वह चिरस्थायी पितृलोक को प्राप्त हुए पितरों का एक आनन्द है।"

(5) "वे जो चिरस्थायी पितृलोक को प्राप्त हुए पितरों के एक सौ आनन्द हैं, वह अजानज नामक देवताओं का एक आनन्द है।"

(6) "वे जो अजानज नामक देवों के एक सौ आनन्द हैं, वह कर्मदेव नामक देवताओ का एक आनन्द है।"

(7) "वे जो कर्मदेव नामक देवताओं के एक सौ आनन्द है वह देवताओं का एक आनन्द है।"

(8) "वे जो देवताओं के एक सौ आनन्द हैं वह इन्द्र का एक आनन्द है।"

(9) "वे जो इन्द्र के एक सौ आनन्द हैं वह बृहस्पति का एक आनन्द है।"

(10) "वे जो बृहस्पति के एक सौ आनन्द हैं, वह प्रजापति का एक आनन्द है।"

(11) "वे जो प्रजापति के एक सौ आनन्द हैं, वह ब्रह्मा का एक आनन्द है।"

"और वह ब्रह्मलोक तक के भोगों में कामना रहित वेदज्ञ को यानी ज्ञानी को स्वभावत स्वतः ही प्राप्त हैं।

और उपरोक्त यह बात कि आत्मा का आनन्द ब्रह्मा के सुख से भी अनंतगुणा अधिक है, प्रत्येक देवता के सुख की माप देने के बाद कही गई है।

14.0 इस प्रकार एक मानव सुख को आरम्भिक मापदंड मानकर ब्रह्मा के सुख का माप उस पर 20 शून्य लगाकर आता है। और यह एक मानव सुख क्या है? युवा अवस्था में सदाचार सम्पन्न, बलवान, निरोग और शासन में कुशल एक व्यक्ति का समस्त भोगों से सम्पन्न सारी पृथ्वी का निष्कंटक आधिपत्य। इस एक मानव सुख को ब्रह्मा के सुख तक पहुँचने में 20 शून्य लगाने का अर्थ है एक अरब मानव सुखों को एक अरब से गुणा करना और फिर भी यह

ब्रह्मा का सुख ब्रह्मलोक तक के भोगों में कामना रहित आत्मज्ञ को स्वभावतः आत्मा में ही प्राप्त है। कहने का तात्पर्य यह है कि आत्मानन्द, या परमानंद, या परमात्मा से एक होने के आनन्द की कोई न तो उपमा है और न समता ही।

14.1 इसी तैत्तीरीयोपनिषद् के सप्तम अनुवाक में परमात्मा को "सुकृत" कहा क्योंकि "उसने अपने को स्वयं इस जगत रुप में प्रकट किया है।"

"निश्चय ही जो सुकृत है वही रस है क्योंकि यह जीवात्मा इस रस को प्राप्त करके ही आनन्दयुक्त होता है। यदि यह आनन्दस्वरुप आकाश की भाँति व्यापक परमात्मा न होता तो कौन जीवित रह सकता? और कौन प्रणो की क्रिया कर सकता? निःसंदेह यह परमात्मा ही सबको आनन्द प्रदान करता है।"

अर्थ स्पष्ट है सृष्टि की समस्त चेष्टाओं और कर्मों के मूल में वह आनन्दमय परमात्मा है। यही कारण है कि इस जगत् के छोटे से छोटे और अधम से अधम कार्यों के पीछे लक्ष्य सुख प्राप्त करना ही है, चाहे फिर वह कितना ही क्षणिक क्यों न हो, कितने ही असह्य कष्टों से क्यों न भरा हो। परमात्मा के "इस आनन्द की मात्र के आश्रित ही अन्य प्राणी जीवन धारण करते हैं।" बृहदारण्यकोपनिषद अध्याय 4, तृतीय ब्राह्मण

ग्रंथ साहिबजी कहते हैं—

"अनंद मूलु, धिआइओं पुरखोतम अनदिनु अनंद अनंदे ॥" 800 म 4

इस समस्त आनन्दों के मूल परमेश्वर का ही ध्यान करो। ऐसा करने से दिन प्रतिदिन सर्वत्र आनन्द ही रहता है।

"अनंद मंगल कलिआन निधाना ॥
सुख सहज हरिनामु बखाना ॥" 103 म 5

14.2 नीचे हम ग्रंथ साहिबजी में आए परमात्म-आनन्द सम्बन्धी कुछ "सबदों" का उल्लेख कर रहे हैं जो जीव के लिए परमात्म प्राप्ति का उद्देश्य स्पष्ट करते हैं।

(1) "उचरहु नामु लख राम वारी ॥ अमृत रस पीवहु प्रभ पिआरी ॥
सूख सहज रस महा अनंदा ॥ जपि जपि जीवे परमानंदा ॥" 194 म 5

(2) "यासु जपत मनि होइ अनंदु बिनसै दूजा भाउ ॥
दूख दरद त्रिसना बुझै नानक नामि समाउ ॥" 252 म 5

(3) "ब्रह्म गिआनी कै मनि परमानंद ॥ ब्रह्मगिआनी कै घटि सदा अनंद" 273 म.5

(4) "साधा संगि मिलि करहु अनंद ॥ गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥" 293 म.5

(5) "कहु कबीर मनि भइआ अनंदा ॥ गइआ भरमु रहिआ परमानंदा ॥" 327 कबीर

(6) "जा कउ राम भतारु ता कै अनंद घणा ॥
सुखवती" सा नारि सोभा पूरि घणा ॥" 457 म.5

अर्थात् जिस प्राणी ने राम को अपना प्रीतम मान लिया वह परमानंद में निमग्न रहता है।

(7) "महा अनंद भए सुख पाइआ संतन कै परसादे ॥" 614 म.5

(8) "जीवा तेरै नाइ मनु आनंदु है जीउ ॥ सोचो साचा नाउ गुण गोविंदु है जीउ ॥"
688 म 1

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि हे गोविंद, मैं तुम्हारे नाम के आसरे ही जीता हूँ और इसलिए आनंदमग्न रहता हूँ। तुम्हारा नाम और गुण दोनों सच्चे हैं।

(9) "आनंद मगन रसि राम संगि नानक सरनागै ॥" 818 म 5

(10) "हरि सिमरत सदा होई अनंद सुखु अंतरि सांति सीतल मनु अपना ॥" 860 म 4

(11) "अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरु मैं पाइआ ॥
......."आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरु ते जाणिआ ॥
जाणिआ आनंदु सदा गुरु ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥
.....कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥" 917 म.3

(12) "अनंदु सुणहु बडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥
पारब्रह्म प्रभु पाइआ उतरे सगल बिसूरे ॥
......बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥" 922 म.5

इस शब्द में गुरु अमरदास जी महाराज की उनके ब्रह्म साक्षात्कार की वाणी है। गुरु महाराज जी पुकार कर कह रहे हैं : हे श्रेष्ठ भाग वालो, परमात्मा को प्राप्त कराने वाली मनोरथ वाणी सुनो। मैंने परब्रह्म प्रभु को पाया है और मेरे दुख रोग और संताप दूर हो गए। गुरु की शरण में जाने से आनंदमय अनहद नाद या परमात्म वाणी हृदय में बजने लगती है।

(13) "करै अनंदु अनंदी मेरा ॥ घटि घटि पूरनु सिर सिरहि निबेरा ॥" 1073 म.5

गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं कि अहो यह आनंदमय परमात्मा सर्वत्र आनंद मे वरत रहा है। वह घट-घट में पूर्ण रूप से वास करने वाला जीवों को उनके क्रमों के अनुसार फल दे रहा है।

(14) "माई मेरे मन को सुखु ॥ कोटि अनंद राज सुख भुगवै हरि सिमरत बिनसै सभ दुखु ॥" 117 म 5

हे मेरी माई, परमात्मा के सिमरन से मुझे करोड़ो राज्यों से बड़ा सुख और आनन्द मिल रहा है और मेरे दुख मिट गए हैं।

(15) "आनन्द बजहि नित बाजे पारब्रह्मु मनि वूठा राम ॥" 781 म 5

(16) "आनन्द मंगल कलिआण निधाना ॥ सूख सहजि हरिनाम बखाना ॥" 104 म.5

(17) "सदा अनंदि रहै सुखदाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥" 126 म 3

(18) "बिपत्ति तहां जहाँ हरि सिमरनु नाही ॥ कोटि अनंद जह हरिगुन गाही ॥" 197 म.5

(19) "आनन्द रंग विनोद हमारै ॥
नामों गावनु नामु धिआवनु नामु हमारे प्रान अधारै ॥" 1302 म.5

(20) "अनुदिन नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु ॥
बडभागी हरि पाइआ पूरन " 1421 म 4

14.3 अंत में इस अध्याय की समाप्ति हम इस आनंदमय मंगलचार से कर रहे हैं जिसमें गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि हे भाई, वह आनंदमयी लीला करने वाला परमानन्द परमात्मा जब से मुझे मिला है मेरी समस्त इच्छाएं पूरी हो गई हैं। अब मैं आनन्द की वधाइयों के बीच सुख मे समा गया हूँ। अब कोई भी दुख मुझे रुला नहीं सकता। प्रभु ने अपने कंठ से मुझे लगा लिया है। हे भाई, नानक विनय पूर्वक कहते हैं कि, मुझे परमानंदमय पुरुषोत्तम स्वामी मिल गए हैं

"मंगलचार चोज आनंदा ॥ करि किरपा मिले परमानंदा ॥
प्रभु मिले सुआमी सुखहगामी इछ मन की पुंनीआ ॥
बजी बधाई सहजे सवाँइ बहुडि दूख न रुंनिआ ॥
ले कंठि लाए सुख दिखाए विकार विनसे मंदा ॥
विनवतिं नानक मिले सुआमी पुरख परमानंदा ॥" 1312 म 5

14.4 इस प्रकार जिसने भी ब्रह्म के सर्वरूप को जान लिया, घट-घट में उसका साक्षात्कार कर लिया और उसके परमानंद का स्वाद चख लिया वह ब्रह्मज्ञानी हो जाता है। यह मानव द्वारा उच्चतम अवस्था की प्राप्ति है। इस अवस्था में तत्वतः जीव और परमात्मा का भेद समाप्त हो जाता है, ठीक वैसे ही जैसे जल की एक निर्मल बूँद जल में समाकर जल हो जाती है। जैसे नदियां अपना नाम और रूप छोड़ कर समुद्र में मिल कर फिर "समुद्र" इस नाम से ही पुकारी जाती है। ग्रंथ साहिबजी ने ब्रह्म ज्ञानी के लक्षण विस्तार से गिनाए हैं, जिसकी एक झलक हम नीचे दे रहे हैं।

"नानक इह लक्षण ब्रह्मगिआनी होइ ॥" 272 म.5

इन लक्षणों को बतलाते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं—कि ब्रह्मज्ञानी सदा निरलेप रहता है, मित्र और शत्रु उसे समान होते हैं, ब्रह्मज्ञानी समदर्शी और बंधन से मुक्त रहता है, ब्रह्मज्ञानी के मन सदा परमानन्द रहता है, प्रभु उसके साथ बसते हैं और साक्षात् शिव उसे खोजते फिरते हैं, ब्रह्मज्ञानी न तो जीता और न मरता है, वह सारी सृष्टि का रचयिता होता है क्योंकि ब्रह्मज्ञानी स्वयं परमेश्वर और पूरन पुरख विधाता है :

"नानक इह लखण ब्रह्मगिआनी होइ.....

1. ब्रहमगिआनी सदा निरलेप, 2. ब्रहमगिआनी कैमित्र शत्रु समानि, 3 ...ब्रह्मगिआनी बधन ते मुकता..... 4. ब्रह्मगिआनी सदा समदरसी, 5. ब्रहमगिआनी कै एकै रंग ब्रह्मगिआनी कै बसै प्रभु संग, 6. ब्रह्मगिआनी कै मनि परमानंद, 7. ब्रह्मगिआनी कै घटि सदा अनंद, 8. नानक ब्रह्मगिआनी आपि परमेसुर, 9. ब्रह्मगिआनी सरब का ठाकुर, 10. ब्रह्मगिआनी का अतु न पार, नानक ब्रह्मज्ञानी को सदा नमसकारु, 11. ब्रह्मगिआनी सभ सृसटि का करता, 12 ब्रह्मगिआनी सद जीवै नही मरता, 13. ब्रह्मगिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता, 14. ब्रह्मगिआनी पूरन पुरखु विधाता ॥" 272/273 म. 5

14.5 परमात्मा के इस आनंदमय स्वरूप की ओर जीव द्वारा उसकी सहज प्राप्ति की कुरान शरीफ में कोई कल्पना ही नहीं है। यदि परमात्मा के इस आनंदमय स्वरूप को अल्लाह या रुह पर आरोपित किया गया तो वह कुरान शरीफ के मूल सिद्धांतों के बिलकुल विपरीत होगा और इस्लाम को अमान्य होगा। कुरान शरीफ के अनुसार तो "ईमानवालों" को इस लोक में, नहीं तो मरने के बाद बहिश्त में इन्द्रियगम्य सब प्रकार के भोग मिलने का प्राविधान है जिसका हम उचित स्थान पर वर्णन करेंगे

❍

गुरु सतगुरु

14 6 जो जीव को अविद्या, और इस मायामय संसार से पार पहुँचा दे, और इस प्रकार उसे परमात्म मार्ग पर दृढ़तापूर्वक स्थापित करदे वही गुरु है, सतगुरु है, वही आदि गुरु है। परमात्म प्राप्ति का मार्ग क्षर की तीक्ष्ण धार पर चलने से भी दुष्कर और कठिन माना गया है। इस मार्ग पर चलने के लिए शम, दम और तप रुपी साधन तो अनिवार्य हैं ही, परन्तु साथ ही ऐसे व्यक्ति की कृपा और निर्देश की भी परम आवश्यकता है जो स्वयं इस मार्ग पर चलकर आत्म साक्षात्कार कर चुका हो।

लौकिक व्यवहार का उदाहरण लें तो हम देखेगें कि किसी विमान का कुशलतापूर्वक चालन वही कर सकता है जिसने किसी अनुभवी कुशल चालक से विधिवत शिक्षा ली हो। बिना विमान चालन की शिक्षा या ज्ञान के यह असम्भव है कि कोई व्यक्ति किसी विमान को सकुशल उड़ा सके। जब साधारण लौकिक कार्य के लिये गुरु चाहिए तो परममद की प्राप्ति मे गुरु की अनिवार्यता में किसी को संदेह नहीं होना चाहिए।

14 7 ग्रंथ साहिबजी में परमात्मा को केवल मानने का नहीं वरन् परमात्मा को जानने का, उसे प्राप्त करने का भी निर्देश है। यही कारण है कि ग्रंथ साहिबजी ने ज्ञानी गुरु को बार-बार साक्षात् परमात्मस्वरुप ही माना है, या यह माना है कि मानो परब्रह्म परमात्मा स्वयं ही जीव पर कृपा करने के लिये गुरु रूप में आता है। ग्रंथ साहिबजी में गुरु शब्द की महत्ता हम इसी बात से समझ सकते हैं कि "हरि" शब्द के वाद "गुरु" शब्द ही सबसे अधिक बार आया है यानी 8836 बार या यह कहिये कि लगभग 9000 बार।

14 8 जैसाकि हम पहले दिखला चुके है, ग्रंथ साहिबजी में कुरान शरीफ़ वर्णित पैगम्बर की कोई भी कल्पना नहीं है। और न ही अल्लाह का केवल पैगाम पहुँचाने वाले पैगम्बर में और परमात्म साक्षात्कार किये हुए ज्ञानी गुरु में जो दूसरे अधिकारी जीव को भी यह परम ज्ञान देने मे समर्थ है, कोई किसी प्रकार की समानता है। गुरु के बारे में ग्रंथ साहिबजी कहते हैं

(1) "गुरु पारब्रह्म परमेसुरू सोई ॥ "पारब्रह्म नानक गुरुदेव" 1338 म.5

(2) "गुरुदेव माता गुरुदेव पिता गुरुदेव सुआमी परमेसुरा ॥
गुरुदेव सतिगुरु पारब्रह्मु परमेश्वर गुरुदेव नानक नमस्करा ॥" 250 म.5

(3) "पारब्रह्म पुरन गुरुदेव ॥" 193 म 5
"गुरु परमेसरु पारब्रह्म गुरु डुबता लए तराइ ॥" 49 म.5

(4 "गुरुमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुर पारबती माई ॥" 2 जपुजी

(5) "छिउ घर छिउ गुरु छिऊ उपदेस॥ गुरु गुरु एको बेस अनेक

अर्थात् छओ दर्शन शास्त्र जिन में छः ऋषिओं रूपी गुरुओं के छः उ हैं, वे तत्वतः एक ही गुरु यानी परमात्मा के एक ही उपदेश हैं। जो ऊपर प्रतीत होते हैं। इस शब्द के द्वारा गुरु नानक जी महाराज ने सभी दर्शन एकता का प्रतिपादन किया है। और साथ ही यह भी प्रतिपादित कर दिया है शास्त्र परमात्मा प्राप्ति के साधन हैं।

(6) "पारब्रह्म परमेसुर सतिगुरु आपे करणै हारा॥"

गुरु पारब्रह्म परमेसरु आपि॥ आठ पहर नानक गुर जापे॥"

(7) "गुर परमेसरु एको जाणु॥ जो तिस भावै सो परवाणु॥"

(8) "पारब्रह्म गुर रहिआ समाइ॥ .....गुर मेरी पूजा गुरु गोविंद॥

गुरु मेरा पारब्रहु गुरु भगवंतु॥"

(9) "पारब्रह्म गुरदेव नीवहु उच थपे॥"

(10) "गुर गोविंद गोविंदु गुर है नानक भेद न भाई॥"

(11) "पारब्रह्म सतिगुर आदेसु॥ .....पारब्रह्म गुर भागु वडआला॥"

(12) "....नानक सोधे सिम्रिंत वेद॥ पारब्रह्म गुर नाही भेद॥"

(13) "राम हम सतिगुर पारब्रह्म करि माने॥

हम मूड मुगधा अगुधा मति होते गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम जा

(14) "गुरु गोपाल गुरु गोविंदा॥

....गुरु सासत सिम्रित खटु करमा गुरु पवित्र असथाना है॥"

(15) "कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ पारब्रह्म गुर पाइआ॥"

(16) "गुरमुखि कमलु बिगसिआ सभु आतम ब्रहु पछानु॥"

इस प्रकार हम देखते हैं कि पूरे ग्रंथ साहिबजी में आदि से अंत तक प वाले गुरु को साक्षात् परब्रह्म परमात्मा माना है। और इस सिद्धांत की पुष्टि भी बार बार दिये गये हैं।

14.9 और ग्रंथ साहिबजी की यह स्पष्ट मान्यता है कि बिना गुरु के परमात सकता, और न ही जीव इस भवसागर के पार जा सकता है :

1. "भाई रे गुर बिन गिआनु न होइ॥ पुछहु ब्रहमे नारदै वेद बिआसै कोई

गुरु नानक जी महाराज यहां वेद, शास्त्र और ऋषि प्रमाण सहित कहते बिना परमात्म ज्ञान असम्भव है। और इस बात को तुम चाहो तो वेदों क पुराणों के रचयिता महर्षि व्यास या परमात्मा के परम भक्त देवऋषि नारद से पु

2. "लख चउरासीह फिरदे रहे बिनु सतिगुर मुकति न होई॥"

3. "बिनु सतिगुर किनै न पाई परमगते॥ पूछहु सगल वेद सिम्रिते॥"

4. "गुर सेवा ते हरिनामु पाइआ बिनु सतिगुर कोई न पावणिआ ॥" 116 म.3
5. "बिनु सतिगुर किछु न देखिआ जाइ ॥ गुरि किरपा करि आपु दिता दिखाइ ॥" 114 म 3
6. "सासत सिम्रिंत सभि सोधो सभ एका बात पुकारी ॥
बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि बेखहु करि बिचारी ॥" 495 म 5
7. "पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनम गवाइआ ॥" 32 म 3
8. "गुरमुखि दीसै ब्रहम पसारु ॥ गुरमुखि त्रै गुणीआं बिसथारु ॥
गुरमुखि नाद वेद बिचारु ॥ बिनु गुर पूरे घोर अंधारु ॥" 1270 म 5

150 इस प्रकार परमात्मा को प्राप्त करा देने की सामर्थ्यवाला गुरु स्वाभाविक ही है कि वह स्वय परमात्मा का ज्ञानी हो। कोई अर्धज्ञानी या अज्ञानी व्यक्ति इस दुष्कर कार्य को कदापि नही कर सकता चाहे फिर अपने को ज्ञानी प्रदर्शित करने का कितना ही ढोंग क्यों न रचे। ग्रथ साहिबजी ने इस बारे में "गुरु" का चयन करने में पूरी सावधानी बर्तने का निर्देश दिया है।

इस विषय में एक पुरानी सारगर्भित लोकोक्ति उल्लेखनीय है।

"पानी पीजे छान के, गुरु कीजे जान के"। पानी को छानकर पीने का अर्थ है कि दोषरहित शुद्ध जल पीना। और प्रकार परखकर गुरु बनाने का अर्थ है कि कोई ज्ञानी व्यक्ति ही गुरु बनकर अध्यात्म मार्ग का पथ प्रदर्शन करे। किसी अज्ञानी व्यक्ति को गुरु बनाने का परिणाम वही होगा जैसे किसी अंधे व्यक्ति को अपना पथ प्रदर्शक बनाना। चूंकि शिष्य स्वय तो अध्यात्म मार्ग से अपरिचित होने के कारण एक अंधे व्यक्ति के समान है ही, ऐसी स्थिति मे गुरु भी अंधा मिलने से दोनों का विनाश अवश्यम्भावी है।

जैसा कि कठोपनिषद 1/2/5 और मुण्डकोपनिषद 1/2/8 में आता है, ऐसे व्यक्तियो की वही गति होती है जैसे अन्धों के द्वारा चलाये जाने वाले अंधों की : "अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः" इसी बात को स्पष्ट करते हुए ग्रथं साहिबजी कहते हैं :

1. "अन्धे गुरु ते भरमु न जाइ ॥ मूलु छोडि लागै दूजे माई ॥
बिखु का माता बिखु माहि समाई ॥ 232 म 3

यानी अंधे यानी अज्ञानी गुरु से अज्ञान नहीं दूर हो सकता। ऐसी स्थिति में मूल लक्ष्य प्रभु प्राप्ति से हटकर मनुष्य माया में ही लगा रहेगा। वह विष रुपी विषयभोग में रमने वाला विषयों में ही डूब मरेगा।

2. "गुरु जिना का अंधुला सिख भी अंधो करम करेनि ॥ 951 म 3
3. "अन्धे के राहि दसिऐ अंधा होई सु जाइ ॥" 954 म.3

151 ग्रंथ साहिबजी का तो यह निश्चित मत है कि सच्चे यानी ज्ञानी गुरु की कृपा से परमपद की, परमात्मा की प्राप्ति अवश्यम्भावी है :

1. "सो सतिगुर पूजहु दिनसु राति जिन जगंनाथु जगदीस जपाइआ ॥
सो सतिगुरु देखहु इक निमख निमख जिनि हरि का हरि पंथु बताइआ ॥" 586 म 4

2. "गुर परसादि परमपदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥" 495 म.5

जब कोई वृक्ष सूखकर प्राणरहित होकर काष्ठ मात्र रह जाता है तो उसका फिर जीवित होकर हरियाला हो जाना एक कोई महान दैवी शक्ति का कृपा फल ही हो सकता है। ठीक उसी प्रकार अज्ञान की घोर मृत्यु रुपी अवस्था में निमग्न व्यक्ति भी गुरु कृपा से परम पद पा जाता है।

3. "तुरीअवस्था गुरमुखि पाईए संत सभा की ओट लही ॥" 356 म 1

गुरु नानक जी कहते हैं कि गुरु की कृपा से ओर संतों की शरण में रहने से मनुष्य प्रकृति तीनों गुणों से पार होकर जीवनमुक्त की अवस्था प्राप्त कर लेता है।

4. "त्रैगुण माइआ ब्रह्म की कीन्ही, कहहु कवन विधि तरीऐ रे ॥
घूमन घेर अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऐ रे ॥" 404 म 5

हम इस तीन गुणोंवाली माया के सागर में, जिसमें विषय-वासना के भयानक भंवर है, पड़े हुए हैं। इसकी थाह नहीं लगाई जा सकती, और इसका पार पाना अत्यंत कठिन है। इसे तो केवल गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान से ही पार किया जा सकता है।

5. "गुरमुखि बाणी ब्रह्मु है सबदि मिलावा होइ ॥" 39 म 3

6. "त्रैगुण माइआ मोहि बिआपे तुरीआ गुणं है गुरमुखि लहीआ ॥" 833 म 4

15 2 और इस महान गुरु-शिष्य परम्परा का शास्त्रीय प्रमाण देते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते है।

1. "गुर के सबदि तरे मुनि केते इंद्रादिक ब्रहमादि तरे ॥
सनक सनंदन तपसी जन केते गुर परसादी पारि परे ॥" 1125 म 1

2. "गुरमुखि प्रहिलादि जपि हरि गति पाई ॥ गुरमुखि जनकि हरिनामि लिव लाई ॥" 591 म 4

3. "साक्षात् परब्रह्म परमात्मा ने जब राम और कृष्ण के रुप में पूर्णावतार लिया तो अपने इस दिव्य अवतरित मानव जीवन में माया से अत्यन्त परे होते हुए भी लोक आदर्श का निर्वाह करते हुए गुरु-शिष्य परम्परा का विधिपूर्वक निर्वाह किया था।

"गुरमुखि बसिसटि हरि उपदेसु सुणाई ॥
बिन गुर हरिनामु न किनै पाइआ मेरे भाई ॥" 591 म 4

ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि राम रूप में स्वयं परमात्मा ने अपने कुल गुरु वशिष्ठ मुनि से ज्ञान ग्रहण किया और कृष्णावतार में परमात्मा ने गुरु संदीपनि के चरणों की सेवा की।

"गुर सेवा आपि हरि भावै। कृसनु बलभद्रु गुर पग लागि धिआवै ॥" 165 म.4

□

काफ़िर-जिहाद-दोज़ख और कयामत

15.3 कुरान शरीफ़ में मुख्यतः दो विषय छाए हुए हैं--ईमानवाले और काफ़िर। जैसाकि हमने अब तक देखा, जो अल्लाह और उनके पैगम्बर हजरत मुहम्मद पर ईमान लाए और जिन्होंने साथ ही अल्लाह की मुहम्मद साहिब के माध्यम से भेजी गई आयतों, या किताब या कुरान को माना, और कयामत या आखिरत को माना वे ईमानवाले या मुसलमान हुए। उनके लिये इस लोक में हर तरह के लाभ हैं और मरने के पश्चात् निश्चित रूप से मिलने वाला सब प्रकार के भोगों सें सम्पन्न बहिश्त या कुरान वर्णित स्वर्ग है।

जो उपरोक्त निर्धारित मापदण्ड के अनुसार ईमानवाले नहीं हैं, वे काफ़िर और गुमराह है और इस प्रकार अल्लाह के दुश्मन हैं। इन काफ़िर या इनकारी लोगों में मुनाफिक यानी कपटी और दगाबाज, मुन्किर याने इस्लाम से विमुख और मुशरिक अर्थात बहुदेव पूजक लोग आ जाते हैं। इनमें वे लोग भी आ जाते हैं जिन्होनें कुरान शरीफ़ में वर्णित पिछले पैगम्बर जैसे हजरत नूह, इब्राहिम, मूसा, लूत, सालेह, यूनस, युसुफ आदि को झुठलाया था और जिसके कारण अल्लाह ने उन पर अजाब आदि गिराकर भारी सजाएँ दी थीं। इन गैर ईमानवाले काफ़िरों के लिये जिहाद आदि के माध्यम से इस लोक में अल्लाह ने भारी सजाएँ और मृत्यु दड देने के आदेश दिये हैं और परलोक में, कयामत के बाद, उनके लिये सदा रहने वाला दोजख तैयार रखा है।

15.4 चूँकि कुरान शरीफ़ के लगभग हर अध्याय में काफ़िर का वर्णन आया है इसलिय काफ़िरों से संबंधित आयतों को हम अध्यायों के क्रम से नीचे दे रहे हैं ताकि पाठक कुरान शरीफ़ में इस विषय को जो महत्ता दी गई है उसे और अधिक स्पष्ट रूप से समझ सके। यहूदियों और ईसाइयों को भी कुरान शरीफ़ ने काफ़िर ही माना है परन्तु इनसे संबंधित आयतों को अलग अध्याय में दिया जायेगा।

इसके पूर्व कि हम सीधे काफ़िरों से संबंधित आयतें दें, यह उचित होगा कि पाठक कुरान शरीफ़ वर्णित कयामत का स्वरुप समझ लें। पहली बात यह हैं कि काफ़िर को मरने के बाद नरक की सजा कयामत के बाद ही मिलनी है। और दूसरी बात यह कि कयामत पर ईमान न लाने वाला भी काफ़िर है और उसकी भी सजा दोजख ही है। कयामत के दिन ही सभी मुर्दें अपनी-अपनी कब्रों से उठकर खड़े किये जायेगें और अल्लाह के सामने हाजिर होगे ताकि उनके लिये स्वर्ग या नरक का फैसला उनकी मान्यताओं और पैगम्दर की गवाही के अनुसार हो सके।

कयामत

15.5 कुरान शरीफ़ के पहले में सात आयते हैं इसकी तीसरी आयत में अल्लाह

का "जजा (अन्तिम न्याय) के दिन का मालिक" किया गया है। और इसी अल्लाह की प्रार्थना के साथ कुरान शरीफ़ आरंम्भ होता है। जो लोग पैगम्बरों को झूठा बताते है उनकी घर्ना करते हुए, कुरान शरीफ़ में कयामत के बारे में कहा गया है : फिर उस (कयामत के) दिन, जिसके आने में कुछ भी शक नहीः कैसी गत बनेगी जबकि हम उनको जमा करेगें....।" 3/25 "अल्लाह के सिवाय कोई बन्दगी के काबिल नहीं, और कयामत के दिन, जिसके आने में कोई शक नहीं, वह तुमको जमा करेगा। और अल्लाह से बढ़कर किसकी बात सच्ची है।" 4/87

"......और मुर्दों को अल्लाह कयामत के दिन ही उठायेगा, फिर वह उसी अल्लाह की अदालत की तरफ जायेगें।।" 6/36 "और वही है जिसने आसमानों और जमीन को हक के साथ पैदा किया और जिस दिन फर्मायेगा कि "हो" वह हो जाएगा। (यानी कयामत आ जायेगी).....और जिस दिन सूर (नरसिंहा) फूँका जायेगा उसी की हुकूमत होगी। और वह छिपी और खुली सबका जानने वाला है और वही हिकमतवाला और खबरदार है।" 6/73 "और (कयामत के दिन उनसे कहा जाएगा कि) पहली बार जैसा हमने तुमको अकेला पैदा किया था वैसे ही अकेले तुम हमारे पास एक-एक करके आये हो....।" 6/94 "(ऐ पैगम्बर! लोग) तुमसे उस (कयामत की) घड़ी के बारे में पूछते हैं कि उसके आने का वक्त कब है। तुम जवाब दो कि उसका इल्म तो मेरे परवरदिगार ही को है। बस वही उसको उसके वक्त पर ला दिखायेगा। वह आसमानों और जमीन में एक बड़ी भारी बात होगी। (कयामत) आयेगी तो तुम पर अचानक आयेगी। (ऐ पैगम्बर) यह लोग (कयामत का हाल) ऐसे पूछते हैं गोया तुम उसकी खोज में लगे रहते हो। (तो इनसे) कहो कि इसकी मालूमात तो बस अल्लाह ही को है, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते।" 7/187

15 6 अध्याय 11 की 76 से लेकर 101 तक की आयतों में अल्लाह अपने पिछले पैगम्बरों हजरत लूत, शोऐब और मूसा का उदाहरण देकर बतलाते हैं कि लूत और शोऐब को उनकी कौमों ने झुठलाया, और मूसा को मिस्त्र के बादशाह फिरऔन ने। ये सभी कौमें अल्लाह के अजाब या प्रकोप से नष्ट हो गई। और ये सब दोजख या नरक के अधिकारी हुए।

(1) लूत की कौम के बारे में अल्लाह कहते हैं :

"ऐ पैगम्बर हमने उस बस्ती को उलटकर ऊपर नीचे कर दिया और उस पर खंगड़ के पत्थर ताबड़तोड़ बरसाये।" 11/82

(2) शोऐब की कौम मदियन ने केवल उनको झुठलाया ही नहीं बल्कि धमकाया भी था। तो अल्लाह का कोप उन पर गिरना स्वाभाविक था, और ईमानवालों को बचना था "और जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हमने अपनी मेहरबानी से शोऐब को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाये थे बचा लिया, और जो लोग जालिम थे उनको (हमारे हुक्म से) चिघाड़ ने आ पकड़ा तो सुबह को अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। 11/94 गोया उनमें कभी बसे ही न थे.....।" 11/95

(3) और "कयामत के दिन (फिरऔन) अपनी जाति के आगे-आगे होगा और उनको दोजख की आग में ले जा उतारेगा और बुरा घाट है जिस पर (ये) उतरे हैं " 11/98

5 7 अल्लाह इन किस्सों को हजरत मुहम्मद साहब के सामने इसलिय रख रहे हैं ताकि

ईमानवाले आखिरत या कयामत पर विश्वास करें और उसकी सजा से डरें।

(1) "इन किस्सों में उस आदमी के लिए, जो आखिरत की सजा का डर रखते हैं एक बड़ी निशानी है। (कयामत का दिन ही) वह दिन होगा जब सब लोग (हमारे सामने) जमा होगे ओर वह दिन (सबको) देखना है।" 11/103 "और हमने उसको एक ठहराए हुए (नियत) समय तक के लिए ही रोक रखा है।" 11/104

(2) "जिस दिन वह आ मौजूद होगा तो अल्लाह के हुक्म के बिना कोई खास बात तक न कर सकेगा, सो उनमें कोई अभागा और कोई भाग्यवान होगा।" 11/105

(3) "जो अभागे हैं वह (दोजख की) आग में होगें, वहाँ उनको (बस) चिल्लाना है और चीखना।" 11/106 "जब तक आसमान व जमीन है हमेशा उसी में रहेगें मगर (ऐ पैगम्बर) सिवाय उतना जितना तुम्हारा रब चाहे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है, कर डालता है।" 11/107

पैगम्बरों पर ईमान न लाने वालों या गुनाहगारों या काफ़िरों को कयामत पर भारी सजा देने की बात को आगे बढ़ाते हुए अल्लाह कहते हैं : "बेशक अल्लाह जबरदस्त बदला लेने वाला है।"14/47 "जबकि जमीन बदलकर दूसरी तरह की जमीन कर दी जायगी और आसमान (भी), और (सब) लोग एक अल्लाह जबरदस्त के सामने निकल खड़े होगें।" 14/48 "और ऐ पैगम्बर तुम उस दिन गुनाहगारों को जंजीरों से जकड़े हुए देखोगें।" 14/49 "गन्धक के उनके कुर्ते होगें उनके मुहों को आग ढाँके लेती होगी।" 14/50 "इस गरज से कि अल्लाह हर शख्स को उसके किए का बदला दे।" 14/51 "यह लोगों के लिए (अल्लाह) का पैगाम है और गरज यह है कि इसके जरिये से लोगों को डराया जाय और (उनको) मालूम हो जाये कि एक अल्लाह ही इलाह (पूज्य) है।" 14/52

(4) ".......और कयामत जरुर-जरुर आनी है सो (ऐ पैगम्बर) तुम इन काफ़िरों की शरारतों पर (ध्यान न दो और) अच्छी तरह दरगुजर करो।" 15/85

(5) "और आसमान और जमीन का भेद अल्लाह ही को (मालूम है) और कयामत का वाके होना तो (अल्लाह की सामर्थ्य के लिए) पलक झपकने भर का काम है बल्कि उससे भी मामूली।" 16/77

15 8 और अल्लाह कयामत के दिन किस प्रकार ईमानवालों और गुमराहों के साथ व्यवहार करेगे और अल्लाह की बतलाई राह पर न चलने वालों को क्या सजा देगें, वह बतलाते हुए कुरान शरीफ़ में यों कहा गया है।

(1) "हमने हर आदमी का अमल उसकी गरदन से लगा दिया है और कयामत के दिन हम (उसके) कारनामों का लेखा निकालकर उसके सामने पेश करेगें, उसको (वह अपने सामने) खुला हुआ देख लेगा।" 17/13 "(और कहा जायगा) अपना लेखा पढ़ लें, आज अपना हिसाब समझ लेने के लिए तू आप ही काफी है।" 17/14

(2) "जो आदमी सीधी राह चला तो वह अपने ही लिए और जो भटका तो उसके भटकने की सजा भी उसी पर होगी.... और जब तक हम एक पैगम्बर को (भले बुरे से सचेत करने के लिए) भेज न लें तब तक सजा नहीं उतारा करते " 17 15

(3) “और (अल्लाह फरमाता है कि) हम उस दिन सबको एक दूसरे में (समुन्दर की लहरों की तरह) गूँथने के लिए छोड़ देंगें, और सूर (नर-सिंघा) फूंका जायगा, फिर हम सबको जमा करेगें।” 18/99 “और हम उस दिन काफ़िरों के सामने दोजख़ पेश करेंगे।” 18/100 “जिनकी आँखों पर मेरी याद के लिए पर्दा पड़ा था और जो न सुन ही सकते थे।” 18/101

कयामत को न मानने वालों की और शैतान की एक ही गति है—दोजख़ यानि नरक। “ओर आदमी पूछा करता है कि जब मैं मर जाऊंगा तो क्या फिर जिन्दा करके उठाया जाऊंगा” 19/66 “क्या आदमी याद नहीं करता कि हमने पहले भी तो इसको पैदा किया था और (जबकि) वह कुछ भी चीज न था।” 19/67 “तो (ऐ पैगम्बर) तेरे परवरदिगार की कसम हम उनको और शैतानों को भी जमा करेगें। फिर उनको दोज़ख़ के गिर्द इस हाल में हाजिर करेंगे कि घुटनों के बल गिरे होंगे।” 19/68 “फिर हम हर फिर्के मे से उन लोगो को छांट निकालेगें जो उस रहीम (अल्लाह) से सबसे जियादः सरकशी किया करते थे।” 19/69 “फिर जो लोग इस (जहन्नुम) में जाने के जियादः लायक हैं हम उनको खूब जानते हैं।” 19/70

15 9 कयामत का दृश्य खींचते हुए अल्लाह कहते हैं।

(1) “और (ऐ पैगम्बर) तुमसे पहाड़ों की बाबत पूछते हैं कि कयामत के दिन इनका क्या हाल होगा। तो कहो कि मेरा परवरदिगार इनको उड़ाकर बिखेर देगा।” 20/105 “और जमीन को चटियल मैदान कर छोड़ेगा।” 20/106 “जिसमें तू न तो कहीं मोड़ देखेगा और न कही ऊँचा नीचा।” 20/107

(2) “उस दिन वे सब लोग बिना इधर उधर किये पुकारने वाले की पुकार पर पीछे दौड़ पड़ेंगे और (मारे डर के) दयालु अल्लाह के आगे आवाजें बैठ जायेंगी, तू एक हल्की आवाज के सिवाय और कुछ न सुनेगा।” 20/108

16 0 इन्कार करने वाले काफ़िरों से कयामत के बाबत अल्लाह की कठोर चेतावनी है : “और (ऐ पैगम्बर) ये इन्कार करने वाले कहते हैं कि अगर तुम्हारा कहना सच है तो वह अजाब व कयामत का वादा कब पूरा होगा।” 21/38 “क्या ही अच्छा होता अगर ये इन्कार करने वाले उस समय की हालत को समझ पाते जबकि (दोजख़ की) आग (उनको आ घेरेगी और तब वह उसको) न अपने मुँह पर से रोक सकेंगे और न अपनी पीठ पर से, और न उनको (उससे बचाव की कहीं से) मदद मिलेगी।” 21/39

16.1 कयामत के दिन और क्या-क्या होगा और अल्लाह का कोप कितना भयानक होगा यह दर्शाते हुए कुरान शरीफ़ में कहा गया है :

(1) “ऐ लोगों अपने परवरदिगार (के कोप) से डरो क्योंकि कयामत का भूचाल बेशक एक बड़ी भयानक चीज है।” 22/1

(2) “जिस दिन वह तुम्हारे सामने आ मोजूद होगी, तमाम दूध पिलाने वाली औरतें अपने दूध पीते (बच्चे) को भूल जाँयेंगी और हर गर्भवती अपने गर्भ गिरने से रोक न सकेगी। और लोग मदहोश दिखाई देंगे हाँलाकि वह मदहोश नहीं, बल्कि (उनपर) अल्लाह का सख्त अजाब (सवार) है।” 22/2

5 “और यह कि वह घड़ी कयामत) अवश्य आनी है उसमें किसी तरह का शक

नही और जो लोग कब्रों में हैं अल्लाह उनको जिला उठायेगा।" 22/7

(4) "और जो लोग अल्लाह की शान के बारे में झगड़ते हैं और घमण्ड के साथ ऐंठते है कि अल्लाह की राह से बहकावें। ऐसों के लिए संसार में जिल्लत है और कयामत के दिन हम उनको (नरक की आग में) जलने की सजा चखायेगें।" 22/9

16.2 अल्लाह कयामत के दिन भिन्न-भिन्न मतों को मानने वालों के बीच कौन सही है या गलत इसका फैसला कर देगा। यानि उस दिन मुसलमान या ईमानवाले जन्नत की बख्शीश पायेगें और शेष दोजख में रहेंगे, जैसा कि कुरान शरीफ़ में हर कदम पर कहा गया है।

"जो लोग मुसलमान हैं और यहूदी और साबिअी और ईसाई और मजूसी (अग्नि पूजक) और शिर्कवाले, कयामत के दिन अल्लाह इनके बीच फैसला कर देगा। अल्लाह सब बातों को देख रहा हैं।" 22/17 इस आयत में हिन्दू, जैन और बौद्ध जैसे प्रमुख मतों का सीधा नाम नहीं आया है। इसमें उन्हीं मतों का वर्णन है, जो उस समय के अरब देशों में अधिक प्रचलित थे और जिनका आरम्भिक इस्लाम से सीधा सम्पर्क आया था और जिनकी उससे प्रतिद्वंदिता थी।

"और जो लोग (रोज कयामत से) इन्कार करने वाले हैं वह कहते हैं कि क्या जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जायेगें तो हम फिर (जमीन से उठा) निकाले जायेगें?" 27/67 "पहले से भी हमसे और हमारे बाप दादों से ऐसे वादे होते चले आये हैं (कैसी कयामत और कैसा कब्रों से जी उठना)। ये अगले लोगों की (बेसनद) कहानियाँ हैं।" 27/68 "(ऐ पैगम्बर इनसे) कहो कि मुल्क में चलो फिरो और देखो अपराधियों का कैसा अंत हुआ।" 27/69 "और जब वायदा (कयामत) इन लोगों पर पूरा होगा तो हम जमीन से इनके लिए एक जानवर निकालेंगे, वह इनसे बयान कर देगा इसलिए कि ये लोग हमारी आयतों पर यकीन नहीं रखते थे।" 27/82 "और जिस दिन हम हर उम्मत में से उस जमात को जमा करेंगे जो हमारी आयतो को झुठलाया करती थीं तो उनको (गुनाहों के दरजों के मुताबिक बाटकर) कतारों में खड़ा किया जायगा।" 27/83 "यहाँ तक कि जब सब हाजिर हो जायेंगे तो (अल्लाह उनसे) पूछेगा कि बावजूद कि तुमने हमारी आयतों को अच्छी तरह समझा भी न था क्यों तुमने उनको झुठलाया? या फिर कहो क्या करते थे। 27/84 "और चूँकि यह लोग सरकशी करते रहे, हमारा (अजाब का) वादा उन पर पूरा होकर रहेगा और यह लोग बोल भी न सकेगें।" 27/85

कयामत का उद्देश्य और भी अधिक स्पष्ट करते हुए कुरान शरीफ़ में आता है "और जिस दिन कयामत उठेगी उस दिन वे (भले बुरे) अलग-अलग हो जायेगें।" 30/14, "और जिस दिन कयामत उठेगी उस दिन गुनहगार निराश होकर रह जायेगें।" 30/12, "और फिर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक किये वह जन्नत की बाग में मौज से होंगे। (और वहॉ उनकी) आवभगत हो रही होगी।" 30/15, "और जिन लोगों ने कुफ्र इख्तियार किया और हमारी आयतों और आखिरत के पेश आने को झुठलाया तो यही लोग अजाब के में पकड़े जायेगें।" 30/16, "जो कुफ्र करता है तो उसी पर कुफ्र की बला पड़ेगी....।" 30/44

कयामत के बारे में विस्तार से इसलिए देना आवश्यक है कि पाठक इस्लाम में इसके भारी महत्व को समझ लें इस विषय की कुरान में जितनी भावुकता से और जितनी काव्यमयी

भाषा मे चर्चा हुई है उतनी अन्य किसी विषय का नहीं हुई। जैसाकि हमने ऊपर देखा कयामत के दिन सब मुर्दे फिर अपनी कब्रों से जिन्दा उठाए जायेंगें और अल्लाह के सामने पेश होंगे। फिर उनमें से ईमानवाले बहिश्त में भेजे जायेगें और काफ़िर नरक में। वैसे तो हम आगे चलकर अलग अध्याय में स्वर्ग-नरक की विस्तार से चर्चा करेंगें पर चूंकि ये दोनों कयामत से अभिन्न रूप से जुड़े हैं इनकी एक झलक यहाँ भी देखना सामयिक रहेगा। वैसे इसी अध्याय मे पूरे विस्तार से काफ़िर की अलग से चर्चा करेंगें। परन्तु विषय से जुड़े होने के कारण इस प्रसंग में भी काफ़िर की चर्चा होना स्वाभाविक है। कयामत से संबंधित आगे दी गई आयतों से पाठक कुरान शरीफ़ के इस पहलू को और इस्लाम के मूल सिद्धांतों में से इस प्रमुख सिद्धान्त को भली प्रकार जान सकेंगे।

16.3 मुर्दो को कयामत के दिन कब्रों से जिन्दा उठाना, फिर उनको अल्लाह के न्याय के अनुसार नरक की सजा या स्वर्ग की बख़्शीश इस्लाम के प्रमुखतम सिद्धांतों में से एक है। इस पर हम अंत में दो आयतों की ओर ध्यान दिलाना चाहेंगें क्योंकि कुरान शरीफ़ के अनुसार केवल इस सिद्धांत को न मानने वाला भी काफ़िर है, और नरक में सजा पायेगा और हमेशा वहीं रहेगा।

(1) "और ऐ पैगम्बर अगर तुम ताज्जुब की बात (सुनना) चाहो तो उन (काफ़िरों) का यह कहना (क्या कम) ताज्जुब है कि जब हम मरकर मिट्‌टी हो जायेंगे तो क्या हम नये सिरे से फिर पैदा किये जायेगें। यही लोग हैं जो अपने परवरदिगार से मुन्किर (विमुख) हुए और यही लोग हैं जिनकी गर्दनों में (कयामत के दिन) तौक होगें और यही नरकवासी हैं और हमेशा नरक में ही रहेगें।" 13/5

(2) "मुर्दो को जिला उठाना जरुरी है। इसलिए कि जिन चीजों पर यह झगड़ते थे अल्लाह उन पर (उनकी सच्चाई) जाहिर कर दें और काफ़िर जान लें कि वह झूठे थे।" 16/39

16.4 अब हम नीचे कयामत संबंधित जो आयतें दे रहे हैं, वे सब बड़ी ही स्पष्ट हैं :

(1) "और कान लगाये रक्खो कि जिस दिन पुकारनेवाला पास ही की जगह से आवाज देगा कि उठो।" 50/41 "जिस दिन चिंघाड़ को यकीनन सुन लेंगे वही दिन कयामत का और कब्रों से निकल पड़ने का होगा।" 50/42 "जिस दिन उन मुर्दो पर से जमीन फट जायेगी (और) वे निकलकर दौड़ पड़ेगें.... ।" 50/44

(2) "(तब हुक्म होगा कि) ऐ दोनों फ़रिश्तों हर काफ़िर दुश्मन को जहन्नम में झोंक दो।" 50/24 "और जिसने अल्लाह के साथ दूसरे पूजित्त ठहराये उन सबको अज़ाब में डाल दो।" 50/26 "उनका साथी (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे परवरदिगार मैनें इनको सरकश नहीं बनाया बल्कि ये थे ही राह से दूर भूले हुए।" 50/27 "(अल्लाह) कहेगा मेरे पास झगड़ा न करो और मैं तुम्हारे पास पहिले ही डर पहुँचा चुका था।" 50/28

कुरान शरीफ़ के सूर (अध्याय) 52 की पहली 14 आयतों में अल्लाह शपथपूर्वक कयामत की अनिवार्यता बतलाते हैं और इसे न मानने वालों को दोजख की सजा की अनिवार्यता भी : "कसम है तूर (पहाड़) की" (1) "और लिखी किताब की"(2) "बड़े पन्नों मे" (3) "और बैतुल-मामूर "फरिश्तों का आसमानी काबा की।" (4) "और ऊँची छत

आसमान की" (5) "और उमड़ते हुए दरिया की कसम है" "बेशक तेरे परवरदिगार का अजाब होकर रहेगा।" (9) "और पहाड़ चलें (और उड़े-उड़े फिरें)" (10) "तो उस दिन झुठलाने वालो की खराबी है" (11) "जों बाते बनाने में खेल रहे हैं।" (12) "जिस दिन दोजख की आग की तरफ धक्के दे देकर ले जायेगें।" (13) "और कहा जायगा कि यही वह (जहन्नम की) आग है जिसे तुम झूठा समझा करते थे।" 52/1 से 14

16 5 सूर 56 में कयामत के बाद दाहिने हाथ वाले यानि ईमानवाले को मिलने वाले स्वर्ग का बड़ा ही विशद वर्णन है, जो कयामत के प्रसंग में ही देना उचित होगा। कयामत का मुख्य उद्देश्य यह दिखलाता है कि इस्लाम मानने का फल स्वर्ग भोग और न मानने का फल शाश्वत नरक यातना है।

(1) "जब (भी) होने वाली कयामत हो पड़े।" 56/1 "उसके हो पड़ने में कुछ भी झूठ नही।" 56/2 "(किसी को) नीचा दिखायेंगी और (किसी को) ऊँचे करेगी।" 56/3 "जब जमीन बडे जोर से हिलने लगेगी।" 56/4 "और पहाड़ टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाँएगे।" 56/5 "फिर गुब्बारे बनकर उड़ते होगें।" 56/6 "और तुम लोगों की तीन किसमें हो जाँयेगीं।" 56/7 "फिर दाहिने हाथवाले, सो दाहिने हाथ वालों का क्या कहना है।" 56/8 "और वायें हाथ वाले सो बाये हाथ वाले क्या बुरे लोग हैं।" 56/9

(2) "और (ईमान में) आगे वाले सो (आखिरत में भी) आगे हैं।" 56/10 "वह लोग (अल्लाह के) नजदीकी हैं।" 56/11 "निअमत के बागों मे।" 56/12 "वह बहुत होगें अगलो मे से।" 56/13 "थोड़े से पिछलों में से।" 56/14 "जड़ाऊ तख्तों के ऊपर।" 56/15 "आमने सामने तकिये लगाये बैठे होगें।" 56/16 "उनके पास लड़के जो हमेशा नौजवान बने रहेगे।" 56/17 "उनके पास आबखोरे गडुए और साफ शराब से भरे प्याले लाते और ले जाते होगे।" 56/18 "(वह शराब) जिससे न तो उनके सिर दुखेंगें और न बकवाद लगेगी।" 56/19

(3) "और जो मेवे उनको अच्छे लगे।" 56/20 "और जिस किसम के पक्षी का मास उनकी इच्छा हो।" 56/21

(4) "और हूरें बड़ी-बड़ी आँखों वाली।" 56/22 "जैसे (जतन से) सँजोयें आबदार मोती।" 56/23 "(यह) बदला है उसको जो (वे दुनियां में) करते थें।" 56/24 "और बेहूदा और गुनाह की बात न सुनेगें।" 56/25 "सिवाय सलाम सलाम की पुकार के।" 56/26

(5) "और (दूसरे दर्जे के यानी) दाहिनी तरफवाले सो इन दाहिने तरफवालों का क्या कहना है।" 56/27 "वह रहेगें बगैर काँटेवाली बेरियों में।" 56/28 "और गौद पर गौद केलों मे।" 56/29 "और लम्बे सायों में।" 56/30 "और बहते चश्मों के पानी में।" 56/31 "और मेवों की बहुतायत में।" 56/32 "जो न कभी खत्म हों और न उनके इस्तेमाल में रोक टोक।" 56/33 "और ऊँचे बिछौनों में।" 56/34 "हमने हूरों की एक खास सृष्टि बनाई है।" 56/35 "फिर इनको क्वाँरी बनाया है (कि किसी इन्सान या जिन्न ने उन्हें हाथ नहीं लगाया)।" 56/36 "प्यारी और समान अवस्था वाली।" 56/37 "यह सब नियामतें दाहिनी तरफ वालों के लिए हैं।" 56/38

16 6 सूर (अध्याय) 69 में कयामत के दृश्य के वर्णन के साथ बतलाया गया है कि उस दिन अल्लाह के तख्त को आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाए होगें

(1) "फिर जब सूर (नरसिंघा) एक बार फूँका जायेगा।" 69/13

(2) "और जमीन और पहाड़ उठाये जायेंगें और एकदम तोड़कर चूर-चूर कर दिये जायेगें।" 69/14 "फिर उस दिन हो पड़ेगी वह होनहार (कयामत)।" 69/15 "और आसमान फट जायेगा और वह उस दिन कमजोर हो जायगा।" 69/16 "और फिरिश्ते उसके किनारे पर होगे। और उस दिन तुम्हारे परवरदिगार के तख्त को आठ (फरिश्ते) अपने ऊपर उठाये होगे।" 69/17

"कयामत के दिन की कसम खाता हूँ।" 75/1 "क्या आदमी ख्याल करता है कि हम उसकी हड्डिया (कयामत में दोबारा जिन्दगी के लिए) जमा न करेगें।" 75/3 "क्यों नहीं हम इस बात पर शक्तिमान है कि उसके पोर-पोर (ठिकाने से) बैठा दें।" 75/4

"लेकिन इन्सान चाहता है कि उसके सामने ढिठाई करे।" 75/5 "वह (ढीठ) पूछता है कि कयामत का दिन कब होगा।" 75/6 "तो जब वह डरावनी घड़ी आयेगी तो आँखे चौधियाने लगेगीं।" 75/7 "और चन्द्रमा में ग्रहण लग जायगा।" 75/8 "और सूर्य और चन्द्रमा इकट्ठा जमा हो जायेगें।" 75/9 "तो उस दिन इन्सान कहेगा कि भागकर कहाँ जाऊँ।" 75/10 "बेशक कहीं पनाह नहीं है।" 75/11 "बस उस दिन तेरे परवरदिगार के ही सामने ठहरना होगा।" 75/12

16.7 सूर 77 में अल्लाह ने कयामत की अनिवार्यता की कसमें खाते हुए इसका आना अनिवार्य बतलाते हुए उसको झुठलानेवालों की तबाही बतलाई है। नीचे हम इस सूर की पहली 40 आयतें दे रहे हैं।

सूरः 77 आयतें 1 से 40 तक

"उन (हवाओं) की कसम जो धीमे धीमें चलाई जाती हैं।" (1) "फिर जो जोर पकड़कर बवण्डर या आँधी हो जाती है।" (2) "फिर (जो बादलों को) उभारकर फैला देनी है।" (3) "और उनको जुदा कर देती है।" (4) "(और) दिलों में याद दिलाती है।" (5) "ताकि दलीलें समाप्त हों और डराया जाय।" (6) "(गरज इन हवाओं की कसम है) कि तुमसे जो (कयामत का) वादा किया जाता है वह जरूर होकर रहेगा।" (7) "यानी (उस कयामत के) दिन जब नक्षत्र (तारे) धीमें पड़ (कर मिट जाय)।" (8) "और जब आसमान फट जाये।" (9) "और जब पहाड़ उड़ाये जाँय।" (10) "और जब पैगम्बर नियत समय पर हाजिर किये जायें।" (11) "(तो इस घटना के लिए) किस दिन की देर है।" (12) "फैसले के दिन की।" (13) "और तू क्या जाने फैसले का दिन क्या चीज है।" (14) "उस दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है।" (15) "क्या हमने अगली (गुनहगार) उम्मतों को बर्बाद नहीं किया।" (16) "फिर (इसी तरह) उनके पीछे हम बाद वाले (नाफर्मानों) को भेजते रहे।" (17) "गुनहगारों के साथ हम ऐसा ही किया करते हैं।" (18) "उस दिन झुठलानेवालों की तबाही हैं।" (19) "क्या हमने तुमको तुच्छ पानी से नही पैदा किया है?" (20) "(कयामत के) उस दिन झुठलानेवालो की तबाही है।" (24) "क्या हमने जमीन को समेटने वाली नहीं बनाया।" (25) "जिन्दों और मुर्दों को " 26 "और उसमें ऊँचे-ऊँचे पहाड़ खड़े किये और तुम लोगों को प्यास

बुझाने वाला मीठा पानी पिलाया।" (27) "कयामत के दिन झुठलानेवालों की तबाही है।" (28) "मुन्किरों से उस दिन कहा जायगा कि (जिस चीज को तुम झुठलाया करते थे), देखो चलो (अब) उसकी तरफ ।" (29) "चलो उस छाया (धुएँ के सायबान) की ओर जिसकी तीन शाखें हैं।" (30) 35.2 "जो न (ठण्डक के लिए) घनी हैं और न लपटों से बचायें।" (31) "वह महलों के बराबर ऊँची-ऊँची लपटें फैकती होगीं।" (32) "गोया वह जर्द (पीले) ऊँट हैं।" (33) "कयामत के उस दिन को झुठलानेवालों की तबाही है।" (34) "यह वह दिन है कि उन (के मुँह) से बात न निकलेगी।" (35) "और न उनको इजाजत दी जावेगी कि (अपने बचाव के लिए कोई) उज्र ही पेश कर सकें।" (36) "(कयामत के) उस दिन झुठलानेवालों की तबाही है।" (37) "यही तो फैसले का दिन है जिसमें हमने तुमको और अगलों को जमा किया है।" (38) "तो अगर तुम्हारी कोई तदबीर चल सके तो मुझ पर चलाओ।" (39) "उस दिन झुठलानेवाले की बरबादी है।" (40)

"कयामत को अवश्यम्भावी बतलाते हुए कुरान शरीफ़ में पुनः पुष्टि करते हुए कहा गया हैं : "जिस (कयामत) के दिन कांप जाने वाली (जमीन) कांप उठेगी।" 79/6 "और भूकम्प के बाद भूकम्प आयेंगे।" 79/7 "उस दिन लोगों के दिल धड़क रहे होगें।" 79/8 "उनकी आँखें झुकी होगीं।" 79/9

(सूरः 81)

16.8 "जिस वक्त सूरज लपेट दिया जायेगा।" (1) "जिस वक्त तारे बेनूर हो जायेगें।" (2) "जिस वक्त पहाड़ चलाये जायेगें।" (3) "जिस वक्त दस महीने की (गाभिन) ब्यानेवाली ऊँटनियाँ छूटी-छूटि फिरें।" (4) "जिस वक्त जंगली जानवर आ गिरें।" (5) "और जिस वक्त दरिया उबल पड़ेगें।" (6) "और जिस समय रुहों को (जिस्मों से) मिलाया जायेगा।" (7) "और जिस समय आसमान की खाल खींच ली जायेगीं।" (11) "और जिस समय दोजख दहकाई जायेगी।" (12) "और जिस समय बहिश्त नजदीक लाई जायेगी।" (13) "(उस समय) हर शख्स जान लेगा जो कुछ (दुनिया से) वह (आखिरत के लिये करतूत) लाया होगा।" (14)।

(सूरः 82)

16.9 "जबकि आसमान फट जायेगा।" (1) "और जब सितारे झड़ पड़ेगें।" (2) "और जब नदियाँ (उबलकर) बह चलेंगीं।" (3) "और जब कब्रें उखाड दी जायेंगीं।" (4) "तब हर मनुष्य जान लेगा जो कर्म उसने आगे आखिरत के लिए भेजे और जो आसार दुनिया में पीछे छोड़े।" (5) "और वह उससे (बचकर) छुप नहीं सकते।" (16) "और (ऐ पैगम्बर) तू क्या जाने (आखिरत यानि) वह इंसाफ का दिन क्या चीज है।" (17) "(फिर कहता हूँ कि) तू क्या जाने वह इंसाफ का दिन क्या चीज है।" (18) "जिस दिन कोई शख्स किसी शख्स को कुछ फायदा नहीं पहुँचा सकेगा। "और हुकूमत उस दिन अल्लाह ही की होगी।" (19)।

(सूर 84)

17.0 "जब आसमान फट जायेगा।" (1) "और अपने परवरदिगार की बात सुनेगा और यह उसका फर्ज ही है।"(2) "और जब जमीन तान दी जायेगी।" (3) "और जो कुछ उसमें है बाहर डाल देगी और खाली हो जायेगी।" (4) "और अपने परवरदिगार की बात सुनेगी और यह उसका फर्ज ही है।" (5) "और जिसको उसका लेखा उसकी पीठ के पीछे से दिया जायेगा।" (10) "तो वह मौत मनायेगा।" (11) "और (जहन्नुम की) आग में पैठेगा।" (12)।

कयामत का वर्णन सूर (अध्याय) 101 में भी आया है–"वह खड़खड़ा देने वाली।" (1) "(वह) खड़खड़ा देने वाली क्या चीज है।" (2) "और तू क्या जाने (कि) वह खड़खड़ाने वाली क्या चीज है।" (3) "वह कयामत की घड़ी है जिस दिन आदमी बिखरे हुए पतिंगो की तरह होगें।" (4) "और पहाड़ धुनी हुई रंगी ऊन के मानिन्द हो जायेगें ।" (5) "और जिस किसी का वजन (ईमान) हल्का होगा।" (8) "तो उसका ठिकाना हाविय: होगा।" (9) "और तू क्या जाने वह (हाविय:) क्या चीज है।" (10) "वह (दोजख की) दहकती हुई आग है।"

आशा है कि पाठक ऊपर विस्तार से दी गई कयामत संबंधित आयतों से इस्लाम मे कयामत की महत्ता को भली भाँति समझ गये होगें।

कुरान शरीफ़ में कयामत संबंधी अन्य आयतों का विवरण इस प्रकार है : 2/123, 281, 3/9, 7/156, 15/25, 16/60, 111, 17/19, 20, 21, 71, 72, 18/47, 48, 49, 19/37 से 40, 95, 20/100, से 104, 108 से 111, 21/40, 22/3, 4, 5, 8, 10, 15, 23/15, 16, 73 से 77, 101, 102, 103, 27/70 से 74, 87 से 90, 32/1 से 14, 34/3, 4, 5, 8, 9, 40/17 से 22, 57, 58, 59, 42/17, 18, 45/24 से 37, 50/15, 19 से 23, 51/1 से 14, 69/13 से 37, 75/13, 14, 20 से 30, 36 से 40, 78/17 से 30, 37 से 40, 79/6 से 14, 34 से 46, 83/1 से 21, 84/7 से 15, 86/5 से 10, 99/1 से 8, 100/9, 10, 11।

17.1 कुरान शरीफ़ में जो कयामत का स्वरुप दर्शाया गया है उसकी ग्रंथ साहिबजी में किंचित मात्र भी कल्पना नहीं है। कुरान के अनुसार कयामत या आखिरात केवल एक बार आनी है। और कयामत के बाद सृष्टि का वर्तमान बाहरी स्वरुप शायद सदा के लिये समाप्त हो जायेगा और रह जायेगें केवल सदा रहने वाला बहिश्त या स्वर्ग जो ईमानवालों के लिए है, और सदा रहने वाला दोजख या नरक जो काफ़िरों के लिये है।

इसके विपरीत ग्रंथ साहिबजी ने शास्त्र वर्णित प्रलय स्वीकार किया है, जिसमें कुछ नष्ट नहीं होता वरन् कार्य अपने कारण में कुछ काल के लिये लीन हो जाता है। उस महाप्रलय में न सृष्टि या पंच महाभूत रह जाते हैं न स्वर्ग और नरक ही और न ही कोई देवता आदि। जिस प्रकार मकड़ी अपने जाले को वापस निगल लेती है, या पृथ्वी से उत्पन्न होकर समस्त वनस्पतियाँ पुनः पृथ्वी में लीन हो जाती हैं, या जैसे ऋतुएँ पुनः आती जाती रहती हैं ऐसे ही सृष्टि का क्रम एक विशाल चक्र के समान भगवान की माया के अधीन घूमता रहता हैं।

ग्रंथ साहिबजी के अनुसार केवल एक ही सृष्टि नहीं है, अनन्त सृष्टियाँ हैं और उनके अनन्त (कोटि-कोटि) देवता आदि हैं और उनमें अपने अपने कालचक्र के अनुसार लय-प्रलय

होते रहते हैं। इसकी हम विस्तार से चर्चा करेंगे ओर यह बताएंगे कि यह सब किस प्रकार परमात्मा की त्रिगुणमयी माया के अधीन घटित हो रहा है।

17 2 फिर भी प्रसंगवश यह उचित रहेगा कि ग्रंथ साहिबजी में वर्णित प्रलय का शास्त्रीय स्वरूप क्या है इसकी थोड़ी सी चर्चा हम यहाँ कर ले। सृष्टि की उत्पत्ति के ठीक विपरीत प्रलय का क्रम हैं। उत्पत्ति के क्रम में परमात्म् इच्छा से पहले आकाश उत्पन्न हुआ। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, और जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई। महाप्रलय के समय पृथ्वी गध तन्मात्र होकर जल में लीन हो जायगी, जल रस होकर अग्नि में, अग्नि तेज होकर वायु मे, वायु "स्पर्श' तन्मात्र होकर आकाश में और आकाश "शब्द" तन्मात्र होकर शब्द ब्रह्म में लीन हो जाता है। और इस प्रकार उत्पत्ति और प्रलय का क्रम अनादि काल से चलता आ रहा है।

17 3 महाप्रलय का काल निश्चित है। जिस प्रकार मनुष्य की आयु एक सौ वर्षों की मानी गई है उसी प्रकार सृष्टि के उत्पत्तिकर्ता और समस्त देवताओं के पिता ब्रह्मा जी की भी आयु का मापदंड एक सौ वर्ष है। परन्तु ब्रह्मा जी का एक दिन लगभग 4 अरब 45 करोड़ मानव वर्षो के बराबर है। ब्रह्मा जी के इस एक दिन मे एक हजार चतुर्युग यानि एक हजार सतयुग, एक हजार त्रेता, एक हजार द्वापर, और एक हजार कलियुग बीत जाते हैं। देवताओं के शासन क्रम में ब्रह्मा जी के इस एक दिन में 14 इन्द्र 14 यम,14 वरुण आदि लोकपाल बदल जाते है यानि अपने पुण्य फलों को स्वर्गों में भोगकर पुनः जन्म-मरण के चक्र में अपने कर्मानुसार चले जाते हैं। इस प्रकार देवताओं के राजा इन्द्र का आयुकाल लगभग 31 करोड़ मानव वर्षो के मापदंडों का हुआ।

और इतनी ही बड़ी यानि 4 अरब 45 करोड़ वर्षो के लगभग की ब्रह्मा जी की रात होती है, जब वह अपनी समस्त सृष्टियों को समेटकर योगनिद्रा में सो जाते हैं।

इस प्रकार प्रतिदिन समस्त ब्रह्माण्ड की रचना और प्रलय करते हुए ब्रह्मा जी अपने माप की आयु के एक सौ वर्ष पूरे कर अपने कारण भगवान विष्णु में लीन हो जाते हैं। और हमारे इस ब्रह्मांड के समान अन्य करोड़ों ब्रह्मांड हैं और उन सबके ब्रह्मा आदि अलग अधिष्ठाता देवता हैं।

17 4 यही ग्रंथसाहिबजी में दर्शायी गई त्रिगुणमयी भगवत् माया का अनन्त महाचक्र है, जिसमें जीव अपनी कामना और कर्मों के अनुसार ऊँच-नीच योनियों में घूमता रहता है। ग्रथ साहिबजी का मुख्य उद्देश्य जीव को इस माया चक्र से मुक्त कराना हैं। और यह मुक्ति परमात्म ज्ञान से ही सम्भव है और परमात्म् ज्ञान केवल किसी ज्ञानी गुरु की कृपा से ही सम्भव है। परमात्म ज्ञान की प्राप्ति में परमात्मा का नाम जप और संसार से वैराग्य, सत्संग आदि, सबसे सुलभ साधन है, जिनका ग्रंथ साहबजी ने पग-पग पर उपदेश दिया है।

17 5 ग्रंथ साहिबजी के अनुसार "स्वर्ग" कदापि जीव का लक्ष्य नहीं है। स्वर्ग की कामना एक भोग की ही कामना है। स्वर्ग की प्राप्ति परमात्मा को नहीं प्राप्त करा सकती है। स्वर्ग का भी अंत जन्म-मरण के दुःखदायी चक्र में है।

इस प्रकार कुरान शरीफ़ में वर्णित कयामत और उसके फल ग्रंथ साहिबजी में वर्णित प्रलय के अर्थ से बिलकुल भिन्न और विपरीत हैं।

17 6 जैसाकि हमने शुरु में कहा पूरे कुरान शरीफ में काफ़िर संबंधी आयतें जिसमे मुन्किर यानि विमुख, मुनाफिक (कपटाचारी), मुशरिक्क (बहुदेव पूजक) भी शामिल है, छाई हुई हैं। इन आयतों के अलावा जिहाद संबंधी आयत भी काफ़िर संबंधी आयतों के अन्तर्गत आ जाती हैं क्योकि जिहाद का निर्देश काफ़िरों के विरुद्ध ही है। इसी प्रकार दोजख या नरक से संबध रखने वाली आयतें और वे आयतें जो पिछले पैगम्बरों को झुठलानेवालों से संबंधित हैं ये सब आयतें "काफ़िर" संबंधित मानी जानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त यहूदियों और ईसाइयों से संबंधित आयतें जिनमें इन दो जातियों को हजरत मुहम्मद की पैगम्बरी से इन्कार करने वाला दर्शाया गया है, काफ़िर संबंधी आयतों का ही भाग मानना चाहिए। इस प्रकार कुरान शरीफ की 6236 आयतों में से लगभग 4000 आयतें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से काफ़िर संबंधित हैं।

चूँकि काफ़िर, काफ़िरों के विरुद्ध जिहाद और काफ़िर को मिलनेवाले अवश्यंभावी शाश्वत नरक एक दूसरे से अभिन्न रुप से गुँथे हुए हैं इसलिये अध्याय क्रम से इन आयतों को एक साथ ही विस्तार से आगे दिया जारहा है। वैसे इसकी कुछ झलकियाँ हम पहले कयामत शीर्षक के अध्याय में दे चुके हैं।

आज कल जिहाद की चर्चा अक्सर सुनाई पड़ती है। आइए अब हम यह देखें कि कुरान शरीफ़ में इसका क्या अर्थ है?

17 7 जिहाद का सीधा अर्थ युद्ध के द्वारा इस्लाम का विस्तार करना है या फिर अन्य देशों मे युद्धरत इस्लामवालों की मदद करना है और काफ़िरों को नष्ट करना है। और इस जोखिम भरे काम के लिए जिहाद में भाग लेने वालों के लिए कुरान शरीफ ने इस लोक और कयामत के बाद दूसरे लोक में भारी लाभ निश्चित किया है। और इस्लाम के नाम पर जिहाद करने वालों के लिये न किसी अन्य राष्ट्र की सीमाएँ ही बाधा हैं और न इन देशों के साथ किये गये समझौते ही। इस्लाम वालों में आज भी यही मान्यता है। जुलाई 1995 में नई दिल्ली में सार्क देशो की केन्द्रीय विधान सभाओं के अध्यक्षों और इन विधान सभाओं के सदस्यों का सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन में पाकिस्तान से आए प्रतिनिधि मण्डल के एक प्रमुख सदस्य जनाब मुजफ्फर अहमद हाशमी ने दिल्ली के प्रमुख अंग्रेजी अखबार "दि हिन्दुस्तान टाइम्स" को दिए अपने साक्षात्कार में कश्मीर समस्या पर अपने विचार व्यक्त करते हुए जिहाद के बारे में भी अपने विचार स्पष्टतम शब्दों में व्यक्त किये थे। जब उनसे पूछा गया कि क्या उनकी पार्टी "जमाते इस्लामी" कश्मीर के उग्रवादियों को हथियार और अन्य मदद कर रही है तो उत्तर में उन्होंने जो कहा उस पर अंग्रेजी के पत्र दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स की टिप्पणी नीचे उद्धृत है–

"Elected from Karachi in the October 1993 polls, Mr. Hasmi however, had no qualms in reiterating his parties known hardline stance on Kashmir. He said left to it, the Jamat would like to see" material aid" flowing to the Kashmir militants engaged in "Jehad". In fact there have been reports in the past that the Jamat was giving arms and training to militants across the borders. "I wish that was true" remarked Mr. Hasmi while claiming that the Pak Government did not even prevent volunteers from his party to go anywhere near the border"

"All Muslims who believe in the Jehad do not care about borders. They participate in the Jehad on the strength of their faith, continued the Janmat MNA" (Member of National Assembly) the Hindustan Times, New Delhi, July 22, 1995)

17 8 अब हम कुरान शरीफ़ में काफिर, जिहाद और नरक संबंधी आयतों पर एक साथ विचार करेंगें। कुरान शरीफ़ का पहला अध्याय सूरे फातिहः कहलाता है और उसमें कुल सात आयतें हैं। कुरान शरीफ़ के हिन्दी के शेरवानी संस्करण में जिससे हमने अपने इस समस्त आलेख की आयतों को उद्धृत किया है सूरे फातिहः के महत्व पर निम्नलिखित फुटनोट दिया गया हैं :

"सूरे फातिहः सम्पूर्ण कुरान का मंगलाचरण है। इस सूरः में उतरने की संख्या होते हुए भी इसको धर्मग्रन्थ के शुरु में दिये जाने से इसकी महत्ता जाहिर है। महज अल्लाह की तारीफ और इबादत इस सूरः का सार है। नमाज व अनेक मौकों पर इसका पाठ होना जरूरी है। यह इस्लाम धर्म की आत्मा (रुह) है। कुरान के सारे पाठ में सूरे फातिहः का भाव घुला मिला है।" सूरे फातिहः में अल्लाह से प्रार्थना करते हुए "जो" निहायत रहमवाला बेहद मेहरबान है (1/2), "जजा के दिन का मालिक है" (1/3), कहा गया है कि "हमको सीधी राह चला।" 1/5 "उन लोगों की राह जिनको तूने निआमत (से पुरस्कृत) किया" 1/6 "न कि उनकी (राह) जो तेरे गजब (प्रकोप) में पड़े और भटके हुओं की।" 1/7 स्पष्ट है कि इस्लाम के इस मगलाचरण में ईमानवालों के लिये राह माँगी है, और जो ईमानवाले नहीं हैं यानि जो सजा और कोप के पात्र हैं, उनकी राह से बचने की कामना की गई है। इस प्रकार कुरान शरीफ़ की शुरुआत ही अल्लाह को न मानने वालों को पथभ्रष्ट दिखलाकर उन्हें अल्लाह का कोपभाजन मानने से होती है।

सूरः 2

17 9 सूरः 2 जो सूरे बकर कहलाती है, सबसे लम्बी है और सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है उसकी आयत 2 में कुरान की महत्ता बतलाते हुए कहा गया है कि कुरान संदेह रहित है और इसमे "हिदायत है (अल्लाह का) डर रखनेवालों को।" इसमें पैगम्बर को सम्बोधित करते हुए अल्लाह कहते हैं :

(1) "बेशक जिन लोगों ने कुफ्र (इन्कार) अपनाया है तुम उनको डराओ या न डराओ उनके लिए बराबर है, वे ईमान न लायेगें।" 2/6

(2) "उनके दिलों पर और उनके कानों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और उनकी आखों पर पर्दा है। उनके लिए बड़ी (ही) सजा है।" 2/7

(3) "और लोगों में कुछ ऐसे (भी) हैं जो कह देते हैं कि हम अल्लाह पर और आखिरत कि दिन पर ईमान लाये, हाँलाकि वे ईमानवाले नहीं है।" 2/8, "(वे) अपनी समझ में अल्लाह को और ईमानवालों को धोखा देते हैं मगर वे नहीं' जानते कि वे अपने आपको ही धोखा देते हैं " 2/9

(4) "ये बहरे गूँगे और अंधे हैं, इसलिये अल्लाह के मार्ग पर वापस नहीं आ सकते।" 2/18

(5) "और जो हमने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर (कुरान) उतारा है, अगर तुमको उसमें शक हो तो तुम उसके मानिन्द एक सूरत (अध्याय) बना लाओ, अगर तुम सच्चे हो तो अल्लाह के मुकाबले में जो तुम्हारे सहायक हों, उनको बुलाओ।" 2/23

(6) "फिर अगर तुम ऐसा न कर सको और हरगिज तुम न कर सकोगे तो उस (दोजख की) आग से डरो, जिसका ईंधन आदमी और पत्थर के बुत होगें और वह (आग) काफिरों के लिए तैयार है।" 2/24 "और जो लोग इन्कार करेंगे और हमारी आयतों को झुठलायेगें वही दोजखी होगें। वह सदैव दोजख में रहेगें।" 2/39

18.0 (1) "जिन लोगों को हमने किताब दी है (और) वह उसको उसी तरह पढ़ते रहे जैसे कि उसे पढ़ना चाहिए (तो) ऐसे ही लोग उस पर ईमान लाते हैं और जो इससे मुन्किर (विमुख) होगें तो वहीं लोग हैं जो घाटे में रहेंगें।" 2/121

(2) "अल्लाह ने फर्माया कि जो कुफ्र करेगा मैं उसको भी चन्द रोज के लिए चीजों से फायदा उठाने दूंगा, फिर उसको मजबूर करके दोजख (नरक) की सजा में ले जा दाखिल करुंगा। और वह बुरा ठिकाना है।"2/126

(3) "बेशक जो लोग कुफ्र (इन्कार) करते रहे और इन्कारी की ही हालत में मर गये, यही हैं जिन पर अल्लाह की और फरिश्तों की और आदमियों की सब की लानत है।" 2/161 "वह हमेशा इसी (हालत) में रहेगें, इनकी न तो सजा ही हल्की की जायेगी और न इनको मुहलत ही मिलेगी।" 2/162

18.1 अल्लाह की राह में जो जिहाद के समय लड़ते हुए मारे गये, वह अल्लाह की निगाह मे मुर्दा नहीं बल्कि हमेशा शहीद के तौर पर जिन्दा ही हैं :

(1) "और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जायें उनको मत कहो (वह) मुर्दा हैं (वे मरे नहीं) बल्कि जिन्दा हैं, मगर तुम नहीं जान पाते।" 2/154

(2) "और (ऐ ईमानवालों) जो लोग तुमसे लड़े तुम भी अल्लाह के रास्ते में उनसे लड़ो...." 2/190

(3) "जो तुमसे लड़ते हैं उनको जहाँ पाओ कत्ल करो और जहाँ से उन्होंने तुमको निकाला है तुम भी उनको वहाँ से निकालो....। और जब तक काफिर मस्जिद हराम (अदबवाली मस्जिद) के पास तुमसे न लड़े तुम भी उस जगह उनसे न लड़ो लेकिन अगर ये लोग तुमसे लड़े तो (तुम) भी उनको कत्ल करो। काफिरों का यही बदला है।" 2/191

(4) "और यहाँ तक उनसे लड़ो कि फसाद (की जड़) बाकी न रहे और एक अल्लाह ही का दीन हो जाय....।" 2/193

18.2 (1) स्पष्ट है कि उपरोक्त आयतें इस्लाम की शुरुआत के समय की हैं, जब मुहम्मद साहिबजी के अनुयायी थोड़े और मक्कावाले गैर ईमानवालों से कम ताकतवर थे। पर आयत 2/193 में यह स्पष्ट आदेश है कि काफिरों से जो युद्ध हो वह उनको जड़ मूल से नष्ट करने के लिए होना चाहिए ताकि केवल अल्लाह ही का दीन यानि केवल इस्लाम ही रह जाय

" और (काफिर लोग तो सदा तुमसे लड़ते ही रहेंगे यहाँ तक कि इनका वश चले तो

तुमको तुम्हारे दीन से फेर ही दें। और जो तुम में से अपने दीन से फिरेगा और मुन्किर की दशा में मर जायगा, तो ऐसे ही लोगों का किया-कराया दुनिया और अखिरत में अकारथ गया। और यह दोजखी है और हमेशा (दोजख) की आग में ही रहेगें।" 2/217

(2) "जो लोग ईमान लाये और उन्होनें देश त्याग किया और अल्लाह की राह मे जिहाद भी किये, यही है जो अल्लाह की कृपा की आशा लगाये हैं। और अल्लाह अत्यत क्षमाशील, अत्यंत दयावान है।" 2/218

इस आयत में यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि इस्लाम में जिहाद करना कितना पवित्र कार्य है और साथ ही यह भी साफ कर दिया गया है कि क्षमाशील और दयावान अल्लाह जिहाद करने वाले के सारे पापों को माफ कर देता है।

(3) "ईमानवालों का मददगार अल्लाह है कि उनको अँधेरे से निकालकर रोशनी में लाता हें । और जो काफ़िर हैं उनके दोस्त शैतान हैं कि उनको रोशनी से निकाल कर अँधेरे में ढकेलते हे। यही लोग (दोजख की) आग वाले नारकीय हैं, और हमेशा दोजख ही में रहेगें।" 2/257

(4) "और कुरान शरीफ़ के इस दूसरे और प्रमुखतम अध्याय की समाप्ति काफ़िरो पर गालिब होने की प्रार्थना से इस प्रकार होती है : "और ऐ हमारे परवरदिगार.....हमको माफ कर दे, हमारे गुनाहों को बक्श दे और हम पर रहम कर, तू ही हमारा काम बनानेवाला है सो हमें काफ़िरों पर गालिब (प्रबल) कर।" 2/286 दूसरे शब्दों में एक "ईमानवाले" की सबसे बड़ी कामना और अल्लाह से यह प्रार्थना है कि वह काफ़िर पर प्रबल होकर उसे नेस्तनाबूद कर दें, उन्हें नष्ट कर दे, ताकि उसकी जड़ बाकी न रहे और एक अल्लाह ही का दीन हो जाय जैसाकि इसी अध्याय की आयत 2/193 में कहा गया है।

सूरः 3

18 3 (1) "बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों को (सुनकर) मुन्किर (विमुख) है, उनके लिए सख्त सजा है। और अल्लाह जबरदस्त बदला लेने वाला है।" 3/4

(2) "बेशक जो लोग काफ़िर हैं, अल्लाह के सामने न तो उनके माल ही कुछ काम आयेगें और न उनकी औलाद ही उन्हें सजा से बचा सकेगी। और ये ही नरक की आग के ईधन होगें।" 3/10

(3) "(ऐ पैगम्बर) जो लोग मुन्किर हैं उनसे कह दो कि कोई दिन (जल्दी ही) तुम (मुसलमानों के हाथों) परास्त होओगे और (आखिरत में) जहन्नम की तरफ इकट्ठा किये जाओगे (और) वह (जहन्नम) कैसा बुरा ठिकाना है।" 3/12

आयत 3/13 में अल्लाह बतलाते है कि किस प्रकार बद्र के युद्ध में अल्लाह ने ईमानवालों की मदद की और काफ़िरों को उनकी सेना अपनी सेना से दुगनी दिखलाई पड़ती थी। ईमानवालों की इस जीत में अल्लाह के अनुसार ईमानवाले के लिये नसीहत है :

18 4 "अभी उन दो गिरोहों में तुम्हारे लिए (खुदाई कुदरत की) एक निशानी (प्रमाण) हो चुकी है जो एक दूसरे से (बद्र के युद्ध में) लड़ गये। एक गिरोह (मुसलमानों का) तो अल्लाह की राह पर लड़ता था और दूसरा (गिरोह) काफ़िरों का था जिनको अपनी आँखों से

(मुसलमानों का गिरोह) अपने से दूना दिखलाई दे रहा था। और अल्लाह अपनी मदद से जिसको चाहता है बल देता है। इसमें संदेह नहीं कि जो लोग सूझ रखते हैं उनके लिए इन घटनाओं में नसीहत है।" 3/13। ईमान लाने से या मुसलमान हो जाने से ही नरक से बचा जा सकता है और ईमानवाले ही बहिश्त के अधिकारी हैं : "यही (लोग) हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे पालनकर्ता हम बेशक ईमान ले आये हैं, सो तू हमारे गुनाह माफ कर और हमको नरक की आग के अजाब से बचा।" 3/16

(1) "......और (ऐ पैगम्बर) किताबवालों और जाहिलों से पूछो कि तुम भी इस्लाम पर ईमान लाते हो (या नहीं) तो फिर अगर ईमान ले लाये तो (बेशक वे) सच्चे रास्ते पर आ गये, और अगर मुँह मोड़े तो तुम्हारा जिम्मा सिर्फ अल्लाह का पैगाम पहुँचा देना (ही) है और अल्लाह(अपने) बन्दों को खूब देख रहा है।" 3/20

(2) "(बेशक) जो लोग अल्लाह की आयतों से इन्कार करते रहे हैं..... तो ऐसे लोगों को (अल्लाह की ओर से) दर्दनाक सजा की खुशखबरी सुना दो।" 3/21 "यही है जिनका सब किया कराया दुनिया और आखिरत में (दोनों में) अकारथ है, और उनको कोई मददगार नहीं, होगा।" 3/22

(3) "बेशक जो लोग काफिर हैं उनके माल और उनकी संतान अल्लाह के (कोप के) सामने हरगिज उनके कुछ भी काम न आयेगी। और यही लोग (दोजख की) आग वाले हैं। और यह हमेशा उसी में रहेगें।" 3/116 काफ़िरों के बारे में ईमानवालों को सावधान करते हुए अल्लाह कहते है : "ऐ ईमानवालो, अपने लोगों को छोड़कर (किसी गैर) को अपना भेदी मत बनाओ कि वह लोग तुम्हारे साथ (लड़ने में और) बुराई करने में कुछ उठा नहीं रखेगें। और वह चाहते हैं कि (जैसे भी हो) तुमको तकलीफ पहुँचे। दुश्मनी तो इनकी हर बात से जाहिर हो पड़ती है, और जो (कीना) इनके दिलों में छिपा है वह (उससे भी) बढ़कर है। हमने तुमको निशानियाँ बता दी हैं, अगर तुमको बुद्धि हो।" 3/118 "काफ़िरों के सन्दर्भ में ईमानवालो को ब्याज खाने से मना करते हुए, अल्लाह आयत में कहते हैं : ऐ ईमानवालो! (मूल रकम को) दुगना चौगुना (बढ़ाने के लिए) ब्याज मत खाओ और अल्लाह से डरो....." 3/130 "और (नरक की) उस आग से डरते रहो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।" 3/131 "ऐ ईमानवालो, अगर तुम काफ़िरों के कहे में आ जाओगे तो वे तुमको उल्टे पैरों (फिर कुफ्र की ओर) लौटा ले जायेंगे, फिर तुम ही (उल्टे) घाटे में आ जाओगें।" 3/149, "बल्कि तुम्हारा मददगार अल्लाह है, और वह सबसे अच्छा मददगार है।" 3/150 "अब हम जल्दी (तुम्हारा) डर काफ़िरों के दिलों में बिठा देगें क्योंकि उन्होने उन चीजों को अल्लाह का शरीक बनाया है जिनकी अल्लाह ने सनद नहीं भेजी। और उन (लोगों) का ठिकाना (नरक की) आग है। और जालिमों के लिए वह कैसा बुरा ठिकाना है।" 3/151 **"और जिस वक्त तुम अल्लाह के हुक्म से काफ़िरों को कत्ल कर रहे थे (उस वक्त) अल्लाह ने तुमको अपना (फतह का) वादा सच्चा कर दिखाया।" 3/152**

18 5 उपरोक्त आयतों से स्पष्ट है कि ईमानवालों को काफ़िरों के साथ कोई भी संबंध रखने की मनाही है अल्लाह स्वयं उनके ही मददगार हैं काफ़िरों का कत्ल अल्लाह के ही हुक्म से

मुसलमान करते हैं और अल्लाह अपने वायदे के अनुसार मुसलमानों को जिताता है।"

(1) "जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ्र मोल लिया वे अल्लाह को हरगिज किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगें, और इन्हीं को दुःखदायी सजा होगी।" 3/177

(2) "(ऐ पैगम्बर) शहरों में काफ़िरों का चलना फिरना कहीं तुमको धोखे में न डाले।"3/196 "यह कुछ दिन की मौज है फिर तो इनका ठिकाना दोजख है।" और वह कैसा बुरा ठिकाना है।"3/197

(3) "ऐ ईमानवालो (अल्लाह की राह में आई तकलीफों के मुकाबले में) सब्र से काम लो, और सब्र में (औरों) से बढ़े चढ़े रहो, और (काफिरों के मुकाबले पर मुस्तैद रहो व) जमे रहो, और अल्लाह से डरते रहो शायद तुम मुराद पर पहुँच जाओ।" 3/200

जिहाद

18 6 अब हम जिहाद संबंधित आयतों को पाठकों के सामने रखते हैं। इन आयतों यह भी स्पष्ट हो जायेगा कि काफ़िरों के विरुद्ध युद्ध में मुसलमानों की सहायता के लिये अल्लाह हजारों की संख्या में फरिश्तों को भी भेजते हैं :

(1) "और (ऐ पैगम्बर वह समय भी) याद करो जब तुम सुबह अपने घर से चले (और) मुसलमानों को लड़ाई के मोर्चो पर बैठाने लगे। और अल्लाह (सब) सुनता जानता है।" 3/121

(2) "कि जब तुममें से दो गिरोहों ने साहस तोड़ देना चाहा मगर अल्लाह उनका सहायक था। और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह पर ही भरोसा रखें।" 3/122

(3) "और वदर के युद्ध मे अल्लाह ने तुम्हारी मदद की हालांकि उस समय तुम पस्त थे। तो अल्लाह से डरो, शायद तुम शुक्रगुजार बन जाओ।" 3/123

(4) "(और वह भी याद करो) जबकि तुम मुसलमानों को समझा रहे थे कि क्या तुमको इनना काफी नहीं हैं कि तुम्हारा पालन कर्ता तीन हजार फरिश्ते भेजकर तुम्हारी मदद करे।" 3/124

(5) "बल्कि अगर तुम मजबूत बने रहो और (अल्लाह की नाखुशी से) बचो और (दुश्मन) अभी इसी दम तुम पर चढ़ आयें तो तुम्हारा परवरदिगार तीन (क्या) पाँच हजार निशानवाले फरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा।" 3/125

(6) "और (यह मदद इसलिए थी) कि काफ़िरों की एक जमात को नष्ट करे या जलील व पस्पा करे ताकि वे असफल वापिस चले जायें।" 3/123

(7) "क्या तुम इस ख्याल में हो (कि बिना आजमाइश के) जन्नत में जा दाखिल होगे हालाकि अभी तक अल्लाह ने न तो उन लोगों को जाँचा जो तुममें से जिहाद करने वाले हैं और न उन लोगों को जाँचा जो (अल्लाह की राह में) साबित कदम (डटे) रखने वाले हैं।" 3/142

(8) "और तुम तो मौत के आने से पहले शहीद होने की आरजू किया करते थे तो अब तुमने उसको अपनी आँखों देख लिया (तो अब शहीद होने में आगा पीछा क्यों है?)।" 3/143

आयत 3/142 और 3/143 से स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम में जिहाद में लड़ते हुए शहीद हो जाना कितना महत्वपूर्ण है। जिहाद में भाग लेना और उसमें शहीद हो जाना जन्नत में प्रवेश पाने का कितना सहज मार्ग है

(9) "और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की माफी और कृपा उससे कही बढ़कर है जो वह लोग (संसार में) जमा करते हैं।" 3/157 "और तुम मर गये या मारे गये (हर सूरत में) जरुर अल्लाह ही के सामने जमा किये जाओगे।" 3/158 मुसलमानों को जिहाद के युद्धों में भाग लेने का और उसमें मर मिटने का यह अल्लाह की ओर से खुला आमंत्रण है। और जिहाद में प्राण त्यागने वालों को अल्लाह की कृपा का पूरा आश्वासन है।

(10) "जो खुद तो (जिहाद से जी चुराकर घर में) बैठ रहे, और अपने भाइयों के संबंध में कहने लगे कि हमारा कहा मानते (यानी जंग में न जाते) तो मारे न जाते, तो (उनसे) कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो अब अपने ऊपर से मौत को हटा दो।" 3/168 "और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये हैं उनको मरा हुआ ख्याल न करना बल्कि (वे लोग) जीते हैं। और अपने परवरदिगार के पास इनको रोजी मिलती है।" 3/169 "जो (निआमते) अल्लाह ने अपनी कृपा से इनको दे रखी हैं उनसे खुश है, और जो लोग इनके बाद अभी इनमें आकर (शहीद होकर) शामिल नहीं हो सके हैं (और इनके बाद पहुँचेगें) उनके लिए भी खुशियाँ मनाते हैं इसलिए कि (कयामत के दिन) उन पर डर न होगा और वे उदास न होगें।" 3/170

(11) "जिन्होंने घायल होने के बाद भी अल्लाह और पैगम्बर का हुक्म माना (खासकर) उनमें जो नेक परहेजगार हैं उनके लिए बड़ा फल है।"3/172

(12) "वह लोग जिनको लोगों ने खबर दी कि काफिरों ने तुम्हारे (मुकाबले के) लिए बडी फौज जमा की है, उनसे डरते रहना तो इससे इनका ईमान और अधिक हो गया और (यह) बोल उठे कि हमको अल्लाह काफी है और वही सर्वोपरि काम सँभालने वाला है।" 3/173

(13) "यह तो शैतान ही है जो अपने दोस्तों के जरिये भयभीत करता है, अगर ईमान रखते हो, तो उनसे न डरो और मेरा ही डर रखो।" 3/175

(14) "और जो लोग कुफ्र में जल्दी फँसते हैं, (ऐ पैगम्बर) तुम इन लोगों की वजह से उदास न होना, यह लोग अल्लाह का तो हरगिज कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। अल्लाह चाहते हैं कि आखिरत में इनको कुछ हिस्सा न दें और इनको बड़ा अजाब मिलना है।" 3/176

(15) "और जो कुफ्र कर रहे हैं इस ख्याल में न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे है यह इनके हक में भला है। हम तो इनको सिर्फ इसलिए ढील दे रहे हैं ताकि (गफलत में रहकर) और गुनाह समेट लें। और इनके लिए जिल्लत की मार है।" 3/178

सूरः 4

18.7 मुनाफिक यानी वे कपटी लोग जो पूरी तरह से अल्लाह के दीन में नहीं आए हैं, उनके बारे में कुरान शरीफ में आता है : "तो तुम्हारे परवरदिगार की कसम कि जब तक वह लोग अपने आपसी झगड़ो में तुमको मुन्सिफ न जाने और तुम्हारे फैसले से दिल तंग न हो बल्कि (खुशी से उसको) मान न लें, तब तक वे ईमानवाले न होगें।"4/65 "और अगर हम इन (मुनाफिकों) को हुक्म देते कि अपने आपको कत्ल करो या घरबार छोड़कर निकल जाओ तो

इनमें से थोड़े (लोग) ही इसको करते, और जो कुछ इनको नसीहत दी जाती है अगर उसका पालन करते तो उनके हक में जियादः भला होता और उनके दीन को जियादः मजबूत करता।" 4/66

जिहाद की राह में हरदम लड़ने को तैयार रहने का आदेश देते हुए अल्लाह कहते है।

(1) "(ऐ ईमानवालों हर वक्त) अपना बचाव रखो और फिर अलग अलग गिरोह बॉधकर निकलो या इकठ्ठे होकर निकलो।" 4/71

(2) "तो जो लोग आखिरत के बदले संसार का जीवन (यानी जान तक) बेचना चाहते हैं उनको चाहिए कि अल्लाह की राह में लड़ें। और जो अल्लाह की राह मे लड़ें और फिर मारे जायें या जलवा (फतह) पाएँ तो हम उनको सवाब देगें।" 4/74

(3) "जो ईमानवाले हैं वह तो अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं वह शैतान की राह में (लड़ते हैं) तो तुम शैतान के तरफदारों से लड़ो बेशक शैतान की (सारी) तदबीरें बोदी होत्ती है।" 4/76 बात स्पष्ट है कि जो ईमानवाले नहीं है वे सब काफ़िर हैं और शेतान की राह वाले हैं। इसलिए कुरान शरीफ़ के अनुसार ईमानवालें का यह फर्ज बनता है कि वे सदैव काफ़िरों से लड़ें और उन पर फतह पाने का प्रयत्न करते रहें। परन्तु ईमानवालो मे कुछ ऐसी भी जमात्तें हैं जो जान जाने के भय से जिहाद की लड़ाई से दूर रहना चाहती हे। उनके बारे में अल्लाह कहते हैं :

18 8 ".......फिर जब इन पर जिहाद फर्ज हुआ तो एक जमात उनमें से इन लोगों से (ऐसा) डरने लगी जैसे कोई अल्लाह से डरता है बल्कि उससे भी बढ़कर और शिकायत करने लगी कि ऐ हमारे परवरदिगार तूने हम पर जिहाद क्यों फर्ज कर दिया हमको थोड़े दिनो की (जिन्दगी की) मुहलत और क्यों न दी तो (ऐ पैगम्बर) कहो कि दुनिया के लाभ थोड़े हैं, ओर जो शख्स (अल्लाह का) डर रखे उसके लिऐ आखिरत बेहतर हैं।" 4/77

जिहाद यानी अल्लाह की राह में लड़ना—इसलिए हजरत मोहम्मद को अल्लाह का यह हुक्म हुआ कि तुम ईमानवालों को लड़ाई के लिये उभारों। अल्लाह का काफ़िरों के जोर को तोडने का आश्वासन कुरान शरीफ़ की आयत 4/84 का विषय है :

"तो (ऐ पैगम्बर) तुम अल्लाह की राह में लड़ो, अपने सिवाय तुम पर किसी और की जिम्मेदारी नहीं (हां) ईमानवालों को (लड़ाई के लिए) उभारों, ताजुब्ब नहीं कि अल्लाह काफ़िरों के जोर को तोड़ दे। और अल्लाह का जोर जियादः ताकतवर और उसकी सजा जियादः सख्त है।" 4/84

जिहाद में मुसलमान और गैर-मुसलमान की पहचान में सावधानी बरतना आवश्यक है। उस समय जान माल बचाने के लिये भी कोई अपना परिचय मुसलमान करके देता है तो उसको नुकसान न पहुँचायें यदि काफ़िर की जान बच जाय तो बेहतर है न कि गलती से एक मोमिन या मुसलमान की जान चली जाय, और जिहाद में भाग लेने वाले मुसलमान का दर्जा जिहाद में भाग न लेने वाले से ऊँचा है।

(1) "ऐ ईमानवालों जब तुम अल्लाह की राह (जिहाद) में बाहर निकलो तो अच्छी तरह दोस्त दुश्मन की जॉच कर लिया करो और जो शख्स तुमसे सलाम करे तो उससे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं और यह कहने में तुम्हारी असल) गरज यह हो कि दुनिया की

जिन्दगी का नफा हासिल करो (यानी उसको दुश्मन ठहराकर उसका माल मत हथियाओ) तो (जान लो कि) अल्लाह के यहाँ बहुत सी गनीमतें (तुम्हारे लिए मौजूद) हैं। पहले (यानी खुद मुसलमान होने से पहले) तुम भी तो ऐसे ही थे (यानी माल बचाने के लिए तुमने भी कलमा पढ लिया था)। फिर अल्लाह ने तुम पर मेहरबानी की तो आइन्दा अच्छी तरह जाँच लिया करो अल्लाह तुम्हारे कामों से जानकार हैं।" 4/94

(2) **"जिन मुसलमानों को कोई उज्र (मजबूरी) नहीं और वह (जिहाद से जी चुराकर) घरों में बैठे रहे, वह लोग उन लोगों के बराबर नहीं जो अपने माल और जान से अल्लाह की राह में जिहाद कर रहे हैं। अल्लाह ने माल और जान से जिहाद करने वालों को बैठ रहनेवालों पर ऊँचा दर्जा दिया है। और (वैसे तो) अल्लाह ने सब को खुबी वादा दिया है, लेकिन अल्लाह ने अजरे अजीम (बड़े सवाल) की वजह से जिहाद करने वालों को बैठ रहनेवालों पर कहीं अधिक प्रधानता दी है।" 4/95**

(3) "(इस तरह) अल्लाह के यहाँ दर्जे हैं और अल्लाह ही बख्शनेवाला मेहरबान है।" 4/96। आयतें 4/97, 4/98, 4/99 और 4/100 में मुसलमानों को साफ निर्देश दिया गया है कि वे काफ़िरों के देश को छोड़कर हिजरत कर जांय "क्या अल्लाह की जमीन गुंजाइश नहीं रखती थी कि तुम हिजरत (देश त्याग) करके चले जाते। गरज यह वह लोग हैं जिनका ठिकाना दोजख है।" 4/97 "और जो शख्स अल्लाह की राह में (अपना) देश त्याग करेगा तो जमीन में उसको कहीं जियादः जगह और बड़ी गुंजाइश मिलेगी।" 4/100

189 (1) आयतें 4/101 से 104 तक में मुसलमानों को काफ़िरों से सावधान रहने की हिदायतें है। ऐसे खतरे में नमाज कम की जासकती है। नमाज पढ़ते समय एक वर्ग हथियार लिये चौकसी पर खड़ा रहे। असावधानी कतई नहीं होनी चाहिए" क्योंकि काफ़िरों की तो यह इच्छा है कि अगर तुम अपने हथियारों और जंग के साज और सामान से बेखबर हो जाओ तो एक बारगी टूट पड़ें....बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए जिल्लत की मार तैयार कर रखी है।" 4/102

(2) और लड़ाई में जीत के बाद तकलीफ से न डरकर काफ़िरों का पीछा करना जरुरी है : इसकी हिदायत देते हुए अल्लाह कहते हैं : "और इन लोगों का पीछा करने में हिम्मत न हारो। अगर तुमको तकलीफ पहुँचती है तो जैसे तुमको तकलीफ पहुँचती है वैसे ही उनको भी तकलीफ पहुँचती है। और (तुम्हारी जीत यह है कि) तुमको अल्लाह से वह उम्मीदें है जो उनको नहीं.....4/104

काफ़िर

190 आयतें 4/88 से 91 तक में काफ़िरों को ईमान की राह में लाने की असम्भवता सी दिखलाई गई है, और यह दिखलाया गया है कि काफिर भी हिजरत के समय तुम्हारे साथ देश त्याग करे तो उन पर विश्वास न करो या तुमसे खिचें रहें तो उन काफ़िरों को जहाँ पाओ उनका कत्ल करो :

(1 इनकी तबीयत यह है कि जिस तरह खुद काफिर हो गए हैं उसी तरह) तुम भी काफिर हो जाओ ताकि सब बराबर हो जाओ सो जब तक अल्लाह की राह में

(देश त्याग) न कर जांय इनमें से (किसी को) मित्र न बनाना। फिर अगर (हिजरत से) मुँह मोड़े तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनका कत्ल करो उनमें से किसी को अपना मित्र और सहायक न बनाना।" 4/89

(2) "........तो (ऐसे लोग) अगर तुमसे किनारा खीचे रहें और न सुलह करें और न हाथ रोकें, तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनको कत्ल करो। और यही लोग है जिन पर हमने तुमको (सनद सरीह याने) खुला अधिकार दे रखा है।" 4/91 इस प्रकार ये आयतें ईमानवालों को काफ़िरों के ऊपर पूरा अधिकार देती हैं कि अल्लाह के हुक्म के अनुसार सहयोग न मिलने पर या शक होने पर वे काफ़िरों का बेहिचक जहाँ भी मौका मिल जाय कत्ल कर दें। चौथे सूरः की 10 आयतें, 136 से लेकर 145 तक, मुनाफिक और काफ़िरों से संबंधित हैं। इन आयतों में मुनाफिकों (यानी जो ऊपर से अपने को मुसलमान होना दिखालाते हैं पर अन्दर ही अन्दर काफ़िरों से भी मिले रहते हैं) को भी नरक की भारी सजा सुनाई है। यह बतलाया गया है कि काफ़िर कौन है। ईमानवालों को चाहिए कि वे उसके साथ संबंध नहीं रखें और यह कि अल्लाह काफिरों को कभी भी ईमानवालों पर गालिब यानी प्रबल न होने देगा।

19.1 (1) "ऐ ईमानवालों अल्लाह पर और उसके पैगम्बर पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उन किताबों पर जो पहले (दूसरे पैगम्बरों पर) उतारी, ईमान लाओ। और जो कोई अल्लाह का और उसके फरिश्तों का और उसकी किताबों और पैगम्बरो का और आखिरत के दिन का इन्कारी हुआ, (वह सच्ची राह से) दूर भटक गया।" 4/136

(2) "बेशक जो लोग ईमान लाये, फिर काफ़िर हुए फिर ईमान लाये फिर काफ़िर हुए फिर कुफ्र में बढ़ते गए तो अल्लाह न तो उनको माफ करेगा और न उनको राह दिखायेगा।" 4/137

(3) "मुनाफिकों को खुशखबरी सुना दो कि उनके लिए दुःखदायी अजाब तैयार है।" 4/138

(4) "वे मुनाफिक जो मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त बनाते, क्या काफ़िरो के यहाँ (अपनी) इज्जत (बढ़ाना) चाहते हैं, तो इज्जत तो सारी अल्लाह के ही लिए है।" 4/139

(5) "और तुम पर वह (अल्लाह) किताब में यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनलो कि अल्लाह की आयतों से इन्कार किया जा रहा है और उनकी हँसी उड़ाई जा रही है, तो ऐसे लोगों के साथ मत बैठो वर्ना तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे। बेशक अल्लाह मुनाफिकों और काफ़िरों, सब को दोजख में एक जगह जमा करेगा।" 4/140

(6) ".....और अल्लाह काफ़िरों को ईमानवाले पर हरगिज गालिब (प्रबल) होने का मौका नहीं देगा।" 4/141

(7) "मुनाफिक अल्लाह को धोखा देते हैं हाँलाकि अल्लाह उन्हीं को धोखा दे रहा है...।" 4/142 "(इन्कार और ईमान के) बीच अधर में झूल रहे हैं। न इनकी तरफ न उनकी तरफ और (ऐ पैगम्बर) जिसको अल्लाह भटकाये तो उसके लिए तू कोई राह न पायेगा।" 4/143

(8) "ऐ ईमानवालों! ईमानवालों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ। क्या तुम अल्लाह के प्रति खुला अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो " 4/144

9 "कुछ संदेह नहीं कि मुनाफिक आग (नरक) के सबसे नीचे दर्जे में होगें और (ऐ

पैगम्बर) वहाँ तुम किसी को भी इनका साथी न पाओगे।" 4/145 "और अल्लाह ईमानवालों को (आखिरत में) बड़ा सवाब देगा।" 4/146 "अगर तुम (अल्लाह के) शुक्रगुजार हो और (उस पर) ईमान लाओ तो अल्लाह को तुम्हें अजाब देने से क्या और अल्लाह कदरदान (और सब कुछ) जाननेवाला है।"4/147 काफ़िरों की परिभाषा देते हुए और उन्हें सख्त सजा सुनाते हुए कुरान शरीफ़ में आता है :

19.2 (1) "जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बरों का इन्कार करते है और अल्लाह और उसके पैगम्बर में फर्क डालना चाहते हैं और कहते हैं कि हम किसी को मानते हैं किसी को नही मानते हैं, और (इस) तरह चाहते हैं (कि इन्कार और ईमान) के बीच की कोई (दूसरी) राह निकाल लें।" 4/150

(2) "तो ऐसे लोग ही बेशक काफिर हैं और काफ़िर के लिए हमने जिल्लत की मार तैयार कर रखी है।" 4/151 और अल्लाह और उसके रसूल को न मानने वाले उसकी आयतों को न मानने वाले काफ़िरों को नरक की भयानक आग की सजा मिलनी है और वह सजा कैसी है वह नीचे दी गई दो आयतें बतलाती हैं :

(1) "और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माने और अल्लाह की हदों से हट कर चले (तो अल्लाह उनको नरक की) आग में दखिल करेगा। वह उसमें हमेशा रहेगा उसको जिल्लत की मार दी जायेगी।" 4/14

(2) "यकीनन जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया हम उनको जल्दी ही (दोजख की) आग में झोकेगें। जब उनकी खालें (जलकर) पक जावेगीं, हम उनको दूसरी खाल बदल देगें ताकि वह बराबर अजाब का मजा चखते रहें। बेशक अल्लाह बड़ा जबरदस्त बड़ा हिकमतवाला है।" 4/56

सूर 2, 3, 4 में काफ़िर संबंधी अन्य आयतें : 2/8, 10 से 17, 19, 26, 153 से 157, 170, 171, 194, 221, 3/7, 8, 23, 24, 32, 33, 137, से 140, 153 से 156, 165, 166, 167, 176, 178, 179, 4/60 से 64, 67, 68, 72 से 78, 88, 90।

सूरः 5

19.3 अब देखें कि सूरः 5 में कुरान शरीफ़ में काफ़िरों के बारे में क्या कहा गया है

(1) "और जिन लोगों ने (दीन से) इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे दोजखी हैं।" 5/10 "जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर से लड़ते और फसाद फैलाने की गरज से मुल्क में दौड़ते फिरते हैं, उनकी सजा तो यही है कि मार डाले जायं या उनको सूली दी जाय या हाथ पाँव खिलाफ जानिब से काट दिया जाय या उनको देश निकाला दिया जाय। यह तो दुनियाँ में उनकी दुर्दशा हुई और आखिरत में बड़ी सजा तैयार है।" 5/33

(2) "यकीनन जिन लोगों ने इन्कार किया.....उनके लिए दुखदायी सजा है।" 5/36

(3) "वे चाहेगें कि (नरक की) आग से निकल भागें मगर वह वहाँ से नहीं निकल पायेगें और उनके लिए हमेशा से सजा है" 5/37

(4) "ऐ ईमानवालो अल्लाह से डरो और (उस तक) पहुँचने के लिए जरिए तलाश करते रहो और उसकी राह में जिहाद करो, शायद तुम्हारा भला हो।" 5/35

(5) "ऐ पैगम्बर तू उन लोगों पर अफसोस न कर जो कुफ्र में दौड़-दौड़कर पड़ते है। इन लोगों की दुनियाँ में (भी) जिल्लत है और आखिरत में बड़ी सख्त सजा है।" 5/41

(6) "**.....और जो अल्लाह की उतारी हुई (किताब) के मुताबिक हुक्म न दे तो यही लोग काफ़िर हैं।" 5/44 "......और जो अल्लाह की उतारी हुई किताब के मुताबिक हुक्म न दें तो यही लोग बे-इन्साफ (जालिम) हैं।"** 5/45

(7) "और जिन लोगों ने न माना और हमारी आयतों को झुठलाया यही दोजखी हैं।" 5/86

सूरः 6

194 अध्याय या सूरः 6 में 57 आयतें काफ़िरों से संबंध रखती हैं। इनमें से कुछ आयतों की झलकी हम नीचे दे रहे हैं।

(1) अल्लाह और उनकी भेजी आयतों पर ईमान न लाने वाले काफ़िरों के बारे मे अल्लाह कहते हैं : "क्या इन लोगों को नजर नहीं कि हमने इनसे पहले कितनी उम्मतो (सगतों) का नाश कर दिया.....और (उनके विनाश) के बाद और दूसरी उम्मतें (संगतें) निकाल खडी कीं।" 6/6

(2) "और (ऐ पैगम्बर) अगर हम कागज पर (लिखी लिखाई) किताब (भी) तुम पर उतारते और यह लोग उसको अपने हाथों से छू (भी) लेते, तो भी काफ़िर यही कहते कि यह तो निरा जाहिरा जादू है।" 6/7

(3) "और (काफ़िर) कहते हैं कि इस (रसूल) पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतरा। और अगर हम फरिश्तों को भेजते तो झगड़ा ही चुक गया था, फिर उनको अजाब से मुहलत न मिलती।" 6/8

(4) "अगर हम किसी फरिश्ते को (ही) पैगम्बर बनाते तो उसको भी आदमी की सूरत मे (ही) बनाकर भेजते। और (उस समय भी) हम उनके (दिलों) में वहीं शक डालते जो शक यह (अब) कर रहे हैं।" 6/9

(5) "और (ऐ पैगम्बर) तुमसे पहले भी पैगम्बरों की हँसी उड़ाई जा चुकी है, तो जिन लोगों ने पैगम्बरों की हँसी की, वह उलटी उन्हीं पर (बतौर अजाब) आ पड़ी।" 6/10

इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि पैगम्बर के पैगाम देने के बाद भी जो ईमान न लाए, वो काफ़िर अल्लाह के कोप से सदैव काफ़िर ही रहेगें। इसी बात को 12वीं आयत मे स्पष्ट करते हुए अल्लाह कहते हैं। "जो अपनी जानों को तबाही में बराबर डाल रहे हैं वही ईमान नहीं लाते।" 6/12

(6) "और जो शख्स अल्लाह पर झूठा बुहतान (आरोप) बाँधे या असकी आयतो को झुठलाये उससे बढ़कर जालिम कौन है। जालिमों को किसी तरह सफलता नहीं।" 6/21 "और जबकि हम इन सबको (अपने रुबरु) जमा करेगें फिर उन लोगों से जो (हमारे साथ) दूसरो को शरीक (पूज्य) ठहराते थे पूछेगें कि कहाँ हैं तुम्हारे वह शरीक (देवी-देवता) जिनका तुम

शरीक खुदाई होने का दावा करते थे।" 6/22

(7) "और यह लोग इस (कुरान) से दूसरों को रोकते हैं और (खुद भी) उससे भागते हैं और (ऐसी करनी से) वह अपनी जानों को ही तबाह करते हैं और इसको समझ नहीं पाते।" 6/26

(8) "और (ऐ पैगम्बर) काश तुम देखते जब (दोजख की) आग के सामने खड़े किये जायेगें तो (अपनी दर्दनाक दशा देखकर) कहेगें कि हाय, अगर अल्लाह की मेहरबानी से हम फिर दुनियाँ मे भेजे जायं तो अपने परवरदिगार की आयतों को न झुठलाएँ और ईमानवालो मे से हों।" 6/27

(9) "और (काफ़िर यह भी) कहते हैं कि (यह) जो हमारी दुनियाँ की जिन्दगी है इसके अलावा और किसी तरह की जिन्दगी नहीं। और (मरने के बाद) हमको (फिर कब्र से) नहीं उठाना।" 6/29 "और (ऐ पैगम्बर) अगर तू देखे जबकि वह लोग अपने परवरदिगार के सामने लाकर खड़े किये जायेगें और जब वह (इनसे) पूछेगा क्या यह अब तुम्हारा (कब्र से उठना) सच नहीं, जबाब देगें हमारे परवरदिगार की कसम जरूर सच है (इस पर अल्लाह) फरमायेगा कि अपने इन्कारी (काफ़िर) होने का मजा चखो।" 6/30

19 5 इस्लाम में कयामत पर विश्वास करना कितना जरुरी है और उसे न मानने का फल कितना भयानक है वह ये आगे की आयतें ज्ञात कराती हैं :

(1) "जिन लोगों ने (कयामत के दिन) अल्लाह के सामने पेश होने को झूठा जाना वह लोग घाटे में रहे, (यह उनका इन्कार बस) वहीं तक (है जब तक कयामत की नौबत नहीं आती) लेकिन जब एकदम कयामत इन पर आ मोजूद होगी तो चिल्ला उठेगें कि अफसोस हमने दुनिया में (कयामत पर यकीन न लाकर) कैसी चूक की और अपने गुनाहों के बोझ अपनी पीठ पर लादे (भुगत रहे) होगें।" 6/31

(2) "फिर आयत 6/33, 6/34 और 6/35 में अल्लाह हजरत मोहम्मद को ढाढस बँधाते हैं कि यदि काफ़िर तुम्हारी बात नहीं सुनते और तुमको दुःख देने वाली कटु बात सुनाते रहते हैं, और कयामत को नहीं मानते तो ये काफ़िर "वही मानते हैं जो (मानने की नीयत) से सुनते हैं और मुर्दों को अल्लाह (कयामत के दिन ही) उठायेगा फिर उसी (अल्लाह की अदालत) की तरफ जायेगें।"6/36

(3) "और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं वे अन्धेरे में गूँगे और बहरे हैं।" 6/39

(4) "और जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और दुनिया की जिन्दगानी में मरते हैं, ऐसे लोगों को छोड़ो। .....इनको कुफ्र करने के बदले में पीने के लिए खौलता हुआ पानी और दुःखदायी मार होगी।" 6/70 ईमान न लाने वालों को सख्त फटकार देते हुए कुरान शरीफ़ में कहा गया है "और हम उनके दिलों और उनकी आँखों को उलट देगें। (ठीक उसी तरह पर) जैसे अब से पहले (कुरान पर) जो ईमान नहीं लाये थे और हम इनको छोड़ देगें कि अपनी (सरकशी की) मौज में पड़े भटका करें।" 6/110 ये काफ़िर अंधकार में भटकने वाले हैं वह ईमानवालों के बराबर नहीं हो सकते। और अल्लाह स्वयं इनको खड़ा करता है ताकि वह विभिन्न जातियों में षड्यंत्र करते रहें :

"और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े-बड़े अपराधी खड़े किये ताकि वहाँ षड्यंत्र

करते रहें। और जो षड़यंत्र वह करते हैं अपनी ही जानों के लिए करते हैं और (वे उसको) समझते नहीं।" 5/123 "......और जो लोग ईमान नहीं लाते उनको इसी तरह अल्लाह गदगी मे डाले रखता हैं।" 6/125 क्या खाना हलाल है और क्या हराम इसकी चर्चा आयत 6/145 और 6/146 में हुई हैं किंतु इसे न मानने वाले भी काफ़िर हैं : "इस पर भी यह लोग तुमको झुठलावें तो कहो कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ी समाई वाला दयालु है (इसलिए अब तक बचे हो) लेकिन यह समझे रहो कि अपराधियों से उनकी सजा टलती नहीं।" 6/147 अल्लाह की तरफ से कुरान शरीफ़ उतरने के बाद उसे न मानना और उसे झुठलाना बहुत बड़ा कुफ्र है और इसकी सजा बड़ी दुःखदायी हैं :

19 6 (1) "तो अब तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ से (तुम्हारे पास) खुली दलील और हिदायत और मेहरबानी आचुकी है। तो उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाये और उससे कतराये। और जो लोग हमारी आयतों से कतराते हैं हम उनके कतराने के बदले में उनकों बड़ी दुःखदायी सजा देगें।" 6/157

(2) "यह लोग क्या इसी बात की राह देख रहे हैं कि फरिश्ते इनके पास आये या तुम्हारा पालनकर्ता आये या तुम्हारे परवरदिगार का कोई चमत्कार जाहिर हो। जिस दिन तुम्हारे परवरदिगार का कोई चमत्कार जाहिर होगा तो जो शख्स उससे पहले ईमान नहीं लाया, या अपने ईमान में उसने कुछ नेकी न की थी, उसका अब ईमान लाना उसके कुछ भी काम न आयेगा तो (ऐ नबी) कहो कि राह देखो, हम भी राह देखते हैं (उस कयामत की जब तुमको सिवा अजाब भुगतने के और चारा न रह जायेगा)।" 6/158

सूरः 5 और 6 की काफ़िर संबंधी अन्य आयतें

5/104, 6/4, 5, 11, 12, 12, 23, 24, 25, 28, 6/65 से 69, 109, 111, 112, 113, 122, 124, 128, 129, 6/130, 147 से 150।

सूरः 7

19 7 सातवे सूरः की आयतें 7/37, 38, 39, 40, और 41 ये पाँच आयतें काफ़िरों की नरक मे यातनाओं का विशेष रुप से चित्रण करती है, और यह भी बतलाती हैं कि नरक की आग मे जलते काफ़िर किस प्रकार अल्लाह की सजा की बाबत बात करते हैं।

(1) "फिर उससे बढ़कर कौन जालिम होगा जो अल्लाह पर झूठे जंजाल बांधे या असकी आयतों को झुठलाये। यह लोग हैं जिनको लिखे के मुताबिक उनका हिस्सा उनको मिलेगा यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) उनकी रुहें निकालने के लिए मौजूद होगे तो (उनसे) पूछेगें कि (कहो) अब वह कहाँ है (तुम्हारे पूजित) जिनको तुम अल्लाह के अलावा पुकारा करते थे तो वह जबाब देंगे कि वह तो हमसे (बेशक) गायब हो गये, और (कायल होकर) अपने खिलाफ आप गवाही देंगे कि वह काफ़िर थे।" 7/37

(2) "(तो अल्लाह) फर्मायेगा कि (गुनहगार) जिन्नों और इन्सानों के गिरोहों के साथ जो तुमसे पहले हो चुके हैं आग (दोजख) में जा दाखिल हो। जब एक गिरोह नरक में दाखिल होगा तो अपने से पहले) गिरोह पर लानत करेगा यहाँ तक कि जब सबके सब नरक में जमा

होंगे तो उनमें से बाद वाले गिरोह अपने से पहले वाले गिरोह के हक में कहेगा कि ऐ हमारे परवरदिगार! इन्हीं लोगों ने हमको गुमराह किया था, सो हमारे मुकाबले तू इनको (दोजख की) आग की दूनी सजा दे। (अल्लाह) कहेगा कि तुम सबको दूनी सजा (मुनासिब है) हालांकि तुमको पूरी खबर मालूम नहीं।" 7/38

(3) "और (यह सुनकर) उनमें के पहले लोग बाद वाले लोगों से कहेंगे अब तो तुमको हमारे मुकाबले में कोई तरजीह (विशेष छूट) नहीं रही, तो तुम भी अपने किये की सजा भुगतो।" 7/39

(4) "बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे पेंठ दिखलाई तो उनके लिए न तो आसमान के दरवाजे खोले जायेंगे और न (वे) जन्नत में दाखिल होने पायेंगे जब तक ऊँट सुई के नाक में से न निकलें। और अपराधियों को हम ऐसे ही सजा दिया करते है।" 7/40

(5) "कि उनके लिए (दोजख मे) आग का बिछौना होगा और उनके ऊपर से आग का ही ओढ़ना। और अन्यायियों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं।" 7/41

19.8 सूरः सात की ही आगे की पाँच आयतों में हजरत मुहम्मद के संदेश न मानने वाले काफ़िरों को नरक की सजा और उन पर की गई लानत इस प्रकार है :

(1) "जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया (हम) उन्हें इस तरह पर कि उनको पता भी न चले धीरे-धीरे (दोजख की तरफ) ले जायेंगे।" 7/182

(2) "और मैं उनको (ससार में) मोहलत दूँगा बेशक मेरी तदबीर पक्की है।" 7/183

(3) "क्या इन लोगों ने ख्याल नहीं किया इनके साथी को (यानी इन्हीं लोगों में के ही मुहम्मद साहब को) किसी तरह का जुनून (पागलपन) तो है नहीं। वह तो बस साफ अल्लाह के अजाब से सचेत करने वाला है।" 7/184

(4) "क्या (इन लोगों) ने आसमानों और जमीन की सलतनत में और अल्लाह की पैदा की हुई चीजों पर नजर नहीं की और न इस बात पर (ध्यान देते हैं) कि आश्चर्य नहीं कि इनकी मौत की घड़ी आ लगी हो। तो अब इस (रसूल की चेतावनी) के बाद और कौन सी बात हो सकती है जिस पर ये ईमान लावेंगें।" 7/185

(5) "जिनको अल्लाह गुमराह करे तो फिर उसको कोई भी राह दिखलानेवाला नहीं। ओर वह उनको छोड़े रखता है कि अपनी सरकशी में भटका करें।" 7/186

सूरः 8

19.9 सूरः 8 काफ़िर और जिहाद संबंधित आयतों की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण है। इसमें जिहाद में पराजित काफ़िरों का खुलेआम कत्ल या खूंरेजी का स्पष्टतम आदेश है ताकि केवल अल्लाह का ही दीन रह जाय। इसी सूरः में अल्लाह ने हजरत मुहम्मद को यह आदेश दिया है पराजित काफ़िरों को कैदी न बनाकर कत्ल कर दिया जाय। इस अध्याय (सूरः) में माले गनीमत यानी पराजित काफ़िरों की लूट की सम्पत्ति के जिसमें उनके कत्ल से बचे आदमी तथा उनकी औरतें और बच्चे शामिल हैं बँटवारे की

व्यवस्था है। इस 8 वें सूर में ही बद्र की लड़ाई की चर्चा है जो इस्लाम के इतिहास में उसके विस्तार की दृष्टि से प्रथम निर्णायक युद्ध था। इस युद्ध में अल्लाह ने अपने हजारों फरिश्तों तथा अपने अन्य करिश्मों से ईमानवालों की भारी मदद की ताकि काफ़िरों की पूरी तबाही हो जायँ और वे जड़ से ही नष्ट हो जाँय। जैसा कि इस अध्याय की आयत 7 के फुटनोट में (शेरवानी संस्करण) कहा गया है–

"बद्र के युद्ध की भूमिका इस प्रकार है। मक्का के काफ़िर कुरैशों के दबाव के कारण हजरत मुहम्मद को ईमानवालों के साथ मदीना हिजरत (पलायन) करना पड़ा। मक्कावालों का जोर बहुत बढ़ा हुआ था और मुसलमान उनकी तरफ से भारी ख़तरे में रह रहे थे। इस बार मक्कावालों का एक बड़ा व्यापारी काफिला मदीने के नजदीक से गुजर रहा था। ईमानवालो ने तय किया कि इस काफिले को काबू करके लूट लिया जाय। उधर करेशों को इसकी भनक पड गई और वहाँ से एक बड़ी फौज रवाना हो गई। हजरत मुहम्मद को खुदाई पैगाम मिला कि इन दो में से कोई एक ही तुम्हारे काबू आ सकता है। मुहम्मद साहब पर ईमानवालों का जोर था कि व्यापारी काफिले पर हमला कर काबू कर लूट लिया जाये। परन्तु इस राय के विरुद्ध हजरत मुहम्मद ने मक्कावालों की फौज से युद्ध करने का निर्णय लिया। यह लड़ाई बद्र मे हुई जहाँ मक्कावाले बुरी तरह से परास्त हुए, और यहीं से हजरत मुहम्मद के मुकाबले मे उनकी शक्ति का पतन शुरु हुआ। मुसलमानों को युद्ध में विजय के साथ माले गनीमत तथा व्यापारी काफिला भी हाथ लगा।"

20 0 काफ़िरों के प्रति इस्लाम के दृष्टिकोण को ठीक से समझने के लिए सूरः 8 की संबंधित आयते नीचें दे रहे हैं :

इस सूरः की पहली ही आयत गनीमत के माल से शुरु होती है, कारण यह था कि बद्र की लड़ाई के तुरन्त बाद गनीमत के माल के बँटवारे को लेकर मुसलमानों में कुछ मनमुटाव हो गया था। इस मौके पर यह आयत अल्लाह के इस हुक्म को लेकर उतरी कि गनीमत का माल अल्लाह का और उसके पैगम्बर का है।

(1) "(ऐ पैगम्बर! मुसलमान सिपाही) तुमसे गनीमत के माल का हुक्म पूछते हैं, तो कह दो कि गनीमत का माल तो अल्लाह का है, और पैगम्बर का है, तो तुम लोग अल्लाह से डरो और आपस में मेल रखो। और अगर तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा पर चलो।" 8/1

(2) "और जान लो जो चीज तुम गनीमत में पाओ उसका पाँचवा भाग अल्लाह के लिए और पैगम्बर के और संबंधियों के, अनाथों के और गरीबों और मुसाफिरों के लिए है....।" 8/41

जंग बद्र का वर्णन आयत पाँच से इस प्रकार शुरु होता है :

"जैसे तुम्हारे परवरदिगार ने (बद्र की जंग के मौके पर) तुम्हारे घर मदीने से तुम्हें रवाना किया दुरुस्त काम के लिए, और मुसलमानों का एक गिरोह (इस पर) राजी न था।" 8/5 "कि वह लोग (सच्चाई) जाहिर होने के बाद (भी) तुम्हारे साथ सच बात में झगड़ा करने लगे। गोया उनको मौत की तरफ ढकेला जाता हो और वह मौत को आँखों देख रहे हों " 8/6 "और (यह वह वक्त था जब अल्लाह तुम (मुसलमानों) से वादा करता था कि मक्का के मुशरिकों की

दो जमातों में से कोई सी एक तुम्हारे हाथ आ जायेगी और तुम चाहते थे कि (जो लड़ने के सामान से लैस न हो और माल से लदा है) वह निष्कण्टक (काफिला) तुम्हारे हाथ आ जाय और अल्लाह की मर्जी यह थी कि अपने हुक्म से हक को हक कर दिखाये और काफ़िरों को जड़ काटकर फेंक दे।" 8/7 "ताकि सच को सच और झूठ को झूठ कर दिखावे। चाहे गुनहगारों को भले ही बुरा लगे।" 8/8 "(यह वह वक्त था कि) जब तुम अपने परवरदिगार की ओर फर्याद करते थे तो उसने तुम्हारी पुकार सुन ली (और फरमाया) कि (सब्र रखो) मैं लगातार हजार फरिश्तों से तुम्हारी सहायता करूँगा।" 8/9, "और यह (फरिश्तों की सहायता) जो अल्लाह ने की तो सिफ्र (तुमको) खुश करने को की ताकि तुम्हारे दिल (उनकी वजह) से चैन पावें। वर्ना मदद तो अल्लाह की ही तरफ से है। बेशक अल्लाह बड़ा जबरदस्त और बड़ा हिकमतवाला है।" 8/10

"(जंगे बद्र के मौके पर यह वह समय था) जबकि अल्लाह ने अपनी तरफ से (तुम्हारी) तस्कीन के लिए तुम पर औंघ को उतारा और (दुश्मनों का तालाब पर कब्ज़ः हो जाने पर) आसमान से तुम पर पानी बरसाया ताकि उसके जरिए से तुमको पाक करे और शैतानी गदगी (व बेचैनी) को तुमसे दूर कर दे, और ताकि तुम्हारे (टूट रहे) दिलों को साहस बंधा दे और (उसी के जरिए जंग में) तुम्हारे पाँव जमाये रखे।" 8/11 "(और यह वह वक्त था) जबकि तुम्हारा परवरदिगार फरिश्तों को आज्ञा दे रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ तुम मुसलमानों को जमाये रखो। मैं जल्द काफ़िरों के दिलों में डर डाल दूँगा। बस तुम इनकी गरदने मारों और इनके पोर-पोर को मारो।" 8/12 "यह इस बात की सजा है कि उन्होंने अल्लाह और उनके पैगम्बर का विरोध किया, और जो अल्लाह और उसके पैगम्बर का विरोध करेगा तो अल्लाह की मार बड़ी कठिन है।" 8/13 "(काफ़िरो) यह तो तुम (अभी) चखो और जान लो कि आखिरत में काफ़िरों को दोजख की आग की सजा है।" 8/14 "ऐ ईमानवालों जब काफिरों से मैदाने जंग में तुम्हारा मुकाबला हो तो उनको पीठ न दिखाना।" 8/15 "और जो शख्स ऐसे मौके पर लड़ाई के हुनर के कारण या अपनी फौज मे जा मिलने की गरज से (पीठ देने के अलावा) काफ़िरों को पीठ दिखलायेगा वह अल्लाह के कोप में आ गया, और उसका ठिकाना दोजख है, और वह कैसी बुरी जगह है।" 8/16

20.2 "बस काफ़िरों को तुमने कत्ल नहीं किया बल्कि उनको अल्लाह ने कत्ल किया। और जब तुमने (काफ़िरों पर) मुठ्ठी से खाक फेंकी तो तुमने खाक नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने खाक फेंकी और उससे गरज यह थी कि ईमानवालों को अपनी तरफ से खूब (इहसानों से) आजमावें....।" 8/17 "यह तो हो चुका और अब जान लो कि अल्लाह को काफ़िरों की तदबीरों को कमजोर कर देना मंजूर है।" 8/18 "तुम जो माँगते थे, वह फैसला तुम्हारे सामने (जीत की शक्ल में) आ गया।" 8/19 "ऐ ईमानवालो अल्लाह के हुक्म पर चलो और उसके पैगम्बर के हुक्म पर चलो और उसका हुक्म सुन लेने पर उससे मुँह न मोड़ो।" 8/20

"आयत 8/5 से लेकर 8/20 तक से यह स्पष्ट होता है कि कुरान शरीफ़ के अनुसार काफ़िरों के विरुद्ध युद्ध की योजना आदि बनाना युद्ध में ईमानवालों को अपनी सहायता से जीत दिलवाना और काफ़िरों की हर तरह से हत्या करने का कार्य अल्लाह द्वारा ही निर्देशित

है और उन्हें अल्लाह ही करता है। वैसे जंगे बद्र का और विस्तारपूर्वक विवेचन आगे की आयतों 8/42, 43, और 44 में आया है। "यह काफ़िर अपने माल खर्च करते हैं कि अल्लाह के रास्ते से रोकें। तो अभी और खर्च करेंगे...और आखिर हार जायेंगे।" 8/36; "ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग करे और नापाक एक दूसरे के ऊपर रखकर उन सबका ढेर लगाये, फिर उस (ढेर याने सब) को दोजख में झोंक दे....।" 8/37 "(ऐ पैगम्बर) काफिरो से कह दो कि अगर कुफ्र से बाज आ जायँ तो उनके पिछले गुनाह माफ कर दिये जायेंगे. ।" 8/38 **"और काफ़िरों से लड़ते रहो यहाँ तक कि फसाद (यानी शिर्क) बाकी न रहें, सब अल्लाह ही का दीन हो जाय।** बस अगर वह बाज आवें तो जो कुछ यह लोग करेंगे अल्लाह उसको देखने वाला है।" 8/39 "और अगर वह न मानें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा हामी है और कैसा अच्छा हामी और वह कैसा अच्छा मददगार है।" 8/40

20 3 "इसी सूरः 8 की आगे की आयतें काफ़िरों की सजा उनसे किये गए अहद या इकरारनामों और काफ़िरों पर जिहाद द्वारा दबाव रखने से संबंधित हैं और कुरान शरीफ़ के इस अध्याय में अल्लाह का यह आदेश है (8/67) कि पैगम्बर को यह उचित नहीं कि कैद मे आये काफ़िरों को फिरौती लेकर छोड़ दे। उनकी हर प्रकार से खूँरेजी या उनका खून बहाकर हत्या करना ही ईमानवालों का परम आवश्यक कार्य है :

(1) "और (ऐ पैगम्बर) अगर तुम देखते जबकि फरिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं। उनके मुहों और पीठों पर मारते जाते हैं और (कहते जाते हैं कि) लो दोजख की सजा चखो।" 8/50

इस आयत से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम में फरिश्ते कोई देवता सरीखी ऊँची योनि के नहीं हैं। ये पुराणों में वर्णित भयानक यमदूतों से मिलते जुलते हैं, जो पापी व्यक्ति को उनकी आयु पूरी होने पर ले जाते हैं और उनके कर्मों के अनुसार यमराज द्वारा दण्डित होने पर नरक में डालकर उनके पाप भोगों की समाप्ति तक यातना देते हैं।

(2) "जैसी हालत फिरऔन और उन लोगों की हुई जो उनसे पहले थे कि (उन्होंने) अपने पालनकर्ता की आयतो को झुठलाया तो हमने उनके पापों के बदले उनको हलाक कर दिया और फिरऔन के लोगों को डुबो दिया। वह सबके सब जालिम थे।" 8/54 **"और अल्लाह के नजदीक सबसे खराब वह जीव हैं जो कुफ्र करते हैं, फिर वह ईमान नहीं लाते।"** 8/55

(1) "जिनसे तुमने (सुलह का) अहद किया फिर उनमें से अपने अहद को हर बार से तोडते हैं और (अल्लाह के अजाब से) नहीं डरते।" 8/56

(2) "तो कभी अगर तुम उनको लड़ाई में पाओ तो उन पर ऐसा जोर डालो कि जो लोग उनकी हिमायत पर हैं (इनको भागते देखकर) वह भी भाग खड़े हों, शायद यह लोग सबक लें।" 8/57

(3) **"और अगर तुमको किसी जाति की तरफ से दगा का भय हो तो बराबरी का बर्ताव करो (यानी उनसे की हुई अहद उन्हीं की तरफ उलट दो) तुम्हारा अहद तोड़ देना अहद से हटना न माना जायगा अल्लाह दगाबाजों को पसंद नहीं करता।"** 8/58 **"और काफिर यह न समझें कि वह भाग कर (हमेशा के लिए बच) निकले वह कदापि (हमको थका नहीं सकते "** 8/59 और काफ़िरों पर जोर बँधाए रखने का तरीका बतलाते

हुए अल्लाह कहते हैं : "और जोर (शक्ति संचय) से और घोड़ों की तैयारी से जहाँ तक तुमसे हो सके, काफ़िरों के मुकाबले के लिए संरजाम किये रहो कि ऐसा करने से अल्लाह के दुश्मनों पर और अपने दुश्मनों पर और उनके सिवाय दूसरों पर भी जिनको तुम नहीं जानते मगर अल्लाह उनसे जानकार है अपनी धाक बैठाये रखोगे और (इन तैयारियों में व जैसे भी) अल्लाह की राह में जो कुछ भी खर्च करोगें वह तुमको पूरा मिलेगा और तुम्हारा हक बाकी न रहेगा।" 8/60

इस आयत से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह के अनुसार इस्लाम को न मानने वाले स्वयं अल्लाह के भी दुश्मन हैं।

20.4 (1) "ऐ पैगम्बर, ईमानवालों को जिहाद का शौक दिलाओ। अगर तुममें से जमे रहने वाले बीस शख्स भी होगें तो दो सौ पर भारी बैठेगें। अगर तुममें से सौ होगे तो हजार काफ़िरों पर भारी बैठेगें क्योंकि यह (काफ़िर) ऐसे लोग हैं जो समझ नही रखते।" 8/65

(2) "अब अल्लाह ने तुम पर (से अपने हुक्म का) बोझ हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुममें (अभी) कमजोरी है तो (इस हालत में) अगर तुममें से जमें रहने वाले सौ होगे तो दो सौ पर भारी बैठेंगें और अगर तुममें से जमे रहने वाले हजार होगें तो अल्लाह के हुक्म से वह दो हजार पर भारी बैठेगें। और अल्लाह उन लोगों का साथ देता है जो जमे रहते हैं।" 8/66

(1) "जब तक अच्छी तरह (काफिरों की) खूँरेजी न कर ले पैगम्बर को मुनासिब नहीं कि उसके पास कैदियों का जमाव हो, तुम तो (बदले में धन लेकर कैदियों को छोडने और यों) संसार के माल असबाब चाहने वाले हो और अल्लाह (तुम्हारे हाथों दीन को कायम करवा कर तुम्हारे लिए आखिरत) की चीजें देना चाहता है और अल्लाह बडा हिकमतवाला है।" 8/67 इस प्रकार यह अल्लाह ही का हुक्म है कि काफ़िरों को कैद में लेने के बजाय उनको कत्ल कर दिया जाय और यह अल्लाह के अनुसार परलोक के लिए बड़ा पुण्यदायी कार्य है। और गिरफ्तार काफ़िर के बदले फिदय यानी फिरौती का धन लेना अल्लाह की निगाह में कितना बड़ा अपराध है यह बतलाते हुए कुरान शरीफ कहते हैं :

(2) "अगर अल्लाह के यहाँ से (फिदय का) हुक्म-तहरीरी पहले न हो चुका होता तो जो कुछ तुमने (फिदय) लिया है उस (के बदले) में अवश्य तुमको सख्त सजा मिलती।" (8/68)

(3) "तो जो कुछ तुमको गनीमत में हाथ लगा है उसको हलाल समझकर खाओ और अल्लाह का भय रखो। बेशक अल्लाह बड़ा माफ करने वाला बेहद मेहरबान है।" 8/69

(1) "जो लोग ईमान लाये और उन्होंने हिजरत (यानी देश त्याग) किया, और अल्लाह के रास्ते में अपनी जान माल से लड़े और जिन लोगों (यानी अंसारों) ने देश त्याग करने वालों को जगह दी और मदद की यह लोग आपस में एक दूसरे के वारिस हैं और जो लोग ईमान तो ले आये लेकिन देश त्याग नहीं किया तो तुममें और उनमें एक एक दूसरे का वारिस होने का संबंध नहीं जब तक देश त्यागकर तुममें न आ मिलें। हाँ, अगर दीन के बारे में तुमसे मदद चाहे तो तुमको मदद करनी लाजिम है. मगर ऐसों के मुकाबले में नहीं कि तुममें और जिनमें अल्लाह की) अहद हो " 8/72

(2) "और जो लोग ईमान लाये, उन्होनें देश त्याग किया और अल्लाह के रास्ते मे जिहाद किया ओर जिन (अन्सार) लोगों के जगह दी और मदद की वही पक्के ईमानवाले है इनके लिए (आखिरत में) बख्शीश और इज्जत की रोटी हैं।" 8/74
इस प्रकार इस्लाम की राह में जिहाद करना एक पक्का ईमानवाले होने का प्रबलतम सबूत है।

आठवें अध्याय सूरः की काफ़िर संबंधी अन्य आयतें :

8/26 से 33, 41 से 49, 8/51, 53, 61 से 64, 70, 71।

सूरः 9

205 सूरः 9 की 129 आयतें काफ़िरों और मुनाफिकों (कपटी यानी ऊपर से ईमानवाले बनते हैं पर अन्दर ही अन्दर उसके विरोधी) के विरुद्ध जिहाद से संबंधित हैं। उनके विरुद्ध हर कदम पर घात लगाकर युद्ध करने और उनको कत्ल करने का अल्लाह का हुक्म है। जिजिया लगाने का आदेश भी इसी अध्याय में है। इसी अध्याय में अल्लाह ने हजरत मुहम्मद को आदेश दिया है कि इन मुनाफिकों के जनाजे में वे नमाज न पढ़ें और न ही इस्लाम को नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से बनवाई इनकी मस्जिदों में खड़े भी हों।

अल्लाह, जिहाद और इस्लाम की राह में खर्च करने का आदेश इस पूरे अध्याय में बार-बार आता है। जिहाद से जी चुराने को धिक्कारा गया है, आदि आदि। नीचे हम नौवें सूर की इन आयतों से पाठकों को परिचित कराते हैं।

(1) "जिन मुशरिकों के साथ तुम (मुसलमानों) ने (सुलह का) अहद कर रखा था अल्लाह और उसके पैगम्बर की तरफ से उनको अब साफ जबाब है।" 9/1 इस पहली आयत मे काफ़िर को जिनके साथ शान्ति का सुलहनामा है स्वयं अल्लाह और उनके पैगम्बर हजरत मुहम्मद की ओर से साफ संदेश भेजा जारहा है और आगे की चार आयतों में दिये गए सदेश का सारांश यह हे कि यदि उन्होनें अपने कुफ्र पर तौबा नहीं की तो अरबवालों में मान्य शान्ति के चार महीनों के बाद इन काफ़िरों के ऊपर जिहाद बोला जाय और उन्हें कत्ल किया जाय।

(2) "तो (ऐ मुशरिको अमन के) चार महीने (जीकाद, जिलहिज्ज, मुहर्रम, और रजब) मुल्क में चल फिर लो और जाने रहो कि तुम अल्लाह को डरा नहीं सकोगे और अल्लाह काफ़िरों को (हमेशा) जिल्लत देता है।" 9/2

(3) "और हज्जे अकबर (बड़े हज्ज) के दिन अल्लाह और उसके पैगम्बर की तरफ से लोगों को मुनादी की जाती है कि अल्लाह और उसका पैगम्बर मुशरिकों से अलग हैं। पस अगर तुम तौबः करो तो यह तुम्हारे लिए भला है और अगर मुँह मोड़ो तो जान रखो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकोंगे और (ऐ पैगम्बर) काफ़िरों को दुखदाई सजा की खुशखबरी सुना दो।" 9/3

(4) "फिर जब (मियादवाले) चार अदब के महीने बीत जावें तो उन मुशरिकों को जहाँ पाओ कत्ल करो और उनको गिरफ्तार करो, उनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर वह लोग (कुफ्र) से तौबा करें और जकात दें तो उनका रास्ता छोड़ दो बेशक अल्लाह माफ करने वाला बेहद मेहरबान है" 9/5

20.6 आयत 6 में पनाह (शरण) माँगने वाले काफ़िरों को पनाह देने का आदेश है, "यहाँ तक कि अल्लाह का कलाम सुन ले। फिर उसको वहाँ पहुंचा दो जहाँ उसको भय न हो।" 9/6 यानी अगर काफ़िर जब कलमा पढ़कर मुसलमान हो जाय तो उसको सुरक्षित स्थान में भेज दो। आगे की आयतों 7 से 11 में मुशरिकों यानी काफ़िरों के अहद तथा इकरार पर शक प्रकट किया गया है क्योंकि इन काफ़िरों में "जियादातर नाफ़र्मान (अवज्ञाकारी) ही हैं।" 9/6

(1) "और अगर यह लोग अहद करने के बाद अपने अहद को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में तानाजनी (आक्षेप) करने लगें तो तुम कुफ्र के सरगनाओं से लड़ो बेशक उनकी कसमों की कीमत कुछ नहीं शायद यह लोग मान जावें।" 9/12 यानी ये इस्लाम कबूल कर लें।

(2) "(तुम) इन लोगों से क्यों न लड़ो जिन्होंने अपनी कसमों को तोड़ डाला और पैगम्बरों को निकाल देने का कस्द किया, और तुमसे छेड़खानी भी पहली की क्या तुम इन लोगों से डरते हो बस अगर तुम ईमान रखते हो तो तुमको अल्लाह ही से जियादः डरना चाहिए।" 9/13

(3) "(ऐ ईमानवालो) इन लोगों से लड़ो यहाँ तक कि अल्लाह तुम्हारे ही हाथों इनको सजा दे इनको जलील करे, और इन पर तुमको जीत दे, और कितने ही ईमानवालों के दिलों को ठण्डा करे।" 9/14

(4) "(और ऐ ईमानवालो) क्या तुमने ऐसा समझ रखा है कि यों ही सस्ते छूट जाओगे और अभी अल्लाह ने उन लोगों को (आजमायश में) देखा तक नहीं जो तुममें से जिहाद करते हैं और अल्लाह और उसके पैगम्बर और ईमानवालों को छोड़कर किसी को अपना दिली दोस्त नहीं बनाते......।" 9/16

20.7 इन आयतों से स्पष्ट है कि स्वयं अल्लाह ही की इच्छा और आज्ञा है कि मुसलमान काफ़िरों से लड़े और अल्लाह उन्हें जिताए और काफ़िरों को हर तरह से जलील करे। इन आयतों में और अभी तक दी गई काफ़िर संबंधी आयतों में यह कहीं भी कल्पना नहीं है कि अल्लाह काफ़िरों के हृदय में भी निवास करता है। अल्लाह का सरोकार केवल अपने मानने वालों तक ही सीमित है। इनसे विपरीत जैसा कि पहले दर्शाया जा चुका है ग्रंथ साहिबजी के अनुसार परमात्मा बिना भेदभाव के प्रत्येक प्राणी में समाया हुआ है और प्रत्येक प्राणी का परम कल्याणकर्ता है। "जो लोग ईमान लाये और उन्होंने (हिजरत में) देश त्याग किया, और अपने जान व माल से अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ (इनका) बड़ा दर्जा है। और यही (हैं जिनकी जिन्दगी) सफल है।" 9/20, "इनका परवरदिगार इनको अपनी कृपा और रजामन्दी और ऐसे बागों का मंगल समाचार देता है जिनमें इनको हमेशा का चैन मिलेगा।" 9/21, "उन (बागों) में हमेशा रहेंगे, यकीनन अल्लाह के यहाँ बड़ा बदला है।" 9/22

"ऐ ईमानवालो, अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुकाबले में कुफ्र को प्यारा समझें तो उनको अपना समझकर न पकड़ो और जो तुममें से ऐसे (बाप भाइयों) के साथ मित्रता (का संबंध) रखेंगे तो यही लोग जालिम होंगे।" 9/23 "ऐ मुसलमानो, अल्लाह बहुत से मौकों पर तुम्हारी मदद कर चुका है और (खासकर) हुनैन (की लड़ाई) के दिन जब कि तुम (अपने लश्कर की) अधिकता पर घमण्ड में फूल उठे थे फिर तुम पीठ फेरकर भाग निकले "

9/25 "फिर अल्लाह ने अपने पैगम्बर पर और ईमानवालों पर अपनी शान्ति उतारी, और ऐसी फौजें भेजीं जो तुमको दिखलाई नहीं पड़ती थी, और काफ़िरों को (बड़ी सख्त) मार दी। और काफ़िरों की यही सजा है।" 9/26

20 8 इस आयत में काफ़िरों और उनसे युद्ध करने का आदेश देते हुए अल्लाह कहते है "ऐसे किताबवाले जो न अल्लाह पर ईमान लाते और न आखिरत के दिन पर, और न अल्लाह और उसके पैगम्बर की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं, और न सच्चे दीन को मानते हे, उनसे लड़ो यहाँ तक कि (अपने) हाथों से जिजिया दें और जलील होवें।" 9/29 "....ओर अल्लाह काफ़िरों की कौम को हिदायत नहीं दिया करता।" 9/37

20 9 सूरः 9 की 38 से 59 की आयतें प्रत्यक्ष रुप से जिहाद से संबंधित हैं। इन आयतों मे अल्लाह ने ईमानवालों पर जिहाद करने का जोर डाला है और उन्हें जिहाद की महत्ता बतलाई है। इन्हीं आयतों में अल्लाह ने हजरत मुहम्मद से अपनी नाखुशी जाहिर की है कि उन्होंने कुछ लोगों को जिहाद के युद्ध में शामिल होने से छुट्टी दे दी। इन आयतो मे ईमानवालों को अल्लाह का हुक्म है कि पैगम्बर के बुलाने पर जिहाद के युद्ध में शामिल होने के लिए जैसे भी हथियार मिले उनको लेकर निकल खड़े हुआ करो। इन आयतों में यह भी हुक्म है कि अल्लाह की राह में यानी जिहाद के युद्ध में ईमानवालों को केवल जान ही नही लगानी है बल्कि खुशदिली से अपना माल भी खर्च करना है :

(1) "ऐ ईमानवालो, तुमको क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में जिहाद के लिए निकलो तो तुम जमीन पर ढेर हुए जाते हो, क्या आखिरत छोडकर दुनिया की जिन्दगी पर रीझे हो....।" 9/38

(2) "अगर तुम बुलाये जाने पर भी जिहाद पर न निकलोगे तो अल्लाह तुमको बड़ी दुखदाई मार देगा, और तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को रसूल की पैरवी में लाकर मौजूद करेगा, और तुम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह हर चीज पर ताकतवर है।" 9/39

(3) "अगर तुम उस (पैगम्बर की) मदद न करोगे तो (क्या बिगड़ जायेगा)। यकीनन अल्लाह ने अपने पैगम्बर की मदद उस वक्त भी की थी जब काफ़िरों ने उनको मक्के से निकाल बाहर किया था.... फिर अल्लाह ने पैगम्बर पर अपनी तरफ से सब्र उतारा और उनको ऐसी (फरिश्तों की) फौज से मदद दी जिनको तुम लोग न देख सके, और काफ़िरों की बात नीची की, और अल्लाह ही की बात हमेशा ऊँची है। और अल्लाह बड़ा जबरदस्त और बडा हिकमतवाला है।" 9/40

(4) "हल्के और बोझिल (हथियार कम या जियादः जिस हालत में भी हों पैगम्बर के बुलाने पर) निकल खड़े हुआ करो और अपनी जान व माल से अल्लाह की राह में जिहाद करो। अगर तुम समझनेवाले हो तो यह तुम्हारे हक में बेहतर है।" 9/41

(5) "अगर आसानी से फायदा मिलने वाला होता.....तो (ये लोग) तुम्हारे साथ चल पडने लेकिन उनको तो सफर कठिन दिखाई दिया और अब (चूँकि खतरा निकल गया है) तो अल्लाह की कसम खा-खा कहेंगे कि अगर हमसे बन पड़ता तो हम जरुर तुम्हारे साथ (जिहाद

पर) निकलते। ....और अल्लाह को मालूम है कि यह लोग निःसन्देह झूठे हैं। 9/42

(6) "(ऐ मुहम्मद) अल्लाह तुझे माफ करे। तुमने क्यों उनको (इस लड़ाई में न जाने की) रुखसत (छुट्टी) दी। इससे पहले कि तुझको पता चल जाता कि इन उज्र पेश करने वालों मे (कौन सच्चे हैं कौन झूठे) बहानेबाज हैं।" 9/43

(7) "जो लोग अल्लाह पर और आखिरत पर ईमान रखते हैं वह तुझसे इस बात की मोहलत नहीं माँगते कि अपनी जान व माल से जिहाद में न शरीक हों....." 9/44 "तुमसे छुट्टी चाहने वाले वही लोग हैं जो अल्लाह और आखिरत पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हैं, तो वह अपने शक में भटक रहे हैं।" 9/45 "और अगर यह लोग जिहाद के लिए निकलने का इरादा रखते तो उसके लिए कुछ तैयारी करते....।" 9/46

(8) "और इनमें ऐसे भी है जो कहते हैं कि मुझको छुट्टी दे और मुझको विपत्ति मे न डाल। तो जान लो यह लोग विपत्ति में पड़ ही हैं और दोजख काफिरों को घेरे हुए है।" 9/49 "(ऐ पैगम्बर) ऐसे लोगों से कह दो कि तुम खुशदिली से खर्च करो या बेदिली से अल्लाह तुमसे कबूल नहीं करेगा क्योंकि तुम हुक्म न माननेवाले हो।" 9/53 "और उनका खर्च कबूल नहीं होता इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैगम्बर का हुक्म नहीं माना और नमाज को आते हैं तो अलसाये हुए से और बुरे दिल से खर्च करते हैं।" 9/54 "अल्लाह दुनिया की जिन्दगी में इनको इन (माल और औलाद) के जरिए ही सजा देना चाहता है और यहा काफिर ही (रहकर) मरेंगे।" 9/55 "और अल्लाह की कसमें खाते हैं कि वह बेशक तुममे से हैं हॉलाकि वह तुममे नहीं हैं बल्कि (सच तो यह है कि) वह डरपोक हैं।" 9/56 "और जो लोग अल्लाह के पैगम्बर (के दिल) को चोट पहुँचाते हैं उनको दुःखदाई सजा होनी है।" "क्या इन्होंने अभी तक इतनी बात भी नहीं समझी कि जो अल्लाह और उसके पैगम्बर का विरोध करता है उसके लिए दोजख की आग है, जिसमें वह हमेशा रहेगा।" यह (उनकी) बड़ी जिल्लत है।" 9/63

210 आयत 64,65 और 66 में ईमान लाने के बाद भी इस्लाम की हँसी-मजाक बनाने वालो की कठोर शब्दों में चर्चा है :

(1) "मुनाफिक डरते हैं कि अल्लाह की तरफ से पैगम्बर के जरिए कहीं ऐसी सूरत न उतरे कि जो कुछ इनके दिलों में (साँठ गाँठ छिपी) है उसे (ईमानवालों पर) जाहिर कर दे। (ऐ पैगम्बर) कहो कि हँसे जाओ जिसका तुम्हें डर है अल्लाह वही बात जाहिर करने वाला है।" 9/64

(2) "और अगर तुम इन लोगों से पूछो तो वह जरूर यही उत्तर देंगे कि हम तो यों ही बातचीत और हँसी मजाक कर रहे थें। तो (उनसे) कहो कि तुमको हँसी करनी थी तो अल्लाह के साथ और उसकी आयतों और उसके पैगम्बर के साथ।" 9/65

(3) "(उनसे साफ कह दो कि) बातें न बनाओ तुम ईमान लाने के बाद काफिर हो गए हो। अगर हम तुममें से एक गिरोह को माफ भी कर दें तो भी दूसरे को जरूर सजा देंगे वह हमेशा गुनहगार रहेंगे।" 9/66

"ऐ पैगम्बर काफिरों और मुनाफिकों के विरुद्ध जिहाद करो और उनसे सख्ती से पेश

आओ। और उनका ठिकाना दोहज है और वह क्या ही बुरी जगह पहुँचने की है।" 9/73 "अल्लाह की सौगंध खाते है कि (फला बात) हमने नहीं कही, हॉलाकि जरुर उन्होंने कुफ्र की बात कही, और इस्लाम (पर ईमान लाने) के बाद (वे) काफ़िर हो गये....और यह बदला उन्होंने इस बात का दिया कि अल्लाह ने और उसके पैगम्बर ने इनको अपने फजल से (माले गनीमत बगैरः काफी देकर) मालदार कर दिया था। सो यह लोग अगर तौबा करें तो उनके हक में अच्छा होगा और अगर न माने तो अल्लाह इनको दुनिया और आखिरत में दुःखदाई सजा देगा...।" 9/74 "(ऐ पैगम्बर) तुम इनके हक में दुआ करो या न करो (सब बेकार) अगर तुम सत्तर दफे भी इनके लिए माफी मॉगों तो भी अल्लाह हरगिज उनको क्षमा नही करेगा। यह इनके इस कर्म की सजा है कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैगम्बर के साथ कुफ्र किया।" 9/80

21 1 जिहाद के युद्ध में शामिल न होना इस्लाम में कितना अपराध है यह निम्न आयतो से स्पष्ट है :

(1) "जो (मुनाफिक लड़ाई में न जाने के बहाने बनाने पर) पीछे छोड़ दिये गए, वह अल्लाह के पैगम्बर की (मरजी के) खिलाफ (घरों में) बैठे रहने से बहुत खुश हुए, और अल्लाह की राह में अपनी जान और माल से जिहाद करना उनको नागवार हुआ और दूसरों को भी समझाने लगे कि गर्मी में न निकलना। (ऐ पैगम्बर) इन लोगों से कहो कि दोजख की आग (की गर्मी) तो कहीं ज्यादा सख्त है....।" 9/81

(2) "तो यह लोग थोड़ा हँस लें और (एक दिन आने वाला है जब) बहुत रोयेंगे।" 9/82

(3) "और (ऐ पैगम्बर) अगर इनमें से कभी कोई मर जाय तो तुम कदापि उस पर (जनाजे की) नमाज न पढ़ना और न उसकी कब्र पर खड़े होना निस्सन्देह उन्होंने अल्लाह और उसके पैगम्बर के साथ कुफ्र किया। और वह नाफरमानी की दशा में ही मरे।" 9/84 "...अल्लाह तो यही चाहता है कि जब इनकी जान निकले तब तक काफ़िर ही रहें।" 9/85

(4) "और (ऐ पैगम्बर) जब कोई सूरत उतारी जाती है कि अल्लाह पर ईमानलाओ और उसके पैगम्बर के साथ जिहाद में शिरकत करो तो इनमें से मालवाले तुमसे (छुट्टी का) हुक्म मॉंगने लगते हैं और कहते है कि हमको छोड़ जाओ कि बैठनेवालों के साथ हम भी (घरो मे) रहें।" 9/86

(5) "इनको घर पर रह जाने वाली औरतों के साथ (बैठ) रहना पसंद आया।" 9/87

(6) "लेकिन पैगम्बर ने और जो उनके साथ ईमानवाले हैं (उन्होंने) अपनी जान और माल से जिहाद किया।" 9/88

(7) "जिन लोगों ने अल्लाह और उसके पैगम्बर से झूठ बोला था वह घर बैठे रहे। इनमें से जिन्होंने कुफ्र किया (इन्कार) किया उनको शीघ्र ही दुःखदाई सजा मिलेगी।" 9/90

(8) "(ऐ पैगम्बर) कमजोरों पर कुछ गुनाह नहीं और न बीमारों पर और न उन लोगो पर जिनमें (जिहाद के सफर) खर्चे की ताकत नहीं....।" 9/91 "और उन पर भी गुनाह नही जो तुम्हारे पास आये ताकि उनको जंग में चलने को सवारी दो ।" 9/92 "जुर्म की गुंजाइश तो उन्हीं पर है जो मालदार होने पर भी तुझसे मॉंगते हैं " 9/93 "तो इनकी ओर

(तरफ से) ध्यान हटा ही लो, क्योंकि यह लोग नापाक हैं और इनका ठिकाना दोजख है।" 9/95 "ओर तुम्हारे आसपास के देहातियों में से बाज मुनाफिक (कपटी) हैं और बाज मदीने में रहने वालों में भी जो निफाक (कपट) पर अड़े बैठे हैं। (ऐ पैगम्बर) तुम इनको नहीं जानते, हम इनको जानते हैं। हम इनको दोहरी मार देंगे, फिर ये बड़े अजाब की ओर लौटाये जायेंगे।" 9/101 **"बेशक अल्लाह ने ईमानवालों से उनकी जानें और उनके माल खरीद लिए हैं कि उनके बदले उनके लिए जन्नत है कि वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं, मारते हैं, और मारे जाते हैं। यह अल्लाह का पक्का अहद हो चुका, तौरात, इंजील और कुरान में। और अल्लाह से बढ़कर अपने अहद को पूरा और कौन कर सकता है। तो अपने सौदे पर जो तुमने अल्लाह के साथ किया है आनन्द मनाओ और यही बड़ी कामयाबी है।"** 9/111 काफिर होना या अल्लाह को न मानना अल्लाह की निगाह में एक अक्षम्य अपराध है और उसकी कोई माफी नहीं है। इसी बात को दर्शाती हुई इसी अध्याय की आयत 113 कहती है :

"पैगम्बर के लिए और मुसलमानों के लिए यह जेब (शोभा) नहीं देता कि वे मुशरिकों के लिए माफी चाहें जो वह रिश्तेदार (ही क्यों न) हों जबकि उन्हें मालूम हो चुका है कि व मुशरिक दोजख की भड़कती आग वाले हैं।" 9/113

21 2 जिहाद में युद्ध के अवसर पर ईमानवालों को अल्लाह की हिदायत है कि मुसलमानो को यह मुनासिब नहीं "कि पैगम्बर की जान के मुकाबले अपनी जानों को जियादः प्यारा समझें, यह इसलिए (मुनासिब न था) कि उनको अल्लाह की राह में प्यास और मेहनत आर भूख की जो तकलीफ पहुँचती है, और जो कदम वे ऐसे चलते हैं कि काफिरों को (उनसे) गुस्सा आये या दुश्मनों से (माल गनीमत) के तौर कुछ चीज छीनते हैं तो हर काम के बदले इनका नेक अमल लिख जाता है। बेशक अल्लाह नेककारों का अज्र (प्रतिफल) अकारथ नहीं होने देता।" 9/120 "और मुमकिन नहीं कि ईमानवाले सब के सब (जिहाद के लिए) निकल खडे हों, तो ऐसा क्यों न किया जाय कि उनकी हर एक जमात में से कुछ लोग निकलते कि दीन की समझ (अपने में) पैदा करते और जब अपनी जाति में वापस जाते तो उनको (दीन की समझ देते और उनको) डराते ताकि वह लोग कुफ्र से बचें।" 9/122

इस आयत से स्पष्ट है कि इस्लाम को ठीक से समझने के लिए भी जिहाद में क्रम से सब ईमानवालों का शामिल होना आवश्यक है, और इसलिए भी कि जिहाद के असर के कारण उनमें कुफ्र के प्रति डर बैठ जाय। अपने आसपास के काफिरों से लड़ते रहना और उनको अपने भारी दबाव में रख कर उन्हें कमजोर करते रहना ईमानवालों का प्रमुख दायित्व है **"ऐ ईमानवालो! अपने आसपास के काफिरों से लड़े जाओ और चाहिए (कि तुम्हारा रवैया अब ज्यादा सख्त हो) कि वह तुमसे (अपनी बाबत) सख्ती महसूस करे और जाने रहो अल्लाह उन लोगों का साथी है जो अल्लाह से डरते हैं।"** 9/123 जैसाकि हमने इस अध्याय के शुरु में कहा कि सारा का सारा नवां अध्याय काफिरों और उनके विरुद्ध जिहाद से संबंधित है। इसकी 129 आयतों में से हमने लगभग आधी आयतों को उपर उद्धृत किया है **शेष आयतें भी उसी विषय पर हैं**

सूरः 10

21.3 अब हम सूरः 10 पर आते हैं। यह अध्याय भी दूसरे नबियों की चर्चा के साथ काफिरो से ही संबंधित है जिसकी चर्चा हम यथास्थान करेंगे। यहाँ नीचे हम काफ़िरों से सीधे जुड़ी कुछ आयतों को दे रहे हैं। आयत 4 और 8 में काफ़िरों को परलोक की सजा इस प्रकार सुनाई गई है :

(1) "....और काफ़िरों के लिए उनके कुफ्र की सजा में पीने को खौलता पानी और दु:खदायी अजाब होगा।" 10/4 "....और जो लोग हमारी निशानियों से अचेत हैं। 10/7 "यही लोग है जिनकी करतूत के बदले उनका ठिकाना (दोजख की) आग होगी।" 10/8

(2) "फिर उससे बढ़कर जालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी आयतो को झुठलाये बेशक गुनहगारों का भला नहीं होता।" 10/17

(3) "....यही आग वाले (दोजखी) हैं कि वह उसमें हमेशा रहेंगे।" 10/27

21.4 (1) "और (ऐ पैगम्बर!) अगर ये (काफ़िर) तुझको झुठलावें तो कह दे कि मेरा करना मुझको और तुम्हारा करना तुमको। तुम मेरे काम के जिम्मेदार नहीं और न मैं तुम्हारे काम का जिम्मेदार हूं।" (10/41); और (ऐ पैगम्बर!) इनमें से कुछ लोग हैं जो तेरी तरफ कान लगाते हैं। तो क्या तू बहरों को सुना सकेगा जिनमें (सुनने) समझने की ताकत नही।" (10/42); "और इनमें से कुछ लोग हैं जो तेरी तरफ ताकते हैं, तो क्या तू अन्धों को रास्ता दिखा सकेगा जिनमें (देखने) समझने की ताकत न हो।" (10/43)

(2) "....जिन लोगों ने (आखिरत में) अल्लाह के सामने होने को झुठलाया वे बेशक घाटे में आ गए और वे रास्ता पाने वालों में से न थे।" 10/45

(3) "और (तुमसे) पूछते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बताओं यह वादा अजाब का कब आयेगा।" 10/48

(4) "ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि मेरा अपना फायदा व नुकसान भी मेरे हाथ में नही सिवाय इसके कि जो अल्लाह चाहता है.... हर उम्मत का एक वक्त मुकर्रर है...।" 10/49

(5) "(ऐ पैगम्बर) इनसे पूछो कि भला देखो तो सही अगर अल्लाह का अजाब रातो रात तुम पर आ उतरे या दिन दहाड़े (आ जाय) तो अजाब में कौन चीज ऐसी है कि मुजरिम लोग उसको जल्दी माँग रहे हैं।" 10/50

(6) "तो क्या जब (अजाब) आ पड़ेगा तभी उस पर ईमान लाओगे (और तब कहा जायेगा) कि आखिर अब ईमान लाये तो (क्या लाभ) और तुम इसी की जल्दी मचा रहे थे।" 10/51

(7) "फिर (कयामत के दिन) उन जालिमों से कहा जायेगा कि अब हमेशा के लिए अजाब (का मजा) चखो....।" 10/52 "और (ऐ पैगम्बर) तुमसे पूछते हैं कि क्या यह सच है। कहो मेरे परवरदिगार की सौगंध यह बेशक सच है और तुम (बच निकलने की किसी भी जुगत से अल्लाह को) थका न सकोगे।" 10/53

(8) "(ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कह दो कि जो लोग अल्लाह पर झूठी बातें गढ़ते हैं

उनको मुराद नहीं मिलती।" 10/69 "(यह भी चता दा कि) दुनिया को (चन्द रोज) वरत ले, फिर उनको हमारी ही तरफ लौटकर आना है। तब हम उनको सख्त सजा (का मजा) चखा देंगे कि वे (हमारी आयतों से) इन्कार करते थे।" 10/70

ऊपर दी गई सूरः 10 की आयतों में काफ़िरों को हर कदम पर मरने की बाद की भारी सजा का भय दिखलाया गया है ताकि वह डरकर अल्लाह और उनके पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब पर, अल्लाह की आयतों पर और कयामत पर ईमान ले आएँ।"

सूरः 11

215 सूरः 11 में यह स्पष्ट किया गया है कि काफ़िर और मुसलमान एक दूसरे के विपरीत है। काफ़िर अन्धा और बहरा है और मोमिन यानी मुसलमान देखने और सुनने वाला है। "यही वह लोग हैं जिनके लिए आखिरत में (दोजख की) आग के सिवाय और कुछ नहीं और जो काम दुनिया में इन लोगों ने किये, गये-गुजरे हुए और इनका किया धरा सब बेकार हुआ।" 11/16

(2) "....और फिर्कों में से जो कोई इस (कुरान) से मुन्किर (विमुख) हो तो उनके वादे की जगह (दोजख की) आग है तो ऐ पैगम्बर (तुम इस कुरान) की तरफ से शक मे न रहना.....।" 11/17

(3) "और जो अल्लाह पर झूठ गढ़े इससे बढ़कर जालिम कौन ? ऐसे लोग अपने परवरदिगार के सामने पेश किये जायेंगे और गवाह गवाही देंगे कि यही हैं जिन्होंनें अपने परवरदिगार पर झूठ बोला था, सुन रखो कि जालिमों पर अल्लाह की लानत है।" 11/18

(4) "जो अल्लाह के रास्ते में रोकते हैं और उनमें कमी खोजते रहते हैं और आखिरत से भी इन्कार करते हैं।"11/19 "यह लोग न दुनिया में ही अल्लाह को थका सकेंगे और न अल्लाह के सिवाय इनका कोई हिमायती खड़ा होगा (ऐ पैगम्बर) इनको दोहरी सजा होगी, क्योंकि (इनका कुफ्र इस कदर बढ़ा था कि हमारा पैगाम) न ये लोग सुन सकते थे और न देख सकते थे।" 11/20

(5) "यही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और झूठ जो बाँधते थे वह सब इनसे गया गुजरा हो गया।" 11/21

(6) "बेशक यही लोग आखिरत में सबसे ज्यादः घाटे में होंगे।" 11/22 "(काफिर और मोमिन इन) दोनों फिर्कों की मिसाल ऐसी है कि एक अन्धा और बहरा और एक देखने और सुनने वाला। क्या इन दोनों का हाल एकसा हो सकता है फिर तुम ध्यान क्यों नहीं देते।" 11/24 आयत 105 में दिखलाया है कि कयामत के दिन ईमानवाले भाग्यवान होंगे और काफ़िर अभागेः "तो जो अभागे हैं वह नरक की आग में होंगे, वहाँ उनको (बस) चिल्लाना है और चीखना है।" 11/106

सूरः 13

216 जैसा कि हम पहले बतला चुके हैं कि इस्लाम के प्रमुख सिद्धांतों में एक सिद्धान्त यह मानने का भी है कि कयामत के दिन सभी मुर्दे अपनी-अपनी कब्रों से सशरीर उठाये जायेंगे।

जो इस सिद्धांत को नहीं मानता वह काफ़िर है और काफ़िर होने के नाते नरक में भारी सजा का अधिकारी है। यही बात सूरः 13 की पाँचवी आयत में साफ तौरपर बयान की गई है "और (ऐ पैगम्बर) अगर तुम ताज्जुब की बात (सुनना) चाहो तो उन (काफ़िरों) का यह कहना (क्या कम) ताज्जुब है कि जब हम मरकर मिट्टी हो जायेंगें तो क्या हम नये (सिरे से फिर पैदा) किये जायेंगे। यही लोग हैं जो अपने परवदिगार से मुन्किर (विमुख) हुए और यही लोग है जिनकी गरदनों में (कयामत के दिन) तौक होंगे और यही नरकवासी हैं और हमेशा नरक ही में रहेगें।" 13/5

21.7 और इस प्रकार अल्लाह की आज्ञाओं को न मानने वाले काफ़िरों के लिए घोर नरक ही है और धरती की समस्त सम्पदा भी उन्हें इस नरकवास से नहीं बचा सकती : "और जिन्होंने उसकी आज्ञा न मानी तो जो कुछ जमीन पर है अगर वह सब उनके पास हो और उसके साथ उतना ही और यह लोग अपने बचाव के बदले में दे डालें (तब भी छुटकारा कहाँ) यही लोग हैं जिनसे बुरी तरह हिसाब (लिया जायेगा) और इनका आखिर ठिकाना दोजख है, और वह (बहुत) बुरा ठिकाना है।" 13/18

21 8 और काफ़िरों और इन्कारियों पर हर तरह की मुसीबतें इस लोक में उतरती रहेंगी और परलोक में तो उनके लिए दोजख की आग सदैव तैयार ही है। इन्हीं बातों का वर्णन इस अध्याय की आगे की आयतों में है :

(1) "....और जो लोग मुन्किर हैं इनको इनकी करतूतों की सजा में तकलीफ पहुँचती रहेगी या इनकी बस्ती के आस-पास (मुसीबत) उतरती रहेगी यहाँ तक कि (वह दिन आ जायेगा कि) अल्लाह का कौल पूरा हो बेशक अल्लाह वादा खिलाफी नहीं करता।" 13/31

(2) "(हाल यह है कि) इन लोगों के लिए दुनिया की जिन्दगी में सजा है और आखिरत की सजा तो बहुत ही सख्त है। और अल्लाह से कोई बचानेवाला नहीं।" 13/34

(3) "....और इन्कारियों को अंजाम (दोजख की) आग है।" 13/35 मक्का के काफ़िरों को अल्लाह का संदेश है कि अल्लाह उनके देश को नेस्तनाबूद करता जा रहा है और हजरत मुहम्मद को पैगम्बर न मानने का परिणाम उनके हक में कितना बुरा होगा :

21 9 (1) "क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम देश को सब तरफ से दबाते चले आते हैं? और अल्लाह जो हुक्म देता है कोई उसके हुक्म को टालने वाला नहीं, और वह बडी जल्दी हिसाब लेने वाला है।" 13/41

(2) "और जो लोग इन (मक्का के काफ़िरों) के पहले हो गुजरे हैं उन्होंने भी दाँव किये सो सारे दाँव तो अल्लाह ही के हाथ में हैं। .....और काफ़िरों को जल्द मालूम हो जायेगा कि (आखिरत में अच्छा) अंजाम का घर किसके लिए है।" 13/42

(3) "और काफ़िर कहते हैं कि तुम भेजे हुए (यानी रसूल) नहीं हो तो (इनसे) कहो कि मेरे तुम्हारे बीच एक बस अल्लाह गवाह है.....।" 13/43

(4) "अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और इन्कार वालों को एक सख्त अजाब (में फँसकर) तबाह होना है।" 14/2

सूरः 14

220 काफ़िर की इस लोक और परलोक में कितनी दुर्गति होगी इसका वर्णन सूरः 14 मे इस प्रकार है :

(1) "और काफ़िरों ने अपने पैगम्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे या फिर तुम हमारे मजहब में आ जाओ। इस पर उनके परवरदिगार ने उनकी तरफ वही (खुदाई पैगाम) भेजा कि हम (इन) सरकश लोगों को जरुर बरबाद कर देंगें।" 14/13

(2) "और उनके बाद जरुर तुमको उसी जमीन पर बसायेंगें। यह वादा उस शख्स के लिए है जो मेरे सामने खड़े होने से डरे और मेरी सजा से डरे।" 14/14

(3) "और उन्होनें फैसला चाहा और हर जब्र करने वाला हठी नामुराद (असफल) होकर रहा।" 14/15

(4) "इसके बाद उसके लिए दोजख है और उसको पीप का पानी पिलाया जायेगा।" 14/16 "वह उसको घूँट-घूँट पियेगा और उसको गले से उतारना कठिन होगा और मौत उसको हर तरफ से आती हुई दिखाई देगी और वह मरेगा नहीं और उसके पीछे दुःखदायी सजा होगी।" 14/17

(5) "जो लोग अपने परवरदिगार को नहीं मानते उनकी मिसाल ऐसी है कि उनके काम गोया राख का ढेर है कि आँधी के दिन उसको हवा ले उड़े.. यही परले सिरे की गुमराही है।" 14/18

(6) "काफिरों को उस समय शैतान भी धिक्कारते हुए कहेगा : .... "....इसमें शक नही कि (तुम जैसे) जो लोग जालिम हैं उनको दुःख की मार है।" 14/22

(1) "(ऐ पैगम्बर) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अहसानों (को न मानकर) नाशुक्री से बदला दिया और अपनी जाति को तबाही के घर में ले जाकर उतारा।" 14/28 "कि जो जहन्नुम है उसमें दाखिल होंगे और यह बुरा ठिकाना है।" 14/29

(2) "और (ऐ पैगम्बर) ऐसा न समझो कि अल्लाह (इन) जालिमों की करतूतों से बेखबर है और (अल्लाह) इनको उस दिन तक की मोहलत देता है जबकि (अजाब के भय से इनकी) आँखे फटी की फटी रह जायेंगी।" 14/42

(3) "अपने सिर ऊपर उठाये दौड़ते होंगे, उनकी निगाहें अपनी तरफ न घूम सकेंगी और उनके दिल (मारे दहशत के) उड़ जायेंगे।" 14/43

(4) "और (ऐ पैगम्बर) लोगों को उस दिन से डरा जबकि उन पर सजा उतरेगी (और) तब अन्यायी कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार हमको थोड़ी सी मुद्दत की मुहलत और दे कि हम तेरे बुलाने पर उठ खड़े हों और पैगम्बर के पीछे होकर उनकी पैरवी करें और तब उनको जवाब मिलेगा कि ऐ सरकशो क्या तुम पहले कसमें नहीं खाया करते थे कि तुमको (आखिरत की तरफ) नहीं जाना है।" 14/44 "....बेशक अल्लाह जबरदस्त बदला लेने वाला है।" 14/47

(5) "जबकि जमीन बदलकर दूसरी तरह की जमीन करदी जायेगी और आसमान (भी) और लोग एक अल्लाह जबरदस्त के सामने निकल खड़े होगें।"14/48

6 "और (ऐ पैगम्बर) तुम उसी दिन गुनहगारों को जन्जीरों में जकड़े हुए देखोगे।" 14/49

(7) "गन्धक के उनके कुर्ते होंगे और उनके मुंहों को आग ढाँके लेती होगी।" 14/50 "यह (कुरान) लोगों के लिए (अल्लाह का) पैगाम है और गरज यह है कि इसके जरिये से लोगों को डराया जाय ओर उनको मालूम हो जाय कि एक (मात्र अल्लाह) ही इलाह (पूज्य) है ..।" 14/52 अल्लाह को यह विश्वास है कि काफ़िर कभी कुरान पर ईमान नहीं लायेंगे चाहे वो कयामत की सजा के समय यह लालसा करें कि काश वे मुसलमान होते।

22 1 (1) "यह (काफ़िर) कुरान पर ईमान नहीं लावेंगे यह (काफ़िरों में नसीहत से इन्कार करने की) रस्म पहले से चली आई है।" 15/13

(2) "और अगर हम इन लोगों के लिए आसमान का एक दरवाजा खोल दें और यह लोग सब दिन उसमें चढ़ते रहें।15/14 "तो भी (ईमान न लावेंगे और) यही कहेंगे हो न हो हमारी नजर बाँध दी गई है बल्कि हम पर किसी ने जादू कर दिया है।" 15/15 "और (रि पैगम्बर। उस वक्त को याद करो) जबकि तुम्हारे परवरदिगार ने फिरिश्तों से कहा कि मैं सड़े गारा से एक आदमी को पैदा करने वाला हूं।" 15/28; तो मैं उसको पूरा बना लूं और उसमे अपनी रूह फूंक दूं तो तुम उसके आगे सजदे (दंडवत) में गिर पड़ना।" 15/29 और सब फरिश्तों ने तो कुरान के अनुसार प्रथम इन्सान आदम को सजदा किया पर इबलीस ने अल्लाह की बात मानने से इन्कार कर दिया तब अल्लाह ने उसे जहन्नम से कयामत के दिन तक के लिये निकाल दिया और वह "शैतान" कहलाया। 15/30 से 35 तब शैतान ने अल्लाह से कहा कि "जैसी तूने मेरी राह मारी"मैं भी इन आदम की औलादों को तेरी राह से बहकाऊँगा।" 15/39 इस प्रकार कुरान के अनुसार जो अल्लाह को नहीं मानते वे सब शैतान के भटकाये काफ़िर हैं और अल्लाह के दुश्मन हैं। इनके बारे में अल्लाह शैतान से कहते हैं :

22 2 (1) "जो मेरे सेवक हैं उन पर (तेरा) किसी तरह का जोर न होगा सिवाय उन पर जो तेरे पीछे चल कर गुमराहों में से हो जाँय ।" 15/42

(2) "और ऐसे तमाम (गुनहगार) लोगों के लिए (हमारी ओर से) दोजख का वादा है।" 15/43

(3) "उस दोजख के सात दरवाजे हैं। हर दरवाजे के लिए उन (दोजखी लोगों) की जमातें अलग अलग होंगी।" 15/44

(4) "(ऐ पैगम्बर) हम इन काफ़िरों पर वैसा ही अजाब उतारेंगे जैसा हमने उन भेद पैदा करने वाले यहूदियों पर उतारा था।" 15/90 "जिन्होंने बाँटकर कुरान (यानी तौरात) के टुकड़े-टुकड़े कर डाले यानी कुछ बातें मानतें है कुछ नहीं।" 15/91

(5) "तो तेरे परवरदिगार की कसम है कि हम इन सबसे (आखिरत के दिन सामने होने पर) पूछेंगे।" 15/92 "उसके बारे में जो कुछ ये (दुनियाँ में) करते थे।" 15/93 पस जो तुमको आज्ञा हुई है उसे खोलकर सुना दो और मुशरिकीन की बिलकुल परवाह न करो।" 15/94

(6) "हम तेरी तरफ से ठट्ठा करने वालों को काफी हैं।" 15/95

सूरः 16

22.3 (1) "(ऐ काफ़िरों) अल्लाह का हुक्म (यानी अजाब) आया (ही समझो) तो उसके लिए जल्दी मत मचाओ " 16/1

(2) "(लोगो) तुम्हारा इलाह (पूज्य) एक मात्र इलाह (अल्लाह) है सो जो लोग आखिरत का विश्वास नहीं करते उनके दिल इन्कारी हैं और वह घमण्डी हैं।" 16/22 "यह लोग जो कुछ छिपाकर करते और जाहिर करते हैं अल्लाह जानता है। बेशक वह घमण्डियों को पसन्द नहीं करता।" 16/23 "और जब इन (काफ़िरों से) पूछा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या उतारा है तो यह उत्तर देते हैं कि (वह तो) अगलों की कहानियाँ है।" 16/24 "(फल यह है) कि कयामत के दिन (अपने गुनाहों) के पूरे बोझ और जिन लोगों को बिन समझे बूझे भटकाते हैं उनके भी बोझ उन्हीं को उठाने पड़ेंगे। सुनो, बुरा बोझ है जो यह लोग अपने ऊपर उठाते हैं।" 16/25

अल्लाह के अनुसार काफ़िर हर काल में मक्कारियाँ करते आए हैं और अल्लाह इनको हमेशा बुरी मार देता आया है और जलील करता रहा है :

(1) "इनसे पहले लोग भी (ऐसी ही) मक्कारियाँ कर चुके हैं तो अल्लाह ने उनकी इमारत को जड़ बुनियाद से ढा दिया फिर छत उन्हीं पर ऊपर से गिर पड़ी और जिधर से उनको खबर भी न थी अजाब उन पर फट पड़ा।" 16/26

(2) "फिर कयामत के दिन अल्लाह इनको जलील करेगा और पूछेगा कि मेरे शरीक जिनके बारे में तुम हुज्जत करते थे कहाँ है.....बेशक आज के दिन काफ़िरों पर जिल्लत और खराबी हैं।" 16/27

(3) "जिस वक्त फरिश्ते इनकी रुहें निकालते हैं यह लोग आप अपने ऊपर जुल्म करने वाले होते हैं (और) तब (ये काफ़िर) ढीले पड़ जाते हैं और गिड़गिड़ाने लगते हैं कि हम तो किसी किस्म की बुराई नहीं किया करते थे। (क्या खूब) जो कुछ तुम करते थे अल्लाह उससे खूब जानकार है।" 16/28

(4) "सो दोजख के दरवाजों में जा दाखिल हो, उसी में सदा रहो।" 16/29

(5) "अब (काफ़िर) क्या इसी बात की राह देखते हैं कि फरिश्ते उनके पास आयें या तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म (अजाब) उन पर आपहुँचे...।" 16/33 "फिर उन कर्मों के बुरे फल उनको मिले और जिसकी हँसी उड़ाया करते थे उसी (अजाब) ने उन्हें आ दबोचा।" 16/34 आयत 16/34 से स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह, उसके पैगम्बर, उसकी आयतें और आखिरत और अजाब आदि पर ईमान न लाना और उनकी हँसी उड़ाना काफ़िरों के सबसे बुरे कर्म हैं।

कुरान शरीफ़ में स्थान-स्थान पर अल्लाह ने अपने पैगम्बर हजरत मुहम्मद को उनके इस रंज पर सांत्वना दी है कि उनके पूरे प्रयत्न के बाद भी सभी काफ़िर अल्लाह के दीन पर ईमान नहीं लाये और न ही काफ़िरों को कयामत के दिन मुर्दों के जिन्दा होने पर ही विश्वास है। इसी रंग का निराकरण नीचे की आयतों में किया गया है।

(1) "(ऐ पैगम्बर) अगर तुम इन (काफ़िरों) को सीधे रास्ते पर लाने की लालसा करो तो भी अल्लाह जिसको विचलाना चाहता है उसको राह नहीं दिया करता और ऐसे लोगों का कोई मददगार नहीं।" 16/37

(2) "और वह अल्लाह की बड़ी सख्त कसमें खाते है कि जो मर जाता है उसको अल्लाह (के दिन कब्र से दुबारा नहीं उठायेगा ऐ पैगम्बर उनसे कहो कि जरूर

(उठा खड़ा करेगा, अल्लाह का) वादा हो चुका है और इस (वादे) का पूरा करना उसे जरूरी है। मगर अक्सर लोग नहीं समझते।" 16/38

(3) "(मुर्दों को जिला उठाना जरुरी है) इसलिए कि जिन चीजों पर यह झगड़ते थे अल्लाह उन पर (उनकी सच्चाई) जाहिर करदे और काफ़िर जान लें कि वह झूठे थे।" 16/39

सूरः 17

22 4 कुरान शरीफ़ के अनुसार अल्लाह स्वयं ही काफ़िरों के दिलों पर परदा डाल देते है ताकि वे कुरान को न समझ सकें और वे नरक या दोजख के अधिकारी बनें। सूरः 17 मे आयत संख्या 45 से 52 तक काफ़िरों का इस्लाम के प्रति घोर अविश्वास, उसके पैगम्बर हजरत मुहम्मद के प्रति तिरस्कार और कयामत और कयामत के समय कब्रो में मरे हुए लोगो के पुनः जिन्दा करने पर विश्वास न करने आादि का वर्णन मिलता है।

(1) "और (ऐ पैगम्बर) जब तुम कुरान पढ़ते हो हम तुममें और उन लोगों में जिनका आखिरत पर ईमान नहीं, इक परदा जैसी रोक कर देते हैं।" 17/45

(2) "और उनके दिलों पर परदा डाल देते हैं कि (कुरान को) समझ न सकें और उनके कानों में बोझ डाल देते हैं (ताकि सुन न सकें) और तुम जब कुरान में अपने अकेले रब ही की चर्चा करते हो तो काफ़िर नफरत करके उल्टे चल खड़े होते हैं।" 17/46

(3) "जब यह लोग तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो जिस नीयत से सुनते हैं हमको खूब मालूम हे और जब यह जालिम (आपस में) कानाफूसी करते हैं तब कहते हैं कि तुम तो एक ऐसे आदमी के पीछे चल रहे हो जिस पर जादू किया गया है।" 17/47

(4) "(ऐ पैगम्बर) देखो तुम्हारी निस्बत कैसी-कैसी बातें बकते हैं। तो यह लोग भटक गये और अब राह नहीं पा सकते।" 17/48

(5) "और कहते हैं जब हम (मरकर) हड्डियाँ और चूर-चूर हो गये तो क्या हम नये सिरे से पैदा होकर फिर उठा खड़े किये जायेंगे?" 17/49

(6) "(ऐ पैगम्बर उनसे) कह दो कि तुम पत्थर हो जाओ या लोहा।" 17/50

(7) "या और कोई चीज बन जाओ जो तुम्हारी समझ में बड़ी हो (कि फिर जिन्दा न हो सको) उस पर पूछेंगे कि हमको दुबारा कौन जिन्दा करेगा, कहो कि वही (अल्लाह) जिसने तुमको पहली बार पैदा किया था। इस पर यह लोग तुम्हारे आगे सिर मटकाने लगेगे और पूछेंगे कि भला कब आवेगी वह (कयामत की घड़ी), कहो, आश्चर्य नहीं कि (वह घड़ी) करीब ही आ लगी हैं।" 17/51

(8) "कि जब अल्लाह तुमको बुलायेगा तो फिर तुम उसकी तारीफ करते चले आओगे और ख्याल करोगे कि बस थोड़े ही दिन तुम (दुनिया) में रहे।" 17/52

इन आयतों से यह सिद्ध हो जाता है कि आखिरत में विश्वास करना और आखिरत की घड़ी में मनुष्यों के मुर्दा शरीरों का पुनः जिन्दा हो जाना इस्लाम के विश्वास की कितनी बड़ी आधारशिला हैं। स्वाभाविक ही है कि इस पर शक करने वाला व्यक्ति इस्लाम की निगाह में एक बहुत बड़ा काफ़िर है और अल्लाह का दुश्मन है और इस इन्कारी की सजा नरक

मे कितनी सख्त है इस बात की स्पष्ट करते हुए अल्लाह कहते हैं : "और जिसको अल्लाह राह दिखा दे वही सच्ची राह पर है और जिसे भटकायें तो (ऐसे गुमराहों के लिए) तुम अल्लाह के सिवाय उनका कोई मददगार न पाओगे और कयामत के दिन हम उन लोगों को औंधे मुह अन्धे और गूँगे और बहरे करके उठायेंगे और उनका आखिरी ठिकाना दोजख है जब (नरक की) आग बुझने को होगी हम उनको अजाब देने के लिए जियादः भड़का देंगे।" 17/97 "यह उनकी सजा है इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों से इन्कार किया और कहा कि जब हम हड्डियाँ और चूरा हो जायेंगे तो क्या हम नये सिरे से जिन्दा किये और उठा खड़े किये जायेंगे।" 17/98

सूरः 18

22.5 सूरः 18 में काफ़िरों के लिये नरक का वर्णन इस प्रकार है :

(1) "और (ऐ पैगम्बर) इन लोगों से कहो कि यह कुरान तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक है, बस जो कोई चाहे माने और जो कोई चाहे न माने। (अलबत्ता) मुन्किरों के लिए हमने ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी कनातें उनको चारों तरफ से घेर लेंगी और अगर फर्याद करेंगे तो (ऐसे) पानी से उनकी फर्याद पूरी की जायेगी जो तेल की तलछट की तरह होगा। (और इतना गर्म होगा) कि वह मुँहों को भूँज डालेगा। (क्या ही) बुरा है वह पानी और क्या ही बुरी आराम की जगह (बदकिरदारों के लिए)।" 18/29

(2) "और गुनहगार (दोजख की) आग को देखेंगे और समझ जायेंगे कि वह उसमें गिरने वाले हैं और उनको उससे बच निकलने की कोई राह नहीं मिलेगी।" 18/53

22.6 सूरः 18 में विस्तार से हजरत खिज्र की, जो कि अल्लाह के एक बहुत बड़े बन्दे थे, चर्चा आई है। इस चर्चा में हजरत मूसा उनसे वह इलम सीखने गये थे जो उनको अल्लाह ने सिखलाया था। हजरत खिज्र ने मूसा को साथ रखने की यह शर्त रखी थी कि "अगर तुझको मेरे साथ रहना है तो जब तक मैं किसी बात की चर्चा (खुद) न करूँ तू मुझसे कोई सवाल न करना।"18/70 और हजरत मूसा ने यह शर्त मंजूर कर ली। यात्रा की राह में एक लड़का मिला जिसको हजरत खिज्र ने मार डाला जिस पर हजरत मूसा ने सख्त ऐतराज किया। इसका उत्तर आगे जाकर हजरत खिज्र ने क्या दिया यह सब हम कुरान शरीफ की आयतों के माध्यम से देखें।

(1) "फिर दोनों (और) आगे बढ़े यहाँ तक कि (रास्ते में) एक लड़के से भेंट हुई तो (हजरत खिज्र ने) उसको मार डाला। (मूसा ने) कहा क्या एक बेकसूर शख्स को तुमने (नाहक) मार डाला (वह भी) किसी के (कत्ल के जुर्म के किसास यानी) बदले में नहीं। यह तो तुमने बड़ा बेजा काम किया।" 18/74

(2) "आगे जाकर खिज्र ने इस लड़के की हत्या करने का कारण इस प्रकार बतलाया . "और वह जो लड़का था उसके माता पिता ईमानवाले थे, तो हमको यह डर हुआ कि (यह लड़का सयाना होने पर बदकिरदार होगा और) वह सरकशी और कुफ्र से उन पर वला न डाले।" 18/80 "इसलिये हमने यह चाहा कि (उसको मार दें और) उनका परवरदिगार उसके बदले में और (बेटा दे) जो उससे जियादः पाक और हो।" 18/81

इन दो आयतों से स्पष्ट है कि इस्लाम में केवल इस भय के आधार पर कि कोई आगे जाकर काफ़िर हो सकता है तो उसे काफ़िर होने से बचाने के लिए कत्ल किया जा सकता है।

कयामत के दिन जब सूर (नरसिंहा) फूँका जायेगा और सब लोग कब्रों से उठाकर अल्लाह के सामने जमा किये जायेंगे तब उस समय काफ़िरों पर क्या बीतेगी इसका विशद विवरण इसी सूरः 18 की आखिरी आयतों में इस प्रकार दिया है।

(1) "और हम उस दिन काफ़िरों के सामने दोजख पेश करेंगे।" 18/100

(2) "जिनकी ऑखों पर मेरी याद के लिए पर्दा पड़ा था और जो न सुन ही सकते थे।" 18/101

(3) "अब क्या काफ़िर इस ख्याल में हैं कि मुझको छोड़कर मेरे बन्दों को हिमायती बनावेंगे। हमने काफ़िरों की मेहमानी के लिए दोजख तैयार कर रखा है।" 18/102

(4) "यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार की आयतों और उसके सामने हाजिर होने को न माना तो इनके काम अकारथ हो गये, फिर कयामत के दिन हम इनकी कुछ भी तौल न कायम करेंगे (क्योंकि) आखिरत के लिए उनके नेक कर्मो का पलड़ा तो खाली ही है।" 18/105

(5) "यह उनका बदला है दोजख। इस पर कि उन्होनें कुफ्र (इन्कार) किया और मेरी आयतों और मेरे पैगम्बर की हँसी उड़ाई।" 18/106

सूरः 19

22 7 जैसा कि हम इस "काफ़िर" शीर्षक के अंतर्गत बार-बार दिखला चुके है कि इस्लाम मे कुरान शरीफ़ द्वारा निर्धारित मुख्य सिद्धांतों को न मानने और पैगम्बर और अल्लाह की आयतों की हँसी उड़ाने या उसकी उपेक्षा करने के परिणाम कितने भयानक हैं। उनके लिये अल्लाह की तरफ से इस लोक और परलोक दोनों में ही भारी दण्ड की व्यवस्था है—इस लोक मे मुसलमानों के हाथ पूर्ण पराजय के द्वारा या अल्लाह द्वारा भेजे गये अजाब के पथराव से नष्ट होने के द्वारा और परलोक में अत्यन्त कष्टप्रद शाश्वत नरकवास के माध्यम से आदि-आदि। सूरः 19 में आयत 66 से लेकर 87 तक अल्लाह ने काफ़िरों को बुरी तरह से धिक्कारा है और उन्हें हर प्रकार के दण्ड की चेतावनी दी है :

(1) "और आदमी पूछा करता है कि जब मैं मर जाऊँगा तो क्या फिर जिन्दा करके उठाया जाऊँगा।" 19/66 "(क्या यह पूछते समय) आदमी याद नहीं करता कि हमने पहले भी तो इसको पैदा किया था और (जबकि) वह कुछ भी चीज न था।" 19/67

(2) "तो (ऐ पैगम्बर) तेरे परवरदिगार की कसम हम उनको और शैतानों को (भी) जमा करेंगे, फिर उनको दोजख के गिर्द इस हाल में हाजिर करेंगे कि घुटनों के बल गिरे होंगे।" 19/68 इस आयत से स्पष्ट है कि अल्लाह और इस्लाम की निगाह में काफ़िर ओर शैतान एक बराबर हैं।

3 "फिर हम हर फिर्के में से उन लोगा को खींच निकालेंगे जो उस रहीम अल्लाह से सबसे जियाद: सरकशी किया करते थे " 19 69

(4) "फिर जो लोग इस जहन्नम में जाने के जियादः लायक हैं हम उनको खूब जानते है।" 19/70 "और तुममें से कोई नहीं जो इसमें होकर न गुजरे यह वादा मेरे परवरदिगार पर लाजिम और मुकर्रर है।" 19/71। आयत 19/71 के फुटनोट मे दिया गया है कि "आखिरत मे हर शख्स को दोजख की राह से गुजरना पड़ेगा। अलबत्ता बदकार (यानी काफिर) वहीं रह जायेगें और नेककारों (यानी ईमानवालों) को वहां न रहने देकर जन्नत में दाखिल किया जायेगा।

(5) "फिर हम परहेजगारों को नजात देंगे और अन्यायियों को उसी में घुटनों के बल पड़ा छोड़ देंगे।" 19/72

(6) "जब हमारी खुली आयतें लोगों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो काफिर ईमानवालों से पूछते हैं कि (हम) दोनों फरीकों में से मकान किनके जियादः अच्छे हैं और मजलिसें किसकी जियादः अच्छी हैं।" 19/73 "और (इनकी यह बकवास है) हम इनसे पहले बहुत सी जमातों को जो सामान और शान में इनसे कहीं अच्छी थीं मिटा चुके हैं।" 19/74

(7) "(ऐ पैगम्बर) इनसे कह दो कि जो शख्स गुमराही में पड़ा है अल्लाह उनको और ढील देता चला जारहा है यहां तक कि जब वे उस चीज को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है.... तो जो (अल्लाह का) अजाब हो या कयामत तो (उस वक्त) इनको पता चल जायगा कि अब किसका मकान बुरा है और किसका जत्था कमजोर है।" 19/75

(8) "भला तुमने उस शख्स को देखा जिसने हमारी आयतों से इन्कार किया और कहने लगा (कयामत होगी) तो वहाँ भी मुझको माल और संतान मिलेगी।" 19/77 "क्या उसको गैब की खबर मिल गई है या इसने अल्लाह से वादा ले रखा है।" 19/78 "हरगिज नहीं जो कुछ यह बकता है हम लिख रखते हैं और इसके हक में सजा बढ़ाते चले जायंगे।" 19/79 "और यह जो माल और औलाद अपने पास बनाता है यह सब हमारे इख्तियार में रह जायेगा और अकेला हमारे सामने हाजिर होगा।" 19/80 "और इन ने जो अल्लाह के सिवाय पूजित बना रखें हैं ताकि वे इनके मददगार हों।" 19/81 "कभी नहीं ये (पूजित खुद) इनकी पूजा में इन्कार करेंगे और उल्टे इनके बैरी हो जायेगें।" 19/82

(9) "(ऐ पैगम्बर) क्या तुमने नहीं देखा कि हमने शैतानों को काफिरों पर छोड़ रखा है कि वह उनको उकसाते रहते हैं।" 19/83

(10) "तो तुम इन (काफिरों) पर (सजा उतरने की) जल्दी न करो, हम तो उनके लिए (दिन) गिन रहे हैं।" 19/84 (इस आयत से स्पष्ट है कि समय के पूर्व अल्लाह भी काफिरों को या तो सजा देने की चाह नहीं रखता या वो इनको सजा नहीं देता)।

(11) "जिस दिन हम परहेजगारों को अल्लाह के सामने मेहमानों की तरह जमा करेंगे।" 19/85 "और गुनहगारों को दोजख की ओर प्यासा हांकेंगे।" 19/86 "वहाँ लोगों को सिफारिश का अधिकार न होगा, सिवाय उसके जिसने अल्लाह से वादा ले लिया हो।" 19/87

सूरः 20

22.8 काफिर के नरकवास का एक भिन्न दृश्य सूरः 20 की आयत 74 में खींचा गया है "कुछ शक नहीं कि जो आदमी अपराधी होकर अपने परवरदिगार के सामने गया उसके लिए

जहन्नम है जिसमें वह न तो मरेगा ही और न जिन्दा रहेगा।" 20/74

कयामत के दिन काफ़िरों के साथ कैसा कठोर व्यवहार किया जायेगा इसकी एक झलक सूरः 20 की निम्न आयतों में इस प्रकार मिलती है :

(1) "और जिसने मेरी याद में मुँह मोड़ा तो जिन्दगी (हर तरह की) तंगी में गुजरेगी और कयामत के दिन हम उनको अन्धा उठावेंगे।" 20/124

(2) "वह कहेगा कि ऐ मेरे परवरदिगार तूने मुझको अन्धा क्यों उठाया, और मैं तो (दुनिया में अच्छा खासा) देखता था।" 20/125 "(अल्लाह) फरमायेगा ऐसे ही हमारी आयते तेरे पास पहुँची थी, तो तूने (उनकी तरफ से आँखें बन्द की और) उनको भुला दिया और इसी तरह आज तू भुलाया जा रहा है।" 20/126

(3) "और जो इंसान (हद से) बढ़ चला और अपने परवरदिगार की आयतों पर ईमान न लाया हम उसको ऐसा ही बदला दिया करते हैं और आखिरत की सजा बहुत ही सख्त और देर तक रहने वाली है।" 20/127

(4) "क्या इससे लोगों की हिदायत (सूझ) न हुई कि इनसे पहले हमने कितनी जमातो को मिटा दिया (और जबकि) ये लोग उन्हीं (तबाह हुई जमातों) की जगहों में (खुद) चल फिरे रहे हैं।" 20/128

(5) "और अगर तुम्हारे परवरदिगार की ओर से पहले से एक बात न तय होती और (अजाब उतारने की एक) मियाद मुकर्रर न होती तो (इनको जल्द से जल्द) जरुर अजाब आ घेरता।" 20/129 "(ऐ पैगम्बर) जैसी बातें ये (मक्का के काफ़िर) बनाते उन पर सब्र करो...।" 20/130

यहाँ पाठकों को यह बताना उचित होगा कि कुरान शरीफ़ के शुरु के सूरः या अध्याय काफी लम्बे हैं और उनकी आयतों का आकार भी बड़ा है। बाद के अध्याय और आयते अपवाद छोड़कर छोटी होती जाती हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि कुरान शरीफ़ मे के कुल 114 अध्यायों में शुरु के 20 अध्याय आकार में सारी कुरान के आधे से अधिक है।

सूरः 21

22 9 कुरान शरीफ़ का अध्याय या सूरः 21 काफ़िरों से ही इस प्रकार शुरु होता है : "लोगो के हिसाब (का समय) नजदीक आ लगा और इस पर भी वे गफलत में मुँह मोड़े हुए हैं।" 21/1 "उनके पास उनके परवरदिगार की ओर से (कुरान की आयतों के जरीये) जो भी नयी नसीहत आती है (उसे बेपरवाह होकर) हँसी-खेल बनाते हुए सुनते हैं। 21/2 "उनके दिल गफलत में पड़े हैं, और वह अन्यायी चुपके-चुपके कानाफूसी करते हैं कि यह (मुहम्मद) है ही क्या सिवाय तुम ही जैसा एक आदमी फिर आँखों देखते हुए तुम क्यों (उसके) जादू में पडते हो।" 21/3

23 0 आगे की आयत 30 से 50 तक सीधे काफ़िरों से संबंधित हैं। हम उनमें से कुछ आयतें नीचे दे रहे हैं :

1 "क्या जो इन्कार करने वाले हैं उन्होंने नहीं देखा कि और जमीन जो

पहले आपस में मिले जुले थे फिर हमने उनको अलग अलग किया, और पानी से तमाम जानदार चीजें बनाई तो क्या (यह जानकर भी लोग) ईमान नहीं लाते।" 21/30

(2) "और (ऐ पैगम्बर) इन्कार करने वाले (ये काफ़िर) जब भी तुमको देखते हैं बस तुम्हारी हँसी उड़ाने लगते हैं कि क्या यही शख़्स है जो तुम्हारे पूज्यों की (बुरी तरह) चर्चा करता है।" 21/36

(3) "क्या ही अच्छा होता अगर ये इन्कार करने वाले उस समय की हालत को समझ पाते जबकि (दोजख की) आग (उनको आ घेरेगी और तब वह उसको) न अपने मुंह पर से रोक सकेंगे और न अपनी पीठ पर से, और न उनको (उससे बचाव की कहीं से) मदद मिलेगी।" 21/39

(4) "बल्कि वह (कयामत) एकदम से उन पर आ पड़ेगी और उनके होश गुम कर देगी फिर वह उसे न तो हटा सकेंगे और न उनको (उससे बचने की) मोहलत ही मिलेगी।" 21/40

(5) "और (ऐ पैगम्बर) अगर इनको तुम्हारे परवरदिगार की सजा की हवा भी लग जाये तो बोल उठेंगे कि अफसोस हम ही अपराधी थे।" 21/46

(6) "और यह (कुरान) बरकत वाली नसीहत है जो हमने उतारी है, तो क्या तुम लोग इसको नहीं मानते।" 21/50

23.1 जैसा कि हम पहले कह चुके हैं काफ़िरों की चर्चा कुरान शरीफ़ में छाई हुई सी है इसलिए कुरान शरीफ़ का मर्म समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम काफ़िरों के बारे में कुरान शरीफ़ में वर्णित सभी पहलुओं से परिचित हों। अब हम सूरः 21 की अन्तिम आयतों में काफ़िरों से जुड़ी आयतों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं :

(1) "और जिस बस्ती को हमने बर्बाद कर दिया वे इस हद तक कुफ्र पर पहुंच चुके थे कि मुमकिन नहीं था कि वह लोग (कुफ्र से) पलटते।" 21/95 "और (अजाब का) सच्चा वादा पास आ पहुँचे तो एकदम काफ़िरों की आँखें खुली (की खुली) रह जावें।" (और बोल उठे कि) हाय, कम्बख्ती हमारी कि हम इससे गाफिल रहे बल्कि हम थे ही गुनहगार।" 21/97

(2) "(काफ़िरों उस रोज) तुम और जिन चीजों को अल्लाह के अलावा तुम पूजते हो, यह सब नरक का ईंधन बनेंगे और तुम सबको उसमें दाखिल होना होगा।" 21/98 अगर यह पूजने लायक होते तो उसमें न जाते और वह सब उस (दोजख की आग) में हमेशा (जलते) पड़े रहेंगे।" 21/98 "वहाँ इन लोगों की चिल्लाहट (मच रही) होगी और उसमें (कुछ) न सुन सकेंगे।" 21/100

(3) "(और) जिन लोगों के लिए हमारी तरफ से पहले से भलाई नियत है वह इस दोजख से दूर रखें जायेंगे।" 21/101

सूरः 22

23.2 सूरः 22 काफ़िरों की बड़ी ही स्पष्ट व्याख्या करती है और उनको कयामत के समय होने वाले भय से सचेत करती हुई और नरक यातना से सावधान करती हुई उन्हें ईमानवाले या मुसलमान होने के लाभों का भी विस्तार से वर्णन करती हैं। "ऐ लोगों, अपने परवरदिगार (के कोप) से डरो। (क्योंकि) कयामत का भूचाल बेशक एक बड़ी भयानक चीज है।" 22/1 "और यह कि वह घड़ी (कयामत) अवश्य आनी है उसमें किसी तरह का शक नहीं और जो

लोग कब्रों में है अल्लाह उनको जिला उठायेगा।" 22/7 "और जो लोग अल्लाह की शान के बारे में झगड़ते हैं ऐसों के लिए (सजा) संसार में जिल्लत है और कयामत के दिन हम उनको (नरक की आग में) जलने की सजा चखायेंगे।" 22/9

सूरः 22 की आयत 19 स्पष्टतम शब्दों में यह बतलाती है कि ईमानवालों और काफ़िरों के मार्ग एकदम विपरीत हैं—और काफ़िरों के लिये अल्लाह की ओर से केवल सजा का ही प्राविधान है।

(1) "यह दो (फरीक हैं) एक दूसरे के आपसे में विरुद्ध अपने परवरदिगार (के बारे) मे झगड़ते हैं (एक फरीक अल्लाह को मानता है और एक नहीं मानता) तो जो लोग नही मानते है उनके लिए आग के कपड़े ब्योंते गए हैं। (यानी आग उनके बदन से ऐसा लिपटेगी जैसे कपड़ा) उनके सिरों पर खौलता पानी डाला जायेगा।" 22/19

(2) "जिससे जो कुछ उनके पेट में है और (उनकी) खालें जल जायेगी।" 22/20

(3) "और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज होंगे।" 22/21

(4) "(इस दोजख के दुख और) घुटन से जब निकलना चाहेंगे तो उसी में फिर ढकेल दिये जावेंगे। और (कहा जायेगा कि बस हमेशा) जलने की सजा का अजाब चखते रहो।" 22/22

(5) "बेशक अल्लाह ईमानवालों से दुश्मनों को (यानी उनको ईमान से कुफ्र की ओर घसीटने वाले शैतान या काफ़िरों को) हटाता रहता है।" 22/38 "......और जो अल्लाह के दीन की मदद करेगा अल्लाह अवश्य उसकी मदद करेगा। बेशक अल्लाह बड़ा जबरदस्त बेहद जोर वाला है।" 22/40 "और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में हिजरत की फिर (जिहाद किया और) मारे गये या मर गये उनको बेशक अल्लाह उम्दा रोजी देगा।"

23.3 अल्लाह और उसके पैगम्बरों को झुठलाने वाले काफ़िरों के बारे में अल्लाह कहते है

".....फिर हमने काफ़िरों को मुहलत दी (कि ईमान या कुफ्र में से कोई चुन लें) फिर हमने उनको धर पकड़ा तो मेरी नाराजगी कैसी रही।" 22/44 "तो (इसी तरह) जुल्मवाली (बहुतेरी बस्तियाँ हमने तबाह कर दीं क्योंकि वे गुनहगार थीं। पस अपने छतों के बल गिर पड़ी हैं और कितने कुएँ बेकार और पक्के महल वीरान (पड़े हैं)।" 22/45 इस प्रकार यह अल्लाह की तरफ से काफ़िरों को पैगाम है कि "ईमान या कुफ्र में से कोई चुन लें।" वरना परिणाम उनके सर्वनाश में ही है जिसमें उनकी बस्तियाँ, मकान, महल और कुएँ आदि को नष्ट करके मिट्टी में मिला देने का आदेश है। इतिहास साक्षी है कि जब-जब और जहाँ-जहाँ इस दुनिया में मुसलमान प्रबल बैठे उन्होंने कुरान वर्णित अल्लाह के इन आदेशों का अक्षरशः पालन करने का प्रयत्न किया।

काफ़िरों पर भारी तानाकशी करती हुई सूरः 22 की 72वीं आयत कहती है "और (ऐ पैगम्बर) जब इनको हमारी खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम काफ़िरों के चेहरों पर नाखुशी देखते हो, करीब होता है कि यह लोग हमारी आयतें सुननेवालों पर हमला कर बैठे। (ऐ पैगम्बर) उनसे कहो कि (आयतों से ही चेहरे बिगाड़ रहे हो) मैं इससे भी बुरी चीज तुमको सुनाऊँ (यह नरक की) आग है जिसका वायदा अल्लाह ने मुन्किरों (विमुखों) के लिए किया है और लौटकर जाने का वह बहुत बुरा ठिकाना है।" 22/72

सूरः 23

23.4 जैसाकि हम पहले कह चुके हैं कि "काफ़िर" का विषय क़ुरान में शुरू से आखिर तक छाया हुआ है। इसलिये यह ज़रूरी है कि क़ुरान शरीफ़ का मर्म ठीक से समझने के लिए पाठक इस "काफ़िर" वाले विषय को प्रत्येक दृष्टिकोण से समझ लें। क़ुरान का मुख्य उद्देश्य है कि सब मनुष्य एक अल्लाह के दीन में आ जाँय। परन्तु क़ुरान के अनुसार आपसी फूट ही के कारण मनुष्य अलग-अलग दीनों में बंट गए हैं जो कि बहुत गलत बात है। अल्लाह के दीन से अलग हुए सब काफ़िर हैं इनको यथासमय अल्लाह की तरफ से भारी सजा मिलेगी। यानी कयामत के बाद दोज़ख या नरक। भला तो काफ़िरों का हो ही नहीं सकता। यही सब बाते सूरः 23 की आयतें 53 से 117 तक में आई हैं। इनमें से कुछ आयतें हम नीचे दे रहे हैं

(1) "फिर लोगों ने आपस में फूट करके (अपना) दीन जुदा-जुदा कर लिया। जो (तरीक़:) जिस फ़िर्के ने इख्तियार कर लिया है वह उसी पर रीझ रहा है।" 23/53 "तो (ऐ पैगम्बर) तुम एक समय तक इनको इनकी सफलता में भूले रहने दो।" 23/54

(2) "यहाँ तक कि जब हम इनमें से खुशहाल लोगों को आफ़त में धर पकड़ेंगे तभी यह चिल्ला उठेंगे।" 23/64 "(तब उनसे कहा जायेगा कि) मत चिल्लाओ आज के दिन तुम हमारी मदद न पाओगे।" 23/65 "(याद करो जब क़ुरान में से) मेरी आयतें तुमको सुनाई जाती थीं तो तुम उल्टे पाँव भागते थे।" 23/66 "तब इस (क़ुरान) से अकड़े हुए उसे (यानी रसूल को) किस्सा कहने वाले की तरह छोड़कर चल देते थे।" 23/67 "तो क्या इन लोगों ने इस कलाम (क़ुरान) पर गौर नहीं किया....।" 23/68 "क्या यह लोग अपने पैगम्बर से जानकार नहीं हैं और उसे उपरी (अजनबी) समझते हैं।" 23/69

(3) "और जिन लोगों को आखिरत का यक़ीन नहीं है यह रास्ते से हटे हुए हैं।" 23/74 "और अगर हम इन पर रहम कर जायें और जो मुसीबत इन पर है उसको दूर कर दे तो (यह लोग) फिर अपनी शरारत पर अड़ जायें और गुमराही में फंसे रहें।" 23/75 "और (उनका हाल तो यह है कि) हमने इनको सजा में पकड़ा तो भी यह लोग अपने परवरदिगार के आगे न झुके और न आजिजी (विनय) की।" 23/76

(4) "(ऐ पैगम्बर) इनसे पूछो कि सात आसमानों का मालिक और इस बड़े तख्त का मालिक कौन है।" 23/86 "बतायेंगे कि अल्लाह के लिए है। तब उनसे कहो फिर तुम (उससे) क्यों नहीं डरते।" 23/87

(5) "और (ऐ पैगम्बर) हमको सामर्थ्य है कि जिस सजा का वादा इन (काफ़िरों) से कर रहे हैं (उन पर नाजिल करके) तुमको दिखा दें।" 23/95

(6) "तत्पश्चात काफ़िरों को नरक में दी जानेवाली यातनाओं का विवरण इस प्रकार होता है :

"फिर जब नरसिंघा (सूर) फूँका जायेगा तो उस दिन लोगों में न तो रिश्तेदारियाँ रहेंगी और न एक दूसरे की बात पूछेंगे।" 23/101 "और जिनका पल्ला हल्का होगा तो यही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को नुकसान पहुँचाया और हमेशा नरक में रहेंगे " 23/103 "आग

उनके मुँह को झुलसाती होगी और उसमें उनके चेहरे बिगड़ गये होंगे।" 23/104 "(उनसे कहा जायेगा) क्या तुमको हमारी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं और तुम उनको झुठलाते थे।" 23/105 "वह कहेगें ऐ हमारे परवरदिगार! हमको हमारी कमबख्ती ने आ दबाया था ओर हम भटके हुए थे।" 23/106 "(वे पुकारेंगे कि) ऐ हमारे परवरदिगार! हमको इस (आग) से निकाल और अगर हम फिर ऐसा करें तो बेशक गुनहगार होंगे।" 23/107

(7) "(और तब अल्लाह) फरमायेगा इसी (आग) में जिल्लत के साथ पड़े रहो ओर मुझसे बात न करो।" 23/108 "(तो ऐ काफ़िरों) तुमने उन (ईमानवालों) की हँसी उड़ाई, यहाँ तक कि उनके पीछे तुमने मेरी याद (भी) भुला दी और तुम उनकी हँसी उड़ाते रहे।" 23/110 "तो आज मैने उनको उनके सब्र का बदला दिया कि वही मुराद पावेंगे।" 23/111

(8) "बेशक इन्कारी (काफ़िरों) लोगों का कभी भला न होगा।" 23/117 "तुममे से जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनसे अल्लाह का वादा है कि उनको जमीन में खलीफा बनायेगा....और जो आदमी इसके बाद काफ़िर हो तो ऐसे ही लोग गुनहगार हैं।" 24/55

सूरः 25

23 5 अब हम सूरः 25 का अवलोकन करते हैं जिसमें काफ़िरों की नरक यातना का विशद वर्णन आयत 37 से शुरु हो जाता है :

(1) "असली बात यह है कि यह लोग कयामत को झुठलाते हैं उनके लिए हमने (नरक की) आग तैयार कर रखी हैं।"25/11

(2) "जब वह आग उनको दूर से देखेगी तो वे उसकी सनसनाहट और जोश खरोश को सुनेगें।" 25/12 "और जब उस (नरक) की किसी तंग जगह में (जंजीरों में) जकड़कर वे डाल दिये जायेंगे तो वहाँ मौत को पुकरेंगे।" 25/13

(3) "(फरिश्तें कहेंगे कि) एक मौत को न पुकारों बल्कि बहुत मौतों को पुकारों।" 25/14

(4) "(ऐ पैगम्बर) इनसे पूछों कि यह (दोजख) बढ़कर है या हमेशा रहने के बाग जिसका वादा परहेजगारों को मिला है....।" 25/15 "और जो लोग हमसे (कयामत में) मिलने की उम्मीद नहीं रखते वह कहा करते हैं कि हम पर फरिश्ते क्यों नहीं उतरे या हम अपने परवरदिगार को देखें (तो यकीन करें)।" 25/21 "जिस दिन ये लोग फरिश्तों को देखेंगे उस दिन गुनहगारों को कोई खुशी होगी और फरिश्तों को देखकर चिल्ला उठेंगे कि या पनाह किसी आड में हो जांय।" 25/22 "...फिर उनको बिखरी हुई धूल कर देगें।" 25/23 "...और वह दिन काफ़िरों पर कठिन होगा।" 25/26 "और जिस दिन गुनहगार अपने हाथ चबा-चबा लेगा और कहेगा कि किसी तरह मैनें पैगम्बर के साथ राह पकड़ी होती।" 25/27 "हाय मेरी कमबख्ती! काश मैने फलां को दोस्त न बनाया होता।" 25/28 "उसने तो मुझ तक नसीहत आने के बाद भी मुझको बहका दिया और शैतान बेशक आदमियों को समय पर दगा देने वाला है।" 25/29 "जो लोग औधें मुँह नरक की तरफ हांके जायेगें, यही लोग बुरी जगह मे होंगे वही राह से बहुत भटके हुए हैं " 25/34

23 6 अल्लाह की निगाह में काफ़िर हर दृष्टि से खराब हैं और इतने खराब हैं कि उन्हें स्वय

अपने पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहिब को काफ़िरों सावधान रहने को सचेत करना आवश्यक जान पड़ा। "तो (ऐ पैगम्बर) तुम काफ़िरों का कहा न मानना और इस (कुरान की दलीलों) से उनका सामना बड़े जोर से करो।" 25/52 "और जब काफ़िरों से कहा जाता है कि रहमान आगे सज्दः करो तो कहते हैं कि रहमान क्या चीज है? क्या जिसके आगे तुम हमें सज्दः करने को कहो उसी के आगे झुकने लगें? और उनकी नफरत बढ़ती ही जाती है।" 25/60 "कयामत के दिन उसको दोहरी सजा दी जावेगी और अपमान के साथ उसी हाल में हमेशा पड़ा रहेगा।" 25/69 "(ऐ पैगम्बर) कह दो कि मेरा परवरदिगार तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करता अगर तुम उसे पुकारो। जबकि तुमने (उसकी आयतों को) झुठलाया है तो अब तो उसकी सजा तुम्हारे लिए लाजिमी है।" 25/77

सूरः 26

23.7 कयामत के समय काफ़िरों पर क्या बीतेगी और उस समय वह किस प्रकार ईमानवालो मे शामिल होने को तरसेगें इन सबकी झलक सूरः 26 की आयतें 91 से 102 में इस प्रकार मिलती है :

(1) "और दोजख गुमराहों के सामने पेश की जायेगी।" 26/91

(2) "और उन दोजखियों से पूछा जायगा कि जिन चीजों को तुम पूजते थे वह कहाँ हैं।" 26/92

(3) "अल्लाह के सिवाय क्या वह तुम्हारी कुछ मदद कर सकते हैं या तुम्हारी हिमायत मे अल्लाह से बदला ले सकते हैं।" 26/93

(4) "फिर वे (पूजित) और वह गुमराह सब औंधे मुँह (नरक में) झोंक दिये जावेगे।" 26/94

(5) "और इबलीस (यानी शैतान) का सारा लश्कर औंधे मुँह (नरक में) ढकेल दिया जायेगा।" 26/95

(6) "(गुमराह और उनके पूजित दोनों ही) वहाँ (आपस में) झगड़ते हुए यों कहेंगे।" 26/96 "अल्लाह की कसम हम तो जाहिर गुमराही में थे।" 26/97 "तो अब न तो कोई हमारी सिफारिश करने वाला है।" 26/100 "और न कोई दिली दोस्त।" 26/101

(7) "सो यदि हमको (दुनियां में) फिर लौटकर जाने का मौका मिले तो हम ईमानवालों में हों।" 26/102

सूरः 27

23.8 अब हम सूरः 27 पर निगाह डालते हैं कि इस अध्याय में कुरान शरीफ काफिरो के बारे में क्या कहते हैं :

"जो लोग आखिरत पर यकीन नहीं करते..... तो यह लोग भटके फिरते हैं।" 27/4 "यही लोग हैं जिनको बुरी मार है और यही लोग आखिरत में बड़े घाटे में रहेंगे।" 27/5 "तो (ऐ पैगम्बर) अल्लाह ही पर भरोसा रखो बेशक तुम खुली हुई सच्चाई पर हो।" 27/79 "तुम

मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को आवाज सुना सकते हो (खासकर) ऐसी हालत मे कि वह पीठ फेरकर भाग खड़े हों।"27/80 "और न तुम अन्धों को गुमराही से राह पर ला सकते हो। तुम तो बस उन्ही को सुना सकते हो जो हमारी आयतों का विश्वास रखते हो सो वे (सुनने के बाद) फरमाबरदार हो जाते हैं।" 27/81 "और जब वादा (कयामत) इन लोगों पर पूरा होगा तो हम जमीन से इनके लिए एक जानवर निकालेंगे वह इनसे बयान कर देगा इसलिए कि ये लोग हमारी आयतों पर यकीन नहीं रखते थे।" 27/82 "इस आयत के फुट नोट मे लिखा है कि, "कयामत नजदीक होने से पहले मक्का में सफा पहाड़ फटेगा और उसमें से एक जानवर निकलेगा। लोगों से बात करेगा कि अब कयामत नजदीक है और सच्चे ईमानवालों को और मुन्किर जो अभी अपने ऐब व गुनाह छिपाये हैं उनको निशान देकर जुदा-जुदा कर देगा।"

23 9 आगे दी जा रही आयतों में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार कयामत के दिन काफिरों को कतारों में खड़ा किया जायेगा और अल्लाह उनसे क्या पूछेगा।

(1) "और जिस दिन हर उम्मत में से उस जमात को जमा करेंगे जो हमारी आयतो को झुठलाया करते थे तो उनको कतारों में खड़ा किया जायेगा।" 27/83

(2) "यहाँ तक कि जब सब हाजिर हो जायेंगे तो (अल्लाह उनसे) पूछेगा कि बावजूद कि तुमने हमारी आयतों को अच्छी तरह समझा भी न था क्यों तुमने उनको झुठलाया।" 27/84

(3) "और चूँकि यह लोग सरकशी करते रहे, हमारा (अजाब का) वादा उन पर पूरा होकर रहेगा और यह लोग बोल भी न सकेंगे।" 27/85

(4) "और जिस दिन सूर फूँका जायेगा तो जो आसमान में है और जो जमीन मे है सब घबरा जायेंगे और सब उसके सामने झुके हाजिर होगे।" 27/87

सूरः 28

24 0 सूरः 28 में काफ़िर संबंधित अधिकतर आयतें कयामत से ही सम्बन्ध रखती और लगभग उसी प्रकार की हैं जैसीकि हम पिछले कई अध्यायों के संदर्भ में दे चुके हैं। इसलिए इन सब आयतों के नम्बर इस अध्याय के अंत में दिये जायेंगे। यहाँ हम केवल तीन आयते दे रहे हैं कि जिनमें अल्लाह ने हजरत मुहम्मद को यह बतलाया कि उन्होंने कुरान जैसी किताब क्यो उतारी :

(1) "और तुम्हें क्या उम्मीद थी कि तुम पर (कुरान जैसी) किताब उतारी जायेगी। सिवाय इसके कि यह तेरे पालनकर्ता की कृपा से दी गई सो तू काफ़िरों का मददगार न हो।" 28/86

(2) "और ऐसा न हो कि जब अल्लाह के हुक्म तुम पर उतर चुके हैं उसके बाद ये (काफ़िर) तुमको उनसे रोकने में कामयाब हो जायं और अपने परवरदिगार की तरफ (लोगो को) बुलाये चले जाओ और मुशरिकों में न हो जाना।" 28/87

(3) "और अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को पूज्य समझकर न पुकारो।" 28/88

उपरोक्त तीन आयतों से स्पष्ट अल्लाह हजरत मुहम्मद साहब को बतलाते हैं कि

कुरान आने के बाद उन्हें काफ़िरों की कोई भी मदद नहीं करनी है, यह नहीं हो कि कहीं काफ़िर तुम्हें कुरान से विमुख कर दें, और तुम कहीं बहुदेवपूजकों में न हो जाओ।

सूरः 29

24.1 सूरः 29 में अल्लाह ईमानवालों को काफ़िरों से इस प्रकार सावधान करते हैं :

(1) "और बेशक अल्लाह उनको जान लेगा जो लोग ईमान लाये हैं और बेशक जान लेगा उनको जो दगाबाज हैं।" 29/11

(2) "और काफ़िर ईमानवालों से कहते हैं कि हमारी राह पर चलो और तुम्हारे गुनाह हम उठा लेंगे। हांलाकि यह लोग जरा भी उनके गुनाह नहीं उठा सकते। और यह झूठे हैं।" 29/12

(3) "और बेशक अपने (गुनाहों के) बोझ उठायेंगे और अपने बोझों के साथ और भी बोझ उठायेंगे। और जैसी-जैसी झूठ बातें यह लोग बनाते रहे हैं कयामत के दिन इनसे पूछा जायेगा।" 29/13

(4) "और जो लोग अल्लाह की आयतों से और (आख़िरत में) उससे मिलने से मुन्किर (विमुख) हुए वे मेरी कृपा से निराश हुए और उनको दुखदायी सजा होनी है।" 29/23

(5) "और उससे बढ़कर जालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ बांधे या जब सत्य बात उन तक पहुँचे तो उसको झुठलायें। क्या इन्कार करने वालों (काफिरों) के लिए दोजख़ ही ठिकाना नहीं हैं।" 29/68

सूरः 30

24.2 कुरान शरीफ़ के सूरः 30 की 60 आयतों में से कुछ छोड़कर सब प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से काफरों से ही संबंधित हैं। इनमें से जो कुछ आयतें हम नीचे दे रहे हैं उसमें चार आयत वो हैं जिनमें अल्लाह ने कहा है कि अल्लाह का दीन ही एकमात्र सीधा रास्ता है और अपने पेगम्बर हजरत मुहम्मद को सावधान किया है कि कहीं काफ़िर उन्हें अल्लाह के दीन से डगमगा न दें।

(1) "...सो (ऐ पैगम्बर) तू एक तरफ होकर (अल्लाह के) दीन की तरफ अपना मुँह सीधा रख....यही दीन सीधा है मगर अक्सर लोग नहीं समझते।" 30/30 "और न उन लोगों मे होना जिन्होंने अपना दीन अलग-अलग कर लिया और फिर्के-फिर्के हो गये। जो जिस फिर्के मे है, वह उसी में मगन हैं।" 30/32 "तो (ऐ पैगम्बर) इससे पहले कि अल्लाह की तरफ से वह रोज (कयामत) आ मौजूद हो जिसका आना अल्लाह की तरफ से लाजिमी है तू दीन के रास्ते पर अपना मुँह सीधा किये रह...।" 30/43 "तो (ऐ पैगम्बर) अल्लाह के दीन पर तू सब्र से कायम रह बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है ऐसा न हो कि जो लोग यकीन नहीं रखते वे तुझको ईमान से डगमगा दें।" 30/60

(2) "जो कुफ्र करता है तो उसी पर कुफ्र (की बला) पड़ेगी और जो अच्छे काम करता है तो वह अपने ही लिए (आराम का) सामान आरस्त कर रहा है।" 30/44 काफिरों के संदर्भ में इस आयत से स्पष्ट है कि अच्छे काम करने का अर्थ अल्लाह के दीन पर ईमान लाने का ही है

(3) "कयामत पर शक करने वाले काफ़िरों को कयामत के दिन ईमानवाले जबाव देगे कि "...तुम तो अल्लाह के लिये कयामत के दिन तक ठहरे रहे और यह तो (अब) जी उठने का ही दिन है, मगर तुमको यकीन न था।" 30/56 "तो उस दिन गुनहगारों को न उनका उज्र करना फायदा पहुँचायेगा और न उनकी तौबः सुनी जायेगी।" 30/57

सूरः 31, 32

24 3 कुरान शरीफ़ को सुनने से भी मुँह फेर लेना और अपने बाप दादों की ही मान्यताओ पर चलने की जिद इस्लाम की निगाह में कुफ्र है और इस कुफ्र की सजा भी मिलनी निश्चित हे।

(1) "और जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो अकड़ता हुआ मुँह फेर लेता है, मानो उनको सुना ही नहीं मानो उसके दोनों कान बहरे हैं। सो (ऐ पैगम्बर) उसे दुखदाई अजाब की खुशखबरी सुना दो।" 31/7

(2) "जब इनसे कहा जाता है कि (कुरान) जो अल्लाह ने उतारा है उस पर चलो तो जबाब देते हैं कि नहीं हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादों को पाया। भला अगर शैतान उन (के बड़ों) को दहकती हुई। (दोजख की) आग की तरफ बुलाता रहा है तो भी (क्या उसी रास्ते पर चलेंगे)।" 31/21 सूरः 32 में भी काफ़िरों को भारी सजा के पैगाम के साथ साथ साफ तौर पर यह भी बतला दिया गया है कि ईमानवाले और नाफर्मान कभी बराबर नहीं हो सकते। "तो क्या ईमान लाने वाला उसके बराबर है जो नाफर्मान है कभी बराबर नहीं हो सकते।" 32/18

24 4 काफ़िर जब कयामत को कब्र से दुबारा जिन्दा होने के बाद देखेंगे तो उनको भी इसलाम पर यकीन आ जायेगा। लेकिन तब उनका ईमान लाना व्यर्थ होगा और वो हमेशा के लिए दोजख में ही रहेंगे और अल्लाह का उनसे यही बदला है।

(1) "और (ऐ पैगम्बर) काश तुम अपराधियों को तो देखों कि जब वे कयामत के दिन अपने परवरदिगार के सामने सिर झुकाये खड़े हैं। (और फरियाद कर रहे है) कि ऐ हमारे परवरदिगार हमने खूब देख लिया और सुन लिया अब हमको फिर (दुनिया में वापस) भेज ताकि हम नेक नाम करें, अब हमको यकीन आ गया है।" 32/12

(2) "(इस पर अल्लाह फरमायेगा कि) अगर ऐसा हम चाहते तो हम आदमी को उसकी राह की सूझ दे देते, लेकिन मेरी बात पूरी सही उतरी कि जिन्नों और आदमियों सबसे मुझको दोजख भर देना हैं।" 32/13

(3) "सो अब मजा चखों कि तुमने इस (आखिरत के) दिन मुझसे सामना होने को भुला दिया था। (आज उसी के जबाब में) हमने भी तुमको भुला दिया और अपनी करनी के बदले में हमेशा रहने वाली (दोजख की) सजा का मजा चखा।" 32/14

(4) "और जो लोग अवज्ञाकारी हुए उनका ठिकाना (नरक की) आग होगा। जब उससे निकलना चाहेंगे उसी में फिर लौटा दिये जायेंगे। और उनसे कहा जायेगा कि जिस (दोजख के) अजाब (पर तुम यकीन न लाते थे और उस) को तुम झुठलाते रहे अब उसी का मजा चखो " 32/20

(5) "और (कयामत की) बड़ी सजा से पहले हम इनको (दुनिया में भी) अजाब का कुछ मजा चखायेंगे। शायद ये लोग (कुफ्र) से बाज आयें।" 32/21

(6) "और उससे बढ़कर अन्यायी कौन है कि उसको उसके परवरदिगार की आयतों से शिक्षा दी जाय और वह उनसे मुँह फेर ले। बेशक हमको ऐसे गुनहगारो से बदला लेना है।" 32/22

सूरः 33

24.5 कुरान शरीफ के अधयाय 33 की 75 आयतें अधिकतर काफिरों से ही संबंधित है इसमें काफिरों के विरुद्ध जिहाद की विशिष्ट चर्चा है। काफिरों के विरुद्ध युद्ध में अल्लाह किस प्रकार ईमानवालों की मदद करता है और जिहाद से जी चुराने वाले किसी प्राकर अल्लाह के कोप-भाजन हैं यह सब भी इस सूरः में विशेष रूप से बतलाया गया है :

(1) "ऐ नबी अल्लाह से डरते रहो और काफिरों और मुनाफिकों का कहा न मानना बेशक अल्लाह जानकार और हिकमतवाला है।" 33/1, "और वह वक्त याद करो जब हमने पैगम्बरों से और तुझसे और नूह से और इब्राहिम से और मूसा से और मरियम के बेटे ईसा से अहद लिया और पुख्ता अहद लिया था।" 33/7 "ताकि कयामत के दिन अल्लाह सच्चों से उनकी सत्यता का हाल पूछे। और काफिरों के लिए दुखदाई सजा तैयार रखी है।" 33/8

(2) "ऐ ईमानवालों अल्लाह का अपने ऊपर इहसान याद करो जब तुम पर (जग खदक के मौके पर) फौजें चढ़ आई फिर हमने उन पर आंधी भेजी और (फरिश्तों की) फौज (भेजी) जो तुमको दिखाई नहीं देती थी.....।" 33/9

(3) "जिस वक्त कि (दुश्मन) तुम पर तुम्हारे ऊपर से और नीचे की तरफ से आये थे और (डर के मारे तुम्हारी) आखें पथरा गई थीं और दिल मुँहो तक आरहे थे और तुम अल्लाह के बाबत तरह तरह के ख्याल करने लगे थे।" 33/10

(4) "और जब मुनाफिक और वह लोग जिनके दिलों में रोग थे बोल उठे कि अल्लाह और उसके पैगम्बर ने जो हमसे (फतह का) वादा किया था बिल्कुल धोखा था।" 33/12

(5) "और जब उनमें से एक गिरोह कहने लगा कि ऐ मदीने के लोगों! तुमसे (इस जगह दुश्मन के मुकाबलों में) नहीं ठहरा जायेगा तो लौट जाओ और उनमें से कुछ लोग पैगम्बर से घर लौट जाने की इजाजत माँगने लगे और कहने लगे कि हमारे घर खुले पड़े हैं और वह हरगिज खुले न थे उनका इरादा और कुछ नहीं सिर्फ भागने का था।" 33/13

(6) "ऐ पैगम्बर कहो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो तो यह भागना तुम्हारे काम न आयेगा।" 33/16

(7) "अल्लाह तुममे से उनको खूब जानता है जो (दूसरों को लड़ाई में शामिल होने से) रोकते और अपने भाई बन्दों से कहते हैं कि (लड़ाई से अलग होकर) हमारे पास चले आओ। और (खुद भी) लडाई में हाजिर नहीं होते सिवाय थोड़ी देर के लिए।" 33/18

8 "आयत 19 में अल्लाह बतलाते हैं कि ये जिहाद से डरने वाले युद्ध में आपदा के

समय बुरी तरह से डर जाते हैं और "फिर जब डर का मौका दूर हो जाता है (और ईमानवालो की फतह हो जाती है) तो दुश्मनों से मिले माल गनीमत पर टूट पड़ते हैं और तुम्हारे सामने आकर बढ़ चढ़कर तेज जबानों से बाते करते हैं...।"33/19

(9) "और अल्लाह ने काफ़िरों को (जंग से नाकामयाब) फेर दिया और गुस्से में उनको कुछ भी फायदा न पहुँचा। और अल्लाह ने ईमानवालों को लड़ने की नौबत न आने दी और अल्लाह बड़ा जबरदस्त और जोरवाला है।" 33/25

(10) "और किताबवालों में जो लोग (काफ़िरों के) मददगार हो गये थे अल्लाह ने उनको उनके किलों से नीचे उतार दिया और उनके दिलों में ऐसी धाक बैठा दी कि तुम कितनों को जान से मारने लगे और कितनों को कैद करने लगे।" 33/26

(11) "और उनकी जमीन और उनके घरों और मालों का और उस जमीन का जिसमें तुमने कदम तक नहीं रखा था। (अल्लाह ने) तुमको वारिस बना दिया...।" 33/27 आयतें 26 और 27 से साफ है कि जिहाद के युद्धों में अल्लाह स्वयं किस प्रकार मुसलमानों की खुद मदद करता है और किस प्रकार इन युद्धों में काफ़िरों के जान माल और जमीन को ईमानवालों के अधीन कर देता है।

24 6 और आगे चलकर अल्लाह हजरत मुहम्मद को अल्लाह ही के हुक्म से सबको "उसकी तरफ बुलाने वाला और रोशन चिराग" 33/46 बतलाते हुए कहते हैं "और ईमानवालों को खुशखबरी सुना दो कि उन पर अल्लाह की बड़ी कृपा है।" 33/47 "और काफ़िरों और मुनाफिकों का कहा न मान और उनके दुख देने की तरफ ध्यान दे और अल्लाह पर भरोसा रख ...।" 33/48

24 7 "बेशक अल्लाह ने काफ़िरों को फटकार दिया है और उनके लिए दहकती हुई दोजख की आग तैयार कर रखी है।" 33/64 "उसमें (ये) हमेशा रहेंगे, न वहाँ कोई अपना हिमायती पावेंगे और न मददगार।"33/65 "यह वह दिन होगा जबकि इनके मुँह आग में औंधें डाले जावेंगे (और ये पछताकर) कहेंगे अफसोस! हमने कहा माना होता अल्लाह का और कहा माना होता पैगम्बर का।" 33/66

सूरः 34

24 8 सूरः 34 विशेषकर कयामत का ईमान न लाने वाले काफ़िरों से संबंध रखता है। इस प्रकार इस सूरः की 54 आयतों के समय काफ़िरो को मिलने वाली सजाओं सम्बन्धित हैं ओर ईमानवालों को मिलने वाली नियामतों का विस्तार से वर्णन करती हैं।

(1) "और मुन्किर लोग कहते हैं कि हमको वह (कयामत की) घड़ी न आवेगी। (ऐ पैगम्बर) इन लोगों से कहो क्यों नहीं, गैब की बातों को जानने वाले अपने परवरदिगार की कसम (कयामत) तुम पर जरुर आवेगी.....।" 34/3

(2) "बेशक कयामत का आना लाजिमी है इसलिए कि जो ईमान लाये और नेक काम किये उनको बदला दें। यही लोग हैं जिनके लिए बख्शिश और इज्जत की रोटी है।" 34/4 "और का आना लाजिमी है इसलिए (कि जो लोग हमारी आयतों को हराने में

कोशिश करते रहे उनको सख्ती का दुखदाई अजाब) की सजा देना है।" 34/5

(3) " .... कि यह लो जो आखिरत का यकीन नहीं रखते नहीं खुद आफत में और दूर की गुमराही में पड़े हैं।" 34/8

"और मुन्किर कहने लगे कि हम इस कुरान को कभी न मानेंगे और न इनसे पहली किताबों को। और (ऐ पैगम्बर) काश तुम देखो जब (कयामत के दिन यह) जालिम अपने परवरदिगार के सामने खड़े किये जायेंगे। एक दूसरे के मत्थे दोष मढ़ रहा होगा कि कमजोर (यानी पीछे चलने वाले लोग अपने अगुआ) बड़े लोगों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम जरुर ईमानवाले होते।" 34/31 "(इस पर) बड़े लोग कमजोरों से कहेंगे कि जब तुम्हारे पास (अल्लाह की ओर से) हिदायत आई तो क्या उसके आने के बाद हमने तुमको (उस पर चलने) से रोका था। नहीं बल्कि तुम थे ही गुनहगार।" 34/32 "और तब कमजोर लोग बड़े लोगो से कहेंगे नहीं रात दिन के तुम्हारे फरेब ने हमें गुमराह कर रखा था। जब तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह का न मानें और उनके साथ (दूसरे) पूजित ठहरायें। और जब यह लोग अजाब को देखेंगे तो दिल में पछतायेंगे। और उस समय इन काफिरों की गरदनों में तौक डलवा देंगे। बस जैसे जैसे काम ये लोग करते रहे हैं उन्हीं का बदला पायेंगे।" 34/33 "और जो लोग हमारी आयतों के बारे में हराने की कोशिश करते हैं यह अजाब में पकड़ लाये जायेंगे।" 34/38

24.9 इस परिच्छेद में दी गई आयतों से (और अन्य भी कई ऐसी आयतें हैं) यह भी सिद्ध होता है कि कयामत पर कब्रों से उठाकर खड़े किये गये लोग आपस में इस प्रकार की बात और एक दूसरे पर दोषारोपण करते हैं, और इस धरती पर किये गये अपने कामों और विश्वासों की चर्चा भी करते हैं। और अल्लाह को न मानना ही कयामत के समय उनको अल्लाह की बड़ी से बड़ी सजा का पात्र बनाता है।

"और जिस दिन अल्लाह सब लोगों को जमा करेगा फिर फरिश्तों से पूछेगा कि क्या यही थे जो तुम्हारी पूजा किया करते थे।" 34/40 "वह बोलेंगे (या अल्लाह) तू पाक है हमको तुझसे सरोकार है इनसे नहीं; बल्कि यह लोग जिन्नों की पूजा करते थे। इनमें अक्सर इन (जिन्नों) पर ही यकीन रखते हैं।" 34/41 "तो आज तुमसे एक दूसरे के भले-बुरे का मालिक नहीं। और हम उन पापियों से कहेंगे जिस दोजख की आग को तुम झुठलाते थे उसका मजा चखो।" 34/42 "और जब हमारी खुली खुली आयतें उनके सामने पढ़कर सुनाई जाती है तो कहते है कि यह (मुहम्मद) एक आदमी है कि इसका मतलब यह है कि जिनको तुम्हारे बाप-दादा पूजा करते थे तुमको उनसे रोक दें। और कहते हैं कि यह (कुरान तो अपनी ओर से इसका) बस निरा झूठ गढ़ा हुआ है.....।" 34/43 "और इनसे अगले लोगों ने (भी पैगम्बरों को) झुठलाया था..... तो मेरा उन पर कैसा अजाब हुआ।" 34/45 "और (ऐ पैगम्बर) काश तू देखे जब यह घबड़ाये होंगे फिर भागकर नहीं बचेंगे और पास के पास से पकड़े जायेंगे।" 34/251 "और (तब बेबसी में) कहेंगे हम उस पर ईमान लाये और (इतनी) दूर अल्लाह से कैसे इनके हाथ ईमान आ सकता है।" 34/52 "और पहले उससे इन्कार करते रहे और ये देखे-भाले दूर ही से (अटकलें) तुक्के चलाते रहें। 34/53 "और इनमें और इनकी उम्मीदों के बीच में एक पैदा कर दी गई जैसा पहले उनके जैसों के साथ किया गया " 34/54

सूरः 35

25 0 45 आयतों वाले सूरः 35 में भी अल्लाह पर ईमान रखने वालों और काफ़िरों का विवेचन है। इन आयतों के अनुसार ईमानवालों को बहिश्त या स्वर्ग का ईनाम मिलना है और काफ़िरों को नरक या दोजख की भारी सजा। मुसलमानों और काफ़िरों के मार्ग बिलकुल विपरीत हैं, इस पर भी विशेष जोर दिया गया है। इस सूरः की पहली आयत में अल्लाह का यह विशिष्ट लक्षण बताया गया है कि वह अपना पैगाम केवल फरिश्तों के माध्यम से भेजने वाला है : "हर तरह की तारिफ अल्लाह ही को है जो आसमान और जमीन का पैदा करने वाला है (और) जो फरिश्तों को (अपना) पैगाम पहुँचाने पर मुकर्रर करने वाला है जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार (तक) पर है।" 35/1

इस सूरः में यह भी बतलाया गया है कि शैतान ही लोगों की दोजख में ले जाने लिये लोगों को अल्लाह से विमुख कर काफ़िर बनाता रहता है। अतः ईमानवाले उसे अपना खुला दुश्मन समझें। इस सूरः की कुछ आयतें इस प्रकार हैं :

(1) "फिर जो कुफ्र करता है उसके कुफ्र का बवाल उसी पर है जो लोग इन्कारवाले है उनकी इन्कारी से अल्लाह की नाखुशी ही बढ़ती है, और इन्कार की वजह से काफ़िर को घाटा ही होता चला जाता है।" 35/39

(2) और काफ़िर और ईमानवाले एक दूसरे के बिलकुल विपरीत हैं यह दर्शाते हुए कुरान शरीफ़ कहते हैं : "और अन्धा और आँखो वाला बराबर नहीं।" 35/19 "और न अंधेरा और उजाला" 35/20 "और न छाया और धूप।" 35/21 "और न जिन्दे और मुर्दे बराबर हो सकते हैं। अल्लाह जिसको चाहता है सुनाता है। और जो लोग कब्रों में हैं तू उनको नहीं सुना सकता।" 35/22 "(ऐ पैगम्बर) इसलिए कौन तुम्हारी हिदायत सुनता है, कौन नहीं सुनता, इसकी फिक्र छोड़ो (तुम तो सचेत करने व डर सुनाने वाले हो)।" 35/23

(3) "और जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनके लिए दोजख की आग है। न तो उनको मौत आती है कि मर जायें और न (नरक की) सजा ही हल्की की जाती है, हम हर नाशुक्रे को (इसी तरह पर) सजा दिया करते हैं।" 35/36

25 1 (1) "और यह लोग नरक में चिल्लाते होंगे कि ऐ परवरदिगार हमको यहाँ से निकाल (कर फिर दुनिया में ले चल) कि हम जैसे कर्म करते रहे थे वैसे नहीं (बल्कि) नेक काम करें। (तो उनसे कहा जायेगा) क्या हमने तुमको इतनी उम्र नहीं दी थी इसमें जो कोई सोचना चाहे सोच ले और तुम्हारे पास डरानेवाला (हमारा रसूल) भी पहुँच चुका था। पस अब चखों (मजा अजाब का) कि जालिमों का कोई मददगार नहीं।" 35/37

इस आयत से स्पष्ट है कि परलोक में दोजख की आग मे जलते हुए काफ़िरों के प्रति भी इस्लाम में अल्लाह की ओर से कोई माफी नहीं है। ये काफ़िर अल्लाह की निगाह मे शाश्वत जालिम हैं और वे हमेशा नरक में ही रहेंगे।

सूरः 35 की एक और आयत यहाँ देना सामयिक होगा अल्लाह चाहते हैं कि पैगम्बर

हजरत मुहम्मद जीतोड़ परिश्रम में लगे रहे कि सब मनुष्य अल्लाह के ही दीन में आ जाय, पर उन्हें पूरी सफलता नहीं मिल पारही थी। इस आयत में अल्लाह हजरत मुहम्मद को ढांढस बँधाते हुए कहते हैं। "...अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है तो इन लोगों (के कुफ्र) पर अफसोस करके तुम्हारी जान न जाती रहे।" 35/8

सूरः 36

25.2 कुरान शरीफ़ स्वयं अल्लाह का उतारा हुआ है। और उसका उद्देश्य यह है कि ऐ पेगम्बर इसके द्वारा "तू ऐसे लोगो को सचेत करे जिनके बाप-दादे (किसी किताब या रसूल के जरिये अब तक) सचेत नहीं किये गये और वह इस वजह से गाफिल हैं।" 36/6 "इनमें से बहुतेरों पर अल्लाह के अजाब की बात कायम हो चुकी है तो यह मानने वाले नहीं।" 36/7 "हमने इनकी गरदनों में तौक डाल रखे हैं सो वह ठोड़ियों तक (फसे हुए हैं) फिर उनके सिर ऊपर को उलट गये है।" 36/8

"और हमने एक दीवार इनके आगे बनाई और एक दीवार उनके पीछे फिर ऊपर से ढांक दिया सो उनको सही राह की रोशनी किसी तरफ से नहीं सूझती।" 36/9 "और ऐ पैगम्बर इनके लिए एकसा है कि तुम उनको डराओ या न डराओ, यह तो ईमान लाने वाले नहीं।"36/10

25.3 सूरः 36 भी दोजख में काफिरों को दी जाने वाली यातनाओं की तस्वीर खींचते हुए कहता है "यही (वह) जहन्नुम है जिसका तुमसे वादा किया जाता था।" 36/63 "आज अपने कुफ्र के बदले में इसमें दाखिल हो।" 36/64 "आज हम इनके मुँहो पर मुहर लगा देंगे और जैसे काम यह लोग कर रहे थे इनके हाथ हमको बतायेंगे ओर इनके पांव (गवाही देंगे)।" 36/65 "और हम चाहें तो इनकी आँखों को मेट दें फिर यह राह पाने को दौड़े तो कहीं से देख पावें।" 33/66 "और अगर हम चाहें तो यह जहाँ है वहीं इनकी सूरतें बिगाड़ दे फिर न आगे चल सकें न पीछे फिर सकें।" 36/67 और इसी सूरः में कुरान शरीफ़ का एक मकसद बताते हुए आता है कि ".....यह (कुरान) तो शिक्षा है और साफ है।" 36/69 "ताकि जो जिन्दः (यानी चेतना रखते) हों उनको (अल्लाह की सजा से) डराये और काफिरों पर (गुनाह की) बात साबित करें।" 36/70

सूरः 37

25.4 182 आयतों का सूरः 37 भी काफिरों से संबंधित है। इसका एक भाग तो पिछले पैगम्बरों और उनसे कुफ्र करने वालों से संबंध रखता हैं जिसकी चर्चा हम आगे चलकर अलग से "अन्य काफिरों" वाले अध्याय में करेंगे। हांलाकि इस अध्याय में भी काफिरों से संबंधित पिछले वाले सूरः में आई बातें ही कहीं गई हैं, इस अध्याय की भाषा और भी सटीक तथा सक्षिप्त है। इस्लाम को भली भांति समझने के लिये यह आवश्यक है कि जहां तक संभव हो सके हम इसकी अधिक से अधिक आयतें मूल रुप में ही पढ़े और उनके स्वरुप को समझे।

इस अध्याय का आरम्भ अल्लाह द्वारा फरिश्तों और कुरान पढ़ने वालों की कसम से

इस प्रकार होता है : "कसम उन लोगों की जो पर बाँधकर कतारों में खड़े होते हैं।" 37/1 "फिर झिड़क डांटनेवालों की (कसम)" 37/2 "फिर जिक्र (यानी कुरान) पढ़ने वालों की कसम" 37/3

25 5 काफ़िर किस प्रकार अल्लाह की निशानियों और आखिरत की हँसी उड़ाते हैं ओर उन्हें क्या सजा मिलेगी, इसकी चर्चा सूरः 37 में इस प्रकार आती है :

"(इन आदम के बेटों को) हमने ही लसदार मिट्‌टी से पैदा किया है।" 37/11 "(ऐ पैगम्बर) तुम तो अचम्भे में हो और यह हँसी उड़ाते हैं।" 37/12 "और जब इनको समझाया जाता है तो ध्यान नहीं देते।" 37/13 "और जब कोई निशानी देखते हैं तो हँसी उड़ाते है।" 37/14 "और कहते हैं कि यह तो बस प्रत्यक्ष जादू है।" 37/15 "(कहते हैं कि) क्या जब हम मर गये और मिट्‌टी और हड्डियाँ होकर रह गये तो (कयामत मे) फिर उठा खड़े किया जावेंगे?" 37/16 "और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी उठेंगे।" 37/17 "(ऐ पैगम्बर) इन लोगों से कहो कि हां और (उस मौके पर) तुम जलील होंगे।" 37/18 "सो वह तो एक झिडकी होगी कि फिर तभी यह देखने लगेंगे।" 37/19 "और बोल उठेंगे कि हाय हमारा अभाग्य, यह तो न्याय का दिन आ पहुँचा।" 37/20 "(फरमाया जायेगा कि हां) यही फैसले का दिन है जिसको तुम झुठलाया करते थे।" 37/21 "(फिर हम फरिश्तों को हुक्म देगें) कि जालिमों को और उनके जोड़ों (साथियों) को और अल्लाह के सिवाय जिनको पूजते रहे हैं उन सब को इकट्‌ठा करो।" 37/22 "फिर उनको जहन्नुम की राह ले चलो।" 37/23 "और उनको खडा रखो कि उनसे (कुछ) सवाल होगा।" 37/24 "तुम्हें क्या हो गया कि (पूजने वाले व पूज्य दोनों अब) एक दूसरे की मदद नहीं करते।" 37/25 "(यह कुछ भी जबाब नहीं देंगे) बल्कि यह उस दिन बतौर फर्माबरदार (नीची गरदन किये) होंगे।" 37/26 "और एक की तरफ एक ध्यान देकर पूछेंगे।" 37/27 "(एक फरीक दूसरे फरीक से) कहेगा कि तुम्हीं दाहिनी तरफ से (बहकाने को बड़े जोर से) हमारे पास आया करते थे।" 37/28 "वह कहेगें नहीं तुम (आप) ही ईमान लाने वाले नहीं थे।" 37/29 "और तुम पर हमारा कुछ जोर तो न था बल्कि तुम ही सरकश थे।" 37/30 "सो हमारे परवरदिगार का वादा हमारे (सब के) हक में पूरा हुआ अब हम सबको (अजाब का) मजा चखना होगा।" 37/31 "फिर हमने तुमको बहका दिया और खुद भी बहके हुए थे।" 37/32 "तो वे उस दिन सजा में (साथ-साथ) शरीक होंगे।" 37/33 "हम अपराधियों के साथ ऐसा ही सुलूक किया करते हैं।" 37/34 और अल्लाह के दीन से इन्कार करने वालों को चेतावनी देते हुए कुरान शरीफ़ कहते है। "(लोगों अगर इससे इन्कार करोंगे तो) तुम जरुर दुखदाई अजाब की सजा चखोगे।" 37/38

25 6 इसके आगे की आयतों में बहिश्त में बैठे ईमानवालों की काफ़िरों के बारे में जो आपसी बातचीत हैं, और बहिश्त से झांककर दिखलाई पड़नेवाला दोजख में पड़े काफ़िरों का जो दृश्य चित्रण है, वह इस अध्याय की अपनी विशेषता है। इसी चित्रण का दृश्य नीचे दी जा रही आयतों के माध्यम से दिया जा रहा है।

बहिश्त के बागों में तख्तों पर आमने सामने बैठे ईमानवालों के सामने सफेद रंग की शराब है, और उनके पास नीची निगाह रखने वाली बड़ी (बड़ी) आँखों वाली औरतें भी बैठी हैं यह 37 42 से 48 तक की आयतों का सार

(1) "फिर यह (बहिश्ते वाले) एक दूसरे की तरफ ध्यान देकर आपस में पूछताछी करेंगे।" 37/50 "इनमें से एक कहने वाला कहेगा कि (दुनिया में) एक मेरा साथी था।" 37/51 "(और वह मुझ से) पूछा करता था कि क्या तू (भी) उन लोगों में से है जो (कयामत पर) यकीन करते है?" 37/52 "क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जायेंगे। (तो हम दोबारा जिन्दः किये जायेंगे और) हमको (अपने किये का) बदला मिलेगा?" 37/53

(2) "फिर (वही शख्स) कहेगा कि भला तुम (हमारे उस दुनिया के साथी की हालत को) झांककर देखोगे?" 37/54 "फिर झांका तो उसको दोजख के बीचों-बीच देखा।" 37/55 "बोल उठेगा कि अल्लाह की कसम तू तो मुझे भी अपने साथ कुफ्र में शरीक करने और तबाह करने को था।" 37/56 "और अगर मेरे परवरदिगार की कृपा न होती तो मैं भी पकड़े हुओ मे होता (जो आज दोजख में हाजिर हैं)।" 37/57 "बेशक यही बड़ी कामयाबी है।" 37/60 "और चाहिए कि ऐसी ही कामयाबी के लिए अमल करने वाले अमल करें।" 37/61

(3) "इसके बाद की आयतें इन्कार करने वाले काफिरों को मिलने वाले दोजख का वर्णन करती है। वहाँ दोजख में बहिश्त के बागों के विपरीत सेहुंड का दोजखी पेड़ है : "भला (अल्लाह की ओर से) यह मेहमानी बेहतर है या सेहुंड का पेड़?" 37/62 "कि हमने उसको जालिमों की बला को बना रखा है।" 37/63 "वह एक दरख्त है जो दोजख की जड़ में (से) उगता है।" 37/64 "उसके गाभे जैसे शैतानों के सिर।" 37/65 "सो यह (दोजखी) उसी मे से खायेंगे और उसी से पेट भरेंगे।" 37/66 "फिर उस पर उनको खोलता हुआ पानी दिया जायेगा।" 37/67

सूरः 38

25.7 सूरः 38 की 88 आयतों का एक बड़ा भाग सीधे काफिरों और उनको मिलने वाली सजा से ही संबंधित है। कुछ आयतें उदाहरण स्वरूप दी जा रही हैं।

(1) "......और काफिरों को (दोजख की) आग से बरबादी है।" 38/27 "क्या ईमानवालों और नेक काम करने वालों को जमीन में फसाद करने वालों के बराबर करेंगे? या परहेजगारों को बदकारों के बराबर करेंगे?" 38/28

(2) "......और सरकशों के लिए बेशक बुरा ठिकाना है।" 38/55 "(यानी) दोजख है जिसमें इनको जाना पड़ेगा और वह क्या ही बुरा ठिकाना है।"38/56

(3) "यह है खौलता हुआ पानी और पीब अब इसको चखें।" 38/57 "और इसी तरह की कुछ और तरह-तरह की चीजें हैं।" 38/58

(4) "दोजखियों के पेशवा अपने पीछे चलने वालों को देखकर आपस में कहेंगे कि यह तो (पूरी की पूरी) फौज है जो तुम्हारे साथ दोजख में धंसती आती है इनको जगह न मिले। यह आग में बैठनेवाले हैं।" 38/59 "(पीछे चलनेवाले) जबाब देंगे (नहीं बल्कि) तुम्हीं हो जिन्हें जगह नसीब न हो। तुम्हीं तो यह बला हमारे आगे लाये हो। सो यह कैसा बुरा ठिकाना है।" 38/60

(5) "(वे फिर) कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार जो यह (दोजख) हमारे आगे लाया उसको (नरक की) आग में दोहरा अजाब दो" 38/61 "और कहेंगे कि (क्या कारण है कि दुनिया में)

जिन लोगों को हम बुरे लोगों में गिना करते थे हम उनको (यहाँ दोजख में) नहीं देखते।" 38/62 "क्या हमने उनका मजाक ठहराया था या उनकी तरफ से आँखें चूक गई हैं।" 38/63

(6) "यह नरकवासियों का आपस में झगड़ना यह तो होना ही है।" 38/64

सूरः 39, 40

25 8 सूरः 39 और सूरः 40 में भी काफ़िर, कयामत और दोजख संबंधी आयतें ही छायी हुई हैं। और जैसाकि अन्य अध्यायों में आता है काफ़िरों को दोजख की यातना मिलनेवाली आयतों के साथ साथ ईमानवालें को मिलने वाले बहिश्त या स्वर्ग संबंधित आयतें भी दोनों सूर में आती हैं। इन दोनों सूरः की काफ़िर सम्बन्धी आयतों का भाव भी कुरान शरीफ के पिछले सूरः में आई काफ़िरों वाली आयतें जैसा ही है। नीचे हम इन दोनों सूरः में आई काफिर सबधित कुछ प्रमुख आयतों को दे रहे हैं :

(1) "अगर तुम मुन्किर (विमुख) हो जाओ तो अल्लाह तुम्हारी परवाह नहीं करता। और अल्लाह अपने बन्दों के लिए कुफ्र को पसन्द नहीं करता.....।" 39/7

(2) "(रहे तुम मुशरिक) तो उस (अल्लाह) के सिवाय जिस (किसी और) को चाहो पूजो (ऐ पैगम्बर) इनसे कहो कि घाटे में वे लोग हैं जिन्होनें कयामत के दिन के लिए अपने को और अपने घरवालों को घाटे में डाला। सुन लो कि यही प्रत्यक्ष घाटा है।" 39/15 "इनके ऊपर आग का बादल (यानी ओढ़ना) और नीचे आग ही का बादल (यानी बिछौना) होगा। यही (तो वह अजाब है) जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डराता है तो ऐ मेरे बन्दों मुझसे ही डरो।" 39/16

(3) "फिर उससे बढ़कर जालिम कौन जो अल्लाह पर झूठ बोले और सच्ची बात जब उसके पास पहुँची तो उसको झुठलावे।" क्या काफ़िरों का दोजख ठिकाना नहीं है?" 39/32

(4) "......क्या अल्लाह जबरदस्त बदला लेने वाला नहीं है?"39/27

(5) "और (ऐ पैगम्बर) कयामत के दिन तू इन्हें देखेगा कि जो अल्लाह पर झूठ बोलते थे उनके मुँह काले होंगे क्या गुरुरवालों का ठिकाना दोजख में नहीं है?" 39.60 "और काफिर दोजख की तरफ जत्थे के जत्थे हांके जायेगें यहाँ तक कि जब (नरक के) पास पहुँचेंगे तो उनके दरवाजे खोल दिये जायेंगे....." 39/71 "फिर इनसे कहा जायेगा कि (तो अब) दोजख के दरवाजों में दाखिल हो, हमेशा इसमें रहो.....।" 39/72 "अल्लाह की आयतों में सिर्फ़ वही लोग झगड़े निकालते हैं जो इन्कार करने वाले (यानी काफ़िर) हैं......।" 40/4 "और (ऐ पैगम्बर) इन लोगों को जल्दी ही आने वाली मुसीबत (कयामत) के दिन से डराओं कि जब रज से भरकर दिल गले तक आ जावेंगे। पापियों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफारिशी होगा......।" 40/18 "अल्लाह आँखों की चोरी और सीनों (दिलों) में छिपी बातें भी जानता हे।" 40/19 "यह लोग जो इस किताब (कुरान) को झुठलाते हैं और उनको जो हमने अपने (दूसरो) पैगम्बरों के माफ़त भेजी है सो आखिरकार इनको मालूम हो जायेगा।" 40/70 "जब इनकी गरदनों में तौक होंगे और जंजीरें-घसीटें जा रहे होंगे 40/71 "खौलते हुए पानी में फिर आग में झोंके जायेंगे " 40 72

सूरः 41

259 सूरः 41 में भी काफ़िरों की व्यापक चर्चा है। इस सूरः के अनुसार कयामत के दिन काफ़िरों की इन्द्रियां भी उनके खिलाफ गवाही देंगी। और अल्लाह काफ़िरों के साथ उनको गुमराह करने के लिये शैतान मुकर्रर करता है।

(1) "और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन दोजख की तरफ हांके जायेंगे फिर उनको तरतीब से गिरोहों में कर लिया जायेगा।"41/19 "यहां तक कि उनके पास जमा होंगे तो जैसे जैसे काम लोग (दुनियां) में करते रहे हैं उनके कान और उनकी आँखें और उनके चमड़े (वगैरः) उनके मुकाबले में गवाही देंगे।" 41/20

(2) "और यह (गुनहगार) लोग अपनी खाल (या दूसरी इन्द्रियों) से पूछेंगे कि तुमने हमारे खिलाफ क्यों गवाही दी वह जवाब देंगी कि जिस (अल्लाह) ने हर वस्तु को बोलने की प्रेरणा दी उसी अल्लाह ने हमसे बुलवा लिया......।" 41/21

(3) "अब अगर यह लोग सब्र करें तो भी उनका ठिकाना (नरक को) आग है, और अगर क्षमा चाहें तो इनको क्षमा नहीं दी जायेगी।" 41/24

(4) "और हमने इन काफ़िरों के साथ रहने वाले (शैतान) मुकर्रर कर दिये थे...बेशक वे घाटा उठाने वालों में हैं।" 41/25

(5) "तो जो लोग इन्कार करने वाले हैं हम (भी) उनको सख्त अजाब का मजा चखायेंगे और उनके कामों का जो वह करते थे बुरा बदला देंगे।" 41/27 "यह अल्लाह के दुश्मनों का बदला है यानी जहन्नम की आग; उनके लिए इसी में हमेशा (रहने) का घर है। यह बदला इस वजह से है कि वह हमारी आयतों से इन्कार करते थे।" 41/28 "और जो इन्कार करने वाले हैं (आखिरत के दिन अजाब को देखकर) कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार जिन्न और आदमी जिन्होंने हमको (दुनिया में) गुमराह किया था (एक नजर) उनको हमें (भी) दिखा कि हम उनके पैरों के तले डालें ताकि वह बहुत ही जलील हों।" 41/29

सूरः 42, 43, 44

260 आगे के परिच्छेदों में हम अगले सूरः में आई काफ़िर, जिहाद, और काफ़िरों को मिलने वाले दोजख संबंधित कुछ आयतों को पाठकों के सम्मुख रखेंगे। हालांकि इन आयतों मे अधिकतर बार बार दोहराई गई ही बातें हैं, किन्तु एक ही विषय की इतनी अधिक आवृत्तियां यह बतलाती हैं कि कुरान शरीफ में काफ़िर सर्वोच्च महत्व का विषय है।

(1) "....तो जो लोग इसके बाद अल्लाह के बारे में "इन ईमानवालों से" अल्लाह के (हुक्मों के) बारे में झगड़ते हैं तो उनके परवरदिगार के नजदीक उनकी हुज्जत व्यर्थ है। और उन पर (अल्लाह की ओर से) गजब है और उनके लिए दुखदाई अजाब है।" 42/16

(2) "जिनको कयामत का यकीन नहीं है वही उसके लिए जल्दी मचा रहे हैं......सुनो जो लोग उस कयामत की घड़ी के आने में झगड़ते हैं वे भटककर जाहिरा दूर जापड़े हैं।" ".... और गुनहगारों को बेशक दुखदाई अजाब (होना) है " 42/21

(3) "और जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनके लिए सख्त अजाब है।" 42/26 "और जो लोग हमारी आयतों में झगड़ने वाले हैं जान ले कि उनको भागने की जगह नहीं है।" 42/35

25 1 सूरः 43 में काफ़िरों का दुखदाई अन्त बतलाते हुए अल्लाह कहते हैं : (1) "आखिरकार हमने उनसे बदला लिया तो देखो कि (पैगम्बरों को) झुठलानेवालों का कैसा परिणाम हुआ।" 43/25 "फिर अगर हम तुझे (पहले ही वफात देकर) दुनिया से उठा लेंगे तो भी हम इन काफ़िरों से बदला लेंगे।" 43/41 "....तो जो लोग जालिम हैं उनके लिए कयामत के दिन दुखदाई सजा की खराबी होनी है।" 43/65

"इसी सूरः 43 में काफ़िरों को मिलने वाली दोजख की सजा का चित्रण इस प्रकार किया गया है : "अलबत्ता गुनहगार हमेशा दोजख के अजाब में रहेंगे।" 43/74 "और हमने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वही जुल्म करते रहे।" 43/76 "और (दोजख के दरोगा से) पुकारेंगे ऐ मालिक तुम्हारा परवरदिगार हमारा काम तमाम कर दे। वह कहेगा कि तुमको हमेशा इसी में रहना है।" 43/77

"(ऐ काफ़िरों-रसूल के जरिए) हमने तुम्हारे पास हक बात भेजी है लेकिन तुममे अक्सर हक (सच्चाई) से चिढते हैं।" 43/78

"तो क्या इन लोगों ने कोई बात ठान रखी है तो (समझ रखें कि) हमने भी ठान रखी है।" 43/79

"तो (ऐ पैगम्बर) इन लोगों को बकने और खेल करने दे यहाँ तक कि जिस रोज का इनसे वादा किया जाता है (यानी कयामत से) इनका सामना हो।" 43/83 "हम जिस दिन बड़ी पकड़ (में गुनहगारों को) पकड़ेंगे हम (पूरा) बदला ले लेंगे।" 44/16 "बेशक सेहुंड (थूहड़) का पेड है।" 44/23, "यह पापी का खाना होगा।" 44/44 "जैसे पिघला तांबा (खौलता है उसी तरह) पेटो में खौलेगा।" 44/45 "जैसे खौलता पानी।" 44/46 "(हम) फरिश्तों को आज्ञा देंगे कि इसको पकड़ो और घसीटते हुए दोजख के बीचोबीच ले जाओ।" 44/47 "फिर इसके सिर पर खौलता हुआ पानी का अजाब डालो।" 44/48 "(अब) मजा चख तू (ही दुनिया का) बडा इज्जतवाला सरदार है (न?)" 44/49 "यह (दोजख) है जिसकी निस्बत तुम शक किया करते थे।" 44/50

सूरः 45, 46

26 2 काफ़िरों पर अफसोस करते हुए अल्लाह पैगम्बर को बतलाते हैं कि वे काफ़िरों को दुखदाई अजाब की खुशखबरी सुना दें :

(1) "(ऐ पैगम्बर) यह (मुझ) अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम तुमको ठीक ठीक पढकर सुनाते हैं। फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद और कौन सी बात होगी जिसे सुनकर (यह लोग) ईमान लायेंगे।" 45/6 "हर एक झूठे गुनहगार के लिए अफसोस है।" 45/7 "कि अल्लाह की आयतें उसके सामने पढ़ी जाती हैं (और वह) उनको सुनता है फिर (भी) मारे घमण्ड के अड़ा रहता है गोया उसने इन (आयतों) को सुना ही नहीं। तो (ऐ पैगम्बर ऐसों को दुखदाई अजाब की खुशखबरी सुना दो " 45/8 " ऐसे लोगों के लिए

जिल्लत का अजाब है।" 45/9 "इनके सामने दोजख है....और उनके लिए बड़ा (दुखदाई) अजाब होगा।" 45/10 "यह (कुरान) हिदायत है, और जो लोग अपने परवरदिगार की आयतों से इन्कार करने वाले हुए उनको बड़े दुखदाई अजाब की मार है।" 45/11

(2) "यह उसकी सजा है कि तुमने अल्लाह की आयतों की हंसी उड़ाई और दुनिया की जिन्दगी में तुम बहके रहे। सो आज न तो यह लोग नरक से निकाले जायेंगे, और न इनकी तोबः कुबूल की जायेगी।" 45/35 "और जिस दिन काफ़िर (नरक की) आग के सामने लाये जायेंगे (और उनसे पूछा जायेगा) कि क्या यह (तुम पर हक़ यानी) ठीक नहीं तो वह कहेंगे हमको अपने परवरदिगार की कसम (यह हक) है। तो (अल्लाह) आज्ञा देगा कि (दुनिया में) जो तुम इन्कार किया करते थे उसके बदले में अजाब (का मजा) चखो।" 46/3। ".....तो अब वही तबाह होंगे जो नाफरमान (अवज्ञाकारी) हैं।" 46/35

सूरः 47, 48, 49

26 3 सूरः 47 की 38 आयतें और सूरः 48 की 29 आयतें बड़े ध्यान से पढ़ने की है। ये सब की सब काफ़िरों और विशेषकर काफ़िरों के विरुद्ध जिहाद से संबंधित हैं। जिहाद में काफ़िरों पर विजय के बाद लूट में मिले "माले गनीमत' से संबंधित हैं और हारे हुए काफ़िरों को मुसलमान बनाने या उनको कत्ल करने या बन्दी बनाने आदि से संबंधित हैं। जैसा कि कुरान शरीफ़ की परिपाटी है कि जहाँ काफ़िर और उसको मिलने वाले दोजख की चर्चा होती है वहाँ ईमानवालों को मिलने वाले सांसारिक लाभ के साथ परलोक में मिलने वाले बहिश्त की भी चर्चा होती है। इन दो अध्यायों में भी बहिश्त की विशिष्ट चर्चा है। इन दो अध्यायों की बहिश्त चर्चा में वहां बहने वाली शराब, दूध और शहद की नहरों की भी पहले बार चर्चा आती है। कुरान वर्णित बहिश्त की चर्चा तो हम यथास्थान करेंगे, यहाँ हम नीचे मुख्यतः जिहाद सबधी आयतें दे रहे हैं।

(1) "जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोका तो अल्लाह ने उनके काम अकारथ कर दिये।" 47/1 "और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये और (कुरान) जो मुहम्मद पर उतरा है, उस पर ईमान लाये और वह उनके परवरदिगार की तरफ से हक है। अल्लाह ने उनके पाप उन पर से उतार दिये और उनकी हालत दुरुस्त कर दी। 47/2

(2) "यह इसलिए है कि काफ़िर झूठ पर चले और जो ईमान लाये वह अपने परवरदिगार के दिखाये ठीक रास्ते पर चले......." 47/3

(3) "तो जब (लड़ाई में) काफ़िरों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो गरदनें काटो। यहाँ तक कि जब खूब अच्छी तरह उनका (जोर तोड़कर) कत्ल कर चुको तो (बचे हुओं की) मजबूती से मुश्कें कस लो। फिर (कैद करने के) बाद या तो इहसान रखकर या (बदला) फ़िदयः (अर्थ दण्ड) लेकर छोड़ दो यहाँ तक कि (दुश्मन) लड़ाई के हथियार डाल दें ऐसा ही (हुक्म) है और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये तो उनके कामों को अल्लाह नहीं होने देगा " 47/4 " अल्लाह) उनको राह देगा और उनका हाल

दुरुस्त करेगा।" 47/5 "और उनको बहिश्त में दाखिल करेगा जिसका हाल उसने बता रखा है।" 47/6

(4) "ऐ ईमानदारों अगर तुम अल्लाह की (राह में जान व माल से) मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और (दुश्मनों के मुकाबले) तुम्हारे पांव जमाये रखेगा।" 47/7 "यह इसलिए कि ईमानवालों का अल्लाह मददगार है और यह कि काफ़िरों का कोई मददगार नहीं।" 47/11 "काफ़िरों की पशुओं से तुलना करते हुए कुरान शरीफ में आता है : "और काफ़िर दुनियां में फ़ायदा उठाते और खाते हैं जैसे चौपाए खाते हैं, और दोजख की आग इनका ठिकाना है।" 47/12 "तो क्या (बहिश्तवालों के) बराबर वे हो सकते हैं जो हमेशा (दोजख की) आग में रहेंगे और (प्यास लगने पर) उनको खौलता पानी पिलाया जायेगा जो उनकी आंतों को काट देगा।" 47/15

26 4 (1) "और जिहाद के प्रति मुसलमानों को सावधान रहने का आदेश देते हुए अल्लाह कहते हैं–"और ईमानवाले कहते हैं कि (जिहाद के निस्बत) कोई सूरत क्यों न उतरी। और जब एक सूरत साफ-साफ उतरी और उसमें (जिहाद का हुक्म यानी) लड़ाई का जिक्र आया तो (ऐ पैगम्बर) इनमें से जिनके दिलों में रोग है तूने उनको देखा कि वह तेरी तरफ ऐसे ताकते रह गये जैसे वह ताकता है जिसे मौत की बेहोशी हो रही हो, सो ऐसों के लिए खराबी है।" 47/20

(2) "फिर जब (जिहाद) की ताकीद हो गई तो अगर यह लोग अल्लाह से सच्चे रहे (और उसमें ईमान से जान लड़ायें) तो उनके हक में जियादः भला है।" 47/21

(3) यहाँ पर काफ़िरों की दुर्गति का वर्णन करते हुए आता है : "तो इनकी कैसी गति होगी जब फरिश्ते उनकी जानें निकालेंगे और उनकी पीठों और मुँहो पर मारते जाते होंगे।" 47/27

काफ़िरों के विरुद जिहाद करना इस्लाम की मान्यताओं का कितना अभिन्न अंग है और मुसलमानों के ईमान की कितनी बड़ी कसौटी है यह इन आयतों से स्पष्ट होता है :

(1) "और (ऐ ईमानवालों) बेशक तुमको हम आजमायेंगे ताकि तुममें से जो जिहाद करने वाले और सब्र वाले हैं उनको हम मालूम कर लें, और तुम्हारी हालतों को जाचें।" 47/31

(2) "तो तुम नादान न बनो कि सुलह की तरफ पुकारने लगे और (इत्मीनान रखो) तुम्हारी ही जीत होगी और अल्लाह तुम्हारे साथ है और (अल्लाह की राह में किये) तुम्हारे कामों को न मेटेगा।" 47/35 "(ऐ मुहम्मद) हमने तेरे हक में फतह का फैसला कर दिया। फतह भी साफ खुली हुई।" 48/1

26 5 सूरः 48 की आयत 11 और 12 में हुदेबिया के जंग में पैगम्बर के साथ बहाना बनाकर न जाने वाले देहाती (बददू) लोगों की चर्चा है। वे समझते थे कि इस जंग में "पैगम्बर ओर ईमानवाले" (कुरेशों के हाथ हलाक होंगे और) कभी अपने घर वापस आने ही को नहीं और यह तुम्हारे दिलों को भला मालूम हुआ और तुम बड़े बुरे गुमान में थे और (आखिरकार) तुम लोग आप बरबाद हुए।" 48/12 पर हुदेबिया का जंग आपसी सुलह से टल गया उन्हें युद्ध मे शामिल न होने के कारण पछताना पड़ा। इसके बाद पैगम्बर को जब खैबर के जंग में जाना हुआ तो यह आयत उतरी :

1 "जब तुम (खैबर की जग में) गनीमत माल के लेने को जाने लगोगे तो जो लोग

(हुदेबिया के सफर से) पीछे रह गये थे कहेंगे कि हमको भी अपने साथ चलने दो।... (ऐ पैगम्बर) इन लोगों से कह दो कि तुम हमारे साथ न चलने पाओगे कि अल्लाह ने पहले से ही ऐसा कह दिया है। यह सुनकर फिर कहेंगे कि नहीं बल्कि तुम हमसे डाह रखते हो और हमें माले गनीमत के फायदे से अलग रखना चाहते हो। कुछ नहीं यह लोग कम समझ रखते हैं।" 48/15 "(ऐ पैगम्बर) देहातों जो (हुदेबिया के सफर से डरकर) पीछे रह गये थे इनसे कह दो कि आगे चलकर तुम (ईरान, रूम जैसे) बड़े सख्त लड़ने वालों के (मुकाबले के) लिए बुलाये जाओगे। तुम उनसे लड़ोगे या (जंग रुक जाय और) वे मुसलमान हो जायें। फिर अगर (उस मोके पर उस कठिन लड़ाई में जान माल लड़ाकर तुम लोग) अल्लाह की आज्ञा मानोगे तो पहले (हुदेबिया के सफर में) मुंह फेर चुके हो तो तुमको दुखदाई अजाब देगा।" 48/16

(2) "अल्लाह ने ईमानवालों को जल्द ही (जंगे खैबर की) फतह का इनाम दिया।" 48/18 "और (फतह के अलावा) बहुत सा माले गनीमत उनके हाथ लगा। और अल्लाह बड़ा जोराबर और बड़ा हिकमतवाला है।" 48/19

(3) "अल्लाह ने तुमसे बहुत सी गनीमतों (का माल) देने का वादा किया है कि तुम उन्हे पाओगे सो यह (खैबर की लूट) तुमको जल्द ही दिला दी....।" 48/20

(4) "और दूसरे वादे भी हैं जो तुम्हारे काबू में (अभी) नहीं आये। वह अल्लाह के काबू में हैं। और आगे चलकर मक्का की फतह व दूसरे मुल्कों की फतह में ईमानवालों के हाथ लगेंगे।" 48/21

26.6 सूरः 48 को समाप्त करते हुए 29 वीं आयत में काफिरों के बारे में इस प्रकार आता है - **"मुहम्मद अल्लाह के (भेजे हुए) रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वे काफिरों के हक में बड़े सख्त हैं (और) आपस में रहम दिल है--कि गोया (ईमानवाले) एक खेती है कि उसने अपना कल्ला निकाला और उसे मजबूत किया फिर मोटी हुई आखिरकार अपने नाल पर सीधी खड़ी हो गई और खेतीवालों को खुश करने लगी ताकि काफिरों का जी जलायें।..." 48/29 "ईमानवाले वह हैं जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लायें फिर शक में (डांवाडोल) नहीं हुए और अल्लाह की राह में अपनी जानों और मालों से जिहाद किया। यही सच्चे ईमानवाले हैं।" 49/15**

सूरः 50, 51, 52, 54

"और नरसिंहा (सूर) फूँका जायेगा (यही वह) कयामत का दिन होगा जिससे (तुम्हें दुनिया में) डराया जाता है।" 50/20 "और हर मनुष्य जो (हमारे रुबरु) हाजिर होगा उसके साथ एक हाँकनेवाला और एक गवाह होगा।" 50/21 "(तब हुक्म होगा कि) ऐ दोनों फरिश्तों हर काफिर दुश्मन को जहन्नम में झोंक दो।" 50/24 "उनका साथी (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे परवरदिगार मैंनें इनको सरकश नहीं बनाया बल्कि यह था ही राह से दूर भूला हुआ।" 50/27 "(अल्लाह) कहेगा मेरे पास झगड़ा न करो और मैं तुम्हारे पास पहिले ही (अजाब का) डर पहुँचा चुका था " 50/28

26.7 1 "उस दिन हम दोजख से पूछेंगे कि तु अब दोजखियों से भर चुकी और वह

कहेगी क्या कुछ और भी है? (अभी बहुतेरी जगह खाली है)।" 50/30 "और इन (मक्का के काफ़िरों) से पहले (भी) हमने कितने गिरोह खपा मारे जोकि बलबूते में (इनसे) कहीं बढकर थे फिर (जब दुनियां में ही अजाब का सामना हुआ तो) उन्होंनें तमाम शहरों को छान मारा, कि कहीं भागनें (बचने) का ठिकाना भी है।" 50/36 "और बेशक इन्साफ होने वाला है।" 51/6 "और आसमान की कसम जिसमें रास्ते हैं।" 51/7 "कि (ऐ मक्का के लोगों) तुम मतभेद की बात में उलझे हुए हो।" 51/8 "अटकल के तुक्के चलाने वालों का नाश हो।" 50/10 "वह जो गफलत में भूले हुए हैं। 51/11

(2) "(ऐ पैगम्बर) यह लोग तुझसे पूछते हैं कि इन्साफ का दिन कब होगा (जिसका हमे डर दिखाते हों)।" 51/12 "(इन्हे चिता दो कि यह वह दिन होगा) जब यह लोग आग मे सेकें जायेंगे।" 51/13 "कि अपनी शरारत के मजे चखों । यही तो (वह अजाब) है जिसकी तुम जल्दी मचा रहे थे।" 51/14

(3) "तो काफ़िरों पर उनके उस (सजा के) रोज के ऐतबार से जिसका उनसे वादा किया जाता है अफसोस है।" 51/60

"कसम है तूर (पहाड़) की" 52/1, "और लिखी किताब की।" 52/2, "बड़े पन्नो मे।" 52/3 "और ऊँची (छत) की।" 52/5 "बेशक तेरे परवरदिगार का अजाब होकर रहेगा।" 52/7 "तो उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है।" 52/11 "जो बातें बनाने मे (मगन) खेल रहे हैं।" 52/12 "जिन दिन दोजख की आग की तरफ धक्के दे देकर ले जाये जायेंगे।" 52/13 "(और कहा जायेगा कि) यही वह (जहन्नम की) आग है जिसे तुम झूठ समझा करते थे।" 52/14 "क्या यह लोग कहते है कि हमारी जमात बड़ी (और काफी) है बदला लेने को" 54/44 "सो अब जमात हार जायेगी और पीठ फेरकर भागेगी।" 54/45 "(और यह अजाब दुनियां का रहा।" लेकिन हमेशा के अजाब का) वादा तो उनके साथ कयामत की घड़ी का है और वह घड़ी बड़ी मुसीबत की और कड़वी है।" 54/46 "बेशक गुनहगार गुमराही में हैं और पागलपन में हैं।" 54/47 "जिस दिन उनको मुँह के बल (नरक की) आग में घसीटा जायेगा (और उनसे कहा जायेगा कि दोजख की) आग का मजा चखों।" 54/48

सूरः 55

26 8 सूरः 55 की 78 आयतों में अल्लाह की निआमतों की चर्चा है इनमें अधिकतर आयतो ईमानवालों को मिलनेवाली स्वर्ग की निआमतों का बड़ा भावपूर्ण वर्णन है जिसे कि हम पहले अन्य संदर्भ में दे चुके हैं और आगे बहिश्त के अध्याय के अन्तर्गत सशक्त मानक के रूप मे फिर देंगे। यहाँ पर हम केवल काफ़िर संबंधी आयतें दे रहे हैं।

(1) "ऐं दो बोझिल गरोहों। "यानी (ऐ इन्सानों) और जिन्नों "हम जल्द तुम्हारी तरफ ध्यान देने वाले हैं।" 55/31 "फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।" 55/32

(2) "ऐ जिन्नों और आदमियों के गरोहों अगर तुमसे हो सके कि आसमानों और जमीन के किनारों से (अल्लाह की गिरफ्त से) निकल भागो तो निकल देखो मगर तुम निकल

नही सकोगे.....” 55/33 “फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।” 55/34

(3) “और तुम पर आफत के शोले और धुंवा छोड़ा जायेगा और तुम मदद न पा सकोगे।” 55/35 “फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।” 55/36

(4) “गुनहगारों को उनकी सूरत से पहचान लिया जायेगा फिर माथे के बाल और पैरों के बल पकड़े (जायेंगे) और उनको खींचकर नरक में ले जायेंगे।” 55/41 “फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।” 55/42

(5) “यही दोजख है जिसको गुनहगार झुठलाते हैं।” 55/43 “दोजख में और खौलते हुए पानी में फिरते हैं।” 55/44 “फिर तुम लोग अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। 55/45

सूर: 56, 57, 58

26 9 (1) “सूर: 56 में काफिरों को नरक में मिलने वाली सजा का विशद वर्णन है कयामत पर जब लोग इकट्ठे किये जायेंगे जो इनको तीन किस्मों में बांटा जायेगा। इनमें बाई तरफ वाले काफिर होंगे “सो बायें (हाथ) वाले क्या बुरे लोग हैं।” 56/9 “और बाईं ओर वाले (अफसोस) क्या बुरे बाई तरफ वाले होंगे।” 56/41 “कि वह (दोजख की आग की) आंच में और खौलते पानी में होंगे।” 56/42 “और (अजाब के) काले धुयें की छाओं में।” 56/43 “जो न ठण्डी है और न इज्जत की।” 56/44

(2) “फिर ऐ झुठलाने वाले गुमराहो।” 56/57 “बेशक तुमको (नरक में) सेंहुड़ के दरख्त से खाना होगा।” 56/52 “और उसी से पेट भरना होगा।” 56/53

(3) “फिर ऊपर से उबलता पानी पीना होगा।” 56/54 “फिर ऐसे पियेंगे जैसे प्यास से बेचैन ऊँट पीते हैं।” 56/55 “आखिरत के दिन यही उनकी मेहमानी है।” 56/56

सूर: 57 की निम्न तीन काफिर संबंधी आयतें अन्य आयतों से थोड़ी भिन्न हैं इनका ध्यानपूर्वक अवलोकन जरुरी है। कयामत के समय ईमानवाले बहिश्त यानी स्वर्ग में प्रवेश करेंगे और काफिर नरक में; तब उनमें इस प्रकार का आपसी संवाद होगा :

27 0 (1) “उस दिन मुनाफिक (कपटी) मनुष्य और औरतें ईमानवालों से कहेंगी कि हमारा इन्तजार करो कि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी ले लें। (हम तो अंधेरे में भटक रहे हैं। तब उनसे) कहा जायेगा पीछे लौट जाओ फिर रोशनी तलाश कर लो। इसके बाद (दोनों फरीकों) के बीच में एक दीवार खड़ी कर दी जायेगी जिसमें एक दरवाजा होगा उसमें भीतरी तरफ रहमत होगी और उसके बाहरी तरफ अजाब होगा।” 57/13

(2) “वह (मुनाफिक) उन (ईमानवालों) को पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। कहेंगे हां। थे सही, मगर तुमने अपने आपको फित्न: (बला) में डाला और तुम राह देखते थे और (अपनी दिली) ख्वाहिशों के धोखे में रहे यहां तक कि अल्लाह की आज्ञा आ पहुँची और शैतान दगाबाज ने तुमको अल्लाह के बारे में धोखा दिया।” 57/14

(3) "सो आज न तो तुम (मुनाफिकों) से मुआवजः कबूल किया जायेगा और न उन लोगों से जो इन्कार करते (और काफ़िर) रहे आज तुम सबका ठिकाना दोजख है। वही तुम्हारा दोस्त है और वह बहुत बुरा ठिकाना है।" 57/15 "जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर के विरूद्ध आचरण करते हैं वह वैसे ही ख्वार हुए जैसे इनसे पहले लोग ख्वार हुए थे। और हमने साफ आयतें (यानी हुक्म) उतारे हैं और काफ़िरों के लिए जिल्लत का अजाब हैं।" 58/5 "उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है और (उनकी आड़ में) यह लोगों को अल्लाह की राह मे रोकते हैं तो उनके लिए जिल्लत की मार है।" 58/16 ".....यह लोग दोजख वाले हे। सो हमेशा उसी में रहेंगे।" 58/17 "......यही शैतानों का लश्कर है। सुनते हो। शैतानो का जो लश्कर है वही खराब होगा।" 58/19 "जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर से विरोध करते हैं वही सबसे जलील होंगे।" 58/20

सूरः 59, 60, 61

27 1 सूरः 59 मुख्यतः काफ़िरों के विरुद्ध युद्ध यानी जिहाद से संबंध रखता हैं। उसकी हम केवल तीन आयतें नीचे दे रहे हैं।

(1) "यही हैं यानी अल्लाह "जिसने किताबवालों में से जो काफ़िर हैं उनको उनके घरो से (जो मदीना में बसते थे) पहिले ही लश्कर जमा होने पर निकाल बाहर किया। "(ऐ ईमानवालों) तुम यह न ख्याल करते थे कि यह निकलेंगे और वह इस ख्याल में कि उनके किले उनको अल्लाह के (अजाब के) मुकाबले में बचा लेंगे तो जिधर से उनका ख्याल भी न था अल्लाह उन पर आ पहुँचा और उनके दिलों में (ईमानवालों की) धाक बैठा दी कि वह (खुद देश छोड़ने का इरादा करके) अपने हाथों और मुसलमानों के हाथो से अपने घरों को उजाडने लगें, तो ऐ आँखवालों इससे नसीहत पकड़ो।" 59/2

(2) "और अगर अल्लाह ने (इनके लिए) देश निकाले की सजा न लिख दी होती तो वह उनको (बनी कुरैजः के तरह) दुनिया में सजा देता और आखिरत में उनको (नरक की) आग का अजाब होना ही है।" 59/3। बनी कुरैजः के युद्ध में परास्त हुए सभी काफिर यहूदियों के आदमियों को तो मुसलमानों ने कत्ल कर दिया और उनकी औरतों, बच्चे और माल को माले गनीमत की तौर पर अपने अधिकार में कर आपस में बांट लिया था। आयत 59/3 में इसी सजा देने की बात कही हैं।

(3) "यह सब इस सबब से कि इन्होंने अल्लाह और उसके पैगम्बर से दुश्मनी की। और जो अल्लाह से दुश्मनी करेगा तो (जान लेना चाहिये कि) अल्लाह की मार सख्त है।" 59/4

27 2 काफ़िरों की शैतान से तुलना करते हुए कुरान शरीफ कहते हैं : "इनकी मिसाल ऐसी है जब यह आदमी से कहता है कि मुन्किर (काफ़िर) हो जा फिर जब वह मुन्किर हुआ तो (अजाब का सामना होने पर शैतान अलग हो जाता है और) कहता कि मुझको तुझसे कुछ मतलब नहीं।" 59/16 "तो इन दोनों का परिणाम यही होना है कि दोनों (नरक की) आग मे जायेंगे। उसी में हमेशा रहना होगा और अन्यायियों की यही सजा है।" 59/17 "जहन्नम वाले और जन्नतवाले (कभी) बराबर नहीं जन्नतवाले ही हैं" 59/20

27.3 13 आयतों वाला सूरः 60 और 14 आयतों वाला सूरः 61 भी काफ़िर और उनके विरुद्ध जिहाद से संबंधित है। सूरः 60 का आरम्भ ही अल्लाह के इस आदेश से होता है कि काफ़िरों को दोस्त न बनाओ।

(1) "ऐ ईमानवाले अगर तुमने मेरी राह में जिहाद करने और मेरी रजामन्दी ढूंढने के लिए हिज्जत की है तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ। तुम तो उनकी तरफ मुहब्बत के पैगाम भेजते हो और वह तुम्हारे पास जो सच्चा दीन आया है उससे मुन्किर (विमुख) हो रहे हैं। ....और जो कोई तुमसे से ऐसा करे तो वह सीधी राह से भटक गया।" 60/1

(2) "बेशक अगर (काफ़िर जिन्हें तुम पैगाम भेजते हो) वह तुम्हें पावें तो तुम्हारे दुश्मन हो जावें और तुम पर अपना हाथ चला दें और बुराई के साथ अपनी जबान भी, और चाहे कि किसी तरह तुम भी काफ़िर हो जाओ।" 60/2

(3) "ऐ हमारे परवरदिगार हमको काफ़िरों की जांच मे न डाल (काफ़िरों को विजय न दे)" 60/5

(4) "ऐ ईमानवालों ऐसे लोगों से दोस्ती न करो जिन पर अल्लाह का गजब (प्रकोप) है।" 60/13

27.4 (1) "बेशक अल्लाह उन लोगों को प्यार करता है जो उसकी राह में कतार बांधकर लडते हैं गोया वह एक दीवार है जिसमें सीसा पिला दिया गया है।" 61/4

(2) "और उससे बढ़कर कौन जालिम है जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा जबकि उसे इस्लाम की तरफ बुलाया जारहा हो और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता।" 61/7

(3) "ऐ ईमानवालों मैं तुमको ऐसा व्यापार बताऊं जो तुमको दुखदाई अजाब से बचा दे।" 61/10 (और वह व्यापार यह है कि) अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जानों से जिहाद करो। यह तुम्हारे लिये जियादः भला है अगर समझ रखते हो।" 61/11

सूरः 62, 63, 64, 65, 66, 67

27.5 ग्यारह आयतों वाला सूरः 62 मुख्यतः यहूदी काफ़िरों से संबंध रखता है। इनकी चर्चा अलग से यथास्थान करेंगे। ग्यारह आयतों वाला ही सूरः 63 है वह सारा का सारा काफ़िरों से संबंधित हैं। इसमें हजरत मुहम्मद को उन काफ़िरों से सावधान किया गया है जो ऊपर से तो यह मानते हैं कि हजरत मुहम्मद अल्लाह के पैगम्बर हैं, पर अन्दर से नहीं और ये बिलकुल झूठे और मक्कार हैं। "यही दुश्मन हैं बस इनसे बचे रहना। अल्लाह उनको मटियामेट करें, यह किधर को भटकते फिरते हैं।" 63/4 "और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह का पैगम्बर तुम्हारे लिए (अल्लाह से) माफी की दुआ करे तो अपने सिर मटकाते हैं और तू उनको देखेगा कि (मुँह फेरते और) रुकते हैं और गुरुर करते हैं।" 63/5

सूरः 64 की हम केवल एक ही आयत नीचे दे रहे हैं। काफ़िर संबंधी अन्य आयतों के नम्बर हम इस अध्याय के अन्त में देंगे। "और जो काफ़िर हुए और (जिन्होंने) हमारी आयतों

को झुठलाया वहीं दोजखवाले हैं कि उसमें हमेशा रहेंगे। और (वही) बुरी जगह है।" 64/10 "और कितनी ही बस्तियों (के रहने वालों) ने अपने परवरदिगार के हुक्म से और उसके पैगम्बर के हुक्म से सरकशी की फिर हमने उनसे सख्त हिसाब लिया और उन पर (अचानक) बड़ा कठिन अजाब डाला।" 65/8 "तो उन्होंने अपने किये की सजा चखी और उनको परिणाम में घाटा ही हुआ।" 65/9 "अल्लाह ने उनके लिए सख्त मार तैयार कर रखी है। तो ऐ बुद्धि रखने वालों जो ईमान लाये हो वह अल्लाह से डर रखें।" 65/10 "ऐ काफ़िरों आज के दिन (दोजख की आग से बचने के लिये) कुछ उज्र न पेश करो।" 66/7 **"ऐ पैगम्बर! काफ़िरो से और मुनाफिकों से जिहाद कर और उन पर सख्ती कर और उनका ठिकाना तो दोजख है, और वह बुरा ठिकाना है पहुँचने का।" 66/9**

27.6 सूरः 67 में काफ़िरों को परलोक में मिलने वाली सजा एक अलग ही ढंग से सुनाई गई है, और इस प्रकार शुरू होती है :

(1) "और जो लोग अपने परवरदिगार से मुन्किर (विमुख) हैं उनके लिये दोजख की सजा है।" 67/6 "जब (ये) उसमें डाले जावेंगे तो वह उसका दहाड़ना (यानी आग का जोश खरोश सुनेंगे और वह भड़क रही होगी)।" 67/7 "ऐसा लगता है कि अभी मारे जोश के फट पडगी। जब जब कोई गिरोह उसमें डाला जायेगा तो जो उस पर तैनात हैं उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारे पास (अजाब अल्लाह से) डराने वाला नहीं पहुँचा था?" 67/8 "वह जबाब देंगे हां डराने वाला तो हमारे पास पहुँचा था। मगर हमने (उनको) झुठलाया....।" 67/9 "और कहेंगे अगर हमने सुना और समझा होता तो दोजख वालों में न होते।" 67/10 "पस वे अपना गुनाह मानेंगे। पस दूर हो दोजख की आग वाले।" 67/11 "बेशक काफ़िर निरे धोके में पड़े हैं।" 67/20

(2) "फिर जब देखेंगे कि वह वादा आपहुँचा तो काफ़िरों की शकलें बिगड़ जायेंगी और (तब उनसे) कहा जायेगा यही वह (अजाब) है जिसका तुम तकाजा किया करते हो।" 67/27

सूरः 68, 69

"(आखिरत में) जिस दिन पर्दा उठा दिया जायेगा और उन काफ़िरों को सजदे के लिये बुलाया जायेगा तो वह (शर्म के मारे) सजदः न कर सकेंगे।" 68/42 "उनकी आँखें नीची होगी जिल्लत उनके चेहरों पर छा रही होगी....।" 68/43 "(ऐ पैगम्बर) अब मुझे और इस (कुरान) के झुठलाने वालों को (निपटारे के लिये) छोड़ दो। हम उन्हें धीरे-धीरे (जहन्नम की ओर) ऐसे नीचे उतारेंगे कि इन्हें खबर भी न हो।" 68/44 "और उनको ढील देता चला जा रहा हूँ बेशक मेरी तदबीर पक्की है।" 68/45 "और (ऐ पैगम्बर) यह काफ़िर जब (तुमसे कुरान की) नसीहतें सुनते हैं तो अपनी निगाहों (को ऐसा डालते हैं कि उन) से तुनको बिचला दें और कहते हैं कि यह (रसूल नहीं बल्कि) बाबला है।" 68/51

27 7 कयामत पर ईमानवालों को उनकी कर्मपत्री दाहिने हाथ में दी जायेगी और उन्हें स्वर्ग या बहिश्त मिलेगा। काफ़िरों की पत्री उनके बायें हाथ में दी जायेगी और उन्हें दोजख में डाला जायेगा। इनकी चर्चा सूरः 69 की आयतें 18 से 29 तक में हैं। काफ़िर कैसा नरक पायेंगे यह कुरान शरीफ में इस प्रकार आता है "(फिर हुक्म होगा कि इसको पकडो और इसके गले

में तौक डालो।" 69/30 "फिर इसको आग में ढकेल दो।" 69/31 "फिर सत्तर गज लम्बी जजीर से इसको जकड़ दो।" 69/32 "वह अल्लाह पर जो सबसे महान है यकीन नहीं लाना था।" 69/33 "तो आज के दिन यहाँ उसका कोई दोस्त नहीं।" 69/35 "और न खाना सिवाय जख्मों के धोवन के।" 69/36 "जिसे गुनहगार के अलावा कोई न खावेगा।" 69/37 "और बेशक यह (कुरान) काफ़िरों के लिए पछतावा है।" 69/50

सूरः 70, 71, 72, 73

27.8 काफ़िरों को मिलने वाले अजाब का बड़ा ही विशद चित्रण कुरान शरीफ़ के 70 वें सूर में इस प्रकार दिया गया है :

"एक पूछने वाले ने अजाब के बारे में पूछा जो (लाजिमी) होनहार है।" 70/1 "वह काफ़िरों के लिये है कोई उसको रोक नहीं सकता।" 70/2 "अल्लाह की ओर से (नाजिल होगा) जो सीढ़ियों (यानी एक से एक ऊँचे दर्जो का) का मालिक है।" 70/3 "वह (काफिर अजाब के दिन पर यकीन न रखने के कारण) उसको दूर देखते हैं।" 70/6 "और हम उस (दिन) को करीब देखते हैं। 70/7 "......(वे स्वार्थी) गुनहगार चाहेंगे कि उस दिन अजाब से छुटकारे के बदले में अपने बेटे दें।" 70/11 "और अपनी संगिनी और अपने भाई।" 70/12 "और अपने कुटुम्ब को जिसमें रहता था।" 70/13 "....और फिर अपने आपको बचा ले।" 70/14 "सो हरगिज नहीं वह भड़कती हुई आग है।" 70/15 "जो कलेजे तक को खींच लेने वाली है।" 70/16 "वह (अपनी ओर खींच) बुलाती है हर शख्स को जिसने पीठ फेरी और मुँह मोड़ा।" 70/17 "(और उनकी हालत होगी कि) निगाह नीची किये होंगे और जिल्लत छायी होगी। यही वह (अजाब के वादे का) दिन है जिसका इन काफ़िरों से वादा है।" 70/44

27.9 अट्ठाइस आयतों वाला सूरः 71 पूरा का पूरा हजरत नूह, जिन्हें बाईबिल में नोहा कहा गया है, से संबंधित है। इसका मुख्य विषय भी नूह को नकारने वाले उस समय के काफ़िरों से है। इसकी चर्चा हम "अन्य पैगम्बर और काफ़िर" इस अध्याय के अन्तर्गत करेंगे। यहां हम केवल उदाहरण के लिये इस सूरः से नूह द्वारा अल्लाह से काफ़िरों के विरूद्ध की गई यह प्रार्थना दे रहे हैं : "और नूह ने कहा ए परवरदिगार। दुनियां में काफ़िरों का कोई घर (तबाह करने से बाकी) न छोड़।" 71/26 "अगर तू उन्हें रहने देगा तो ये तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और इनसे जो सन्तान चलेगी वह भी सरकश और काफ़िर ही होगी।" 71/27 "और इन जालिमों की तबाही बढ़ती ही जावे।" 71/28

28.0 सूरः 72 की विशेषता यह है कि इसकी शुरु की 19 आयतों में जिन्नों ने कुरान शरीफ की महिमा, अल्लाह ही की वरिष्ठता तथा हजरत मुहम्मद की पैगम्बरी स्वीकार की। साथ ही जिन्नों से काफ़िरों को मिलने वाली सजा को भी इस प्रकार स्वीकार किया :

(1) "और यह कि हममें से कोई आज्ञाकारी है और कोई अवज्ञाकारी (नाफरमान) है सो जो कोई हुक्म में आये उन्होंने सीधी राह पाली।" 72/14

(2) "और जिन्होनें मुँह मोड़ा वह दोजख का ईंधन बन गये।" 72/15 "और यह कि अगर यह (काफ़िर) लोग सीधी राह पर रहते तो हम उन्हें भरपूर पानी पिलाते।" 72/16

(3) "......और जो कोई अल्लाह का और उसके पैगम्बर का हुक्म न माने तो उसके लिए दोजख की आग है जिसमें वह हमेशा रहेंगे।" 72/23

सूरः 73 की अपनी विशेषता है। इस अध्याय में अल्लाह ने पैगम्बर हजरत मुहम्मद की दो तिहाई रात या लम्बे समय तक रातों को नमाज में खड़े होकर बिताने की बारम्बार सराहना की है। परन्तु इतनी लम्बी नमाजें शरीर निबाह न सकेगा इस बात से आगाह करते हुए अल्लाह का आदेश आया "तो जितना आसानी से हो सके उतना पढ़ो और नमाज कायम रखो और अल्लाह को खुशदिली से कर्ज दिया करो (यानी अल्लाह की राह में जान व माल लगाया करो).... ।" 73/20 और काफ़िरों के बारे में पैगम्बर को आश्वासित करते हुए काफ़िरों को डराते हुए अल्लाह कहते हैं :

28 1 (1) "और वे (काफ़िर तुम्हें अपमानित करने के लिए) जो कुछ कहते हैं उस पर सब्र कर और खूबसूरती के साथ उनसे किनारा कर लो।" 73/10 "और मुझको और झुठलानेवालों को जो आराम में रह रहे हैं (निपटने के लिये) छोड़ दे और उन्हें थोड़ी मुहलत दे (ताकि उनकी सरकशी) हद पार करे और वे अजाब में दाखिल हों।" 73/11

(2) "बेशक हमारे पास (उन मुन्किरो के लिए) बेड़ियाँ और आग का ढेर है।" 73/12 "और खाना जो गले से न उतरे और दुखदाई अजाब है।" 73/13

(3) "जिस तरह हमने फिरऔन के पास (मूसा को) पैगम्बर (बनाकर) भेजा था (उसी तरह हमने) तुम्हारी तरफ (मुहम्मद को) पैगम्बर बनाकर भेजा है जो (आखिरत के दिन) तुम्हारे कामों पर गवाही देगा।" 73/15 "फिर फिरऔन ने पैगम्बर (के हुक्म) से मुँह मोड़ा जो हमने उसको सख्त सजा में धर पकड़ा।" 73/16 "फिर अगर तुम (भी रसूल से) मुँह मोड़ोगे तो उस दिन (के अजाब) से क्योंकर बचोगे.... ।" 73/17

सूरः 74, 75, 76

28 2 सूरः 74 की काफ़िर संबंधी आयतें बड़ी ही संक्षिप्त और सटीक हैं। इस्लाम में काफिर के स्थान को स्पष्ट रुप में जानने के लिये इनका अधययन आवश्यक है :

(1) "फिर (उस कयामत के दिन) सूर फूंका जायेगा।" 74/8 "तो यह दिन (काफिरों के लिये) बड़ा कठिन होगा।" 74/9 "कि उसमें काफ़िरों को आसान न होगा।" 74/10

(2) "मुझे और उस शख्स को जिसे मैंने अकेले पैदा किया (निपटने के लिये) छोड़ दो।" 74/11 "और मैंने उसको बहुत माल दिया।" 74/12 "और हर तरह का सामान उसके लिए आरास्तः कर दिया।" 74/14 "फिर इस पर भी वह लालसा लगाये बैठा है कि मैं और कुछ दूँ।" 74/15 "हरगिज नहीं" वह हमारी आयतों का दुश्मन है।" 74/16 "अब हम जल्द उसे सख्त सजा में चढ़ायेंगे।" 74/17

(3) "वह दाँव में लगा है और तदबीर कर रहा है।" 74/18 "तो नाश हो उसका वह कैसी तदबीर कर रहा है।" 74/19 "फिर त्यौरी चढ़ाई और मुँह बिगाड़ लिया।' 74/22

(4) "(ऐ पैगम्बर) मैं उसको जल्द ही सकर (दोजख की आग) में झोंक दूँगा।" 74/26 "और तू क्या जाने कि वह सकर क्या चीज है " 74/27 "वह न बाकी रखती है और न

छोडती है।" 74/28 "शरीर को झुलसाती छायी रहती है।" 74/29

(5) "उस (नरक की आग) पर (फरिश्ते) तैनात हैं।" 74/30 "और हमने फरिश्तो को आग का चौकीदार बनाया है। और इसकी गिनती हमने काफ़िरो की जाँच के लिए काफी ठहराई है.....।" 74/31

(6) "हां-हां चांद की कसम।" 74/32 "और रात की (कसम) जब वह गुजरने लगे।" 74/33 "कि यह (नरक की) आग एक बड़ी चीजो में से है।" 74/35 "लोगों को डराने के लिए।" 74/36

(7) "फिर अब इन (मक्कावालों) को क्या हो गया है कि वह इस नसीहत (यानी कुरान) से मुँह मोड़ते हैं।" 74/49 "गोया कि ये बिदकते गधे हैं।" 74/50

75वीं सूरः काफ़िर पर पड़ने वाले अज़ाब की वजह बतलाती है और उन पर बड़ा अफसोस भी जाहिर करती है "तो उसने न (कलामें अल्लाह पर) यकीन किया और न नमाज पढ़ी।" 75/31 "बल्कि उसने हक को झुठलाया और (उससे विमुख होकर) मुँह मोड़ा।" 75/32 "फिर अपन घर को अकड़ता चल दिया।" 75/33 "तो (ऐ नादान इन्सान) अफसोस तुझ पर अफसोस।" 75/34 "फिर अफसोस तुझ पर अफसोस पर अफसोस।" 75/35 "क्या आदमी ख्याल करता है कि वह यों ही छोड़ दिया जायेगा।" 75/36 "हमने काफ़िरों के वास्ते जजीरें और तौक और दहकती हुई आग तैयार कर रखी है।" 76/4 "......और जालिम लोगों के लिए दुखदाई सजा तैयार कर रखी है।" 76/31

सूरः 77

28 3 सूरः 77 के शुरु में कयामत या अन्तिम फैसले के दिन का बड़े ही भावनात्मक ढग से वर्णन किया गया है। तत्पश्चात किस प्रकार उस दिन काफ़िर या गुनहगार या अल्लाह, कुरान और रसूल को झुटलाने वालों की दुर्दशा होगी दर्शाया गया है। और बार बार काफ़िर की तबाही की आयत दुहराई गई है।

(1) "उन (हवाओं) की कसम जो धीमें-धीमें चलाई जाती हैं।" 77/1 "फिर (जो) जोर पकड़कर आँधी हो जाती है।" 77/2 "फिर (जो बादलों को) उभारकर फैला देती है।" 77/3 "(और उनको) जुदा कर देती है।" 77/4 "दिलों में याद दिलाती हैं।" 77/5 "ताकि दलीलें समाप्त हो और डराया जाय।" 77/6

(2) "(गरज इन हवाओं की कसम है कि) तुमसे जो (कयामत का) वादा किया जाता है वह जरुर होकर रहेगा।" 77/7 "यानी जब नक्षत्र धीमें पड़ जाय।" 77/8 "और जब आसमान फट जावे।" 77/9 "और जब पहाड़ उड़ाये जायं।"77/10

(3) "और जब पैगम्बर नियत समय पर हाजिर किये जावें।" 77/11 "(तो इस घटना के लिये) किस दिन की देर है।" 77/12 "फैसले (अन्तिम न्याय) के लिए किस दिन की देर है।" 77/13 "और तू क्या जाने फैसले का दिन क्या चीज है।" 77/14

(4) "उस दिन (अल्लाह और रसूल को) झुठलानेवालों की बर्बादी है।" 77/15 "क्या हमने अगली (गुनहगार) उम्मतों को बर्बाद नहीं किया।" 77/16 "फिर (इसी तरह) उनके पीछे

हम बादवाले (नाफ़र्मानों) को भेजते रहे।" 77/17 "गुनहगारों के साथ हम ऐसा ही किया करते हैं।" 77/18 "उस दिन झुठलानेवालों की तबाही है।" 77/19 "(कयामत के) उस दिन झुठलानेवालों की तबाही है।" 77/24 "(कयामत के) उस दिन झुठलानेवालें की तबाही है।" 77/28 "(कयामत के) उस दिन झुठलानेवालों की तबाही है।" 77/34

(5) "यही वह दिन है कि उनसे बात न निकलेगी।" 77/35 "और न उनको इजाजत दी जावेगी कि (अपने बचाव के लिये कोई) उज्र ही पेश कर सकें।" 77/36 "(कयामत के) उस दिन झुठलानेवालों की तबाही है।" 77/37

(6) "यही तो फैसले का दिन है जिसमें हमने तुमको और अगलों को जमा किया है।" 77/38 "तो अगर तुम्हारी कोई तदबीर चल सके तो मुझ पर चलाओ।" 77/39 "उस दिन झूठलानेवालों की बरबादी है।" 77/40

(7) "अगली चार आयतों में ईमानवालों को मिलनेवाले बहिश्त का दृश्य खींचने के बाद कुरान शरीफ कहते हैं : "तबाही तो उस दिन झुठलानेवालों की है।" 77/45

(8) "और (दुनियां में) कुछ दिन खा लो और फायदा उठा लो।" (और ऐ मुन्किरों) तुम तो बेशक गुनहगार हो।" 77/46 "उस दिन झुठलानेवालों की खराबी है।" 77/47

(9) "और जब उनसे कहा जाय (अल्लाह के आगे) झुको तो नहीं झुकते। 77/48 "उस दिन झुठलानेवालों की तबाही है।" 77/49

सूरः 78, 79, 80

सूरः 78 में भी काफ़िरों के विरुद्ध अल्लाह की सजा सूरः 77 के समान ही अभिशाप भरी आयतें हैं :

28.4 (1) "यह लोग आपस में किस चीज की बाबत पूछ रहे हैं।" 78/1 "क्या बड़ी खबर की बाबत।" 78/2 "तो जल्दी ही इनको मालूम हो जायेगा।" 78/4 "फिर (जान लो) जल्द ही इनको मालूम हो जायेगा।" 78/5

(2) "बेशक फैसले के दिन का वक्त मुकर्रर है। 78/17 "उस दिन सूर फूँका जायेगा और तुम लोग गिरोह के गिरोह चले जा रहे होंगे।" 78/18 "और आसमान फटकर दरवाजे-दरवाजे हो जायेंगे।" 78/19 "बेशक दोजख (गुनहगारों की) घात में है।" 78/21 "सरकशों का (वहीं) ठिकाना है।" 78/22 "उसी में मुद्दतों पड़े रहेंगे।" 78/23

(3) "न वहां ठडंक का और न पीने (का मजा) चखेंगे।" 78/24 "सिवाय गर्म पानी और पीव के।" 78/25 "कि यह उनके आमाल का पूरा बदला है।" 78/26 "यह लोग हिसाब (आखिरत) की उम्मीद ही न रखते थे।" 78/27 "और हमारी आयतों को झुठलाते ही रहते

और बेटो से।" 80/36 "तो उस दिन ईमानवालों की शान बतलाते हुए आता है: "कितने मुँह उस दिन चमकते होंगे।" 80/38 "हंसते खुशियां मनाते।" 80/39 और काफ़िरों की क्या दशा होगी। "और कितने मुंह उस दिन (ऐसे) होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी।"80/40 "उन पर स्याही छाई होगी।" 80/41 "यही काफ़िर बदकिरदार हैं।" 80/42

सूरः 81, 82, 83, 84, 85, 86

28.5 सूरः 81 और सूरः 82 में कयामत का दृश्य दिखलाते हुए ईमानवालों को मिलने वाले बहिश्त और काफ़िरो को मिलने वाले दोजख को भी दर्शाया गया है :

"और जिस दिन आसमान की खाल खींच ली जायेगी।" 81/11 "और जिस समय दोजख (की आग) दहकाई जायेगी।" 81/12 "और बदकिरदार (दुष्कर्मी) बेशक दोजख में होंगे।" 82/14 "न्याय के दिन उसमें दाखिल होंगे।" 82/15 "और वह उससे (बचकर) छुप नहीं सकते।" 82/16

सूरः 83 और सूरः 84 कयामत और काफ़िर से संबंधित हैं :

(1) "उस दिन (आखिरत के दिन को) झुठलानेवालों की तबाही है।" 83/10 "बेशक फिर यह लोग दोजख में दाखिल होंगे।" 83/16

(2) "फिर (उनसे) कहा जायेगा कि यही तो वह (इन्साफ का दिन) है जिसको तुम झुठलाते थे।" 83/17

(3) "तो इन (काफ़िरों) को क्या हुआ कि ईमान नहीं लाते।" 83/20 "और जब इनके सामने कुरान पढ़ा जाता है तो सज्दः नहीं करते।" 84/21 "बल्कि उल्टे ये काफ़िर झुठलाते हैं।" 84/22 "और अल्लाह खूब जानता है जो कुछ ये दिलों में रखते हैं।" 84/23 "तो (ऐ पैगम्बर) इनको दुखदाई सजा की खुशखबरी सुना दो।" 84/24

"कुछ नहीं यह काफ़िर झुठलाने में लगे हैं।" 85/19 "और अल्लाह इनको सब ओर से घेरे हुए हैं।" 85/20 "बेशक यह (काफ़िर अपने) दाव कर रहे हैं।" 86/15 "और मैं (अपना) दांव कर रहा हूं।" 86/16 "तो (ऐ पैगम्बर) इन काफ़िरों को मुहलत दे (बस) इनको थोड़ी सी मोहलत दे।" 86/17

सूरः 87 से 111 तक

28.6 आगे के सब सूरः छोटे हैं पर इनमें काफ़िरों की चर्चा पिछले अध्यायों के प्रवाह के समान ही है।

"जो (अल्लाह से) डरता है वह नसीहत पकड़ेगा।" 87/10 "और अभागा तो उससे भागता ही रहेगा।"87/11 "वह जो (कयामत की) बड़ी आग में पड़ेगा।" 87/12 "फिर न तो उसमें मरेगा ही और न जिन्दा ही रहेगा।" 87/13

28.7 कयामत के अवसर पर काफ़िरों की दशा का वर्णन सूरः 88 में इस प्रकार है। "कितने मुँह उस रोज उतरे हुए होंगे।" 88/2 "दहकती हुई आग में दाखिल होंगे।" 88/4 "उनको एक खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जायेगा।" 88/5 "कांटों के झाड़ के सिवाय और कोई

खाना इनको (मयस्सर) नहीं।" 88/6 "तो (ऐ पैगम्बर) याद दिलाये जा, तेरा बस काम ही याद दिलाते रहना है।" 88/21 "तुम उन पर दरोगा तो नहीं है।" 88/22 "मगर जो मुँह फेरे ओर इन्कार करे।" 88/23 "तो अल्लाह उनको बड़ा अजाब देगा।" 88/24

28 8 "और जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया वही बदबख्त होंगे।" 90/10 "यह लोग आग में (डालकर) बंद कर दिये जायेंगे।" 90/20 "और आखिरत और दुनिया हमारे ही अधिकार में है।" 92/13 "तो मैंने तुमको भड़कती हुई आग से आगाह कर दिया है।" 92/14 "इसमें वही दाखिल होगा जो बड़ा अभागा है।" 92/15 "कि जो झुठलाते और मुँह फेरता रहा।" 92/16 "कसम है तीन (यानी अंजीर) और जैतून की।" 95/1 "कि हमने मनुष्य को अच्छी से अच्छी हालत में पैदा किया।" 95/4 "फिर (उसके कुफ्र करने और अल्लाह की आज्ञा से विमुख होने पर) उसको हमने नीचे से नीचे फेंक दिया।" 95/5 "(ऐ पैगम्बर) क्या तूने उस शख्स को देखा जो मना करता है।" 96/9 "जब एक बन्दा नमाज पढता है।" 96/10 "वह नहीं जानता कि अल्लाह (उसकी सारी करतूतें) देख रहा है।" 96/10 "नही"अगर वह बाज न आया तो हम उसको उसके मत्थे के बाल पकड़कर घसीटगें।" 96/15 "झूठे गुनहगार के बाल।" 96/16 "वह अपनी मजलिस को बुलाले।" 96/17 "हम भी दोजख के फरिश्तों को बुलाते हैं।" 96/18

28 9 "किताबवालों और शिर्कवालों में से जो लोग कुफ्र (यानी इन्कार) करते रहे वे दोजख की आग में पड़े हमेशा उसी में रहेंगे। वह लोग सबसे बुरे प्राणी हैं।" 98/6 "(वह) खड़खड़ा देने वाली है।" 101/1 "(वह कयामत की घड़ी है) जिस दिन आदमी बिखरे हुए पतिगों की तरह होंगे।" 101/4 "सो (उस दिन) जिस किसी का वजन (ईमान और नेक अमली की रुह से) हल्का होगा।" 101/8 "तो उसका ठिकाना हावियः होगा।" 101/9 "और तू क्या जाने वह (हाविय) क्या चीज है।" 101/10 "वह (दोजख की) दहकती हुई आग है।" 101/11 "बात यह है अगर तुम यकीन करना जानते होते (तो इस भरम में न पड़ते)।" 102/5 "तो तुम जरुर दोजख को देखोगे।" 102/6 "तू कह दे कि ऐ काफ़िरों।" 109/1 "मै उनकी ईबादत नहीं करता जिनकी तुम ईबादत करते हो।" 109/2 "और जिस (अल्लाह) की मैं ईबादत करता हूँ तुम भी उसकी ईबादत नहीं करते।" 109/3 "और (आगे भी) मैं उनकी ईबादत न करुँगा जिनकी तुम ईबादत करते आये हो।" 109/4 "और न तुम ही (कभी) उसकी ईबादत करना कि जिसकी मैं ईबादत करता हूँ।" 109/5 "तुमको तुम्हारा दीन और मुझको मेरा दीन।" 109/6

"जब अल्लाह की मदद और फतह आई।" 110/1 "और तूने देखा कि अल्लाह के दीन में गिरोह दाखिल हो रहे हैं।" 110/2 अबूलहब हजरत मुहम्मद के चाचा थे। वे और उनकी चाची उनसे शत्रुता रखते थे। उन्हीं के बारे में यह 5 आयतों वाला सूरः 111 है। "अबूलहब के (दोनों) हाथ टूट गये और वह नष्ट हुआ।" 111/1 "न तो उसका माल ही उसके कुछ काम आया और न उसकी कमाई।" 111/2 "वह जल्दी ही भड़कती आग में दाखिल होगा।" 111/3 "और (उसके साथ) उसी की बीबी भी जो ईंधन ढ़ोढ़ती (फिरती है " 111 4 "उसकी गर्दन में मूज की रस्सी होगी " 111 5

यहां यह ध्यान रहे कि कुरान शरीफ़ में कुल 114 अध्याय हैं।

काफ़िर-जिहाद और क़यामत संबंधी अन्य आयतें : 9 34 से 37, 13/6, 7, 25, 26, 27, 14/3, 42 से 46, 15/3, 4, 5, 16/2, 3, 35, 36, 40, 105 से 110, 125, 126, 127, 16/45 से 50, 62, 64, 17/10, 94, 95, 96, 99, 100, 18/36 से 44, 47 से 59, 21/32 से 35, 37, 38, 41, से 45, 47, 48, 49, 22/2 से 6, 8, 10 से 13, 24, 25, 41, 42, 43, 46, 47, 48, 51 से 57, 71, 73, 74, 23/55, से 63, 70 से 73, 77 से 85 88 से 94, 96 से 100, 112 से 116, 24/39, 40, 47, से 50, 53, 54, 25/30 से 33, 55, 26/2 से 8, 27/67 से 75, 28/61 से 66, 71 से 78, 86, 87, 88, 29/67, 30/7 से 14, 16, 19, 28, 29, 31, 33, से 36, 41, 42, 52, 53, 55, 56, 58, 59, 31/6, 11, 13, 15, 23, 32, 33, 32/10, 11, 26 से 30, 33/11, 14, 15, 17, 20 से 24, 63, 67 से 73, 34/7, 9, 34 से 37, 48, 49, 50, 35/4 से 8, 10, 13, 14, 24, 25, 26, 32, 40, 42, 44, 36/43 से 62, 37/69 से 74, 149 से 163, 167 से 179, 38/2 से 11, 15, 16, 39/3, 8, 9, 19, 24, 25, 26, 36, 38 से 45, 47, 51, 54 से 59, 63 से 69, 40/5, 6, 10, 11, 12, 21, 22, 40 से 50, 57 से 63, 40/73 से 78, 41/5, 6, 7, 9, 22, 23, 26, 40, 41, 44, 41/50, 52, 54, 42/6 से 10, 13, 14, 22, 24, 44 से 48, 43/6, 7, 8, 22 से 25, 33 से 40, 42, 66, 67, 80, 88, 89, 44/9 से 12, 14, 15, 34 से 37, 40, 41, 45/21, 23 से 34, 46/3 से 7, 10, 11, 12, 17 से 20, 35, 47/8 से 14, 16, 18, 22 से 26, 29, 30, 34, 48/6, 8, 13, 17, 18, 22 से 27, 49/14, 50/2 से 5, 14, 15, 25, 26, 44, 45, 51/51 से 54, 59, 52/15, 16, 30 से 38, 42, 45, 46, 47, 53/50 से 61, 54/1 से 8, 51, 56/45 से 50, 57 से 61, 56/92 से 95, 57/8 से 15, 19, 25, 58/6, 8, 9, 14, 15, 18, 22, 59/5 से 8, 11 से 15, 60/3, 7 से 11, 61/8, 9, 14, 63/1, 2, 3, 6, 64/2 से 7, 14, 65/11, 66/10, 67/17 से 29, 68/5 से 33, 41, 69/25 से 29, 49, 70/36 से 43, 72/23, 24, 25, 74/40 से 56, 75/1 से 15, 24 से 28, 76/ 24, 27, 77/ 29 से 40, 46, 50, 78/ 40, 79/10 से 15, 45 से 45, 83/ 11 से 15, 29 से 36, 84/ 10 से 15, 85/ 7, 8, 10, 98/ 1 से 5।

❑

अन्य काफ़िर यहूदी-ईसाई

29 0 कुरान शरीफ़ में वर्णित काफ़िरों की चर्चा अभी खत्म नहीं हुई है—इस दिशा में केवल एक बड़ी मंजिल ही तय हुई है। पिछले जितने भी पैगम्बर हुए उनको झुठलाने वाले भी काफ़िर हुए, और इन काफ़िरों पर हुए अल्लाह के कोप की कुरान शरीफ़ में स्थान-स्थान पर और एक ही विषय की पुनः-पुनः चर्चा है। ईसाई और यहूदियों को भी कुरान शरीफ़ ने काफ़िर माना है। अल्लाह के अलावा अन्य की पूजा करने वाले काफ़िर हैं। साथ ही जिस किसी भी व्यक्ति ने यदि अल्लाह को न माना वह काफ़िर ही हुआ और उसके लिये भी कुरान शरीफ़ में सख्त सजा का प्रावधन है। चूँकि "काफ़िर" वाले पिछले अध्याय में काफ़िरों को मिलनेवाली सजाओं की विस्तारपूर्वक चर्चा हो चुकी है। यहाँ हम इस "अन्य काफ़िर"वाले विषय को संक्षिप्त करने के उद्देश्य से थोड़ी ही आयतों को उदाहरणस्वरुप प्रस्तुत करेगें। शेष संबंधित आयतों के नम्बर मात्र ही अध्याय के अन्त में देगें।

29 1 पहले हम यहूदी और ईसाइयों को ही लेते हैं।

(1) "तो (मुसलमानों) क्या तुमको आशा है कि (यहूदी) बात मानकर ईमान ले आवेगें।(जबकि) उनका हाल यह है कि उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह का कलाम सुनते रहे फिर उसको समझ लेने के बाद भी उसको कुछ का कुछ करे देते रहे और वह इसे (खूब) जानते हैं।" 2/75 "और वे कहते हैं कि गिनती के चन्द रोज के सिवा (दोजख की आग उनको छुएगी नहीं)" 2/80 "इन्होंने ही आखिरत के बदले संसार की जिन्दगी मोल ली। सो न तो (कयामत के दिन) उनकी सजा ही हल्की की जायेगी और न उनको मदद ही पहुँचेगी।" 2/86 "और वह (यहूदी) घमण्ड से कहते हैं कि हमारे दिल कवच से सुरक्षित हैं। नही (सही यों है कि) उनके कुफ्र के कारण उन पर अल्लाह की फटकार है। इसलिए वे ईमान कम ही लाते हैं।" 2/88

(2) "अक्सर किताब के मानने वाले उन पर सच्चाई जाहिर हो जाने के बावजूद अपनी दिली हसद (ईर्ष्या) की वजह से चाहते हैं कि ईमान लाने के बाद फिर तुमको काफिर बना दे। तो क्षमा करो, उन पर ध्यान न दो। यहाँ तक कि अल्लाह अपनी आज्ञा जारी कर (आखिर आज्ञा आकर रही कि यहूदियों को मदीने के आस पास से निकाल बाहर करो) बेशक अल्लाह हर चीज पर समर्थ है।" 2/109

29 2 (1) "और यहूदी कहते हैं कि हमारे सिवा और ईसाई कहते हैं कि हमारे सिवा बहिश्त मे कोई नहीं जाने पायेगा। यह उनकी अपनी खयाली ख्वाइशें है। (ऐ पैगम्बर) इन लोगों से कहो अगर सच्चे हों तो अपनी सनद पेश करो " 2/111

2 "और यहूदी कहते हैं कि ईसाईयों का मजहब कुछ नहीं और ईसाई कहते हैं कि

यहूदी का मजहब कुछ नहीं हालांकि वह (दोनों तो खुदाई) किताब (तौरात और इंजील) के पढ़ने वाले हैं....कयामत के दिन अल्लाह इनमें उसका फैसला कर देगा।" 2/113

(3) "और (यहूदी और ईसाई मुसलमानों से) कहते हैं कि यहूदी और ईसाई हो जाओ तो सच्चे रास्ते पर आ जाओगे। (ऐ पैगम्बर) तुम इन लोगों से कहो नहीं, बल्कि हम इब्राहीम के दीन की पैरवी करते हैं जो एक (अल्लाह) के हो रहे थे और मुशरिकीन में से न थे।" 2/135 "क्या तुम्हारा (यह) दावा है कि इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक और याकूब की संतान यहूदी थे, या ईसाई थे। (ऐ पैगम्बर) इनसे कहो कि क्या तुम जियादः जानने वाले हो या अल्लाह और उससे बढ़कर जालिम कौन जो उस गवाही को छिपाये जो उसके पास अल्लाह की तरफ से (प्राप्त) है।" 2/140 "और अगर किताब वाले (यहूदी) भी ईमान ले आते तो उनके हक में बहुत भला होता। उनमें से थोड़े से ईमानवाले भी हैं लेकिन (उनमें) ज्यादातर नाफरमान हैं।" 3/110 "जो लोग कहते हैं कि अल्लाह मुहताज है और हम मालदार हैं उनकी बकवास अल्लाह ने सुन ली है और यह लोग जो नाहक पैगम्बरों को कत्ल करते चले आये हैं। उसके साथ हम उनकी बकवास को भी लिखे रखते हैं, और इनका जवाब (हमारी तरफ से आखिरत के दिन) यह होगा कि (दोजख की) आग का मजा चखो।" 3/181

"क्या तुमने इन लोगों (यहूदियों के हाल) पर नजर नहीं की जिनको किताब से हिस्सा दिया गया और वह जिब्त (जादू टोना, सगुन, असगुन) और तागूत (शैतान) को लगे मानने और काफिरों के बाबत कहते हैं कि मुसलमानों से तो यही लोग जियादः सीधे रास्ते पर हैं।" 4/51 ऐ पैगम्बर। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की और जिस पर अल्लाह लानत करे, मुमकिन नहीं कि तुम (उसका) कोई मददगार पा सको।" 4/52 "और (उनके बड़े गर्व से) इस कहने की वजह से कि हमने मरियम के बेटे ईसा मसीह को, जो अल्लाह के रसूल थे, कत्ल कर डाला....यकीनन ईसा को (लोगों ने) कत्ल नहीं किया 4/157 "बल्कि उनको अल्लाह ने अपनी तरफ उठा लिया और बेशक अल्लाह जबरदस्त और हिकमतवाला है।" 4/158 "तो यहूदियों के गुनाह के सबब हमने कितनी पाक चीजें जो उनके लिए (पहले) हलाल थीं उन पर हराम कर दी' और इस वजह से (भी ऐसा किया) कि अक्सर अल्लाह की राह से (लोगों को) बहुत रोकते थे।" 4/160 "और (इस वजह से भी कि बार बार) उनको ब्याज लेने की मनाई कर दी गई थी, इस पर भी ब्याज लेते थे, और (इस कारण से भी कि) लोगों के माल नाहक खा डालते थे, और इनमें जो लोग (अल्लाह के हुक्म से) इन्कार करते हैं उनके लिए दुखदाई अजाब तैयार कर रखा है।" 4/161

"ऐ किताबवालों अपनी दीन के बात में (अपनी तरफ से) न बढ़ाओ और अल्लाह की बाबत सच बात के सिवा (एक शब्द भी) न कहो। मरियम के बेटे ईसामसीह बस अल्लाह के पैगम्बर हैं। और अल्लाह का एक कलिमा (हुक्म) जो उसने मरियम की तरफ भेजा और रूह से खास अल्लाह की तरफ से। पस अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और न कहो कि (अल्लाह) तीन हैं। यह (विचार) छोड़ दो; तुम्हारा भला होगा। अल्लाह एकमात्र इलाह (पूज्य) है, इससे पाक है कि उसके सन्तान हो। (सब) उसी का है जो कुछ आसमानों में और जमीन में है और अल्लाह काम का सभालने वाला काफी है " 4/171 फुट नोट में इस आयत

का खुलासा करते हुए आता है कि ईसाई जो अल्लाह, ईसा और मरियम, तीनों को अल्लाह के समान पूजते हैं सो गलत है। और न ही अल्लाह के कोई बेटा-बेटी होता है। इसलिये कुरान के अनुसार हजरत ईसा ईश्वर के पुत्र नहीं पैगम्बर थे। इस प्रकार यह आयत बाईबिल के दो मुख्यतम सिद्धांतों को सीधे तौर पर नकारती है। इस बात को सूरः 5/17 में बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है। "जो लोग मरियम के बेटे मसीह को ही अल्लाह कहते हैं, यह बेशक काफ़िर है (ऐ पैगम्बर इन लोगों से) कहो कि अगर मरियम के बेटे मसीह को और उसकी माता को और जितने लोग जमीन में हैं सबको अल्लाह मार डालना चाहे तो उसके आगे किसका बस है...।" 5/17

29 3 सूरः 5 में स्थान-स्थान पर यहूदी और ईसाई दोनों पर लानत करते हुए आता है

(1) "और यहूदी व ईसाई दावा करते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे है। (ऐ पैगम्बर! इनसे) कहो (कि अगर यह सही है तो) वह तुम्हारे गुनाहों के बदले में तुमको सजा (ही) क्यों दिया करता है (तो तुम्हारा यह कहना ठीक नहीं)...।" 5/18 और तत्पश्चात अगली आयत में यह आदेश है कि "ऐ किताबवालो! (एक अरसे तक) पैग़म्बरों का तोड़ा (सिलसिला) बन्द रहने के बाद हमारा पैगम्बर (मुहम्मद स.) तुम्हारे पास आया है जो तुमसे साफ साफ बयान करता है, ताकि तुमको कहने की गुंजाइश न रहे कि हमारे पास खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला नहीं आया। पस खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला तुम्हारे पास आ चुका है और अल्लाह हर चीज़ पर समर्थ है.....।" 5/19

(2) "ऐ ईमानवालो! यहूद और ईसाई को मित्र न बनाओ। (तुम्हारे मुकाबले मे) यह एक दूसरे के मित्र हैं। और तुममें जो कोई इनको दोस्त बनायेगा तो बेशक (वह भी) इन्हीं में से होगा, बेशक अल्लाह जालिम लोगों को सीधा रास्ता नही दिखलाया करता।" 5/51

(3) "ऐ ईमानवालों जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी और खेल ठहरा रखा है यानी (यहूद व ईसाई) जिनको तुमसे पहले किताब (भी) दी जा चुकी है, (उनको) और काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ......" 5/57

(4) "और यहूद कहते हैं कि अल्लाह का हाथ (इन दिनों) तंग है। इन्हीं के हाथ तंग हो जायं और इनके ऐसा कहने पर इनको लानत है। बल्कि अल्लाह के दोनों हाथ खुले हुए है, जिस तरह चाहता है खर्च करता है....हमने इनके आपस में दुश्मनी और ईर्ष्या कयामत तक (के लिए) डाल दी है। (यानी ये लोग आपस में मिलकर मुसलमानों के खिलाफ) जब-जब लडाई की आग सुलगाते हैं अल्लाह (उनमें फूट पैदा करके) उसको बुझा देता है। और मुल्क मे फसाद फैलाते फिरते हैं और अल्लाह फसादियों को दोस्त नहीं रखता।" 5/64

"बेशक जो लोग कहते हैं अल्लाह तो यही मरियम के बेटे मसीह हैं यह लोग काफ़िर हो गये। और मसीह (तो यू) समझाया करते थे कि ऐ याकूब के बेटो! अल्लाह (ही) की ईबादत करो कि वह मेरा (भी) तुम्हारा (भी) परवरदिगार है। और शक नहीं कि जिसने (किसी को) जिसने अल्लाह का साँझी ठहराया (तो) बहिश्त उस पर अल्लाह ने हराम की और उसका ठिकाना दोजख है।. " 5/72

29.4 अल्लाह के हुक्मों का निरादर करने वाले यहूदियों को अल्लाह ने सख्त सजा देने का प्रावधान किया है :

(1) "और जालिमों को उनकी बेहुक्मी के बदले सख्त अजाब में धर पकड़ा।" 7/165

(2) "फिर जिस काम से उनको मना किया गया था जब उसमें हद से बढ़ गये तो हमने उनको हुक्म दिया कि फटकारे हुए बन्दर बन जाओ।" 7/166

(3) "....और हमने यहूद को गिरोह-गिरोह करके जमीन में अलग-अलग कर दिया है। और हमने उनको सुख और दुख में आजमाया, शायद वह (हमारी तरफ) रुजू हो जायं।" 7/168

"और यहूद कहते हैं कि उजैर अल्लाह के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं। यह उनके मुंह की (अनर्गल) बातें है। उन्हीं काफिरों जैसी बातें बनाने लगे जो इनसे पहले (हो गुजरे) हैं। अल्लाह इनको गारत करे किधर को भटक चले जा रहे हैं।" "इन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर अपने धर्म गुरुओं और अपने यतियों और मरियम के बेटे मसीह को अल्लाह बना खड़ा किया। हालांकि इनको यही हुक्म दिया गया था कि एक ही अल्लाह की पूजा करते रहना....।" 9/31 "(ऐ पैगम्बर) हम इन काफिरों पर वैसा ही अजाब उतारेंगें जैसा हमने उन भेद पैदा करने वाले (यहूदियों) पर उतारा था।" 15/90 'जिन्होंने बांटकर कुरान (यानी तौरात) के टुकड़े-टुकड़े कर डाले यानी कुछ बातें मानते हैं कुछ नहीं।" 15/91

(यहूदियों ने) जिन लोगों पर तौरात (की जिम्मेदारी) लादी गई फिर उन्होंने उसको नहीं उठाया तो उनकी मिसाल किताब से लदे गधे जैसी है। जो लोग अल्लाह की आयतों को झुठलाते हैं उनकी मिसाल बड़ी बुरी है। और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता।" 62/5

यहूदी-ईसाई संबंधित अन्य आयतें–

2/76 से 79, 83, 84, 85, 87, 89 से 96, 100, 101, 105, 108, 114, 115, 133, 134, 136 से 139, 141, 174, 175, 211, 212, 213, 3/60 से 63, 70 से 91, 98 से 101, 111, 112, 113, 119, 120, 4/46 से 50, 53, 54, 55, 153 से 156, 172; 5/12 से 16, 44 से 47, 52, 53, 54, 58 से 63, 65 से 71, 73 से 77, 79 से 82; 6/91, 92. 7/160 से 164, 167 से 171, 9/32 से 35, 16/124; 17/4 से 8, 20/133, 134, 27/76, 77, 30/2, 3, 4, 32/24 से 30; 45/16, 17, 62/6, 7, 8,

❑

पिछले पैगम्बर और काफ़िर

29 5 "ये काफ़िर हर नबी के जमाने में यों ही सरकशी करते रहे हैं।" 29/14 सूरः 29 की यह आयत बतलाती है कि जब से अल्लाह ने अपनी यह सृष्टि बनाई है तबसे उनको और उनके द्वारा भेजे गए नबियों या पैगम्बरों को काफ़िर नकारते आए हैं। और उनका यही रवैया हजरत मुहम्मद साहब की पैगम्बरी के समय में भी रहा। कुरान शरीफ़ में काफ़िरों के सदर्भ मे कई प्रमुख नबियों की सम्मिलित रुप से भी और अलग-अलग चर्चा बार-बार आई है। कुरान में मुख्यतः इन पैगम्बरों के नाम और उनसे संबंधित कथाएं बार-बार आई हैं : हजरत नूह, मूसा, इबराहिम, सालेह, शुऐब, हूद, इस्माइल ईसामसीह, दाउद और उनके बेटे सुलेमान, जकरिया, इलियास, युसुफ, लुकमान, जुलकरनैन, हजरत सिज्र आदि।

हम बहुत संक्षेप में इन पैगम्बरों के संदर्भ में काफ़िरों को अल्लाह की ओर से मिलने वाली सजाओं और उनसे संबंधित कथाओं की नीचे चर्चा करेगें। साथ ही हम पाठकों की निगाह में उन आयतों को लायेंगें जिनमें आयतों पर ईमान न लाने वालों पर अल्लाह ने अजाब, पत्थर आदि की वर्षा द्वारा नष्ट करने की चर्चा है। चूँकि कयामत के सजा की घडी तो आगे जाकर अपने निश्चित समय पर आयेगी गैर-ईमानवालों या काफ़िरों पर ये सजाऐ अल्लाह ने इस लोक में ही उतारी हैं।

(1) "और तुमसे पहले बहुत सी उम्मतों (संगतों) की तरफ पैगम्बर भेजे। फिर (आगे चल कर उन उम्मतों के कुफ्र पर) हमने उनको सख्ती और तकलीफ में डाला ताकि शायद वह (हमारे सामने) गिड़गिड़ाये।" 6/42 "तो जब उन पर हमारी सजा आई थी तो क्यों नहीं गिडगिडाये? मगर उनके दिल तो कठोर हो गये थे और जो (बुरे) काम (वे) करते थे शैतान ने उन (की नजरों में उन) को भला दिखलाया था (ताकि वे उन्हीं शैतानी कामों में लिप्त रहें)।" 6/43

(2) "फिर उन जालिमों की जड़ कट गई और अल्लाह ही की सराहना है जो सारे ससार का मालिक है।" 6/45 "और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनको हुक्म न मानने की सबब (हमारी) सजा पहुँचकर रहेगी।" 6/49

29 6 सूरः 7 की 3 से 10 आयतों में अल्लाह लोगों को अपने पैगम्बर हजरत मुहम्मद द्वारा बतलाई गई राह पर चलने का आदेश देते हुए और डर दिखलाते हुए बतलाते हैं कि किस प्रकार उसने पिछले समय में पैगम्बरों को झुठलाने वालों को तबाह कर दिया था :

"(ऐ लोगों) जो तुम्हारे परवरदीगार की तरफ से तुम पर उतरा है इसी पर चलो, और उसके सिवाय दूसरे रफीकों (यानी शैतानों को दोस्त समझकर उन) के पीछे मत चलो, (लेकिन चेतावनी पर) तुम कम ही ध्यान देते हो "7/3 "और कितनी बस्तिया हमने तबाह कर दीं कि

रात की रात या दोपहर दिन को सोते वक्त हमारा अजाब उन पर पहुँचा।" 7/4 "जब हमारी सजा उन पर उतरी तो और कुछ न बोल सके, यही कहा कि बेशक हम ही गुनहगार थे।" 7/5 "तो जिन लोगों की तरफ पैगम्बर भेजे गये थे हम उनसे (क़यामत के दिन) जरुर पूछेंगे और पैगम्बरों से भी पूछेंगें।" 7/6 **"और ऐसा कभी न हुआ कि हमने किसी बस्ती में पैगम्बर भेजा हो (और) वहाँ के रहने वालों पर हमने सख्ती और मुसीबत न डाली हो कि शायद वह लोग तौबः करें।" 7/94 "तो क्या बस्तियों में रहने वाले (इससे) निडर हैं कि उन पर हमारा अजाब रातोरात आ पहुँचे जब वह सोयें पड़े हों।"** 7/97 "या क्या बस्तियो के रहने वाले (इससे) निडर हैं कि हमारा अजाब दिन दहाड़े उनपर (टूट) पड़ें जबकि वह खेल कूद रहे हों।" 7/98 "और हमने तो इनमें से बहुतेरों को बचन का निर्वाह करने वाला न पाया और हमने इनमें से बहुतों को बेहुक्म पाया।" 7/102 "और (ऐ पैगम्बर) तुमसे पहले भी कितने ही पैगम्बरों की हंसी उड़ाई जा चुकी हैं सो हमने काफ़िरों को ढील दी फिर (जब नहीं माने तब) उनको धर पकड़ा तो हमारी सजा कैसी (सख्त) थी।" 13/32 **"सो (ऐ पैगम्बर) ऐसा ख्याल न करना कि अल्लाह जो अपने पैगम्बरों से अहद कर चुका है उसके खिलाफ करेगा। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है।"** 14/47 "अल्लाह की कसम है तुमसे पहले हमने कितनी ही उम्मतों (गिरोहों) की तरफ पैगम्बर भेजे। तो शैतान ने उन (क़ौमों) के (बुरे) काम उनको अच्छे कर दिखायें तो वही (शैतान) इस ज़माने में इनका (भी) मित्र है और इनको दुखदाई सज़ा (होनी) है।" 16/63 **"और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की है कि (वहाँ हर तरह) अमन व इत्मीनान था.....फिर उन्होंने अल्लाह के इहसानों की नाशुक्री की तो उनके कामों के बदले में अल्लाह ने उनको मजा चखाया कि भूख और डर से उनके तन को ढक दिया।" 16/112**

29.7 "और उन्हीं में का एक पैगम्बर उनके पास भेजा तो उन्होंने उसको झुठलाया फिर उन लोगों को अजाब ने आ दबोचा और वे थे ही गुनहगार।" 16/113 "कोई (अवज्ञाकारियों की) बस्ती नहीं जिसे कयामत के दिन से पहले हम बरबाद न कर दें या उसको सख्त अजाब न दे। यह बात किताब (लौह महफूज) में लिखी जा चुकी है।" 17/58 जिन लोगों ने अल्लाह के सिवाय (अपने लिए) दूसरे (पूजित) काम संभालने बना रखे हैं उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है। कि जिसने एक घर बनाया और सब घरों में बोदा तो मकड़ी का घर है। अगर यह लोग समझते।" 29/41 "क्या यह लोग मुल्क में नहीं चलते फिरते कि देखें कि अपने से पहलो का कैसा अन्त हुआ। वह लोग उनसे बल में भी बढ़कर थे.....और उनके पास उनके पैगम्बर खुले चमत्कार लेकर पहुँचे (मगर उन्होंने न माना और अपने किये की सजा पाई) तो अल्लाह उन पर जुल्म करनेवाला नहीं था बल्कि वह अपनी जानों पर खुद जुल्म करते थे।" 30/9

"फिर जिन लोगों ने बुरा किया उनका आखीर बुरा ही हुआ यह इसलिये कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और उनकी हंसी उड़ाई।" 30/10

"जो कुफ्र करता है तो उसी पर उसके कुफ्र (की बला) पड़ेगी और जो अच्छे काम करता है तो वह अपने ही लिए (आराम का) समान आरस्त कर रहा है।" 30/44

29.8 सूरः 34 में अल्लाह बतलाते हैं कि किस प्रकार जालिम या काफ़िर होने पर अल्लाह ने उनको ओर उनकी बस्तियों को बरबाद कर दिया था :

(1) "लेकिन (कुछ दिनों बाद जब वे जालिम हो गये और) और उन्होंने कुछ परवाह न की तो हमने उन पर बड़े जोर का सैलाब छोड़ दिया और हमने उनके दो बागों के बदले में और ही दो (जंगली) बाग दिये जिनके फल कसैले और झाऊ और थोड़े से बेर थे।" 34/16

(2) यह हमने उनको उनकी कृतघ्नता (नाशुक्री) का बदला दिया। और कृतघ्नो को (ऐसे ही) बदला दिया करते हैं।" 34/17

"और अगर वह (मक्का के मुशरिक) तुझे झुठलायें तो (यह कोई नई बात नहीं) इनसे पहले के लोगों ने भी (अपने पैगम्बरों को) झुठलाया है। उनके पैगम्बर उनके पास खुले चमत्कार और सहीफे (धर्म पत्रवली) और रौशन किताबें लेकर आते रहे।" 35/25 "फिर मैंने (उन झुठलाने वालों और) इन्कार करने वालों को (अजाब में) धर पकड़ा तो मेरी सजा कैसी रही।" 35/26

29.9 अल्लाह और उनके पैगम्बर हजरत मुहम्मद को झुठलाने वाले काफ़िरों पर अल्लाह का भारी कोप होना स्वाभाविक है। सूरः 38 और 53 में अल्लाह बतलाते हैं कि पिछले समय मे ऐसे झुठलाने वालों को किस प्रकार दण्डित किया जाता रहा है :

(1) "हमने इनसे पहले बहुत से गिरोहों को हलाक कर डाला फिर (सज़ा के वक्त वे) चिल्ला उठे और (उस समय चिल्लाने से क्या नतीजा कि जब) रिहाई की मुहलत (ही) न रही।" 38/3

(2) "......(अगर अल्लाह के निजाम में इनको दखल है और यह अपनी राय रखते है कि नबी किसको बनाया जाय) तो इनको चाहिए कि रस्सियां लगाकर (आसमान पर) चढ़ जायं (और अल्लाह से मुकाबिला करें)" 38/10

(3) "(ऐ पैगम्बर इनसे पहले तबाह हुए गुनहगार) तमाम लश्करों में यह कौम भी इस जगह एक शिकस्त खाई हुई फौज (की तरह) बढ़ जायेगी।" 38/11 "इनसे पहले नूह की कौम और आद और मेखोवाले फिरऔन (भी और पैगम्बरों को झुठला चुके हैं)" 38/12 "ओर समूद और लूत की कौम और ऐकः (यानी बनवालों) के गिरोह भी (अपने पैगम्बरों को झुठला चुके हैं) और यह वहीं तबाह हुए लश्कर हैं।" 38/13 (6) "इन सब ही ने तो अपने पैगम्बरो को झुठलाया फिर मेरा अजाब (उन पर) नाजिल हुआ।" 38/14

"और यह कि उसी (अल्लाह) ने अगले आदके लोगों को बरबाद कर खपा दिया।" 53/50 "और समूद को भी (गरज किसी को भी) इसमें संदेह नहीं कि वे थे ही बड़े अन्यायी और उपद्रवी।" 53/52 "और (उसी ने) उल्टी बस्तियों को (जिनमें लूत की जाति रहती थी) दे पटका।" 53/53 "फिर उन पर (पथराव का मेंह) जो छाया सो छाया।" 53/54 "आने वाली (यानी कयामत) समीप आ पहुँची है।" 53/57 "अल्लाह के सिवाय किसी की सामर्थ्य नही कि उस (दिन की तकलीफों) को दूर कर सके।" 53/58 "तो (ऐ इन्कारियों) क्या तुम (अल्लाह के) इस कलाम से आश्चर्य करते हो।" 53/59 "और हंसते हो रोते नहीं।" 53/60 "ओर तुम भूल में पड़े हो।" 53/61 "पस अल्लाह की सज्दः करो और (उसी की) ईबादत करो " 53/62 "और कितनी ही बस्तियों ने अपने के हुक्म से और उसक पैगम्बर

के हुक्म से सरकशी की फिर हमने उनसे सख्त हिसाब लिया और उन पर (अचानक) बडा कठिन अजाब डाला।" 65/8

30 0 हजरत मुहम्मद साहब से पहले भेजे हुए अन्य पैगम्बरों से संबंधित सूरः 69 और सूर 105 में आई कुछ आयतों को नीचे देने के पश्चात हम इन पैगम्बरों की कुरान शरीफ़ की आयतों के माध्यम से अलग झलकियां देगें।

(1) "साबित हो चुकने वाली बात।" 69/1 "वह साबित हो चुकने वाली बात क्या चीज है।" 69/2 "और क्या तूने समझा क्या है वह होने वाली बात।" 69/3

(2) "समूद और आद (की कौमों) ने खड़खड़ा देने वाली (इसी कयामत) को झुठलाया था। 69/4 "सो समूद जो थे वे तो कड़क (और भूचाल) से मार डाले गये।" 69/5

(3) "और वह आद जो थे सो वे बेहद सख्त हवा (के सर्राटे) से बरबाद हुए।" 69/6 "उसने उस (हवा) को सात रात और आठ दिन लगातार उन पर चलाये रखा। फिर (ऐ सुनने ध्यान देने वाले)! तू उन लोगों को ढहा और गिरा देखता है गोया कि वह खजूर के खोखल तने हों।" 69/7 "फिर क्या तू इनमें से किसी को भी बाकी देखता है।" 69/8 (ऐ पैगम्बर) क्या तूने नहीं देखा कि तेरे परवरदीगार नें हाथी वालों के साथ कैसा बरताव किया।" 105/1 "क्या (उसने) उनके दांव बेकार नहीं कर दिये।" 105/2 "और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे।" 105/3 "जो उन पर कंकड़ की पथरियां मारते थे।" 105/4 "यहां तक (हालत हुई) कि उनको खाये भूसे की तरह कर दिया।" 105/5

पिछले पैगम्बरों को झुठलाने वाले काफ़िरों से संबंधित आयतें :

6/44 से 48, 7/7 से 10, 34, 35, 36, 95, 96, 100, 101, 14/7, 19/98, 29/42, 43, 30/41, 42, 43, 35/24, 25, 65/8, 9, 10, 69/9 से 12, 89/6 से 14

30 1 जैसा की हमने शुरु के आयत 29/14 के माध्यम से यह दर्शाया कुर्आन शरीफ़ के अनुसार "ये काफ़िर हर नबी के जमाने में यों ही सरकशी करते रहे हैं।" ऊपर हमने अल्लाह की इस बात के समर्थन में कुरान शरीफ़ से तमाम आयतें पाठकों के सामने रखीं। अब हम काफ़िरों के विरुद्ध इस्लाम के इस मुख्य सिद्धांत को समर्थन देने वाली अन्य आयतों को जो हजरत नूह, मूसा, आदि पिछले पैगम्बरों के जीवन से सीधे संबंधित हैं पाठकों के सामने रख रहे हैं। कुरान शरीफ़ की लगभग 1425 आयतों में इन पैगम्बरों की बार बार चर्चा आई है जिससे कि हम इस्लाम में इस विषय की महत्ता का अनुमान लगा सकते हैं।

हजरत नूह

पहले हम हजरत नूह को लेते हैं। इनकी चर्चा लगभग 109 आयतों में हुई है। नीचे हम हजरत नूह से संबंधित कुछ आयतें दे रहे हैं।

(1) "हमने पैगम्बर नूह को उनकी कौम की तरफ भेजा तो (उन्होंने) कौम को समझाया कि भाइयो! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवाय कोई और तुम्हारी पूजा के काबिल नहीं (और अगर तुम इन्कारी में ही पड़े रहे तो) मुझको एक भारी दिन की सजा का तुम्हारे लिए डर है।" 7 59 "उनकी जाति के सरदारों ने कहा कि हमारे नजदीक तो तुम

ज़ाहिरा भटके हुए हो।" 7/60 "(नूह ने) कहा कि भाइयों मैं बहका नहीं हूँ बल्कि मैं तो दुनिया जहान के पालने वाले का भेजा हुआ हूँ।" 7/61

(2) "(इस पर भी) उन्होंने उसे झुठलाया तो हमने नूह को और उन लोगों को जो उनके साथ किश्ती में सवार थे (तूफान से) बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको (डुबोकर) नष्ट कर दिया। वह (अपना भला-बुरा न देख पाने वाले) अन्धे थे।" 7/64

28 आयतों वाला सूरः 71 हजरत नूह की ही कथा से संबंधित है। इसमें की तीन आयतों की ओर पाठकों का ध्यान हम पहले आकृष्ट कर चुके हैं। यहां इसी सूरः की इन तीन आयतों को पुनः कुछ अन्य आयतों के साथ देना प्रासंगिक रहेगा।

(1) "नूह ने कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! यह मेरे कहे पर नहीं चले और ऐसों के कहे पर चले हैं जिनको उनके धन और उनकी सन्तान ने जियादः घाटे में डाल रखा है।" 71/21 "और उन्होंने (मेरे साथ) बड़े बड़े फरेब किये।" 71/22

(2) "सो यह अपने ही पापों के कारण (तबाही में) डुबाये गये फिर (नरक की) आग में डाल दिये गये (और) फिर उन्होनें अल्लाह के मुकाबिले में किसी को अपना मददगार न पाया।" 71/25

(3) "और नूह ने कहा ऐ परवरदीगार दुनिया में काफ़िरों का कोई घर (तबाह करने से बाकी) न छोड़।" 72/26 "अगर तू उन्हें रहने देगा तो ये तेरे बन्दों को गुमराह करेगें और इनसे जो सन्तान चलेगी वह भी सरकश और काफ़िर ही होगी।" 71/27 ".....और इन जालिमों की तबाही बढ़ती ही जावे।" 71/28

हजरत नूह से संबंधित अन्य आयतें–

7/62, 63, 64, 10/71 से 73, 11/25 से 34, 36 से 49, 17/3, 21/26 77, 23/23 से 30, 25/37, 26/105 से 122, 29/14, 15, 37/75 से 82, 40/5, 51/46, 54/9 से 16, 71/1 से 20, 23, 24।

30.2 हजरत मूसा : कुरान शरीफ़ में हजरत मूसा की चर्चा अनेक सूरों में आयी है, जो कि पैगम्बर मुहम्मद साहिब की चर्चा के बाद सबसे अधिक है। बाईबिल के "ओल्ड टैस्टामेंट" के और यहूदियों के तो मूसा या मौजेज मुख्य पैगम्बर हैं। यही यहूदियों को अल्लाह के हुक्म से मिश्र के शासकों की गुलामी से मुक्त कराकर उन्हें अपने पूर्वजों की भूमि शाम या वर्तमान सीरिया और फिलिस्तीन की भूमि पर बसाने के लिये ले आए थे। किस प्रकार बाईबिल में "गाड" और कुरान शरीफ़ में "अल्लाह" ने उन्हें पैदल समुद्र पार करवाया और फिर किस प्रकार से पीछा कर रही मिश्र की सेना को उनके शासकों सहित डुबो दिया यह दोनों ही ग्रंथो में विस्तार से बार-बार वर्णित है। इस प्रकार अल्लाह के पैगम्बर मूसा और उसके अनुयायियों की रक्षा हुई और काफ़िर नष्ट कर दिये गये। नीचे हम कुरान शरीफ वर्णित हजरत मूसा और उनसे कुफ्र करने वालों की गति का संक्षिप्त विवरण दे रहे हैं। सूरः 28 की आयत 22 से 28 के अनुसार जब हजरत मूसा ने अपने श्वसुर के यहां आठ वर्षों तक की नौकरी की शर्त पूरी कर ली और अपने घरवालों को लेकर चल दिये तो तुर (पहाड़) की तरफ से उनको एक आग

दिखाई दी। 28/29 "फिर जब मूसा आग के पास पहुँचा तो (उस) पाक जगह में मैदान के दाहिने किनारे (एक) दरख्त से उसे आवाज सुनाई दी कि ऐ मूसा मैं अल्लाह हूँ सारे संसार को पालनेवाला।" 28/30 इसके आगे की कथा हम सूर: 26 के आधार पर पाठकों के सम्मुख रख रहे हैं।

30.3 हजरत मुहम्मद को अल्लाह पैगाम देते हैं कि काफ़िरों को मूसा का किस्सा बयान करो और इनको वह समय याद दिलाओ "जब तेरे परवरदिगार ने मूसा को बुलाया (और हुक्म दिया) कि (उन) जालिम लोगों के पास जाओ।" 26/10 "(यानी) फिरऔन की कौम के पास, क्या वह लोग (अपने ही को सर्वसमर्थ समझकर) बिल्कुल नहीं डरते।" 26/11 "(मूसा ने) अर्ज किया कि ऐ परवरदीगार मैं डरता हूं कि वह मुझे झुठलायेगें।" 26/12 "और (बातें करने में) मेरा दम रुकता है और मेरी जबान नहीं चलती (हकलाती है), इसलिए हारुन के जरिये पैगाम भेज दे।" 26/13 "(अल्लाह ने) फर्माया, हरगिज नहीं तुम दोनों (भाई) हमारी निशानियां लेकर जाओ....।" 26/15 "तो फिरऔन के पास जाओ और कहो कि हम सारे ससार के पालनहार के पैगाम लाये हैं।" 26/16 "कि तू इसराईल के बेटों को हमारे साथ जाने दे।" 26/17 "फिरऔन ने अपने आस पास के दरबारियों से कहा क्या तुम (मूसा की) बाते नही सुनते?" 26/25

"(मूसा ने) कहा तुम लोगों का पालनहार और तुम्हारे गुजरे हुए बाप दादों का पालनहार।" 26/26 "(फिरऔन ने लोगों से) कहा कि (हो न हो यह) पैगम्बर जो तुम्हारे पास भेजा गया है बावला है।" 26/27 "(फिरऔन ने) कहा अगर मेरे सिवाय (किसी और को) तूने इलाह (पूज्य) माना तो मैं तुझको भी उनमें शामिल कर दूंगा जो कैद (भुगत रहे) हैं।" 26/29 "(मूसा ने) कहा और अगर मैं तुझको एक खुला हुआ चमत्कार दिखाऊं।" 26/30 "फिरऔन ने कहा अगर तू सच्चा है तो ला दिखा।" 26/31 "इस पर (मूसा ने जमीन पर) लाठी डाल दी तो उसी वक्त वह एक जाहिर सांप बन गयी।" 26/32 "और अपना हाथ बाहर निकाला तो निकलते ही सब देखनेवालों की नजर में बड़ा चमचमाता (नजर आया)।"26/33

30.4 इसके बाद की 34 से 46 तक की आयतों में यह बतलाया गया है कि किस प्रकार मिस्र के बादशाह फिरऔन के जादूगरों ने अपनी रस्सियां और लाठियां जमीन पर डालीं जो सांप बन गई। पर मूसा ने जब अपनी लाठी डाली तो उसने उनके सारे स्वांगों को समाप्त कर दिया। "यह देखकर जादूगर सज्दे में (नाक के बल) औंधे गिर पड़े।" 26/46 "(और) बोले कि हम तमाम जहान के परवरदीगार पर ईमान लाये।" 26/47 "जो परवरदिगार है मूसा और हारुन का।" 26/48 "और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि हमारे बन्दों (यानी इजराईल की संतान) को रातों-रात निकाल ले जा (क्योंकि फ़िरऔनों की तरफ से) बेशक तुम्हारा पीछा किया जायेगा।" 26/52

"तो हुआ यों कि (फिरऔन के लोगों ने) दिन निकलते-निकलते इजराईल के बेटों का पीछा किया।" 26/60 "फिर जब दोनों जमातें एक दूसरे को देखने लगीं तो मूसा के लोग कहने लगे कि अब तो हमको घेर लिया।" 26/61 "(मूसा ने) कहा हरगिज नहीं मेरे साथ मेरा परवरदिगार है वह मुझको राह दिखायेगा " 26/62 "फिर हमने मूसा को हुक्म दिया कि

अपनी लाठी दरिया पर दे मारो, चुनांचे (मूसा ने दे मारी और) दरिया फट गया और (पानी का फटा हुआ) हर एक टुकड़ा गोया एक बड़ा पहाड़ था (और ईस्राइल की संतान उस खुश्क रास्ते से दरिया पार होने लगी)।" 26/63 "और उसी मौके के पास हम दूसरे लोगों। (यानी फिरऔन वालों) को लिवा लाये (और वे भी उसी फटे रास्ते में घुस पडे)।" 26/64 "और हमने मूसा और जो लोग उनके साथ थे उन सबको (तो) बचा लिया।" 26/65 "फिर दूसरों (यानी फिरऔनवालों) को डुबो दिया।" 26/66

अल्लाह और उनके पैगम्बर हजरत मूसा पर ईमान न लाने वालों और उनका विरोध करने वाले काफ़िरों को अल्लाह ने किस किस प्रकार दण्डित किया इसके कुछ और उदाहरण हम कुरान शरीफ़ से दे रहे हैं :

(1) "और हमने फिरऔन के लोगों को कहत (अकाल) और मेवों पैदावार की कमी मे फँसाया ताकि शायद उनको होश आ जाय (और जुल्मों से बाज़ आयें)।" 7/130

(2) "फिर हमने उन पर तूफ़ान भेजा और टिड्डियां, जुएं, और मेढ़क और खून की कितनी ही निशानियाँ जुदा जुदा भेजीं। इस पर भी वह लोग (घमण्ड में) अकड़े रहे और ये लोग थे ही गुनहगार।" 7/133

(3) इतनी सजाएं देने के बाद भी और वायदा करके भी मिस्र के काफ़िर शासक अल्लाह और मूसा पर ईमान नहीं लाए तो "फिर हमने उनसे बदला लिया और उनको नदी (कुलज़ुम) में डुबो दिया क्योंकि वह हमारी आयतों को झुठलाते और उनसे बेपरवाही करते थे।" 7/136

(4) "जैसी हालत फ़िरऔन और उन लोगों की हुई जो उनसे पहले थे कि (उन्होंने) अपने पालनकर्ता की आयतों को झुठलाया तो हमने उनके पापों के बदले उनको हलाक कर दिया और फिरऔन के लोगों को डुबो दिया। और वह सबके सब जालिम थे।" 8/54

30.5 सूरः 10 में मूसा अल्लाह से प्रार्थना करते हैं कि मिस्र के शासकों को दुखदाई अजाब दे, और अल्लाह उनकी यह प्रार्थना स्वीकार करते हैं : "तो ऐ मेरे परवरदीगार इनकी सम्पदा को मिटा दे और उनके दिलों को कठोर कर दे कि उनको ईमान लेना नसीब ही हो, यहां तक कि दुखदाई अजाब को (आखिर अपनी आँखों) देखें।" 10/88 "अल्लाह ने फर्माया तुम्हारी दुआ कबूल हुई....।" 10/89 जब मिस्र का शासक, फिरऔन अपनी फौज के साथ डूबने लगा तब बोला कि मैं ईमान लाया और अब मैं आज्ञाकारियों में हूँ। "(इसका जवाब मिला कि) अब (तू) यों बोला? और पहले (बराबर) हुक्म के खिलाफ करता रहा और हमेशा फ़सादियों मे रहा।" 10/91 "तो आज तेरे (मुर्दा) शरीर को हम (दरिया में नष्ट होने से) बचा देगें कि जो लोग तेरे बाद आने वाले हैं उनके लिए (तेरी लाश, तेरे आमाल और उनकी सजा की याद दिलाने के लिए) नसीहत हो।" 10/92

इस प्रकार हमने देखा कि किस प्रकार पिछले पैगम्बरों को झुठलाने वाले काफ़िरों को भी सजा देने में अल्लाह कितने तत्पर रहे हैं। यहीं नहीं स्वयं इन दोनों प्रमुख पैगम्बरों, (नूह और मूसा) ने स्वयं अल्लाह से बार-बार प्रार्थना की कि वो इन माननेवालों को हर प्रकार से दण्डित करे और यहाँ तक कि उनकी सतानों को भी जीवित न छोड़े

हज़रत मूसा से संबंधित अन्य आयतें—
2/40 से 73, 247, 248, 4/153 से 155, 5/20 से 26, 6/154, 7/103 से 129, 131, 132, 134, 135, 137 से 155, 10/75 से 87, 93, 11/96 से 99, 110, 14/5, 6, 8, 17/2, 101 से 104, 18/60 से 82, 19/51 से 53, 20/9 से 73, 77 से 99, 21/48, 23/45 से 49, 25/35, 36, 26/18 से 24, 49/50, 51, 53 से 59, 27/48, 23/45 से 49, 25/35, 36, 26/18 से 24, 49/50, 51, 53 से 59, 27/7 से 14, 28/2 से 50, 76 से 82, 29/39, 32/23, 33/69, 37/114 से 122, 40/23 से 50, 53, 54, 43/46 से 56, 44/17 से 33, 51/38, 39, 40, 54/41, 42, 61/5, 79/15 से 26।

हजरत इब्राहीम

30.6 इब्राहीम हजरत मुहम्मद के बाद इस्लाम के प्रमुखतम पैगम्बरों से थे। सत्य यह है कि इब्राहीम का दीन ही वर्तमान इस्लाम है : "और कौन है जो इब्राहीम के दीन से मुँह फेरे । और बेशक हमने इब्राहीम को दुनिया-लोक में चुन लिया और आखिरत में (भी) वह सदाचारियों में होगें।" 2/130 हजरत इबराहीम से ही बाईबिल और कुरान में "गाड" और "अल्लाह" को क्रमशः पशुबली देने की प्रथा शुरु हुई। और इस्लाम में यह प्रथा बकरीद के त्यौहार पर आज भी लाखों-लाखों पशुओं को अल्लाह के नाम पर बली देकर कायम है। इस्लाम ने बुतों को तोड़ने की प्रथा भी हजरत इब्राहीम से ही ग्रहण की। हजरत इब्राहीम ने ही अपने बेटे हजरत इस्माईल के साथ इस्लाम के पवित्र नगर मक्का में पवित्रतम "काबा" के मजहबी स्थल की बुनियादें अल्लाह के हुक्म से अपने हाथों से उठाई थी। हजरत मूसा और ईसा दोनों ही इब्राहीम के वंशज थे।

30 7 बाईबिल ने इब्राहीम या "अबराहम" की वंशावली इस प्रकार दी है। इब्राहीम के दो पुत्र हुए इस्माईल और इसहाक। इसहाक का बाईबिल में नाम आइजैक है। बाईबिल के अनुसार इब्राहीम "गाड" को बली देने के लिए इसहाक या आइजैक को अपने साथ ले गए थे। (जैनिसस-अध्याय 22) जबकि कुरान शरीफ़ के अनुसार इस्माईल को (कुरान शरीफ 37/101 से 105) इबराहीम की लौकिक और अध्यात्म सम्पदा का मुख्य अधिकार इसहाक को मिला। इसहाक के दो पुत्र हुए। बड़े पुत्र का नाम ईसाउ और छोटे का नाम जैकब या कुरान शरीफ़ के अनुसार याकूब था। दोनों जुड़वां भाई थे। बड़ा पुत्र पिता का और छोटा माँ का विशेष प्रिय था। माँ रेबेका और उसके छोटे प्रिय पुत्र जैकब या याकूब के छल कपट के कारण पिता की अध्यात्मिक विरासत बड़े बेटे ईसाउ को न मिलकर छोटे जैकब को मिली (बाईबिल जैनिसस—25/28 से 34, 27/1 से 41) जैकब की दो पत्नियों से जो कि सगी बहनें थीं आठ पुत्र हुए—छः बड़ी से और दो छोटी पत्नी से। और दो-दो पुत्र उनकी एक-एक दासी से हुए। इस प्रकार जैकब या याकूब के 12 पुत्र हुए। इन्हीं से यहूदियों की 12 जातियों या ट्राइब्स उत्पन्न हुई।

30 8 छल से अपने पिता इसहाक से आशीर्वाद पाने के बाद याकूब अपनी माँ की सलाह मानकर अपने भाई के डर से अपने मामा लेबान के पास भाग गए थे। वहां उन्होंने अपने

मामा की दोनों बेटियों से शादी की शर्त पूरी करने के लिए 20 वर्षों तक उनके पशुओं को पालने की नौकरी की। वहाँ से लौटकर अपने बड़े भाई से क्षमा दान पाकर जब वह अपने निर्देशित स्थान की ओर जारहे थे तो बेकल के स्थान पर "गाड" से भेंट वार्ता हुई—और "गाड" ने उनका नाम जैकब या याकूब से बदलकर "इसराईल कर दिया। यहूदी आज भी इसराईल की संतान कहलाते हैं और उनके देश का वर्तमान नाम भी इसराइल है। (बाईबिल जैनिसस 35/9 से 15) याकूब के तीसरे पुत्र "लेवी" के वंश में ही आगे चलकर मूसा ने मिस्त्र देश में वहाँ के बादशाह फिरऔन के शासन काल में जन्म लिया था। उस काल में मिस्त्र मे यहूदियों का दमन शुरु हो गया था। शासकों की ओर से यहूदियों पर यह लाजिम कर दिया गया था कि वो अपने नवजात शिशुओं मे से लड़कियों को तो बचा ले और लड़कों को नदी मे डुबाकर मार दें। नदी में बहते मूसा को फिरऔन की बहन ने बचा लिया था और उसका नाम "मोजेज" या मूसा रखा था। (बाईबिल-ऐक्सोडेस 2/1 से 101) और यही यहूदियों के मुख्य पैगम्बर हुए।

30.9 यहां पर याकूब या इसराईल के 11 वें पुत्र जोसफ या युसुफ की चर्चा सामयिक होगी। बाईबिल के "जैनिसस" भाग का तेरहवां अध्याय, और कुरान शरीफ़ का 111 आयतों वाला 12वां अध्याय जिसका (नाम ही सुरत युसुफिन है) सीधे युसुफ की कथा से जुड़े हैं। इनके दस बडे भाई इनको कत्ल करना चाहते थे। पर अल्लाह (या बाईबिल में "गाड") की विशेष कृपा से ये बचकर मिस्त्र पहुँचे। वहाँ मिश्र के शासक ने उनके गुणों के कारण उनको अपना प्रधानमंत्री बनाया। और युसुफ ने ही अपने पिता इसराईल (याकूब) तथा अपने अन्य 11 भाईयों को मिस्त्र के शासक की अनुमति से उनके परिवार सहित मिस्त्र में लाकर बसाया। वहां से सब यहूदी हर तरह से फले फूले और बाईबिल के अनुसार उनकी जनसंख्या इतनी बढ़ गई कि समस्त मिश्र पर छा गए। याकूब या इसराईल तथा युसुफ या जोसफ की यह मान्यता थी कि "गाड" या अल्लाह उन्हें मिस्त्र से निकाल कर वापस उनकी पूर्वजों की धरती पर भेज देगा और बाईबिल में यह आश्वासन "गाड" ने दीया भी था। युसुफ की मृत्यु के बाद यहुदियों के बढ़ते हुए प्रभुत्व के कारण मिश्रियों में उनके प्रति इर्ष्या और घृणा बढ़ती चली गई। और यही आगे चलकर यहुदियों पर मिश्री शासकों के भयानक अत्याचारों में बदल गई थी। इन्हीं यहुदियों को मिश्र से निकालने के लिये हजरत मूसा को पैगम्बर बनाकर भेजा गया था।

31.0 पैगम्बर ईसा मसीह इब्राहीम के पोते याकूब या इसराईल के चौथे बेटे जुडास के वंश मे पैदा हुए। बाईबिल के अनुसार इबराहीम से डेविड (कुरान शरीफ़ के दाउद) तक 14 पुश्ते निकलीं। डेविड से यहुदियों को बेबिलोन देश के शासकों व्दारा बन्दी बनाकर ले जाने तक फिर 14 पुश्तें हुई। और यहुदियों के इस दुर्दिन काल से लेकर ईसा मसीह तक 14 पुश्तें फिर निकली। इस प्रकार ईसा मसीह हजरत इब्राहीम की 42वीं पीढ़ी में पैदा हुए थे। हजरत इब्राहीम के बारे में उपरोक्त भूमिका से पाठक यहूदी, ईसाई तथा इस्लाम जगत में उनके भारी महत्व के बारे में समझ गये होगें।

31.1 अब हम नीचे कुरान शरीफ़ में वर्णित हजरत इब्राहीम संबंधी कुछ आयतें दे रहे है :

"ऐ याकूब की संतान मेरी उन निआमतों को याद करो जो मैंने तुमको दी और इस बात को

कि मैंने तुमको संसार के लोगों पर प्रधानता दी।" 2/122 "और (याद करो) जब इब्राहीम को उसके पालनकर्ता ने चन्द बातों से आजमाया और इब्राहीम ने उन बातों को पूरा कर दिखाया। तो कहा कि मैं तुमको लोगों का इमाम (यानी सरदार) बनाऊंगा। (इब्राहीम ने) निवेदन किया कि मेरी संतान में से भी (इमाम बना)...।" 2/124 और जब इबराहीम और इस्माईल काबे की नीवें उठा रहे थे तो उन्होंने अल्लाह से प्रार्थना की कि "इसको शान्ति का नगर बना, और अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखनेवाले इसके निवासियों को खान को देता रह। (अल्लाह ने) फर्माया कि जो कुफ्र करेगा मैं उसको भी चन्द रोज के लिये चीजो का फायदा उठाने दूंगा फिर उसको मजबूर करके दोजख की सजा में ले जा दाखिल करुगा। और वह बुरा ठिकाना है।" 2/126

"ऐ किताबवालों, इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो (कि वो यहूदी थे या नसरानी) और तैरात औ इंजील तो उसके बाद ही उतरी हैं...।" 3/65 "इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी, बल्कि वह तो एकमात्र (अल्लाह के) आज्ञाकारी सेवक थे....।" 3/67 "बेशक इब्राहीम के जियादः नजदीकी तो वह लोग हैं जिन्होंने उनकी पैरवी की, और यह पैगम्बर (हजरत मुहम्मद) और (मुसलमान) जो ईमान लाये है।" 3/18 "कहो कि अल्लाह ने सच फर्मा दिया तो अब इब्राहीम के तरीके की पैरवी करो जो अल्लाह के हो रहे थे और वे मुशरिकों (बहुदेव पूजकों) में से न थे।" 3/95 "जब (वह इब्राहीम) साफ दिल से अपने परवरदीगार को रुजू हुआ।" 37/84 "जब अपने बाप और अपनी कौम से कहा कि (यह) तुम क्या पूजते हो।" 37/85 "क्या अल्लाह के सिवाय झूठे पूजितों की ख्वाहिश रखते हो।" 37/86 इसके पश्चात इब्राहीम बिमारी का वास्ता ले घर पर रह गए और जब घरवाले चले गए : "उनका जाना था कि इब्राहीम चुपके से उनकी मूर्तियों में जा घुसे और कहा कि तुम (भेंट की हुइ चीजों को) खाते क्यो नहीं।" 37/91 "तुम्हे क्या हुआ है, तुम बोलते क्यों नहीं।" 37/92 "फिर (इब्राहीम) दाहिने हाथ से उनको मारने (तोड़ने) के लिए पिल पड़ा।" 37/93 "फिर लोग (खबर पाकर) उनकी ओर घबड़ाते दौड़े आये।" 37/94 "(उनके एतराज पर इब्राहीम ने) कहा क्यों तुम ऐसी चीजों को पूजते हो जिनको तुम (आप) तराशकर बनाते हो।" 37/95

"(यह सुनकर वह लोग) कहने लगे कि इब्राहीम के लिए एक इमारत बनाओ और इसको दहकती आग में डाल दो।" 37/97 "फिर (उन लोगों ने) इब्राहीम के साथ बुरे दाव का इरादा किया फिर हमने (इब्राहीम को आग से बचाकर) उन्हीं लोगों को नीचा दिखाया।" 37/98 "और (इब्राहीम ने) कहा कि तुमने जो अल्लाह के सिवाय मूर्तियों को ठहरा रखा है सो सिर्फ दुनिया की जिन्दगी में आपस की दोस्ती के खयाल से फिर कयामत के दिन तुममे से एक का एक इन्कार करेगा और एक को एक लानत करेगा और तुम सबका ठिकाना (दोजख की) आग होगी और कोई भी तुम्हारा मंददगार न होगा।" 29/25

31 2 इस्लाम में अल्लाह के प्रति बलि की प्रथा इस प्रकार शुरु हुई :

(1) "और (इब्राहीम ने दुआ मांगी) ऐ परवरदीगार मुझको नेकों में से एक (नेक बेटा) दे।" 37/100

2 "फिर हमने उनको एक बड़े हलीम (सहनशी) लड़के की खुशखबरी दी " 37/101

(3) "फिर जब लड़का (यानी इस्माईल) उनके साथ चलने फिरने लगे तो (इब्राहीम ने) कहा कि बेटा मैं स्वप्न में देखता हूँ कि मैं तुझको जबह कर रहा हूँ, फिर तू देख कि तेरी क्या राय है। (बेटे ने) कहा कि ऐ बाप जो तुझको हुक्म हुआ है तू कर गुजर, अल्लाह ने चाहा तो तू मुझे (इस कुरबानी को) सहन करने वाला पायेगा।" 37/102

(4) "फिर जब दोनों ने (अल्लाह का) हुक्म माना और (बाप ने हलाल करने के लिए) बेटे को माथे के बल पछाड़ा" 37/103 "और हमने उसे पुकारा कि ऐ इबराहीम।" 37/104 "तूने स्वप्न को सच कर दिखाया (देखो) नेकों को हम ऐसा बदला देते हैं। 37/105

(5) "बेशक (तुम्हारी) यह खुली हुई परीक्षा थी।" 37/106

(6) "और हमने जिबह (बलिदान) के लिए एक बड़ा जानवर ईस्माईल के बदले मे दिया।" 37/107 "कि इब्राहीम पर सलाम है।" 37/109

हजरत इब्राहीम संबंधी कुरान शरीफ़ की अन्य आयतें :

2/127 से 132, 6/74 से 83, 11/69 से 76, 14/35 से 41, 15/51 से 58, 16/120 से 123, 19/41 से 50, 21/51 से 72, 22/26, 26/69 से 104, 29/16 से 19, 24, 26, 27, 31, 43/26 से 35, 51/ 24 से 37, 60/4,

31.3 **हजरत लूत :** अन्त में हम अन्य प्रमुख पैगम्बरों लूत, शोएब, हूद और सालेह से सबंधित कुछ आयतें प्रमाण स्वरुप देकर इस प्रसंग को समाप्त करना चाहेगें। कुरान शरीफ मे लूत की चर्चा लगभग 80, सालेह की 64 और शोएब की 54 और हूद की 46 आयतों मे आई है : पैगम्बर लूत हजरत इब्राहीम के भतीजे थे। बाईबिल के अनुसार गाड के आदेश से इब्राहीम अपने और लूत के परिवार को साथ लेकर "केनान" नामक देश में बसने को चले थे। उस समय उनकी आयु 75 वर्ष की थी। परन्तु राह में चारागाह की कमी के कारण तथा दोनों के चरवाहों के आपसी झगड़े के कारण इब्राहीम की सलाह पर दोनो अलग-अलग प्रदेशों में बंट गए थे। लूत ने जोरडन का प्रदेश चुना था। परन्तु वहाँ के सोडोम नाम नगर के लोग समलैगिंक और दुष्ट प्रकृति के थे (बाईबिल-जैनिसस अध्याय 12 और 13) ऐसा ही कुरान शरीफ़ का कहना है :

(1) "और (हमने) लूत को (रसूल बनाकर) भेजा और उसने अपनी कौम से कहा क्यो (ऐसी बेशर्मी) करते हो जैसी दुनिया जहान में तुमसे पहले किसी ने नहीं की।" 7/80 "तुम तो स्त्रियों को छोड़कर शहवत के लिए मर्दों पर दौड़ते हो। बल्कि तुम लोग हद पर नहीं रहते।" 7/81

(2) "और लूत की जाति ने और कुछ जबाब न दिया सिवाय यह कहने के इन लोगो (यानी लूत और उनके घरवालों) को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो। यह लोग (बड़े) पाक साफ बनते हैं।" 7/82

(3) "पस हमने लूत को और उनके लोगों को बचा दिया....।" 7/83 "और हमने इन पर (पत्थरों का मेंह बरसाया)। पस देखों गुनहगारों का अन्त में कैसा हाल हुआ।" 7/84

लूत संबंधी अन्य आयतें–

11 77 से 83 15/59 से 79 21/74 75 25/40 26/160 से 175 27 54 से 59 29 28 से 35 37 133 से 138 54/33 से 40

31 4 **पैगम्बर हूद :** "और (कौम) आद की तरफ उनके भाई (पैगम्बर) हूद को भेजा। उन्होनें समझाया कि भाइयों अल्लाह की ईबादत करो. .. क्या तुम (अल्लाह के अजाव से) नही डरते?" 7/65 "उसकी जाति के सरदार काफ़िर थे। कहने लगे कि हमको तो तुम अहमक मालूम होते हो और हम बेशक तुमको झूठा समझते हैं। 7/66 ".....आखिरकार हमने अपने रहम से हूद को और उन लोगों को जो उनके साथ थे बचा लिया और जो लोग हमारी आयतो को झुठलाते थे और ईमान न लाते थे उनकी जड़ें काट दीं।" 7/72

हूद संबंधी अन्य आयतें–

7/67 से 71, 11/50 से 60, 18/59, 26/123 से 140, 29/38, 46/21 से 26, 51/41, 42।

31 5 **पैगम्बर सालेह :** "और (इसी तरह कौम) समूद की तरफ उनके भाई सालेह का भेजा। (सालेह ने) कहा कि ऐ मेरी जातिवालों अल्लाह ही की बन्दगी करो....(और देखो यह) तुम्हारे परवरदीगार की तरफ से तुम्हारे पास दलील आ चुकी है कि यह अल्लाह की (भेजी हुई) ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है तो इसे छुटी फिरने दो कि अल्लाह की जमीन में आर किसी तरह का नुकसान पहुँचाने की नियत से इसको छूना भी नहीं वरना तुमको दुखदाई सजा घर पकड़ेगी।" 7/73

"फिर उन्होंने (उस चमत्कारी) ऊँटनी को काट डाला और अपने परवरदीगार के हुक्म के खिलाफ सरकशी की और कहा कि ऐ सालेह जिस (अजाव) का तुम हमको डर दिखाते हो, अगर तुम पैगम्बर हो तो, हम पर ला उतारो।" 7/77 "पस उनको भूचाल ने धर दबोचा और व सुबह को अपने घरों में औधें पड़े रह गये।" 7/78

सालेह संबंधी अन्य आयतें–

7/74, 35, 76, 79, 11/61 से 68, 17/59, 23/141 से 159, 27/45 से 53, 54/23 से 32।

31 6 **पैगम्बर शौएब :** "और मदयनवालों की तरफ (हमने) उनके भाई शोएब को (रसूल बनाकर) भेजा। उसने कहा ऐ भाइयों अल्लाह की बन्दगी करा। उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूज्य नहीं ..।" 7/85 "और शोएब की जाति के सरदार, जो कुफ्र अपनाये थे, बोले कि अगर शोएब की राह पर चलोगी तो तुम घाटे में पड़ जाओगे।" "फिर (यकायक) उन्हें भूचाल ने (आ) घेरा फिर वे अपने घरों में सुबह को औधें पड़े रह गये।" 7/91 "जिन लोगों ने शोएब को झुठलाया (वे जड़ से ऐसा मिटे) गोया उन बस्तियों में उनका कभी वजूद (अस्तित्व) ही न था...।" 7/92

शोऐब संबंधी अन्य आयतें–

7/86 से 89, 93, 11/84 से 95, 15/80 से 84, 25/38, 39, 26/176 से 191, 29/36, 37, 42/13 से 18, 51/43 से 45।

31 7 **पैगम्बर ईसा मसीह :** हजरत ईसा मसीह की चर्चा कुरान शरीफ की लगभग 50 आयतों में है। चूँकि ईसा मसीह बाईबिल के न्यू टैस्टामेंट के मुख्य पात्र और ईसाई धर्म के प्रमुख स्तम्भ हैं, हम यहाँ विषयान्तर के कारण उनकी चर्चा नहीं कर रहे हैं। कुरान शरीफ मे उनकी चर्चा निम्न आयतों में आई है **3/35 से 37 42 से 57 4/156 से 159 171 172 5 46 47 109 से 119 23/50 43 से 67 61 6 14**

ईसा मसीह सम्बन्धी केवल एक आयत जो इस्लाम के लिये माने रखती है दी जाती है, "और जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ इसराईल के बेटों मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा आया हूं कि तौरात जो मुझसे पहिले उतरी (किताब-इलाही) है उसकी तसदीक करता हूँ और एक (और) पैगम्बर की खुशखबरी देता हूँ जो मेरे बाद आयेगा उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह खुली निशानियाँ लेकर उनके पास आया तो बोले कि यह तो साफ जादू है।" 61/6 यहाँ यह बताना उचित होगा कि हजरत मुहम्मद का दूसरा नाम अहमद भी था।

कुरान शरीफ़ मे अन्य पैगम्बरों से संबंधित आयतें निम्न हैं :

(1) **दाउद और सुलेमान : 21/78 से 82, 27/15 से 44, 34/10 से 14, 38/17 से 26, 30 से 40**

(2) **इलियास : 37/123 से 132**

(3) **अय्यूब : 88/41 से 44**

(4) **इदिरीस : 19/56, 57**

(5) **जकरिया : 3/37 से 41, 19/2 से 15, 21/89, 90**

(6) **हजरत हिज्र : 18/60 से 82**

(7) **जुलकर नैन : 18/83 से 101**

(8) **लुकमान : 31/12 से 19**

31 8 जैसा कि हमने काफ़िर संबंधी इस लम्बे अध्याय के शुरु में कहा समस्त कुरान शरीफ मे दो विषय मुख्यतः छाये हुए हैं.... "ईमानवाले" यानी मुसलमान जो अल्लाह, उनके पैगम्बर हजरत मुहम्मद, अल्लाह की आयतें और कयामत पर ईमान लायें। और दूसरे काफ़िर जो इन पर ईमान नहीं लाये। पाठकों को इस अध्याय से स्पष्ट हो गया होगा कि कुरान शरीफ मे "काफ़िर" का विषय प्रमुखतम है। काफ़िर चाहे सबके कल्याण के लिए महान से महान कर्म करे उसको परलोक में तो सदा रहने वाला दोजख मिलना अवश्यम्भावी है। और इस लोक मे भी काफ़िर अल्लाह की निगाह में उसका और ईमानवालों का खुला दुश्मन है। इसलिये कुरान शरीफ़ में यह अल्लाह का निर्देश है कि ईमानवाले न तो काफ़िरों का कभी विश्वास ही करे और न उनसे मित्रता। इस प्रकार काफ़िरों का हर तरह से दमन करना ईमानवालों का लौकिक और पारलौकिक दोनों दृष्टियों से परम कर्तव्य हो जाता है। और काफ़िरों के संबंध में यही अल्लाह का ईमानवालों को मुख्य आदेश है।

31 9 संक्षेप में इतना कहना ही बहुत होगा कि ग्रंथ साहिबजी में या वेद शास्त्र स्मृति और पुराणों में इस्लाम के इस पक्ष की कोई कल्पना ही नहीं है। न तो वहाँ ग्रंथ साहिबजी को न मानने वाला कोई काफ़िर है और न कोई काफ़िर को मिलने वाला कोई नरक ही है। न ही वहाँ कोई कयामत का दिन है जब सभी मुर्दे अपने पुराने शरीरों में उठाये जायेगें और न ही केवल मान्यताओं के आधार पर ही सदा रहने वाला स्वर्ग या नरक की ही कोई कल्पना है। और न ही ग्रंथ साहिबजी, या गुरुओं, या परब्रह्म परमात्मा को न मानने वालों के विरुद्ध किसी जिहाद की कल्पना है ग्रंथ साहिबजी में या वेद शास्त्रों में तो अच्छे और बुरे कर्म ही स्वर्ग और नरक के कारण हैं और कर्मफल भोग के बाद दोनों ही क्षीण हो जाते हैं ग्रंथ साहिबजी

के जीव का मुख्य उद्देश्य तो परमात्मा की प्राप्ति है और इसकी पूर्ति परमात्मा ज्ञान, भक्ति और प्रेम से ही संभव है, और इस मार्ग में सबसे बड़ा सहायक एक ज्ञानी गुरु है, जो कोई भी ब्रह्म ज्ञानी हो सकता है।

इस अध्याय में अभी तक हमने काफ़िरों को मिलनेवाला दोजख या नरक की विस्तार से चर्चा की है। ईमानवालों को मिलने वाले स्वर्ग की केवल कहीं-कहीं झलकियाँ आई हैं। अगले अध्याय में हम कुरान वर्णित स्वर्ग की पूरी तस्वीर पाठकों के सामने रख रहे हैं।

❑

अन्य की पूजा करने वाले काफ़िर

320 कुरान शरीफ़ वर्णित काफ़िर संबंधी चर्चा अन्य शक्तियों को मानने वाली काफिर सबधी आयतों के संदर्भ बिना अधूरी रह जायेगी। कुरान शरीफ़ में अन्य देवताओं को पूजनेवालों या मूर्ति पूजकों पर अल्लाह ने भारी लानत दी है। इस प्रकार माननेवाले सभी व्यक्ति बहुत बड़े काफ़िर हैं, और फिर चाहे वो साथ-साथ अल्लाह को ही क्यों न माने वो भारी दण्ड के भागी हैं। कुरान शरीफ ने यह बार-बार कहा है कि अल्लाह एक है। पर यह कही नहीं कहा कि अल्लाह ही एकमात्र सत्ता है और दूसरी अन्य कोई सत्ता है ही नही। क्योंकि यदि कोई अन्य सत्ता है ही नहीं तो किस पर कोप या किससे ईर्ष्या। कुरान शरीफ वर्णित अल्लाह नाम वाली जो दैवी शक्ति है उसके, पैगम्बर हजरत मुहम्मद ही है, या केवल हजरत मुहम्मद को ही पैगम्बर मानने से अल्लाह को माना जासकता है। दूसरे शब्दों में इस्लाम के अनुसार हजरत मुहम्मद को पैगम्बर माने बैगर अल्लाह की उपासना असम्भव है। गुरु ग्रथ साहब जी वर्णित भक्त और भगवान के सीधे संबंध की कुरान शरीफ़ में कोई कल्पना नही है।

321 ग्रंथ साहबजी और वेद-शास्त्रें के अनुसार तो ब्रह्माण्ड की हजारों दैवी-शक्तिया परमात्म शक्ति के ही अल्प अंश हैं और उन्ही के अधीन हैं। इसलिये वहाँ परमात्मा और अन्य दैवी शक्तियों में न तो कोई आपसी द्वन्द है और न द्वेष ही। ये सब शक्तियाँ उस सर्वव्यापी पारब्रह्म परमात्मा की ब्रह्माण्ड लीला की अभिन्न अंग हैं। हां इन दैवी शक्तियों की अलग-अलग उपासना का फल एक सीमित शक्ति की उपासना के कारण परमात्म-प्राप्ति न होकर सीमित फल तक ही रह जाता है। इस प्रकार की सीमित दैवी उपासना परमात्मा का कोई अपमान नही है, बल्कि मात्र अज्ञानतावश या कामनावश या स्वर्ग के भोगों की लालसावश (जो कि स्वयं के ही चिरस्थायी न होने के कारण अल्प ही है) परमात्मप्राप्ति के मुख्य ध्येय से मनुष्य को वचिंत कर उसे जन्म मृत्यु के चक्र में डाल देती है। वरना अन्य दैवी-शक्तियों की कामनापूर्वक इस प्रकार उपासना करनेवालों को उनकी कामना, श्रद्धा और कर्म के अनुसार उनका फल स्वयं परमात्मा ही उन उपासकों को प्रदान करते हैं। इस तत्व का स्पष्टतम वर्णन गीता के सातवें और नवमें अध्यायों में आता है :

(1) "विभिन्न भोगों की कामना द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, वे लोग अपने स्वभाव से प्रेरित होकर उस-उस नियम को धारण करके अन्य देवताओं को भजते हैं अर्थात पूजते हैं।" गीता 7/20

2) "जो जो सकाम भक्त जिस जिस देवता के स्वरुप को श्रद्धा से पूजना चाहता है उस उस भक्त की श्रद्धा को मैं उसी देवता के प्रति स्थिर करता हूं " गीता 7 21

से मेरे द्वारा ही विधान किये हुए उन इच्छित भोगों को निःसन्देह प्राप्त करता है।" गीता 7/22

(4) "परन्तु उन अल्प बुद्धिवालों का वह फल नाशवान है तथा वे देवताओं को पूजनेवाने देवताओं से प्राप्त होते हैं और मेरे भक्त अन्त में मुझको ही प्राप्त होते हैं।" गीता 7/23

32 2 सातवें अध्याय में अन्य देवताओं की कामनावश उपासना करनेवालों की गति बताते हुए भगवान कृष्ण कहते हैं कि ऐसे उपासक मेरी कृपा से ही उन देवताओं से अपने इच्छित फल प्राप्त करता है। किंतु यह सीमित फल है और भोग के बाद अपना फल देकर समाप्त होता है। ऐसा उपासक परमात्मप्रप्ति के शाश्वत फल से वंचित रहकर बार-बार जन्म मरण के चक्र में पड़ा रहता है। नवमें अध्याय के अनुसार तो देवताओं से बहुत नीची या कहिये कि निम्नतम भूत-प्रेत की उपासना और उसका अत्यन्त सीमित फल भी भगवतलीला के अन्तरगत ही घटित हो रहा है :

(1) "हे अर्जुन श्रद्धा से युक्त जो सकाम भक्त दूसरे देवताओं को पूजते हैं वे भी मुझको ही पूजते हैं, किन्तु उनका वह पूजन अविधिपूर्वक अर्थात अज्ञानपूर्वक है।" गीता 9/23

(2) "देवताओं को पूजनेवाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजनेवाले पितरो को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजनेवाले भूतों को प्राप्त होते हैं और मेरा पूजन करने वाले भक्त मुझको ही प्राप्त होते हैं।" गीता 9/25

32 3 ऊपर हमने ग्रंथ साहिबजी में वर्णित वेदांतभाव, सृष्टि की उत्पत्ति तथा जीव भाव से सबधित अध्यायों में देखा* कि सिक्ख गुरुओं की मान्यताओं में समस्त जड़ और चेतन जगत परमात्मा के अभिन्न अंग हैं, उस अपरम्पार की आनंदमयी लीला के विभिन्न स्वरुप मात्र है। परमात्मा का अपनी ही अभिन्न दैवी शक्तियों से कोई प्रतिद्वन्दिता हो, या टकराव या आपसी द्वेष हो इसकी रंचमात्र भी कल्पना ग्रंथ साहिबजी में नहीं है। वहाँ तो चेतन ही नहीं समस्त जड जगत, सभी पाँच महाभूत उन पारब्रह्म परमात्मा के ही पूजन में लगे हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश आदि देवता, साक्षात देवी भगवती, देवताओं के राजा इंद्र, समस्त तैंतीस करोड़ देवगण, पाप-पुण्य का लेखा-जोखा रखने वाले चित्रगुप्त, गंधर्व, नाग, अप्सरायें, सभी योगी, यती, सिद्ध मुनिगण, आदि-आदि उस परमात्मा की ही भक्ति में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से लीन हैं, उसके जप में लगे हैं। वहाँ कुरान शरीफ़ वर्णित अल्लाह की अन्य शक्तियों के प्रति आक्रोश और घृणा की, या उन शक्तियों के उपासकों को अल्लाह द्वारा शाश्वत नरक की सजा देन की स्वप्न में कल्पना नहीं की जा सकती। ग्रंथ साहबजी में किस प्रकार अन्य देव शक्तियाँ परमात्म उपासना में लगी है इसकी एक छोटी से झलकी हम नीचे दे रहे हैं :

"गावनि तुधनो पवनु पाणी वैसंतर गावै राजा धरमु दुआरे॥
गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणानि लिखि धरम बीचारे॥
गावनि तुधनो ईसरु ब्रह्मा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे॥"
"गावानि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले॥

* देखिए पैरा 13 0

गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध विचारे ॥"
"गाविनि तुधनो खंड मण्डल ब्रह्मांड करि करि रखे तेरे धारे ॥" म. 1

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि हे परमात्मन! जल, अग्नि और वायु आदि पच महाभूत, यमराज, पाप पुण्यों का लेखा रखनेवाले चित्रगुप्त, सभी देवताओं सहित देवराज इद्र, सिध, श्री, योगी, आदि आपके ही यशगान और भक्ति में लगे हैं। यही नहीं अपने खड ओर मंडलों सहित समस्त ब्रह्मांड आपकी ही स्तुति में रत है।

32 4 ऐसी स्थिति में यदि कोई व्यक्ति कामनावश इन शक्तियों की या इनसे भी अल्पशक्तियों की उपासना करता है, तो उसके कारण परमात्मा उस व्यक्ति से या उसकी उपासना से क्रोधित हो और उनको दण्डित करे यह ग्रंथ साहिवजी द्वारा प्रतिपादित किसी भी सिद्धांत से समर्थित नही है। ऐसे साधकों से तो ग्रंथ साहबजी जी का यही कहना है कि इस प्रकार की उपासनाओं से तुम बहुत अल्प ही फल प्राप्त कर सकोगे जो कि नाश्वान है और अन्ततः तुम्हे जन्म मरण के दुखदाई चक्र में ही भ्रमण करते रहना पड़ेगा। तुम्हारा परम लक्ष्य तो परब्रह्म परमात्मा है जिसे प्राप्त करना तुम्हारा मुख्य ध्येय है, और जिसे तुम इसी जन्म में गुरु कृपा से और ज्ञान भक्ति और प्रेम द्वारा प्राप्त कर सकते हो। अब हम कुरान शरीफ़ के माध्यम से अवलोकन करें कि अल्लाह के अलावा अन्य की उपासना करने वालों की अल्लाह की निगाह में क्या गति है। काफ़िरों की लम्बी चर्चा में हमने कहीं-कहीं उन आयतों को भी दिया है जिसमें अल्लाह के साथ किसी अन्य को पूजित मानने पर उन लोगों को शिर्कवाले कहकर धिक्कारा गया है। ये अन्य पूजित कोई भी हो सकता है, ये मनुष्यों द्वारा निर्मित मूर्तिया या पत्थर आदि के बुत हो सकते हैं, ये फ़िरिश्ते या जिन्न हो सकते हैं, ये अल्प छोटी बड़ी शक्तियों हो सकती हैं जिनको उन व्यक्ति के पूर्वज परम्परा से पूजते आये हैं। इनकी किसी प्रकार की पूजा कुरान शरीफ़ के अनुसार अल्लाह को असहनीय है, और इसका भयानक परिणाम उनके लिये कयामत पर मिलनेवाला शाश्वत नरक है।

32.5 कुरान शरीफ़ में शिर्कवालों के प्रति अल्लाह के इस क्रोध और दण्ड व्यवस्था का कोई स्पष्ट कारण नहीं दिया, सिवाय यह कहने के कि अल्लाह के अलावा कोई अन्य पूजित नहीं है। यदि हम ग्रंथ साहिबजी का यह सिद्धांत अल्लाह पर लागू करें कि जिस प्रकार परमात्मा से भिन्न सृष्टि की कोई अलग सत्ता ही नहीं है, उसी प्रकार अल्लाह एक होने के कारण यह सृष्टि अल्लाह रुप ही है। तो ऐसी स्थिति में अन्य शक्तियाँ भी अल्लाह रुप होने के कारण अल्लाह का उन पर या उनके उपासकों पर कोप करना बन ही नहीं सकता। परन्तु यह सिद्धांत कुरान शरीफ़ को स्वीकार नहीं है।

32 6 और यदि हम यह मानकर चलें कि फरिश्ते और जिन्न या परम्परागत अन्य शक्तियॉ जिनकी कुरान शरीफ़ के अनुसार शिर्कवाले अल्लाह के साथ-साथ पूजा करते है अपने मे स्वतंत्र शक्तियां है तो यह मानना पड़ जायेगा कि अल्लाह भी एक सीमित शक्ति है फिर चाहे वह अन्य शक्तियों से करोड़ो गुना बलशाली ही क्यों न हो। और यदि हम किसी शक्ति को सीमित मान लेते हैं तो फिर उस मान्यता का सार यह निकलेगा कि सीमित सत्ता अपने मे ही है किन्तु कुरान शरीफ़ में इस तरह की मान्यता की कोई भी प्रत्यक्ष रूप में चर्चा

नहीं है। सो हमारे सामने निश्चय ही यह प्रश्न खड़ा हो जाता ह कि यदि अल्लाह का स्वरुप ग्रंथ साहिबजी में वर्णित परमात्मस्वरुप के समान "सर्व" है तो अल्लाह का अन्य शक्तियो पर और उनकी उपासना पर कोप का प्रश्न ही नही उठता। और जैसा कि नीचे दी जारही आयते बतलाती हैं कि अल्लाह अन्य शक्तियों, बुतों आदि पर और उनके उपासकों पर अत्याधिक कुपित है तो अल्लाह का तत्वतः क्या स्वरुप होना चाहिए यह प्रश्न अनिर्णीत रह जाता ह। इसका निर्णय तो स्वयं पाठकों को समस्त ग्रंथ साहिबजी और कुरान के गहराई से तुलनात्मक अध्ययन के बाद ही लेना उचित होगा।

32 7 नीचे हम कुरान शरीफ़ से अन्य शक्तियों और बुतों की उपासना संबंधी कुछ आयते दे रहे हैं। "और अल्लाह ने आज्ञा दी है कि दो-दो इलाह (पूज्य) न ठहराओं, बस वही (अल्लाह) एक पूज्य है, (इसलिए) मुझसे डरो।" 16/51, "केवल अल्लाह की पूजा होनी चाहिए इस बात की पुष्टि के लिए कुरान शरीफ़ में स्वयं अल्लाह और फरिश्तों की गवाही प्रस्तुत की गई है :

"अल्लाह इस बात की गवाही देता है कि उस (अल्लाह) के सिवाय कोई भी पूज्य नहीं और फरिश्तें और इलमवाले भी (गवाही देते हैं) कि वही इन्साफ के साथ (सब कुछ) संभालने वाला है...हिक्मतवाला है।" 3/18 "यह गुनाह तो अल्लाह माफ नहीं करता कि उसके साथ कोई शरीक, ठहराया जाये, और उसके सिवाय (दूसरा गुनाह वह) जिसको चाहे माफ करे। और जिसने अल्लाह का साझी ठहराया वह (सीधी राह से) दूर भटक गया।" 4/116 इस आयत से यह बात साफ है कि किसी भी अन्य शक्ति की पूजा अल्लाह की निगाह में सबसे बड़ा और अक्षम्य अपराध है।

32 8 मूर्ति पूजा के प्रति अल्लाह का कोप इस प्रकार इस आयतों में व्यक्त किया गया है

"तो क्या जो (इतनी बेमिसाल सृष्टि की) पैदा करे वह उसके बराबर हो गया जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकता, क्या तुम लोग नहीं समझते (कि उस सिरजनहार अल्लाह के साथ इन कुछ पैदा न कर सकने वाले शरीकों यानी मूर्तियों को पूजते हो)।" 16/17 "और अल्लाह के सिवाय जिनको पुकारते हैं, वह कोई चीज पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह खुद (औरो के हाथे) बनाये जाते हैं।" 16/20 "(जिन अपने बुजुर्गों की मूर्तियां बनाकर पूज रहे हैं वे) मुर्दे है जिनमें जान नहीं और जिनको खबर नहीं कि कब (कयामत आने पर वे सब भी) उठायें जावेगें।" 16/21 "और अल्लाह के सिवाय किसी को न पुकारना कि वह तुमको न तो लाभ ही पहुंचा सकता है और न नुकसान ही। और अगर तुमने ऐसा किया तो तुम भी जालिमों मे हो जाओगे।" 10/106 "(ऐ पैगम्बर इन लोगों से)....कहो कि क्या तुमने अल्लाह के सिवाय दूसरों को अपना हिमायती बना रखा है जो अपने जाती नुकसान फायदों के भी मालिक नही। (इन्हें) समझाओ कि भला कहीं अन्धा और आँखों वाला बराबर है, या कहीं अंधेरा और उजाला बराबर होता है... ।" 13/16 "(ऐ पैगम्बर लोगों से) कहो कि अल्लाह के सिवाय और जिन (फरिश्तों, जिन्नों या बुजुर्गों) को तुम माबूद (पूज्य) समझते हो उनको पुकार देखो तो न तो तकलीफ ही दूर करने और न उसको बदल सकने की उनको ताकत है।" 17/56

32.9 सूरः 7 की आयत 191 और 192 की चर्चा आवश्यक है। यहां अल्लाह का यह तर्क

है कि बुत या अन्य शक्तियां उन्हीं की बनाई हुई है और वे बुत आदि स्वयं कुछ नही पैदा करते, इसलिये उनका पूजन किसलिए, "क्या वह ऐसे को (अल्लाह का) शरीक बनाते हैं जो किसी चीज को पैदा नही कर सकते और खुद (अल्लाह के) पैदा किये हुए हैं।" 7/191 "और वह (यानी बुत) न इनकी मदद करने की ताकत रखते हैं और न आप अपनी मदद कर सकते हैं।" 7/192 इन दो आयतों से स्पष्ट होता है कि बुत या अन्य शक्तियों का अस्तित्व तो है, किन्तु वह शक्तिहीन हैं। और इसलिये वे किसी भी हालत में पूजा के पात्र नहीं है। इस बात को अल्लाह सूरः 16/75 और सूरः 30/28 में एक गुलाम के उदाहरण से इस प्रकार स्पष्ट करते हैं :

"तो (ऐ लोगों) अल्लाह के लिए (गलत) मिसालें मत कायम करो। अल्लाह ही जानता है तुम नहीं जानते।" 16/74 "एक उदाहरण अल्लाह बयान करता है कि एक गुलाम है (जो) दूसरे के माल पर किसी बात का हक नहीं रखता और एक शख्स है जिसको हमने अपनी तरफ से अच्छी (खासी) रोजी दे रखी है और वह उसमें से छिपे और खुले-खजाने खर्च करता है, क्या यह (दोनों) बराबर हो सकते हैं? (हरगिज नही)।....." 16/75

33.0 सूरः तीस में अल्लाह इस प्रकार कहते हैं : "वह तुम्हारे लिए तुम्हारे बीच की ही एक मिसाल बयान करता है, कि क्या तुम्हारे बांदी गुलामों में से कोई हमारी (तुमको) दी हुई रोजी में साझीदार है? और क्या तुम उसमें (उनको अपने) बराबर हकदार समझते हो? जो लोग समझ रखते हैं उनके लिए हम आयतों को इसी तरह खोल-खोलकर बयान करते हैं।" 30/28

33.1 उपरोक्त दो आयतों से अप्रत्यक्ष रुप से यह भी सिद्ध होता है कि इस्लाम में गुलामी प्रथा अल्लाह द्वारा समर्थित है। इस बात के समर्थन में कुरान शरीफ़ से कई अन्य आयतें भी प्रस्तुत की जासकती हैं।

वैसे गुलाम और बाँदी के उदाहरण से अल्लाह का यही समझाना प्रतीत होता है कि जिस प्रकार दूसरे के अधीन एक गुलाम एक स्वतंत्र सामर्थ्यवान व्यक्ति की समानता नहीं कर सकता, उसी प्रकार अन्य शक्तियों की अल्लाह से कहीं भी तुलना नहीं की जा सकती है और इसलिए न ही इनकी पूजा भी। पर यहां यह अवश्य स्पष्ट हो जाता है कि इस प्रकार की अन्य शक्तियां संसार में हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार गुलाम की सत्ता। और गुलाम यदि बन्धनमुक्त हो जाये या कर दिया जाय, या फिर गुलाम यदि बन्धनमुक्त किया जा सकता है तो उस स्थिति में गुलाम वाली मिसाल का सही अर्थ क्या होगा, इस संबंध में कुरान शरीफ़ में कोई चर्चा नहीं है। शायद जिस प्रकार कुरान शरीफ़ में स्वर्ग और नरक शाश्वत हैं उसी प्रकार यह गुलाम वाली उपमा भी गुलाम और आजाद व्यक्तित्व की शाश्वतता दर्शाती है।

33.2 और अल्लाह के अलावा अन्य किसी को पूजना चूंकि एक अक्षम्य अपराध है तो इसकी सजा भी शाश्वत नरक ही है :

"और...जिस दिन (अल्लाह) हुक्म देगा कि जिनको तुम मेरा शरीक समझा करते थे उनको (अपनी मदद के लिये) बुलाओं फिर (ये) उनको पुकारेगें और वह उनको जबाब न देंगे और हम इनके बीच में (मौत जैसी) आड कर देगें।" 18/52 "और गुनहगार (दोजख की) आग को देखेगें और समझ जायेगें कि वह उसमें गिरने वाले हैं और उनको उससे बच निकलने

की कोई राह न मिलेगी।" 18/53 "और इन लोगों ने अल्लाह के मुकाबले दूसरे पूजित कायम (स्थापित) कर दिये हैं ताकि लोगों को अल्लाह की राह से भटकायें (ऐ पैगम्बर) इन लोगों से कहो कि (खैर चन्द रोज दुनिया में) लाभ उठा लो, फिर तो तुमको (दोजख की) आग की तरफ जाना ही है।" 14/30

"एक अल्लाह का हो रहो, उसके साथी साझी न ठहराओ। जिसने (किसी को इबादत में) अल्लाह का साझी बनाया गोया वह आसमान से गिर पड़ा फिर चाहे उसको (शिकारी) पक्षी उचक लें या उसको हवा किसी दूर जगह ले जा पटके।" 22/31 उपरोक्त आयतों से यह साफ हो जाता है कि इस्लाम में अल्लाह के अलावा अन्य कोई भी उपासना स्वीकार्य नहीं। छोटी सी छोटी अन्य उपासना भी अल्लाह की प्रतिद्वन्दी मानी जायेगी, और इस प्रकार उपासना करने वाले इस लोक और परलोक में दण्डित किये जायेगें। और कहीं कयामत के समक्ष नरक का भय देखकर इन शिर्कवाले काफिरों ने अपने पूजितों से मदद मांगी तो "कभी नहीं" ये (पूजित खुद) इनकी पूजा से इन्कार करेगें और उल्टे इनके बैरी हो जायेगें।" 19/82 इस आयत से यह साफ हो जाता है कि काफिरों के ये पूजित केवल जड़ मात्र नहीं है। कयामत के अवसर पर वे भी अल्लाह के सामने उपस्थित होगें।

अल्लाह के अलावा अन्यों की पूजा करने वाले काफिरों से संबंधी अन्य आयतें : 2/92 से 96, 165, 3/64, 6/40, 41, 71, 107, 108, 136, 137, 7/33, 172, 173, 190 से 198, 10/17, 18, 28 से 36, 104 से 107, 108, 109, 12/105 से 108, 13/14, 15, 33, 36, 14/29, 30, 15/96, 16/51 से 56, 17/22, 39, 42, 43, 57, 18/42, 19/41 से 44, 21/21 से 24, 22/7, 27/59, 60, 61, 28/70 से 75, 88, 26/92 से 98, 25/17 से 19, 29/65, 30/33, 40, 34/40, 41।

❑

कुरान वर्णित बहिश्त या स्वर्ग

33.3 अब आइए हम देखें इस्लाम में स्वर्न या बहिश्त का क्या स्थान है। हम कई स्थानो पर कुरान वर्णित स्वर्ग की झलकियां दिखला चुके हैं और यह भी बतला चुके हैं कि इस्लाम मे स्वर्ग या बहिश्त की प्राप्ति ईमानवालों या मुसलमानों के जीवन का परम लक्ष्य है, और यह कि कुरान वर्णित स्वर्ग सदा रहनेवाला है। इसका कर्म या पाप पुण्य से स्वतंत्र रुप से कोई सबंध नहीं है। यह केवल अल्लाह, उसके पैगम्बर हजरत मुहम्मद, अल्लाह की आयतों और आखिरत को मानने वालों को या उन पर ईमानलाने वालों को ही मिलता है। इन चारों में से एक को भी नकारनेवाला ईमान वाला नहीं कहला सकता, वह काफ़िर होकर नरक में ही सदा के लिये दण्डित होगा। आइयें देखें कुरान शरीफ़ में, बहिश्त के बारे में क्या कहा गया है। बहिश्त का विवेचन भी हम कुरान शरीफ़ के सूरः या अध्यायों के क्रम से दे रहे हैं।

"और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उनको खुशखबरी सुना दो कि उनके लिये (बहिश्त के) बाग हैं, जिनमें नहरें बह रही हैं, जब उनमें का कोई मेवा खाने को दिया जायेगा तो कह उठेगें, यह तो वही है जो हमको पहले मिल चुका है, और उनको (सचमुच) मिलते जुलते मेवे मिला करेगें। और वहॉ उनके लिये बीवियाँ पाक साफ होगीं और वह उनमें सदैव रहेगें।" 2/25 इस आयत में मेवे के उदाहरण से साफ है कि बहिश्त के भोगो मे वही खाने पीने की अच्छी चीजें मिलेंगी जिन्हें वह इस लोक में जब वह जिन्दा था खाया पिया करता था।

33.4 कुरान शरीफ़ का सूरः 3 दुनिया के सुखों की व्याख्या करके बहिश्त में मिलने वाले ऊँचे सुखों को इस प्रकार ईमानवालां के सामने रखता है :

"(अक्सर) लोगों (के मन) को (उनकी) दिल पसन्द चीजें (मसलन) बीवियां और बेटे और सोने चाँदी के बड़े बड़े ढेर और निशान लगे हुए घोड़े और चौपाये या खेती लुभाती हे। लेकिन यह तो दुनिया की जिन्दगी के समान है और अच्छा ठिकाना तो उसी अल्लाह के यहॉ ह।" 3/14 "ऐ पैगम्बर इन लोगों से तुम कहो कि मैं तुमको इन (चीजों से) कहीं अच्छी चीज बताऊं, (वह यह) कि जो (अल्लाह से) डरते हैं उनके लिये उनके परवरदीगार के यहाँ (बहिश्त में) बाग हैं जिनके बीच नहरें वह रही हैं (और वह) उनमें हमेशा रहेगें, और पाक साफ औरतें हे, और अल्लाह की खुशी है। और अल्लाह (अपने नेक) बन्दों को देख रहा है।" 3/15 "ओर अल्लाह और रसूल का कहना मानों ताकि तुम पर दया की जाय।" 3/132 "और अपने पालनकर्ता की बख्शिस और जन्नत की तरफ लपको जिसका विस्तार सारी जमीन और आसमानों के समान है।" 3/133 "लेकिन जो (अपने परवरदीगार) से डरते रहे उनके लिए बाग हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होगीं वह उनमें हमेशा रहेगें।" 3/1980 "यह अल्लाह की

(बाधी हुई) हदें हैं। और जो अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलेगा, उसको (अल्लाह) बहिश्त के बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होगीं, वह उनमें हमेशा रहेगें और वही बड़ी सफलता है।" 4/13

33.5 इस आयत में साफ बतलाया गया है कि जीवन की सबसे बड़ी सफलता बहिश्त के बागों में रहना ही है जिनके नीचे नहरें बह रहीं है। और यही बात इसी अध्याय की 57वी आयत में इस प्रकार फिर आती है :

"जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये हम उनको ऐसे बागों में दाखिल करेगें जिनके नीचें नहरें बह रही होगीं, जहाँ वे हमेशा रहेगें। उनमें उनके लिये बीवियाँ साफ सुथरी होगी और हम उनको घनी छाहों में लेजाकर रखेंगें।" 4/57

और अल्लाह पुनः अपना सच्चा वादा दोहराते हुए 122 वीं आयत में कहते हैं .

"और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये हम उनको ऐसे बागो मे दाखिल करेगें जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह का यह वादा सच्चा है और अल्लाह से बढ़कर बात किसकी सच्ची है?" 4/122 बहिश्त में बाग और नहरें कुरान शरीफ़ में ईमानवालों को कयामत पर मिलने वाले स्वर्ग सुखों के मुख्य माप दण्ड हैं। सूरः 5 म भी अल्लाह ने ईमानलाने वालों को मिलने वाले स्वर्ग सुख का इस प्रकार बयान किया गया हे "तो इनकी इस बात के बदले अल्लाह ने इनको ऐसे (बहिश्त के) बाग दिये जिनके नीचे नहरे बह रही हैं, (और) वे उनमें (सदैव) रहेंगे.... ।"5/85 सूरः 9 में ईमानवाली औरतों को भी बहिश्त के बागों का वादा किया गया है। और साथ ही जन्नत में मिलने वाले बढिया मकानों का भी "ईमानवालें मर्दों और ईमानवाली औरतों से अल्लाह ने (बहिश्त के) बागों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रहीं होगीं और वह उनमें हमेशा रहेंगे, और (वादा किया है) सदा रहने वाली जन्नत में बढ़िया मकानों का।" 9/72

33 6 सूरः 10 में जन्नतवाले बाग और नहरें देखकर अल्लाह का गुण गाउठेगें :

"जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये, उनके ईमान के कारण उनका परवरदीगार उनको राह दिखा देगा कि (जहा) आराम से बागों में रहेंगे और उनके नीचे नहरे बहती होंगी।" 10/9, "(और वहां की निआमतों को देखकर वे) उनमें पुकार उठेगें कि सुब्हान अल्लाह तेरी जात पाक है। और उनमें उनकी (आपस में) दुआएं खैर सलाम होंगी। और उनकी जबान पर आखिरी प्रार्थना होगी कि हर तरह की तारीफ अल्लाह के लिए ही है जो दुनिया जहान का परवरदीगार है।" 10/11 सूरः 13 में ईमानवालों के परिवारों के लोग भी बहिश्त पायेगें, और वहाँ फरिश्तें उनका अभिनन्दन करेगें : और जिन्होंने अपने परवरदिगार की खुशी हासिल करने के लिये सब्र से काम लिया और नमाजें कायम रखीं और हमारे दिये मे से चुपके और जाहिर (अल्लाह की राह में) खर्च किया और बुराई के बदले में भलाई की। यही लोग हैं जिनको आखिरत में अच्छा अंजाम है।" 13/22 "(जहाँ हमेशा) रहने के बाग है जिनमें वह जायेगें और उनके बाप दादों में और बीबियों और उनकी औलादों जो भला काम करने वाले होगें वह भी उनके साथ बहिश्त में जायेगें और जन्नत के हर दरवाजे से फरिश्ते उनके पास आयेगें " 13/23 " और कहेगें कि) तुम पर सलामती हो " 13/24 और इसी

अध्याय की 35 वीं आयत में बहिश्त के बागों में सदाबहार फलों की भी चर्चा है : "परहेजगारो के लिए (जिस) जन्नत का वादा किया गया है उसका हाल यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही है, उसके फल सदाबहार हैं और छांह भी (हमेशा)....और इन्कारियों का अंजाम (दोजख की) आग है।" 13/35

"और जो लोग ईमान लाये और उन्होनें नेक काम किये वे (जन्नत के) बागों मे दाखिल किये जायेगें जिनके नीचे नहरें बह रही होगी, अपने परवरदीगार के हुक्म से उनमें (हमेशा) रहेगें। वहां उनका सलाम लफज़े अस्सालमुअलैकुम से होगा।" 14/23 "सूरः 15 मे जन्नत की चर्चा का जरा विस्तार से वर्णन हुआ है : "जो परहेजगार हैं वे (जन्नत के) बागो और चश्मों में होगें।" 15/45 "(उनसे कहा जायेगा कि) सलामती के साथ इतमीनान से इन बागो में आओ।" 15/46 "और उनके दिलों में जो मलिनता होगी उसको हम दूर कर देगे (और वे) एक दूसरे के आमने-सामने तख्तों पर भाई-भाई के समान बैठेगें।" 15/47 "इनको वहाँ किसी तरह का न दुख होगा और न यह वहाँ से (कभी) निकाले जायेगें।" 15/48

33.7 और पुनः पुनः नहरों और बागों से सम्पन्न बहिश्त का वादा सूरः 16 में इस प्रकार आता है : "(यानी उनको) हमेशा रहने के बाग हैं, जिनमें दाखिल होगें, उनके नीचे नहरें बह रही होगीं और जिस चीज का उनका जी चाहेगा वहाँ उनके लिए मौजूद होगी......।" 16/31 इस आयत की विशेषता यह है कि वहाँ अल्लाह ने ईमानवालों को बहिश्त में मनचाहे भोगो का भी वादा किया है। कुरान शरीफ के अट्ठारवें सूरः में कहा गया है कि बहिश्त में बाग और नहरों के सुख के अलावा ईमानवालों को सोने के कंगन पहनाये जायेगें और वे रेश्मी हरे वस्त्र धारण कर तख्तों पर तकिया लगाये बैठेगें।

"यही लोग हैं जिनके रहने के लिये (जन्नत के) बाग हैं जहाँ नीचे नहरें बह रही होंगी, उनको वहां सोने के कंगन पहनाये जायेगें और वह महीन और मोटे रेश्मी हरे कपड़े पहनेगे, (और) वहां तख्तों पर तकिया लगाये बैठेगें। (क्या ही) अच्छा बदला है और क्या खूब आराम की जगह है।" 18/31, और यही बात सूरः 22 में इस प्रकार आती है : "अलबत्ता जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उनको अल्लाह (जन्नत के) बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होगी, वहाँ उनको गहना पहनाया जायेगा-सोने के कंगन, और मोती। और वहाँ उनकी पोशाक रेशम की होगी।" 22/23

33.8 आइये अब कुरान शरीफ के आगे के अध्यायों में वर्णित स्वर्ग की झलक देखें।

(1) "और (अल्लाह) ऐसा बरकतवाला है कि चाहे तो तुमको इससे बेहतर दे यानी ऐसे बाग कि जिनके नीचे नहरें बह रही होगी और तुम्हारे लिए महल बना दें।" 25/10 "जन्नत वालों का उस दिन खूब ही ठिकाना होगा और दोपहर को आराम करने की जगह भी खूब ही मिलेगी।" 25/24

(2) "और जो लोग ईमान लायें और उन्होनें अच्छे काम किये उनको हम जन्नत के (हवादार झरोखे वाले) महलों में जगह देगें जिनके नीचे नहरें बह रही होगी उनमें हमेशा रहेंगे। नेक कामवालों को क्या ही अच्छा बदला है।" 29/58

3 "फिर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये वह (जन्नत के) बाग में

मोज से होगें (और वहाँ उनकी) आवभगत हो रही होगी।" 30/15

(4) "(और इन कृपा पाये हुए बन्दों के लिए वदला यह है) कि वहाँ बसने को बाग हैं, यह लोग उनमें दाखिल होगें, वहाँ उनको साने के कंगन और मोती का गहना पहनाया जायेगा और उनकी पोशाक रेशमी होगी।"35/33 "और वे कहेगें कि अल्लाह को धन्यवाद है जिसने हमसे दुख दूर कर दिया...।"35/34 "जिसने हमको अपनी कृपा से (हमेशा के लिये) ठहरने के घर में उतारा कि वहाँ हमको कोई दुख न पहुचेगा और न वहाँ हमको थकान आवेगी।" 35/35 कयामत के दिन के हालात बयान करते हुए सुरः 36 में इस प्रकार आता है : "जन्नतवाले अलबत्ता उस दिन मजे से जी बहला रहे होगें।" 36/55 वहाँ उनके लिए बीवियाँ साये में तकिया लगाये तख्तों पर बैठी होगीं"। 36/56 "वह और उनकी मेवे होगें और जो कुछ वे मांगे (वही मयस्सर होगा)"36/57 "परवरदीगार मेहरबान की ओर से उनको सलाम भेजा जायेगा।" 36/58 "और ऐ गुनहगारों। आज तुम (इन जन्नतवालों से) अलग हो जाओ।" 36/59

33 9 सूरः 37 में बहिश्त में मिलनेवाली शराब और हूरों के कारण यहां से बहिश्त के सुखो का एक नया प्रकरण शुरू होता है। "मगर जो अल्लाह के खास बन्दे हैं।" 37/40 "वह ऐसे (खुशनसीब) होगें कि (अल्लाह की ओर से) इनकी रोजी मुकर्रर है।" 37/41 "(यानी) मेवे और इनकी इज्जत होगी।" 37/42 "निआतम के बागों में।" 37/43 "तख्तों पर आमने सामने होगें।" 37/44 "इनमें स्वच्छ शराब का प्याला घुमाया जा रहा होगा।" 37/45 "(और) सफेद रंग (वाली यह शराब) पीने वालों को मजा देगी।" 37/46 "न उससे सिर घूमते हैं और न उससे (मदहोश होकर) बहकते हैं।" 37/47 "और उनके पास नीची निगाह रखनेवाली बडी-बड़ी आँखों वाली औरतें होगी।" 37/48 "गोया (आँखों के पर्दों से) ढके वह अण्डे है। 37/49 "फिर यह (बहिश्त वाले) एक दूसरे की तरफ ध्यान देकर आपसे में पूछाताछी करेगें।" 37/50

34 0 ऊपर दी गई आयतों में पाठक देखेगें कि बहिश्त में इन औरतों को पहले अध्यायों के अनुरुप बीवियां नहीं बतलाया गया है। जैसाकि आगे के अध्यायों से स्पष्ट होगा ये औरतें बीविया नहीं हूरे हैं। सूरः 38 में हम उम्रवाली औरतें और शराब भी जन्नत में मिलेगी। "यह यादगारें हैं। और बेशक परहेजगारों के लिए अच्छा ठिकाना है।" 38/49 "रहने के लिये (जन्नत के) बाग जिनके दरवाले उनके लिये खुले होगें।"38/50 "उनमें तकिया लगाकर वैठेगें और वहां बहुत से (मनमाने) मेवे और शराब मंगवाते होगें।" 38/51 "और उनके पास नीची नजर वाली हम उम्र औरतें होगी।" 38/52 "यह (वह निआमते) हैं जिनका तुमसे हिसाब (आखिरत) के दिन के लिए वादा किया जाता है।" 38/53 "बेशक यह हमारी (दी हुई) रोजी हैं जो कभी खत्म होने की नही।" 38/54 बहिश्त में ये बाग और उनमें हम उम्र की औरतें और शराब मिलने की निआमते ईमानवालों को कयामत के दिन अल्लाह के वायदे के अनुसार मिलेगी। और यही उनके लिये सदा मिलने वाला सुख है। सूरः 43 में जन्नत का दृष्य इस प्रकार है :

"जो हमारी आयतों पर ईमान लायें और आज्ञाकारी रहे।" 43/69 "(ऐसे बन्दों) तुम और तुम्हारी बीवियां जन्नत में जा दाखिल हों ताकि तुम्हारी (वहां) इज्जत की जावे " 43/70 "उन पर सोने की रकाबिया और प्यालों का दौर चलेगा और जिस चीज को उनका जी चाहें

और जो भी नजर में भली मालूम हो वहाँ (जन्नत में) मौजूद होंगी। और तुम हमेशा वहीं रहोगे।" 43/71 "सो यहाँ तुम्हारे लिए बहुत मेवे हैं जिनमें से तुम खाते रहो।"43/73 सूरः 44 बहिश्त की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहाँ ईमानवालों का हूरों से ब्याह करा देने का अल्लाह की ओर से वादा किया जा रहा है: "बेशक परहेजगार लोग चैन की जगह होगें।" 44/51 "बागो और चश्मों में।" 44/52 "रेशमी महीन और मोटी (तरह तरह की) पोशाकें पहने हुए आमने सामने बैठे होगें।" 44/53 "ऐसा ही होगा। और बड़ी-बड़ी आँखो वाली (गोरी) हूरों से हम उनका ब्याह कर देगें।" 44/54 "वहाँ खातिर जमा से (मनचाहे) मेवे मंगवाते होगें।" 44/55 "पहली मौत के सिवाय वहाँ उनको मौत न चखनी पड़ेगी और (अल्लाह ने) उन्हें दोजख के अजाब से बचा लिया।" 44/56 बहिश्त या स्वर्ग का जो वर्णन सूरः 52 में हुआ है उसमें हूरो के साथ ब्याह मेवों के साथ मांस तथा आमोद-प्रमोद में शराब के प्यालों की छीना झपटी और सुन्दर लड़कों द्वारा भी ईमानवालों की खातिर शामिल है।" खाओ पिओ मौज से यही उनका ईनाम होगा। "लेकिन जो परहेजगार हैं वे बेशक (बहिश्त के) बागों और निआमतों में होगें।" 52/17 "(और) अपने परवरदीगार की दी हुई (निआमतों) में मजे उड़ा रहे होगें और उनके परवरदीगार ने उनको (दोजख की) भड़कती आग से बचा लिया।" 52/18 "खाओ पिओ मौज से यह बदला उसका जो तुम (दुनिया) में करते थे।" 52/19 "तख्तों पर जो कतार में बिछाए गए हैं तकिया लगाये बैठे हैं और हमने बड़ी-बड़ी आँखो वाली हूरें उनको ब्याह दी है।" 52/20 "और जो लोग ईमान लायें और उनकी औलाद ईमान में उनके पीछे चली तो उनकी औलाद को भी हम (बहिश्त मे उनसे) मिला देगें और उनके कर्मों (के बदले) में कुछ कमी न करेंगे....।" 52/21; "और उनके मनचाहे मेवे और मांस हम उनको देवेगें।" 52/22 "वह आपस में वहाँ (शराब के) प्यालों की छीना झपटी करेगें। उनके पीने से न बकवाद लगेगी और न कोई गुनाह होगा।" 52/23 "और लड़के उनके पास आये जायेगें गोया (यत्न से रखे) संजोये हुए मोती हैं।" 52/24 "और एक दूसरे की तरफ मुखतिब होकर आपस में बातें करेगें।" 52/25

34.1 कुरान शरीफ वर्णित स्वर्ग की चर्चा 55वें सूरः में दी गई अत्यन्त भावात्मक रुप से दिखलाई गई बहिश्त की झांकी के बिना अपूर्ण ही रहेगी। हांलाकि समस्त 55 वां सूरः हम शुरु में ही अन्य प्रसंग में दे आये हैं, वहाँ इस सूरः की स्वर्ग संबंधी आयतों को देना प्रासंगिक होगा। इस 78 आयतों वाले सूरः में अल्लाह ने अपनी निआमतों का निरुपण विस्तार से किया है। यह सूरः इन्सानों और जिन्नों को सम्बोधित है। इसमें अल्लाह ने जहाँ सृष्टि रचना के तमाम कार्यो जैसे सूर्य और चन्द्रमा द्वारा एक हिसाब से चक्कर लगाना, बनस्पति जगत की उत्पत्ति आदि निआमतों को दर्शाया है वहाँ काफिरों को नरक की सजाओं का मिलना भी अल्लाह की ओर से उन्हें मिलने वाली अनिवार्य निआमतें हैं। और ईमानवालों को मिलने वाले स्वर्ग के भोग तो अल्लाह की ओर से भेजी गई निआमतें हैं ही। यहां हम इन्हीं स्वर्गिक भोगा को प्रस्तुत कर रहे हैं। चूंकि प्रत्येक भोग के वर्णन के बाद यह आयत "फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआतों को झुठलाओगें।" अवश्य आती है, हम इस आयत की बार-बार आवृत्ति न करके इसको एक बार शुरु में और एक बार आखीर में देगें

"और जो मनुष्य अपने परवरदीगार के सामने खड़े होने से डरता है उसको (बहिश्त के) दो बाग मिलेगें।" 55/46 "फिर तुम लोग अपने परवरदीगार की कौन-कौन सी निआमतो को झुठलाओ।" 55/47 "(वह बाग) जिसमें बहुत सी टहनियां हैं।" 55/48 "इनपें दो चश्मे बहते होगें।" 55/50 "उनमें हर मेवे की दो किस्में होगीं।" 55/52 "(यह जन्नत वाले) बिछौनों पर तकिये लगाये होगें जिनके अस्तर ताफते के होगें और दोनों बागों के मेवे झुक रहे होगे।" 55/54 "उनमें लजाती नीची निगाहवाली (पाक हूरें) होगीं। उनसे और पहिले न तो किसी मनुष्य ने उन पर हाथ डाला होगा और न ही किसी जिन्न ने।" 55/56 "वे (हूरें क्या गोया) लाल और मूंगे हैं।" 55/58 "भला नेकी का बदला नेकी के सिवाय क्या हो सकता है।" 55/60

"और इन दो (बागों) के सिवाय और दो बाग हैं।" 55/62 "दोनों (बाग) हरियाली से खूब सब्ज हैं।" 55/64 "उनमें दो चश्में उबलते होगें!" 55/66 "उन दोनों (बागों) में मेवे और खूजरें और अनार (होगें)।" 55/68 "उन सबमें नेक खूबसूरत औरते होगीं।" 55/70 "हूरे जो (अपने अपने) खेमों में छिपी बैठी हैं।" 55/72 "(इन जन्नतवालों से) पहले न तो किसी इन्सान ने उन (हूरों) को हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने।" 55/74 "जन्नतवाले वहाँ सब्ज कालीनों और उम्दः उम्दः फर्श पर तकिये लगाये बैठे होगें।" 55/76 "फिर तुम अपने परवरदीगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगें।" 55/77

34.2 सूरः 56 में यही भावात्मक बहिश्त वर्णन आगे बढ़ाया गया है। जवान लड़के शराब दे रहे होंगे, क्वांरी हूरों की एक खास सृष्टि वहाँ होगी, मेवे और केलों के अम्बार होगें इत्यादि "और (ईमान में) आगे वाले सो (आखिरत से भी) आगे ही है।" 56/10 "वह लोग (अल्लाह के) नजदीकी हैं।" 56/11 "निआमतों के बागों में 56/12 "जड़ाऊ तख्तों के ऊपर!" 56/15 "आमने सामने तकिये लगाये।" 56/16 "उनके पास लड़के जो हमेशा नौजवान बने रहेगे।" 56/17 "उनके पास आवखोरे गडुए और साफ शराव से भरे प्याले लाते और ले जाते होंगे।" 56/18 "(वह शराब) जिससे न तो उनके सिर दुखेंगे और न बकवाद लगेगी।" 56/19 "और जो मेवे उनको अच्छे लगेगें।" 56/20 "और जिस किस्म के पक्षी का मांस उनकी इच्छा हो।" 56/21 "और हूरें बड़ी-बड़ी आँखें वाली।" 56/22 "जैसे संजोये आबदार मोती।" 56/23 "(यह) बदला है उसका जो (वे दुनिया में) करते थे।" 56/24

ऊपर जो वर्णन हुआ है वह ऊँचें दर्जे के ईमानवालों का है। और साधारण ईमानवाले जिनको दाहिने हाथ वाला कहा है उनके भोगों का वर्णन इस प्रकार है : "और (दूसरे दर्जे के यानी) दाहिनी तरफवाले। सो इन दाहिनी तरफवालों का क्या कहना है।" 56/27 "वह रहेगे बगैर कांटो वाली बेरियों में।" 56/28 "और गौद पर गौद केलों में।" 56/29 "और लम्बे (दूर तक फैले ठण्डे) सायों में।" 56/30 "और बहते (चश्मों के) पानी में।" 56/31 "और (तरह तरह के) मेवों की बहुतायत में।" 56/32 "जो न कभी खत्म हो और न (उनके इस्तेमाल में) रोक टोक।" 56/33 "और ऊँचें बिछौनों में।" 56/34

"हमने हूरों की खास सृष्टि बनाई है।" 56/35 "फिर इनको क्वांरी बनाया है।" 56/36 "प्यारी और समान अवस्था वाली।" 56/37 "यह सब (निआमतें) दाहिनी तरफवालों के लिए हैं " 56/38

34.3 कुरान शरीफ़ के अधिकांश अध्यायों (सूरों) में बहिश्त की चर्चा है। यह अध्याय 2 से लेकर 108 वें अध्याय तक जहाँ कयामत की या काफ़िर की या फिर ईमानवालों की चर्चा आती है वहाँ किसी न किसी रुप में बहिश्त की चर्चा अवश्य आती है। अब हम तीन और अध्यायों (सूरों) से स्वर्ग की चर्चा देकर इस विषय को समाप्त करते हैं। सूरः 76 में स्वर्ग (बहिश्त) का महत्त्व इस प्रकार कहा गया है : "अलबत्ता नेककार जो हैं वे (आखिरत में) प्याले पीवेगें जिसमें कपूर की मिलावट होगी।" 76/5 "(यह है एक कपूरी) सोता जिसको अल्लाह के बन्दें पीवेगें और उसमें से (छोटी-छोटी) नहरें बहा निकालेगें।" 76/6; यानी बहिश्त में कपूर मिली शराब की छोटी-छोटी नहरें बह रही होंगी।

"और जैसा उन्होंने सब्र किया उसके बदले में जन्नत और रेश्मी कपड़े उन्हें दिये।" 76/12 "वहाँ तख्तों पर तकिये लगाये बैठे होगें न वहाँ (तपन) की धूप ही देखेगें न (कडाके की) ठण्ड !" 76/13 "और उन पर वहाँ (के वृक्षों की) छाया होगी और उन पर मेवों के गुच्छे भी नजदीक झुके होगें।" 76/14 और उनके पास चांदी के बरतनों और गिलासों का दौर चलता होगा बिल्कुल शीशे की तरह।" 76/15 "शीशे भी (साफ चमकते) चांदी के जो (एक अन्दाज) नाप पर बने होंगे।" 76/16 "और वहाँ उनको प्याले पिलाये जायेंगे जिसमें सोंठ मिली होगी।" 76/17 "यह वहाँ एक चश्मा होगा जिसका नाम सलसबील होगा।" 76/18 "और उनके गिर्द हमेशा नौजवान रहने वाले लड़के फिरते होगें कि जब तू उन्हें देखे तो समझे कि बिखरे मोती हैं।" 76/19 "और जब तू देखे तो तुझे दिखाई दे निअमतें और महान राज्य (के सुख)।" 76/20 "उन (के तन) पर बारीक हरे रेशम और गाढ़े रेशम के कपड़े हैं, और चादी के कंगन पहिने हैं, और उनका परवरदीगार उन्हें पाक शराब पिलावेगा।" 76/21 "यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारी (दुनिया की) कमाई नेग लगी (यानी आज फली फूली)।" 76/22

34.4 सूरः 78 में बहिश्त का वर्णन इस प्रकार है :

"अलबत्ता परहेजगारों के लिए कामयाबी है।" 78/31 "(यानी रहने को) बाग और (खाने को) अंगूर।" 78/32 "और नौजवान औरतें हम उम्र।" 78/33 "और छलकते हुए प्याले।" 78/34 "वहां यह लोग न तो कोई बकवास सुनेगें और न झूठ।" 78/35 "यह तुम्हारे परवर्दीगार का हिसाब से दिया बदला है।" 78/36 आखिर में सूरः 88 में वर्णित बहिश्त सम्बन्धी कुछ आयतें दे रहे हैं। इस अध्याय की शुरु की आयतों में बतलाया गया है कि कयामत के दिन किस प्रकार काफ़िरों के मुँह उतरे हुए होगें और वे नरक में किस-किस प्रकार की सजा पायेगें पर ईमानवाले : "(और) कितने मुँह उस रोज खिले होगें।" 88/8 "अपनी मेहनत के बदले (से खुश)" 88/9 "ऊँचे (जन्नत के) बाग में होगें।"88/10 "जहाँ बकवास न सुनेगें।" 88/11 "उसमें चश्मा बह रहा होगा।" 88/12 "उसमें ऊँचें तख्त बिछे होगें। 88/13 और गाँव-तकिये कतार की कतार लगे होंगे " 88/15 "और मखमली मसनद बिछे हुए

तकिये, नौजवान लड़के, सोने चांदी और मोतियों के जेवर आदि, और इन्ही भोगों को वो हमेशा बहिश्त में भोगते रहेगें। जैसाकि हमने देखा ग्रंथ साहिबजी में इनकी कोई कल्पना नहीं है। और न ही स्वर्ग की प्राप्ति ग्रंथ साहिबजी और वेद व शास्त्रों का लक्ष्य है :

बहिश्त संबंधी अन्य आयतें :

7/42, 43, 11/23, 108, 19/60 से 62, 20/75, 76, 22/14, 24, 25/75, 76, 39/17, 73, 74, 75, 41/30 से 32, 42/23, 23, 46/13, 14, 48/5, 50/31 से 35, 52/21, 54/54, 55, 57/21, 58/22, 61/12, 65/9, 65/11, 66/8, 68/34, 69/19 से 24, 77/41 से 44, 79/40, 41, 80/38, 39, 82/13, 83/18 से 28, 85/11, 88/8 से 16, 98/8, 101/6, 7, 108/1, 2।

❑

ग्रंथ साहिबजी में स्वर्ग-नर्क चर्चा

34 5 पिछले अध्यायों में हमने कुरान शरीफ़ में वर्णित दोजख या नरक के स्वरुप की विस्तार से चर्चा की है। यह नरक सदा रहने वाला या शाश्वत है और कयामत के दिन काफ़िरों को सजा के रुप में मिलेगा। कुरान वर्णित बहिश्त या स्वर्ग की भी विशद झलकी हमने देखी जो कयामत के दिन पर ईमानवालों के हिस्से में आयेगा। यह स्वर्ग भी शाश्वत है। अब आइए स्वर्ग नरक के बारे में ग्रंथ साहिबजी के विचारों को भी समझ लें।

चूँकि ग्रंथ साहिबजी का मुख्य लक्ष्य जीव द्वारा परमात्मा की प्राप्ति है इसलिए इसमे स्वर्ग-नरक की चर्चा बहुत ही कम है। या फिर गौण रूप में है। ग्रंथ साहिबजी ने और वेद शास्त्रों ने स्वर्ग और नरक को पुण्य और पाप या फिर अच्छे और बुरे कर्मों का फल माना है। जैसे इस लोक में कर्म के फल भोग के बाद क्षीण हो जाते है उसी प्रकार स्वर्गलोक में पुण्य और पाप से प्राप्त स्वर्ग और नरक के फल भी भोग के बाद क्षीण हो जाते हैं और फिर प्राणी अपने कर्म और कामनाओं के अनुसार विभिन्न योनियों में जन्म लेने को विवश हो जाता है। देवताओं के राजा इंद्र को भी अपने पुण्य कर्मों का फल चुकने के बाद स्वर्गलोक से च्युत होना पडता है और घोर से घोर पापी भी अपने किये का फल भोग कर नरक से छुटकारा पा जाता है। परमात्मा को प्राप्त किये बिना इस दुखमय जन्म-मरण के चक्र से जीव छुटकारा नहीं पा सकता। वेदों की यह चुनौती भरी घोषणा इस तत्व का निरुपण इस प्रकार करती है : "जब मनुष्यगण आकाश को चमड़े की भाँति लपेट लेंगे तब उस समय उन परमदेव परमात्मा को न जानकर भी दुःख का अन्त हो जाएगा।" श्वेताश्वतरोपनिषद् 6/20

उधर कुरान शरीफ़ में जैसा कि हमने विस्तार से देखा जीव का अन्तिम लक्ष्य बहिश्त की ही प्राप्ति है जिसे वह अल्लाह से ईमानवाला बनकर प्राप्त कर सकता है। अल्लाह की प्राप्ति नहीं। और अल्लाह को न माननेवालों काफ़िरों के लिए नरक या दोजख में जाना उनके लिये अल्लाह की ओर से अनिवार्य दण्ड है। कुरान शरीफ़ के अनुसार बहिश्त और दोजख का पुण्य और पाप या अच्छे बुरे कर्मों से कोई संबंध नहीं है। ये दोनों जैसा कि कहा जा चुका है, अल्लाह, और उनके पैगम्बर हजरत मुहम्मद, अल्लाह की आयतें और कयामत आदि को मानने या न मानने पर ही अवलम्बित है। कुरान शरीफ़ में वर्णित कर्म विधान की चर्चा हम अलग अध्याय में करेंगें।

34 6 चूँकि ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ़ के लक्ष्य ही भिन्न और विपरीत हैं, इसलिये **ग्रथ साहिबजी का मुख्य विषय परमात्म् गुणगान और जीव द्वारा परमात्म प्राप्ति या ब्रह्मज्ञानी होना है जबकि कुरान शरीफ़ का लक्ष्य केवल बहिश्त की प्राप्ति है**

है कुरान शरीफ़ में इस बात का प्रतिपादन करने वाली कोई भी आयत नहीं है। उधर ग्रथ साहिबजी में एक भी ऐसा शब्द नहीं है जिसमें जीव का लक्ष्य स्वर्ग प्राप्त करना बताया गया हो। ग्रंथ साहिबजी में स्वर्ग-नरक की बहुत थोड़ी ही चर्चा है और जो भी है वह पाप-पुण्य या कर्म विधान के संदर्भ में ही आई है। यहां पर यह बतलाना भी सामयिक होगा कि कुरान शरीफ़ का मुख्य लक्ष्य परलोक में भी भोगों की प्राप्ति होने के कारण उसमें भोगों के प्रति वैराग्य संबंधी भी कोई आयत नहीं है जबकि ग्रंथ साहिबजी में कदम-कदम पर वैराग्य संबंधी वाणी आती है। इस विषय की सप्रमाण चर्चा हम आगे चलकर अलग अध्याय में करेंगे।

34 7 अब नीचे हम ग्रंथ साहिबजी वर्णित स्वर्ग-नरक संबंधी कुछ सबद और उनकी विवेचना दे रहे हैं :

(1) **"वेदु पुकारे पुनु पाप सुरग नरक का बीउ ॥**
जो बीजै सो उगवै खांदा जाणै जीउ ॥" 1243 म 4

यानी वेद शास्त्र पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि जीव द्वारा किये गये पुण्य पाप ओर कर्म ही स्वर्ग और नरक का बीज या उनकी प्राप्ति के कारण हैं। जीव जैसा बोता है वैसा ही काटता है।

"कथा कहानी बेंदी आणी पापु पुनुं विचारु ॥
दे दे लैणा लै लै देणा नरकि सुरगि अवतार ॥" 1243

इस सबद का भावार्थ भी पिछले सबद के अर्थ के समान है अर्थात स्वर्ग-नरक अपने कर्म के अनुसार ही मिलते हैं।

(2) और ये स्वर्ग और नरक परमात्मा की त्रिगुणमई माया से निर्मित हुए हैं—और माया के चक्र में फंसे हुए जीव ही स्वर्ग और नरक में भ्रमण करते रहते हैं। यह सब जीव के अहभाव के कारण होता है। गुरु के बिना ही जीव की यह दुर्गति होती है और सद्गुरु मिलने पर ही जीव स्वर्ग और नरक दोनों से ऊपर उठकर भवसागर पार कर लेता है। यही भाव इस नीचे दिये गये सबद में लक्षित होता है :

"त्रै गुण कीआ पसारा ॥ नरक सुरग अवतारा ॥
हउमै आवै जाई ॥ मन टिकणु न पावै राई ॥
बाझु गुरु गुवारा ॥ मिलि सतिगुर निसतार ॥ 1003/4 म 5

यही बात पांचवें महला यानी गुरु अर्जनदेव जी महाराज ने इन शब्दों में और अधिक स्पष्ट की हैं—

"मेरी मेरी धारि बंधन बंधिया ॥
नरकि सुरगि अवतार माइआ धंधिया ॥ 761 म 5

यानी मेरी-मेरी की कामना में बंध जीव अपने धंधों में उलझकर नरक और स्वर्ग मे जन्म लेता रहता है :

(3) ग्रंथ साहिबजी कहते है कि हे प्रभु तुमने ही इस त्रिगुणमई माया रूपी परपंच को अपने लीलामय खेल के लिए रचा है। तुम्हीं ने पाप और पुण्य चला दिये, और इस प्रकार दुख-सुख और का खेल चल पड़ा जिसमें अपनी-अपनी कामनाओं और कर्मों

से कोई नरक और कोई स्वर्ग में जा रहा है और तू यह अपना खेल रचकर आप ही इसे देख रहा है। और जब तू अपना खेल समेट लेता है तो तू ही "एक" रह जाता है।

जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥ तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥
पाप पुनु तह भई कहावत ॥ कोऊ नरक कोऊ सुरग बछावत ॥
आल जाल माइआ जंजाल ॥ हउमै मोह भरम भै भार ॥
दूख सूख मान अपमान ॥ अनिक प्रकार किओ बख्यान ॥
आपन खेलू आपि करि देखै ॥ खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥" 29/92 म 5

(4) गुरु नानक देव जी महाराज तो सीधे मुसलमानों के दोजख और बहिश्त और शास्त्र वर्णित स्वर्ग नरकों की सत्ता को ही नकार देते हैं। वे कहते हैं जब सृष्टि महाप्रलय के समय अपने मूल कारण में लीन थी, जब आकाश पृथ्वी आदि पंच महाभूत नहीं थे, जब न दिन या न रात थी न सूर्य और चंद्र ही थे, न कोई देवता ही थे, और न जीवों के जन्म और मरण ही था, उस समय केवल परमात्म् सत्ता ही थी, और इस परमात्मा का ज्ञान तो कोई पूर्ण ज्ञानी गुरु ही दे सकता है :

"ना तदि सुरगु मछु पइआला ॥ दोजकु भिसतु नहीं खै काला ॥
नरकु नहीं जमणु मरणा ना को आइ न जाइदा ॥
..... कहता बकता आपि अगोचरु आपि अलखु लखाइदा ॥
..... ता का अंतु न जाणै कोई ॥ पूरे गुरु ते सोझी होई ॥" 1035-36 महला

(5) इसलिये ग्रंथ साहबजी का उद्देश्य तो न केवल नरक से ही बचाना है बल्कि स्वर्ग से भी दूर रहना है, क्योंकि दोनों ही माया के बंधन हैं। लक्ष्य तो परमात्मा में लौ लगाकर उन्हीं के चरण कमलों में लीन रहना है। इस संबंध में कबीर की वाणी द्वारा ग्रंथ साहिबजी कहते है :

"कबीर सुरग नरक ते मैं रहिओ सतिगुर के परसादि ॥
चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि ॥" 1370 कबीर

कबीर जी कहते है कि गुरु कृपा से मैं स्वर्ग नरक दोनों से बच गया हूँ। अब मैं सदा ही प्रभु के चरण कमलों की मौज में रहता हूं।

34.8 इस प्रकार हम देखते हैं कि ग्रंथ साहिबजी में स्वर्ग की किंचितमात्र भी महत्ता नहीं है। उसे नरक के समान ही माया और मोह का बंधन माना है। स्वर्ग की कामना करने वाला जीव कभी भी परमात्म प्राप्ति के मार्ग पर नहीं चल सकता जब तक यह स्वर्ग की कामना से ऊपर उठकर परमात्म् प्राप्ति का संकल्प नहीं करता तब तक वह जन्म-मरन के चक्र में भ्रमता ही रहेगा और स्वर्ग से पतन के बाद नीची से नीची योनियों में भी गिरता पड़ता रह सकता है।

❑

ग्रंथ साहिबजी और कुरान में कर्म भाव

34 9 ऊपर बहिश्त संबंधी आयतों में हमने देखा कि इस्लाम में बहिश्त का मिलना दो चीजों पर आधरित है (1) अल्लाह और उनके पैगम्बर आदि पर ईमान लाना और (2) अच्छे या नेक काम करना या परहेजगार बनना। इसके पूर्व हमने काफ़िर, दोजख और कयामत संबधी अध्यायों में देखा कि जो ईमान नहीं लाये वे कुरान शरीफ़ के अनुसार काफ़िर हैं, फसादी है, दोजखी और जालिम आदि हैं, और निश्चित रुप से कयामत पर जलील होगें और सदा रहने वाले दोजख या नरक में डाले जायेगें।

35 0 कुछ प्रश्न उठते हैं जिनका उत्तर हमें कुरान शरीफ़ में ढूढंना है (1) जिन्होनें की नेक या अच्छे काम किये पर ईमान नहीं लाये—"ऐसे लोगों की क्या गति है? (2) जो लोग ईमान लाये पर जिन्होनें नेक या अच्छे काम नहीं किये बल्कि बुरे काम ही किये। (3) कुरान शरीफ़ के अनुसार ये नेक, या अच्छे काम, या परहेजगारी क्या चीज है, उनके मापदण्ड क्या हैं? इस अध्याय में इन्हीं प्रश्नों का विश्लेषण कुरान शरीफ़ के आधार पर किया है। और अन्त में ग्रथ साहिबजी की "कर्म" के विषय में क्या मान्यता है इसकी चर्चा की गई है।

35 1 कुरान शरीफ़ में ऐसी कोई भी आयत या आयत का अंश नहीं है जिसके अनुसार ईमान लाये विना भी बहिश्त या स्वर्ग की प्राप्ति संभव हो, फिर चाहे वह व्यक्ति कितने ही अच्छे या नेक काम क्यों न करता रहा हो। कुरान शरीफ़ में ऐसी आयतें हैं जो कुछ-कुछ स्वतत्र सी लगती है। ये आयतें यह प्रतिपादित करती हैं कि जो कयामत के दिन अच्छा काम करके आयेगा उसको अच्छा फल मिलेगा और बुरे काम वाले को बुरा फल। यदि इन आयतो को हम इसी रुप में स्वीकार कर ले तो हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि इस्लाम में कर्म ही स्वर्ग और नरक का आधार है। परन्तु इस मान्यता की स्थिति में तो अल्लाह, पैगम्बर आदि पर ईमान लाने की अनिवार्यता अर्थहीन हो जायेगी तो ऐसी स्थिति में सारा कुरान शरीफ़ ही अमान्य हो जायेगा। चुंकि कुरान शरीफ के अनुसार मनुष्य का परम लक्ष्य बहिश्त या स्वर्ग की प्राप्ति है तो इस परम लक्ष्य को भी बिना ईमान लाये केवल शुभ कर्मों द्वारा प्राप्त किया जा सकेगा। पर यह सिद्धांत कुरान शरीफ़ को मान्य है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

35 2 यदि कर्म फल का सिद्धान्त स्वतंत्र रुप से कुरान शरीफ़ को स्वीकृत मान लिया जाय तो इस्लाम में काफ़िर, मुन्किर, मुनाफिक, शिर्कवाले, आदि शब्द व्यर्थ हो जायेगें। फिर तो कुरान शरीफ़ की यह मान्यता निराधार हो जायेगी कि जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान नहीं लाये और जिन्होंने अल्लाह की आयतों और आखिरत को झुठलाया ऐसे सब काफ़िरों का कयामत पर अन्तिम ठिकाना सदा रहने वाला दोजख या नरक ही है—क्योंकि तब नरक का मिलना इमान न लाने पर निर्भर न होकर किसी व्यक्ति के बुरे या पापपूर्ण कर्मों का

ही सीमित फल माना जायेगा, जैसाकि ग्रंथ साहिबजी की मान्यता है। कुरान शरीफ़ से यदि हम अल्लाह पर ईमान लाने वाले या ईमानवाले शब्दों को हटा दें तो इस्लाम का मुख्य आधार ही समाप्त हो जाता है। इसलिये यह मानना पड़ेगा कि इस्लाम धर्म में ईमान लाये बिना कुरान कल्पित बहिश्त की प्राप्ति असम्भव है। ऐसे ईमान न लाने वाले व्यक्ति काफ़िर ही हैं और उनको सदा रहने वाले नरक में यातना भुगतनी होगी फिर चाहे वो कितने ही बड़े नेक या अच्छे काम करने वाले क्यों न रहे हों।

35.3 आइये अब हम कर्म संबंधी कुछ आयतों पर विचार करें जो स्वतंत्र सी लगती हैं :

(1) "(कयामत के दिन) जो आदमी नेक काम करके आयेगा उसको उससे बढ़कर (फल) मिलेगा, और जो बुरे काम करके आयेगा तो जिन लोगों ने जैसा बुरा किया है वैसा ही पायेंगे।" 28/84 इसी प्रकार की दो आयतें 89 और 90 सूरः में भी आती हैं।

ये आयतें कयामत के निश्चित दिन पर अल्लाह के न्याय से संबंधित हैं जब ईमानवाले और काफ़िर उनके सामने अलग-अलग खड़े किये जायेगें। यहाँ नेक काम का अर्थ ईमानवाले ही हैं जो ईमानलाने के बाद इस धरती की जिन्दगी में नमाज और रोजे कायम रखते थे और अल्लाह कि राह में जिहाद के अवसर पर अपना धन खर्च करते थे और लड़ाई में शामिल होते थे, या ईमानवालों से अच्छा व्यवहार रखते थे। यह बात इसी अध्याय की 83वीं आयत से साफ हो जाती है : "यह आखिरत का घर है जो हमने उन लोगों के लिए कर रखा है जो दुनियां में ऐंठकर नहीं चलते और फसाद नहीं चाहते। और परहेजगारों का आखिरी अंजाम भला है।" 28/83 पाठक काफिर संबंधी अध्याय में देखेगें कि कुरान शरीफ़ ने काफ़िरों को बार-बार फसादी की संज्ञा से सम्बोधित किया है। इस संदर्भ में आयत 28/83, 84 से यह साफ हो जाता है कि नेक काम का अर्थ कुफ्र न करना भी है, ईमानवाले होना तो है ही।

आयत 28/83 में यह आया है कि "और परहेजगारों का आखिरी अंजाम भला है।" इस परहेजगार शब्द का आशय क्या है? "और जो सत्य बात लेकर आया (यानी रसूल हजरत मुहम्मद) और (जिसने उसको) सच माना यही लोग परहेजगार हैं।" 39/33 इस आयत से भी यह बात साफ हो जाती है कि ईमान लाने वाला ही परहेजगार है, और ईमान लाना ही नेक काम करना है। इस बात के समर्थन में हम आगे कुछ अन्य आयतें भी प्रस्तुत करेगें।

(2) ऊपर दी गई आयत 28/84 में बुरे काम करने वालों के बारे में आता है कि "और जो बुरे काम करके आयेगा तो जिन लोगों ने जैसा बुरा किया है वैसा ही बुरा पायेगें" सो यहा बुरे काम का अर्थ ईमान न लाने वाले या काफ़िर से ही है जैसा कि इससे अगली आयत से स्पष्ट हो जाता है; "(वह अल्लाह) जिसने कुरान के हुक्म तुम पर भेजे वह जरूर तुमको (कामयाबी के साथ) पहली जगह लौटा देगा। (ऐ पैगम्बर) (इनसे) कहो कि मेरा परवरदीगार खूब जानता है कि कौन हिदायत (सही राह) लेकर आया है और कौन प्रत्यक्ष गुमराही में है।" 28/85

इस आयत से साफ हो जाता है कि ईमानवाला सही राह या नेक काम करके आया है और काफिर प्रत्यक्ष गुमराही से या बुरा काम करके कयामत के दिन अल्लाह के सामने हाजिर हुआ है

के दिन ये महान और
यातना पाने के लिये दोज
कुरान शरीफ़ में
"जो कुफ्र करता
तो वह अपने ही लिए (
कुरान शरीफ़ के
सबसे अच्छा कर्म है।

35.7 अब जरा हम ग्रंथ
कर्म भाव की चर्चा पहले
ही सनातन अंश है पर मा
के भोगों की कामना के का
है। वह तब तक इस बंधन
माया चक्र से मुक्त हो पर
बंधन मुक्त है। यहाँ कुरान
मान्यता पर आधारित न हो
फल है। यहाँ स्वर्ग आदि
या गुरुओं को माने या न मा
फल है। स्वर्ग तथा नरक दोन
कर्म और कामनानुसार अन्य
ग्रंथ साहिब तथा वेद
को अर्पित कर दिये जायं तो
में सहायक होते हैं। वैसे लोक
भाव, सत्य और ब्रह्मचार्य का
इन्द्रियों को विषयों से लौटा
अनुपालन योग्य हैं। इस सब
भाव से पालन करके कोई भी
समर्पण करके परमात्मा प्राप्ति

35.8 नीचे हम ग्रंथ साहिबजी
(1) "लख चउरासीह
पूरबि लिखिआ
अर्थात अपने पूर्व कर्मों के
ष्ट पाता रहता है। अपने पिछले
आवश्यक है कि स्वर्ग में देवताओं
(2) परमात्म् कृपा भी उस
ो है उसके बिना दूसरा कोई भी

ंबंधित सी लगने वाली कुछ आयतें दे रहे है..."और
ो नेक कामों की तरफ बुलाये और अच्छे काम करने
मना करे। और ऐसे ही लोग (अपनी) मुराद को
रह की करें ऐसा हरगिज न होगा कि उसकी कदर न
ब जानकार है।" 3/115 "और अल्लाह ने जो तुममें
सकी हवस न किया करो। मर्दों ने जैसे कर्म किये हैं
र्म किये हैं उनको उनका भाग मिलेगा, और अल्लाह

मानवालों से ही संबंधित होने के कारण स्वर्ग में कर्म
इन आयतों में प्रेषित कर्म कुरान शरीफ़ के सिद्धांतों

इस पर विचार करें कि जो ईमान तो लाये पर काम
बुरे काम ही करते रहे-ऐसों की इस्लाम में क्या गति
शरीफ़ में ऐसी कोई स्पष्ट आयत नहीं है जिसके
कयामत के बाद नरक या दोजख में निवास करेंगे।
में देखा स्वर्ग में ईमानवालों की दो जमातें हो जाती
उनकी है जो ईमान और नेककारी में अव्वल रहे,
इन्हें आयत 56/10 ने "आगे वाले" कहा है। इनके
में ऊँचे किस्म के दर्शाये गये हैं। और दूसरी जमात
त 56/27 में "दाहिने तरफ वाले" कहा गया है।
छ कम दर्शाये गये हैं। 56/27 से 38
के बुरे कामों का क्या हुआ? कुरान शरीफ़ कहते
अल्लाह द्वारा क्षमा कर दिये जायेंगे। (1) "और ये
अपने तईं कोई अन्याय कर लेते हैं। तो अल्लाह
लगते हैं—और अल्लाह के सिवाय माफी देने वाला
नी पर जानने समझने के बाद अड़े नहीं रहते।"
के पालनकर्ता की तरफ से बख्शिश (क्षमा) है और
रही होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। और (नेक) काम
है। 3/136
र्मों को करनेवाले मुसलमान अल्लाह से अपने पाप
सकते हैं। और जिन "नेक कामों के कारण उन्हें
ो अल्लाह पर ईमान लाये। इस बात को सूरः 4
गया है : "और जो कोई बुरा काम करे या आप
माफी मांगे तो अल्लाह को बख्शने वाला मेहरबान
ाने के बाद पहले के किये गये पापों का उन पर

कोई गुनाह नहीं रह जाता। "जो लोग ईमान लाये और उन्होनें अच्छे काम किये तो जो कुछ खा-पी चुके उसमें उनपर गुनाह नहीं रहा जबकि आगे परहेजगारी की और ईमान लाये और नेक काम किये (और) फिर (अल्लाह से) डरते रहे और ईमान पर रहे...।" 5/93

"ऐ ईमानवालो अल्लाह से डरते रहो और बात सीधी करो।" 33/70 "वह तुमको तुम्हारे कर्म संभाल देगा और तुम्हारे गुनाह तुमको माफ कर देगा। और जिसने अल्लाह और उसके रसूल के कहे पर अमल किया उसने बड़ी कामयाबी पाई।" 33/71 "और जो सत्य बात लेकर आया (यानी पैगम्बर हजरत मुहम्मद) और (जिसने उसको) सच माना वही लोग परहेजगार हैं।" 39/33, "वह जो चाहेगें उनके परवरदीगार के यहां उनके लिए मौजूद होगा। नेकी करनेवालों का यही बदला है।" 39/34 "ताकि अल्लाह उनके बुरे काम जो उन्होंने किये उनसे उतार दे और उनके नेक कामों के बदले में जो उन्होंने किए उनको प्रतिफल दे।" 39/35

35.6 सूरः 47 और 48 में भी ईमानवालों के पापों या बुरे कर्मो की अल्लाह द्वारा माफी की बात बड़े जोरदार शब्दों में आई है :

"और जो लोग ईमान लाये और उन्होनें भले काम किये और (कुरान) जो मुहम्मद पर उतरा है, उस पर ईमान लाये और वह उसके परवरदीगार की तरफ से है। अल्लाह ने उनके पाप उन पर से उतार दिये और उनकी हालत दुरस्त कर दी।" 47/2; "मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वे काफ़िरों के हक में बड़े सख्त हैं.....जो लोग ईमान लाये और भले काम किये उनसे अल्लाह ने क्षमा और बड़े उज्र (बदले) का वादा किया है।" 48/29

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस्लाम में ईमानवाला बना रहने पर और समय-समय पर अपने गुनाहों के लिये तौबा कर लेने पर उसके बुरे कर्म, उसके पाप अल्लाह द्वारा क्षमा होते रहते हैं। और अन्ततः वह कयामत पर अल्लाह द्वारा प्रदत्त बहिश्त या स्वर्ग में इसलिये प्रवेश पायेगा कि उसने अल्लाह और उसके पैगम्बर को माना, उन पर ईमान लाया। न कि इसलिये कि उसने अच्छे कर्म किये थे। कुरान शरीफ़ के अनुसार "अच्छा"या "नेक" कर्म ईमानवाला बनना ही है। कोई व्यक्ति कितना ही नेक या अच्छा काम करे पर यदि वह ईमान नहीं लाया तो उसके सब अच्छे कर्म अकारथ हैं और कयामत पर अल्लाह उसे नरक में सदा के लिये झोंक देगा। सूरः 32 की 20वीं आयत इस बात को इस तरह सामने रखती है :

"और जो लोग अवज्ञाकारी हुए उनका ठिकाना (नरक की) आग होगी जब उससे निकलना चाहेगें तो उसी में फिर लौटा दिये जायेगें और उनसे कहा जायेगा कि जिस (दोजख को) अजाब (पर तुम यकीन न लाते थे और उस) को तुम झुठलाते रहे अब उसी का मजा चखों।" 32/20

इस प्रकार कुरान शरीफ़ में ईमान लाना ही मनुष्य का प्रमुखतम उद्देश्य है। उसका ईमान ही उसे नरक से बचायेगा, उसका ईमान ही उसके द्वारा किये गये बुरे से बुरे कर्मो को निरस्त कर उसे स्वर्ग या बहिश्त में भेजेगा, जिसे पाना इस्लाम का उच्चतम उद्देश्य है। और ईमान न लाने वाला कोई भी व्यक्ति चाहे कितना ही महान कर्म जीवन भर करता रहे इस्लाम मे कोई उसका फल नहीं है, और ऐसा व्यक्ति उसकी निगाह में काफ़िर है। और काफ़िर इस लोक में तो ईमानवालों और अल्लाह के हाथों सजा पाने के पात्र हैं ही परलोक में

35.9 ानवता के लिये कल्याणकारी कर्म करनेवाले काफ़िर सदा के लिये
अपने ख या नरक में ढकेल दिये जायेंगे।
अच्छे अच्छे और बुरे काम करने वालों के लिए कहा गया है कि :
शुभ है तो उसी पर कुफ्र (की बला) पड़ेगी और जो अच्छे काम करता है
जाता आराम का) सामान आरास्तः कर रहा है।" 39/44
36.0 संदर्भ में ईमान न लाना ही सबसे बड़ा कुफ्र है और ईमान लाना ही
पुरुष
ही क साहिबजी वर्णित कर्म भाव का अवलोकन करें। ग्रंथ साहिबजी के
मानव मी की जा चुकी है। ग्रंथ साहिबजी के अनुसार जीव परमात्मा का
और ा के प्रभाव से अपने सच्चे स्वरुप को भूलकर इस लोक और स्वर्ग
एक रण अपने कर्मफल के वश होकर नाना योनियों में जन्म लेता रहता
प्रभाव में पड़ा रहता है जब तक वह गुरु कृपा से ज्ञान प्राप्त कर इस
निर्वा त्मा को नहीं पा लेता। अपने असली स्वरुप में तो वह सदैव ही
सकन शरीफ के ठीक विरीत स्वर्ग-नरक की प्राप्ति किसी ईमान या
कर स्वतंत्र रुप से शुभ-अशुभ, पुण्य-पाप, या अच्छे-बुरे कर्मों का
में मा अच्छे कर्म करने वाला कोई भी मानव फिर चाहे यह परमात्मा
और प्राप्त कर सकता है। इसी प्रकार नरक प्राप्ति बुरे कर्मों का ही
के ही सुख और दुख भोग के बाद क्षीण हो जाने पर जीव अपने
में अ योनियों में जन्म लेने को विवश हो जाता है।
की शास्त्रों के अनुसार यदि कर्म और उनके फल हृदय से परमात्मा
सिद्ध बंधन के कारण न होकर जीव को परमात्मा की ओर ले जाने
या कल्याण और आत्मकल्याण के लिए सभी प्राणियों के प्रति प्रीत
कुरान पालन, अहिंसा, दया, क्षमा, दान, जप, व्रत, शम-दम, यानी
के लि अन्तर्मुखी बनना ये सभी श्रेष्ठ कर्म है और सभी द्वारा
है, तो कुरान शरीफ में कोई कल्पना नहीं है। इन कर्मों का सकाम
समय पुण्य स्वर्ग के भोग पा सकता है और निष्काम भाव से भगवत्
उचित मार्ग पर बढ़ सकता है।
माँ-ब कर्म संबंधी कुछ वाणी दे रहे हैं :
नैतिक स दे भ्रमि भ्रमि होइ खुआय ॥
ईमान कमावणा कोई न मेटनहारु ॥" 27 म.3
के स फलस्वरूप ही जीव चौरासी लाख योनियों में भटकता हुआ
कर्मों के फलों को कोई भी मिटा नहीं सकता। यह बतलाना
उद्देश्य को देह माँ 84 लाख योनियों में आ जाती है।
इस कर्मों द्वारा ही प्राप्त होती है। वह कर्मफल दाता प्रभु एक
और हीं है। उस प्रभु प्राप्ति का महान फल गुरु के प्रसाद से

ही मिलता है और गुरु कृपा उत्तम कर्मों से प्राप्त होती है।

"नानक दाता एकु है दूजा अवरु न कोई ॥
गुरु परसादी पाईऐ करमि परापति होई ॥" 65/66 म 3

(3) गुरु नानक देव जी महाराज कहते है कि अच्छे बुरे कर्मो का विवेचन धर्मराज कर्मविधान के अंतर्गत करते रहते हैं। हांलाकि वह परमात्मा सर्वत्र है तो भी अपने अच्छे-बुरे कर्मों के कारण कोई जीव "उसके" निकट है और कोई उससे दूर हो जाता है :

"चंगि आईआ बुरिआईआ बाचे धरमु हदूरि ॥
करनी आपो आपणी के नेडै के दूरि ॥" 146 म 1

(4) परमात्म प्राप्ति का प्रयत्न अपने में महान कर्म है। संत रविदास ग्रंथ साहिबजी मे पूछते हैं कि शास्त्रों ने अनेक कर्म निरुपित किये हैं—सारा संसार ही कर्म करता हुआ दिखता है किंतु वे कौन से कर्म हैं जिनके द्वारा इस माया के चक्र से छूटकर जीव परमात् प्राप्ति रुप सिद्धि पा लेता है :

"बहु बिधि धरम निरुपीए करता दीसे सभ लोई ॥
कवन करम से छुटीऐ जिह साधे सभ सिधि होई ॥" 346 रविदास जी

(5) कर्मों का महत्व बतलाते हुए गुरु रामदास जी महाराज कहते है कि जीवन बहुत थोड़ा है और शीघ्र ही उसी प्रकार समाप्त हो जाता है जैसा फसल पकने पर खेत काट दिया जाता है। मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही ही जाता है :

"आइ लगे नी दिह थोड्डे जिउ पका खेतु लुणीऐ ॥
जेहे करम कमावेद ते वेहो भणीऐ ॥" 316 म.4

(6) पांचवें गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते है कि जिनके कर्म पूर्णता को प्राप्त कर लेते हैं अर्थात जिनके कर्म भगवत् समर्पण के कारण ब्रह्मरुप हो जाते है उन्हीं की सतिगुरु की कृपा से पूर्ण पारब्रह्म परमात्मा से भेंट होती है :

"कहु नानक जा के पूरन करम ॥ सतिगुर भेटै पूरन पारब्रह्म ॥ 378 म.5

गीता के चौथे अध्याय के 24 वें श्लोक में भगवान कृष्ण कहते हैं कि जिसको यज्ञ, यज्ञाग्नि, यज्ञ में आहुत होने वाला हवि, आहुति डालने का कार्य सब ब्रह्म स्वरुप है और जिसको सब कर्म ब्रह्ममय प्रतीत होते, वह पारब्रह्म परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

(7) ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि सभी के कर्मों का लेखा-जोखा तैयार रहता है। शुभ कर्मो के बिना कोई भी इस संसार सागर को नहीं तर सकता :

"सभना का दरि लेखा होइ ॥ करणी बाझहु तरै न कोई ॥ 952 म.3

(8) वेद प्रमाण के आधार पर गुरु ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि मनुष्य जो-जो देता है यानी जैसे कर्म करता है वैसा ही लेता है यानी वैसा ही उसका फल पाता है। जीव अपने कर्मानुसार ही नरक-स्वर्ग में जाते हैं :

"कथा कहाणी बेदीं आणी पापु पुंनु बीचारु ॥
दे दे लैणा लै लै देणा नरकि सुरगि अवतार ॥ 1[illegible]

35 9 उपरोक्त सबदों से यह स्पष्ट है कि ग्रंथ साहिबजी के अनुसार कर्म स्वतंत्र रुप से अपना फल देते हैं। स्वर्ग और नरक किसी की मान्यता पर निर्भर न होकर व्यक्ति विशेष के अच्छे और बुरे कर्मों से जुड़े हैं। यही नहीं परमात्म् प्राप्ति में शुभ कर्म ही सहायक हैं। क्योंकि शुभ कर्मों के कर्त्ता को ही सतिगुर मिल पाते हैं, और गुरु कृपा से परमात्म ज्ञान सुलभ हो जाता है।

36 0 प्रत्येक मनुष्य प्रतिक्षण कामना और कर्म से जुड़ा है। जैसाकि वेद कहते हैं कि यह पुरुष काममय है। जैसी कामना करता है वैसा ही संकल्प करता है, जैसा संकल्प करता वैसा ही कर्म करता है और जैसा कर्म करता है वैसा ही फल प्राप्त करता है। विश्व के इस विशाल मानव समाज में व्यक्ति, परिवार, समाज और देश के स्तरों पर कोटि-कोटि कामनाएं, संकल्प और कर्म निरंतर बनते रहते हैं, आपस में टकराते रहते हैं और नए-नए समीकरण बनाते हुए एक बहुत ही जटिल और गहन कर्मजाल से सबको बांधे हुए हैं। इस प्रकार कर्म का असीम प्रभाव सभी मनुष्यों के बाह्य एवं आंतरिक जीवन पर सदा छाया रहता है। वर्तमान के जीवन निर्वाह में कर्म और कर्म फल के प्रत्यक्ष अनुदान को तो कोई भी व्यक्ति नकार ही नही सकता।

यहाँ हम केवल इतना ही कहना चाहते है कि कर्म के बारे में, जो कि समस्त प्राणियों मे मानव जीवन की सबसे विशिष्ट अभिव्यक्ति है, ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ़ के विचार और मत एक दूसरे से मात्र भिन्न ही नहीं सर्वथा पृथक हैं या यों कहिए बिल्कुल विपरीत है।

यदि गैर ईमानवालों को इस्लाम का उनके प्रति सही रूख समझना है तो उन्हें कुरान मे आई कर्म सम्बन्धी आयतों के मर्म को ठीक से समझना होगा। आइये हम पुनः इस मर्म की थोड़ी ओर गहराई में चलें। यदि ईमानवाला होकर बुरे काम करता है और इस्लाम के सिद्धान्तों की अवहेलना करता है तो ऐसा व्यक्ति यदि तौबः करे, अल्लाह से मांफी माँग ले या कफ्फारा कर ले तो अल्लाह उसका वह अपराध या दोष क्षमा करने वाला है जैसा कि कुरान शरीफ़ में बार-बार आता है। लेकिन यदि ईमानवाला होकर बुरे काम करता है, इस्लाम के सिद्धान्तों की अवहेलना करता है और फिर इनके लिये पछतावा करके तौबः भी नहीं करता है, तो ऐसा व्यक्ति जाहिल और काफ़िर या मुन्किर ही रह जाता है। तब उसे अवश्य ही थोड़े समय दोजख या नरक की यातना दी जाएगी हमेशा के लिये कदापि नहीं। यहां यह बतलाना उचित होगा कि कुरान शरीफ़ ने अच्छे कर्मों की कोई परिभाषा नहीं दी है। ठीक तौल तौलना, माँ-बाप का आदर करना, दान देना, गरीबों को भोजन कराना, चोरी न करना आदि इस्लाम के नैतिक सिद्धान्तों में आते हैं जिनकी चर्चा हम अलग से करेंगे। इन सिद्धान्तों का पालन भी ईमानवालों तक ही सीमित है—कुरान शरीफ़ के अनुसार यह असम्भव है कि काफ़िर ईमानवालों के समतुल्य माने जायं।

इसके विपरीत ग्रंथ साहिबजी का प्रमुखतम उपदेश है परमात्मा को जानना, और उद्देश्य है प्रत्येक जीव को, जो परमात्मा का ही अंश है, परमात्मा की प्राप्ति करवाना। और इस परमात्मा प्राप्ति के मुख्य सम्बल हैं, ज्ञान, प्रेम और भक्ति। अच्छे और बुरे कर्म, या शुभ और अशुभ कर्म या पाप और पुण्य ये अपने में स्वतत्र फल देते हैं इस लोक में अच्छे और

बुरे फल या स्वर्ग या नरक की प्राप्ति प्रत्येक व्यक्ति के अच्छे और बुरे कर्मो पर निर्भर है। और ये अच्छे और बुरे फल अपना भोग देकर समाप्त हो जाते हैं। हाँ, यदि कर्म निष्काम भाव से किये जायं और भगवत् अर्पण कर दिये जायं तो ऐसे भी कर्म चित्त की शुद्धि कर परमात्म ज्ञान की प्राप्ति में सहायक होते हैं।

36 1 आइये हम देखें कि कुरान शरीफ़ कर्म और अच्छी बुरी बातों के विषय के सम्बन्ध मे ईमानवालों को क्या उपदेश देते हैं :

"ऐ ईमावालों (आपस में) एक दूसरे का माल बेजा मत खाओ। हाँ आपस में रजामन्दी से तिजारत करो, और (आपस में) एक दूसरे का कत्ल मत करो। बेशक अल्लाह तुम पर बड़ा मेहरबान है।" 4/28 "और जो जोर जुल्म से ऐसा करेगा हम उसको जल्दी ही आग में झोकेगे ओर यह अल्लाह के लिए साधारण बात है।" 4/30

"अगर तुम उनमें से बड़े-बड़े पापों से, जिनसे तुमको मना किया जाता है, बचते रहोगे तो, तो हम तुम्हारी (छोटी) बुराइयाँ दूर कर देंगे और तुमको इज्जत की जगह (बहिश्त) मे दाखिल करेंगे।" 4/31

"और अल्लाह ने जो तुममे से एक दूसरे को बढ़ती दे रखी है उसकी हवस न किया करो। मर्दो ने जैसे कर्म किये हैं उनको उनका भाग और औरतों ने जैसे कर्म किये हैं उनको उनका भाग मिलेगा, और अल्लाह से उसकी दया माँगते रहो।" 4/32

आयात 4/32 का फुटनोट में इस प्रकार खुलासा दिया गया है :

"दुनिया में जिस्म, ताकत, इज्जत या इल्म के लिहाज से एक से एक बढ़कर हैं लेकिन इसमें किसी को किसी पर डाह करना या अपने लिये उसकी हवस करना बुरा है। अगर अपनी किसी कमी को पूरा करने की ख्वाहिश हो भी तो बजाय अल्लाह की कुदरत को उलाहना देने या दूसरे लोगों से हिर्स करने के अल्लाह से दुआ माँगना चाहिए। एक समय कुछ औरतो ने आदमियों के मुकाबले अपने को कम समझ कर रश्क किया। इस पर यह आयत उतरी।"

36.2 आयत 4/78 में आता है कि यदि मनुष्य को भलाई पहुँचती है तो वह अल्लाह की तरफ से है और यदि बुराई पहुँच जाती है तो (ऐ मुहम्मद! तुमसे) कहने लगते हैं कि यह तुम्हारी तरफ से है। (ऐ पैगम्बर! तुम) इनसे कह दो कि सब कुछ अल्लाह की तरफ से है, तो इन लोगों का क्या हाल है कि कोई बात समझते नहीं मालूम होते।" 4/78 "तुझको कोई भलाई पहुँचे तो अल्लाह की तरफ से है और तुझको कोई बुराई पहुँचे तो तेरी रूह (या करतूतों) की तरफ से है। और (ऐ पैगम्बर) हमने तुझको लोगों की तरफ पैगाम पहुँचाने वाला बना कर भेजा है, और (इस पर) अल्लाह की गवाही काफी है।" 4/79

"और जो कोई बुरा काम करे या आप अपने हक में जुल्म करे, फिर अल्लाह से माफी माँगे, तो अल्लाह को बख्शने वाला मेहरबान पायगा।" 4/110, "और जो शख्स बुराई कमाता है तो वह अपने ही हक में खराबी करता है, और अल्लाह बड़ा जानकर और हिकमत वाला है।" 4/111

36.3 अल्लाह ईमानवालों की बुराइयों को माफी माँगने पर बख्शनेवाला है यह बात आयत 4/123 से और भी साफ हो जाती है "(ऐ मुसलमानों) अजाम न तुम्हारी आरजू पर निर्भर

है और न किताबवालों (यानी यहूदियों-ईसाइयों) की आरजू पर। जो शख्स बुरा काम करेगा उसकी सजा पावेगा और अल्लाह के सिवाय उसको कोई साथी और मददगार न मिलेगा।"4/123

इस प्रकार हम देखते हैं कि मुसलमान द्वारा बुरे काम की तौबा करने पर अल्लाह अपनी मेहरबानी से क्षमा कर देता है। अल्लाह को न माननेवाले तो काफ़िर, मुन्किर और मुनाफिक हैं और उनकी क्या दुर्गति होगी इस बात की सविस्तार चर्चा हम "काफ़िर" सम्बन्धी अध्याय में कर चुके हैं।

36.4 अब प्रश्न उठता है कि जिसने अल्लाह को नहीं माना यानि जो काफ़िर है वह यदि अच्छे काम करता है तो उसको क्या फल मिलेगा। वह भी ईमानवालों के समान मरने के बाद बहिश्त या स्वर्ग का अधिकारी होगा? इस विषय में कुरान शरीफ़ का स्पष्ट मत इस प्रकार है

(1) "और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये हम उनको ऐसे बागों मे दाखिल करेंगे जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें हमेशा रहेंगे। (और उनके साथ यह) अल्लाह का वादा सच्चा है और अल्लाह से बढ़ कर बात किसकी सच्ची है।" 4/122

(2) "और जो शख्स कोई नेक काम करे मर्द हो या औरत, और वह ईमान रखता हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे और जरा भी उनका हक न मारा जाएगा।" 4/124

(3) "फिर जो लोग ईमान वाले हैं और नेक काम किये, जो अल्लाह उनको उनका पूरा बदला देगा और अपनी रहमत से (और) भी (ज्यादा) देगा। और जो लोग (अल्लाह का बन्दा बनने में लजाते और घमण्ड करते हैं अल्लाह उनको दुखदाई सजा देगा। और अल्लाह के अलावा उनको न कोई साथी मिलेगा और मददगार।" 4/173

उपरोक्त तीनों आयतों से एकदम स्पष्ट है कि बिना ईमान वाले या मुसलमान बने सभी नेक काम अकारथ हैं और न ही उसके अच्छे कामों का इस्लामी दृष्टि से कोई महत्व है। आयत 4/173 में अल्लाह की यह स्पष्ट घोषणा है कि ईमान वालों के ही नेक काम सफल हैं, और ईमान न लाने वालों को "अल्लाह दुखदाई सजा देगा।"

और इस्लाम में सबसे नेक काम है अल्लाह के ईमान पर चलना और सबसे बड़ा नेककार हजरत इब्राहिम के दीन पर चलने वाला है। जैसाकि आयत 4/125 में कुरान शरीफ़ ने स्पष्ट किया है :

"और उस शख्स से ज्यादा किसकी राह अच्छी है, जिसने अल्लाह के आगे अपना सिर झुका दिया, और वह नेककार भी है, और इब्राहिम के दीन पर चलता है जो एक (अल्लाह) ही के हो रहे थे। और इब्राहिम को अल्लाह ने अपना दोस्त ठहराया था।" 4/125

अच्छे या नेक काम के विषय में कुरान शरीफ़ में अल्लाह की यह मूलभूत शर्त है कि नेक काम करने वाला ईमानवाला होना चाहिए तभी उसके नेक कामों का परलोक में अच्छा फल मिलेगा और बहिश्त में कुरान वर्णित नाना प्रकार के भोगों का अधिकारी बनेगा। बिना अल्लाह, कुरान, पैगम्बर हजरत मुहम्मद पर और कयामत पर ईमान लाये सारे नेक या अच्छे काम व्यर्थ हैं। उनको तो जैसा कि ऊपर दी गई आयत 4/173 में आया है "अल्लाह दुखदाई सजा देगा।"

36.5 1 "जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये अल्लाह से उनका अहद है

कि (आखिरत में) उनके लिए बख्शिश (क्षमा) है और बड़ा बदला है।" 5/9 "और जिन लोगो ने (दीन से) इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह दोजखी हैं।" 5/10

आयत 5/9 में अल्लाह यह स्पष्ट कह रहे हैं कि उनका ईमानवालों से अहद यानी इकरारनामा है कि कयामत पर उनके बुरे कामों को क्षमा कर दिया जायगा। चूंकि यह दोनो आयतें नेक काम के संदर्भ में आई हैं, इसलिये आयत 5/10 से यह स्पष्ट है कि अल्लाह के दीन को न मानने वालों के नेक काम कुछ काम नहीं आयेंगे। उन्हें इस्लाम न मानने के कारण दोजखी होना पड़ेगा।

(2) "और (ऐ पैगम्बर) जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, वे जब तुम्हारे पास आया करें तो (उनको सब्र दिलाया करो और) कहो कि तुम पर सलाम (कल्याण) तुम्हारे परवरदीगार ने मेहरबानी करना अपने ऊपर ले लिया है कि कोई तुममें से नादानी से कोई गुनाह कर बैठे फिर किये बाद तौबः और सुधार कर ले तो वह (बेशक) बख्शने वाला बेहद मेहरबान है।" 6/54

(3) "जो लोग ईमान लायें और अच्छे काम किये उनके लिए ही खुशहाली है और (जन्नत) उनका अच्छा ठिकाना है।" 13/29

(4) "और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये वे (जन्नत के) बागों मे दाखिल किये जायेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, अपनी परवरदीगार के हुक्म से उनमे (होश रहेंगे।) 14/23

(5) "जो शख्स अच्छे काम करेगा मर्द हो या औरत और वह ईमान रखता है तो हम (दुनिया में) उसकी अच्छी जिन्दगी बसर करायेंगे और (आखिरत में) उनको अच्छे कामों का बदला जरूर देंगे जो वह करते रहें।" 16/97

(6) "(और) जो लोग ईमान आये और उन्होंने नेक काम भी किये तो जो शख्स नेक काम करे हम उसके बदले को अकारथ नहीं होने दिया करते।" 18/30

(7) "जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनकी मेहमानी के लिये जन्नत के बाग है।" 18/107 "जिनमें यह हमेशा रहेंगे, वहां से और कहीं जाना न चाहेंगे" 18/108

(8) "बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनके लिये अल्लाह मुहब्बत अता करेगा।" 18/96

(9) "और जो ईमानवाला होकर उस (अल्लाह) के सामने हाजिर होगा (और) उसने नेक काम किये होंगे तो यही लोग हैं जिनके बड़े दर्जे होंगे।" 20/75 "हमेशा रहने के (जन्नत के सदाबहार) बाग जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें हमेशा रहेंगे। और यह बदला है उस (आदमी का) जो पाक हुआ।" 20/76

(10) "सो जो कोई नेक काम करे और ईमान रखता हो तो उसकी कोशिश व्यर्थ जाने वाली नहीं है, और हम उसको लिखते जाते हैं।" 21/94

(11) "अलबत्ता जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उनको अल्लाह (जन्नत के) बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वहां उनको गहना पहनाया जायेगा—सोने के कंगन और मोती और वहाँ उनकी पोशाक रेशम की होगी।" 22/23

(12) "तुममें से जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनसे अल्लाह का वादा है कि उनको जमीन में खलीफा बनायेगा जैसे इन लोगों से पहले लोगों को खलीफा बनाया था। और उनका दीन जो उसने उनके लिये पसंद किया है उसको उनके लिये मजबूत कर देगा और उनके डर से बदले में उनको अमन देगा।" 24/55

36 6 ऊपर दी हुई आयतों से यह स्पष्ट है कि कुरान शरीफ़ के अनुसार अच्छे कामों का फल अपने में स्वतंत्र नहीं है। ईमानवाला बने बिना उनका कोई भी फल नहीं है। आइये देखें कुरान शरीफ़ के आगे के अध्याय कर्म के सम्बन्ध में क्या कहते हैं :

(1) कुरान शरीफ़ के अनुसार ईमान न लाना ही कुफ्र करना या बुरा काम है। और ईमान लाना ही प्रत्यक्षतः अच्छा या नेक काम है। इस्लाम का यह सिद्धांत सूरः 30 की इन तीन आयतों में बड़े स्पष्ट रूप में निहित है : "जो कुफ्र करता है तो उसी पर उसके कुफ्र (की बला) पड़ेगी और जो अच्छे काम करता है तो वह अपने ही लिए (आराम का) सामान आरास्त कर रहा है" 30/44, "ताकि जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सत्कर्म किये, उनको अल्लाह अपनी कृपा से बदला दें। बेशक वह काफ़िरों को पसंद नहीं करता।" 30/45

"...तो जो लोग (झुठलाने के अपराध के) अपराधी हुए उनसे हमने बदला लिया। और ईमान वालों को मदद देना हम पर लाजिम है।" 30/47

(2) "तो जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये, उनके लिये रहने को बाग होंगे, (यह) मेहमानदारी उनके (नेक) कामों का बदला है जो (वे) करते रहें।" 32/19 "और जो लोग अवज्ञाकारी हुए उनका ठिकाना (नरक की) आग होगी। जब उससे निकलना चाहेंगे उसी में फिर लौटा दिये जायेंगे...। 32/20

(3) "और तेरे परवरदीगार से जो हुक्म तुझको आवे उसी पर चल...। 33/2, "वह तुमको तुम्हारे कर्म संभाल देगा और तुम्हारे गुनाह तुमको माफ कर देगा। और जिसने अल्लाह और उसके रसूल के कहे पर अमल किया उसने बड़ी कामयाबी पाई" 33/71

(4) "और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद यह ज़रीया नहीं कि तुमको हमारा नगीची बनावे सिवाय जो ईमान लाया और उसने नेक काम किये, ऐसे मनुष्यों के लिए उनके काम का दुगना बदला हे और वह बालाखानों में इत्मीनान से बैठें होंगे।" 34/37

(5) "अलबत्ता जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये उनके लिये कभी न खत्म होने वाला सबाब है।" 41/8

(6) "और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये और (कुरान) जो मुहम्मद पर उतरा है, उस पर ईमान लाये और वह उनके परवरदीगार की तरफ से हक है। अल्लाह ने ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये अल्लाह बेशक उनको (जन्नत के) बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रहीं होगी। और काफ़िर दुनिया में फायदा उठाते और खाते है जैसे चौपाये खातें हैं और (दोजख की) आग इनका ठिकाना है।" 47/12

(7) "...जो ईमान लाये और भले काम किये उनसे अल्लाह ने क्षमा का बड़े अज्र (बदले) का वादा किया है " 48/29

8 "(कयामत यानी) इकट्ठा करने के दिन जिस दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा वह

(तुम्हारे लिये) हार जीत का है। और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाये और नेक काम करें तो (अल्लाह) उससे उसकी बुराईयां दूर करेगा और उसको बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं कि उसमें वह हमेशा रहा करेंगे (यह बड़ी कामयाबी है") 64/9 "जो और काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाया वही दोजखवाले हैं कि उसमे हमेशा रहेंगे और (वह) बुरी जगह है।" 64/10

(9) "तो इन (काफ़िरों) को क्या हुआ है कि ईमान नहीं लातें।" 84/20 "और जब इनके सामने कुरान पढ़ा जाता है तो सजदा नहीं करते।" 84/21 "बल्कि उलटे ये काफिर झुठलाते हैं।" 84/22, "तो (ऐ पैगम्बर) इनको दुखदाई सजा ही सुना दो।" 84/24, "मगर जो ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनके लिये कभी न खत्म होने वाला बदला है।" 95/25

(10) "मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनके लिये बेइन्तिहा बदला है।" 95/6

(11) "और बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये वही लोग सबसे अच्छे प्राणी है।" 98/7 "उनका बदला उनके परवरदीगार के यहां रहने के जन्नत के बाग हैं जिनके नीचे नहरे बह रही होंगी। जिनमें वह हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे खुश और वे अल्लाह से खुश है...." 98/8

(12) "ढलते दिन की कसम।" 103/1, बेशक आदमी घाटे में है।" 103/2, "मगर (वह नहीं) जो ईमान लाये और सुकर्म किये और आपस में हक की वसीयत देते रहे, और आपस में सब्र की वसीयत करते रहे।" 103/3

36.7 इस प्रकार हम स्पष्टतः देखते हैं कि कुरान शरीफ़ की दृष्टि में किसी अच्छे से अच्छे और महान से महान कर्म का कोई महत्व नहीं है यदि ऐसा महान कर्म करने वाला गैर मुसलमान है। महान कर्म करने वाले गैर मुसलमान को कुरान शरीफ़ के अनुसार अवश्य ही दोजख या नरक में जाना पड़ेगा।

कर्म विधान सम्बन्धी अन्य आयतें :

3/104,134,162,163, 4/112, 5/93, 13/22, 22/14,50,56,57, 24/38, 39, 27/89, 90,91,92, 28/67, 84, 29/4,5,9,10,11, 31/8,9,22, 35/7,39,46 37/37 से 40, 39/32 से 35, 41/8, 42/30, 47/14, 52/12 से 18, 54/49 से 55, 58/5,6,20,21, 89/15 से 28।

❑

अल्लाह का "नूर" और परमात्म ज्योति

36 8 इस्लाम में अल्लाह के नूर की सदैव चर्चा रहती है। आइये देखें कुरान शरीफ़ में इसके बाबत क्या लिखा है :

"अल्लाह आसमानों और जमीन का नूर (प्रकाश) है। उसके नूर की मिसाल ऐसी है कि जैसे एक ताक है, उस ताक में एक चिराग है, चिराग एक शीशे की कंदील में रखा है, शीशा एक सितारे की तरह चमकता है (और) बरकत वाले जैतन के पेड़ का तेल उस (चिराग) में जलता है जो न पूरब न पश्चिम की तरफ। उसका तेल (क्या कहना है उसकी सिफत का) कि अगर उसको आंच भी न छुए तो भी जल उठे। रोशनी पर रोशनी। अल्लाह अपने नूर की तरफ जिसको चाहता है राह दिखाता है और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान फर्माता है।" 24/35 "वह (नूर) ऐसे घरों में जगमगाता है जिनकी बाबत अल्लाह ने हुक्म दिया है तो वह बलंद समझ जाये।" 24/36, "ऐसे (नूर इलाही से जगमगाते) लोग सौदागरी और खरीद फरोख्त में गाफिल न होकर अल्लाह की याद करते और नमाज कायम करते और जकात देते रहते हैं ओर (कयामत के भयावने) उस दिन से डरते हैं जबकि दिल और आंखे उलट जायेंगी।" 24/37

36 9 ग्रंथ साहिबजी में परमात्म ज्योति का वर्णन स्थान-स्थान पर आता है। उसके ज्योति स्वरुप की और बाह्य ज्योतियों द्वारा परमात्म आरती की कुछ झलकियां नीचे दर्शायी जा रही हे

"सभि महि जोति जोति है सोई ॥ तिस दै चानाणि सभ महि चानणु होई ॥
गुरु साखी जोति परगटु होई ॥ जो तिसु भावै सु आरति होई" ॥ 13 म 1

अर्थात हे परमात्मा! सभी जीवों में आपकी ही ज्योति व्याप रही है उसी के आलोक से सभी सृष्टि एवं जड़ चेतन अलौकिक हो रहे हैं किन्तु इस दिव्य ज्योति को मनुष्य गुरु कृपा से ही अनुभव कर सकता है और अपने ह्दय में साक्षात्कार कर सकता है। परमात्मा भक्त जिस भाव से चाहे उसकी आरती कर सकता है।

"गगन में थालु रखे चंद दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूप मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराई फूलत जोति ॥" 13 म 1

स्वाभाविक है कि इस परम ज्योति की आरती और वन्दना भी दिव्य हो, समस्त प्रकृति स्वयं ही मानो उसके आरती और पूजन के रूप में सजी हुई है। गुरु नानक देव जी कहते हैं "गगन के थाल में सूर्य और चन्द्रमा दीपक बने हुए हैं, समस्त तारा मंडल उस आरती के थाल में मोतियों के रूप में बिछे है। चन्दन के वृक्षों के वनों से आनेवाली सुगन्धित वायु मानो उसकी "धूप" है, और पवन उस पर चंवर डुला रही है। हे ज्योतिस्वरुप परमात्मा, समस्त प्रकृति मानो आपकी आरती के लिए, आराधना के लिए, मानों समर्पित पुष्प बन गई।"

"कैसी आरती होई ॥ भवखंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजत भेरी ॥" 13 म 1

"हे परमात्मन् आपकी कैसी अलौकिक आरती हो रही है, जिसमें समस्त प्रकृति आरती बन गई है। और इस आरती में सब प्राणियों के हृदय में बज रहा दिव्य अनहद् नाद ही मानो भेरी के रूप में बज रहा है।"

और यह परमात्मज्योति ही और या यों कहिए ये ज्योतिस्वरुप परमात्म ही इस जड-चेतन का मूल है। और यह ज्योति प्रत्येक प्राणी के हृदय में उसके जन्म के साथ ही बसी है। अतः अपनी अन्तरहृदय में ही उस ज्योति का ध्यान कर मनुष्य परमात्मा को पा सकता है। गुरु अमरदास जी की यह कितनी मर्मस्पर्शी और ज्ञानमयी वाणी ग्रंथ साहिबजी में आती है :

"ऐ सरीर मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग माई आइआ ॥
हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥
हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखइआ ॥
गुर परसादी बुझिया ता चलतु होआ चलतु नदरी आइया ॥
कहै नानकु सृष्टि का मूल रचिया जोति राखी ता तू जग महि आइआ ॥ 921म.3

और आगे चलकर ग्रंथ साहिबजी इन्द्रियों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं : "ऐ नेत्रहु मेरिहों हरि तुम महि जोति धारी हरि बिन अवरु न देखहु कोई।" 922 म. 3

वेदों में परमात्मा को अंधकार से परे ज्योतियों की परमज्योति कहा है। हम ग्रथ साहिबजी में वर्णित ज्योति शब्द के आध्यात्मिक स्वरुप की झांकी प्रस्तुत कर रहे हैं :

(1) "चंदु सुरजु दुई जोति सरूपु ॥ जोति अंतरि बहसु अनुपू ॥" 972 कबीर

(2) "एको नामु एको नाराइणु त्रिभवणु एक जोति ॥" 992 म 1

(3) "पूरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥" 197 म 1

(4) "घटि घटि जोति निरंतरि बूझे गुरमति सारु ॥" 20 म.1

(5) "एको जोति एको मन वसिआ सभ ब्रहम दृष्टि इकु कीजै ॥
आतम रामु सभ एकै है पसरे सभ चरन तले सिरु दीजे ॥" 325 म.4

(6) "अंतरि जोति भली जगजीवन ॥
सभ घट भोगे हरि रस पीवन ॥" 1031 म.1

(7) "सूरज किरणि मिले जल का जलु हुआ राम ॥
जोती जोति रली संपूरनु कीआ राम ॥" 846 म 5

वेदों में परमात्मा का अंधकार से परे ज्योतियों की परमज्योति के रुप में आवाहन और ध्यान हुआ है। जीवात्मा को भी धूम्र रहित ज्योति के समान पर अहंकार से युक्त हृदय मे स्थित दिखलाया है, और साथ ही असत् और अंधकार को मृत्यु बतलाते हुए सत और ज्योति को अमृत कहा है, यथा :

"अविद्र्यारुप अंधकार से अतीत तथा सूर्य की भांति प्रकाशस्वरुप इस महान पुरुष को में जानता हूं, उसको जानकर ही मनुष्य मृत्यु को उल्लंघन कर जाता है।" (श्वेताश्वतरोपनिषद् 3/8) —जो अकेला ही वृक्ष की भांति आकाश में स्थित है " (श्वेताश्वतरोपनिषद् 3/9

"जो अगुष्ठमात्र सूर्य के समान प्रकाश स्वरुप तथा सकल्प और

अहकार से युक्त है—ऐसा अपर अर्थात् परमात्मा से भिन्न जीवात्मा भी निःसंदेह ज्ञानियों द्वारा देखा गया है।" (श्वेता 5/8)

"वह सर्वथा अविनाशी है, वह सूर्याभिमानी देवता का भी उपास्य है।" (श्वेता 4/18)

"कलाओं से रहित, क्रिया रहित, सर्वथा शान्त, निर्दोष, निर्मल, अमृत के परम सेतुरुप तथा जले हुए इंधन से युक्त अग्नि की भांति निर्मल ज्योतिरुप उन परमात्मा का मैं चिन्तन करता हूं।" (श्वेता 6/19)

"वहां न तो सूर्य प्रकाश फैला सकता है, न चन्द्रमा और तारागण का समुदाय ही और न ये बिजलियां ही वहां प्रकाशित हो सकती हैं, फिर यह लौकिक अग्नि तो कैसे प्रकाशित हो सकता है, (क्योंकि) उसके प्रकाशित होने पर ही (उसी के प्रकाश से) बतलाए हुए सूर्य आदि सब उसके पीछे प्रकाशित होते हैं, उसके प्रकाश से यह सम्पूर्ण जगत प्रकाशित होता है।" (कठोपनिषद् 2/2/15, मुण्डकोपनिषद् 2/2/10, श्वेता 6/14)

37 0 सत्यकाम जाबाल को ब्रह्म के "ज्योतिष्मान" पाद का उपदेश देते हुए छान्दोग्यपनिषद् कहता है—"अग्नि कला है, सूर्य कला है, चन्द्रमा कला है, और विद्युत कला है। सौम्य, यह ब्रह्म का चुतुष्कल पाद "ज्योतिष्मान्" नामवाला है। जो कोई इसे इस प्रकार जानने वाला पुरुष ब्रह्म के इस चतुष्कल पाद को "ज्योतिष्मान्" ऐसे गुण से युक्त उपासना करता है, वह इस लोक मे ज्योतिष्मान् होता है तथा ज्योतिष्मान् लोकों को जीत लेता है।" (छान्दोग्योपनिषद् 4/71)

और ज्ञान रूपी ज्योति यानी प्रकाश ही अमृत है और अज्ञान रूपी अंधकार ही मृत्यु है, इसका उपदेश देते हुए वेद में उपासक परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे उनको अंधकार से प्रकाश की ओर ले जायँः "असतो मा सदमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतगमय" (बृहदारण्यकोपनिषद् 1/3/281) और इसी मंत्र में इनकी व्याख्या करते हुए वेद वाणी कहती है, "वह जिस समय कहता है कि—"मुझे असत् से सत् की ओर ले जाओ" यहां मृत्यु ही असत् है, और मृत्यु ही अंधकार है और ज्योति ही अमृत है। "मुझे मृत्यु से अमृत की ओर ले जाओ।" इसमें तो कोई बात छिपी है ही नहीं।

37 1 गीता के ग्यारहवें अध्याय में जब अर्जुन की प्रार्थना पर भगवान कृष्ण ने उन्हें अपना विश्वरूप दिखलाया, तो रुप की दिव्य प्रभा बतलाते हुए संजय कहते है "आकाश में हजारों सूर्यो के एक साथ उदय होने से जो प्रकाश हो तब वह कदाचित उस विश्वरूप परमात्मा के प्रकाश के समान हो।" (गीता 11/12)

"दिवि सूर्य सहस्त्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता
यदिमाः सदृशी सा स्याद्भास्तस्य महात्मनः।" (गीता 11/12)

37.2 आगे गीता के तेरहवें अध्याय के 17वें श्लोक में गीता परमात्मा को ज्योतियों की परम ज्योति बतलाते हुए कहती है—"वह ब्रह्म ज्योतियों की भी ज्योति, अंधकार (माया) से अति परे कहा जाता है तथा वह परमात्मा ज्ञानस्वरुप और जानने योग्य है, तत्व ज्ञान से प्राप्त होने वाला और सबके हृदय में स्थित है।" (गीता 13/17)

□

कुरान शरीफ़ में 'परवरदिगार' भाव

37.3 अभी तक इस लेखन में हमने सप्रमाण यह दिखलाया कि किस प्रकार सभी धार्मिक विषयों में ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ़ एक दूसरे से बिल्कुल विपरीत भाव और मत रखते है। इस अध्याय में हम दोनों धर्मों की उपासना विधि के महत्वपूर्ण पहलूओं की चर्चा करेंगे।

चाहे ग्रंथ साहिबजी हों, या वेद शास्त्र या फिर इस विशाल हिन्दू समाज का कोई भी पथ या सम्प्रदाय हो, सबमें परमात्मा की सगुन उपासना अपनी-अपनी भावना और श्रद्धा के अनुसार पिता, माता, भाई और सेवक सखा भाव द्वारा की जाती है। माता कौशल्या, और माता यशोदा और देवकी के मातृ भाव में स्थित होकर भक्तों ने परमात्मा की पुत्र रूप में भी उपासना की है। प्रेम मार्ग के भक्तों ने और निरगुनिया संतों ने जिनमें सभी सिक्ख गुरु, संत कबीर, मीराबाई, आदि शामिल हैं, परमात्मा की उपासना अपने पति और प्रीतम के रूप में भी की है। सारे ग्रंथ साहिबजी पर यह प्रिया-प्रीतम भाव की उपासना भारी विरह वेदना की टीस भरी बदली लेकर छाई हुई है। इस भगवत्-प्रेम की तीव्र विरह वेदना में या तो भागवत पुराण मे गोपियाँ रोई हैं या फिर ग्रंथ साहिबजी में गुरु नानक देव व अन्य सिक्ख गुरु। इस दोनो की उपमा पाना कठिन है। स्वामी और सेवक भाव की उपासना भी ग्रंथ साहिबजी में कई स्थानों पर आती है, परन्तु ग्रंथ साहिबजी का मुख्य लक्ष्य स्वयं पारब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति होने के कारण यह उपासना गोण रुप में ही है।

37.4 परन्तु इसके पूर्व कि हम ग्रंथ साहिबजी में वर्णित इन उपासनाओं की विस्तार से चर्चा करें, यह समझ लेना उचित होगा कि कुरान शरीफ़ इस विषय में क्या कहती हैं।

जैसा कि हमने पीछे कुरान शरीफ संबंधी आयतों में देखा कि इस्लाम में अल्लाह का स्वरुप मुख्यतः सृष्टि के रचियता और उसके पालन करने वाले के रुप में है। उसी ने खनखनाती मिट्‌टी या गारे से इन्सान बनाया, फिर उसमें अपनी सांस के रुप में रुह फूंकी, और अपने माननेवालों या ईमानवालों को विशेषकर इस जगत का भोक्ता बनाया। और परलोक में कयामत के अवसर पर उन्हें विहिश्त मिलने का खुला वायदा किया।

और अपने को न मानने वाले काफ़िरों के लिये इस लोक में विशेषकर कर परलोक मे नरक की सजा का प्रावधान किया। अल्लाह ही ने फरिश्ते बनाये जो उनके बहुत नजदीकी बंदे हैं और वे अल्लाह की आज्ञानुसार सृष्टि नियंत्रण के बहुत से कार्यों में लगे रहते हैं। इस्लाम के आरम्भिक काल में जैसा कि कुरान शरीफ की तमाम आयतों में आता है यहूदी और ईसाई और कुछ अन्य लोग यह कहते थे कि फिरिश्ते अल्लाह के बेटे हैं या फिर वे अल्लाह की बेटियां हैं। वे अपनी लड़कियों के नाम भी फरिश्तों को लड़कियां मानकर उन्ही पर रखते थे उनकी इस बात पर अल्लाह की भारी नाराजगी कुरान शरीफ़ में कई स्थानों पर

आती है। अल्लाह को मनुष्यों से एक ही नाता मान्य है, वह यह कि अल्लाह उनका परवरदिगार या पालनकर्त्ता है और मनुष्य उसके पोषित बन्दे या दास हैं। और चूंकि अल्लाह ही उनका पालनहार है और...उनको इस लोक में सब भोग प्रदान करता है और परलोक मे भी करेगा तो मनुष्यों को अल्लाह पर पूरा ईमान रख कर उसके हुक्म पर चलना चाहिये जो उसने अपने पैगम्बर हजरत मुहम्मद को अपनी आयतों के द्वारा भेजें है। इस संबंध के अलावा मनुष्य और अल्लाह के बीच और कोई संबंध नहीं है। और चूंकि इस्लाम में पशु, पक्षी, कीट, पतग आदि योनियों में रूह की कोई कल्पना ही नहीं है तो उनके साथ अल्लाह के किसी भी प्रकार के संबंध का प्रश्न ही नहीं उठता।

आइये देखें कि कुरान शरीफ़ इस संबंध में क्या कहते हैं :

37.5 (1) सूरः दो की आयत 109 से 115 तक में यहूदियों की चर्चा है। उन्हीं की बातो का हवाला देते हुए सूरः 116 में आता है "और कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है (हालाकि) वह इन बातों से पाक है बल्कि जो कुछ आसमानों और जमीन में है वह सबका स्वामी है (न कि बाप) और सब उसकी आज्ञा के अधीन हैं।" 2/116

यह आयत इस बात को साफ कर देती है कि किसी भी जीव से अल्लाह का पिता का नाता नहीं है। अल्लाह सबका स्वामी या मालिक है—बस एक यही उसका नाता सब जीवो से हैं ।

(2) "और (मुशरिकों ने) जिन्नों को अल्लाह का शरीक बना खड़ा किया, हालाकि अल्लाह ही ने इस (जिन्नों) को पैदा किया और वे जाने बूझे अल्लाह के बेटों-बेटियों का होना गढ लेते हैं। (अल्लाह की बाबत) जैसी-जैसी बातें यह लोग बयान करते हैं, वह इनसे पाक है और इस बातों से बहुत दूर हैं।" 6/100

"वह अनोखे आसमान और जमीन का बनाने वाला है। उसकी संतान कहां से होने लगी? उसके कोई स्त्री नहीं और उसने हर चीज को पैदा किया है, और वही हर चीज से जानकार है।" 6/101

37 6 अल्लाह ने यहाँ यह स्पष्ट कर दिया है कि उसके कोई संतान होने का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि उसके कोई स्त्री ही नहीं है।

यहूदियों के गलत प्रचार की चर्चा करते हुए अल्लाह कहते हैं : "अल्लाह के लिए (फरिश्तों को) बेटियाँ ठहराते हैं और वह (ऐसी चीजों से) पाक है और अपने लिए जो चाहे सो ठहराते हैं। (यानी बेटे) 6/100 "और जब इनमें से किसी को बेटी के पैदा होने की खुशखबरी दी जाती है तो (मारे रंज) उनका मुँह काला पड़ जाता है और जी में घुट के रह जाता है।" 16/101

"(ऐ शिर्कवालों) क्या तुम्हारे परवरदीगार ने तुमको बेटो के लिए चुन लिया और आप बेटियां ले बैठा (यानी फरिश्ते)?(यह तो) तुम बड़ी (सख्त) बात कहते हो।" 17/40

"और कोई कोई (यानी ईसाई) कहते हैं कि अल्लाह बेटा रखता है।" 19/88 (ऐ पैगम्बर इनसे कहो) कि भारी (सख्त) बात है जो तुम (गढ़) लाये हो।" 19/89 "करीब है कि इससे फट पड़े और जमीन फट जाने और पहाड टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़े "

19/90 "इसलिए कि वे अल्लाह के लिए बेटा साबित करते हैं। 19/91 "और लायक नही कि अल्लाह किसी को बेटा बनादे।" 19/92

"आसमानों और जमीन में कोई नहीं है जो अल्लाह के आगे दास होकर न आवे।" 19/93

37 7 सूरः 19 की ये पांचों आयतें बहुत ध्यान से पढ़ने की हैं। यह कहना कि अल्लाह के बेटा या औलाद है तो यह अल्लाह के लिए सबसे बड़े अपमान की बात कहना है। यह कहना कि अल्लाह के बेटे या संतान हैं इतना बड़ा झूठ है कि इस बात से अल्लाह ही क्या जड़, पर्वत, आसमान और पृथ्वी भी मानो विचलित होकर, क्षुभित होकर, चलायमान हो जांय फट जाय। अल्लाह किसी के बेटा बनाये यह तो अल्लाह की शान के बिल्कुल खिलाफ है।

इस बात को और स्पष्ट करते हुए 21 वें सूरः में आता है "और (कोई कोई) कहते हैं कि दयालु (अल्लाह) औलाद रखता है तो उसकी जात पाक है (फरिश्ते जिनको ये बेटे-बेटिया समझते हैं अल्लाह की औलाद नहीं। बल्कि वे (अल्लाह के) बन्दे हैं जिनको इज्जत मिली है।" 21/26 "उसके आगे बढ़ कर बात नहीं कर सकते और उसके हुक्म पर चलते हैं।)" 21/27

सत्ताइसवीं आयत का सार यह हैं कि चुंकि ये फरिश्ते अल्लाह के दास हैं वे दास की भांति ही अल्लाह की चुपचाप सेवा करते हैं और उनके हुक्म पर चलते हैं। माता-पिता का अंश होने के कारण संतान का दर्जा तो एक तरह से माता-पिता के बराबर होता है। यदि फरिश्ते वास्तव में अल्लाह के बेटे बेटिंया होते तो उनका कार्य सेवक की तरह केवल चुपचाप हुक्म बजाना ही नहीं होता।

37 8 सूरः 23 में अल्लाह का साफ कहना है कि उसने किसी को बेटा नहीं बनाया और न ही किसी अन्य को पूज्यः

"अल्लाह ने किसी को बेटा नहीं बनाया और न उसके साथ कोई और पूज्य है (जिसका हुक्म चले) अगर ऐसा होता तो हर पूज्य अपनी बनाई (सृष्टि) को (अलग) लिए फिरता और एक दूसरे पर चढ़ जाते। जैसी-जैसी बातें यह (लोग अल्लाह की बाबत) बयान करते हैं वह अल्लाह उनसे पाक है।" 23/91

इस आयत में अल्लाह ने किसी अन्य को पूज्य न बनाने का यह कारण दिया है कि यदि कई अन्य पूज्य होते तो उनमें प्रतिस्पर्धावश आपस में युद्ध छिड़ जाता।

37 9 सूरः 37 में अल्लाह का इस बात पर कुपित होना उभर कर आता है कि काफिर अल्लाह को बेटीवाला ठहराते हैं :

"इन (मक्का के काफिरों) से पूछो क्या तुम्हारे (अल्लाह के) लिए बेटियां और उनके (अपने) लिए बेटे हैं" 37/149 "या हमने (सचमुच) इनके कहने के अनुसार फरिश्तों को औरतें बनाया और वह यह बनाना देख रहे थे।"37/150

"सुनो, यह तो अपने झूठ बना-बनाकर कहते हैं।" 37/151 "कि अल्लाह औलाद वाला है और कुछ शक नहीं कि यह लोग झूठे हैं।" 37/152 "क्या (अल्लाह ने) बेटो पर बेटिया पसंद की" 37/153 "तुम लोगों को क्या हुआ है, कैसी बेइन्साफी करते हो।" 37/154 "क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते।" 37/155 "या तुम्हारे पास कोई खुली हुई सनद (यानी किताब इल्लाही है" 37 156 "सच्चे हो तो अपनी किताब पेश करो" 37/157

38 0 कुरान शरीफ़ की आयतों की प्रामाणिकता के विवाद को छोड़ कर अल्लाह का पैगम्बर के माध्यम से काफ़िरों के साथ इतना कठोर सम्वाद किसी अन्य स्थान पर कुरान शरीफ़ मे नहीं आया है। यहाँ यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह का "बेटा-बेटी" मामले को लेकर काफ़िरों को उपरोक्त संदेश ग्रंथ साहिबजी वर्णित सर्वव्यापी, घट-घट वासी और अन्तरयामी सर्वसत्ता की ओर से नहीं है। सर्वव्यापी सत्ता की ओर से इस प्रकार का संवाद इसलिए भी आर्थहीन हो जायेगा कि उस स्थिति में संवाद भेजने वाले और लेने वाले दोनों का अंतरयामी पुरुष एक ही होगा। कुरान शरीफ़ में उपरोक्त संदेश देने वाली सत्ता उनसे भिन्न है जिनके लिये यह संदेश भेजा गया है।

38 1 अल्लाह का मनुष्य जाति से पिता पुत्र का कतई भी कोई संबंध नहीं है इस पर निर्णयात्मक आयतें इस प्रकार आती है :

"अगर अल्लाह किसी को बेटा बनाना चाहता है तो अपनी सृष्टि से जिसको चाहता पसद कर लेता। वह तो (इनबातों से) पाक है। वह अल्लाह अकेला और गालिब है।" 39/4 "आसमानों और जमीन की सलतनत उसी की है और वह कोई बेटा नहीं रखता और न सल्तनत में उसका कोई साझी है।"25/2

अन्त में हम अल्लाह की इस बात की नाराजगी संबंध कुछ आयतें दे रहे हैं कि काफिर अपने लिये बेटे और उनके लिये बेटियां ठहराते हैं।

(1) "क्या (अल्लाह ने) अपने सृष्टि में से (आप तो) बेटियां ली और तुम को बेटे चुनकर दिये।"43/16 "और (हाल यह है कि) जब इन लोगों में से किसी को उस चीज की खुश खबरी दी जाती है (यानी बेटी पैदा होने की) जो अल्लाह के लिए उन्होनें ठहराई है तो (मारे अफसोस के) उनका मुँह काला पड़ जाता है और दम घुटने लगता है।" 43/17 "और क्या जो गहनों में पाला जावेओर झगड़े के वक्त बात तक न कह सके (वह अल्लाह की बेटी हो सकती है)" 4/18 "और इन लोगों ने फरिश्तों को जो रहमान (अल्लाह) के बन्दे हैं औरतें ठहराया है क्या उसकी पैदाइश के समय यह लोग मौजूद (देख रहे थे) तो इनका यह कहना लिख लिया जायगा और इनसे (इनकी इस मन गढ़न्त की बाबत) पूछा जायेगा।" 43/19

38.2 आयत 43/18 में कुरान शरीफ़ में नारी का एक बहुत ही असमर्थ भरा ओर नकारात्मक चित्रण है कि नारी आपदा के समय कुछ भी सहायत करने में असमर्थ है।

(2) "क्या अल्लाह के लिए बेटियां और तुम लोगों के लिए बेटे हैं।" 52/39

इस अध्याय में दी गई आयतों से यह बात एक दम साफ हो जाती है कि इस्लाम मे अल्लाह और मनुष्यों के बीच पिता-पुत्र के संबंध का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। वहाँ यह सबंध मालिक और दास तक ही सीमित है। जब पिता पुत्र का ही नाता अल्लाह को स्वीकार नही तो अल्लाह के प्रति सखा भाव और परमात्मा को ही अपना पुत्र मानकर उपासना का भाव कैसे सोचा जा सकता है। और कुरान शरीफ़ में प्रिया-प्रीतम भाव की चर्चा को ढूढ़ना एक व्यर्थ का सा प्रयास होगा।

❑

ग्रंथ साहिबजी
माता-पिता-पुत्र-बंधु और मित्र भाव

38 3 ग्रंथ साहिबजी में और वेद-शास्त्रों में परमात्मा की उपासना कि उच्चतम विधि उसको निरतर अपने आत्मरुप में देखने की है, अपने अंतरयामी रूप में ही अनुभूत करने की है। यह इसलिये कि ग्रंथ साहिबजी या वेद शास्त्र तत्वतः आत्मा और परमात्मा में किंचित भी भेद नही मानते। इनका संबंध तो ऐसा अभिन्न रुप से जुड़ा है जैसे कमरे या घड़े का आकाश महाकाश से जुड़ा है, जैसे जल की तरगें नदी से भिन्न नहीं है, जैसे प्रज्जवलित अग्नि में उठती चिगनारियां अग्नि से अभिन्न हैं, जैसे जल में पड़ा हुआ सूर्य का प्रतिविम्ब सूर्य की सत्ता का प्रतीक मात्र है और जल के सूखने पर सूर्य में ही लीन हो जाता है। ग्रंथ साहिबजी कहते है

सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम।" 846 म 5

जल बिचहु बिंब उठालिओ जल माहि समाइओ।" 1096

"जिउ जल तरंग फेनु जल होई है सेवक ठाकुर माए एका।" 209 म.5

"सहस घटा महि एकु आकासु॥ घट फूटे तै ओ ही प्रगासु।" 736

आत्मा और परमात्मा का भेद तो माया के कारण, अज्ञान के कारण ही मानो भासता है तत्वतः इस भेद या अलगाव की कोई सत्ता ही नहीं है।

38.4 यही कारण है कि चाहे ग्रंथ साहिबजी हों या वेद शास्त्र परमात्म उपासना के जो भी भाव अपनाए गए हैं, उसमें उपास्य और उपासक का आपसी संबंध समानता या आत्म रूप के एकेत्वक आधार पर ही है। उदाहरण के लिये परमात्मा को मां या पिमा रुप में मानकर उनकी उपासना करना। सो हम सब इस जंगत में ही प्रत्यक्ष देखते हैं कि संतान माँ और पिता का ही साक्षात अंश है और अपने में उनके सब गुण-दोष संजोये है। संतान और माता पिता के संबंध में कोई भी हीन भावना का स्थान नहीं होता। दोनों के मध्य परम विशुद्ध प्रेम का ही नाता होता है और संतान को ही माता पिता अपना सब कुछ सौंप कर अपने को कृत कृत्य मानते हैं, और संतान ही उनकी प्रतिरुप होने के कारण हर माने में उनकी सहज उत्तराधिकारी होती है। इस संसार में आत्मा या जीव परमात्मा का सनातन अंश है और इसलिए अन्तरयामी रुप में अपने अन्दर परमात्म् त्तव ही संजोये है। जैसा कि भगवान कृष्ण गीता में कहते है :

"इस देह में यह सनातन जीवात्मा मेरा ही अंश है।" 15/7

इसी बात को ग्रंथ साहिबजी भाव विभोर होकर इस प्रकार बतलाते है :

"अचरज कथा महा अनूप॥ प्रातमा पारब्रह्म का रुप॥ 868 म.5

अहो कितने आश्चर्य की बात है कितनी अनुपम गाथा है-अरे यह आत्मा तो पारब्रह्म

परमात्मा का ही रुप है। और आगे आत्मा के परब्रह्म रुप को ही निरुपित करते हुए ग्रथ साहिबजी इस आत्मा को जन्म मृत्यु बुढ़ापे आदि से अत्यन्त परे हुए कहते हैं कि न इनके मा है और न पिता, यह पाप और पुण्य से भी अति परे है, और यह कि वह अपने सच्चे स्वरुप मे सदा जागृत है

"ना इस बापु नहीं इसु माइआ॥ इहु अपरंपरु होता आइआ॥
पाप पुन का इसु लेपु न लागै॥ घट घट अंतरि सब ही जागै॥" 868 म 5

और जब यह आत्मा परमात्मा के साथ एक हो जाता है तब हृद्य कि सारी ग्रथिया खुल जाती हैं और आत्मा का परमात्मा से अलग होने का संशय मिट जाता है :

आत्मा परमात्मा एको करै। अंतर की दुविधा अंतरि मरै॥ 661 म 1

38 5 गुरुओं ने परमात्मा को माँ रुप में भी सदैव देखा है। और यह मान्यता वेद और शास्त्र सम्मत है। जैसे सूर्य के प्रकाश और अग्नि के साथ ऊष्णता उनका अभिन्न अंग है उसी प्रकार परमात्मा की अपनी अभिन्न शक्ति जो समस्त ब्रह्माण्डों की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय का कारण है, साक्षात परब्रह्म ही है। इसी बात को नचिकेता को समझाते हुए कठोपनिषद के दूसरे अध्याय की प्रथम बल्ली के सातवें मंत्र में यमराज कहते हैं:

"जो देवता मयी अदिति प्राणरुप से प्रकट होती है तथा जो बुद्धि रुप गुहा में प्रविष्ट हो कर रहने वाली और भूतों के साथ ही उत्पन्न हुई हैं, तथा जो हृदय रूपी गुफा में प्रवेश करके वहीं रहती है, (उसे जो पुरुष देखता है वही देखता है) यही वह परमात्मा है जिसके विषय में तुमने पूछा था।"

देव्युपनिषद में देवताओं की प्रार्थना पर परमात्मा की आधा शक्ति स्वरूपा महादेवी अपना परिचय इस प्रकार देती हैं :

"मैं ब्रह्मस्वरुपा हूँ। मुझसे प्रकृति-पुरुषात्मक कारण रुप और कार्यरुप जगत उत्पन्न हुआ है। मैं आनन्द और आनन्दरुपा हूँ। ....अवश्य जानने योग्य ब्रह्म और अब्रह्म भी मे ही हूँ। .....यह सारा दृष्य जगत मैं ही हूं। .....मैं रुद्रो और बसुओं के रुप में संचार करती हूँ। मै आदित्यों और विश्वदेवों के रुपों में फिरा करती हूँ मैं मित्र और वरुण दोनों का, इन्द्र एव अग्नि का और दोनों अशवनिकुमारों का भरण पोषण करती हूँ। मैं सोम त्वष्टा और भग को धारण करती हूं। त्रैलोक्य को आक्रान्त करने के लिये विस्तीर्ण पादक्षेप करने वाले विष्णु, ब्रह्मदेव और प्रजापति को मैं ही धारण करती हूँ। .....मैं सम्पूर्ण जगत की ईश्वरी हूँ। मै ही इस जगत के पितारुप आकाश को सर्वाधिष्ठान स्वरुप परमात्मा के ऊपर उत्पन्न करती हूं। मेरा स्थान आत्म स्वरुप को धारण करने वाली बुद्धिवृत्ति में है।" इन मंत्रों में देवी को साक्षात परब्रह्म रुप में दर्शाया है, जो जगत को उत्पन्न करने वाली और सभी देवताओं या देव शक्तियों को धारण करती है और उनका भरण पोषण भी।

38.6 गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने अपने दसम ग्रंथ साहिबजी में भी देवी को साक्षात ब्रह्म रुपा और देवताओं की "अधिश्वरी' माना है। अपने रचित चंडी-चरित्र उकति बिलास का आरम्भ करते हुए चौथे सवैये में कहते हैं

"तारन लोक उधारन भूमहि दैत संघारन चंड तुही है।
कारन ईस कला कमला हरि अद्रसुता जह देखो तुही है।"

अर्थात हे माँ तुम समस्त लोकों का उद्धार करने वाली तथा भूमि से दैत्यों का सहार करने वाली चंडिका हो। तुम ही शिव की शक्ति, विष्णु की शक्ति के रुप में सवर्त्र विधमान हो। और जव भगवती दुर्गा ने सब दैत्यों का संहार कर दिया तो गुरु गोविन्द सिंह जह महाराज देबताओं व्दारा देवी की स्तुति का वर्णन इस प्रकार करते हैं

"नमो परम परमेश्वरी धरम करणी। नई नित्त नाराइणी दुष्ट दरणी।"

(विचित्र नाटक चंडी चरित्र सातवां अध्याय : 236)

"पवित्री पुनीता पुराणी परेयं। प्रभी पूरणी पारब्रह्मी अजेयं।
अरूपं अनूपं अठामं। अभीतं अजीतं यहां धरम धामं।
अजेयं अभेयं निरंकार नित्यं। निरुपं निर्वाणं नमित्यं अकित्यं।"

(विचित्र नाटक चंडी चरित्र सातवां अध्याय 251-252)

"नमो तारणी कारणी लोक माता। नमसत्यं नमसत्यं नमसत्यं भवानी।
सदा राख लै मुहि क्रिया कै क्रियानी।"

(वि. नाटक चंडी चरित्र सातवां अध्याय 256)

इस प्रकार हमने देखा कि किस प्रकार सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंहजी महाराज जगत माता के रूप में परब्रह्म परमात्मा की आद्या शक्ति देवी भगवती की देवताओं से स्तुति कराते समय देवी में परमात्मा के ही लक्षण दर्शाये हैं।

38.7 बन्धु या भाई रुप में परमात्मा की उपासना का आधार तो यही है कि आत्मा परमात्मा का ही अंश होने के कारण परमात्मा का बन्धु स्वरुप भी है। और यही सखा भावना का भी आधार है। परमात्मा को बन्धु या सखा मानकर की गई भक्ति या उपासना में भी कोई हीन भावना का स्थान नहीं हैं यहाँ भी समानता और प्रेम ही आधार है। भाई या मित्र के बीच स्वामी और दास भाव की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इस संबंध में तो आपसी प्रेम की लाग-डांट ही रहती है। वेदों ने तो स्पष्ट रुप से आत्मा और परमात्मा को सखा कहा है, जो एक वृक्ष पर रहने वाले दो पक्षियों के समान इस शरीर में साथ साथ रहते हैं : आइये सखा भाव का चित्रण वेदवाणी के माध्यम से ही देखें :

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्य निमग्नोडनीशया शोचति गुहामानः
नश्नन्नन्यो अभिचाक्रशीति तमाने वृक्षो पुरुषो निमग्नोडनीशया शोचति
मुगधमानः। जुष्टं यदा चश्यत्यन्यमीशमस्य महिमानमिति वीतशोकः ॥"

ये दोनों मंत्र मुण्डकोपनिषद के तृतीय मुण्डक के प्रथम खण्ड के पहले दो मंत्र हैं। यही दोनों मंत्र श्वतोश्वतरोपनिषद के चौथे अध्यायों के छटे और सातवें मंत्र हैं।

इनका अर्थ इस प्रकार है : "सदा एक साथ रहने वाले, परस्पर सखा भाव रखने वाले दो पक्षी (जीवात्मा एवं परमात्मा) एक ही वृक्ष (शरीर) का आश्रय लेकर रहते हैं। उन दोनो में से एक (जीतात्मा) तो उस वृक्ष के फलों कर्मफलों) को स्वाद ले-लेकर खाता है (किन्तु)

दूसरा (ईश्वर) उनका उपभोग न करता हुआ केवल देखता रहता है। (पूर्वोक्त शरीर रुप) एक ही वृक्ष पर रहने वाला जीवात्मा गहरी आसक्ति में डूबा हुआ है, (अतः) असमर्थ होने के कारण (दीनतापूर्वक) मोहित हुआ शोक करता रहता है। जब भक्तों द्वारा नित्य सेवित अपने से भिन्न परमेश्वर (और) उनकी आश्चर्यमयी महिमा को प्रत्यक्ष देख लेता है तब सर्वथा शोकरहित (हो जाता है)।

जीव के शोक का मुख्य कारण उसकी कर्मफल में आसक्ति ही है जिसके कारण वह अपने सच्चे स्वरुप को भूला हुआ है। परमात्मा उसका अपना ही अभिन्न रुप, अपना ही सखा उसके साथ सदैव विराज रहा हैं। जब वह अपने जीव भाव से भिन्न अपनी परमात्म महिमा को या परमात्मा को प्रत्यक्ष देख लेता है या आत्म भाव से प्राप्त कर लेता है तब वह अपने परम पद को प्राप्त कर शोक रहित हो जाता है।

38.8 परब्रह्म परमात्मा जब अपने पूर्णावतार में कृष्ण रुप में अवतरित हुए तो अर्जुन उनके सबसे प्रिय थे, उनके सखा थे। उनके आपस के सारे व्यवहार दो मित्रों के समान थे। जब युद्ध के आरम्भ में अजुर्न को मोह हुआ तो भगवान कृष्ण ने उनको गीता का शाश्वत उपदेश दिया था। गीता के ग्यारहवें अध्याय में जब अर्जुन ने भगवान के विश्व रुप को देखा तो उस समय वे उस अद्भुत दिव्य भगवत रुप को देखकर भयभीत और अविभूत हो गये। अहो इन परमात्मा को अपना सखा मानकर मैं व्यवहार में इनके कितने अपराध करता रहा हूँ। उस समय भगवान की वंदना करते हुए अर्जुन ने उनसे क्षमा मांगी तो वह क्षमा उन्होनें स्वामी-सेवक भाव से नहीं वरन् सखा भाव से मांगी। पिता-पुत्र भाव से मांगी, प्रिया-प्रीतम भाव से ही मांगी थी। अर्जुन कहते हैं :

"पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम ॥" 11/44 अर्थात

हे देव! पिता जैसे पुत्र के, सखा जैसे सखा के और पति जैसे प्रियतमा पत्नी के अपराध सहन करते है वैसे ही आप भी मेरे अपराध को सहन करने योग्य हैं। सो परमात्मा की सखा या मित्र भाव से उपासना गुरु ग्रंथ साहिबजी में भी आत्मा और परमात्मा की अभिन्नता के ज्ञान पर ही आधारित है।

38.9 वैसे अर्जुन की कथा के प्रसंग में यह बतलाना सामयिक होगा कि द्रोपदी की समस्त उपासना सखा भाव की ही थी। और वह प्रत्यक्ष में भी भगवान कृष्ण को अपनी भक्तिवश "सखा" कहकर ही सम्बोधित करती थी। जिस समय कौरव-पाण्डवों के घोर युद्ध का अवसर निकट आ गया था, और शान्ति के अन्तिम प्रयास के लिए स्वयं भगवान कृष्ण दूत बनकर कौरवों के पास जा रहे थे। इस समय पाण्डवों की सभा में उन्होनें सबके विचार अलग-अलग जानने चाहे। उस समय द्रोपदी ने अपना मत व्यक्त करते हुए भरी सभा में कृष्ण को इस प्रकार सम्बोधित किया था :

"जनार्दन! आपपर अत्यन्त विश्वास होने के कारण मैं अपनी कही हुई बात को पुनः दुहराती हूँ। केशव! इस समय पृथ्वी पर मेरे समान कौन सी स्त्री होगी। मैं महाराज द्रुपद की पुत्री हूँ। यज्ञवेदी के मध्यभाग से मेरा जन्म हुआ है। श्री कृष्ण! मैं वीर धृष्टद्युम्न की बहिन और आपकी प्रिय सखी हूँ।"

"तव कृष्ण प्रिया सखी" द्रोपदी कहती है कि हे कृष्ण मैं तुम्हारी प्रिय सखी हूँ।

39.0 हमने पहले कुरान शरीफ़ में देखा कि इस्लाम में अल्लाह और मनुष्य का संबंध मात्र स्वामी और सेवक तक ही सीमित है। जबकि ग्रंथ साहिबजी में यह संबंध माता-पिता, बन्धु, पुत्र, मित्र और प्रिया-प्रीतम भाव का है। प्रिया-प्रीतम भाव चूँकि गुरु ग्रंथ साहिबजी में उपासना का एक बहुत बड़ा आधार है हम इसकी विस्तार पूर्वक चर्चा अगले अध्याय में अलग से करेगें। यहाँ ग्रंथ साहिबजी में वर्णित माता-पिता, सखा आदि भाव की उपासना का महत्व सही रुप में समझने के लिये हमने विस्तार से इन उपासनाओं के पीछे जो शास्त्रीय दृष्टि है उसकी चर्चा की।

39.1 आगे ग्रंथ साहिबजी में आए इन उपासनाओं संबंधी शब्दों को देने के पूर्व इस विषय को और भी सहज रुप से ग्रहण करने में सहायक लक्षमन और हनुमान की आपसी बातचीत की एक गाथा बतलाना चाहेगें। एक बार लक्ष्मण जी ने हनुमान जी से पूछा कि पवनपुत्र आप कौन हैं? हनुमान जी ने उत्तर दिया कि (1) शरीर की दृष्टि से तो मैं आपका सेवक हूँ (2) जीव की दृष्टि स मैं आपका सखा हूँ और अंश हूँ (3) ब्रह्म दृष्टि से जो आप हैं सो मैं हूँ इस्लाम में अल्लाह और मनुष्य का संबंध शरीर की दृष्टि तक ही सीमित है जहां स्वामी-सेवक भाव ही होता है। इस्लाम का मुख्य लक्ष्य भी जैसा कि हम विस्तार से देख आये हैं, इस शरीर के व्दारा ही इस लोक और परलोक के भोग प्राप्त करना है। स्वाभाविक है कि इस विषय में कुरान शरीफ़ और ग्रंथ साहिबजी के विचारों में जमीन-आसमान का अन्तर हो।

39.2 नीचे हम ग्रंथ साहिबजी में माता-पिता, बन्धु और सखा भाव से की गई परमात्म् उपासना से संबंधित कुछ शब्द दे रहे हैं।

(1) **"तेरै भरोखै पिआरे मै लाड़ लड़ाइआ ॥ भूलहि चूकहि बारिक तूं हरि पिता माइआ ॥** 51 म.5

"पिता हउ जानउ नाही तेरी कवन जुगता" ॥ 51 म.5

हे मेरे प्यारे प्रभु मैं तेरे भरोसे ही तेरे से लौ लगाता हूँ। मैं बालक हाने के कारण भूल चूक करता हूँ फिर भी हे परमात्मान्, हे हरि, मैं तेरा पुत्र हूँ और तुम मेरे पिता और माता हो, अर्थात माता-पिता के समान क्षमा करने वाले हो। और बालक होने के कारण मैं नही जानता कि मैं तुम्हें किस युक्ति से प्रसन्न करुं।

(2) **"हम बारिक दीन करहु प्रतिपाला ॥ मेरा मात पिता गुरु सतिगुरु पूरा ॥"** 94 म.4

"मेरा मित्रु सखा सो प्रीतमु भाई ॥" 95 म.4 अर्थात

वह परमात्मा ही मेरा माता, पिता, गुरु, मित्र, मेरा सखा और मेरा प्रिय भाई है।

(3) **"अपुने जीउ जंत प्रति पारे ॥ जिउ बारिक माता संभारे ॥"**

(4) **"तूं मेरा मीतु, साजनु, मेरा सुआमी, तुधु बिनु अवरु न जानणिआ ॥"** 131 म.5

(5) **"तू गुरु पिता तूं है माता तू गुरु बंधपु मेरा सखा सहाइ ॥"** 167 म.4

(6) **"तूं मेरा सखा तूं ही मेरा मीतु ॥ तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥"** (181 म.5)

(7) **"सुंदर सुघड़ चतुर जीआ दाता ॥ भाई पूतु पिता प्रभु माता ॥"** (240 म 5)

इस सबद में उस सुंदर और जीवन दाता प्रभु को भाई, पिता, माता और सखा के साथ, पुत्र रुप में भी सम्बोधित किया है। माता-पिता का अपने पुत्र पर असीम स्नेह और प्रेम होता है। यहां आक्षात परमात्मा पर भक्त पुत्र भाव से अपना चरम प्रेम भाव व्यक्त कर रहा है।

(8) नीचे दीये सबद में तो गुरु तेगबहादुर सब प्राणों के आधार परमात्मा को बल बुद्धि और धन मानते हुए उन्हें अपने सारे परिवार के रुप में सम्बोधित कर रहे हैं :

"प्रभजी तू मेरे प्राण अधारै ॥ ....तू मेरी ओट बल बुद्धि धनु तुमहि मेरे परवारै।" (820 म 9)

(9) **"हम बारिक तुम पिता हमारे तुम मुखि देवहु खीरा ॥**
हम खेल सभि लाड़ लड़ा वह तुम सद गुणी गहीरा ॥" (884 म 5)

अर्थात हे परमात्मन् मैं बालक हूँ और तुम मेरे पिता हो। तुम मेरे मुख में खीर देते हो यानि तुम मुझे हर प्रकार के सुंदर भोग देते हो। मैं खेलता हूँ और तुम मुझे लाड़ करते हो। तुम सदैव गुणों के समुद्र हो। बाल भाव से परमात्मा में सहज भक्ति का यह कितना सुन्दर चित्रण है।

(10) **"मित्र पिआरा नानक जी मै छड़ि गवाइआ रंगि कसुंभै भुली ॥**
तउ सजण की मैं कीम न पउदी हउ तुधु बिनु अढु न लहदी ॥ (963 म 5)

गुरु अर्जन देव जी महाराज कहते हैं कि कसुंभे के समान मिथ्या माया के रंगो मे पडकर मैनें अपने प्रिय मित्र प्रभु को खो दिया। हे मेरे मित्र मैं तुम्हारा मोल नहीं डाल सकता और तुम्हारे बिना मेरा मूल्य दमड़ी भी नहीं रह जाता।

(11) **"मीतु हमारा कोई सुआमी ॥ धनंतरि अंतरजामी ॥"** (107 म.5)

(12) **"हरि जीउ तू सभना का मीतु है सभि जाणाहे आपै ॥"** (1097 म.5)

हे परमात्मा तुम सारे प्राणियों के मित्र हो अर्थात समस्त जीव धारियों का कल्याण करने वाले हो। और सारे जीव भी तुमको अपना समझते हैं।

कुरान शरीफ़ में अल्लाह को केवल ईमानवाले के परवरदीगार के रूप मे दर्शाया गया है। काफ़िरों का तो वह कट्टर शत्रु है। इस प्रकार की मान्यता के विपरीत ग्रंथ साहिबजी ने परमात्मा को प्राणी मात्र का मित्र या हितैषी दिखलाया है। आखिर वह सबका ही अंतरयामी और घट-घट वासी जो ठहरा। "सुहृर्द सर्वभूताना" सब प्राणियों का स्वार्थ रहित प्रेमी और कल्याणकारी, यह परमात्मा का लक्षण गीता अपने पांचवे अध्याय के 29वें श्लोक में बतलाती है।

(13) **"हरि जी माता हरि जी पिता हरि जीउ प्रतिपालक ॥**
हरि जी मेरी सारकरे हम हरि के बालक ॥ (1101 म 5)

अर्थात परमात्मा ही मेरी माता है, वह ही मेरे पिता और मेरे प्रतिपालक हैं। हरि ही मेरी देखभाल रखता है, और हम उसी हरि की संतान हैं।

(14) **"तू मेरा मीत सखा हरि प्रान ॥"** (216 म.5)

(15) **"मात पिता भाई सुत बंधुय जीअ प्राण मनि भाणा राम ॥"** (780 म 4)

(16) "मीतु साजनु सखा प्रभु एक॥ नाम सुआमी का नानक टेक॥" 197 म.3

(17) "हमरे पिता गोपाल दइआल॥ जिउ राखै मिहतारी बारिक कउ तैसे ही प्रभ पाल॥" (680)

जिस प्रकार माँ अपने बालक का पालन पोषण करती है, रक्षा करती है वैसे प्रभु मेरा पालन करते हैं।

39 3 ऊपर दिये सबदों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ साहिबजी में परमात्मा की उपासना माँ के रुप में, पिता के रूप में और पुत्र, बन्धु तथा सखा के रुप में भी अपनी-अपनी भावना के अनुसार निहित है। इन सभी उपासनाओं में दास की भाँति कोई हीन भावना का स्थान नहीं है। इन सभी उपासनाओं में समता का ही आधार है अंश-अंशी का भाव है। इन सभी उपासनाओं में परमात्मा के साथ एक होने की टीहन है। इन्हीं उपासनाओं का सहारा लेता हुआ साधक परमात्मा को अपने आत्मरुप में ही प्राप्त करता है, जो कि ग्रंथ साहिबजी की साधना पद्धति में जीव का मुख्य उद्देश्य है। यहाँ हम पुनरावृत्ति के दोष को स्वीकार करते हुए फिर कहते हैं कि यह उपासना विधि कुरान वर्णित उपासना विधि से बिलकुल भिन्न और विपरीत है।

❑

ग्रंथ साहिबजी "प्रिया प्रीतम भाव"

39.4 प्रिया-प्रीतम भाव की विस्तार से चर्चा बिना ग्रंथ साहिबजी की उपासना विधि को समग्र रुप में नहीं समझा जा सकता। ग्रंथ साहिबजी ज्ञान, भक्ति और प्रेम का निर्मल सागर है। बिना विशुद्ध प्रेम के परमात्म प्राप्ति सम्भव नहीं है। और ग्रंथ साहिबजी का प्रेम भाव प्रिया-प्रीतम भाव की पूरी झांकी देखे बिना समझ में नहीं आ सकता। इस प्रिया-प्रीतम भाव की कुरान शरीफ में कोई कल्पना नहीं है।

39.5 निर्गुन ब्रह्म में तो किसी भी प्रकार की कोई सृष्टि की कल्पना ही नहीं है। वह तो उस पारब्रह्म परमात्मा का माया और प्रकृति से अत्यन्त परे अपना सहज सदचिदानन्दमय स्वरुप है। उस परमात्मा की इच्छानुसार उसके एक अंशमात्र में, एक पाद में ही अनन्त ब्रह्माण्डों के सृजन स्थिति और लय होते रहते हैं। इस सगुन सृष्टि में वह परमात्मा ही सब कुछ बना हुआ अपनी आनन्दमयी लीला कर रहा है, अपना खेल खेल रहा है, ऐसी ग्रंथ साहिबजी की मान्यता है। इस भाव की चर्चा हम पिछले अध्यायों में यथा स्थान कर आये हैं।

39.6 माया के बन्धन में बँधा जीव रुप में भी वही ब्रह्म है और माया को अपने अधीन रखकर उसके अधिपति ईश्वर के रुप में भी वही है। इन दोनों के बिलगाव के मूल में जीव की जड़ प्रकृति के अल्प से भोगों में आनन्द मानकर उसी में रचा-पचा रहना है। इस आसक्ति के कारण वह अपने असली स्वरूप को भूल जाने के कारण अपने सहज परमानंद स्वरूप से वंचित सा रहता है। परन्तु परमात्मा का ही मूलतः स्वरूप होने के कारण उसमें जो परमानन्द या आत्म सुख सुप्त सा पड़ा रहता है वह जब सत्संग, गुरु कृपा और भगवत् कृपा से जाग्रत हो जाता है, तब वह जीव परमानन्द की प्यास से, उस अपने सच्चे परमात्मरुप से एक क्षण भी विलग नहीं रहना चाहता। जीव की यह परमात्म मिलन की उत्कट अभिलाशा ही ग्रंथ साहिबजी का प्रिया-प्रीतम भाव है।

सांसारिक सुखों में वेदों ने स्त्री पुरुष के प्रेमपूर्ण सहवास सुख को सबसे बड़ा सुख कहा है। और ऐसा ही हम समस्त चेतनायुक्त सृष्टि में प्रत्यक्ष देखते भी हैं। पति पत्नि का सात्विक प्रेम भाव सिक्ख गुरुओं ने और अन्य संतों ने अपने परमात्म प्रेम के प्रतीक रुप मे लिया है। और यही भगवत प्रेम भाव गुरुओं की वाणी में और अन्य संतों की वाणी में किस प्रकार ग्रंथ साहिबजी में उतरा है इसी का दिग्दर्शन हम इस अध्याय में कराने का प्रयत्न करेगें।

39.7 प्रिय-प्रीतम भाव से संबधित शब्दों को देने से पूर्व हम सिक्खों के दसवें गुरु स्वनाम धन्य गुरु गोविन्द सिंह जी की उत्कट प्रेमा भक्ति की कुछ रचनाऐं उनके "दसम ग्रंथ साहिबजी" से देना चाहेगें। लोग उनके एक महान वीर-वेत्ता रुप से और खालसा के जन्म दाता रुप से ही परिचित हैं। पर यह तो उनका अल्प सा परिचय है। उनका वास्तविक स्वरुप

तो एक ब्रह्मवेता और शास्त्रवेता का है एक महान प्रेमी भक्त और उच्चकोटि के कवि का है। उन्होनें तो अपने "दसम ग्रंथ साहिबजी" के आरम्भ में ही शपथ पूर्वक घोषणा कर दी थी कि बिना प्रेम के परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती :

"साचु कहौ सुन लेहु सभै जिन प्रेमु किओ तिन ही प्रभु पायों।"

(उतार खासे दसखत का पातिशाही 90) 9/29

"स्याम भनै इह संत सभै बिन प्रेम कहूं बिजनाथ रिझाए।"
भाखत है कवि संत सुनो जिह प्रेम किए तिन श्रीपति पाए।

(कृष्णावतार पद संख्या 2486)

और गुरु महाराज जी के भगवत प्रेम का प्याला उनकी "कृष्णावतार" रचना मे छलक-छलक कर प्रेम की सरिता भक्तों के लिये बहाता रहा है। भगवान कृष्ण की रास लीला पर गुरुमहाराज जी ने विस्तार से लिखा है। गोपियों के साथ रास लीला में मग्न श्री कृष्ण के परमात्म रुप का स्मरण करवाते हुए गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज कहते हैं।

(1) **"कुपि कै मधिकैटभ तान मरे दैत मरयो अपने जिन हाथा।**
जाहि भभीछन राज दयो रिप रावन काट दए जिह माथा॥
सो तिह की तिहु लोगन मदृ कहै कवि स्याम चलै जैसे गाथा।
सो ब्रिजभूम बिखै रस के हित खेलत है फुन गोपन साथा।"

(कृष्णावतार रासमण्डल 464)

गुरु जी महाराज ने "श्याम" उपनाम से अपनी काव्य रचनाऐं की हैं। वे कहते हैं जिस परमात्मा ने कुपित होकर मधु कैटभ और मुर नामक दैत्यों और राक्षस का वध किया जिसने रावण के दसों सिर काटकर विभिषण को राज्य दिया, जिनकी विजय गाथा की चर्चा तीनों लोको में चल रही है वही आज ब्रजभूमि में गोपियों के साथ रसमग्न होकर रास कीडा कर रहे हैं।

(2) भगवान की वंशी की दिव्य धुन सुनकर चेतन जड़ हो गये और जड़ मानो चेतन हो गये।

रीझ रही ब्रिज की सब भामन जउ मुरली नंदलाल बजाई।
रीझ रहे बन के खग अउ म्रिग रीझ रहे धुन जा सुन पाई।
चित्र की होइ गई प्रतिमा सम स्याम की ओर रही लिब आई।
नीर बहै नही कान त्रिया सुन कै तहि पउन रह्यो उरझाई॥ (638)

(कृष्णावतार रास मंडल)

अर्थात कृष्ण की मुरली बजते ही गोपियां मन की मन प्रसन्न हो उठीं। और उसकी धुन पर ब्रिजकी नारियां रीझ रीझ कर मोहित हो रही हैं। वन के पक्षी और पशु भी उस दिव्य मोहिनी धुन पर रीझ रहे हैं। गोपियां प्रेमावेश में नृत्य करना भूल कर चित्र के समन स्थिर हो गई हैं। जमुना जल ने भी बहना बंद कर दिया और पवन भी मुरली धुन में उलझ रुक गया।

(3) मथुरा में कंस के बध के बाद भगवान कृष्ण अपने भक्त और सखा ऊधव जी को गोपियों को देने के लिये ब्रिज भेजते हैं ऊधव को अपने ज्ञान का बड़ा गुमान था और वे विरहाकुल गोपियों को अपना ज्ञान देकर समझाने को बड़े उत्सुक थे ऊधव

निर्गुन के उपासक थे और गोपियां प्रत्यक्ष अनुभूत भगवान के सगुन रुप की। गुरु गोविन्द सिंह जी ने 92 सवैयों में ऊधव-गोपी संवाद का प्रसंग प्रस्तुत किया है। गोपियों के उत्कट और अद्भुद भगवत् प्रेम को देखकर ऊधव चकित रह गये। गोपियों ने कहा कि ऊधव तुम्हारे निर्गुन ज्ञान को तो हम जानती हैं पर क्या तुमने भगवत प्रेम के सगुन पक्ष को भी समझा है। यहाँ गुरु महाराज जी ने राधा जी के मुख से 15 सवैयों में प्रेमाभक्ति का अभूतपूर्व चित्रण किया है। गोपियों के मुख से भगवत प्रेम की महिमा समझकर और उसका प्रत्यक्ष दर्शन कर ऊधव जी किस प्रकार अपने मात्र निर्गुन ज्ञान को भूल कर प्रेमसागर में निमग्न हो गये वह हम गुरु महाराज जी की वाणी में ही देखें।

"जब ऊधव सो इह भांति कह्यो तब ऊधव को मन प्रेम भरयो है।
अउर गई सुध भूल सभै मन से सब ग्यान हुतो सो टूरयो है।
सौ मिलिकै संग गवारन के अति प्रीति की बात के संग दूरयो है।
ग्यान के डार मनो कपरे हित की सरिता महि कूद परयो है॥ 930

(कृष्णावतार गोपी ऊधव संवादे बिरह नाटक कथन)

अर्थात गोपियों के प्रेम बचन सुनकर ऊधव के हृदय में भगवत प्रेम उमड़ पड़ा। उनके मन में ज्ञान का जो मिथ्याभिमान था वह सब अपनी तर्कों के साथ बिसर गया। ऊधव अब गोपियों के साथ भगवत प्रेम की चर्चा में इस प्रकार डुबकी लगाने लगे, जैसे कोई अपने वस्त्र उतारकर नदी में स्नान के लिये कूद पड़ता हो। सो यहाँ गुरु महाराज जी कहते हैं कि ऊधव जी अपने ऊपर लदे ज्ञान के ढेरों वस्त्र फेंक कर मानों भगवत प्रेम की नदी में कूद पड़े हो।

(4) वापस मथुरा जाते हुए ऊधव जब राधा जी के दर्शन करते हैं तो राधा जी की उस समय क्या प्रेमादशा थी इसका वर्णन गुरु जी के सवैये में इस प्रकार आता है :

ब्रिखभान सुता हति प्रेम छकी मन मैं जदुबीर को ध्यान लगै के।
रोवत भी अति ही दुख सो संग काजर नीर गिर्यो ढरकै कै।
ता छवि को जसु उच्च महा कवि स्याम कह्यो मुख ते उमगै कै।
चंदहै को जु कलंक हुतो मनु नैननि पैंड चल्यो निचुरै कै॥ 940

ऊधव जी देखते हैं कि कृष्ण प्रेम में छकी राधा जी उनके ध्यान में निमग्न है, बिरह दुख में उनके नयनों से काजल मिश्रित आसूं ढरक रहे हैं। इस अवभुत छवि को देखकर "स्याम" महा कवि यानि गुरु गोविन्द सिंह जी कहते हैं कि मेरे मन में यह उपमा उपजी है कि मानों चन्द्रमा का कलंक आँखों की राह से निचुड़ कर बाहर वह चला हो। यहाँ राधा जी का मुख ही मानों चन्द्रमा हैं और आँखों का काजल चन्द्रमा में दिखलाई देने वाली कलंक रुपी कालिमा। इसका भावार्थ यह भी है कि भगवत् प्रेम जाग्रत होने पर मनुष्य के हृदय में स्थित उसे भरमाने वाली सारी दूषित कामनाऐं, वासनाऐं और पाप आदि नष्ट हो जाते हैं।

(5) अन्त में गुरु गोविन्द सिंह जी के गहन प्रेमाभाव से संबंधी उनका एक पद दे रहे है जिसमें गुरु महाराज जी ने प्रेम की डोर से भगवान के निर्गुन और सगुन दोनों रुपों को एक साथ ही बाध दिया है कस वध के बाद भगवान कृष्ण एक दिन ऊधव जी को लेकर कुब्जा के घर जाते हैं कुब्जा भगवान को प्रणाम कर उनको एक सुन्दर पलग पर बैठाती

है और ऊधव जी को बैठने के लिये एक रत्नखचित आसन देती हैं। पर ऊधव जी आसन पर न बैठकर धरती ही पर बैठ जाते हैं और भगवान के चरन अपनी गोद में रखकर उन्हें सहलाने लगते हैं। प्रेम की इस दिव्य झांसकी को देखकर गुरु महाराज जी झूम कर गा उठते हैं

"जे पदपकंज शेश महेश सुरेश दिनेश निसेश न पाए।
जे पद पंकज बेद पुरान बखान प्रमान कै ग्यानन गाए।
जे पद पंकज सिद्ध समाध में साधत हैं मुनि मौन लगाए।
ते पद पंकज केसव के अब ऊधव लैकर मै सहराए ॥ (990)

अहो ऊधव के भाग्य। भगवान के जिन चरण कमलों को शेषनाग, शिव जी, इन्द्र, सूर्य और चन्द्रमा नहीं पा सके, जिन चरण कमलों का सप्रमाण वेद, कुरान आदि बर्णन करते है। जिन चरण कमलों का सिद्धगन और मुनिजन अपनी निर्गुन समाधि में ध्यान करते है, भगवान के उन्हीं चरण कमलों को ऊधव आज अपनी गोद में रख कर सहला रहे हैं।

संत सहारत स्याम के पाइ महा बिगस्यो मन भीतर सोऊ।
जोगन के जोऊ ध्यान के बीच न आवत है अति व्याकल होऊ।
जा ब्रह्मादिक शेष सुरादिक खोजत अंत न पावत कोउ।
सो पद कंजन की सम तुल्लि पलोटत ऊधव ले कर दोऊ ॥ (991)

पहुचें हुए संतों के हृदय में ही भगवान के चरण कमलों का ध्यान सम्भव नहीं है। जिन चरणों का ध्यान न कर पाने के कारण बडे-बड़े योगी भी व्याकुल हो जाते हैं, जिन चरणो का रहस्य स्वयं ब्रहमाजी और देवताओं के राजा इन्द्र और शेषनाग भी नहीं समझ पाते हैं, भगवान के उन्हीं चरण कमलों को आज कुब्जा के घर में ऊधवजी अपनी हाथों में लेकर दबा रहे है।

कृष्णावतार में गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने रास लीला, गोपी प्रेम आदि संबधी लगभग 500 पद रचे हैं जिनमें से कि हमने 6 पद ऊपर प्रस्तुत किये। इन पदों से पाठक सिक्ख गुरुओं की प्रेमाभक्ति की पराकाष्ठा का अनुमान लगा सकते हैं।

39 8 अब हम ग्रंथ साहिबजी में वर्णित सिक्ख गुरुओं और अन्य संतों जिनमें कबीर, नामदेव जी, रैदास, फरीदा, आदि की वाणियों में प्रिया-प्रीतम संबंधी भाव की विस्तृत झाकी प्रस्तुत करते हैं। इनसे पाठकगण स्पष्टतम रुप से समझ जायेगें कि ग्रंथ साहिबजी में और कुरान शरीफ़ में कितना अंतर है और वे एक दूसरे से कितने भिन्न हैं।

39 9 प्रिया-प्रीतम भाव संबंधी शब्दों जो नारी सूचक शब्द जैसे बहुरिया, सुहागिन, दुहागिन, प्यारी, गुणवंती, सुंदरी, आदि आये हैं, वे सब जीव भाव के प्रतीक हैं। और जो पुरुष प्रतीक शब्द जैसे पिव, प्रीतम, सजन, यार, खसम, प्यारा, पति, कंत आदि वे सब परमात्मा के प्रतीक हैं। यह मूल बात ध्यान में रखने पर ही हम प्रिया-प्रीतम भाव से संबंधित शब्दों का सही रुप में भावार्थ ग्रहण कर सकेगें। वैसे स्थान-स्थान पर पति आदि शब्दों के बजाय सीधे हरि, प्रभु, या भगवान कृष्ण के विभिन्न नामों का भी प्रयोग हुआ है।

40.0 प्रिया-प्रीतम भाव का मुख्य उद्देश्य परमात्म प्राप्ति ही है। क्योंकि यह मानुष देह तो उस गोविन्द से मिलने के लिये ही मिली हैं। प्रभु मिलन के इस श्रेय से बढकर अन्य कोई भी काम नहीं है काम तो संतों की संगति और नाम भजन ही आयेगा

(1) "भई परापति मानुख देहुरिया ॥ गोविन्द मिलण ही इह तेरी बरीआ।
अवरि काज तेरे कितै न काम ॥ मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥ (12)

(2) "ध्रिग जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाई ॥.... बिनु सबदै सुखु न थीए
पिर बिनु दूखु न जाई ॥ (18 म 1)

गुरु नानक जी कहते हैं कि उस नारी के जीवन को धिक्कार है, जिसका पति के साथ प्यार नहीं। अरे बिना नाम जप के सुख नहीं होगा और विना प्रीतम के पाए दुख नहीं जा सकता।

(3) "सदा अंनदि रहै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥" (31 म 3)

(4) "मनमुख करम कमावणै जिउ दोहागणि तनि सींगारु ॥
सेजै कंत न आवई नित-नित होइ खुआरु ॥" (31 म 3)

मन के अधीन होकर कर्म करने वाले जीव की गति उस दुहागनि या भाग्यहीन नारी के शृंगार के समान व्यर्थ है जिसका पति उसकी शयूया पर नही आता ओर इस कारण जो नित्य दुखी रहती है।

(5) "गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उरधारि ॥" (31 म 3)

और जिसने सतगुरु का उपदेश धारण कर मन को वश में कर लिया वही सुहागिल भाग्यवंती नारी है क्योंकि वही सेज पर अपने पति के साथ बिहार करती है अर्थात मन को बसनें करके गुरु निर्देशित मार्ग पर चलने वाला जीव ही परमात्मा के साथ संयुक्त हो परमानन्दमय हो जाता है।

(6) "नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥" (157 म 1)
"मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुख काटै कोइ ॥
मिलि प्रीतम दुखु कटिया सबदि मिलावा होइ ॥" (37 म 3)

40 1 (1) सुख प्राप्ति के लिये बहुत से मित्र बना-बना कर मैं थक चुकी पानी सब प्रकार के अनुष्ठान या देव शक्तियों की उपासना कर चुकी पर कोई मेरे इस जन्म मरण रुपी दुखद चक्र का अन्त न कर सका। सब मुझे सतगुरु से ज्ञान मिला तभी मैनें प्रियतम प्रभु को पाया और मेरा दुख कट गया।

(2) "अगिआन मति अंधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाइ ॥ आवहु
मिलहु सहेलीहो मैं पिरु देहु मिलाई ॥ (38 म 3)
जिनी सखी कंत पछाणिआ हउ तिन कै लागउ पाई ॥ तिन ही जैसी
थी रहा सतसंगति मेलि मिलाइ ॥ (37 म.3)

(3) मेरे प्रीतम हउ जीवा नामु धिआई ॥ बिनु नावै जीवन थीए मेरे सतिगुरु
नाम द्रिड़ाइ ॥ (40 म.4)

(4) "नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥ सोभा सुरति सुहावणी साचै
प्रेमि अपार ॥" (54 म 1)

गुरु नानक देव जी कहते वही स्त्री शोभायमान है जिसके मस्तक पर प्रभु प्रेम की माँग

भरी हो। उसकी शोभा यह है कि उसका प्रियतम से ही अपार प्रेम लगा है। और सच्चे गुय की कृपा से प्रीतम के अतिरिक्त अन्य पुरुष को नहीं जानती

"बिनु पिर पुरखु न जाणई सचि गुर कै हेति पिआरि ॥" (54 म 1)

(5) "सेजे कंत महेलडी सूती बूझ न पाइ ॥ हउ सूती पिरू जागणा किस कउ पूछउ जाइ ॥" (54 म 1)

कितने आश्चर्य की बात है कि प्रियतम सेज पर ही सो रहा है फिर भी प्रिया उसको नहीं पाती है। प्रिया कहती है कि अहो मेरा प्रीतम तो जाग रहा है मै ही सो रही हूँ। ऐसी स्थिति में प्रियतम कैसे मिल सकते हैं। हृदय में ही जीव और परमात्मा का साथ-साथ वास है। पर माया से मोहित जीव अपने सच्चे स्वरुप को भूल मानो सो रहा है और इस प्रकार परमात्मु सुख से वंचित है।

(6) "आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि ॥" (90 म 4)

(7) "सा गुणवंती सा बड़भागणि ॥ पुत्रवंती सीलवंति सोहागणि ॥

जो नारी अपने प्रीयमत की प्यारी है वही गुणवंती है और वही भाग्यशाली है। वही पुत्रवती, शीलवती और सुहागिन है वही रूपवति, सुधड़ और विलक्षण, प्रतिभाशालिनी है।

"सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥
इछ पुनी बड़ भागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥.....
मिलि सहीआ मंगनु गावही गीत गोविदं अलाइ ॥" (136 म 5)

अहो हरि, परमात्मा, जैसा पति वह पाकर मेरी सेज सुहावनी हो गई, अब दुखों का मेरे हृदय में कोई स्थान नहीं रहा है, अब मेरी समस्त कामना यें पूर्ण हो गई। हे सखियों सब मिलकर मंगलगीत गाओ गोविनद के गुणों का गान करो।

40 2 गुरु रान दास जी के शब्दों में प्रिया-प्रीतम भाव गोडी राग में किस प्रकार पुलकित हुआ है इसकी झलकी नीचे देखकर हम भी पुलकित हो उठेगें :

(1) "आउ सखी गुण कामण करीहा जीउ ॥ मिलि संत जना रंगु माणिह रलीआ जीउ ॥" (173 म 4)

ऐ सखियों आओ पति को पश में करने के लिए टोना करें। हे हरि के प्यारे आओ तो संतजनों से मिल कर आनन्द की रंग रलियां मनाये।

(2) "वसु मेरे पिआरिया वसु मेरे गोविन्दा ॥
..... मन माही मन माही मेरे गोविन्दा हरि रंगि रता मन माही जीउ ॥
.... नैणी मेरे पिआरिया नैणी मेरे गोविन्दा किनै हरि प्रभु डिढडा नैणी जीउ ॥
मेरा मनु तनु बहुत वैरागिया मेरे गोविन्दा हरि बाझहु धन कुमलैणी जीउ ॥" (173 म.4)

हे मेरे प्रीतम हरि तू मेरे (तन में) बस, हे गोविन्द मेरी वाणी में बस मेरे मन में आकर बस हे मेरे भाई जिन सुहागिनों को हरि नाम मिला है उनके मन में रात दिम आनन्द और हर्ष होता है हे मेरे गोविन्द तू मेरे मन में है हा मन में ही है इसी लिए मेरा मन तेरे प्रेम

रग में अनुरत है। हे मेरे प्यारे (मुझे बताओ) किसी ने मेरे हरि को, मेरे गोविन्द को अपने नेत्रो (हां) नेत्रों से देखा है। हे मेरे गोविन्द, मेरे प्रीतम मेरा मन और तन बिरह में बैरागी हो गये है। हे गोविन्द मैं तेरे बिना कुम्हला रही हूं।

(3) "हउ रहि न सकउ बिनु देखे मेरे प्रीतम मैं अंतरि बिरहु हरि लाइआ जीउ ॥
हरि राइआ मेरा सजण पिआरा गुरु मेले मेरा मनु जीवाइआ जीउ ॥
मेरे मनि तनि आसा पूरीआ मेरे गोविन्दा हरि मिलिआ माने वाधाईआ जीउ ॥" (174 म.4)

मैं अपने प्रियतम हरि को देखे बिना नहीं रह सकती। हरि राजा ही मेरा प्रिय है उसी के बिरह का प्रेम (तीर) मेरे लगा है। मेरे गुरु ने मुझे उससे मिलाकर मुझे जीवनदान दिया, और मेरे मन-तन की सभी आशाऐं पूरी कर दीं। हरि मिलन के कारण मेरे मन में बधाइयां बज रही है।

(4) "हरि आये कान्हु उपाइदा मेरे गोविन्दा हरि आये गोपी खोजी जीउ ॥
हरि आपे सभ घट भोगदा मेरे गोविन्दा आये रसिआ भोगी जीउ ॥"
(174 म 4)

हे परमात्मन तू स्वयं ही कृष्ण रुप होकर प्रकट होता है, तू स्वयं ही गोपी रूप होकर छुपता है और स्वयं ही गोपी को ढूढंता है। हे गोविन्द कि तू स्वयं ही सभी शरीरों को भोगता है तू स्वयं ही रसिक हो और स्वयं ही भोगी हो।

40 3 किस प्रकार अपने प्रियतम के दर्शन की प्यासी बिरहन उसे देश-परदेश में ढूढंती फिर रही है इसका टीहन भरा वर्णन ग्रंथ साहिबजी में इस प्रकार कर रहे हैं :

"कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥
रुप हीन बुधि बल हीनी ॥ मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥
नाहिन दखु न जोबन माती ॥ मोहि अनाथ की करहु समाई ॥
खोजत खोजत भई वैरागनि ॥ प्रभु दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥
दीन दइआल कृपाल प्रभु नानक साधसंगि मेरी जलन बुझाई ॥" (204 म 5)

ना रुप है, न बुद्धि और बल है, न धन ही है और न मतवाला यौवन ही। कोई है जो मुझ भटकती हुई वैरागनि को मेरे प्रानपति से मिला दे। नानक जी कहते संतों के सत्संग से अब मेरी जन्म-जन्म की प्यास प्रभु मिलन से शान्ति हो गई है।

"नाह बिनु घर वासु नाही पुछहु सखी सहेलिआ ॥ बिनु नाम प्रीति पिआरु नाही वसहि साचि सहेलिआ ॥ ..... मेरी इछ पुनी जीउ हम घरि साजनु आइआ ॥ मिलि वरू नारी मंगल गाइआ ॥" (242 म.1)

हे सखी प्रीतम बिना घर में कैसा वास। और हे सखी बिना प्रभु के नाम जप के प्रेम और प्रीति नहीं हो सकती। अहो। अब प्रीतम के आने से मेरी समस्त कामनायें पूरी हो गई है। है सखियों अब मंगल गीत गाओ।

40 4 अपनी बिरह व्यथा को व्यक्त करते हुए गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि बिना पति के नारी कैसे रह सकती है। अहो इन गहन रातों को काटना कितना विषम हो जाता है। प्रियतम बिना मुझे नींद नही क्योंकि मुझे उसी का प्रेम भाता है बिना प्रिय कोई सुधि लेने

.ही मैं अकेली ही विलाप करती रहती हूँ। नानक जी कहते हैं मुझे कोई प्रियतम से
., मे उनके बिना दुख ही पा रही हूँ।

धन नाहु बाझहु रहि न साकै विषम रैणि घणेरिआ ॥
नह नींद आवै प्रेमु भावै सुणि बेनंती मेरिआ ॥
बाझहु पिआरे कोई न सारे एकलडी कुरलाए ॥
नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु प्रीतम दुखु पाए ॥" (243 म 1)

गुरु अमरदास जी की वाणी में यही भाव इस प्रकार व्यक्त होता है :

(1) "बिनु पिर किउ जीवा मेरी माई ॥
पिर बिनु नींद न आवै जीउ कापड़ तनि न सुहाई ॥
..... मिलु मेरे प्रीतमा जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी ॥
मैं नैणी नींद न आवै जीउ भावै अंनु न पाणी ॥
पानी अंनु न भावै मरीए हावै बिनु पिर किउ सुखु पाईऐ ॥
गुर आगै करउ बिनती जे गुर भावै जिउ मिलै तिवै मिलाइऐ ॥" (244 म.4)

(2) कहाँ यह गुणहीन भोली भाली जीव रुपी नारी और कहाँ वह घट-घट वासी अगम
रीतम परमात्मा। ऐसी स्थिति में मिलन परमात्म कृपा से ही होता है :

"मुंध इआणी भोली निगुणीआ जीउ पिरु अगम अपारा ॥
आपे मेलि मिलीऐ जीउ आपे बखसणहार....कामनि कंतु पिआरा ॥
....घटि घटि रहिआ समाई ॥
प्रेम प्रीति भाइ भगती पाइऐ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥
सदा अंनदि रहै दिन राती अनदिनु रहै लिव लाई ॥ (245 म 3)

"सुणि सखीए मेरी नींद भली मैं आपनडा पिरु मिलिआ ॥
भ्रम खोइआ सांति सहजि सुआमी परगासु भइआ कवलु खिलिआ ॥
वरु पाइआ प्रभु अंतरजामी नानक सोहाग न टलिआ ॥ (249 म 5)

प्रभु प्रीतम जैसे वर के आने से अब प्रिया की नीदं भी सुहावनी हो गई। माया के भ्रम
हो गए, हृद्रय का कमल खिल गया यानी परमात्मा की प्राप्ति हो गई और इस प्रकार
अटल हो गया यानी परमात्म मिलन से सब दुखो की समाप्ति हो गई।

हे सखियों! आओ हम सब मिलकर उद्यम करें और अपने परमात्मा रुपी प्रियतम को
. "सुणि सखीए मिलि उदमु करेहा मनाइ लैहि हरि कंते ॥" (249 म 5)

इस वाणी में परमात्मा को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प और सतत प्रयत्न की
श्कता पर बल दिया गया है।

आइये अब हम ग्रंथ साहिबजी में आई संत कबीर की वाणी में प्रिया-प्रीतम भाव की
नी झलकी देखें :

(1) "पंथु निहारै कामनी लोचन भरी ले उसासा ॥
उर न भीजै पगु न खिसै हरि दरसन की आसा ॥

उड़हु न कागा कारे।
बेगि मिलीजै अपुने राम पिआरे॥" (338 कबीर जी)

(2) "आस पास धन तुरसी का बिरवा माझ बना रसि गांऊ रे॥
ऊआ का सरुप देखि मोही गुआरनि मो कउ छोडि न आउ न जाहू रे॥
(338 कबीर)

तुलसी के धने पौधो से घिरा वृन्दावन मानों रस से भरा हुआ गावं है। कृष्ण के रुप पर मोहित राधा जी करती हैं कि हे प्रियतम मुझे छोड़कर चले मत जाना।

(3) "ब्रिदांवन मन हरन मनोहर क्रिसन चरावत गाऊ रे॥
जा का ठाकुर तुही सारिंगधर मोहि कबीरा नाऊ रे॥" (338 कबीर)

सबके मन को हरन वाले कृष्ण वृन्दावन में गौरएं चरा रहे हैं। हे सारंग धनुप धारण करने वाले प्रभु जिस तरह आप राधा जी के ठाकुर हैं उसी तरह आपकी एक प्रेमिका का नाम कबीर है, अर्थात हे प्रभु राधा की तरह कबीर का जीवन भी सफल करो।

40 6 नीचे दिये शब्द में गुरु नानक जी कहते हैं कि मैं कैसे प्रीतम की प्यारी हो सकती हूँ—मेरा पति, सदैव जागता है पर मैं अपनी (अज्ञानता की) नींद मे सोई रहती हूँ। जन्मान्तरों की प्यास लेकर मैं सेज कर आई हूँ पर क्या पता उस पति परमेश्वर को मैं भाऊंगी की नहीं। हे माँ मैं नही जानती कि मेरा क्या होगा पर मैं हरि दरसन बिन नहीं रह सकती। प्रेम न चखने से मेरी प्यास नही बुझी है। अहो मैं अपना सारा यौवन व्यर्थ बिता कर पछता रही हूँ।

इव किउ कंत पिआरी होवा॥ सहु जागै हउ निस भरि सोवा॥
आस पिआसी सेजे आवा॥ आगै सह भावा कि न भावा॥
किआ जाना किया होइगा री माई॥ हरि दरसन बिनु रहनु न जाई॥
प्रेमु न चाखिआ मेरी तिस न बुझानी॥ गइआ सु जीवन धन पछतानी॥
(356/57 म 1)

जो प्रभु को प्रिय है वही आत्मा सुहागिन है :

(1) "सदा सोहागिन जो प्रभु भावै॥ गुर शबदी सींगारु वणावै॥
सेज सुखाली अनुदिन हरि रावै॥ मिलि प्रीतम सदा सुखु पावै॥ (363 म.3)

(2) "सहि सोहागणि नानका जो भाणी करतारि री॥" (400 म 5)

(3) सोहागणि सदा पिरु पाइआ हउमै आपु गवाइ॥
पिर सेती अनुदिनु गहि रही सची सेज सुखु पाइ॥
.....तनु मनु सीतलु मुख उजले पिरकै भाइ पिआरि॥
सेज सुखाली पिय खै हउमै त्रिसना मार॥ (428 म.3)

(4) एक भगवान कृष्ण रुपी पति को पाकर जीव का सुहाग अमर हो जाता है, और यह गुरु की कृपा से ही सम्भव हो सकता है

"करि किरपा घरि आइआ गुर कै होति अपार॥
वरु पाइआ सोहागनी केवल एकु मुरारि॥" (428 म 3)

40 7 नीचे हम गुरु अर्जुन देव जी महाराज का एक बहुत ही भावपूर्ण और ज्ञान से ओत प्रोत शब्द दे रहे हैं। एक सखी दूसरी सुहागिन या ब्रहमज्ञानी सखी से कह रही है कि तेरे शरीर पर ये लाल रंग का या प्रेम का चोलना बड़ा सुशोभित हो रहा–सखी क्या तु प्रीतम को भा गई है। इसका भावार्थ है कि तू ब्रहमवेता सी दिखलाई पड़ रही है क्योंकि तेरे चेहरे का दिव्य तेज बतलारहा है कि तुझे परमात्म् साक्षात्मार हो गया है। छान्दोग्योपनिषद के चौथे अध्याय के 9वें और 14वें खण्डों में ब्रह्मज्ञान पाये अपने शिष्यों सत्यकाम, और उपकोसल, से उनके गुरूओं ने हर्षित होकर यह प्रश्न पूछा था कि "सोम्य तू ब्रह्मवेता सा दिखलाई दे रहा है, तुझे किसने उपदेश दिया है॥"

यही भाव मानों गुरु महाराज के इस शब्द में उतरा है। सखी कह रही है बतलाओ तेरी यह लालिमा कैसे बनी। किस रंग के प्रभाव से तू लाल हुई है। हे सखी तू ही सुन्दर रुप वाली है, तू ही दिव्य ज्ञान वाली है। सुहागिन सखी उत्तर में कहती है कि हे सखी सुनो। मेरी मेहनत यह है कि जब मैं प्रियतम को भा गई तो उसकी शुभ दृष्टि से मैं निहाल हो गई। उस प्रियतम प्रभु ने ही तब मेरा सिंगार कर मुझे संवार दिया :

"लालु चोलना तै तनि सोहिआ॥ सुरिजन भानी तां तनु मोहिआ॥
कवन बनी री तेरी लाली कवन रंगि तू भई गुलाली॥
तूं सतवंती तूं परधानि॥ तूं प्रीतम भानी तु ही सुर गिआनि॥
प्रीतम भानी ता रंगि गुलाल॥ कहु नानक सुभ द्रिसटि निहाल॥
सुनि री सखी इह हमरी घाल॥ प्रभु आपि सीगारि सवारनहार॥" (384 म 5)

और इसी भाव को और विस्तृत करते हुए गुरु महाराज जी कहते हैं :

"प्रिय सोहागनि सीगारि करी॥ मन मेरे को तपति हरी॥
भलो भइओ प्रिय कहिआ मानिआ॥ सुखु सहजु इसु घर का जानिआ॥
.....ना मैं कुलु न सोभावंत॥ किआ जाना किउ भानी कंत॥
मोहि अनाथ गरीब निमानी॥ कंत पकरि हम कीनी रानी॥
जब मुखि प्रीतमु साजन लागा॥ सूख सहज मेरा धनु सोहागा॥
कहु नानक मोरी पूरन आसा॥ सतिगुर मेली प्रभ गुणतासा॥" (394 म.5)

न मेरा कोई ऊँचा कुल है और न मुझ में कोई सुन्दरता ही। मैं नहीं जानती कि अपने प्रियतम को कैसा भा गई। मैं तो अनाथ, मानरहित, और गरीब हूँ उसी ने पकड़कर मुझे अपनी रानी बना लिया है। जब साजन मेरे मुख लगा अर्थात जब उससे मेरा प्रत्यक्ष साक्षात्कार हुआ तो मुझे सहज सुख प्राप्त हुआ और मेरी सभी आशायें पूर्ण हुई। मुझे सत्गुरु ने परमात्मा से मिला दिया।

40 8 अब हम गुरु महाराजजी के इस शब्द को देखें जिसमें प्रभु प्रेम की पीर मानो सभी के हृदयों को अपने में बांर रही हो :

"सुंदर तन धिआन सुंदर तन धिआन हे मनु लुब्ध गोपाल गिआन है जाचिक जन राखत मान॥
प्रभु मान पूरन दुख बिदीरन सगल इछु पुजंतिआ॥

हरि कंठि लागे दिन सभागे मिलि नाह सेज सोहतीआ ॥
प्रभु द्रिसटि धारी मिले मुरारी सगल कलमल भए हान ॥
बिनवंति नानक मेरी आस पूरन मिले श्रीधर गुण निधान ॥" (462 म 5)

तेरे सुंदर स्वरुप का ध्यान आनन्दमय है। हे गोपाला, तेरे सुदंर रुप के ध्यान मे मेरा मन लुभायमान हो रहा है। हे प्रियतम तुम तो मांगनेवालों का मान रखते हो। हे प्रियतम, हे प्रभु तुमने मेरा मान रखते हुए मेरे दुखों का निवारन कर मेरी सभी ईच्छाऐं पूर्ण कर दीं जिस दिन हरि ने मुझे अपने कंठ लगाया वह मेरे सौभाग्या का दिन था, उनसे मिलकर मेरी अन्तःकरण रुपी शय्या शोभित हो उठी। हे मुरारी, हे कृष्ण, जब से आपकी कृपा द्रिसटि मुझ पर हुई है मेरे सभी पाप नष्ट हो गये। नानक जी विनय पूर्वक कहते हैं कि जबसे मैं सर्वगुण खान परमात्मा से मिला मेरी सभी आशाऐं पूर्ण हो गई।

40 9 नीचे दिये गये सबद के अन्त में ग्रंथ साहिबजी कहते है। कि हे प्रियतम राम उन्ही सुहागिनों का श्रंगार सफल है जो ज्ञान का सुरमा लगाती हैं और "नाम" जप का भोजन करती है। प्रिया कहती है कि हे संतों अपने पति प्रभु राम से, गोपाल से, मिला दो :

(1) "अति प्रीतम मन मोहना घर सोहना प्रान अधारा राम ॥
सुंदर सोभा लाल गोपाल दइआल की अपर अपारा राम ॥
गोपाल दइआल गोविन्द लालन मिलहु कंत निमाणीआ ॥
नैन तरसन दरस परसन नह नींद रैणि विहाणीआ ॥
गिआन अंजन नाम बिजंन भए सगल सीगारा ॥
नानकु पइअंपे संत जपै मेलि कंतु हमारा ॥" (542 म 5)

(2) "चल चित बित अनित प्रिअ बिनु कवन विधि न धीजिऐ ॥
खान पान सिंगार बिरथे हरि कंत बिनु किउ जीजीऐ ॥
आसा पिआसी रैनि दिनी अरु रहि न सकीऐ इकु तिलै ॥
नानकु पइअंपै संत दासी तउ प्रसादि मेरा पिरु मिलै ॥" (543 म.5)

यह मेरा चंचल चित अनित्य सम्पदा के पीछे दौड़ राह है। परन्तु मुझे अपने प्रिय पति मिले बिना धैर्य नहीं मिलता। बिना प्रियतम के खान पान शृंगार सभी व्यर्थ है। मैं रात दिन प्रीतम से मिलने की आशा में प्यासी हूँ। हे संतों मेरी आपके चरणों में विनती है, मैं आपकी दासी हूँ। आपकी कृपा से मुझे प्रीतम अवश्य मिलेगा।

(3) "सेज एक प्रिउ संगि दरसि न पाईए राम ॥" (543 म.5)

(4) हृदय रुपी एक ही सेज पर प्रीतम विराज रहा है पर मैं उसके दर्शन से वंचित हूँ। तब यह प्रिय कैसे मिलेगा। "प्रिउ प्रिउ करती सभु जगु फिरी मेरी पिआस न जाइ ॥

(5) नानक सतिगुरि मिलिए मेरी पिआस गई पिरु पाइआ घरि आइ ॥" (553 म 4)

41 0 प्रिया की बिरह वेदना किस प्रकार अपनी चरम सीमा पर पहुँच कर अत्यन्त पीड़ादायक हो उठती है इसका विशद चित्रण स्वयं गुरु नानक देव जी की वाणी में इस प्रकार उतरता है

(1) हे प्रियतम यदि मैनें तुम्हारे ऊपर मान किया है तो इसलिए कि तुम मेरे हो। नही तो मैं किस बात का मान कर सकती हूँ। हे सखी तु अपनी चूड़ियों को पलंग के साथ मारकर तोड दे और पलंग की पाटी से मारकर अपनी सुसज्जित वांह भी तोड़ दे क्योंकि हे सखी इतना श्रृगार करते हुए भी तुम्हारा पति तुम्हारे पास नहीं आया। न तो इन बांहों को अंलकृत करने वाला मनिहार ही तेरा कुछ संवार सका न ही उसकी वे चूड़ियां का कंगन ही किसी काम आये। वे बाहें जल जाएं जो पियतम के गले न लग सकीं अर्थात वह बाह्य वेश और वैभव व्यर्थ यदि प्रिया-प्रियतम को प्रसन्न नहीं कर सकीं।

"जा तू जा मैं माणु किआ है तुधु केहा मेरा माणो ॥
चूडा भनु पलंघ सिउ मुंधे सणु वाही सणु वाहा ॥
एते वेस करेदीए मुंधे सहु सतो अबराहा ॥
ना मनीआरु न चूडीआ ना से बंगुडीआहा ॥
जो सह कंठि न लगीआ जलनु स बाहडीआहा ॥ (557/58 म 1)

(2) इसके आगे गुरु नानक जी अपनी सखियों को भगवान कृष्ण के अद्भुत दिव्य स्वरुप की झांकी दिखलाते हुए कहते हैं कि उसके नेत्र, दांत और नाक सुंदर हैं शरीर मानो सोने में ढला है। उसकी चाल बड़ी सुहावनी है, वाणी कोकिल के समान मधुर और गंगाजल के समान निर्मल है और मस्त हाथी के समान वे ठुमक ठुमक कर पैर रखते हैं--

"बंके लोइण दंत रीसाला ॥ सोहणे नक जिन
लमडे वाला ॥ कंचन काइआ सुइने को ढाला॥
सो हे सखीः सोवन ढाला किसन माला जपहु तुसी सहेली हो ॥
जम दुआरि न होहु खडीआ सिख सुणहु महेलिओ ॥" (567 म 1)

उसकी स्वर्ण जैसी काया में बैजयंती माला शोभायमान है। हे सहेलियों तुम सब उसका जप करो। इसका जप करने से तुम यम के द्वार पर लेखा-जोखा देने के लिए नहीं खड़ी की जाओगी।

(3) हे सहेलियों। आओ मिलकर सिरजनहार प्रभु को सिमसरन करें। प्रभु नाम जप के द्वारा स्त्री अपने पति की सुहागिन बनती है। यह सच्चीदानन्द ही तुम्हें संवारने वाला है। नानक जी कहते हैं कि हे जिवात्मन् तुम्हें कभी बिरह न सहना पड़े इसलिये पारब्रह्म परमात्मा की चिंतन करो, उनका ही गुण गाओ।

"आवहु मिलहु सहेली हो सिमरहु सिरजणहारो ॥
बईअरि नामि सोहागणी सचु सवारणहारो ॥
गावहु गीत न बिरहडा नानक ब्रह्म विचारो ॥" (581 म 1)

वर्षा रितु में काली काली घटाओं में चमकती दमकती बिजली से बिरहन प्रिया भयभीत है। नैयनों में नींद नहीं प्रिय का संदेश भी नहीं आया। जो प्रियतम एक कोस जाने पर ही चार पत्र भेज देते थे उनकी ओर कोई समाचर नहीं आया। प्रिया घर की छत से पंथ निहार रहीं है गुरु अर्जुन देव जी की सरल सी वाणी में हम इस 'चित्र का अक्लोकन करें

दह दिस छत्र मेघ घटाघट दामनि चमक डराइओ ॥
सेज इकेली नीदं नहु नैनह पिरु परदेसि सिधाइओ ॥
हुणि नहीं संदेसरो माइओ ॥
एक कोसरो सिधि करत लालु तब चतु पातरो आइओ ॥
किउ बिसरो इहु लाल पिआरो सरब गुणा सुख दाइओ ॥
मन्दिर चरि कै पंथु निहारउ नैन नीरि भरि आइओ ॥" (624 म 5)

41 1 प्रिया प्रीतम भाव पर हम ग्रंथ साहिबजी में आये कुछ पद क्रमानुसार दे रहे हैं जो बिरह वेदना व्यक्त करने में एक अपनी ही विशिष्ट छाप लिये हुए हैं। इसके पूर्व कि हम फरीद जी के पद दें, उनका थोड़ा सा परिचय सामयिक होगा। शेख फरीद मुसलमान थे। इनका जन्म गुरु नानक देव जी के जन्म के 294 वर्ष पूर्व यानी सन् 1175 ईसवी में मुलतान जिले मे "कोठीवाल" ग्राम में हुआ था और देहावसान 15 अक्टूबर 1265 में पाकपटेन में। ग्रंथ साहिबजी मे गुरुओं के अलावा अन्य 15 संतों की वाणी में कबीर जी के बाद सबसे अधिक पद शेख फरीदी के ही हैं। इनके कुल 122 पदों में 4 शब्द और शेष श्लोक हैं। जैसा कि हम आरम्भ में ही कह चुके हैं ग्रंथ साहिबजी में कोई भी ऐसी वाणी नहीं है जो गुरुओं की अध्यात्म मानता से भिन्न हो। इस बात की विस्तार से चर्चा हम आगे चलकर उस स्थल पर करेगें जहा हमे ग्रंथ साहिबजी में आई इस्लाम संबंधी वाणियों की समीक्षा करनी है। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि शेक्ष फरीदी ने मुसलमान कुल में जन्म अवश्य लिया और जीवन भर नमाज भी पढ़ते रहे पर उनका आध्यात्मिक जीवन कुरान शरीफ़ की मान्यताओं से बिलकुल भिन्न और विपरीत था। जैसा कि उनकी वाणियों से स्पष्ट होता है, उनके व्दारा अल्लाह, रब, खुदा आदि शब्दों आदि का प्रयोग भी कुरान शरीफ़ वर्णित अल्लाह के लक्षणों से भिन्न रुप मे ही हुआ है।

41 2 आइये देखें शेख फरीद जी की वाणी, जिनको जनमानस उनके कवि नाम "फरिदा" कहकर सम्बोधित करते हैं, प्रिया-प्रीतम भाव पर क्या कहते हैं। शुरुआत हम श्लोको से करते हैं :

(1) "फरीदा रती रतु न निकलै जो तनु चीरै कोइ॥
जे तनु रते रब सिउ तिन तनि रतु न होइ ॥"

(1380 श्लोक 51 शेख फरीद जी)

हे फरीद यदि कोई प्रभु प्रेम में लगे शरीर को चीरकर रत्ती भर भी रक्त निकाले तो नही निकलता; जो मनुष्य प्रभु प्रेम में रंगे हैं, उनके शरीर में रक्त नहीं होता क्योंकि उनका रक्त बिरहाग्नि में जल जाता है।

(2) "अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुडे मुडि जाइ।
जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि बिहाइ ॥"

हे फरीद! आज मैं अपने पति के साथ नहीं सोई इसलिए मेरे अंग बार-बार टूट रहे है। सखी! जाकर दुहागिन से पूछो कि तुम सारी आयु रुपी रात्री कैसे व्यतीत करती हो ॥"

*79 श्लोक 50 शेख फरीद)

41.3 अब हम शेख फरीद जी का प्रिया-प्रीतम भाव पर यह मार्मिक शब्द देते हैं।

(1) "तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥ बावलि होई सो सहु लोरउ ॥
तै सहि मन महि कीआ रोसु ॥ मुझ अवगुन सह नाही दोसु ॥
तै साहिब की मैं सार न जानी ॥ जोबनु खोई पाछै पछतानी ॥
काली कोइल तू कित गुन काली ॥ अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ॥
पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए ॥ जा होई क्रिपालु ता प्रभु मिलाए ॥
विधण खूही मुंध इकेली ॥ ना को साथी न को बेली ॥
करि किरपा प्रभि साध संगि मेलि ॥ जा फिरि देखा ता मेरा अलह बेली ॥
बात हमारी खरी उड़ीणी ॥ खंनिअह तिखी बहुत पिईणी ॥
उसु ऊपरि है मारगु मेरा ॥ सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा ॥"

(794 शेख फरीद)

शेख फरीद जी कहते हैं कि प्रचण्ड बिरह की अग्नि में जल-जल कर और तड़प-तड़प कर मै हाथों को मरोड़ रही हूँ। उस पति परमेश्वर को जिसे मै बहुत चाहती हूँ र .जती हुई मै पागल सी हो गई हूँ। हे प्रियतम तुमने मन में रोस या गुस्सा किया हुआ है। लेकिन इसमे तुम्हारा कोई दोष नहीं है क्योंकि सब अवगुण मुझमें ही हैं।

हे साहिव, हे प्रिय मैं तुमको तत्वतः या सच्चे रुप में नहीं जान सकी। अब अपनी जवानी गवां कर पछता रही हूँ।

हे काली कोयल! तू किस गुण के कारण काली हो गई? (बिरहन रुपी कोयल की ओर से ऊत्तर देते हुऐ फरीद जी कहते हैं) मै अपने प्रियतम के वियोग में जलकर काली हो गयी हूँ। प्रीतम के बिना भला कोई कैसे सुख पा सकता है। जब प्रभु स्वयं कृपा करता है तो अपने साथ मिला लेता है।

संसार रुपी भयानक कुऐं में मैं अकेली पड़ी हुई हूँ। न मेरा कोई साथी है और न कोई सहायक मित्र है। प्रभु ने अपनी कृपा करके साधु-संगति में मिलाया है। जब मै संसार की ओर से विमुख हुई तो मैनें देख कि अल्लाह या प्रभु मेरा मित्र है।

मेरा मार्ग गहरी प्रतीक्षा का मार्ग हैं। वह छुरे की धार से भी महीन और तीक्ष्ण है। और उसी के ऊपर मेरा मार्ग है। हे शेख फरीद! अभी प्रातःकाल है, प्रातः के प्रकाश में या शुरु आयु सें ही अपना सही मार्ग सम्हाल ले। क्योंकि प्रीतम को पाने का यही शुभ और अनुकूल अवसर है।

41.4 परमात्मा के साथ एक हो जाने की बात, किसी पैगम्बर के द्वारा नहीं बल्कि संतों की कृपा से परमात्मा में सखा भाव, उसको प्रियतम रुप में पाने की अदम्य लालसा, अल्लाह को सखाभाव से सम्बोधन, शेख फरीद के ये सब भाव कुरान शरीफ़ के समस्त आदेशों के विरूद्ध है। परमात्म् प्राप्ति के मार्ग को छुरे की धार से भी तीक्ष्ण और दुस्तर बतलाने वाली अन्तिम पंक्तियों में शेख फरीद मानो कठोपनिषद् के इस उद्बोधन की घोषणा कर रहे हों, और कह रहे हों कि संतसंग से ही इसे पार किया जा सकता है।

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्ग-पथस्तत्कवयों वदन्ति॥ (कठोपनिषद 1/3/16)

अर्थात् हे मनुष्यो उठो, जागो और श्रेष्ठ महापुरषों के पास जाकर (उनके द्वारा) परमात्मा को जान लो। ज्ञानीजन इस मार्ग के छुरे की दुस्तर और तीक्ष्ण धार के समान दुर्गम अर्थात अत्यन्त कठिन बतलाते है।

41.5 (1) **"मोहन नींद न आवै हावै हार कजर बंसत्र अभरन कीने ॥**
उड़ीनी उड़ीनी उड़ीनी ॥ कब धरि आवै री ॥" (830 म. 5)

हे सखी मैने वस्त्र, हार और काजर से शृंगार भी किया फिर भी मुझे अपने प्रियतम कृष्ण बिना नींद नहीं आती। मैं उदास, उदास बहुत ही उदास रहती हूँ।

(2) **"सुनहु सहेरी मिलन बात कहउ सगरो अहं मिटावहु ॥ तउ घर ही लालनु पावहु ॥ तब रस मंगल गुन गावहु ॥ आनंद रुप धिआवहु ॥ नानक दुआरै आइओ ॥ तउ मैं लालनु पाइओ री ॥"** (830 म. 5)

नानक जी कहते हैं कि हे सखि मैं तुम्हें प्रियतम से मिलने की राह बताती हूँ—तुम अपना अहं भाव त्याग दो। तब तुम अपने घर में ही प्रीतम को पा लोगी। तभी तुम अपनी प्रीतम से मिलन का रस प्राप्त करोगी और मंगलमय गीत गाओगी एवं प्रियतम के आनंदरुप मे निमग्न हो जाओगी। नानक जी कहते हैं कि जब मैं अहंभाव त्यागकर प्रियतम के द्वार पर गया तब मैने उसे पा लिया।

(3) हे सखी अब मैनें अपने "मोहन" के अपने प्रियतम के दर्शन किये। अब मुझे नीद सुहा रही है और मेरी सब तृष्णा बुझ गई :

"मोहन रुप दिखावै ॥ अब मोहि नींद सुहावै ॥ सभ मेरी तिखा बुझानी ॥" 830 म. 5

41.6 ग्रंथ साहबजी में प्रिया-प्रीतम भाव वर्णन में प्रियतम रुप में परमात्मा का कृष्णावतार रुप ही प्रधानतः छाया हुआ है। वैसे ग्रंथ साहिबजी में आई भगवान राम और कृष्ण की उपासना सम्बन्धी शब्दो का अलग अध्यायों में दिग्दर्शन करेंगे, यहाँ नीचे हम प्रिया-प्रीतम भाव के संदर्भ में आये भगवान कृष्ण सम्बन्धी कुछ पदों को दे रहे हैं। इन पदों में मानो भागवत पुराण वर्णित गोपी संबंधी भाव उमड़-उमड़ पड़ता है।

(1) **"सुणि यार हमारे सजण इक करउ बेनंतीआ ॥**
तिसु मोहन लाल पिआरे हउ फिरउ खोजंतिआ ॥
तिसु दसि पिआरे सिरु धरी उतारे इक भोरी दरसनु दीजै ॥
नैन हमारे प्रिअ रंग रंगारे इकु तिलु भी न धीरीजै ॥
प्रभु सिउ मनु लीना जिउ जल मीना चातृक जिवें तिसंतिआ ॥
जन नानक गुरु पूरा पाइआ सगली तिख तिखा बुझंतिआ ॥" (703 म 5)

हे मेरे प्रिय मित्र! मै एक बिनती करती हूँ मैं अपने प्रियतम मोहन को खोजती फिर रही हूँ। मुझे उसका पता बताओ। यदि कोई मुझे अपने मोहन प्रिय का एक क्षण के लिए भी दर्शन करा दे तो मैं उसे अपना शीश काटकर अर्पण कर दूं। मेरे नयन अपने प्रियतम के रग में रगे हुऐ हैं और उसके विना मैं एक पल भी धीरज रखने में असमर्थ हूँ मेरा मन अपनी

प्रभु के लिए इस प्रकार तरस रहा है जैसे जल के बिना मछली और स्वाति बूंद के लिए चातक। नानक जी कहते हैं कि गुरु कृपा से प्रियतम को पाकर अब मेरी समस्त प्यास बुझ गई है।

(2) **"हम चिनी पातिसाह सांवले वरनां ॥"** (727 नामदेवजी)

श्याम रुप वाले अपने प्रियतम कृष्ण को, अपने बादशाह को मैनें पहचान लिया है।

(3) **"सुनि सखिए प्रभ मिलण नीसानी ॥ मनु तनु अरपि तजि लाज लोकानी ॥ ...कवन कहा गुन कंत पिआरे ॥ सुघड़ सरूप दइआल मुरारे ॥"** 737 म. 4

(4) **"लाल रंगीले प्रीतम मनमोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ॥"** (738 म. 5)

(5) **"सुनहु सखी मनु मोहनि मोहिआ तनु मनु अंम्रिति भीना ॥"** (764 म. 1)

(6) **"मनु तनु निरमलु अति सोहणा भेटिआ किसन मुरारि ॥"** (788 म. 3)

(7) **"नारी पुरखु पुरखु सभु नारी सभु एको पुरखु मुरारे ॥"** (983 म. 4)

(8) **"मोहन लालु मेरा प्रीतम मन प्राणा ॥"** (1005 म. 5)

(9) **"प्रिउ प्रिउ प्रीति प्रेमि उर धारी ॥ दीना नाथ पीउ बनवारी ॥"** (1331 म. 1)

(10) **"दीन दइआलु प्रीतम मनमोहक अति रस लाल सगूडौ ॥"** (1331 म. 1)

41 7 गुरु नानकदेवजी महाराज का निम्न शब्द प्रेमकी परकाष्ठा का एक अनूठा ही दृष्य प्रस्तुत कर रहा है।

"मू लालन सिउ प्रीति बनी ॥ तोरी न टूटें छोरी न छूटे ऐसी माधो खिंच तनी ॥
दिनसु रैनि मन माहि बसतु है तू करि किरपा प्रभ अपनी ॥
बलि बलि जाउ सिआम सुंदर कउ अकथ कथा जा की बात सुनी ॥
जन नानक दासनि दासु कहीअत है मोहि करहु
किपा ठाकुर अपुनी ॥" (827 म 1)

जैसे मानो कोई भीगी हुई रेशम की डोरी जब गांठ पड़कर खींच और तन जाती है तब उसकी गांठ छुड़ाना एक अत्यन्त कठिन कार्य होता है, वैसे ही हे मेरे प्रियतम कृष्ण, मेरे माधव, मेरी प्रीति तुमसे गुंथ गई है। अब तुम रात और दिन मेरे मन मे बसे हो। हे प्रिय, अब ऐसी कृपा करो कि यह प्रीत बनी रहे। हे श्याम सुंदर मैं तुम पर बलि-बलि जाती हूँ। तुम्हारी गाथाए अकथनीय हैं, ऐसा मैनें सुना है। भक्तों के दास नानक कहते हैं कि हे "ठाकुर" तुम मेरे पर अपनी कृपा करो।

हे मरे स्वामी अपने दासों के दास नानक पर अपनी कृपा करो।

41 8 प्रिया-प्रीतम भाव में कुछ प्रेम सने पद, जो प्रिया की वेदना का, या जीव को परमात्मा से मिलने की एक सनातन छटपटाहट का दिग्दर्शन कराते हैं, हम पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहे हें। जीव की इस चिर वेदना का उसकी परमानंद की स्वाभाविक प्यास का परमात्म् प्राप्ति की अदम्य अभिलाषा की केनोपनिषद् के चतुर्थ खण्ड के पाचवें और छटे मत्रों में

हुआ सा प्रतीत होता है, तथा इस ब्रह्म को निरन्तर अतिशय प्रेम पूर्वक स्मरण करता है। इस मन के व्दारा (ही) संकल्प अर्थात उस ब्रह्म के साक्षात्कार की उत्कट अभिलाषा भी (होती है)।" (केनोपनिषद् 4/5)

"वह परब्रह्म परमात्मा (प्राणिमात्र का प्रापणीय होने के कारण) "तद्वन" नाम से प्रसिद्ध है, (अत:) वह आनन्दघन परमात्मा प्राणिमात्र की अभिलाषा विषय और सबका परम प्रिय हे इस भाव से उसकी उपासना करनी चाहिए। वह जो भी साधक उस ब्रह्म को इस प्रकार जान लेता है उसको निस्सन्देह सम्पूर्ण प्राणी सब ओर से हृदय से चाहते हैं।" (केनोपनिषद् 4/5)

419 ऊपर दिये दोनों वेद मंत्रों से ग्रंथ साहिबजी में वर्णित प्रिया-प्रीतम भाव की उपासना का आध्यात्मिक आधार और अधिक स्पष्ट हो जाता है। आइये हम अब इसी भाव से सबंधित आगे के कुछ "शब्दो" का अवलोकन करें :

"साजनडा मेरा साजनडा निकटि खलोइअडा मेरा साजनडा ॥
जानीअडा हरि जानी अडा नैन अलोइअडा हरि जानीअडा ॥
नैन अलोइआ घटि घटि सोइआ सति अंम्रित प्रियगूडा ॥
नालि होबंदा लहि न सकंदा सुआउ न जाणै मूडा ॥" (924 म 5)

मेरा साजन मेरे पास ही खड़ा है मेरा साजन। हे प्रियतम, हरि प्रियतम, मैनें अपनी ऑखों से हरि प्रियतम को देखा है। मैनें अपने अत्यन्त अमृत रुपी गम्भीर प्रियतम को घट घट में सुशोभित होते देखा है। परन्तु साथ होते हुए भी मनुष्य "उसको" इसलिये प्राप्त नही कर पाता क्यों कि मूढ़ जीव (यानी माया से मोहित जीव) उसके परमानंद स्वरुप का स्वाद नही जानता।

420 जैसा कि हमने पहले भी कुछ सबदों में देखा, इस "सबद" में गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने दो बार यह स्पष्ट घोषणा की है कि उन्होनें अपने प्रियतम परमात्मा को देखा है, यही नहीं उसका प्रत्येक प्राणी के हृदय में भी साक्षात्कार किया है।

(1) **"डोलत डोलत हे सखी फाटे चीर सिंगार ॥**
हेरत हेरत हे सखी होइ रही हैरानु ॥
..... मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सगल गुणा गलि हारु ॥" (937 म 1)

(2) **"सभना का पिरु एकु है पिर बिनु खाली नाहि ॥ नानक से सोहागणी जि सतिगुर माहि समाहि ॥"** (1088 म. 3)

सभी जीवों का "प्रियतम" तो एक ही है यानी परमात्मा। पर उस प्रियतम रुपी सतगुर मे जो प्रिया लीन है वही सुहागणी है, भाग्यशाली है।

"सुणि नाह पिआरे इक बेनती मेरी ॥
तू निज घटि वसिअडा हउ रुलि भसमै ढेरी ॥
बिनु अपने नाहै कोइ न चाहै किआ कहिऐ किआ कीजै।
अमृत नामु रसन रसु रसना गुर सबदी रसु पीजै ॥" (1111 म. 1)

हे मेरे प्रियतम मेरी एक प्रार्थना सुनो तुम मेरे घट में ही बसे रहो तुमसे विछुड़कर मैं राख की ढेरी हो रही हूँ बिना पति की स्त्री को कोई नहीं चाहता यानी उसका कहीं मान

नही रहता। हे प्रीतम बिहीन नारी तू अपने प्रियतम को पाने के लिये गुरु का
ा का पान कर।
ानकदेव जी महाराज के इस शब्द का मर्म देखिये :

"हरि बिनु किउ जीवा मेरी माई ॥
जै जगदीस तेरा जसु जाचउ मैं हरि बिनु रहनु न जाई ॥
हरि की पिआस पिआसी कामनि देखउ रैनि सबाई ॥
श्रीधर नाथ मेरा मनु लीना प्रभु जानै पीर पराई ॥" (1232 म 1)

"जब प्रिअ आइ बसे ग्रिहि आसनि तब हम मंगलु गाइआ ॥
मीत साजन मेरे भाए सुहेले प्रभु पूरा गुरु मिलाइआ ॥
सखी सहेली भए अनंदा गुरि कारज हमरे पूरे ॥
कहे नानक बरु मिलिआ सुखदाता छोडि न जाई दूरे ॥" (1267 म 5)

"माई मोहि प्रीतमु देहु मिलाई ॥
सगल सहेली सुख भरि सूती जिह घर लालु बसाई ॥.....
एक निमख महि मेरा प्रभु दुखु काटिया नानक सुखि रैनि बिहाई ॥"
(1267 म. 5)

"प्रभ मेरे प्रीतम प्रान पिआरे ॥
प्रेम भगति अपनो नामु दीजै दइआल अनुग्रह धारे ॥
सिमरउ चरन तुम्हारे प्रीतम रिदैतिहारी आसा ॥
संतजना पहि करउ बेनती मनि दरसन की पिआसा ॥
बिछुरत मरनु जीवनु हरि मिलते जन कउ दरसनु दीजै ॥
नाम अधारु जीवन धन नानक प्रभ मेरे किरपा कीजै ॥" (1268 म 5)

अब अपने प्रीतम बनि आई ॥
राजा रामु रमत सुखु पाइओ बरसु मेघ सुखदाई ॥" (1268 म. 5)

का प्रेम भाव तो इतना गहन हो उठा कि हृदय में बसे प्राण और प्रीतम में ही
ही रह गया। सो वे कहते हैं कि हे सखी अब मुझे यह बतलाना भी कठिन है
मे प्रीतम बसते हैं कि प्राण।

सखी पीअ महि जीउ बसै जीउ महि बसै कि पीउ ॥
पीउ बूझउ नहीं घट महि जीउ कि पीउ ॥" (1377 कबीर जी)

प्रेम मार्ग में किसी को चलने की अभिलासा है तो उसका उपाय बतलाते हुए
ते हैं कि तू अपना शीश काट कर (यानी पूरा अहं त्यागकर) उसे गेंद बना ले।
से खेलते खेलते तू उसी में बेसुध हो जा फिर जो कुछ होता है उसे होने दे

ार जउ तुहि साध पिरंम की सीसु काटि करि गोइ ॥
त खेलत हाल करि जो किछु होइ त होइ ॥" (1377 कबीर जी)

ाव के इस प्रसग में शेख फरीद के नीचे श्लोकों से यह साफ है कि प्रिया-प्रीतम

भाव की अभिव्यक्ति में शेख फरीद और नानक जी में कोई अन्तर नहीं है।

(1) **ढूंढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥**
जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर ॥"(1384 श्लोक 114 शेख फरीद)

हे विरहणी तू जो अपने प्रभु रुपी सुहाग को ढूंढती है, किन्तु प्राप्त नहीं कर पाती, तो तेरे में अवश्य कोई कमी होगी। जो सच्च सूहागिन है उसे तो प्रियतम के अतिरिक्त अन्य कोई आशा नहीं होती है।

(2) **"तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलन्हि ॥**
पैरी थंका सिरि जुलां जे मू पिरी मिलन्हि ॥" (1384 श्लोक 119 शेख फरीद)

शेख फरीद कहते हैं कि मेरा शरीर तन्दूर की तरह तपता है। मेरी हड्डियां ईधन की तरह जलती हैं। यदि मुझे प्रियतम मिल जाए तो पैरों के थकने पर भी मैं अपने सिर के बल चलूंगी।

(3) **"तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥**
सिरि पैरी किआ फेडिआ अंदरि पिरी निहालि ॥"

(1384 श्लोक 120 शेख फरीद)

फिर प्रबोध करते हुए कहते हैं कि तू अपने तन को तन्दूर की तरह न तपा और न ही हड्डियों को ईधन की तरह जला। तेरे सिर और पैर ने तेरा क्या बिगाड़ा है। अपने प्रियतम को तू भीतर ही देख।

42 4 भारतीय साहित्य ने एकनिष्ठ प्रेम के प्रतीक रुप में चातक और पपीहा को प्रेम की पराकाष्ठा दर्शाने में सदैव उदाहरण के रुप में प्रस्तुत किया। इसी प्रकार चकवी और चकवे का रात भर बिछुड़े रहना भी पक्षि दम्पति की बिरह वेदना के रुप में ही देखा गया है—कि मानो प्रिया-प्रीतम ही बिछड़ गये हों। ग्रंथ साहिबजी ने इन दोनों पक्षियों के प्रेम भाव और बिरह वेदना को जीव और परमात्मा के प्रिया-प्रीतम भाव की टीहन को दर्शाने के लिये उदाहरण के तौर पर स्थान-स्थान पर प्रस्तुत किया है। इन्ही भाव से संबंधित कुछ शबद हम नीचे दे रहे हैं।

(1) **"बाबीहा प्रिउ बोले कोकिल वाणीआ ॥**
साधन समि रस चौलै सांकि समाणीआ ॥
हरि अंकि समाणी जा प्रभ भाणी सा सोहागणि नारे।.....
नानक प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा कोकिल सबदि सुहावै ॥" (1107 म 1)

पपीहा कोयल के समान मधुर वाणी में पिउ-पिउ का शब्द बोल रहा है, यानी मानो अपने प्रियतम का ध्यान कर रहा है। इसी प्रकार प्रिया भी अपने प्रियतम के आनन्दमय रसमय स्वरुप के ध्यान में समाई हुई है। ध्यान द्वारा मानो अपने प्रियतम के अंक में समाई हुई प्रियतमा ही सुहागिन है, वही प्रियतम की प्यारी है। नानक जी कहते हैं कि पपीहा कोयल के समान मधुर वाणी में पिउ-पिउ शब्द का उच्चरण कर रहा है।

2 **"बाबीहा खिनु-खिनु बिल्लाइ ॥ बिनु पिर देखे नींद न पाइ ॥**
इहु वेछोड़ा सहिआ न जाइ ॥ सतिगुरु मिलै ता मिलै सभाइ ॥" 126 म 3

पपीहा अपने प्रियतम के बिछोह में प्रतिक्षण विलाप कर रहा है। अपने प्रिय को देखे बिना उसको नींद नहीं आती। उसे अपने प्रियतम का यह बिछोह सहन नहीं हो रहा है। किन्तु यदि उसको सतगुरु मिल जाय तो उसे अपना प्रियतम प्रभु सहज ही मिल सकता है।

(3) "चकवी नैन नींद नहि चाहै बिनु पिर नीदं न पाई ॥
सूरु चरहै प्रिउ देखै नैनी निविनिजि लागै पाई ॥" (1273 म 1)

बिना प्रिय के रात में नीदं न चाहने वाली और नीदं न लेने वाली चकवी जब सूर्योदय पर अपनी प्रीतम से मिलती है तो प्रेमवश झुक-झुक कर उसके चरणों में लग जाती है। इसका भावार्थ यह है कि सूर्य रुपी ज्ञान के प्रकाश होने पर भक्त जीवात्मा परमात्मा से जा मिलता है।

(4) "रैनि बाबीहा बोलिओ मेरी माई ॥
प्रिउ प्रिउ प्रीति न उलटै कबहू जौ तै भावे साई ॥
नींद गई हउमै तनि थाकी सच मति रिदै समाई ॥
लोचनतार ललता बिललाती दरसन पिआस रजाई ॥
प्रिउ बिनु सींगारु करी तेता तनु तामै कापरु अंगि न सुहाई ॥
पिरू नजीकि न बुझै बपुड़ी सतिगुरि सतिगुरि दिआ दिखाई ॥" (1274 म 1)

हे माँ! रात्रि में पपीहा "पी-पी" बोल कर मेरी बिरह वेदना को बढ़ा रहा है। प्रियतम से सच्ची प्रीति कभी नहीं उलटती। हे प्रिय! प्रीति तो वही है जो तुम्हें भावे। प्रियतम परमात्मा के मिलने से मेरी अज्ञान रुपी नींद चली गई और मेरे हृदय में सच्ची बुद्धि समा गई है। हे प्रियतम! मेरे नेत्र तुम्हें एकटक निहार रहे हैं। मेरी जिह्वा तुम्हारे नाम को पुकारती है और मुझे तुम्हारे दरसन की प्यास है।

प्रियतम के बिना शृंगार मेरे शरीर को तपाता है और कपड़े अंगों को नहीं सुहाते। मै अपने प्रियतम के बिना एक क्षण भी नही रह सकती। प्रिय तो नजदीक है पर अज्ञानता के कारण यह जीवात्मा रुपी प्रिया उसे समझ नहीं पाती। अंत में सतगुरु ने ही उसे उसका प्रियतम परमात्मा दिखा दिया।

(5) नीचे हम तीसरे सिक्ख गुरु अमर दास जी के पपीहा के प्रति चार सम्बोधन दे रहे हैं जिसमें वो पपीहा रुपी जिज्ञासु प्रिया को बतला रहे हैं कि सद्गुरु की कृपा से ही तुझे परमात्मा रुपी प्रियतम मिल सकेगा :

"बाबीहा प्रिउ प्रिउ करे जल निधि प्रेम पिआरि ॥
गुरु मिले सीतल जलु पाइआ सभि दूख निवारण हारु ॥"
"बाबीहा तू सचु चउ सचे सउ लिव लाइ ॥
बोलिआ तेरा थाइ पवै गुरमुखि होइ अलाइ ॥"
"बाबीहा तूं सहजि बोलि सचै सबदि सुभाइ ॥
सभु किछु तेरै नालि है सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥"
"बाबीहा सगली धरती जे फिरहि ऊड़ि चड़हि आकासि ॥
सतिगुरि मिलिऐ जलु पाईऐ चूकै भूख पिआस ॥" (1419/20 म.3)

42.5 जीव और का प्रिया-प्रीतम रुप में यह अतरग एकीभाव यह शाश्वत प्रेम

और मिलन का भाव केवल ग्रंथ साहिबजी ही नहीं भक्ति मार्ग से संबंधित सभी पंथों पर छाया हुआ है। चैतन्य महाप्रभु और मीरा मध्ययुग में इस मार्ग के अग्रदूत थे।

बल्लभ सम्प्रदाय की समस्त उपासना इसी प्रिया-प्रीतम भाव से अविभूत है। भागवत पुराण वर्णित राधा जी और गोपियों की आराधना इस उपासना विधि के मूल श्रोत हैं, और वेद कथित परमात्मा का आनन्दमय स्वरूप इसका मुख्य प्रेरक है।

अब तक के लम्बे लेखन में हमने विस्तार से ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ में चर्चित विभिन्न आध्यात्मिक पहलुओं का सप्रमाण अध्ययन किया। ग्रंथ साहिबजी वर्णित प्रिया-प्रीतम भाव से तो कोई भी पाठक जिसने कुरान शरीफ को पढ़ा है समझ लेगा कि यह दोनों ग्रंथ बिलकुल ही अलग-अलग बात कहते हैं, इनके भाव अलग हैं, उद्देश्य अलग हैं और लक्ष्य को प्राप्त करने के मार्ग भी अलग हैं।

42 6 किन्तु इन दोनों ग्रंथो को और भी सही रुप में समझने के लिये अभी थोड़ा और मार्ग तय करना है। इसके पूर्व कि हम इस विषय पर आयें कि ग्रंथ साहिबजी ने इस्लाम के बारे मे क्या कहा है हमें ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ के प्रमुख बचे हुए पहलुओं का भी अध्ययन आवश्यक है।

इनमें सबसे प्रमुखतम विषय परमात्मा का अवतार भाव है। जैसा कि हम ऊपर देख आये हैं ग्रंथ साहिबजी ने निर्गुन और सगुन दोनों को ही ब्रह्म का स्वरुप बतलाया है। और जैसा कि भक्त प्रह्लाद की कथा में ग्रंथ साहिबजी ने बार-बार कहा कि वह निर्गुन रुप पारब्रह्म परमात्मा भक्त पर कृपा करने के लिये नृसिंह अवतार में साकार रुप में प्रकट हो गया। माया परमात्मा के एक अंश मात्र में उसी की इच्छा के अधीन होकर कार्य करती है। इसलिये परमात्म-अवतार माया को अपने अधीन करके होते हैं न कि माया के वश में होकर।

और परमात्मा के इन अवतारों में पूर्ण अवतारों के रुप में भगवान राम और भगवान कृष्ण के अवतारों का ग्रंथ साहिबजी ने विशिष्ट चर्चा की है। अगले अध्याय में इन्ही भावों की विस्तार से चर्चा कर रहे हैं।

❑

ग्रंथ साहिबजी "अवतार भाव"

42 7 अब हम ग्रंथ साहिबजी में वर्णित अवतार भाव की चर्चा करेंगे। यह कुछ लोगों का नितांत भ्रम है कि ग्रंथ साहिबजी में केवल निराकार और निर्गुन उपासना है। यह मान्यता सत्यता से परे और आधार रहित है। यदि पाठकों ने ध्यान से ऊपर दिये गये वेदांत भाव और प्रिया-प्रीतम संबंधित अध्याय पढ़े होंगे तो वे समझ सकते हैं कि ग्रंथ साहिबजी ने निर्गुन और सगुन दोनों को ही परमात्मा का अभिन्न स्वरूप माना है। निर्गुन उपासना के मुख्य अग आत्मचिंतन, धारणा, ध्यान और समाधी आदि हैं। नाम-जप या सिमरन, भगवान की लीलाओ की चर्चा और चिंतन, शरणागति भाव, परमात्म भक्ति और प्रेम भाव सगुन उपासना के मुख्य अग हैं।

निर्गुन उपासना के महा मंत्र "अहं ब्रह्मास्मि" "सोहंम" "अयमात्मा" "ब्रह्म" "तमसि" "प्रज्ञान ब्रह्मं" हैं। और सगुन उपासना में कीर्तन, नाम जप, सगुन लीलाओं से जुड़े भगवान के नामों का मंत्र के समान जप, तीर्थ, व्रत आदि सब आ जाते हैं। इसमें शरणागति भाव सबसे प्रधान हो जाता है।

केवल मात्र निर्गुन रूप में नाम जप कीर्तन, शरण्य और शरणागत का भाव, भकत और भगवान प्रिया-प्रीतम रूप आदि का कोई स्थान नहीं हो सकता क्योंकि इस उपासना मे जीव और परमात्मा के भेद की कोई भी कल्पना नहीं हो सकती। यदि है तो वह निश्चय ही सगुन उपासना का ही कोई स्वरूप माना जायेगा।

42 8 ग्रंथ साहिबजी में दोनों ही उपासनों की सविस्तार चर्चा हुई है। किन्तु गुरुओं की यह मान्यता रही है कि युग धर्म के अनुसार मनुष्य के सार्मथ्य भी बदल जाते हैं। सतयुग मे सतस्वरूप परमात्मा का हृदय में ध्यान चिंतन प्रधान रहता है, त्रेता में यज्ञ, द्वापर में तप और कलियुग में केवल परमात्मा का नाम जप ही आधार है। सत्ययुग में धर्म मानों चारो पावों पर यानी अपनी पूर्णत में स्थित रहता है, त्रेतायुग में तीन पावों पर यानी तीन चौथाई, द्वापर मे दो पावों पर यानी आधा और कलियुग में धर्म का एक ही पांव रह जाता है। अतः कलियुग मे मनुष्य अपनी अल्प सी तन और मन की शक्ति, नगन्य ही प्राण और चारित्रय शक्ति के आधार पर परमात्मा के अव्यक्त और निर्गुन रूप को अपने में धारण करने में असमर्थ हो जाता है। इसलिये परमात्मा की भक्तिभाव से शरण ग्रहण करना, उसके प्रति माता-पिता, और प्रियतम रूप में लौ लगाना, गुरु से ज्ञान ग्रहण कर परमात्मा के नाम जप को मुख्य आधार बना लेना कलियुग में संसार सागर तरने का सहजतम उपाय है :

"सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार।
तीनों युग तीनौं दिढे कलि केवल नाम अधारे ॥"

"जुगि जुगि आपो अपणा धरमु है सोधि देखहु वेद पुराना ॥" (747 म 3)

42 9 ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि वेद शास्त्रों को अच्छी तरह मन्थन करके देख लो युगों के अनुसार उपासना धर्म अलग-अलग हो जाते हैं। कलियुग में नाम जप ही प्रधान है। ग्रथ साहिबजी में "नाम" जब की महिमा का इस बात से ही अनुमाल लगा सकते हैं "नाम" शब्द ग्रथ साहिबजी में लगभग 4600 बार आया है।

और यह बात निश्चित है कि नाम जप का सीधा सम्बन्ध सगुन उपासना से है न कि निर्गुन उपासना से। और सगुन उपासना का सीधा सम्बन्ध अवतार भाव से है।

43 0 युग-युग में उपासना विधि अलग-अलग हो जाती है, ग्रंथ साहिबजी की इस मान्यता से यह स्पष्ट है कि निर्गुन और सगुन उपासना में त्तवतः कोई भेद नहीं है—भेद केवल मार्ग की सरलता और कठिनाई का ही है। भगवत् गीता में इस तव का स्पष्टतम विवेचन बारहवे अध्याय में हुआ है। अर्जुन प्रश्न पूछते हैं।

"भगवन! जो आपके सगुन रूप का निरन्तर भजन करते हैं और जो ब्रह्म के अव्यक्त रूप के ध्यान में रहते हैं उनमें उत्तम योगवेत्ता, कोन है।" (गीता 12/1)

भगवान उत्तर देते हैं : "जो परम श्रद्धा के साथ मुझ में मन लगाकर नित्ययुक्त हुए मेरी उपासना करते हैं, मुझे निरन्तर भजते हैं, वे मुझे योगियों में श्रेष्ठ मान्य हैं।" (12/2)

"जो इन्द्रियों को भली-भांति संयत कर, सर्वत्र समबुद्धि होकर तथा सम्पूर्ण भूतो के हितों में रत होकर अक्षर, अनिर्देश्य, सर्वव्यापक अचिन्त्य, कूटस्थ, अचल और नित्य अविनाशी निराकार ब्रह्म की उपासना करते वे सबमें समान भाव रखने वाले योगी मुझ को ही प्राप्त होते हैं।" (गीता 12/3,4)

"उस अव्यक्त और निराकार में आसक्त चितवाले पुरुषों को साधना में बहुत क्लेश होता है, क्योंकि देहाभिमानियों के द्वारा अव्यक्त विषयक गति दुखपूर्वक प्राप्त की जाती है।" (गीता 12/5)

"परन्तु अर्जुन जो मेरे परायण रहने वाले भक्तजन सम्पूर्ण कर्मों को मुझे में अर्पणः करके मुझ सगुण रूप परमेश्वर को ही अनन्य भक्ति से निरन्तर चिंतन करते हुए भजते है, उन मुझमे चित्त लगाने वाले प्रेमी भक्तों को मैं मृत्युरूप संसार-सागर से शीघ्र ही पार करने वाला हूं।" (गीता 12/6.7)

इस प्रकार गीता के अनुसार निर्गुन और सगुन दोनों ही उपासनाओं का फल परमात्म प्राप्ति है। परन्तु निर्गुन ब्रह्म की उपासना कष्ट साध्य है और साधारण साधक के वश के बाहर की बात है। परन्तु प्रेम और भक्ति के द्वारा परमात्मा के सगुन रूप के ध्यान और भजन का मार्ग सुलभ है और सहज ही फल देने वाला है। तुलसी कृत रामायण में इस निर्गुन सगुन भाव का कितना सहज निरूपन इस चौपाई में हुआ है :

"हरि व्यापक सर्वत्र समाना ॥ प्रेम ते प्रकट होइ मैं जाना ॥

ग्रंथ साहिबजी ने वेदों के साथ-साथ हर कदम पर स्मृतियों को भी प्रमाण माना है, और भगवत गीता स्मृतियों प्रधान है आदि शंकराचार्य और रामानुजाचार्य जैसे परम भागवतों और प्रकाण्ड विद्वानों ने अपने भाष्यों में गीता को प्रमुख प्रमाण के रूप में स्वीकार किया है

43.1 ग्रंथ साहिबजी में वर्णित निर्गुन ब्रह्म के अवतार भाव सम्बन्धी कुछ प्रमाण देने से पूर्व हम यह बतलाना चाहेंगे कि ग्रंथ साहिबजी में जहां-जहां भक्तों के उद्धार का वर्णन है, फिर चाहे वह द्रोपदी की लाज रखने से सम्बन्धित हो या भक्त प्रह्लाद की रक्षा और ध्रुव को अटल पद देने से सम्बन्धित हों, या फिर वह अजामिल जैसे पापी और गज जैसे पशु के उद्धार की गाथा हो, वह सब उस परब्रह्म परमात्मा के सगुण स्वरूप और अवतार भाव से सम्बन्धित है।

ग्रंथ साहिबजी में "हरि" "राम" और "कृष्ण" नामों का व्यवहार निर्गुन और सगुन दोनों रूपों में हुआ है। इसकी संक्षिप्त चर्चा हम अगले अध्यायों में इन्हीं नामों के अन्तर्गत करेंगे। यहां हम बहुत थोड़े में ग्रंथ साहिबजी में आई नरसिंह अवतार की कथा के माध्यम से अवतार भाव के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं :

43.2 ग्रंथ साहिबजी में 1133वें पृष्ठ से लेकर 1194वें पृष्ठ तक भक्त प्रह्लाद की पूरी कथा चार बार आई है, जो इस कथा के परम महत्व का द्योतक है। और इस कथा का सीधा सम्बन्ध भगवान के अवतार से ही है। भक्त प्रह्लाद की कथा के अलावा अन्य किसी भी अवतार की कथा का पूरा विवरण ग्रंथ साहिबजी में नहीं आया है।

(1) पहली बार पूरी कथा 1133वें पन्ने पर गुरु अमरदास जी के शब्दों में आती है। प्रह्लाद को गुरु के यहां पढ़ने भेजा जाता है—पर प्रह्लाद का मन तो हरि नाम में रमा है। वे अपने शिक्षक से कहते हैं कि मेरी पाटी पर तो केवल हरि, गोविन्द और गोपाल नाम लिख दो। और कोई भी चीज मनुष्य को मृत्यु के जाल से नहीं बचा सकती है।

"मेरी पटीआ लिखहु हरि गोविन्द गोपाल ॥ दूजे भाई फाथे जम जाल ॥"

उसके गुरु उसके पिता दैत्यराज हिरण्यकश्यप से शिकायत करते हैं कि प्रह्लाद कहने मे नहीं है। खुद बिगड़ा है और दूसरे विद्यार्थियों को बिगाड़ रहा है। प्रह्लाद की मां उसे समझाती है कि बेटा राम नाम, हरि नाम छोड़कर अपनी जान की रक्षा कर। प्रह्लाद के न मानने पर पिता उसे अपने हाथ से तलवार लेकर सभा में मारने के लिये उद्यत होता है और उससे पूछता है कि बताओ तुम्हारा हरि कहां है, जो तुझे बचाले। तभी सभा के एक चट्टान के खंभ से भयानक रूप धारण किये हुये नरसिंह अवतार के रूप में परमात्मा प्रकट हो जाते है और अपने नाखूनों द्वारा हिरण्यकश्यप का वध करके प्रह्लाद की रक्षा करते हैं।

"हाथि खड़गु धाइआ अति अहंकारि ॥ हरि तेरा कहा तुझु लए उबारि ॥
खिन महि भैआन रूप निकसिआ थम्ह उपाडि ॥ हरणाखसु नखी बिदरिया
प्रह्लादु लीआ उबारि ॥
संत जना के हरि जीउ कारज सवारे ॥ नानक राम नामि संत निसतारे ॥"

(2) गुरु अमरदासजी की ही वाणी में दूसरी बार 1154वें पन्ने पर आई कथा में प्रह्लाद अपने पिता के पूछने पर निर्भय होकर बतलाता है कि मेरा परमात्मा सब जगह हैं मैं जिधर देखता हू वहीं सर्वत्र समाया हुआ है। और नरसिंह रूप धारण कर परमात्मा अवतरित होते हैं :

"पिता प्रह्लाद सिउ गुरज उठाई ॥ कहां तुम्हारा जगदीस गुसाई ॥
जगजीवनु, दाता अंति सखाई ॥ जह देखा तह रहिआ समाई ॥

थंम्हु उपाडि हरि आपु दिखाइआ ॥ अहंकारि दैतु मारि पचाइअ ॥
भगता माने आनुंद बजी बधाई ॥ अपने सेवक कउ दे वडिआई ॥ (1154 म 3)
प्रह्लाद के कारजि हरि आपु दिखाइआ ॥ भगता का बोलु आगै आइआ ॥"
(1154 म 3)

इस कथा में गुरु जी पुराणों में वर्णित इस कथा को अधिक विस्तार से बतलाते हुए कहते हैं कि नरसिंह रूप में अवतरित भगवान इतने क्रोधित हो उठे थे कि हिरण्यकश्यप के वध से भी उनका क्रोध शान्त नहीं हुआ। सभी देवता भगवान के कोप से भयभीत लक्ष्मी जी की शरण में गये। पर उनका भी साहस नरसिंह भगवान के पास जाने का नहीं हुआ। तब स्वयं भक्त प्रह्लाद नरसिंह भगवान के चरणों में आ लगा। और तभी भक्तों के कष्टो से कुपित भगवान का क्रोध शान्त हुआ। नानक जी कहते हैं कि परमात्मा अपने भक्तों का कारज सिद्ध करने के लिये सदैव अवतरित होता है :

"देव कुली लखिनी कउ करहि जैकारु॥ माता नरसिंह का रूपु निवारू॥
लखिमा भउ करै न साकै जाई ॥ प्रह्लादु जनु चरणी लागा आई ॥
भगता का अंगीकारू करदा आइआ। करतै अपना रूपु दिखाइअ ॥" (1154 म 3)

(3) संत नामदेव जी की वाणी में भगवान विष्णु के नरसिंह अवतार की कथा ग्रंथ साहिबजी के 1165 पृष्ठ पर आती है। कथा वही है, भाव भी वही है, पर वाणी की भिन्नता कथा में मानों एक नए रस का प्रवाह करती है। प्रह्लाद के गुरु उसके पिता हिरण्यकश्यप से शिकायत करते हैं कि प्रह्लाद राम नाम का जप करता है और हृदय में हरि सिमरन धारण किये हैं। राम नाम के कीर्तन द्वारा दूसरे साथियों को भी बिगाड़ रहा है। मां के समझाने पर भी प्रह्लाद हरि भजन नहीं छोड़ता। अन्तः उसे मार डालने का निर्णय लिया जाता है। तब हाथ में तलवार लेकर मारने को उद्यत हिरण्यकश्यप को पिताम्बरधारी भगवान विष्णु नरसिह रूप में खम्भ में दिखलाई देते हैं और वह उनके द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है :

"राम कहैं कर ताल बजावै चटिअ सभै बिगारै ॥ राम नाम जपिबो करै ॥
हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै ॥.....
गिरि तर जल जुआला भै राखिओ राजा रामि माइआ फेरी ॥" (1165 नामदेव)

भगवान राम ने अपनी माया का ही स्वभाव बदल दिया और आग, पानी, पर्वतों ओर जगलों में प्रह्लाद को मारने के सब प्रयत्न निष्फल हो गये। और जब उसे मारने के लिये हाथ में तलवार लेकर स्वयं हिरण्यकश्यप खड़ा हुआ तब क्या हुआ।

"काढि खड्ग, कालु भै कोपिओ मोहि बताउ जु तुहि राखै ॥
पीत पीतांबर त्रिभवण धणी थंम माहि हरि भाखै ॥
हरनाखसु जिनि नखह बिदारियो सुरि नर कीए सनाथा ॥
कह नामदेउ हम नरहरि धिआवहु राम अभै पद दाता ॥" (1165)

(4) पृष्ठ 1194 पर भक्त कबीर जी की वाणी में हम पूरी प्रह्लाद कथा नीचे दे रहे हैं वाणी सरल है और सहज ही है

"प्रह्लाद पठाए पडन साल ॥ संगि सखा बहु लीए बाल ॥
मो कउ कहा पढावसि आल जाल ॥ मेरी पटिआ लिखि देहु श्री गोपाल ॥
नहीं छोडउ रे बाबा राम नाम ॥ मेरा अउर पढन सिउ नहीं कामु ॥
संडे मरकै कहिओ जाइ ॥ प्रह्लाद बुलाए बेगी धाइ ॥
(संडा और मरका प्रह्लाद के शिक्षक थे)
तू राम कहन की छोडु बानि ॥ तुझु तुरतु छडाउ मेरी कहिओ मानि ॥
मो कउ कहा सतावहु बार बार ॥ प्रभि जल थल गिरि कीए पहार ॥
इकु राम न छोडउ गुरहि गाए ॥ मोहि कउ घालि जारि भावै मारि डारि ॥
काढि खडगु कोपिओ रिसाइ ॥ तुझ राखनहारो मोहि बताइ ॥
प्रभ थंम ते निकसे कै विसथार ॥ हरनाखसु छेदिओ नख बिदार ॥
ओइ परम पुरख देवाधि देव ॥ भगति हेति नरसिंह भेव ॥
कहि कबीर को लखै न पार ॥ प्रह्लाद उधारे अनिक बार ॥ (1194 कबीर जी)

कबीर के शब्दों में सब देवताओं का देव परम पुरुष परमात्मा भक्त प्रह्लाद के कारण नरसिंह रूप में अवतरित हो गया।

43.3 अब हम ग्रंथ साहिबजी के पृष्ठ 1082/83 से एक ऐसा अतुलित शब्द दे रहे है जिसकी प्रत्येक पउड़ी में परमात्मा के निर्गुन और अवतार भाव का साथ-साथ स्पष्टतम और अत्यन्त भावपूर्ण वर्णन है। सारे ग्रंथ साहिबजी में यह अपनी तरह का अकेला ही शब्द है। इसकी 21 पौडियों में से हम 13 पोडी नीचे दे रहे हैं :

(1) "अचुत पारब्रह्म परमेसुर अंतरजामी ॥ मधुसूदर दामोदर सुआमी ॥
रीखीकेस गोवरधन धारी मुरली मनोहर हरि रंगा ॥1॥

"यानी हे परमात्मन् तुम अविनाशी हो, तुम परब्रह्म हो, तुम परमेश्वर हो, और तुम ही अतरयामी हो; यहां तब इस पाउडी में परमात्मा के निर्गुन स्वरूप का वर्णन है। और उसी परब्रह्म के अवतार भाव का वर्णन इसी पउड़ी के उत्तर भाग में इस प्रकार है, "हे परमात्मन् तुम ही कृष्ण रूप में मधु राक्षस का वध करने वाले हो, तुम ही दामोदर और सबके स्वामी हो। हे हरि तुम ही ऋषिकेश हो, तुम ही ने गोवर्धन पर्वत को धारण किया है और तुम ही मुरली धारण किये अपनी मनोहर छवि से अनेक लीलाऐं कर रहे हो।

आगे की पउडियों में इसी प्रकार परब्रह्म के निर्गुन रूप के दिग्दर्शन के साथ-साथ उनके अवतार भाव का निरूपन किया है।

(2) "मोहन माधव कृष्ण मुरारे ॥ जगदीसपुर हरि जीउ असुर संघारे ॥
जगजीवन अविनासी ठाकुर घट-घट वासी हैं संगा ॥" 2

उस पउड़ी में भगवान कृष्ण को ही घट-घट वासी परमात्मा दिखलाया है।

(3) "धरणीधर ईस नरसिंह नाराइण ॥ दाढा अग्रे प्रिथमि धराइण ॥
वाबन रूप कीआ तुधु करते सभ ही सेती है चंगा ॥ 3

इसमें सब जीवों में बसने वाले के नरसिंह बाराह और वामन अवतारों की चर्चा है

(4) "श्री रामचंद्र जिस रूप न रेखिआ ॥ बनवाली चक्रपाणि दरस अनूपि
नेत्र मूरति है सहसा इकु दाता सभ है मंगा ॥" 4

इसमें भी "सहस नेत्र" यानी अनन्त विस्तार वाले निर्गुन ब्रह्म के राम और चक्र
ा धारी भगवान कृष्ण के अवतारों को स्मरण किया गया है।

(5) "भगति बछलु अनाथह नाथे। गोपी नाथु सगल है साथे ॥
वासुदेव निरंजन दाते बरनि न साकउ गुण अंगा ॥ 5

(6) "मुकंद मनोहर लखमी नाराइण ॥ द्रोपदी लजा निवारि उधारण ॥
कमलाकंत करहि कतूहल अनद विनोदी निहसंगा ॥ 6

(7) "अमोघ दर्शन आजूनी संभउ ॥ अकाल मूरति जिसु कदे नाही खउ
अविनाशी अविगत अगोचर सभ किछु तुझ ही है लगा ॥ 7

इसमें परमात्मा के निर्गुन स्वरूप के लक्षण का वर्णन है।

(8) "सीरंग बैकुंठ के वासी ॥ मछु कछु कूरम अगिआ अउतरासी ॥
केसव चलत करहि निराले कीता लोडहि सो होइगा ॥ 8

(9) "निराहारि निरवैरू समाइअ ॥ धारि खेलु चतुरभुज कहाइआ ॥
सावल सुंदर रूप वणावहि वेणु सुनत सभ मोहैगा ॥ 9

इस पउड़ी में सर्वत्र व्याप्त निर्गुण परमात्मा को ही चतुरभुज विष्णु रूप में और ि
सुरद कृष्ण रूप में वंशीवादन के द्वारा समस्त जगती को मोहित करते हुए दिखल

(10) "बनमाला विभूखन कमल नैन ॥ सुंदर कुंडल मुकुट बैन ॥
संख चक्र गदा है धारी महा सारथी संतसंगा ॥" 10
"पीत पीतंबर त्रिभवण धणी ॥ जंगनाथु गोपालु मुखि भणी ॥
सारिंगधर भगवान बीठुला मैं गणत न आवै सरवंगा ॥" 11

(11) "निरंकारू अछल अडोलो ॥ जोति सरूपी सभ जगु भउलो ॥
सो मिलै जिसु आपि मिलाए आपहु कोइ न पावैगा ॥" 14

यहा माया से अत्यंत परे परब्रह्म के निर्गुन स्वरूप का वर्णन है, जिसको कोई
कृपा बिना नहीं पा सकता है।

(12) "आपे गोपी आपे काना ॥ आपे गउ चरावै बाना ॥
आपि उपावहि आपि खपावहि तुधु लेपु नहीं इकु तिलु रंगा ॥" 15

वह परमात्मा स्वयं ही गोपी है और स्वयं ही कृष्ण भी। वह आप ही कृष्णावता
मे गायों को चराता है। वह परमात्मा सब को उत्पन्न करता है और आप ही
ो समेट लेता है। इतना सब करते हुए भी वह जगती की इस रंगमयी लीला से ल
ायमान नहीं होता।

ग्रंथ साहिबजी में वर्णित अवतार भाव की चर्चा स्वयं गुरुओं के स्वरूप की च
अधूरी ही रह जायेगी पाचवें गुरु अर्जुनदेव जी ने ग्रथ साहिबजी का सम

करते समय ग्यारह श्रद्धालु भाटों के 123 पदों को भी ग्रंथ साहिबजी में स्थान दिया। ग्रंथ मे पन्ना 1389 से 1409 तक इन्हीं भाटों की वाणियां हैं जिसमें गुरु नानक देव जी, गुरु अगद देव जी, गुरु अमरदास जी, गुरु रामदास जी और स्वयं गुरु अर्जुन देव जी, इस प्रकार पाच प्रथम सिक्ख गुरुओं के दिव्य आध्यात्मिक स्वरूप का वर्णन किया है। ग्रंथ साहिबजी का अभिन्न अंग होने के कारण इन भाटों की वाणियों का भी अन्य वाणियों के समान ही महत्व है। स्वयं गुरुओं से सम्बन्धित होने के कारण तथा ग्रंथ के समापन भाग का अंग होने के कारण इनका महत्व मेरे विचार से और भी अधिक हो जाता है। श्रद्धालु भक्तों को गुरुओ के सच्चे आध्यात्मिक स्वरूप के दर्शन का इन वाणियों से अधिक प्रमाणिक आधार अन्य नहीं मिल सकता। इनको मात्र भाटों की वाणियां मानने का अर्थ तो स्वयं गुरुओं और ग्रथ साहिबजी को ही नकारना हो जायेगा।

कलियुग में नानक देव जी उन्हीं परमात्मा के अवतार हैं जो सतयुग में बलि का दमन करने के लिये वामन अवतार में प्रकट हुये। गुरु नानक जी वही हैं जो त्रेता में रामरूप में और द्वापर में कृष्ण रूप में कंस विनास के लिये अवतरित हुए।

"सतजुगि तै माणिओं छलिओ बलि बावन भाइयो।
त्रेते तै माणिओ रामु रघुवंश कहाइओ॥
दुआपरि क्रिसन मुरारि कंस किरतारथु किओ॥
अग्रसैण को राजु उभै भगतह जन दीओ॥
कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगद अमरु कहाइओ॥" (1390)

43.5 आगे गुरु नानक जी सम्बन्धित सवैयों में दिखाया गया है स्वयं ब्रह्मा जी, महादेव जी इन्द्र आदि देव गण, सभी वेद शास्त्र, मांधाता जेसे राजऋषि, सनकादि, नारद जी और व्यास जैसे सिद्ध योगी, भक्त प्रह्लाद जैसे भक्त जन गुरु नानक देव जी का गुण गा रहे हैं।

"गुण गावहि पायालि भगत नागादि भुयंगम॥
महादेउ गुण रवै सदा जोगि जति जगम॥
गुण गावै मुनि ब्यासु जिनि वेद व्याकरण बीचारिअ॥
ब्रह्म गुण उचरै जिनि हुकमि सभ स्रिसटि सवारीअ॥"
...."कवि कल सुजसु नानक गुर घटि घटि सहजि समाइयो॥" (1390)

"कल" कवि जी कहते हैं कि मैं भी उस गुरु नानक साहिबजी का यश गाता हूं, जो प्रत्येक प्राणी के हृदय में, घट-घट में ब्रह्म रूप में सहज ही समाये हुए हैं। यहां स्वयं गुरु नानक देव जी महाराज ब्रह्म के साथ एकीभाव को पराप्त होकर परमात्मा के निर्गुन और अवतारी स्वरूप में युग-युग में लोक कल्याण के लिये अवतरित हो रहे हैं

चूंकि स्वयं गुरु नानक जी ही की परमाज्योति अन्य गुरुओं में गुरु-शिष्य परम्परा से प्रकाशित होती है, इसलिये ऊपर कहा गया कि कलियुग में कभी गुरु अंगद कभी गुरु अमरदास आदि नाम से प्रगट हो रहे हैं।

कवि "कलसहार" कहते हैं कि :

गुरु अगददेव जी भगवान कृष्ण के रूप हैं जिनकी कीर्ति सातों दीपों में फैली हुई है जिनका दर्शन हरि दर्शन के समान है

"कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत गुरु परसि मुरारि ॥
...हरि हरि दरस समान आतमा बंतगिआन जाणीअ अकल गति गुर परवान ॥"
(1391)

43.6 तीसरे गुरु अमरदास जी के बारे में भाटों की वाणी के माध्यम से ग्रंथ साहिबजी कहते हे कि गुरु अमरदास जी के हृदय में वही सनातन भगवत नाम प्रकाशित हुआ है, जिसे स्मरण कर गोरखनाथ आदि नौ सिद्ध नाथों ने संसार सागर को तरा है, जिसे स्मरण कर शिव सनकादि ऋषि और महाराजा अम्बरीष स्मरण कर भवसागर से तर गये और जिस नाम के स्मरण द्वारा ऊधव जी और अक्रूर जी और कलियुग में भक्त त्रिलोचन, नामदेव और कबीर जी ने अपने समस्त पापों को दूर किया है। हे भाई, तू भी उसी हरि नाम को स्मरण कर

"सोई नामु सिवरि नव नाथ निरंजनु सिव सनकादि समुधारिआ ॥
चवरासीअ सिध बुध जितु राते अंबरीक भवजलु तरिआ।
ऊधव अक्रूर त्रिलोचन नामा कलि कबीर किलबिख हरिआ ॥
सोई नाम अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥" (1393)

फिर आगे चलकर गुरु अमरदास जी की महिमा का वर्णन करते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं :

"आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥
निरंकारि आकारु जाति जब मंडलि करियउ ॥
जह कह तह भरपुरु सबदु दीपक दीपायउ ॥
जिह सिखह संग्रहिओ ततु हरि चरण मिलायउ ॥"

अर्थात हे भाई स्वयं नारायण अपनी सत्ता धारण कर जगत में प्रगट हुआ है, अवतरित हुआ है। निरंकार परमात्मा ने स्वयं गुरु का अवतार धार कर सारे जगत को, सारे मंडल को, प्रकाशित किया है। जो परब्रह्म परमात्मा परिपूर्ण है, उसे सद्गुरु ने "सबद" रूपी ज्ञान दीप से प्रगट किया है। जिन शिष्यों ने इस नाम को ग्रहण किया है, उन्हें गुरु अमरदास जी ने हरि चरणों में मिला दिया है।

43.7 ग्रंथ साहिबजी में भाटों द्वारा रचित 123 सवैयों में से लगभग आधे यानी 60 सवैये चौथे गुरु रामदास जी महाराज से सम्बन्धित हैं। गुरु रामदास जी को सदैव परमात्मा को अपने हृदय में धारण करने वाला और उन्हें प्राप्त करने वाला "राजयोग" धारण करने वाला बतलाया है। उनका अवतारी रूप दर्शाते हुए ग्रंथ साहिबजी में "नलह" भाट की वाणी में इस प्रकार आता है :

(1) "अब राखहु दास भाट की लाज ॥
जैसी राखी लाज भगत प्रहिलादि की हरनाखस फारे कर काज ॥
फुनि द्रोपदी लाज रखी हरि प्रभ जी छीनत बसत्र दीन बहु साज ॥
सोदामा अपदा ते राखिआ गनिका पढत पूरे तिह काज ॥
स्री सतिगुर सुप्रसंन कलजुग होइ राखहु दास भाट की लाज ॥" (1400)

अर्थात हे सतगुरु रामदास जी अब आप उसी प्रकार इस भाट की लाज रखें जैसे

आपने प्रह्लाद और द्रोपदी की लाज रखी थी, जैसे भक्त सुदामा की रखी थी, जैसे राम नाम पढती गणिका की लाज रखी थी। इस प्रकार इस पउड़ी में गुरु रामदास जी को परमात्मा के नरसिंह और कृष्णावतार से अभिन्न दिखलाया है।

(2) गुरु रामदास जी को साक्षात परब्रह्म परमात्मा का प्रत्यक्ष रूप बतलाते हुए इस प्रकार आता है :

"परतखि देह पारब्रह्म सुआमी आदि रूपि पोखण भरणं ॥
सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की श्री रामदास तारण तरणं ॥" (1401)

अर्थात जो परब्रह्म सबका स्वामी और सबका आदि रूप यानी मूल कारण है, और सबका भरण पोषण करने वाला है, उसका प्रत्यक्ष रूप गुरु रामदास जी ही हैं।

(3) रघुकुल भूषण भगवान राम जिनकी शरण की कामना मुनिजन भी करते हैं, गुरु रामदास जी उन्हीं के स्वरूप हैं :

"रघुवंसि तिलकु सुंदरु दसरथ धरि मुनि बंछहि जा की सरणं ॥
सतिगुरु गुरु सेवि अलग गति की श्री रामदासु तारण तरणं ॥" (1401/2)

(4) भगवान कृष्ण के रूप में गुरु रामदास जी का चित्रण भाटों की वाणी में इस प्रकार आया है :

"वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहि जीउ ॥"
कमल नैन मधुर बैन कोटि सैन संग सोभ कहत मा जसोदा जिसहि दही भातु खाहि जीउ ॥
देखि रूपु अति अनूप महा मई किंकनी सबद झनकार खेलु पाहि जीउ ॥
सति साचु श्री निवासु आदि पुरूख सदा तुही वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहि जीउ ॥" (1402)

वाहिगुरु रामदास जी। आपने ही द्वापर युग में कृष्ण रूप धारण किया। जिनके कमल जैसे नयन हैं, मधुर वाणी है, और जो कोटि-कोटि रूप में शोभते हैं। आप वही कृष्ण हो जिसे माता यशोदा दही भात खाने के लिये दुलारती थी तथा जिनका अति शोभायमान रूप देखकर मोहित हो मगन हो जाती थी। और जो बाल रूप में कमर और पाओं में पड़े नुपुरों की झंकार करते, क्रीड़ा करते, हुए सबको मोह लेते थे। हे परम पुरुष परमात्मा के रूप! आप आश्चर्य रूप हो। हे गुरु रामदास जी आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

(5) "पीत वसन कुंद दसन प्रिया सहित कंठ माल मुकटु सीसि मोर पंख चाहि जीउ ॥
बेवजीर बडे धीर धरम अंग अलग अगम खेलु कीआ आपणे उछाहि जीउ ॥
... सति साचु श्री निवासु आदि पुरख सदा तुही वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहि जीउ ॥" (1402/1403)

हे सद्गुरु! आप ही पीत वसन धारी कृष्ण हो, जिनकी दंतावली कुंद पुष्प के समान श्वेत है आप ही अपनी प्रिया श्री राधा के साथ कण्ठ में वैजयंतीमाला और माथे पर मोर पखों का मुकुट धारण कर लीला किया करते थे हे गुरु जी आप सत्य स्वरूप हो

साक्षात लक्ष्मी आप में ही निवास करती हैं। आप ही आदि पुरुष पुरूपोत्तम हो। हे गुरु आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

(6) "राम रवण दुरत दवण सकल भवण कुसल करण सरब भूत आपे ही देवाधि देव सहजस मुख फनिंद जीउ ॥

जरम करम मछ कछ हुअ बराह जमुना कै कूलि खेलु खेलिओ जिनि गिंद जीउ ॥

नामु सारु हीए धारु तजु विकारु मन गंयद सतिगुरु सतिगुरु सतिगुरु गुविद जीउ ॥" (1403)

हे गुरु रामदास जी आप राम नाम में लीन रहने वाले, पापों को दूर करने वाले, समस्त लोकों का कल्याण करने वाले, सब भूतों में बसने वाले और शेष नाग रूप भी आप ही हे। आप ही ने मत्स्य, कच्छप, वाराह आदि अवतारों में अनेक लीलायें कीं। आप ही कृष्ण अवतार मे यमुना के किनारे बाल सखाओं के साथ कन्दुक (यानी गेंद) का खेल खेला करते थे। गयद कवि कहते हैं कि हे मन तू ऐसे गोविंद रूप सदगुरु रामदास जी को हृदय में धारण करो।

(7) "तू सतिगुरु चहु जुगी आपि आपि परमेसरु ॥
सुरि नर साधिक सिध सिख सेवंत धुरह धुरु ॥
आदि जुगादि अनादि कला धारी त्रिहु लोअह ॥
अगम निगम उधरन जरा जंमिहि आरोअह ॥" (1406)

हे सद्गुरु रामदास जी! आप चारों युगों में स्वयं ही परमेश्वर का रूप हो। देवता, मनुष्य, सिध, साधक आपकी ही सेवा करते आये हैं। हे गुरु! आप सृष्टि के आदिकाल से तीनों लोकों में अपनी पूर्ण सत्ता से विराजमान हो। आप वेद, शास्त्रों, जन्म-मृत्यु जरा आदि से अत्यन्त परे हो।

43 8 गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने जो सिक्खों के पांचवें गुरु थे, अमृतसर में रामसर के किनारे सन् 1601 से आरम्भ कर सन् 1604 में ग्रंथ साहिबजी का संकलन और सम्पादन पूर्ण किया। इन्होंने ही इन 11 भक्त भाटों की वाणी को ग्रंथ साहिबजी में स्थान देकर उसे गुरुवाणी का अभिन्न अंग बनाया।

ग्रंथ साहिबजी में भाटों ने इनकी उपमा विदेह जनक से और भगवान कृष्ण के प्रिय सखा और "नर" अवतार माने जाने वाले अर्जुन से दी है।

"जनक राजु बरताइआ सतजुगु आलीणा ॥" (1407)

अर्थात हे गुरु अर्जुनदेव जी। आपने जनक के समान आचरण से कलियुग में भी सतयुग को प्रगट किया।

"गुरु अरजुन पुरखु प्रमाणु पारथउ चालै नहीं ॥" (1408)

हे गुरु अर्जुनदेव जी! आप साक्षात परमात्मा द्वारा स्वीकृत हो और पार्थ अर्जुन की तरह असीम धैर्य धारण करने वाले हो।

गुरु अर्जुन देव जी ने बाल अवस्था में ही गुरु से ज्ञान प्राप्त कर ब्रह्म साक्षात्कार कर लिया था। "तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ ॥" (1407)

गुरु महिमा सम्बन्धित मथुरा भाट के एक बहुत ही सरस पद के साथ हम इस प्रसग

को समाप्त करते हैं। इस पद मे कहा गया है कि जब अत्याचारों के कारण जग में चारों ओर अधकार और निराशा छा गई थी तब गुरु अर्जुन देव जी का अवतार हुआ। उन्होंने भगवत् नाम का अमृत पिलाकर करोड़ों दुखों का अंत कर दिया।

ऐ प्रियजनों! गुरु की राह से मत भटक जाना। हरि और गुरु के कोई भी भेद नही है। उन्हें हरि का रूप ही जानना। पूर्ण ब्रह्म हरि ने प्रत्यक्ष आकर गुरु अर्जुन देव जी के हृदय मे स्वयं निवास किया है।

"जग अवरू न याहि महातम्म में अवतारू उजागरू आनि कीअउ ॥
तिन के दुख कोटिक दूरि गए "मथुरा" जिन्ह अंम्रित नामु पीअउ ॥
इस पधति ते मत चूकहि रे मन भेदु विभेदु न जान कीअउ ॥
परतछि रिदै गुर अर्जुन कै हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ ॥" (1409)

यह सर्वविदित है कि जब इस्लाम के घोर अत्याचारों से सारा भारत पीड़ित और दुखो के अंधकार में डूबा हुआ था, तो इस सर्व-देशी पीड़ा के अंत की शुरूआत गुरु अर्जुनदेव जी ने नृशंस जहांगीर के हाथों अपने अनुपम बलिदान से की थी।

43 9 इस्लाम में अल्लाह के अवतार की कोई भी कल्पना नहीं है और न ही उसके सगुन-निर्गुन रूप की ही। भाषा, भाव और त्तवदर्शन की दृष्टि से ग्रंथ साहिबजी के अवतार संबंधी भाव को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वर्णित करने वाली एक भी आयत कुरान शरीफ़ में नहीं है।

44 0 अवतार भाव से सम्बन्धित एक बात पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता है। ग्रथ साहिबजी में और वेद शास्त्रों में अवतार केवल सर्वव्यापी पारब्रह्म परमात्मा का ही बतलाया गया है। अन्य किसी भी देवता का अवतार संभव नहीं माना गया है। वे केवल अश के रूप में भगवत लीला में हाथ बंटाने के लिये भगवत् इच्छानुसार सहायक के रूप में उत्पन्न हो सकते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि अवतार माया को अपने अधीन रखने वाला और उसे अवतरित अवस्था में भी अपने अधीन रखते हुए केवल मायापति सर्वव्यापी परब्रह्म परमात्मा ही ले सकते हैं। अन्य सब देवता या देव शक्तियां स्वयं माया के आधीन होने के कारण अवतार लेने में असमर्थ हैं।

यही कारण है कि ब्रह्मा, इंद्र, वरुण, अग्नि, सोम आदि देवताओं के अवतार की कोई भी कल्पना न तो वेद शास्त्रों में है और न ही ग्रंथ साहिबजी में। ये सब देव शक्तियां सीमित शक्तियां हैं। और इस आलेख के पिछले कई अध्यायों में हमने यह बतलाया है कि कुरान शरीफ़ में वर्णित अल्लाह के लक्षणों में ग्रंथ साहिबजी द्वारा वर्णित परमात्मा के सर्वव्यापकता या घट-घटवासी सम्बन्धित लक्षण नहीं है। इस प्रकार ग्रंथ साहिबजी के मापदण्ड और सिद्धातों के अनुसार इस्लाम में अवतार भाव की कल्पना एक असम्भव सी बात है।

44 1 हरि, राम और कृष्ण नाम की चर्चा बिना ग्रंथ साहिबजी की विवेचना अधूरी ही रह जायेगी। ग्रंथ साहिबजी में हरि शब्द का सर्वाधिक यानी लगभग 10,000 बार प्रयोग हुआ है। राम, राजाराम, रघूनाथ आदि नामों के साथ राम नाम लगभग 2300 बार ग्रंथ साहिबजी में आया है और कृष्ण नाम अपने अन्यप्रमुख नामों जैसे गोविन्द गोपाल माधव मुरारी वासुदेव मोहन बनवारी केसव मधुसूदन गिरधारी आदि नामों के साथ 1500 से अधिक बार ग्रथ

साहिबजी में लिया गया है। इन सब नामों की काफी सुन्दर झांकियां हम ग्रंथ साहिबजी संबंधित अन्य अध्यायों में किसी न किसी रूप में देख चुके हैं। यहां हमारा उद्देश्य ग्रंथ साहिबजी में वर्णित इन नामों की महत्ता को विशिष्ट रूप से दर्शाने का है। इन तीनों नामो का वर्णन ग्रंथ साहिबजी में सर्वव्यापी परब्रह्म परमात्मा के रूप में तथा उसके अवतारी सगुन रूप में भी हुआ है।

44.2 इन तीनों नामों के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ग्रंथ साहिबजी ने इन तीनों नामों को पर्यायवाची शब्दों के रूप में एक ही भाव दर्शाने के लिये किया है। इसका मुख्य कारण यह है कि ग्रंथ साहिबजी की दृष्टि में हरि, राम और कृष्ण नाम परमात्म तत्व या परब्रह्म के निकट तक वाचक ओंकार के समान ही वाचक हैं। परमात्म् नाम सिमरन में तो भक्तों के लिये इन्हीं नामों का निरतर जप सहजतम साधन के रूप में ग्रंथ साहिबजी ने स्वीकार किया है। नारायण, विष्णु कमलापति, चतुर्भुज आदि भगवान विष्णु के नामों को भी ग्रंथ साहिबजी हरि, राम और कृष्ण नामों का पयार्यवाची माना है। इसका कितना सहज और सुन्दर उदाहरण गुरु तेगबहादुर जी महाराज के इस 'सबद' में प्रत्यक्ष हैं :

हरि को नामु सदा सुखदाई
जो को सिमरि अजामलु उधारिओ गनिका हू गति पाई
पंचाली को राज सभा में राम नाम सुधि झाई।
ता को दुःखु हरिओ करुणामै अपनी पैज बढ़ाई।
जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइयो सहाई।
कहु नानक मैं इही भरोसै गही आन सरनाई॥ (1008 म. 9)

इस सबद में हम देखते हैं कि मुख्य पंक्ति हरि नाम जप की महिमा से संबंधित है कि हरि नाम सिमरन से परमानन्द की प्राप्ति सम्भव है। और हरि नाम की महिमा का गान करते हुए गुरु महाराज जी उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जिस नाम सिमरन से अजामिल जैसा घोर पातकी भी भव सागर से पार हो गया। हम सब जानते हैं, कि अजामिल ने हरि नाम का नहीं 'नारायण' नाम का सिमरन किया था। ग्रंथ साहिबजी ने स्वयं अजामिल द्वारा नारायण जप की बात अन्य स्थानों पर कही है।

और यही सबद हरि नाम जप से पुराण वर्णित एक वेश्या जैसी पत्ति नारी के उद्धार की भी बात बतलाता हैं। हम सभी को ज्ञात है कि वह वेश्या अपने तोते को राम नाम रटवाते-रटवाते स्वयं भी राममयी होकर भवसागर से पार हो गई थीं।

और पंचाली द्रोपदी ने तो दुष्ट दुर्योधन की सभा में अपने चीर हरण के दारुण संकट के अवसर पर 'कृष्ण' नाम का सिमरन किया था और भगवत कृपा से तुरंत ही उस घोर दुरावस्था से पार हो गई थी। सो ग्रंथ साहिबजी ने इन तीनों के उद्धार का कारण जो हरि सेमरन बतलाया है उसका एकमेव कारण यही है कि हरि, राम, कृष्ण, विष्णु, नारायण आदि नाम ग्रंथ साहिबजी की दृष्टि में और वेद, पुराण और शास्त्रों की दृष्टि में भी एक ही रूप है, एक ही तत्व के परिपादक हैं साक्षात् परमात्म रूप ही हैं।

"हरि"

हरि शब्द ग्रंथ साहिबजी में मानों छाया हुआ है और परमात्मा दृष्टि से उसका हर प्रयोग हुआ है। आइये पहले हम ग्रंथ साहिबजी में हरि शब्द के परब्रह्म स्वरूप क करे

सो पुरख निरंजनु हरि पुरख निरंजनु हरि अगमाअगम अपारा।
सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सच्चे सिरजणहारा॥
... तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि हरि एको पुरखु समाणा॥
... तूं पारब्रह्म बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि बखाना॥ (348 म.1)

हरि अगम अगोचर पारब्रह्म है (171 म. 4)

बिनबंति नानक करहु किरपा पारब्रह्म हरि राइआ॥

अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको दुज, अवरू न कोई॥ (445 म. 5)

उरधारि हरि हरि पुरखु पूरन पारब्रह्म निरंजनो॥ भे दूरि करता पाप हरता दुसह दुःख भव खंडनो॥

हरिजी सूखमू अगमू है किंतु विधि मिलिआ जाई॥ (756 म. 3)

वैद्यं पारब्रह्म परमेश्वर आराधि नानक हरि हरि हरे॥ (1358)

सभ जोति तेरी जगजीवना तू घट घटि हरि रंग रंगना॥ (1313 म. 4)

हरि जलि थलि महीअलि भरपूरि दूजा नाहि कोई॥ (89 म. 4)

आदि पुरख करतार करण कारण सभ आपे॥
सरब रहिओ भरपूरि सगल घट रहिओ बिआपे॥
ब्यापतु देखीऐ जगति जाने कउनु तेरी गति सरब की
रख्या करै आपै हरि पति॥ अविनासी अविगत आपे आपि उतपति॥
एकै तूही एकै अन नाही तुम मति॥
हरि अंतु नाही पारावरु कउनु है करै विचारु जगत पिता है सब प्रान को अधारु॥
जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रह्म समसरि एक जीह किआ बखाने॥ (1385 म.5)

ऊपर दिये सभी पद हरि सबद के परब्रह्म स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हैं। यह हरि पूर्ण, पुरुष, परब्रह्म परमात्मा, घट-घट व्यापी है, ज्योतियों की परम जोति है, समस्त का जीवनाधार, अविनाशी और अनन्त है। वह हरि ही समस्त सृष्टि का कर्ता, कारण और कार्य भी है पर स्वयं उसकी उत्पत्ति का कोईकारण न होने के कारण वह स्वयभू वय ही प्रगट हुआ है, स्वयं सिद्ध त्तव है। और सब पापों का नष्ट करने वाला और स्वय स्त पापों से परे निरंजन है। ग्रंथ साहिबजी का हरि निरगुन और सगुन दोनों ही रूप रगुण सरगुण हरि हरि मेरा कोई है जीउ आणि मिलावै जीउ॥" (98 म. 5)

पर इस प्रकार सर्वव्यापी निरजन और निर्गुन रूप होते हुए भी वह हरि स्वरूप परब्रह्म

परमात्मा भक्तों के कष्टों को हरन के लिये सुगन रूप धारण कर अवतरित होता रहता है

जिउ प्रहिलादु हरणाखसि ग्रासिओ हरि राखिओ हरि सरना ॥
कवन कवन की गति मिति कहीए हरि कीए पतित पवना ॥
ओहु ढोवे ढोर हाथि चमु चमरे हरि उधारियों परिओ सरना ॥
प्रभदीन दयाल भगत भव तारन हम पापी राखु पपना ॥ (799 म. 3)

44.4 गुरु अमरदास जी कहते हैं कि हरि हिरण्यकश्यप से ग्रसित शरण आये प्रह्लाद की आपने रक्षा की। हे हरि! मैं किन-किन भक्तों के उद्धार की बात कहूं। आप शरण में आये सभी पतितों का पालन करते आये हैं। हे हरि मरे हुए पशुओं को ढोने वाला और हर समय हाथ में चमड़ा लिये रहने वाला भक्त रविदास भी आपकी शरण लेने पर भव सागर से तर गया। हे प्रभु हम जैसे पापियों का भी उद्धार करिये।

44.5 यही नहीं, "हरि नाम का महामंत्र जपने से ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र ये चारो भवसागर तर जाते हैं। अतः चारों वर्ण समान रूप से हरि जप के अधिकारी हैं। इसलिये भव सागर से पार उतरने के लिये सद्‌गुरु स्वरूप परब्रह्म का हरि नाम से स्मरण करो–

खत्री ब्राह्मण सुदू वैसू जो जापै हरि मंत्र जपैनी ॥
गुरु सतिगुरु पारब्रह्म करि पूजहू नित सेवहु दिवस सभ रैनी ॥ (800 म. 4)

क्योंकि हरि नाम रूप अमृत रस मीठा है, हे संतों! इस हरि नाम रूप रस को चखो इस रस की मिठास से अन्य सभी विषय रस तुमसे दूर भाग जायेंगे।

हरि हरि नामु अमृत हरि मीठा हरि हरि संतहु चाखि दिखहु ॥
गुरमति हरि रसु मीठा लागा तिन बिसरे सभि बिख रसहु ॥ (8001 म. 3)

और इस हरि रस रूपी मदिरा पीकर मन अपनी समस्त चपलता को छोड़ कर इसकी आनन्दमयी खुमारी में शुद्ध होकर ऐसा दिव्य निर्मलता प्राप्त कर लेता है कि फिर उस पर विषय वासना की कालिख नहीं चढ़ पाती।

माई री मन मेरो मतवारो ॥ पेखि दइआल अनद सुख पूरन
हरि रसि रपिओ खुमारो ॥ निरमल भए ऊजल जसु गावत बहुरि न होवत कारो ।
चरन कमल सिउ डोरी राचो भेटिओ पुरख अपारो ॥ (225 म. 5)

इन हरि कि आराधना और भक्ति इतनी दिव्य और प्रेममयी है कि स्वयं ब्रह्मा जी, इन्द्र आदि देवगण और सनकादि रिषि, नारद जी और शुकदेव जी जैसे सिद्ध भक्तगण उनकी अनन्य भक्ति में ही निरंतर लगे रहते हैं। फिर नानक जी उन हरि के बिना एक घड़ी भी कैसे जीवित रह सकते हैं :

"हरि बिन किउ जीवा मेरी माई ॥
सनक सनादि ब्रह्मादि इंद्रादिक भगति रते बनि आई ॥
नानक हरि बिनु घरी न जीवा हरि का नामु बड़ाई ॥ (1232 म. 1)

सनकादिक ब्रह्मादिक गावत गावत सुक प्रहिलाद ॥
पीवत अमिउ मनोहर हरि रसु जपि नानक हरि बिसमाद ॥ (1224 म 5)

जपि मन जगनाथ जगदीसरो जग जीवनो मन मोहन सिउ प्रीत
लागी मैं हरि हरि टेक सभी दिनसु सम राति ॥
हरि की उपमा अनिक अनिक अनि गुन गावन सुक नारद
ब्रह्मादिक तब गुन सुआमी गननि न जाति ॥ (1200 म. 4)

और हरि नाम से ही परा शान्ति प्राप्त की जा सकती है। इस परम सत्य की साक्षी में वेद प्रमाण देते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं :

हरि के नाम की गति ठांडी ॥
वेद पुरान सिम्रित साधु जन खोजत खोजत काठी ॥ (1219 म. 5)

इन भूमा रूप अनन्त हरि का अन्त देव भी नहीं पा सके हैं। उन हरि की भक्ति मे मुनिजन नित्य लगे रहते हैं :

"हरि निगम लहाई न भेव ॥ नित करहि मुनि जन सेब ॥ (837 म. 5)

हरि नाम की महिमा बतलाते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि यदि एक निमिष या एक क्षण के लिये हरि गुण गा लिया तो सारे बैकुण्ठ सभी प्रकार की मुक्तियां और मोक्ष का परमानन्द प्राप्त हो जाते हैं। यदि हरि नाम की कथा भी मन को को भा गई तो मानों अनेको साम्राज्यों का भोग प्राप्त हो गया :

सरब बैकुठ मुकति मोख पाए ॥ एक निमख हरि के गुण गाए ॥
अनिक राज भोग बडिआई ॥ हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥ (290 म.)

और केवल हरि हरि जपने से ही यह अगम्य भयानक संसार रूपी सागर तरा जा सकता है :

गोविन्द चरनन कउ बलिहारी ॥ भवजलु जगतु न जाई तरणा
जपि हरि हरि पारि उतारी ॥ (1198 म. 4)

और जो कोई भी हरि नाम का सेवन करेगा हरि भक्ति में लीन रहेगा वह परमात्मा हरि के साथ एक रूप हो जाएगा। गुरु नानक देव जी कहते हैं–कि ऐसे व्यक्ति धन्य हैं और ऐसे भक्तों पर वे बलिहारी जाते हैं :

जिनि सेविआ जिनि सेविआ मेरा हरिजी ते हरि रूपि समासी ॥
से धुन से धनु जिनि हरि धिआइआ जी जनु नानक तिन बलि जासी ॥
(11 म.4)

जीव को हरि के साथ एक रूप कर देने वाली यह परा भक्ति पिछले अनेक जन्मो में की गई हरि भक्ति का ही परम फल है :

"पुरब जनमि भगति करि आए गुरि हरि हरि हरि भगति जमईआ ॥
भगति भगति करते हरि पाइआ जा हरि हरि हरि हरि नामि समईआ ॥
(837 म. 4)

सो हे जीव रूपी पक्षी तु हरि नाम रूपी पंखों के सहारे इस संसार रूपी घोसलें से उड़कर परब्रह्म रूपी आकाश से जा मिल **निकसु रे पंखी सिमरि हरि पांख ॥** (204 म.5)

44 6 अन्त में हरि स्वरूप की जो प्रिया-प्रीतम भाव से ग्रंथ साहिबजी में उपासना हुई ह उससे संबंधित एक अत्यन्त मार्मिक पद हम नीचे दे रहे हैं। इस पद में हरि के निर्गुन आर सगुन रूप भाव भी बड़े सुन्दर रूप में संजोये हुए हैं :

"हरि हरि नामु अपार अमोली ॥
प्रान पिआरो मनहि चीति चितवउ जैसे प्रान तंबोली ॥
सहजि समाइओ गुरहि बताइओ रंगि रंगि मेरे तन की चोली ॥
प्रिअ मुखि लागो जउ बड़ भागो सुहाग हमारो कतहु न डोली ॥
रूप न धूप न गंध न दीपा ओति पोति अंग अंग संगि मउली ॥
कहु नानक प्रिअ रवी सुहागनि अति नीकी मेरी बनी खटोली ॥"

(822 म. 5)

और फिर इस विरह वेदना की अभिव्यक्ति इस प्रकार होती है। मेरा प्रभु सुंदर मैं सार न जाणी।

हउ हरि प्रभु छोड़ी दूजै लोभाणी ॥ (561 म. 4)

हरि बिनु किउ जीवा मेरी माई ॥
...हरि की पिआस पिआसी कामनि देखउ रैनि सबाई ॥ (232 म. 1)

हरि का राम रूप—"हरे राम"

44 7 जैसाकि हमने ऊपर बताया और जैसाकि हमने अनेक सबदों में स्थान-स्थान पर देखा कि ग्रंथ साहिबजी के अनुसार हरि, राम और कृष्ण नाम एक ही स्वरूप हैं, एक परब्रह्म परमात्मा के तत्वतः पर्यायवाची नाम हैं। आरम्भ से अंत तक ग्रंथ साहिबजी में यही भाव छाया हुआ है। नीचे हम ग्रंथ साहिबजी में वर्णित हरि और राम नामों की अभेदता दर्शाने वाले कुछ शब्दों की झलकियां दे रहे हैं :

(1) नानक रामनामु जपि चीत ॥ सिमरि सुआमी हरि सा मीत ॥ (198 म. 5)
हरि हरि नामु संतन के संगि ॥ मनु तनु राता राम के रंगि ॥ (197 म. 5)

(2) साधो रामसरिन बिसरामा ॥ वेद पुरान पड़े को इहु गुन सिमरे हरि को नामा ॥ (220 म. 9)

(3) कहु कबीर पति हरि परवानु ॥ सरब तिआगि भज केवल रामु ॥ (325)

(4) अकथा हरि अकथ कथा किहु जाइ न जाणी राम ॥....
हरि संता हरि संत सजन मेरे मीत सहाइ राम ॥....
हरि दरे हरि दरि सोहनि तेरे भगत पिआरे राम ॥....
बेअंत बेअंत गुण तेरे केतक गावा राम ॥....
हरि चरण कमल मनु बेधिआ किछुआन न मीठा राम राजे ॥
मिलि संत संगति अराधिआ हरि घटि घटे डीठा राम राजे ॥ (453/54 म 5)

(5) चात्रिक जाचें बूंद जिउ हरि प्रान अधारा राम राजे ॥ (545 म. 5)

(6) राम नाम की उपमा देखहु हरि संतु जो भगत जनां की पति राखै विचि कलिजुग अगे ॥ (1202 म. 4)

छान्दोग्योपनिषद् (7/6) में गूंजती यह वेद वाणी :

44 8 "पृथ्वी मानो ध्यान करती है, अन्तरिक्ष मानों ध्यान करता है, धुलोक मानो ध्यान करता है, जल मानों ध्यान करते हैं, पर्वत मानों ध्यान करते हैं तथा देवता और मनुष्य भी मानो ध्यान करते हैं गुरु रामदास जी के शब्दों में किस भावपूर्ण रूप में प्रतिध्वनित हो रही है

धरति पातालू आकासु है मेरे जिंदुडीए सभ हरि हरि नामु धिआवै राम
पवन वाणी बैमंतरो मेरी जिंदुडीए नित हरि हरि जसु गावै राम ॥
वणु त्रिणु आकारु है मेरी जिंदुडीए मुखि हरि हरि नामु धिआवै राम ॥
नानक ते हरि दरि पैन्हाइआ मेरी जिंदुडीए जो गुरमूतिख भगति मनु लावै राम ॥
(540 म. 4)

अर्थात हे मेरी जिवात्मा:! धरती, पाताल, आकाश आदि सभ हरि रूपि राम नाम का ध्यान कर रहे हैं। हे जिवात्मन्! देख पवन, पानी अग्नि और इस सृष्टि के सभी मूल त्तव हरि-हरि, राम-राम का गुणगान कर रहे हैं। हे जीवात्मन्! ये वन, यह नन्हीं सी घास और तृण तथा यह समस्त दृष्यमान जगत हरि रूप राम नाम का ध्यान कर रहे हैं। हे जीवात्मन् जो गुरु की शरण लेकर हरि रूप राम का आश्रय ले भक्ति में मन लगाते हैं वे हरि द्वारा स्वीकार होते हैं।

इस प्रकार हरि नाम की महिमा गान करते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं :

(1) हरि हरि नामु जपत कुल तारे राम ॥ (546/57 म. 5)

(2) बोलहु मईआ राम नाम पत्ति पावनो ॥ हरि संत भगत तारनो ॥ (800 म.3)

(3) राम करि किरपा लेहु उबारे ॥ जिउ पकरि द्रोपती दुसटां आनी हरि हरि लाज निवारे ॥ (982 मं.4)

(4) नाना रूप रंग हरि केरे घटि-घटि राम रविओ गुपलाक ॥ (1295 म. 4)

(5) राम नाम गुन गावहु हरि प्रीतम उपदेसि गुरु गुर सतिगुरा सुखु होतु हरि हरे हरि हरे भजु राम राम राम ॥ (1297 म. 4)

(6) "आतम रामु रामु है आतम हरि पाई ऐ सबदि बीचारा हे ॥" (1030 म. 1)

(7) "कबीर आसा करीए राम की अबरै आस निरास ॥ नरकि परहि ते मानई जो हरि नाम उदास ॥"

कबीर जी कहते हैं कि अन्य सब आशाओं को त्याग कर राम की कामना करनी चाहिए जो हरि नाम के प्रति उदासीन है उन्हें नरक में ही पड़ा समझो।

राम

45 0 ऊपर हमने राम के हरि स्वरूप की झलक देखी। यहां अब हम राम के परब्रह्म रूप और सगुन अवतारी रूप की झांकी ग्रंथ साहिबजी के शब्दों में सजाने का प्रयत्न करेंगे। ग्रथ साहिबजी में वर्णित राम के समग्र स्वरूप को ठीक से समझने के लिये यह उचित होगा कि हम वेदों में वर्णित राम के तत्व रूप के दर्शन कर लें। श्रीराम पूर्वतापनीयोपनिषद के प्रथम खण्ड में राम नाम के विविध अर्थ इस प्रकार बतलायें हैं।

(1) "ॐ सच्चिदानन्दमय महाविष्णु श्री हरि" जब रघुकुल में दशरथ जी के यहा अवतीर्ण हुए, उस समय उनका "राम" हुआ।

(2) "इस नाम की व्युत्पत्ति इस प्रकार है—"जो महीतल पर स्थित होकर भक्तजनो का सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करते हैं और राजा के रूप में सुशोभित होते हैं, वे राम हैं।

(3) "राक्षस जिनके द्वारा मरण को प्राप्त होते हैं वे राम हैं।"

(4) "अथवा अपने ही उत्कर्ष से इस भूतल पर उनका "राम" नाम विख्यात हो गया।

(5) "वे राज्य पाने के अधिकारी महिपालों को अपने आदर्श चरित्र के द्वारा धर्म मार्ग का उपदेश देते हैं, नमोच्चारण करने पर ज्ञान मार्ग की प्राप्ति करते है, ध्यान कराने पर वैराग्य देते हैं और अपने विग्रह की पूजा करने पर ऐश्वर्य प्रदान करते हैं, इसलिये इस भूतल पर उनका "राम" नाम पड़ा होगा।

(6) "परन्तु यथार्थ बात तो यह है कि उस अंनन्त नित्यानन्दस्वरूप, चिन्मय ब्रह्म मे योगीजन रमण करते हैं, इसलिये वह परब्रह्म परमात्मा ही "राम" पर के द्वारा प्रतिपादित होता है।"

(7) "यद्यपि ब्रह्म चिन्मय अद्वितीय प्राकृत अवयव रहित और (पंचभोतिक) शरीर से रहित है, तथापि भक्तजनों के अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिये वह चिन्मय देह को प्रकट करता है—भक्तों के स्नेहवश निराकार ब्रह्म भी नराकार धारण कर लेता है। जैसाकि ग्रथ साहिबजी की वाणी में आता है।"

"ओइ परम पुरख देवाधि देव॥
भगति हेत नरसिंह मेव॥"

(8) "ब्रह्मा से लेकर वृझादिपर्यन्त समस्त जड़-चेतन का वाचक जो यह "राम" मन्त्र है, यह अर्थ के अनुरूप ही है—जैसा इस नाम का अर्थ है वैसा ही इसका प्रभाव भी है।"

अतः इस राम मन्त्र की दीक्षा लेकर सदा इसका जप करना चाहिये। ("श्री रामपूर्वतापनी योपनिषट प्रथम खण्ड")

राम नाम का परब्रह्म और सर्वव्यापी परमात्म रूप

45 1 आइये हम देखे कि ग्रंथ साहिबजी राम शब्द के परब्रह्म स्वरूप का दर्शन किस प्रकार कराते हैं।

1 **"रामु रमै सोई रमाणा जलि थलि महीअलि एक समाणा॥"** 194 म 5

राम का भक्त वहीं है जो जल थल और पृथ्वी और आकाश के मध्य अर्थात सर्वत्र समाये हुए राम में रमण करता है।

(2) "राम रमहु बड़ भागी ही जलि थलि मही आलि सोइ ॥
नानक नाम अराधिए विघनु न लागै कोई ॥" (521 म. 5)

(3) "पारब्रह्म प्रभु द्रृष्टि आइआ पूरन अगम बिसमाद ॥
नानक राम नामु धनु कीता पूरे गुरु परसाद ॥" (320 म. 5)

नानक जी कहते हैं कि जिस जीव ने गुरु कृपा से राम नाम रूपी धन इकट्ठा किया है, उसे परब्रह्म प्रभु राम जो अगम्य और आश्चर्य रूप है, सर्वत्र परिपूर्ण दिखाई देता है।

(4) "आनंदा बजहि नित बाजे पारब्रह्म मनि बूठा राम ॥" (781 म. 5)

(5) "सभ महि रवि रहिआ सो प्रभु मेरा सुआमी राम ॥
गुर सबदि रवै रवि रहिआ सो प्रभु मेरा सुआमी राम ॥
प्रभु मेरा सुआमी अंतरयामी घटि घटि रविआ सोई ॥" (1153 म. 4)

(6) "आतम महि रामु राम महि आतमु चीनसि गुरु बीचारा ॥" (1153 म. 1)

अर्थात समस्त प्राणी राम में बस रहे हैं और राम सभी प्राणियों में बसे हुए हैं—यह गहन ज्ञान गुरु कृपा से ही प्राप्त होता है। यानी वह परब्रह्म राम समस्त जड़ चेतन मे ओत-प्रोत है।

45 2 और संत नामदेव जी का यह प्रसिद्ध शब्द बताता है कि जड़ और चेतन सभी में राम ही बसा है। वह घट-घट वासी राम चीटीं से हाथी तक, कीट और पतंग जैसे क्षुद्र प्राणियो में तथा स्थावर यानी जो चल फिर नहीं सकते जैसे पेड़ पौधों वाली योनियों में भी उनकी अन्तरआत्मा के रूप में बसा हुआ है, और राम के अतिरिक्त अन्य कोई घट-घटवासी नहीं है ·

सभै घट रामु बोले रामा बोले ॥ राम बिना को बोले रे ॥
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन है वहु नाना रे ॥

यानी जिस प्रकार मिट्टी के बर्तन मिट्टी से भिन्न कोई अस्तिव नहीं रखते उसी प्रकार जड चेतन राम के स्वरूप से अभिन्न है।

"अस्थावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥" (988)

"राम नामु रसु रवि रहे रसु रामों रामु रमीति ॥
घटि घटि आतमु रामु है, प्रभि खेलु कीओ रंगि रीति ॥ (1316 म. 4)

45 3 जिस प्रकार काष्ठ में अग्नि सदैव ही वर्तमान है और उसे संयम पूर्वक मथ कर प्रकट किया जा सकता है वैसे ही राम रूपी ज्योति सब में समाई हुई है। उस सर्वव्यापी राम तत्व को गुरु के उपदेश से ग्रहण किया जा सकता है।

"कासट महि जिउ है वासंतरु मथ संजामि काढ कढीजै ॥
राम नामु है जोति सबाई त्तु गुरमति काढि लईजै ॥" (1323 म. 4)

45 4 केवल निगुन राम ही नहीं सगुन रूप में में राजा राम के रूप में वह राम ही सभ के अतरजामी रूप में लीला कर रहा है

(1) "घटि घटि रमईआ रमत राइ सभ बरतै सभ महि ईक ॥" (1336 म. 4)

(2) "घटि घटि रमईआ रमत राम राई ॥" (172 म. 4)

अर्थात है भाई घट घट में राजा राम रमण कर रहा है!

(3) "राजा रामु मउलिआ अनत आई ॥ जह देखउ तह रहिआ समाई ॥" (1162 कबीर)

(4) "असुर संहारण रामु हमारा ॥ घटि घटि रमईआ पिआरा ॥" (1028 म. 1)

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि असुरों का संहार करने के लिये अवतरित मेरा प्यारा राम घट-घट में बास करने वाला परमात्मा है।

(5) "खोजत खोजत खोजि बीचारियो राम नाम तुत सारा ॥" (611 म. 5)

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि मैं खोजते यानी समस्त वेद शास्त्रों के चिन्तन ओर मन्थन के पश्चात इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि सृष्टि में सार तत्व केवल राम नाम ही है। अर्थात राम नाम ही सृष्टि का मूल है और राम नाम के आश्रय से ही जीव परम पद प्राप्त कर सकता है।

45.5 राम नाम की परम महिमा के प्रमाण में ग्रंथ साहिबजी ने स्थान-स्थान पर वेद शास्त्रों की साक्षी दी है :

"वेद पुरान स्मृति सुधाख्यर ॥ कीने राम नाम इस आख्यर ॥
किनका एक जिसु जीउ बसावै ॥ ता की महिमा गनी न आवै ॥" (262 म. 5)

अर्थात वेदों पुराणो और स्मृतियों ने एक राम नाम को ही अमृतमय शब्द माना है। राम नाम एक कण भी यदि जीव अपने हृदय में बसा ले तो उसकी अपार महिमा या उसके अन्नत फल की गणना नहीं हो सकती।

आगे चलकर 297 पृष्ठ पर ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि चारों वेदों को सुनकर और उन पर शोध पूर्वक तत्वतः विचार करके इस निर्णय पर पहुंचता बनता है कि सम्पूर्ण सुख और कल्याण की निधियों या खजाने केवल राम नाम के ही जप से अधीन है :

"चतुरथि चारे वेद सुणि सोधि त्तु विचारु ॥
सरब खेम कलिआण निधि राम नामु जपि सारु ॥" (297 म. 5)

कबीर जी भी वेद-शास्त्र और स्मृतियों का गहराई से अध्ययन करने के बाद कहते है कि जन्म-मरण का यह अन्तहीन चक्र केवल राम नाम के जप से मेटा जा सकता है।

"वेद पुरान स्मिृति सभ खोजे कहू न उबरना ॥
बहु कबीर इउ रामहि जपउ मेटि जनम मरना ॥" (477)

राम नाम का सगुन अवतारी रूप

45 6 जो राम निर्गुन, निरंजन, सर्वव्यापी और घट-घटवासी परब्रह्म परमात्मा है, वही अपनी पूर्ण कलाओं के साथ दारथ के यहा अवतरित राजा राम है ऐसी ग्रथ साहिब्जी की दृढ़ मन्यता है

"मनहि न कीजै रोसु जमहि न दीजै दोसु निरमल निरवाण पद चीन्हि लीजै ॥
दसरथ राइ नंदु राजा मेरा रामचंदु प्रणवै नामा ततु रसु अंम्रित पीजै ॥"

(973 नामदेव जी)

अर्थात हे भाई तू अपने मन में क्रोध न कर और न काल को ही दोष दे। तू पवित्र मोक्ष पद को पहचान। नामदेव जी कहते हैं कि राजा दशरथ का पुत्र राजा रामचन्द्र ही मेरा उपास्य है। मैं उस तत्व रूप राम नाम के रस का ही पान करता हूं।

सो ग्रंथ साहिबजी में जहा-जहां राजा राम या राम राई शब्द आया है, जहां जहा रघुनाथ, रघुपति, सारिंगपानी शब्द आया है, जहां-जहां राम के चरण-कमल की उपासना है, उनके मुखारबिंद या चन्द्रमा रूपी मुख की शोभा का वर्णन है, जहां राम की उपासना प्रिया-प्रीतम भाव से की गई है, वहां-वहां ग्रंथ साहिबजी ने निर्गुन परब्रह्म परमात्मा की राजा राम के अवतार रूप में उपासना की है, और ग्रंथ साहिबजी के अनुसार सूर्यवंश के महान राजा रघु के कुल में दशरथ के पुत्र रूप में अवतरित राम अपने अवतारी रूप में भी परब्रह्म ही है। गुरु गोविन्द सिंह जी महराज ने अपने "दसम ग्रंथ" में विस्तार से महाराज रघु और उनकी परम्परा में हुए अन्य महान राजाओं दिलीप, अज, आदि का वर्णन किया है, और इसी महान कुल मे अवतरित राम की दिव्य लीलाओं का विस्तार से वर्णन उन्होंने अपने रामावतार में किया।

45.7 राम के अवतारी स्वरूप की उपासना भी ग्रंथ साहिबजी में आदि से अंत तक छाई हुई है। इसी की मधुर झांकी हम क्रमानुसार नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं :

"अचरज एकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई ॥
सुरि नर गण गंर्धव जिनि मोहे त्रि भुवण मेखुली लाई ॥" (92 कबीर जी)

ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि अरे पण्डित! माया का यह आश्चर्यजनक प्रभाव देखो। इनसे समस्त त्रिलोकी को देवता गंधर्न और मनुष्यों सहित सारी जगती को अपने बंधन ने बाध रखा है। इससे तो वही मुक्त हो सकता है जिसने राजा राम के निरंतर ध्वनित हो रहे अनहद नाद में अने मन को लगा लिया है। योगगम्य परा वाणी, परमात्म वाणी, जो ओंकारमयी है और सृष्टि के मूल में हैं, अनहद नाद कहलाती है। वाणी के चार भेद हैं—परा, पश्यन्ति मध्यमा और बैखरी। इनमें बैखरी वाणी याने बाह्य वाणी जिसे हम बोलते हैं वही साधारण मनुष्यों के गम्य है। शेष तीनों वाणियों योगगम्य ही है, और इन तीनों वाणियो मे परा वाणी या अनहद नाद परमात्मा के निकटतम है, परमात्ममय है। राजा रूप में अवतारित राम ही इस परावाणी के उद्गम हैं, उसी में मन को लगाना चाहिए ऐसी ग्रंथ साहिबजी प्रत्यक्ष अवधारणा है।

"घटि-घटि रमईआ रमत राम राई ॥" (172 मं. 4) अर्थात राजा रूप में अवतरित भगवान राम ही घट व्यापी परब्रह्म परमात्मा है।

(1) "जत कत दखउ त त तुम ही मोहि इहु बिसुवासु होई आइओं ॥"
कै पहि करउ अरदासि बेनती जउ सुनतो है रघुराइयो ॥ (205 म. 5)

इस पद मे रघुकुल तिलक राम की सर्व-व्यापी के रूप में की गई है

(2) "उबरत राजा राम की सरणी ॥
सख लोक माइआ के मंडल गिरि गिरि परते धरणी ॥" (215 म. 5)

(3) "कहि कबीर भजु सरि सारिंगपनी ॥ राम उदकि मेरी तिखा बुभानी ॥"

(4) जिस तू राखहि किरपा धारी ॥ बूड़त पाहन तारहि तारी ॥

(5) "इकु दुखु राम राइ काटहु मेरा ॥ अगनि दहै अरु गरभ बसेरा ॥" (329 कबीर)
"अब मोकउ भए राजा राम सहाई ॥ जनम मरन कटि परम गति पाई ॥" (331 कबीर)

45.8 राजा रूप में स्थित भगवान राम से कबीर की प्रार्थना है कि वे अपने भक्त को गर्भवास की अग्नि और मरन के समय अग्निदाह के कष्ट से उबार दें, यानी उन्हें मोक्ष प्रदान करे और राम कृपा से कबीर जी कहते हैं कि मेरा जन्म-मरण का चक्र कट गया है और मैंने परम पद प्राप्त कर लिया है।

45.9 श्याम वरन् रूप वाले श्रीराम मूर्ति में ही कबीर का मन लगा हुआ है। वही राजा राम भव सागर से तारने वाला और निर्भय पद का दाता है और स्वयं भी निर्भय रूप है।

(1) "सावंल सुंदर रामईआ ॥ मेरा मनु लगा तोई ॥" (335 कबीर जी)

(2) "राजा राम तूं ऐसा निरभउ तरन तारन राम राइआ ॥" (339 कबीर जी)

(3) "होई राजे राम की रखवाली ॥ सूख सहज आनंद गुण गावहु मनु तनु देह सुखाली ॥" (620 म. 3)

(4) "मेरी जाति कमीनी पाति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥
तुम सरनागति राजा रामचंद कहि रविदास चमारा ॥" (659 रविदास जी)
मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगलु राजा राम राई को ॥ (69 भक्त सैणजी)

(5) "राखनहार अपार प्रभ ता की निरमल सेव ॥
राम राज रामदास पुरि कीन्हे गुरुदेव ॥" (817 म. 5)

इस पद में गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने राम राज्य की महिमा दर्शाते हुए कहा कि रामदास पुर में यानी अमृतसर में गुरु रामदास जी ने राम-राज्य के समान व्यवस्था प्रतिष्ठित की।

(6) "राजा राम की सरणाई ॥ निरभउ भए गोविंद गुन गावत साधसंगि दुखु जाइ ॥" (899 म. 5)

(7) पशु योनि में उत्पन्न हाथी भी राम की शरण में जाकर मृत्यु भय से तर गया।
नाहन गुनु नाहिन कछु विदिआ धरमु कउनु गजि कीना ॥
नानक बिरद राम का देखउ अभै दानु तिहि दीना ॥" (901 म. 5)

(8) "जानी जानी रे राजा राम की कहानी ॥
अंतरि जोति राम परगासा गुरमुखि बिरलै जानी ॥" (970 कबीर जी)

(9) "रे चित चेति चेत अचेत ॥ काहे न बाल्मीकहि देख ॥
किस जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति विसेख ॥" (1124)

(10) "रामु राजा नउनिधि मेरे ॥
संपै हेतु कलतु धनु तेरै ॥" (1157 कबीर जी)

(11) "निजपद ऊपरि लागो धिआनु ॥
रामा राज नामु मेरा ब्रह्म गिआनु ॥" (1159 कबीर जी)

46 0 गुरु अर्जुन देव जी महाराज भगवान राम की अनुपम मुख छवि का ही निरतर अवलोकन करते रहते है और मुख दर्शन रूपी अमूल्य निधि से उनकी समस्त लोक परलोक की चिन्तायें समाप्त हो गई।

"अविलोकउ राम को मुखारबिंद ॥ खोजत खोजत रतनु पाइओ बिसरी सभ चिंद ॥ चरम कमल रिदै धारि दुखु मंद ॥" (1304 म. 5)

और यह राजा रूप में अवतरित राम सभी प्राणियों में अंतरयामी रूप में उसी प्रकार प्रत्यक्ष है जिस प्रकार की दर्पन में यह देह प्रत्यक्ष दिखाई पड़ती है, और वह राम राजा घट-घट मे वास करता हुआ भी अलिप्त और बंधत से मुक्त है। जिस प्रकार पानी में अपना मुख दिखाई देता है वैसे ही संत नामदेव जी कहते हैं कि उसका स्वामी बिट्ठल प्रत्यक्ष है : "ऐसे राम राइ अतरयामी ॥ जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥ बसै घटा घट लीप न छीपे ॥ बंधत मुकता जातु न दीसे ॥ पानी माहि देखु मुखु जैसा ॥ नामे को सुआमी बीठल ऐसा ॥ (1318 नामदेव जी)"

46 1 भक्त प्रह्लाद की कथा में वर्णित नरसिंह अवतार भी ग्रंथ साहिबजी की दृष्टि में राजा राम का ही अवतार है। अग्नि, जल, पृथ्वी आदि में प्रह्लाद की प्राण रक्षा राजा राम ने ही की—

"गिरि तर जल जुआला भै राखिओ राजा रामि माइआ फेरी ॥" (1165)

46 2 यही नहीं भक्त कबीर को जब सुल्तान ने गंगा में जंजीरों से बांधकर डुबवाना चाहा तो वहां भी रघुनाथ राम ने ही उनकी रक्षा की :

"गंगा की लहरि मेरी टूटी जंजीर ॥ म्रिगछाला पर बैठे कबीर ॥
कहि कबीर कोऊ संग न साथ ॥ जल थल राखन है रघुनाथ ॥" (1162)

कबीर की इस कथा की चर्चा हम आगे चलकर ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम सम्बन्धी अध्याय में करेंगे।

46 3 अंत में यह बात सिद्ध करने के लिये निर्गुन ब्रह्म राम ही दशरथ के घर रघुकुल मे अवतरित राम हैं हम ग्रंथ साहिबजी के अन्तिम पन्नों में आये गुरु तेगबहादुर जी का यह जगत प्रसिद्ध श्लोक दे रहे हैं जिसकी भगवत चरणों में प्रस्तुति उन्होंने अपने बलिदान के कुछ समय पूर्व की थी :

"संग सखा सभि ताजे गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥
कहु नानक इह विपत में टेक एक रघुनाथ ॥" (1429 म. 9)

46 4 राम शब्द की प्रिया-प्रीतम भाव की भक्ति के सन्दर्भ में भी सहज रूप में आना यह सिद्ध करता है कि ग्रथ साहिबजी में का गान निर्गुन ब्रह्म और सगुन अवतारी भाव

ही रूपों में हुआ है।

(1) "अति प्रीतम मन मोहना घर सोहना प्रान अधारा राम ॥ सुंदर सोभा ला
ल दइआल की अपर अपारा राम ॥ सेज एक प्रिउ संगि दरसि न पाईए राम
ान मोहि अनेक कत महल बुलाईऐ राम ॥" (542/43 म. 5

(2) "अब अपने प्रीतम सिउ बनि आई ॥ राजा राम रमत सुखु पाइओ बर
सुखदाई ॥" (1268 म. 5

(3) "तुम्ह गउहर अति गहिर गंभीरा तुम पिर हम बहुरिआ राम ॥
तुम बड़े बड़े बड़ ऊंचे हउ इतनीक लहुरिआ राम ॥" (779 म. 4

(4) हरि प्रभ सेजडीऐ आई ॥
मेरा ठाकुरु अगम दइआलु है राम राजिआ करि किरपा लेहु मिलाई ॥"
(776 म. 4

"इकतु सेजै हरि प्रभो राम राजिआ गुरु दसे हरि मेलेई ॥
मैं मनि तनि प्रेमु बैरागु है राम राजिआ गुरु मेले किरपा करेई ॥"
(776/77 म. 4

(5) "सा बड भागणि सदा सुहागणि राम नाम गुण चीन्हें ॥
कहु नानक रवहि रंगि राते प्रेम महा रस भीने ॥....
अनद विनोद भए नित सखीए मंगल सदा हमारै राम ॥
आपनडै प्रभि आपि सिंगारी सोभावंती नारे राम ॥" (782 म.5

अन्त में राम के निर्गुन और सगुन दोनों ही रुपों को अपने में संजोए गुरु रामदास ज
ाज का यह मार्मिक सबद हम ग्रंथ साहिबजी से नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं।

"जपि मन सिरी राम ॥ राम रमत रामु ॥ सति सति रामु ॥
बोलहु भईआ सद राम रामु रामु रवि रहिओ सरबगे ॥
राम आपे अपि आपे सभु करता रामु आपे आपि आपि सभतु जगे ॥
जिसु आपि कृपा करे मेरा राम राम रामराई सो जनु राम नाम लिव लागे ॥
राम नामकी उपमा देखहु हरि संतहु जो भगत जना की
पति राखे विचि कलिजुग अगे ॥
जनु नानक का अंगु कीआ मेरे रामराइ दुश्मन दुख गए सभि भगे ॥"
(1202 म. 4

हरि का कृष्ण रूप—"हरे कृष्ण"

कृष्ण नाम और इस नाम के द्योतक कृष्ण के अन्य नाम जैसे गोविन्द, माधव, मुरा
री, मोहन, गोपाल, बासुदेव, केसव, मधुसूदन, रिसीकेश, बीठूला, श्यामसुन्दर, गोबधनधा
ग्रंथ साहिबजी के हर पन्ने पर कोई न कोई अध्यात्मिक भाव लिये हमें शब्द-शब्द में ह
ाम नाम के साथ मिलेंगे जैसा कि हमने देखा प्रिया-प्रीतम भाव से सबंधित प्रेमाभकि

पर ही आधारित हैं। ग्रंथ साहिबजी का कृष्ण नाम भी राम नाम के तरह ही, गुन और निर्गुण रूप से अभिन्न है और हरि, नारायण तथा विष्णु नाम के। प्रमाणस्वरूप हम कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं :

"दीन दयाल गोपाल गोविंद हरि धिआवहु गुरमुखि गाती जीउ ॥...
निरहारि केसब निरवैरा। कोटि जना जाके पूजहि पैरा ॥
गुरमुखि हिरदै जा के हरि-हरि सोई भगतु इकाती जीउ ॥ (98 म. 5)

सदा संगी हरि रंग गोपाला ॥ ऊंच नीच करे प्रतिपाला ॥ (99 म. 5)

हरि नामु मिलिआ सोहागणी मेरे गोविंदा ॥ (173 म. 4)
हरि आपे कान्हु उपाइदा मेरे गोविंदा हरि आपे गोपी खोजी जीउ ॥
हरि आपे सभ घट भोगदा मेरे गोविंदा आपे रसीआ भोगी जीउ ॥
हरि अंतिर बाहरि आपि है
मेरे गोविंदा हरि आपि रहिआ भरपूरी जीउ ॥...
हरि अंतरि नामु निधानु है मेरे गोविंदा ॥ (174 म.)

माधउ हरि हरि हरि मुखि कहीऐ ॥ (216 म. 5)

प्रभ गोपाल दीनदयाल पत्ति पावन पारब्रह्म हरि चरण सिमिर जागु ॥ (409 म.5)

गोविंद गुण गावण लागे ॥ हरि रंगि अनुदिनु जागे ॥ (778 म. 5)

गोविंद गोविंदु गोविंदु हरि गोविंद गुणी निधानु ॥...गाविंदु
गोविंद गोविंद जपि मुखु ऊजला परधानु ॥ (1313 म.)

गुन गविंद गाइओ नहीं जनम अकारथ कीन ॥
कहु नानक हरि भजु मना जिहि विधि जल को मीन ॥ (1426 म. 9)

मधुसूदन जपीए उर धारि ॥...
हरि हिरदै जपि जपि नामु मुरारि ॥ (1135 म. 4)

भगत जना कउ हरि किरपा धारि ॥
गुरु नानकु तुठा मिलिआ बनवारी ॥ (1178 म.)

सभि गावहु गुण गोविंद हरे गोविंद हरे गुण गावत्त गुणी समलला ॥ (1315 म.4)

दिये सभी पद हरि और कृष्ण शब्दों के एकत्व का प्रतिपादन करते हैं। और दोनो शब्दों के परब्रह्म स्वरूप की, उसके "सर्व" की चर्चा की है। उसी की संक्षिप्त नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं।

कृष्ण नाम का परब्रह्म और सर्वव्यापी परमात्म् रूप

एक क्रिस्नंम सरब देवा देव देवा त आतमह ॥ आतमं श्री बास्वदेवस्य जो कोई जानस भेव ॥ नानम ताको दासु है सोई निरजन देव ॥ 1353 म 1

(2) संख न चक्रं न गदा सिआमं ॥ अचरज रूपं रहतं जनमं ॥
नेत नेत कथंति वेदा ॥ ऊच मूच अपार गोविंदह ॥ वसंति साध रिदयं अचुत ॥
बुझंति नानक वड भागी अह ॥ (1359 म. 5)

अर्थात जो नाम और रूप तथा जन्म और मरन से रहित है, जिसे वेद "नेति नेति" कहते हैं "नेति नेति" अर्थात इतना ही नहीं यह जो वेदों का परब्रह्म के स्वरूप के रहस्य को समझने के लिये अन्तिम वाक्य माना जाता है ग्रंथ साहिबजी में शायद इसी स्थान पर आया है। इसका भावार्थ यह है कि इन्द्रियों से समझ में आने वाली कोई भी वस्तु ब्रह्म या परमात्मा नही है। ब्रह्म मन और इन्द्रियों की पहुंच के अत्यन्त परे है। इसलिये वह परब्रह्म इन्द्रियो का विषय है ही नहीं। स्वतः सिद्ध होने के कारण स्वयंभू होने के कारण उसे केवल आत्मानुभूति या आत्म में ही ज्ञान और भक्ति द्वारा परमात्म् और गुरु कृपा से जाना सकता है। ग्रंथ साहिबजी में वेदों के इस गूढ़तम शब्द का कृष्ण नाम के संबंध में प्रयोग, कृष्ण नाम की परब्रह्मता सिद्ध करने के लिये किया गया है।

"घटि घटि वसंत वासुदेव पारब्रह्म परमेसुरह ॥
जांचति नानक क्रिपाल प्रसाद नह विसंरति नह विसरंति नाराइणह ॥"
(1356 म. 5)

46.8 प्रत्येक प्राणी के हृदय में बस रहे उस वासुदेव परब्रह्म परमात्मा से नानक जी याचना कर रहे हैं कि वे उन वासुदेव को कभी विस्तृत न करें।

आगे हम ग्रंथ साहिबजी में वर्णित कृष्ण के परब्रह्म स्वरूप की झांकी क्रमानुसार दे रहे है

(1) वासुदेव सरवत्र मैं उन न कतहू ठाइ।
अंतरि वाहरि संगि है नानक काइ दुराई ॥ (259 म. 6)

(2) बिनहु सुनहु तुम पारब्रह्म दीन दइआल गुपाल ॥

(3) चउदिस चउदह लोक मझारि ॥ रोम रोम महि बसहि मुरारि ॥ (344 कबीर)

46 9 इस पद में चोदह या चोदहवीं तिथि का महत्व बतलाते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते है कि इस दिन चोदह लोकों और रोम-रोम में बसे कृष्ण मुरारि का ध्यान करना चाहिये।

(4) प्रभ गोपाल दीन दइआल पतित पावन पारब्रह्म हरि चरण सिमिर जागु ॥ (409 म. 5)

(5) करहु अनुग्रहु पारब्रह्म हरि किरपा धारि मुरारि ॥ (431 म. 5)

(6) आदि मधि अंति प्रभु सोई सुंदर गुर गोपाल ॥ (454 म. 5)

(7) घटि-घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ जलि थलि महिअलि गुपतो वरतै गुर सबदी देखि निहारी जीउ ॥ सो ब्रह्म अजोनी है भी होनी घट भीतरि देख मुरारी जीउ ॥ (597/98)

(8) गोविद दामोदर दइआल माधवे पारब्रह्म निरकारा ॥ 614 म 5

(9) उर धारि वीचारि मुरारि रमो रमु मनमोहन नाम जपीने ॥
अद्रिसटु अगोचर अपरंपर सुआमी गुर पुरै प्रगट करि दीने ॥ (668 म. 4)

(10) जलि थलि मही अलि रविआ सब ठाई अगम रूप गिरधारे ॥
कीरति करहि सगल जन तेरी तू अविनासी पुरखु मुरारे ॥ (650 म. 5)

(11) पुरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥
मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बिचारे ॥ (1197 म. 1)

(12) जपि मन माधो मधुसूदनों हरि श्री रंगो परमेसरो सति परमेसरो अंतरजामी ॥
(1201 म. 4)

(13) लाल लाल मोहना गोपाल तू ॥
कीट हसति पाखाण जंत सरब मै प्रतिपाल तू ॥ (1231 म. 5)

(14) पुरन पूरि रहिओ सब ठाई ॥
पूरन मन मोहन घट घट सोहन जब खिंचै तब छाई ॥ (1236 म. 5)

कृष्ण नाम का सगुन अवतारी रूप

यहां हम ग्रंथ साहिबजी से कृष्ण सम्बन्धी उन पदों को दे रहे हैं जो स्पष्टतः यह त करते हैं कि ग्रंथ साहिबजी के अनुसार अपने सगुन अवतारी रूप में लीला करने वाले नही हैं जो अपने निर्गुन रूप में परब्रह्म परमात्मा हैं। उनके दोनों स्वरूपों में कोई भी भेद । भेद केवल सगुन रूप में लीला मात्र का है। ग्रंथ साहिबजी कहते हैं :

"कहु कबीर मेरे माधवा तू सरब बिआपी ॥
तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी ॥" (856)
"जगनाथ जगजीवन माधो ॥ भउ भंजन रिद माहि अराधो ॥
रिखीकेस गोपाल गोविंद ॥ पूरन सरवत्र मुकंद ॥...
वासुदेव बसत सभ ठाइ ॥ लीला किछु लखी न जाइ ॥" (897 म. 5)

ऊपर दिये पदों में कबीर जी ने और गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने भगवान कृष्ण के रूप की महिमा गाते हुए साथ-साथ उनके सर्वव्यापी और पूर्ण स्वरूप को भी स्मरण है। और उन्हें सृष्टि का स्वामी और जीवों को भवसागर पार कराने वाला माना है।

कबीर जी का परम धन तो कृष्ण ही हैं। उस गोविंद की सेवा का सुख राज्य प्राप्ति व से बढ़कर है। इस कृष्ण रूपी परम धन की प्राप्ति के लिये ही भगवान शिव दिक ऋषिगण वैराग्य धारण किये हुये हैं। कबीर जी कहते लाखों करोड़ों घोड़े-हाथी की एक तरफ और कृष्ण एक तरफ। मुझे तो कृष्ण धन ही चाहिये।

(1) हमरा धनु माधउ गोविंदु धरणी धरु इहै सार धनु कहिये ॥
जो सुखु प्रभु गोविंद की सेवा सो सुखु राजि न लहीए ॥
इसु धन कारण सिव सनकादिक खोजत भए उदासी ॥
तुम घरि लाख कोटि असव हसती हम घरि एकु मुरारी ॥ 336 कबीर)

(2) आस पास घन तुरसी का बिरवा माझ बनारसि गाऊं रे ॥
उआ का स्वरूप देखि मोही गुआरनि मो कउ छोड़ि न आउ न जाहू रे ॥
तोहि चरन मनु लागो सारिंगधर सो मिले जो बड़भागो ॥
...ब्रिंदावन मन हरन मनोहर क्रिसन चरावत गाऊं रे ॥
जा का ठाकुर तुही सारिंगधर मोहि कबीरा नाऊ रे ॥ (338 कबीर)

संत कबीर जी का यह बड़ा ही मार्मिक कृष्ण भक्ति सम्बन्धित पद है। वह कह रहे है कि तुलसी के सघन वृक्षों से घिरे वृंदावन में दिव्य प्रेम रस प्रवाहित हो रहा है। कृष्ण के मनोहर रूप पर गोपियां मोहित हैं और कह रही हैं कि कृष्ण गाय चरा रहे हैं। कबीर जी कहते है कि हे सारिंग धनुष धारी जैसे तुम राधा के ठाकुर हो उसी तरह मैं राधा की सखी भी तुम्हारी प्रेमिका हूं मेरा नाम कबीर है। अर्थात मुझे भी राधा के समान अपना लो।

47 2 गुरु रामदास जी के नीचे दिये पद में कृष्ण रूप में अवतरित परमात्मा की असुरो के दमन सम्बन्धी लीला का बड़ा स्पष्ट और विशद वर्णन है। वह परमात्मा स्वयं ही कृष्ण और स्वयं ही गोपी रूप बना हुआ है। स्वयं ही गायों को चरानेवाला ग्वाला है, और स्वयं ही परम सुदर श्याम रूप धारण कर दिव्य बंसीवादन द्वारा त्रिलोकी को मोहित कर रहा है। वह स्वय ही अपने इस लीलामय जगत की रचना करके खेल, खेल रहा है। और लीलामय खेल में अपने बाल कृष्ण रूप से कंस, चाणुर, केसी और कंस के कुवालियापीड हाथी का वध करने वाला है :

"आपे गोपी कानु है पिआरा बनि गऊ चराहा।
आपे सांवल सुन्दरा पिआरा आपे बंसु बजाहा ॥
कुबलीआपीड़ु आपि मराइदा पिआरा करि बालक रूपि पचाहा ॥
आपि अखाड़ा पाइदा पिआरा करि देखै आपि चोजाहा ॥
करि बालक रूप उपाइथा पिआरा चंडूद कंसु माराहा ॥
...जो गरबै सो पचसी पिआरे जपि नानक भगति समाहा ॥ (606 म. 4)

47 3 कृष्ण ही अवतारी परब्रह्म हैं, उनकी मुरली की मधुर ध्वनि अनहद नाद है। वे भेडे धन्य हैं जिनकी ऊन की कांबली कृष्ण ने ओढी। माता देवकी धन्य हैं जिनके घर में परमात्मा, लक्षीपति नारायण अवतरित हुए। वृंदावन धन्य है जहां साक्षात नारयण लीला कर रहे हैं। और वेणु वादन करते हुए गोओं को चरा रहे हैं। ये कृष्ण ही चक्र धारी और बैंकुठवासी है, जिन्होने गज के प्राणों की रक्षा की। अहिल्या का भी इन्होंने ही उद्धार किया। ऐसे कृष्ण के यह अधम जाति नामदेव शरण आया है। इन्होंने ही चीर हरण करने वाले दुष्ट दुःशासन से द्रोपदी की रक्षा की :

"धनि धनि ओ राम बेनु बाजै ॥ मधुर धुनि अनहत गाजै ॥
धनि धनि मेघा रोमावली ॥ धनि धनि क्रिसन ओढ़ै कांबली ॥
धनि धनि तु माता देवकी ॥ जिह ग्रिह रमईआ कमलापती ॥
धनि धनि बन खंड बिंद्रवना ॥ जह खलै श्री नाराइना ॥
बेनु बजावै गोधनु चरै ॥ नामे का सुआमी आनन्द करै ॥
कर धरे चक्र बैंकुठ ते आए गज हसती के प्रान उधारी अलै ॥

दुहसासन की सभा द्रोपदी अंबर लेत उबारी अले ॥...
गोतम नारि अहलिआ तारी पावन केतुक तारी अले ॥
ऐसा अधमु अजाति नामदेउ तउ सरनगति आईअले ॥ (988 नामदेव जी)

ान कृष्ण की लीला के संदर्भ में भगवान राम द्वारा अहिल्या के उद्धार की कथा व से आना भी राम और कृष्ण के अभिन्नरूप का प्रतिदान करता है।

साहिबजी में कृष्ण का अवतारी रूप किस प्रकार समाया हुआ है इसकी छोटी सी नि हम निम्न पंक्तियों में कर सकते हैं—

सरनि दुःख भंजन पुरख निरंजन साधु संगति खणु जैसे ॥
केसव कलेस नास अघ खंडन नानक जीवत दरस दिसे ॥ (829 म॰ 9)

मेरे मन साधसंगति मिलि रहिआ ॥
क्रिपा करहु मधुसूदन माधव मैं खिनु खिनु साधु चरन पखईया ॥ (835 म॰ 5)

गुर की साखी राखै चीति ॥ मनु तनु अरपै क्रिसन परीति ॥ (975 वेणीजी)

जपिओ नाम सुक जनक गुरु बचनी हरि-हरि सराणि परे ॥
दालुद भंजि सुदामा मिलिओ भगती भाई तरे ॥ भगति बछलु हरि नामु क्रितारथु गुरमुखि क्रिपा करे ॥... ध्रू प्रहिलादु बिदरु दासी सुतु गुरमुखि नामि तरे ॥ (995 म॰ 4)

अब मैं कहा करउ री माई ॥
सगल जनम बिखिअन सिउ खोइआ सिमरिओ नाहि कन्हाई ॥ (1008 म॰ 9)

क्रिपाल दइयाल गोपाल गोविंद जो जपै तिसु सीधि ॥
नवल नवतन चतुर सुंदर मनु नानक तिसु संगि बीधि ॥ (1006 म॰ 5)

गुरमति क्रिसनि गोरवरधन धारे ॥ आतम चीनहु रिदै मुरारी ॥ (104 म॰ 1)
मधुसूदन जपीए उर धारि ॥ (1135 म॰ 4)
हरि हिरदै जपि नामु मुरारी ॥ (1135 म॰ 4)

ऐसो धणी गुविंदु हमारा ॥ बरनि साकउ गुणा बिसथारा ॥
कोटि बिसन कीने अवतारा ॥ कोटि ब्रह्मंड जा के धर्मसाल ॥
कोटि महेस उपाइ समाए ॥ कोटि ब्रहो जणु साजण लाए ॥
ऐसो धणी गुविंदु हमारा ॥ बरनि न साकउ गुणा बिसथारा ॥ (1156 म॰ 5)

सिआम सुंदर तजि आन जु चाहत जिउ कूसटी तनि जोक ॥ (1253 सूरदास जी)

किआ तू सोचहि किआ तू चितवहि किआ तू करहि उपाए ॥
कहउ परवाह काहू की जि गोपाल सहाए ॥ (1266 म॰ 4)

सभि गावहु गुण गोविंद हरे गोविंद हरे गोविंद हरे गुण गुणी समउला ॥
1315 म 4

अर्थात हे भाई सब मिलकर गोविंद हरि, गोविंद हरि, गोविंद हरि के गुण गाओ। परमात्म गुण गाने से उस परमात्मा मे ही समा जाओगे।

47.5 अंत में कृष्ण के सगुन और अवतार रूप से संबंधित एक अनूठा पद हम ग्रंथ साहिबजी से उद्धृत कर रहे हैं। पद कबीर जी का ही है। इस पद में भक्त और भगवान दोनो के ही बोल हैं।

"राजन कउनु तुमारै आवै। ऐसो भाउ बिदर को देखिओ ओहु गरीबू मोहि भावै॥"

दुर्योधन के निमंत्रण को अस्वीकार करते हुए भगवान कृष्ण कहते हैं कि राजन तुम्हारे यहा मेरा वास कैसे संभव है। मुझे तो भक्तिभाव से परिपूर्ण तुम्हारे मुकाबले में धनहीन विदुर ही प्रिय है।

"हसती देखि भरम ते भूला श्री भगवान न जाना॥"

यहां भक्त कबीर बोल रहे हैं कि धन में मदान्ध दुर्योधन भगवान कृष्ण के परमात्म् रूप को नहीं पहचान सका।

"तुमरो दूधु बिदुर को पान्हो अम्रित करि मैं मानिआ॥ यहां भगवान कृष्ण दुर्योधन से कह रहे हैं कि तुम्हारे दूध के सामने मुझे बिदुर का पानी ही अमृत के समान है। "खीर समान सागु मे पाइआ" यहां भगवान कृष्ण जी कह रहे हैं कि बिदुर का साग मुझे खीर के समान प्रिय है।

"गुन गावत रैनि बिहानी॥ कबीर को ठाकुर अनद बिनोदी जाति न काहु की मानी॥"

कबीर जी कहते हैं कि विदुर के यहां वास करते हुए भगवान कृष्ण ने सारी रात विदुर की भक्ति भावना की प्रशंसा में बिता दी। कबीर के प्रभु सचिदानंदमय कृष्ण की दृष्टि मे जाती का भेद नहीं है। अर्थात कृष्ण की दृष्टि में केवल प्रेम और भक्ति का ही नाता है। जाती भेद आदि की वहां कल्पना ही नहीं है।

टुकड़ों में दिये भक्ति भाव से पूर्ण इस अभूतपूर्व पद का अब हम सम्पूर्ण रूप से नीचे दे रहे हैं :

"राजन कउनु तुमारै आवै॥ ऐसो भाव बिदरे को देखिओ ओहु गरीब मोहि भावै॥
हसती देखि भरम से भूला श्री भगवान न जानिआ॥
तुमरौ दुधु बिदर को पान्हो अम्रित करि मैं मानिआ॥
खीर समानि सागु मैं पाइआ गुन गावत रैनि बिहानी॥
कबीर को ठाकुर अनद बिनोदी जाति न काहु की मानी॥ (1105 कबीर जी)

प्रिया-प्रीतम भाव में कृष्ण नाम आदि से अंत तक ग्रंथ साहिबजी में प्रेम की हिलोरे भरता हुआ मानो समा गया है। प्रिया-प्रीतम भाव से संबंधित अध्याय में इसकी पूरी चर्चा होने के कारण हम यहां इस संबंध में कोई उदाहरण नहीं दे रहे हैं।

47.6 ग्रंथ साहिबजी ने हरि, राम और कृष्ण नामों को एक ही अनन्य स्वरूप और अभिन्न माना है, इसी भाव की पुनः पुष्टि करते हुए कुछ पद देकर हम इस अध्याय का समापन कर रहे हैं।

(1) **"जपि मना तूं राम नाराइणु हरि माधो॥"** (248 म 5)

(2) "दीन दइयाल जगदीश दमोदर हरि अंतरजामी गोविंदे ॥
ते निरभउ जिन श्रीराम धिआइआ गुरमति मुरारि हरि मुकदें ॥" (1321 म.4)

(3) गुरु अर्जुन देव महाराज कहते हैं कि हे मन भक्तों के उधार की इन कथाओं को धारण कर भगवत नाम जप-बाल्मीक और वेश्या राम नाम के सहारे ही पार हो गये। द्रोपदी, सुदामा, कुब्जा और बिदुर कृष्ण नाम से तर गये। इसलिये रे मन तू हरि, राम और कृष्ण का ध्यान कर :

"सुणि साखी मन जपि पिआर। अजामलु उधरिया कहि एक बार ॥
बाल्मीक होआ साध संगु ॥ ध्रू कउ मिलिआ हरि निसंग ॥...
गनिका उधरी हरि कहे तोत ॥ गजइन्द्र धिआइओ हरि कीओ मोख ॥
ब्रिद सुदामे दालुद भंज ॥ रे मन तू भी भजु गोविंदु ॥
वधिक उधारिओ खमि प्रहार ॥ कुबिजा उधरी अंगुसट धार ॥
प्रह्लाद रखी हरि पैज आप ॥ बसत्र छीनत द्रोपदी रखी लाज ॥
जिनि जिनि सेविआ अंत बार ॥ रे मन सेवि तू परहि पार ॥ (1192 म. 5)

47 7 हरि, राम और कृष्ण नामों का अभिन्नत्व और एकत्व का प्रतिपादन करने के लिये पुराणों ने यह सोलह अक्षरों वाला महामंत्र दिया है :

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

कलियुग में जीव के निस्तार के लिये इसे महामंत्र माना गया है। कलिसंतरणोपनिषद् मे ब्रह्मा जी और नारद जी के संवाद के माध्यम से इस मंत्र का महत्व इस प्रकार बताया गया है। नारद जी ने ब्रह्मा जी से पूछा, "भगवान् मैं भू लोक में पर्यटन करता हुआ किस प्रकार कलि से त्राण पा सकता हूं। ब्रह्मा जी बोले, भगवान आदि पुरुष नारायण के नामोच्चरण मात्र से मनुष्य कलिके दोषों का नाश कर डालता है।"

नारद जी ने फिर पूछा, 'वह कौन सा नाम है?'

हिरण्यगर्भ ब्रह्मा जी ने कहा, "हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।"

"यह सोलह नाम कलिके पापों का नाश करने वाले हैं। इससे श्रेष्ठ कोई दूसरा उपाय सारे वेदों में भी देखने में नहीं आता है। इसके द्वारा षोडश कलाओं से आवृत जीव के आवरण नष्ट हो जाते हैं। तत्पश्चात् जैसे मेघ के विलीन होने पर सूर्य की किरणे प्रकाशित हो उठती है, उसी प्रकार परब्रह्म का स्वरूप प्रकाशित हो जाता है।"

"फिर नारद जी ने पूछा, भगवान इसके जप की क्या विधि है। ब्रह्म जी ने कहा, इसकी कोई विधि नहीं है। पवित्र हो या अपवित्र इस मंत्र का निरंतर जप करने वाला चारो प्रकार की मुक्ति प्राप्त करता है।" (कलिसंतरणोपनिषद)

सो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि कलियुग में मानव का सहज मार्ग से परम कल्याण करने को कटिबद्ध ग्रंथ साहिबजी ने इसी महामंत्र को प्रमुखता दी। हरि, राम और कृष्ण नाम की दिव्य गंध से ही मानो ग्रंथ साहिबजी निरंतर सुबासित हो रहे हैं ◻

ग्रंथ साहिबजी "नाम" महिमा

47 8 कुरान शरीफ़ पर आने के पूर्व हम ग्रंथ साहिबजी के एक और महत्त्वपूर्ण विषय की विवेचना पूरी करनी चाहेंगे। विषय भगवत "नाम" महिमा का है। समस्त पुराणों में भगवन नाम जाप का, विशेषकर कलियुग में, भारी महत्त्व बतलाया गया है। ग्रंथ साहिबजी में नाम जप या नाम सिमरन के महत्व का इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि "नाम" शब्द ग्रंथ साहिबजी में 4585 बार या कहिये लगभग 4600 बार आया है। और भगवत नाम जप की महत्त के समर्थन में ग्रंथ साहिबजी की यह मान्यता है कि भगवात् नाम जप परमात्मा प्राप्ति का सहजतम और अपने में एक स्वतंत्र साधन है। केवल नाम के आश्रय से जीव जन्म-मृत्यु के चक्र को समाप्त कर और अपने दुखों का अन्त कर ब्रह्म ज्ञान का अधिकारी हो जाता है। परमपद को प्राप्त कर लेता है।

47 9 भगवत नाम जप की इस महत्ता के पीछे वेदों का यह मूलभूत सिद्धान्त है कि नामी अपने नाम के अधीन होता है, यानि नाम और नामी में कोई भेद नहीं होता। लोक व्यवहार मे भी जब हम किसी व्यक्ति का नाम लेकर बुलाते हैं तो जिस व्यक्ति का यह नाम है वह व्यक्ति अपने नाम का उच्चारण सुनकर उसके प्रति आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता। नाम और नामी के संबंध के विषय में स्पष्टतम विवेचना माण्डूक्योपनिषद में आती है। इस उपनिषद में "ॐ" इस अक्षर को परब्रह्म परमात्मा की ही व्याख्या एवं स्वरूप माना है, और दोनों के ही स्वरूप की समान रूप से व्याख्या है। इस उपनिषद का प्रथम मंत्र मूल सिद्धान्त का इस प्रकार प्रतिपादन करता है :

"ॐ" इस प्रकार यह अक्षर है। सम्पूर्ण जगत उसकी ही उपव्याख्यान अर्थात उसी का निकटतम महिमा लक्ष्य कराने वाला है। भूत, वर्तमान और भविष्य (जो होने वाला है) यह सबका जगत ओंकार ही है, तथा जो ऊपर कहे हुय तीनों कालों से अतीत दूसरा (कोई तत्व है) वह भी ओंकार ही है। (माण्डुक्योपनिषद्-1)

"क्योंकि यह सब का सब ब्रह्म है, यह परमात्मा ब्रह्म है, यह परमात्मा चार चरणोंवाला, (चार पादोंवाला है) (माण्डुक्योपनिषद-2)

"वह (जिसको चार पादवाला बताया गया है) यह परमात्मा (उसके वाचक) ओंकार के अधिकार में (प्रकरण में) वर्णित होने के कारण तीन मात्राओं युक्त ओंकार है, 'अ', 'उ', (ओर) 'म' ये (तीनों) मात्राएं ही, (तीन) पाद हैं, और (उस ब्रह्म के तीन) पाद ही (तीन) मात्राएं हैं। (माण्डुक्य-8)

"इसी प्रकार मात्रा रहित ओंकार ही व्यवहार में न आने वाला प्रपंच से अतीत अद्वितीय पूर्ण ब्रह्म का चौथा पाद है वह आत्मा अवश्य ही आत्मा के द्वारा

परात्पर ब्रह्म परमात्मा में पूर्णतय प्रविष्ट हो जाता है जो इस प्रकार जानता है। (माण्डूक्य 12)

48.0 नाम सिमरन में वेद शास्त्र प्रमाण देते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि नाम के बिना अन्य सभी बातें झूठी और व्यर्थ हैं :

(1) "सिम्रिति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ ॥ नाम बिना सभि कूड़ु गाल्ही होहीआ ॥
नामु निधानु अपारु भगता मनि वसै ॥ जनम मरण मोहु दुःख साधु संगति नसै ॥
(761 म. 5)

(2) "सासत्र सिम्रिति नामु द्रिड़ामं ॥ गुरमुखि सांति ऊतम करामं ॥" (831 म. 1)

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं कि सभी शास्त्र और स्मृतियां भगवत नाम सिमरन में ही बुद्धि की वृत्तियों को दृढ़ कराती है। गुरु के उपदेशानुसार नाम जप से परम शान्ति मिलती और कर्म भी उत्तम बनते हैं।

(3) नामु जपहु नामे गति पावहु सिम्रिति सासत्र नामु द्रिड़ाईआ ॥ (834 म. 4)

अर्थात नाम जप से परमागति प्राप्त होती है। स्मृतियां और सभी शास्त्र नाम जप पर ही बल देते हैं।

(4) "वेदु वाणी जगु वरतदा त्रै गुण करे विचारु ॥ बिनु नावै जम डंडु सहै मरि जनमैं बारोबार ॥ (1276 म. 3)

(5) कहत वेदा गुणंत गुनीआ वाला बहु विधि प्रकार ॥
द्रिड़ंत सुविदिआ हरि हरि क्रिपाला ॥ नामु दानु जाचंत नानक दैनहार गुर गोपाला ॥
(1355 म. 5)

(6) घोर दुख्यं अनिक हत्यं जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ॥
मिटंत सगल सिमंरत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसम करोति ॥
(1355 म. 5)

48.1 गुरु अर्जुन देव जी वेद प्रमाण देते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार अग्नि काठ को जलाकर भस्म कर देती है उसी प्रकार हरि नाम जप से घोर दुख, दरिद्रता और अनेक हत्याओ के दोष मिट जाते हैं।

कल मैं एक नाम किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥
अउर धरम ता के सम नाहिन इह बिधि बेदु बतावै ॥ (632 म. 9)

(7) नह समरथ नह सेवक प्रीति परम पुरखोतमं ॥
तव प्रसादि समिरते नामं नानक क्रिपाल हरि हरि गुरं ॥
रमणं केवल कीरतनं सुधरमं देह धारणह ॥
अम्रित नामु नाराइण नानक पीवतं संत न तृप्यते ॥ (1356 म. 5)

नानक जी कहते हैं कि देह धारण का श्रेष्ठ धर्म परमात्म का नाम उच्चारण करना ही है। संतजन परमात्मा के नाम रूपी अमृत का पान करते हुए कभी तृप्त नहीं होते।

नानक जी कहते हैं कि मनुष्य को न तो धन, रूप, स्वादिष्ट भोजन, वस्त्र और स्वर्ग का राज्य दुर्लभ है तो न ही पुत्र मित्र भाई बनिता विलास विद्या व्यहार कुशलता आदि

दुलभ है। दुर्लभ केवल भगवत नाम ही है। नाम जप तो संतो की संगति और भगवत कृपा से ही सुलभ हो सकता है :

नच दुरलभं धनं नच दुरलभं स्वरग राजनह ॥
नच दुरलभं भोजन बिंजनं नच दुरलभं स्वछ अवरंह ॥
नच दुरलभं सुत मित्र भ्रात बांधव नच दुरलभं बनिता बिलासह ॥
नच दुरलभं बिदिआ प्रवीणं नच दुरलभं चतुर चंचलह ॥
दुरलभं एक भगवान नामह नानक लबध्यिं साधसंगि क्रिपा प्रभं ॥ (1357 म. 5)

जैसाकि हमने आरम्भ में ही कहा गुरु साहिबजी में नाम जप की असीम महिमा का वर्णन है। प्रमाण स्वरूप हम ग्रंथ साहिबजी वर्णित 'नाम' महिमा सम्बन्धी कुछ पदों की एक छोटी सी झांकी नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं।

(1) सिंधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ। गुपत परगटु होई बैसा लोक राखै भाउ ॥
मतु देखि भूला बीसरे तेरा चिति न आवै नाउ ॥
मतु देखि भूला बीसरे तेरा चिति न आवै नाउ ॥
सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ।
हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥
मतु देखि भूला बीसरे तेरा चिति न आवै नाउ ॥ (14 म. 1)

48 2 गुरु नानक देव जी के इन पदों का संक्षिप्त भाव यह है कि हे प्रभु में ऋषियों और रिधियों के चमत्कारों के भुलावे में पड़ कर तुम्हारा नाम न भूल जाऊं। हे प्रभु मैं सुल्तान बनकर सिंहासन पर बैठ जाऊ और मेरे पास बहुत सैन्य और बल हो तो यह सब भी व्यर्थ है, हे भगवान कहीं भुलावे में आकर मुझे तुम्हारा नाम न विस्मृत हो जाय।

(2) "नानक सबदि मिलावड़ा नामे नामि समाइ ॥" (35 म. 3)

(3) "मेरे प्रीतम हउ जीवा नामु धिआइ ॥ बिनु नावै जीवणु न थीऐ मेरे सतिगुर नाम द्रिडाइ ॥" (40 म. 4)

(4) "मेरे प्रीतम हउ जीवा नामु धिआइ ॥ बिनु नावै जीवणु न थीऐ मेरे सतिगुर नाम द्रिडाइ ॥" (40 म. 4)

(5) "गहिर गंभीर अंम्रित नामु तेरा। मुकति भइया जिसु रिदै बसेरा ॥" (101 म. 5)

"अगंद मंगल कलिमाण निधाना ॥ सूख सहज हरिनाम बखाना ॥" (104 म. 5)

"प्रभु अपुना सासि सासि समराउ ॥ इह मति गुर प्रसादि मनि धारउ ॥" (104 म. 5)

(6) "नामु जपत सरब सुखु पाईऐ ॥ सभु भउ बिनसै हरि हरि धिआईऐ ॥" (104 म. 5)

"नामु जपे नामों आराधे नामे सुखि समावै ॥" (139 म 1)

"नाम भगत के प्रान अधारु ॥ नामों धनु नामो बिउहारू ॥" 189 म 5

"नानक राम नामु जपि चीत ॥ सिमिर सुआमी हरि सा मीत ॥" (198 म. 5)

गुरु नानक देव जी महाराज ने अपने शब्दों में नाम को भारी महत्त्व दिया है। उनके अनुसार भगवत नाम ही जनम और मरन सहायक होता है। जीव बिना नाम जप के समस्त जीवन व्यर्थ ही गवां देता है। नाम के बिना न तो ज्ञान हो सकता है और न ही ध्यान और धर्म का पालन। नाम के बिना जीव आवागमन चक्र में पड़ रहा है।

(1) "जिस से उपजे तिस से बिनसे अंते नामु सखाई ॥
बिनु नावै सभ भूली फिरदी बिरथा जनमु गवाई ॥" (909 म. 1)

(2) "ना तिसु गिआनु न धिआनु है ना तिसु धरमु धिआनु ॥
विणु नावै निरभउ कहा किआ जाणा अभिमानु ॥" (935 म. 1)

... नानक सचे नाम विष्णु झूठा आवणु ॥" (936 म. 1)

48 3 ग्रंथ साहिबजी के 938 से लेकर 946 पन्नों में गुरु नानक जी महाराज और सिद्धो के वार्तालाप से सम्बन्धित शब्द सिध गोष्ठी नाम से प्रसिद्ध है। ग्रंथ साहिबजी में यह जीव, माया, ब्रह्म, कर्म विपाक, जन्म, मरण और योग सम्बन्धी गूढ़तम प्रश्नोत्तर पर यह अनूठा अध्याय हे। इस अध्याय में नानक जी ने सिद्धों के गहन प्रश्नों के उत्तर दिये हैं। सिद्धों की इस गोष्ठी के लम्बे विचार विमर्श का सारांश गुरु नानक जी ने इस प्रकार निकाला :

"सबदै का निबेडा सुणि तू अउधू बिनु नावै जोगु न होई ॥
नामे राते अनदिनु माते नानै से सुखु होई ॥
नामे ही ते सभु परगटु होवै नामे सोझी पाई ॥
बिनु नावै भेख करहि बहुतेरे सचै आपि खुआई ॥
सतिगुर ते नामु पाईऐ अवधू जोग जुगति ता होई ॥
करि विचारू मनि देखहु नानक बिनु नावै मुकति न होई ॥
... अविनासी प्रभि खेलु रचाइआ गुरमुखि सोझी होई ॥
नानक सभि जुग आपे बरतै दूजा अवरू न कोई ॥ (946 म. 1 सिध गोष्ठी)

48 4 नानक जी कहते हैं कि हे अवधूत इस सारी गोष्ठी की चर्चा का सार सुन। बिना 'नाम' के योग नहीं सध सकता। जो नाम में अनुरक्त हैं वह प्रतिदिन प्रभु-प्रेम मे मतवाला रहता है और उसे नाम से परम सुख प्राप्त होता है। 'नाम' से सब कुछ प्रकट होता है और नाम से ही परमात्मा ज्ञान प्राप्त होता है। बिना नाम के जो भिन्न-भिन्न वेश में किये गए लौकिक कार्य हैं वे सब व्यर्थ हैं, उन्होंने अपने सच्चे स्वरूप को भुला दिया है। हे अवधूत सद्गुरु से ही नाम ही प्राप्ति होती है, तभी योग की युक्ति प्राप्त होती है। नानक जी कहते हैं कि मन में विचार करके देखो कि बिना नाम के जीव की मुक्ति नहीं होती। अविनाशी परमात्मा ने ही संसार रूपी खेल रचाया है जिसका सच्चा स्वरूप गुरु कृपा से प्राप्त ज्ञान से ही हो सकता है। नानक जी कहते हैं कि युग-युग में यह परमात्मा ही विश्व में व्याप्त होकर व्यवहार कर रहा है। उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। अर्थात इस सर्व व्यापी परमात्मा को जो अकेले ही इस सृष्टि रूप में सजा हुआ है उसे नाम जप से ही सहज प्राप्त किया जा सकता है।

इस नाम सिमरन की महिमा को कबीर ने इस प्रकार अपने शब्दों में रखा है :

"ऐसा सिमरनु कहर मन माहि ॥ बिनु सिमरन मुकति कत नाही ॥
जिह सिमरनि तेरी गति होइ ॥ सो सिमरनु रखु कंठि परोइ ॥" (971 कबीर जी)

नाम बिना विश्व का सब वैभव वैसे ही निर्थक है जैसेकि मृत देह का सिंगार व्यर्थ होता है।

(1) "नाम बिना जेता बिउहारु ॥ जिउ मिरतक मिथिआ सीगारु ॥"

(2) "सुभ चिंतन गोविंद रमण निरमल साधू संग ॥ नानक नामु न विसरउ करि किरपा भगवंत ॥" (522 म. 3)

(3) "गोविंद दामोदर माधवे पारब्रह्म निरंकारा ॥
नामु बरतणि नामो बालेवा नामु नानक प्रान अधारा ॥" (614 म. 5)

(4) "रसना उचरंति नामं श्रवणं अंम्रितह ॥ नानक तिन सद बलिहार बिना धिआनु पारब्रह्मणह ॥ (709 म. 5)

48 5 ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि वही वाणी धन्य है जो निरंतर प्रभु नाम का उच्चारण करती है और वही कान धन्य है प्रभु नाम रूपी अमृत शब्दों को सुनते हैं। गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं कि उन पर बलिहारि जाता हूं जो परब्रह्म परमात्मा का सदैव ध्यान करते है।

(5) "मांगउ दानु ठाकुर नाम ॥...
नामु सखाई सदा मेरे संगि हरि नामु मो कउ निसतारै ॥" (713 म. 5)

भगवत नाम जप वेद ज्ञान के तुल्य है। नाम के सहारे ही जीव चारों युगों में, विशेष कर कलियुग में, भवसागर को तर जाता है। चाहे कोई नौ व्याकरण, छः दर्शन, शास्त्र, अट्ठारह पुराण और छः वेदांगों को कितना ही अध्ययन करले, किन्तु इनके द्वारा भी वह प्रभु महिमा का पार नहीं पा सकता। नाम के बिना जीव कदापि मुक्ति नहीं पा सकता। ब्रह्माजी जो स्वयं भगवान विष्णु के नाभि कमल में वास करते हैं, उनका अंत न पा सके। हे प्राणी गुरु कृपा से नाम की महिमा जानी जा सकती है।

(1) "एक नामि जुग चारि उधारु सबदे नाम बिसाह है ॥" (1055 म. 3)
कलिजुग महि इक नामि उधारु ॥ नानक बोले ब्रह्म बीचारु ॥" (1138 म. 5)

(2) "नामु हमारे वेद अरु नाद ॥ नामु हमारे पूरे काज ॥
नाम हमारे पूजा देव ॥ नामु हमारे गुर की सेव ॥" (1145 म. 5)

(3) "नव छिअ खट का करे बिचारु ॥ निसि दिन उचरै भार अठार ॥
तिनि भी अंत न पाइआ तोहि ॥ नाम बिहूण मुकति किउ होइ ॥
नाभि बसत ब्रह्मै अंतु न जाणिआ ॥ गुरमुखि नानक नामु पछाणिआ ॥"
(1237 म.)

(4) "नानक अनुदिनु नामु धिआइ तू अंतरि जितु पावहि मोख दुआर ॥"
(1237 म)

48.6 गुरु अमरदास जी की इस भावभीनी वाणी में नाम की महिमा देखिये। गुरु महाराज ही कह रहे हैं कि गुरु की अनुशासना से सांस-सांस से प्रभु नाम जपने की शक्ति प्राप्त होती है और अंहभाव नष्ट हो जाता है। गुरु कृपा से नाम ही जीव को अपने प्रीतम प्रभु से मिलाएगा। और माया से मलिन बुद्धि हो जायेगी और जीव परमानंद प्राप्त होगा।

"सासनि सासि बलु पाई है निहसासनि नामु धिआवैगो ॥
गुर परसादी हउमै बूझै तो गुरमति नामि समावैगो ॥...
हरि हरि क्रिपा करहु जगजीवन मैं सरधा नामि लगावैगो ॥
नानक गुरु गुरु है सतिगुरु मैं सति गुरु सरनि मिलावैगो ॥" (1310 म. 4)

अंत में इस प्रसंग को समाप्त करते हुए ग्रंथ साहिबजी में आई शेख फरीद की यह वाणी दे रहे हैं जिसमें वह कहते हैं कि जिन्होंने परमात्मा नाम को भुला दिया है उनके मुख डरावने लगते हैं। ऐसे व्यक्ति इस लोग परलोक दोनों में ही दुःख पाते हैं :

"फरीदा तिना मुख डरावने जिना विसारिओनु नाउ ॥
ऐथै दुख घणेरिआ अगै ठउर न ठाउ ॥" (1383 शेख फरीद)

❑

ग्रंथ साहिबजी "वैराग्य भाव"

48.7 यहां तक हमने ग्रंथ साहिबजी ओर कुरान शरीफ़ में आए उनके अपने-अपने मान्य मुख्य सिद्धातों को विवेचन किया। इसके पूर्व के हम ग्रंथ साहिबजी में आई इस्लाम सम्बन्धी वाणियों का विश्लेषण करें हम ग्रंथ साहिबजी के कुछ अन्य ऐसे विषयों की चर्चा करेंगे जिनको जीने बिना ग्रंथ साहिबजी विषयक हमारा ज्ञान अधूरा रहा जायेगा। और इन विषयों को जानने से हम ग्रंथ साहिबजी और इस्लाम की भिन्नताओं को और भी स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे। इन विषयों में 'वैराग्य', 'वर्ण व्यवस्था' और 'वैष्णव भाव' सम्बन्धी शब्द प्रमुख है।

जैसा कि हम कई स्थानों पर कह चुके हैं कि ग्रंथ साहिबजी का मुख्य लक्ष्य जीव द्वारा परमात्म प्राप्ति है, न कि इस लोक और परलोक के भोग। ग्रंथ साहिबजी की यह दृढ़ मान्यता है कि इस लोग और परलोक में मिलने वाले बड़े से बड़े भोगों का सुख अल्प और क्षणिक है और इनका अन्त घोर दुखों और जन्म-मरण के चक्र में फँसने में ही है। निरन्तर रहने वाला परमानन्द तो परमात्मा की प्राप्ति से ही सम्भव है। जैसाकि हम इस्लाम की मान्यताओ के विषय में पहले कहते आये हैं कुरान शरीफ़ में रुह द्वारा अल्लाह की प्राप्ति की कोई भी कल्पना नहीं है—वहाँ तो ईमानवालों के लिये परलोक में बहिश्त में सदा मिलने वाले इन्द्रिय-जनित भोगों की प्राप्ति की रूह के सुख की अन्तिम सीमा है।

परन्तु मन और इन्द्रियों से अनुभूत इस लोग और परलोक के भोगों का आकर्षण बडा प्रबल है। उनकी वासना में आसक्त और उन्हें पाने की कामना से ग्रसित जीव अपने परम लक्ष्य परमात्मा को विस्मृत किये रहता है। वेद शास्त्रों और ग्रंथ साहबजी की यह मूल धारणा है कि इन भोगों से वैराग्य के बिना मन को जीतना कठिन है, और मन को जीते बिना परमात्मा को पाना असम्भव है।

गीता के छटे अध्याय में अर्जुन भगवान कृष्ण से कहते हैं कि "हे मधुसूदन! यह जो साम्यमति के द्वारा प्राप्त योग आपके द्वारा कहा गया है कि वह मन की चंचलता के कारण मुझे बड़ा अस्थिर दिखलाई देता है। क्योंकि श्रीकृष्ण! यह मन बड़ा चंचल, हठी, दृढ़ और बलवान है, उसका रोकना या निग्रह करना मैं वायु को रोकने के समान अत्यन्त कठिन मानता हूँ।" (गीता 6/33,34)

उत्तर में भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि—अर्जुन निसन्देह मन चंचल और दुर्निग्रह हे, परन्तु कौन्तये! अभ्यास और वैराग्य से (यह) वश में किया जाता है।" (गीता 6/35)

48.8 कठोपनिषद में यमराज और बालक नचिकेता के सम्वाद के रूप में इस विषय का बड़ा मार्मिक वर्णन आया है। नचिकेता प्रश्न के रूप में यमराज से परमात्मा ज्ञान सम्बन्धी वर मागता है और यमराज उसकी पात्रता की परीक्षा लेने के लिये उसे इस वर के बदले में इस

लोक और परलोक सम्बन्धी ऊँचे भागों को माँगने के लिये प्रेरित करते हैं जिन्हें नचिकेता नकार देता है। इस अभूतपूर्व संवाद की झांकी का स्वरूप इस प्रकार है :

(1) यमराज नचिकेता से कहते हैं, "सैकड़ों वर्षों की आयुवाले बेटे और पोतों को, बहुत से गौ आदि पशुओं को, हाथी, सुवर्ण और घोड़ों को मांग लो, भूमि में बड़े विस्तार वाले साम्राज्य को मांग लो, तुम स्वयं भी जितने वर्षो तक चाहो जीते रहो।" (कठ. 1/1/23)

(2) "हे नचिकेता धन, सम्पत्ति और अनन्त काल तक जीने के साधनों को यदि तुम इस आत्म ज्ञान विषयक वरदान के समान वर मानते हो तो माँग लो, और तुम इस पृथ्वी लोक मे बड़े भारी सम्राट बन जाओ, (मैं) तुम्हें सम्पूर्ण भोगों में से अति उत्तम भोगों का पात्र बना देता हूं।" (कठ. 1/24)

(3) "जो जो भोग मनुष्य लोक में दुर्लभ हैं, उन सम्पूर्ण भोगों को इच्छानुसार माँग लो, रथ और बाजों सहित इन स्वर्ग की अप्सराओं को (अपने साथ ले जाओ) मनुष्यों को ऐसी स्त्रियाँ अलभ्य हैं, मेरे द्वारा दी हुई इन स्त्रियों से तुम अपनी सेवा कराओ, हे नचिकेता मरने के बाद आत्मा को क्या होता है, इस बात को मत पूछो।" (कठ. 1/1/25)

नचिकेता यमराज द्वारा प्रदत्त त्रिलोकी के इन उच्चतम भोगों को नकारते हुए कहता है–"हे यमराज (जिन भोगों का आपने वर्णन किया है वे) क्षणभंगुर भोग मनुष्य के अन्तःकरण सहित सम्पूर्ण इन्द्रियों का जो तेज है उसको क्षीण कर डालते हैं, समस्त आयु चाहे वह कितनी भी बड़ी क्यों ने हो अल्प ही हे, इसलिये ये आपके रथ आदि वाहन और ये अप्सराओ के नाच-गान आपके पास ही रहें मनुष्य धन से कभी तृप्त किये जाने योग्य नहीं है...मेरे माँगने लायक वर तो वह (आत्म ज्ञान) ही है। (कठ. 1/26.27)

"यह मनुष्य जीर्ण होने वाला और मरणाधर्मा है। इस तत्व को समझने वाला मनुष्य लोक का निवासी कौन मनुष्य है (जो कि) बुढ़ापे से रहित न मरने वाले (आप सदृश) महात्माओं को संग पाकर स्त्रियों से सौदर्य, क्रीड़ा और आमोद-प्रमोद का बार-बार चिन्तन करता हुआ बहुत काल तक जीवित रहने में प्रेम करेगा।" (कठ. 1/28)

"हे यमराज! जिस महान आश्चर्यमय परलोक सम्बन्धी आत्म ज्ञान के विषय में (लोग) यह शंका करते हैं कि यह आत्मा मरने के बाद रहता है या नहीं, उसमे जो निर्णय है वह आप हमे बतालाइये, जो यह अत्यन्त गम्भीरता को प्राप्त हुआ वर है इससे दूसरा वह नचिकेता नही मागता।" (कठ. 1/29)

नचिकेता के इस अलौकिक वैराग्य और परमात्मा अनुराग को देखकर कर यमराज अभिभूत हो उठते हैं और उसे आत्मज्ञान प्रदान करते हुए उसकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं

"हे नचिकेता! तुम (ऐसे निस्पृह को कि) प्रिय लगने वाले और अत्यन्त सुन्दर रूपवाले इस लोक और परलोक के समस्त भोगों को भली भांति सोच समझकर तुमने छोड़ दिया, इस सम्पत्ति रूप शृंखला (बेड़ी) को (तुम) नहीं प्राप्त हुए जिसमें बहुत से मनुष्य फँस जाते है। (कठ. 2/3)

"हे नचिकेता जिसमें सब प्रकार के भोग मिल सकते हैं जो जगत का आधार यज्ञ का चिरस्थायी फल निर्भयता की अवधि और स्तुति करने योग्य एव महत्वपूर्ण है (तथा वेदों

मे जिसके गुण नाना प्रकार से गाये गये हैं, जो दीर्घकाल तक की स्थित से सम्पन्न हैं, ऐसे स्वर्गलोक को देख कर भी तुमने धैर्यपूर्वक उसका त्याग कर दिया (इसलिये मैं समझता हूं कि) तुम बहुत ही बुद्धिमान हो।" (कठ० 2/11)"....तुम नचिकेता के लिए (मैं) परम धाम का द्वारा खुला हुआ मानता हूँ।" (कठ० 2/13)

48.9 उपरोक्त वेद वाणी में हमने देखा कि इस लोक और परलोक के उच्चतम भोगो के त्याग के बिना परमात्म प्राप्ति असम्भव है। या यूँ कहें कि त्रिलोकी के समस्त भोगों के प्रति सच्चे त्याग और वैराग्य की भावना से ही जीव परमात्म ज्ञान का अधिकारी बन सकता है और परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। समस्त ग्रंथ साहिबजी जीवों को संसार की क्षणभंगुरता और भोगों की निरर्थकता दर्शाते हुए जीवों को परमात्मा की भक्ति और सत् भगवत स्मरण का ही उपदेश देते हैं :

(1) "मन रे ग्रिह ही माहि उदासु ॥ सचु संजमु करणी सो करे गुरमुखि होइ परगासु ॥"
(26 म. 3)

रे मन तू घर में अर्थात् संसार में वैरागय भाव से रह जब तू सच और संयम से रहेगा तभी तू गुरु से परमात्मा ज्ञान प्राप्त कर सकेगा।

(2) "जे लख इसतरीआ भोग करहि नवखंड राजु कमाहि ॥
बिनु सतुगुरु सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि ॥" (26 म. 6)

लाखों स्त्रियों का भोग और नौ खण्डों से सम्पन्न इस पृथ्वी का एकछत्र राज्य भी एक व्यक्ति को तृप्त नहीं कर सकते। और न ही इनके द्वारा सतगुरु से परमानन्द की प्राप्ति हो सकती है। ऐसा व्यक्ति नाना योनियों में जन्मता-मरता रहता है।

(3) "एक रैण के पाहुन तुम आए बहु जुग आस बधाए ॥
गृह अंदर संपैं जो दीसै जिउ तरवर की छाए ॥ (212 म. 5)

रे जीव तुम इस संसार में मानों एक रात के अतिथि हो पर तुमने आशाएं और कामनाएं युगों-युगों की बांधे हो। तुम जो कुछ यह घर, भवन और अन्य सम्पदाएं देख रहे हो ये सब पेड़ की छाया के समान अस्थिर है।

(4) "लंका सा कोटु समुद्र की खाई ॥ तिह रावन घरि खबरि न पाई ॥
इक लखु पूत सवा लखु नाती ॥ तिह रावन घर दिया न बाती ॥
(481 कबीर)

गुरु तेग बहादुर जी का नीचे दिया गया पद कितने सरल भाव से संसारिक व्यवहार के स्वार्थमय बंधनों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित कर हमें नित नियमित राम नाम भजने की प्रेरण दे रहा है :

"सभ किछु जीवत को बिवहार ॥ मात पिता भाई सुत बंधुक अरू फुनि ग्रिह की नारि ॥ तन ते प्राण होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि॥ आध घरि कोऊ नहि राखैं घर ते देत निकारि ॥ मृग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जाते होत उधार॥" (536 म 9)

गुरु महाराज जी कहते हैं कि माता-पिता भाई कुटुम्बीजन और यहा तक कि अपनी

पत्नी से भी सब व्यवहार जीवित रहने तक ही सीमित है। प्राण निकलते ही ये सब प्रियजन इसी जीवन को प्रेत की संज्ञा दे देते हैं और इस शरीर को कोई घड़ी भी घर में रखने को तयार नहीं होता। इसलिए है मन। यह अच्छी तरह से समझ ले कि यह समस्त जग रचना और इसके सारे नाते रिश्ते मृगतृष्णा के समान छलावा मात्र है। इनमें किसी प्रकार का सुख निहित नही है। इसलिए यदि तू अपना उद्धार चाहता है तो नित निरंतर राम का भजन कर। और यही भाव आगे के इन तीन शब्दों में भी कितनी सहजता से उतरा है :

(1) **"जगत में झूठी देखी प्रीति॥ अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा क्या मीत॥ मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत॥ अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति॥ मन मूरख अजहूं नह समझत सिख दै हारिओं नीत॥ नानक भउजल पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत॥"** (536 म 9)

(2) **"मन की मन ही माहि रही॥ ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही॥
दारा मीत पूत रथ संपति धनु पूरन सभु मही॥
अवर सगल मिथिआ ए जानहु भजनु राम को सही॥
फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही॥
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नहीं॥"** (631/32 म. 9)

490 अर्थात् रे मानव तुम्हारे नाना कामनाऐं और भोगों के संकल्प मन में ही रह गये, और इसके पूर्व की तुम परमात्मा का भजन करते और तीर्थों में स्नान संतों का संग कर अध्यात्म मार्ग पर बढ़ते कि मृत्यु ने आकर तुम्हें पकड़ लिया। पत्नी, मित्र, पुत्र, धन से पूरन इस पृथ्वी की ही लालसा में जीवन गवां दिया। पर ये भोग और सम्पत्ति मिथ्या है। सच तो राम का भजन ही है। अरे तूने जन्म जन्मान्तर भटकने के बाद बड़े भाग्य से यह मानव जीवन पाया है। अरे इसी देह में ही परमात्मा से मिलन का दुर्लभ अवसर मिला है, तुम क्यों नहीं प्रभु स्मरण करते।

**"न हरि बिनु तेरो को न सहाई॥ कां की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई॥ धन धरनी अरू संपति सगरी जो मानिओ अपनाई॥
तन छूटै कहु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई॥"** (1231 म. 9)

अन्त में गुरु अर्जुनदेव जी का निम्न पद दे रहे हैं :

**"हरि प्रीति करीजै मानु न काजै इक राती के हभि पाहुणिआ॥
अब किआ रंगु लाइओ मोहु रचाइयो नांगे आवण जावणिया॥"** (455 म. 5)

कुरान शरीफ़ के अनुसार यदि कोई व्यक्ति ईमानवाला है तो मरने पर उसे अपने ईमान के कारण कुरान वर्णित बहिश्त या स्वर्ग मिलना निश्चित है। उधर ग्रंथ साहिबजी के अनुसार यदि मनुष्य ने संसार के और परलोक या स्वर्ग के भोगों से विरक्त होकर परमात्म ज्ञान इसी देह के रहते नहीं पाया तो वह अपनी कामनाओं और कर्मों के वश होकर नाना योनियों और नाना लोकों में अनेक कल्पों तक जन्म-मरन के चक्र में घूमने को विवश हो जाता है।

□

ग्रंथ साहिबजी "वर्ण व्यवस्था"

49 1 हिन्दू समाज की वर्ण व्यवस्था सर्वविदित है। तत्वतः यह व्यवस्था कर्म पर आधारित है पर इसका मूल आध्यात्मिक पक्ष क्षीण होने से यह व्यवस्था व्यवहार मे जन्म पर आधारित होकर रह गई। वर्ण व्यवस्था का ठोसतम आध्यात्मिक आधार ऋग्वेद ने पुरुषसूक्त के 12वे मत्र में निहित है। मंत्र के अनुसार सगुन सृष्टि की रचना के समय उस परम पुरुष परमात्मा के पुरुषाकार शरीर से ही चारों वर्ग उत्पन्न हुए। उस परम पुरुष के मुख से ब्राह्मण, भुजाओ से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य और पैरों से शूद्र वर्ण उत्पन्न है। इस प्रकार परम पुरुष के एक ही शरीर से उत्पन्न होने के यह चारों वर्ण आर्य जाति के अभिन्न अंग माने गए है। वृहदारण्यक उपनिषद के प्रथम अध्याय में आता है कि वह ब्रह्म ही मनुष्य जाति में ब्राह्मण रूप में ब्राह्मण हुआ, क्षत्रिय रूप से क्षत्रिय हुआ, वैश्य रूप से वैश्य हुआ और शूद्र रूप से शूद्र हुआ। इस तथ्य के आधार पर चारों ही वर्ण आर्य जाति के अभिन्न अंग हुए। यदि आर्य जाति श्रेष्ठ है तो शूद्र भी उतना ही श्रेष्ठ है, यदि शूद्र को पत्ति माना जाता है तो समस्त आर्य जाति पत्ति मानी जायेगी। वेदों की यह मान्यता है कि परम पुरुष के शरीर से उत्पन्न होने के कारण जब ये चारों वर्ण संयुक्त रूप से सत्य को आधार बना कर कार्य करते हैं तभी विश्व मे विभूतियुक्त कर्म संभव है।

परन्तु उपरोक्त मंत्र 12 से कोई यह न समझले कि पुरुष सूत्र में यज्ञ पुरुष से केवल चारों वर्गों की उत्पत्ति का ही वर्णन है। पुरुष सूक्त अपने 18 मंत्रों में यज्ञ पुरुष से समस्त सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन करता है। आगे हम इन मंत्रों के अंश दे रहे हैं तथा मंत्र सख्या कोष्ठों में दी है। "जिसमें सब कुछ हवन कर दिया गया था, उस यज्ञ पुरुष से ऋग्वेद और सामवेद प्रकट हुए। उसी से गायत्री आदि छन्द प्रकट हुए। उसी से यजुर्वेद की भी उत्पत्ति हुई।" (9) "उस यज्ञ पुरुष से घोड़े उत्पन्न हुए। इनके अतिरिक्त नीचे-ऊपर दोनों और दांतोंवाले (गर्दभादि) भी उत्पन्न हुए। इसी से गांए उत्पन्न हुई और उसी से बकरियां और भेडे भी उत्पन्न हुई।" (10) "इस यज्ञ पुरुष के मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुए। नेत्रों से सूर्य प्रकट हुए। मुख से इन्द्र और अग्नि तथा प्राण से वायु की उत्पत्ति हुई।" (13) "यज्ञ पुरुष की नाभि से अन्तरिक्ष उत्पन्न हुआ। मस्तक से स्वर्ग प्रकट हुआ। पैरों से पृथ्वी, कानों से दिशाऐं हुई। इस प्रकार समस्त लोक उस पुरुष से ही कल्पित हुए।" (14) "तमस (विद्या रूप अंधकार) से परे आदित्य के समान प्रकाश स्वरूप उस महान पुरुष को मैं जानता हूं। सबकी बुद्धि में रमण करने वाला वह परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ में समस्त रूपों की रचना करके उनके नाम रखता है, और उन्हीं नामों से व्यवहार करता हुआ सर्वत्र विराजमान होता है।" (16)

"पूर्वकाल में ब्रह्मा जी ने जिनकी स्तुति की थी इन्द्र ने चारों दिशाओं में जिसे व्याप्त)

जाना था, उस परम पुरुष को जो इस प्रकार (सर्वस्वरूप) जानता है, वह यही अमृतपद (मोक्ष) प्राप्त कर लेता है। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग निज-निवास (स्वरूप या भगवतद्धाम) की प्राप्ति का नहीं है।" (17) "देवताओं ने (पूर्वोक्त रूप में) यज्ञ के द्वारा यज्ञस्वरूप परम पुरुष का भजन (आराधन) किया था। इस यज्ञ से सर्वप्रथम सब धर्म उत्पन्न हुए। उन धर्मों के आचरण से वे देवता महान् महिमा वाले होकर उस स्वर्गलोक का सेवन करते हैं जहाँ प्राचीन साध्य देवता निवास करते है।" (18)

इस प्रकार हम देखते है कि परम पुरुष से शुद्र आदि चारों वर्णों की उत्पत्ति उस परम पुरुष से समस्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के प्रसंग में है, समस्त देवताओं और उनको धारण करने वाले धर्मों की उत्पत्ति के प्रसंग में है, अंधकार से परे प्रकाश स्वरूप और ज्ञान स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के प्रसंग में है। इस प्रकार से और जैसा कि हम शास्त्रों और ग्रंथ साहिबजी में आगे चलकर देखेंगे चारों वर्ण ही परमात्माप्राप्ति के समान रूप से अधिकारी है। और जिस भी व्यक्ति ने परमात्म ज्ञान प्राप्त कर लिया, वही सबसे श्रेष्ठ है।

49 2 इसके प्रमाण स्वरूप वृहदारण्यक उपनिषद में आता है कि प्रजापति स्वरूप इस पुरुष ने पहले ब्राह्मण की रचना की, देवताओं में अग्नि ब्राह्मण हुआ। परन्तु केवल ब्राह्मण वर्ण की रचना से वह विभूतियुक्त कर्म करने में समर्थ नहीं हुआ। फिर उसने क्षत्रिय वर्ण की रचना की, देवताओं में इन्द्र, सोम, वरुण, मृत्यु, रुद्र आदि क्षत्रिय हुए। फिर भी वह विभूतियुक्त कर्म करने में समर्थ न हो सका। तत्पश्चात उसने वैश्य वर्ण की रचना की। देवताओं में वसु, आदित्य, मरुत् आदि देवता वैश्य हुए। तब भी वह विभूतियुक्त कर्म करने में समर्थ नही हुआ। फिर उसने शूद्र वर्ण को उत्पन्न किया, देवताओं में पूषा देवता शूद्र हुआ। सबका पालन करने के कारण ही यह देवता पूषा कहलाया। पृथ्वी ही पूषा है क्योंकि यह सबका पालन करती है। किन्तु तब भी वह प्रजापति रूप विभूतियुक्त कर्म करने में समर्थ न हो सका। "तब उसने अतिशयता से श्रेयोरूप धर्म को रचा। यह जो धर्म है, क्षत्रिय का भी नियन्ता है। अतः धर्म से उत्कृष्ट कुछ नहीं है। इसलिये जिस प्रकार राजा की सहायता से (प्रबल शत्रु को भी जीतने की शक्ति आ जाती है।) उसी प्रकार धर्म के द्वारा निर्बल पुरुष भी बलवान को जीतने की इच्छा करने लगता है। वह जो धर्म है निश्चय सत्य ही है। इसलिये सत्य बोलने वाले के विषय में कहते है कि यह धर्म भाषण करता है क्योंकि ये दोनों यही (धर्म ही) है। (वृहदाः 1/4/14)

49.3 गीता ने चारों वर्णों का निर्माण गुण और कर्म के आधार पर ही माना है, उत्पत्ति के आधार पर नहीं। भगवान कृष्ण कहते हैं–

"गुण और कर्म के विभाग से चारों वर्ण मेरे द्वारा रचे गये हैं। उनका कर्त्ता होने पर भी मुझ अविनाशी सर्वेश्वर तू अकर्त्ता ही जान।" (गीता 4/13)

49 4 वेद शास्त्रों ने और ग्रंथ साहिबजी ने परमात्मा की प्राप्ति ज्ञान के अधीन मानी है कर्म के अधीन नहीं। कर्म चाहे कितना ही महान क्यों न हो यदि वह फल की कामना से किया गया है तो अंततः बन्धन का ही कारण बनता है। और यदि छोटे से छोटा कर्म निष्काम भाव से किया गया है भगवत पूजन के भाव से किया गया है तो वह ज्ञान के मार्ग को प्रशस्त कर मोक्ष का कारण बनता है यह बात गीता के अट्ठारहवें में बड़े ही स्पष्ट

रूप में इस प्रकार आई है।

(1) "शम, दम, तप, शोच, क्षमा आर्जव, ज्ञान, विज्ञान और अस्तिकता (ये सब) ब्राह्मण के स्वभावज कर्म है।" (18/42)

"शौर्य, तेज, धृति, दक्षता, युद्ध से न भागना, दान और ईश्वर भाव (ये सब) क्षत्रिय के है।" कृषि, गोरक्षा और व्यापार ये वैश्य के स्वभावज कर्म हैं। (18/43) "सेवा, शूद्र का स्वभाव कर्म है।" (18/44)

ऊपर दिये तीनों श्लोकों में हम देखते हैं कि इनमें चारों वर्णो के स्वभावज कर्मो की चर्चा है, जातिगत कर्मो की चर्चा नहीं। इसका अर्थ यह है कि यदि कोई शम, दम, तप ज्ञान आदि से सम्पन्न नहीं है, वह फिर चाहे कितने ही बड़े ब्राह्मण कुल में क्यों न जनमा हो, गीता के अनुसार ब्राह्मण नहीं है। इसी प्रकार यदि शूद्र कुल में उत्पन्न व्यक्ति यदि ज्ञान विज्ञान स सम्पन्न है तो वह गीता के अनुसार शुद्र न होकर ब्राह्मण माना जायेगा। इसका विवेचन आगे चलकर हम शास्त्र और ग्रंथ साहिबजी के परिप्रेक्ष्य में करेंगे।

किस प्रकार मनुष्य अपने स्वभावज कर्म करते हुए परम सिद्धि को या परमात्मा को प्राप्त कर सकता है, निष्कर्म हो सकता है, यह बतलाते हुए गीता में भगवान कहते हैं

"अपने-अपने कर्म में लगा हुआ मनुष्य संसिद्धि को प्राप्त करता है। किन्तु अपने कर्म मे लगा हुआ मनुष्य जिस प्रकार सिद्धि को पाता है वह तू (मुझसे) सुन।" (18/45) "जिमसे समस्त प्राणियों की प्रवृत्ति हुई है, और जिससे यह सब (जगत) व्याप्त है, उसको अपने कर्मा से पूजकर मनुष्य सिद्धि को पाता है। (18/46)। अपना धर्म निगुन (होने पर भी) भलीभांति अनुष्ठान किये हुए पर धर्म से श्रेष्ठ है, क्योंकि स्वभाव से नियत किये हुए कर्म करता हुआ मनुष्य पाप को नहीं प्राप्त होता।" 18/47 "अर्जुन स्वाभाविक कर्म सदोष (हो तो) भी उसका त्याग नहीं करना चाहिये। क्योंकि धुऐं से अग्नि की भांति सभी कर्म दोष से आवृत्त है।" 18/48

"सर्वत्र अनासक्त बुद्धि, जितात्मा और विगतस्पृह पुरुष संन्यास से युक्त होकर परम नैष्कर्म्य सिद्धि को प्राप्त होता है।" 18/19, "मेरा आश्रय ग्रहण करके पुरुष सब कर्मो को सदा करता हुआ भी मेरे प्रसाद से शाश्वत और अव्यय पद को पा जाता है।" 28/56 "मन से समस्त कर्मों को मुझे समर्पण करके मेरे परायण हुआ तू बुद्धियोग का आश्रय लेकर निरन्तर मुझमें चित्तवाला हो।" 18/57

49.5 उपनिषदों और गीता के उपरोक्त विवेचन से यह सिद्ध होता है कि हिन्दू समाज की वर्ण व्यवस्था न जन्म मूलक है, न कर्ममूलक है और न ही जातिमूलक है बलिक इसके मूल में एक विशाल आध्यात्मिक भूमिका रही है, जिसके परिप्रेक्ष्य में कर्म, वर्ण, जाति, नाम, कुल, गोत्र आदि गौण हो जाते हैं और पीछे छूट जाते हैं, पाप और पुण्य दोनों का कहीं अस्तिव ही नहीं रहता। आइये इस सम्बन्ध में हम उपनिषदों की इन दिव्य मंत्रों को देखें :

"मन के सहित वाणी आदि समस्त इन्द्रियों जहां से उसे न पाकन लोट आती हैं, उस ब्रह्म के आनन्द को जानने वाला (महापुरुष) किसी से भी भय नहीं करता।" (तैत्तिरियो 2/4) प्रसिद्ध है कि उस (महापुरुष) को यह बात चिन्तित नहीं करती कि मैंने क्यों श्रेष्ठ कर्म नही किया अथवा) क्यों मैंने किया जो इन पुण्य-पाप कर्मों को इस प्रकार सताप का

हेतु) जानने वाला है वह आत्मा की रक्षा करता है। अवश्य ही जो इन पुण्य और पाप दोनो ही कर्मों को इस प्रकार (संताप को हेतु) जानता है वह पुरुष आत्मा की रक्षा करता है।" (तैत्तिरीयोपनिषद, ब्रह्मानंदवल्ली नवम् अनुवाक)

बृहदारण्यक उपनषिद के तीसरे अध्याय के आठवें ब्राह्मण में जनक की सभा में गार्गी के साथ शास्त्रार्थ में उसके अक्षर ब्रह्म के प्रश्न पर उत्तर देते हुए याज्ञवल्क्य जी कहते है

"हे गार्गी जो कोई इस लोक में इस अक्षर को न जानकर हवन करता, यज्ञ करता ओर अनेकों सहस्र वर्ष प्रर्यंत तप करता है, उसक वह सब कर्म अन्तवाला ही होता है। जो कोई भी इस अक्षर को बिना जाने इस लोक से मर कर जाता है, वह कृपण (दीन) है और हे गार्गी। जो इस अक्षर को जानकर इस लोक से मर कर जाता है, वह ब्राह्मण है। "और इस मूल आध्यात्मिक सिद्धांत के पीछे जो वेदों का परम वाक्य है, और जिसका ग्रंथ साहिबजी ने स्थान-स्थान पर उल्लेख किया है, और जिसे वर्ण व्यवस्था के संदर्भ में विशेष रूप से घोषित किया है वह इस प्रकार है।

"स यो ह वै तत्परम ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति...(मुण्डकोपनिषद-3/2/9) अर्थात "निश्चय ही जो कोई भी उस परब्रह्म परमात्मा को जान लेता है वह ब्रह्म ही हो जाता है।"

महाभारत में आता है कि : "कोई वर्ण का पुरुष और स्त्री ही क्यों न हो, यदि उनके मन में धर्म सम्पादन की अभिलाषा हो तो योग मार्ग का सेवन करने से उन्हें भी परमगति की प्राप्ति हो सकती है (महाभारत शान्ति पर्व 240/34) इन्हीं परम वाक्यों की स्थापना करते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं :

(1) "जाति का गरबु न करीअहु कोई॥ ब्रहु बिदे सो ब्राह्मण होई॥

हे भाई जाति का यानि अपनी ऊंची जाति का गरब नहीं कर। वास्तव में वे ही मनुष्य ब्राह्मण है जो ब्रह्म हो जानता है।

(2) "सो ब्रह्मणु ब्रह्मु जो बिंदे हरि सेती रंगि राता॥" (69 म. 3)

अर्थात वही ब्रह्मण है जो ब्रह्म को जानता है और वह सदैव परमात्म् रब में ही अनुरक्त रहता है।

(3) "बबा ब्रह्मु जानत ते ब्रह्म॥ बैसनो ते गुरमुखि सुच धरमा॥" (258 म. 8)

यह पद गुरु अर्जुनदेव जी महाराज रचित गौडी राग में "बावन अखरी" से है। "ब" अक्षर द्वारा गुरु महाराज जी उपदेश दे रहे हैं कि बाबा जो ब्रह्म को जानते हैं वे ही सच्चे ब्राह्मण है। वे ही सच्चे वैष्णव है जो गुरु के उपदेश द्वारा पवित्र धर्म का पालन करते हैं।

(4) "ब्रहु बिदें सो ब्राह्मणु कहिए जिअनुदिन हरि लिव लाए॥ (512 मं. 3)

(5) "ब्रह्मु बिदै तिस दा ब्रह्ममतु रहै एक सबदि लिव लाए॥ (649 मं. 4)

उस ब्रह्मण का ब्राह्मणत्व स्थिर रहता है जिसने परब्रह्म परमात्मा को जान लिया है उसी के नाम में अपनी लौ लगा दी है।

गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं :

(6) "सो ब्रह्मण जो ब्रह्मु विचारै॥ आपि तरै सगले कुल तारै॥" (662 मं. 1)

(7) "ब्रह्मु बिंदहि ते ब्रह्मणा जे चलहि सतिगुर भाइ॥ जिनकै हिरदै हरि बसै हउमै रोग गवाइ ॥"...."इस जुग महि बिरले ब्रह्मण ब्रह्मु बिंदहि चितु लाइ॥ (849-850 म.4)

(8) "ब्रह्मणु ब्रह्म गिआन इसनानी हरि गुण पूजे पोती॥ एको नामु एको नाराइणु त्रिभवण एका जोती॥" (992 म.1)

अर्थात् सच्चा ब्रह्मण वही है जो ब्रह्मज्ञान रूपी जल में स्नान करता है और हरि गुणगान रूपी फूल पत्तों से पूजा करता है। वह एक नारायण के नाम को जपता है और त्रिभवन में एक ही ज्योति को अनुभव करता है।

(9) "सो ब्रह्मणु भला आखिऐ जि बूझै ब्रह्मु विचार॥" (1093 मं. 3)

(10) "ब्रह्माणु संगि उधरण ब्रह्म करम जि पूरणह॥" (1360 मं. 5)

उसी ब्राह्मण की संगति में उद्धार संभव है जो ब्रह्म प्राप्ति रूप कर्म में पूर्ण है अर्थात ब्रह्मज्ञानी है।

(11) "कहु कबीर जो ब्रह्मु बीचारै॥ सो ब्रह्मणु कहीअतु है हमारे॥ (324 कबीर)

(12) "सो ब्रह्माणु जो विंदे ब्रह्मु॥ जपु तपु संजमु कमावै करमु॥
सील संतोख का रखै धरमु॥ बंधन तोडै होवै मुकतु॥ सोई ब्रह्मणु पूजण जुगतु॥" (1411 मं. 1)

हे भाई जो ब्रह्म को जानता है वही ब्राह्मण है। जप, तप और इन्द्रियों का दमन ही जिसका कर्म है, शील संतोष ही जिसका धर्म है। और जो माया के बन्धनों को तोड़कर मुक्त हो गया है। ऐसा ही ब्राह्मण जगत में पूज्नीय है।

इस प्रकार हमने विस्तार से देखा कि ग्रंथ साहिबजी के मतानुसार भी पारब्रह्म परमात्मा को जाननेवाला ही ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी है, फिर चाहे वह किसी भी जाति या वर्ण का क्यों न हो।

49 6 जिस प्रकार आकाश में सड़कें, गलियाँ, फुटपाथ आदि बनाना असम्भव है उसी प्रकार वेद शास्त्रों और ग्रंथ साहिबजी के अनुसार अध्यात्म के क्षेत्र में परमात्म मार्ग में वर्ण व्यवस्था असम्भव है, ऊँच नीच के विभाजन की कोई भी कल्पना सम्भव नहीं है। वहाँ तो ब्रह्मज्ञानी ही सर्वश्रेष्ठ है फिर चाहे वह पशु या पक्षी की ही देह में क्यों न स्थित हो। छान्दोग्योपनिषद के चतुर्थ अध्याय के पंचम और सप्तम खण्डों में सत्यकाम जाबाल को सांड और हंस ने ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया। पक्षियों में कौवा सबसे अधम माना जाता है और पक्षिराज गरुड सर्वश्रेष्ठ। भगवन विष्णु के वाहन होने के कारण गरुड़जी देवताओं के भी पूज्य माने जाते है। पर कौवे की देह धारण करने वाले काकभुसुण्ड जी अपने ब्रह्मज्ञान के कारण सबके पूजनीय हो गये और स्वयं गरुड़ जी ने उनके चरणों में बैठकर ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर अपने रामावतार सम्बन्धी मोह को दूर किया। और अपने इसी ब्रह्मज्ञान के कारण काकभुशुण्ड जी भगवान शिव के प्रिय सखा भी बने।

पुराण वर्णित धर्मब्याध, जो मांस बेचने का कर्म करता था, अपने ब्रह्मज्ञान के कारण ही सबका पूज्य हो उठा और तपस्वी कौशिक ब्राह्मण ने उन्हें गुरु मानकर उनसे परमात्म ज्ञान प्राप्त किया

इस संबंध में ग्रंथ साहिबजी में आई संत रविदास जी की निर्णायक वाणी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह सर्वविदित है कि संत रविदास जी चमार कुल में उत्पन्न होने के बाद भी, और चर्मकार का कर्म करते हुए भी, अपने ब्रह्मज्ञान के कारण लोक पूज्य हुए और भारत के अपने समय के सर्वश्रेष्ठ मेवाड़ के क्षत्रियकुल की अद्वितीय कुलवधु और भक्तशिरोमणि मीराबाई ने उन्हें अपना गुरु मानकर उनके श्री चरणों की शरण ली। हिन्दु धर्म में अध्यात्म का क्या स्थान है इसे रविदास जी की ही वाणी में सुनें :

(1) नागर जना मेरी जाति बिखिआत चमारं ॥ रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥...मेरी जाति कुढ बांढला ढोबंता नितहि बानारसी आस पासा॥ अब बिप्र परधान तिहि करहि डडउति तेरे नाम सरणाई रविदासु दासा ॥" (1293 रविदास जी)

49.7 संत रविदास जी कहते हैं कि हे नगर के लोगों! यह बात सर्व विख्यात है कि मेरी जाति चमार है, किन्तु मेरे हृदय में राम हैं और मैं गोविन्द के गुणों का स्मरण करता हूं। यानी मेरे हृदय में राम नाम, गोविन्द नाम ही सार रूप में बसा हुआ है। मेरी जाति और कुटुम्ब के लोग बनारस शहर के आस-पास मरे जानवरों को ढोते हैं और उनका चर्म उतारते हैं। परन्तु हे राम जी जब से तेरे नाम को मैंने अपने हृदय में धारण किया है और तेरी शरण में आया हू तब से बनारस के प्रधान ब्राह्मण मेरे चरणों में दण्डवत करने लगे हैं। हे राम जी! यह आपके नाम की ही महिमा है।

यहाँ यह बतलाना उचित रहेगा कि संत रविदास जी के ग्रंथ साहिबजी में 41 पद है। इनकी जन्म तिथि संदिग्ध है, पर ये रामानंद जी के शिष्य और कबीर के समकालीन थे, कबीर का काल ई. 1398 से ई. 1485 तक माना जाता है।

ग्रंथ साहिबजी के इसी पृष्ठ 1293 पर आगे चलकर रविदास जी पुनः अपने बारे मे कहते हैं :

"जा के कुटुबं के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बनारसी आस पासा ॥
आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तैन रविदास दासन दासा ॥"

(1293 रविदास जी)

भक्त रविदास जी कहते हैं कि जिसके कुटुम्ब के सारे नीच लोग आज भी बनारस के आस-पास मरे पशुओं को ढोते रहते हैं, उस भगवान के दासों के दास रविदास के चरणों मे काशी के ब्राह्मण आचार सहित यानी विधिपूर्वक दण्डवत प्रणाम करते हैं।

महाराष्ट्र के महान संत नामदेव जी जाति के छीपा यानी धोबी थे। इनका समय ई. 1270 से ई. 1350 तक माना जाता है। ग्रंथ साहिबजी में इनके 60 पद है। इनके बारे में ग्रंथ साहिबजी में संत रविदास जी कहते हैं :

"जा कै भागवतु लेखिए अवरू नहीं पे खीऐ तास की जाति आछोप छीपा॥ बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ नाम की नामना सपत दीपा ॥" (1293 रविदास जी)

संत रविदास जी कहते हैं कि जिस (नामदेव) के घर परमात्म भक्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखता, और जो जाति के छीपा थे, पर भगवत नाम के कारण उनकी कीर्ति सातो दीपों में यानी सारे विश्व में फैली हुई है। महर्षि व्यास और ब्रह्मा जी के मानस पुत्रों सनकादि

द्वारा लिखे ग्रंथों में हरि नाम की ही महिमा देखी जाती है।

भक्त कबीर के ग्रंथ साहिबजी में 540 पद आये हैं। उनके बारे में ग्रंथ साहिबजी मे संत रविदास जी कहते हैं :

"जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानी अहि सेख सहीद पीरा ॥
जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक पदसिध कबीरा ॥" (1293)

संत रविदास जी कहते हैं कि जिस के कुल में ईद-बकरीद के पर्वों पर गोवध होता था, और जिसके कुल में शेख, शहीदों और पीरों की मनौती मानी जाती थी, और जिस के बाप ने यह यह सब किया, उसी कबीर ने बाप के विपरीत हरि नाम का आश्रय ले तीनों लोकों में प्रसिद्धि पाई।

इस प्रकार वर्ण व्यवस्था के बारे में अपना मत प्रकट करते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं :

(1) "ब्राहु खत्री सूद वेस चारि बरन चारि आश्रम हहि
जो हरि धिआवै सो परधानु ॥" (891 म.4)

यानी चारों वर्णों और चारों आश्रमों (यानी, ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) में भी जो व्यक्ति परमात्मा के ध्यान में लगा हुआ है वही प्रधान है।

(2) "ब्राह्मण वैस सूद अरु खत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥
होई पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ॥" (858 रविदास जी)

इस पद में संत रविदास जी नीची से नीची जातियों यानी डोम और चंडाल और विधर्मी मलेच्छों का भी वर्णन करते हुए कहते हैं कि यह सब भी परमात्मा के भजन से स्वयं भी तर जाते हैं और अपने दोनों कुलों यानी पिता और माता दोनों के वंशों का उद्धार कर देते हैं। इसके प्रमाण में संत रविदास जी कहते हैं :

"रे चित चेति चेत अचेत ॥ काहे न बालमीकहि देख ॥
किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति विसेख ॥
(1124 रविदास जी)

(3) "ना मैं जाति न पाति है ना मैं थेहु न थाउ ॥
सबदि भेदि भ्रमु कटिआ गुरि नामु दीआ समझाइ ॥" (994 म. 3)

(4) "चहु बरना विचि जागै। सोई जमै कालै ते छूटे सोइ ॥
कहत नानक जनु जागै सोइ ॥ गिआन अंजनु जा की नेत्री होई ॥
जाति का गरबु न करी अहु कोई ॥ ब्रह्मु बिंदे सो ब्राह्मणु होई ॥
(1128 म.3)

आइये देखें गुरुओं ने अपनी वाणी में रविदास जी और नामदेव जी की महिमा को किस रूप में देखा है। संत रविदास जी के बारे में गुरु रामदास जी कहते हैं :

(1) "रविदास चमार उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाई ॥
पत्ति जाति उतमु भइआ चारि बरन पाइ पगि आइ॥" (733 मं 4)

रविदास चमार जाति का था पर वह हर पल हरि की कीर्ति गायन में लगा रहता था

वह निम्न जाति का होते हुए भी हरि भक्ति से उत्तम हो गया और चारों वर्णो के लोगो ने उसके चरणों में अपना शीश नवाया।

(2) **"नामदेव प्रीति लगी हरि सेती लोकु छीपा कहै बुलाई॥
खत्री ब्राह्मण पीठि दे छोड़े हरि नामदेउ लीआ मुखि लाई॥"** (733 म. 4)

संत नामदेव जी जिसे लोग छीपा कह कर बुलाते थे, उसकी हरि में ऐसी प्रीति लगी कि श्री हरि ने ब्राह्मण और क्षत्रियों की ओर से पीठ कर ली और नामदेव जी की ओर मुख कर उन्हें स्वीकार कर लिया।

49 8 इस पद के साथ नाम देव जी की एक कथा है। कहते हैं नामदेव जी को नीच जाति का मानकर ब्राह्मणों ने उन्हें जगन्नाथ के मन्दिर से शूद्र कहकर बाहर निकाल दिया। नामदेव जी मन्दिर के पिछवाड़े जाकर भगवत् भजन में लीन हो गये। तब भगवान ने सच्चे भक्त की महिमा दर्शाने के लिये मन्दिर मुख्य द्वार नामदेव जी की तरफ घुमा दिया और ब्राह्मण क्षत्रिय आदि की ओर पीठक कर ली। स्वयं नामदेव जी के शब्दों में यह मार्मिक प्रसंग ग्रंथ साहिबजी में इस प्रकार आया है :

(3) **"मो कउ तूं न बिसारि तू न बिसारि॥ तू न बिसारे रामईआ॥
आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ ऊपर सभ कोपिला॥
सूदु सूदु करि मारि उठाइयो कहा करउ बाप बीठुला॥
मूए हुए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला॥
ऐ पंडीआ मो कउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछंउडी होइला॥
तू जू दइआलू क्रिपालु कहीअतु हैं अतिभुज भइओ अपारला॥
फेरि दीआ देहुरा नामे कउ पंडीअन कउ पिछवारला॥"** (1292 नामदेवजी)

भक्त नामदेव जी कहते हैं कि हे राम जी! आप मुझे न भुलाओ, आप न भुलाओ, आप न भुलाओं। मंदिरवालों को यह भ्रम हो गया है कि वे ऊंची जाति वाले हैं। और इस भ्रम के कारण वे सब मुझ पर कुपित हुए हैं उन्होंने मुझे शुद्र-शुद्र कहकर मन्दिर से बाहर निकाल दिया है। हे मेरे विट्ठल हे मेरे पिता। अब मैं क्या करूं। हे राम जी। आपने यदि मुझे मरने के बाद मुक्ति दी तो उस मुक्ति को कोई भी नहीं जानेगा। इन पंडितों ने मुझे नीच जाति वाला कह कर आपके मन्दिर से बाहर कर दिया है। इससे आपकी प्रतिष्ठा कम हो रही है। हे प्रभु आप दयालु और कृपालु कहे जाते हैं। आपकी भुजाओं में अपार शक्ति है। नामदेव जी की इस परम भक्ति को देखकर उस समय प्रभु ने मन्दिर का मुख्य द्वार भक्त नामदेव जी की ओर कर दिया और मन्दिर का पिछवाड़ा पण्डितों की ओर हो गया।

वर्ण व्यवस्था के इस अध्यात्म पक्ष के समर्थन में ग्रंथ साहिबजी ने स्थान-स्थान पर शास्त्रीय प्रमाण भी दिये है। आदि कवि महर्षि बाल्मीकि जी का उदाहरण हम ऊपर दे चुके है। इस संबंध में ग्रंथ साहिबजी में आये कुछ अन्य शास्त्रीय प्रमाण भी सामायिक है।

(1) **"नीच जाति हरि जपतिआ उत्तम पदवी पाई॥
पूछहु बिदर दासी सुतै किसनु उतरिआ घरि जिसु जाई॥"** 733 म 4

(2) "जपि मन राम नामु सुख पावैगो॥
जाति न जाति देखि मत भरमहु सुक जनक पगी लगि धिआवैगो॥"

(1309/10 म.)

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं कि तु उत्तम जाति के अभिमान में मन भटक। महर्षि व्यास के पुत्र ब्राह्मण श्रेष्ठ शुकदेव जी ने राजा जनक के चरणों में लग कर ही परमात्मा का ध्यान किया था।

"जनक जनक बैठे सिघासनि नउ मुनी धूरि लैं लावैगो ॥
नानक क्रिपा क्रिपा करि ठाकुर मैं दासनि दास करावैगो ॥
जिन तू जपिओ तेई जन नीके हरि जपति अहु कउ सुख पावैगो ॥
बिदर दासी सुतु छोक छोहरा क्रिसनु अंकि गलि लावैगो ॥
रामजना हरि आपि सवारे अपना बिरदु रखावैगो ॥ (1309 म.4)

49 9 वर्ण व्यवस्था के संदर्भ में ग्रंथ साहिबजी के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ साहिबजी ने अध्यात्म के क्षेत्र में वर्ण व्यवस्था में परमात्म ज्ञान और भक्ति को ही शास्त्रमतानुसार प्रधान माना है। चूंकि ग्रंथ साहिबजी अध्यात्म प्रधान ग्रंथ है, इसलिये इसमे वर्ण व्यवस्था के सामाजिक पहलू की चर्चा नहीं है। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि सिक्ख गुरु वर्ण व्यवस्था के सामाजिक पहलू के प्रति उदासीन थे। आगे चलकर खालसा के रूप मे समस्त सिक्ख समाज के सामाजिक ढांचे में भारी परिवर्तन करने वाले दसवें गुरु गुरु गोबिन्द सिह जी महाराज के रचे "दसम ग्रंथ" में हमें वर्ण व्यवस्था के सामाजिक पहलू की झलक मिलती है। आइये हम शास्त्रों और "दसम ग्रंथ" के संदर्भ में वर्ण व्यवस्था के सामाजिक और राजनीतिक संबंधी पक्ष की भी यहां संक्षेप में चर्चा कर लें।

गुरु गोविन्द सिंह जी द्वारा रचित "दसम ग्रंथ" या विचित्र नाटक में रामावतार या रामायण का विशिष्ट स्थान है। 864 पदों में लिखे रामावतार में गुरु महाराज की अद्‌भुत काव्य प्रतिभा का भी हमें प्रत्यक्ष दर्शन होता है। पाठकों को शायद आश्चर्य हो इन 864 पदो मे रचित काव्य में गुरु गोविन्द सिंह ने 80 से अधिक छंदों का प्रयोग किया है। रामावतार के अन्त में राम राज्य का चित्रण करते हुए गुरु महाराज जी कहते हैं :

"बहु विधि करो राज को साजा॥ देस देस के जीते राजा ॥
शाम दाम अरु दण्ड समेदा। जिह बिध हुती शासनावेदा ॥ (837)
बरन बरन अपनी क्रित लाए। चार-चार ही बरन चलाए ॥
छत्री करे विप्र की सेवा। वैस लखे छत्री कह देवा ॥ (838)
शुद्र सभन की सेब कमावै। जह कोई कहै तेही वह धावै ॥
जैसक हुती वेद शासना। निकसा तैस राम की रसना ॥ (839)

गुरु महाराज जी कहते हैं कि भगवान राम ने सिंहासन पर बैठने के बाद देश विदेश के सभी राजाओं को जीत लिया। वेदों के कथानानुसार उन्होंने साम, दाम, दण्ड और भेद की नीति का आश्रय लेकर शासन चलाया। उन्होंने सभी वर्णों और जातियों को अपने अपने वर्णाश्रम धर्म में लगाया क्षत्रिय ब्राह्मणों की सेवा में लगे थे वैश्य क्षत्रियों को देवतुल्य मानते

थे और शुद्र सभी वर्णों की सेवा में लगे थे। राम के मुख से केवल वेद सम्मत वाणी ही निकलती थी।

"सेवा" शब्द के प्रयोग से साधारण तौर पर यह भास होता है कि मानों किसी को घर के या समाज के निम्न कोटि के शारीरिक कार्यों में नियुक्त कर रखा हो। किन्तु यह अर्थ कदापि मान्य नहीं हो सकता। फिर तो क्षत्रिय ब्राह्मण की सेवा करते थे इसका अर्थ यह लेना पडेगा कि क्षत्रिय ब्राह्मणों के घर जाकर निम्न कोटि के गृह कार्यों में लगे रहते थे। या फिर वैश्य क्षत्रियों और ब्राह्मणों के घरों में जाकर सेवा कार्य किया करते थे। किसी भी सुसंस्कृत और विकसित समाज को चलाने के लिये सहस्रों सेवाओं की सहज आवश्यकता पड़ती है। इन सेवाओं में सैकड़ों प्रकार के औद्योगिक, यांत्रिक, शिल्पिक, निर्माण संबंधी कल कौशलो की आवश्यकताएं स्वाभाविक है। यह सभी सेवायें है। ब्राह्मणो का सर्वोच्च वर्चस्व उनके ज्ञान, पाडित्य, वैराग्य, त्याग और सबके प्रति कल्याण की ही भावना पर आधारित था जैसा कि हम महाभारत उद्धत कुछ प्रमाणों के आधार पर पाठकों के सामने रखना चाहेंगे।

50 0 महाभारत में अनेक ऐसे प्रसंग हैं जिनमें यह सिद्ध होना है कि हिन्दू समाज के ढाचे मे शूद्र वर्ण को भी वैदिक काल से समाज संचालन के बड़े से बड़े स्तर पर शास्त्र सम्मत अधिकार प्राप्त रहे हैं। शास्त्र और समाज के द्वारा सहज भाव से शूद्रों को दिये गये उन अधिकार से यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट हो जाता है कि शूद्र वर्ण आर्य जाति का सदैव ही समानता के आधार पर अभिन्न अंग रहा है।

कुरुक्षेत्र में बाण शैया पर लेटे पितामह भीष्म ने 56 दिनों तक विशिष्ट जन समुदाय की उपस्थिति में युधिष्ठिर के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिये थे। इस विशिष्ट समुदाय में स्वय भगवान श्री कृष्ण, वेदों के ज्ञाता व्यास, देवर्षि नारद महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, मरीचि, अगिरा, सनत्कार, वाल्मीकि, कश्यप, परशुराम, दत्ताक्षेय, देवगुरु बृहस्पति, दैत्य गुरु शुक्राचार्य, महामुनि मार्कण्डेय जैसे अनेक महर्षि और ब्रह्मऋषि उपस्थित रहे थे। उस समय भीष्म को वर देते हुए भगवान कृष्ण ने उनसे कहा—

"भीष्म! आप पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर के प्रश्न करने पर उसके उत्तर में जो कुछ कहोगे, वह वेद के सिद्धांत की भांति भूतल पर मान्य होगा।" (महा. शान्ति पर्व 54/29)

किस प्रकार शूद्र वर्ण को शासन में उच्चतम अधिकार प्राप्त थे, इसका परिचय महाभारत के निम्न प्रमाणों से होता है :

(1) युधिष्ठिर ने पूछा पितामह, "इस जगत में राजा किस प्रकार धर्म विशेष के द्वारा प्रजा का पालन करें, जिससे वह लोगों का प्रेम और अक्षय कीर्ति प्राप्त कर सकें।" (महाशान्ति 85/1)

उत्तर में पितामह भीष्म राजा द्वारा पहले पवित्र विचारवाले, विद्वान, निर्भीक, समदर्शी, सात प्रकार के व्यसनों से दूर, विनयशील और लोभ रहित मंत्रियों की परिषद का गठन करने की सलाह देते हैं। भीष्म के अनुसार मंत्री परिषद की संख्या 37 होनी चाहिये। जिसमें चारों वर्णो के प्रतिनिधि इस प्रकार हों : ब्राह्मण 4, क्षत्रिय 8, वैश्य 21, शूद्र 4 (महा. शान्ति 85/7 से 11)

इस प्रकार हम देखते हैं कि भीष्म जी द्वारा निर्दिष्ट मंत्रि मण्डल में ब्राह्मण और शूद्र समान सख्या में है वैश्यों की आधी से अधिक मंत्रियों की सख्या शायद राज्य में कृषि

वाणिज्य और उद्योग के महत्त्व के कारण ही रखी गई। सुघड़ रूप से राज्य संचालन के मूल मे एक सुदृढ़ अर्थ व्यवस्था के महत्त्व को दर्शाते हुए शान्तिपर्व के 83वें अध्याय के 22वें श्लोक मे आता है कि राजा जब अपने मंत्रियों के गुणों की परीक्षा करले और "यदि वे राजकीय कार्य भार को संभालने में प्रौढ़ तथा निष्कपट सिद्ध हों तो राजा उनमें से पांच व्यक्तियों को चुनकर अर्थमंत्री बनावें।

मंत्रिमण्डल की नियुक्ति के सबंध में उसके नैतिक स्तर की चर्चा करते हुए भीष्म जी कहते हैं, "राजन! तुमको किसी का गुप्त धन ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि वह तुम्हारे कर्तव्य और न्याय धर्म का नाश करने वाला होगा।" (महा. शान्ति 85/13), "धर्म ही जिसकी जड है, उस न्यायासन पर बैठकर जो राजा, मंत्री अथवा राजकुमार प्रजा की रक्षा नहीं करता तथा राजा का अनुसरण करने वाले राज्य के दूसरे अधिकारी भी प्रजा के साथ उचित बर्ताव नहीं करते है तो वे राजा के साथ ही स्वयं भी नरक में गिर जाते हैं।" महा. शान्तिपर्व 85/16,17

महाभारत के उपरोक्त मंत्रिमण्डल के नैतिक मापदण्डों के स्तर से हम समझ सकते है कि मंत्रिमण्डल के शूद्र वर्ण के मन्त्रियों का नैतिक तथा प्रशासनिक स्तर कितने उच्च कोटि का रहा होगा।

(2) यही नहीं आपद्काल के अवसर पर यदि कोई शूद्र राष्ट्र की रक्षा करता है तो महाभारत ने उसे प्रत्यक्ष रूप से राज्य शासन का अधिकारी माना है। अपने प्रश्न में ही स्वय महाराज युधिष्ठिर इसका उत्तर "हां" में देते हैं। प्रश्न उठाते हुए युधिष्ठर कहते हैं :

"पितामह! यदि डाकुओं का दल उत्तरोत्तर बढ़ रहा हो और क्षत्रिय के प्रजापालन रूपी कार्य के लिए समस्त वर्णों के लोग कोई उपाय न ढूंढ़ पाते हों, उस अवस्था में यदि कोई बलवान ब्राह्मण, वैश्य या शूद्र धर्म की रक्षा के निमित्त दण्ड धारण करके लुटेरों के हाथ से प्रजा को बचा ले तो वह राजशासन का कार्य कर सकता है या नहीं अथवा उसे इस कार्य से रोकना चाहिये या नहीं। मेरा तो मत है कि क्षत्रिय से भिन्न वर्ण के लोगों को भी ऐसे अवसरों पर अवश्य शस्त्र उठाना चाहिये।" (महा. शान्ति 78/35, 36)

युधिष्ठिर की बात का पूरा समर्थन करते हुए पितामह भीष्म कहते हैं :

"बेटा! जो अपार संकट से पार लगा दें, नौका के अभाव में डूबते हुए को नाव बनकर सहारा दे, वे शूद्र हो या कोई अन्य, सर्वथा सम्मान के योग्य हैं।..." क्योंकि कुरुनन्दन जो निर्भय होकर बार-बार दूसरों का संकट निवारण कर सके वह राजोचित सम्मान पाने के योग्य है। (महाभारत शान्ति पर्व 78/38, 40)

(3) आगे चलकर 95वें अध्याय के 5वें श्लोक में पितामह कहते हैं : "यदि किसी देश का क्षत्रिय शस्त्र हीन हो और अपनी रक्षा करने में भी अपने को अत्यन्त असमर्थ मानता हो तो वहां का क्षत्रियेतर मनुष्य भी देश की रक्षा के लिये शस्त्र ग्रहण कर सकता है।"

शास्त्रों ने बार-बार राष्ट्र की रक्षा के लिये चारों वर्णों को शस्त्र उठाने का अधिकार दिया है। इस बात से यह सिद्ध होता है कि चारों वर्णों के लोगों को किसी न किसी रूप मे शस्त्र शिक्षा अवश्य मिलती रही होगी और सेना में भी चारों वर्णों के लोग कम अधिक सख्या में अवश्य रहते होंगे इसका सबसे ठोसतम प्रमाण हमें के कर्ण पर्व से मिलता है

द्रोणाचार्य के वध के बाद कौरवों को यह महत्वपूर्ण निर्णय लेना था कि उनका अगला सेनापति कौन बने। रात की गुप्त सभा में काफी विचार विमर्श के बाद कर्ण। जो कि शूद्र वर्ण का माना जाता था, का नाम सर्व सम्मति से सामने आया। ब्राह्मण अश्वत्थामा ने जो स्वयं सब शस्त्र और शास्त्रों का ज्ञाता माना जाता था, कर्ण के नाम का प्रस्ताव रखा। इसका अनुमोदन क्षत्रिय शल्य ने जो कर्ण के बाद सेनापति बने, किया और कृपाचार्य और कृतावर्मा जैसे महारथियों ने समर्थन किया। महाभारत में आता है कि उस समय "शास्त्रीय विधि के अनुसार समुचित सामग्रियों द्वारा ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों और सम्मानित शूद्रों ने उसका अभिषेक किया और अभिषेक हो जाने पर श्रेष्ठ आसन पर बैठे हुए महामना कर्ण की उन ऐसे लोगों ने स्तुति की" (महाभारत-कर्णपर्व, अध्याय 10/46/47)

(4) महाभारत काल के समाज में शूद्रों का कितना भारी मान था, उसका इस बात से पता चलता है कि जब धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को कपट से नष्ट करने के लिये वारणावत नगर मे भेजा था, उस समय महाभारत के अनुसार पाण्डव आदर प्रदर्शित करने अन्य वर्णो के साथ-साथ वहां के श्रेष्ठ शूद्रों के घर भी गये थे।

राज्य संचालन में राजा द्वारा अपने चारों वर्णो के मन्त्रियों से संयुक्त रूप से अलग-अलग सलाह मशविरा करना भी राजा के लिये हतिकर और अनिवार्य माना जाता था। भीष्म जी कहते हैं :

"राजा को पहले नीतिशास्त्र का तत्त्व जानने वाले विद्वान ब्राह्मण से सलाह पूछनी चाहिये। इसके बाद पृथ्वी पालक नरेश को चाहिये कि वह नीतिज्ञ क्षत्रिय से अभिष्ट कार्य के विषय में पूछे। तदन्तर अपने हित में लगे रहने वाले शास्त्रज्ञ वैश्य और शूद्र से सलाह लें। (महा॰ शान्तिपर्व 69/14)

50.1 वर्ण निर्णय में कर्म ही प्रधान है, जन्म नहीं और अपने कर्म से भ्रष्ट ब्राह्मण शूद्रवत हे और दण्ड का भागी है, इसका निर्णय देते हुए महाभारत में आता है :

"जो ब्राह्मण वेदशास्त्रों के ज्ञान से शून्य है तथा जो अग्निहोत्र नहीं करते हैं, वे सभी शूद्र तुल्य हैं। धर्मात्मा राजा को चाहिये इन सब लोगों से करले तथा श्रम का कार्य करावे।" (महा॰ शान्तिपर्व 76/5)

"राजा को कर्मभ्रष्ट ब्राह्मण की किसी प्रकार उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। बल्कि धर्म पर अनुग्रह करने के लिये उन्हें दण्ड देना चाहिये और श्रेष्ठ ब्राह्मणों की श्रेणी से अलग कर देना चाहिये।" (महा॰ शान्तिपर्व 78/11)

पर साथ ही शास्त्रों की यह भी दृढ़ मान्यता है कि मूलतः और तत्वः भी चारों वर्ण ब्राह्मण ही हैं। भीष्म जी कहते हैं।

(1) "विधाता एकमात्र ब्राह्मण से ही तीन वर्णों की सृष्टि करते हैं, अतः शेष तीन वर्ण भी ब्राह्मण के समान ही सरल तथा उनके जाति भाई या कुटुम्बी हैं। क्षत्रिय आदि तीनों वर्ण ब्राह्मण की संतान है। जैसे ऋक, युज और साम एक मात्र अकार से प्रकट होने के कारण परस्पर अभिन्न है. उसी प्रकार उन सभी चारों वर्णों में तत्व का निश्चय किया जाय तो एक मात्र ब्राह्मण ही उन सबके रूप में प्रकट हुआ है अत

ब्राह्मण के साथ सबकी अभिन्नता है।" (महा. शान्तिपर्व 60/47)

(2) शान्तिपर्व के अध्याय 188 के श्लोक 10 से 14 में महर्षि भृगृ महर्षि भरद्वाज के प्रश्न के उत्तर में कहते हैं :

"मुनि! पहले वर्णों में कोई अन्तर नहीं था। ब्रह्मा जी से उत्पन्न होने के कारण यह सब ब्राह्मण ही थे। पीछे विभिन्न कर्मों के कारण उनमें वर्ण भेद हो गया।" (महा. शान्ति 188/10)

(3) अपने अपने कर्म वश ही यह एक ब्राह्मण समाज क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्णो के भावों को प्राप्त हो गए, इस बात को इस अध्याय (188) के श्लोक 11, 12 और 13 में बतला कर भृगु जी कहते हैं :

"इन्हीं कर्मों के कारण ब्राह्मणत्व से अलग होकर वे सभी ब्राह्मण दूसरे-दूसरे वर्ण के हो गये, किन्तु उनके लिये नित्य धर्मानुष्ठान और यज्ञकर्म का कभी निषेध नहीं किया गया है।" (महा. शान्ति 188/14)

इस प्रकार हम देखते हैं कि शास्त्रों ने चारों ही वर्णों को धर्मानुष्ठान और यज्ञकर्म करने का आदेश दिया है और किसी भी वर्ण को उनसे वंचित नहीं किया है।

यही नहीं नीच से नीचतम वर्ण के स्त्री और पुरुष के लिये योग मार्ग और परमात्मा प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होने का उद्बोधन करते हुए समस्त पुराण शास्त्रों के निर्माता और ज्ञान की साक्षत मूर्ति स्वरूप महर्षि व्यास अपने पुत्र शुकदेव जी को उपदेश देते हुए कहते है

"कोई नीच वर्ण का पुरुष और स्त्री ही क्यों न हो, यदि उनके मन में धर्म सम्पादन की अभिलाषा है तो योग मार्ग का सेवन करने से उन्हें भी परमगति की प्राप्ति हो सकती है।" (महा. शान्तिपर्व 240/36)

परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति में सहायक जो भी प्रमुख साधन रूप शम, दम, तप आदि है वे सभी वर्णों के लिये पालन योग्य कर्तव्य हैं, धर्म है। और इस मार्ग पर चलना आपद् रहित भी है। इसी बात को दृढ़ करते हुए सांख्य शास्त्र के प्रवर्तक महामुनि कपिल कहते हैं :

(1) "धर्मों में जो किंचित सूक्ष्मता है, उसका आचरण करने में कितने ही लोग असमर्थ हो जाते हैं वास्तव में वेदोक्त आचार और धर्म आपत्ति से रहित है। उसमें न तो प्रमाद है और न पराभव ही।" (महा. शान्ति 270/21)

(2) "पूर्वकाल में सब वर्णो की उत्पत्ति हो जाने पर आश्रम के विषय में कोई वैषम्य नही था। तदन्तर एक ही आश्रम को अवस्था भेद से चार भागों में विभक्त किया गया। इस बात को सभी ब्राह्मण जानते रहे।" (महा. शान्ति 270/22)

(3) महामुनि कपिल के उपदेश को आगे बढ़ाते हुए पितामह भीष्म युधिष्ठिर को बतलाते हैं "तुरीय ब्रह्म से सम्बन्ध रखने वाली जो उपनिषद् विद्या है, उसकी प्राप्ति कराने वाले शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा तथा समाधान रूप जो धर्म हैं, वह सभी वर्ण और आश्रम के लोगों के लिये समान हैं ऐसा स्मृति का कथन है। परन्तु जो संयतचित और तपः सिद्ध ब्रह्मनिष्ठ पुरुष हैं, वे ही इस धर्म का साधन कर पाते हैं" (महा. शान्तिपर्व 270/30)

जैसाकि हमने ग्रंथ साहिबजी में देखा कि ब्रह्म ज्ञानी को ही बार-बार ब्राह्मण कहा गया है और ब्रह्मज्ञानी रैदास जी जो जाति के चमार थे) के चरणों में श्रेष्ठतम ब्राह्मण और क्षत्रिय

शीश नवाते थे और बदले में उनसे ज्ञान का प्रसाद प्राप्त करते थे। इसी बात को ब्रह्मर्षि याज्ञवल्क्य जी के मुंह कहलाते हुए पितामह भीष्म कहते हैं :

(1) "ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र अथवा नीच वर्ण में उत्पन्न हुए पुरुष से भी यदि ज्ञान मिलता हो तो उसे प्राप्त करके श्रद्धालु मनुष्य को सदा उस पर श्रद्धा रखनी चाहिए। जिसके भीतर श्रद्धा है, उस मनुष्य में जन्म मृत्यु का प्रवेश नहीं हो सकता।" (महा. शान्ति. 318/88)

उपरोक्त श्लोक से यह भी सिद्ध होता है कि शास्त्रों ने शूद्र वर्ण को कभी नीच वर्ण नहीं माना।

(2) "ब्रह्म से उत्पन्न होने के कारण सभी वर्ण ब्राह्मण हैं। सभी सदा ब्रह्म का उच्चारण करते हैं। मैं ब्रह्म बुद्धि से यथार्थ शास्त्र का सिद्धांत बता रहा हूं। यह सम्पूर्ण जगत ब्रह्म ही है।" (महा. शान्ति. 318/89)

(3) "ब्रह्म के मुख से ब्राह्मण उत्पन्न हुए हैं, ब्रह्म ही की भुजाओं से क्षत्रियों की उत्पत्ति हुई है, ब्रह्म ही की नाभि से वैश्य और पैरों से शूद्र प्रकट हुए हैं, अतः सभी वर्ण के लोग ब्रह्म रूप हैं। किसी भी वर्ण को ब्रह्म से भिन्न नहीं समझना चाहिये।" (महा. शान्ति. 318/90)

50 2 यहाँ इस बात का स्मरण करना आवश्यक है कि हिन्दू समाज में कोई निम्न से भी निम्न वर्ण, जाति या उपजाति नहीं है जिसका गोत्र किसी ऋषि के नाम पर न हो। दूसरे शब्दो मे हिन्दू समाज का कोई भी ऐसा वर्ण नहीं है जिसकी उत्पत्ति के मूल में कोई ऋषि न हो। यही कारण है कि समस्त हिन्दू समाज अपने को ऋषियों की संतान मानता रहा है। क्योकि ब्रह्मज्ञानी में कोई छोटा बड़ा नहीं है इसलिये तत्वतः हिन्दू समाज में कोई भी व्यक्ति छोटा बडा नही माना जा सकता। ऊँच-नीच का भेद तो ऊँच-नीच कर्मो के भेद तक ही सीमित हैं यही कारण है कि ज्ञान के स्तर पर ऊँच नीच का भेद स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

महर्षि पराशर के शब्दों में युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए पितामह भीष्म कहते है : "पहले अगिंरा, कश्यप, वशिष्ठ और भृगु ये ही चार मूल गोत्र प्रकट हुए थे। अन्य गोत्र कर्म के अनुसार पीछे उत्पन्न हुए हैं। वे गोत्र और उनके नाम उन गोत्र प्रवर्तक महर्षि की ही तपस्या से साधु समाज में सुविख्यात एवं सम्मानित हुए हैं।" (महा. शान्ति. 293217/18)

आज भी हिन्दू समाज में यह प्रथा है कि यदि किसी व्यक्ति अथवा परिवार को अपना गोत्र स्मरण न हो तो वह इन चारों मूल गोत्रों में से किसी भी एक गोत्र को अपना गोत्र मान सकता है। इन चारों गोत्रों में भी कश्यप गोत्र को सभी अपना सकते है। महर्षि कश्यप से देवता, दानव आदि सभी प्राणियों सहित यह पृथ्वी उत्पन्न हुई, इसलिये पृथ्वी का एक नाम काश्यपी भी पड़ा।

अन्त में चारों वर्णों के स्वरूप पर, उनके लक्ष्य पर अपना निर्णय देते हुए पितामह भीष्म अनुशासन पर्व में कहते हैं -

"अब मैं चारों वर्णों का विशेष रूप से लक्षण बता रहा हू ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य

एकसी ही है। फिर भी उनके लौकिक धर्म और विशेष धर्म में विभिन्नता रक्खी गयी है। इसका उद्देश्य यही है कि सब लोग अपने-अपने धर्म का पालन करते हुए पुनः एकत्व को प्राप्त हों। इसका शास्त्रों में विस्तारपूर्वक वर्णन है।" (महा. अनुशासनपर्व 164/11 12)

वर्ण व्यवस्था पर महाभारत से ऊपर दिये गये तात्विक निर्णयों का ग्रंथ साहिबजी में सुन्दर निरूपण हुआ है।

(1) "गरभ वास महि कुल नहीं जाती॥ ब्रह्म बिंदु से सभ उत्पाति ॥
कहु रे पंडित बामन कब के होए॥ बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥
तुम कत ब्राह्मण हम कत सूद॥ हम कत लोहू तुम कत दूध ॥
कहु कबीर जो ब्रह्म विचारै॥ सौ ब्राह्मण कही अतु है हमारै ॥ (324 कबीर जी)

(2) "तू ब्राह्मणु मैं काशी का जुलाहा बूझहु मोर गिआना ॥
तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सिउ मोर धिआना ॥ (482 कबीर)

50 3 वर्ण व्यवस्था सम्बन्धी इस समस्त चर्चा में हमने देखा कि ग्रंथ साहिबजी ने भी जातियों के स्वरूपों को एक प्रकार उच्चतम आध्यात्मिक बाना प्रदान किया है। हरि नाम के आसरे नीच से नीच माना जाने वाला व्यक्ति भी ग्रंथ साहिबजी के अनुसार इसी मानव जीवन में ही सबका पूज्य बनकर परमपद का अधिकारी बन सकता है। यही नहीं शूद्र वर्ण कहलाने वाले संत रविदास जी, भक्त नामदेव जी और भक्त सैण की वाणियों को भी ग्रंथ साहिबजी ने अपने अंदर गौरवपूर्ण स्थान दिया जिसके कि वे अपने ब्रह्म ज्ञान के कारण सहज अधिकारी थे। अपने जातिगत अहंकार से ग्रसित, शास्त्र ज्ञान से अपरिचित, परमात्मा ज्ञान से अनभिज्ञ और विदेशी और विधर्मी आक्रमणकारियों से जीवन-मरण के युद्ध में रत हिन्दू समाज के गहरे घावों पर ग्रंथ साहिबजी की वर्ण व्यवस्था सम्बन्धी वाणी ने एक उपचारक औषधि के समान ही महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, और आज भी दे रही है।

कुरान शरीफ़ में जीव द्वारा एक सर्वव्यापी परमात्मा को पाने की उसमें एकाकार हो जाने की कोई कल्पना ही नहीं है। वहाँ मोटे तौर पर समाज में दो ही जातियाँ हैं, एक ईमानवाले और दूसरे "काफ़िर"। स्वर्ग केवल ईमानवालों को ही मिलना है, और काफ़िर केवल नरक के ही अधिकारी है। कुरान शरीफ़ में ईमानवालों की रूह द्वारा भी अल्लाह की प्राप्ति या उसका अल्लाह में एकाकार हो जाने का प्रश्न ही नहीं उठता। इस विषय में भी ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ़ के विचार एक दूसरे से विपरीत है।

□

कुर्बानी, हराम-हलाल

50 4 "ईमानवाले" शीर्षक के अंतर्गत इस समस्त लेखन में यह दर्शाने का प्रयत्न रहा है कि ग्रथ साहिबजी में कुरान शरीफ़ में प्रतिपादित सिद्धांत एक दूसरे से भिन्न ही नहीं बल्कि विपरीत हैं। और इसके समर्थन में हमने ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ़ से अनेकों प्रमाण दिये हैं।

हम कुरान शरीफ़ के उस प्रमुख विषय पर आते हैं जिससे ग्रंथ साहिबजी का किंचित मात्र भी सम्बन्ध नहीं है। अल्लाह के नाम पर पशुओं की बलि या कुर्बानी का इस्लाम मे अपना एक विशिष्ट महत्त्व है। हज की यात्रा तो पशुओं की बलि के बिना पूरी हो ही नही सकती। ईद-बकरीद के इस्लामी त्योहारों के अवसरों पर विश्व भर में लाखों-लाखों पशुओ की बलि इस्लाम धर्म का अभिन्न और अनिवार्य अंग है। और इस्लाम में इस सार्वजनिक बलि-प्रथा का मूल कुरान शरीफ़ में ही है। और इसी संदर्भ में ईमानवालों के लिये क्या "हलाल" है और क्या "हराम" इसका भी विशद एवं निर्देशात्मक विवेचन कुरान शरीफ ने किया है। इस्लाम में अपनी भारी अहमियत लिये हुए कुर्बानी के और हलाल-हराम के विषय की विवेचना हम कुरान शरीफ़ की आयतों के माध्यम से इस अध्याय में करेंगे।

ग्रंथ साहिबजी में न तो पशु बलि की कोई कल्पना है और न ही "हलाल—और हराम" की ही। गुरुद्वारों में नित्य प्रथा के रूप में या फिर घरों में ग्रंथ साहिबजी के पाठ के अवसरो पर प्रसाद के रूप में आटा, घी और शक्कर से बने हलुओ का ही विधान है। परमात्मा के नाम पर या फिर गुरुओं के और ग्रंथ साहिबजी के नाम पर किसी पशु की बलि या कुर्बानी किसी भी सिक्ख की कल्पना के बाहर है।

और इस्लाम में अल्लाह के नाम पर पशु बलि स्वयं अल्लाह द्वारा पैगम्बर इब्राहीम को स्वप्न में दिये इस आदेश से शुरू होती है कि वो अपने बेटे इस्माईल की बलि अल्लाह को दे। इस कथा को पूर्व में हम अन्य संदर्भ में दे चुके हैं। किन्तु जहाँ प्रसंग की महत्ता के कारण इसको पुनः देना आवश्यक है ताकि हम पशु बलि से संबंधित अन्य आयतों का अर्थ सहज भाव से समझ सकें। कथा कुरान शरीफ़ के 37वें सूर में इस प्रकार आती है :

(1) "और (इब्राहीम ने दुआ मांगी) ऐ परवदिगार मुझको नेकों में से एक (नेक बेटा) दे।" (37/100)

(2) "फिर हमने उनको एक बड़े हलीम (सहनशील) लड़के की खुशखबरी दी।" 37/101

(3) "जब लड़का (यानी इस्माईल) उनके साथ चलने फिरने लगे तो (इब्राहीम ने) कहा कि बेटा मैं स्वप्न में देखता हूँ कि तुझको जबह कर रहा हूँ, फिर तू देख कि तेरी क्या राय है? बेटे ने कहा कि ऐ बाप जो तुझको हुक्म हुआ है तू कर गुजर, अल्लाह ने चाहा तो तू

मुझे (इस कुर्बानी को) सहन करनेवाला पायेगा।" 38/102

(4) "फिर जब दोनों ने (अल्लाह का) हुक्म माना और (बाप ने हलाल करने के लिए) बेटे को माथे के बल पछाड़ा।" 38/102

(5) "और हमने उसे पुकारा के ऐ इब्राहीम!" 37/104

(6) "तूने स्वप्न को सच कर दिखाया, (देखो) नेकों को हम ऐसा बदला देते है।" 37/105

(7) "बेशक यह (तुम्हारी) खुली हुई परीक्षा थी।" 37/106

(8) "और हमने जिबह के लिये एक बड़ा जानवर इस्माईल के बदले में दिया।" 37/107

इस आयत के फुटनोट में इस प्रकार दिया है, "अल्लाह ने उनके बेटे को बचा लिया और उनके बदले एक दुम्बा हलाल हो गया। यह बात हजरत इब्राहीम को उस समय मालूम हुई जब उन्होंने अपनी आंखों की पट्टी खोली।"

(9) "और हमने आने वाले लोगों में उन (इब्राहीम) का जिक्र बाकी रखा।" 37/108

(10) "कि इब्राहीम पर सलाम है।" 37/109

उपर दी गई 10 आयतों से यह स्पष्ट होता है कि इस्लाम में पशुबलि की प्रथा अल्लाह के हुक्म से आरम्भ हुई। नीचे हम कुरान शरीफ़ के अध्यायों के पशुबलि हलाल-हराम तथा हज में पशुओं की कुर्बानी सम्बन्धित आयतें दे रहे हैं। इन आयतों में वह भी आयतें आ जाती है जिनमें ईमानवालों या मुसलमानों के लिये क्या खाना वर्जित है या हराम है। या किन औरतों से सम्बन्ध रखना हलाल है या किन से हराम है।

"और (वह समय भी याद करो) जब मूसा ने अपनी कौम से कहा, अल्लाह हुक्म देता है कि तुम एक बैल जबह (हलाल) करो। वह कहले लगे, क्या आप हमसे हँसी करते हैं।" वह बोले, अपने परवरदिगार से हमारे दिल दरखास्त कीजिए कि हमको भली-भाँति समझा दे कि वह कैसा हो। (मूसा ने) कहा, अल्लाह फर्माता है कि वह बैल न बूढ़ा हो न बछड़ा बल्कि दोनो मे बीच की रास हो। बस तुमको जो हुक्म दिया गया है उसको पूरा करो। 2/68

"वह बोले अपने पालनकर्ता से हमारे लिए प्रार्थना कीजिए कि वह हमको समझा दे कि उसका रंग कैसा हो। (मूसा ने) कहा अल्लाह फर्माता है कि उस बैल का रंग खूब गहरा जर्द (पीला) हो कि देखने वालों को भला लगे।" 2/69

"वह बोले कि अपने परवरदिगार से हमारे लिए पूछिए कि हमको अच्छी तरह समझा दे कि वह (और) क्या (गुण रखता) हो, हमको तो (इस रंग के बहुतेरे) बैल एक ही तरह के मालूम होते हैं। और (इस बार) अल्लाह ने चाहा तो हम जरूर (उसका) ठीक पता पा लेंगे।" 2/70

"(मूसा) ने कहा, अल्लाह फर्माता है कि वह न तो हल में जुता हुआ हो, न जमीन जोत्ता हो और न खेती को पानी देता हो, और हर तरह बेऐब हो उसमें किसी तरह का दाग न हो। वह बोले (हां) अब आप ठीक पता लाये। गरज उन्होंने उसको हलाल किया और वह करने वाले नहीं थे।" 2/71

ऊपर दी गई 71वीं आयत के अंतिम शब्दों से यह स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह के हुक्म के पूर्व मूसा की कौम में बलि की प्रथा नहीं थी। और न ही उसको शुरू में मूसा की इस बात पर पहले विश्वास हुआ कि अल्लाह ने पशु बलि मागी है जैसाकि आयत 67 से

जाहिर होता है। अल्लाह ने स्वयं इन आयतों में बैल की बलि मांगी और मूसा के माध्यम से यह भी बतलाया कि बैल कैसा हो और किस रंग का हो।

सूर: 2 की ही 168, 172 और 173 आयतों हलाल और हराम वस्तु के बारे में अल्लाह का निर्देश इस प्रकार आता है :

"लोगों जमीन में जो चीजें (भोग्य) और शुद्ध हों, उनमें से खाओ, और शैतान के रास्ते की पैरवी न करो। बेशक वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।" 2/168

"ऐ ईमानवालों मैंने जो तुमको रोजी और पाक चीजें दे रखी है उनमें खाओं पिओ, और उसका एहसान मानों अगर तुम अल्लाह की बन्दगी का दम भरते हो।" 2/172

"उसने तो बस मरा हुआ (जानवर) और खून और सूअर का गोश्त, और जिसको अल्लाह के सिवाय किसी और के लिए भेंट किया जाय तुम पर हराम किया है। फिर जो भूख से मजबूर हो परन्तु नफर्मानी करने वाला और हद से बढ़ जाने वाला न हो, तो उस पर पाप नही। बेशक अल्लाह बड़ा बख्शने वाला बेहद मेहरबान है।" 2/173

आयत 2/173 में इस प्रकार ईमानवालों को चार चीजों को छोड़कर अन्य सब चीजो को खाने की छूट दी है। ये चार चीजें हैं। (1) अपने आप मरे हुए जानवर या मुर्दा जानवर का मांस (2) खून (3) उस जानवर का मांस जो अल्लाह पर या अल्लाह के नाम पर नही कुर्बान या बध किया गया है (4) और सूअर का मांस। वैसे यही आयत केवल भूख की मजबूरी में, न कि अल्लाह की अवहेलना में इन चारों चीजों को भी खाने की अनुमति देती है।

50.5 हज में कुर्बानी या पशु बलि की अनिवार्यता आयत 2/196 में आती है। हज के बाद सरके बाल मुड़वाने में कोई मजबूरी हो तो उसका प्रतिकार अतिरिक्त रोजा, दान या पशुबलि से हो सकता है। और पशु बलि की मजबूरी में दस रोजे रखने का विधान है।

"और अल्लाह के लिए हज और उमर: पूरा करो। फिर अगर (राह में कहीं) रोक दिये जाओं तो कुर्बानी कर दो, जैसी कुछ हो सके, और जब तक कुर्बानी अपने ठिकाने न लग जाय अपने सिर पर मुड़ाओं। और जो तुममें बीमार हो व सिर की तरफ से उसे दुख हो तो बाल उतरवा देने का फिदय (बदला) रोजे या खरात या कुर्बानी से दो। फिर ब तुमको राहत हो जावे तो जो कोई उमरे को हज से मिलाकर फायदा उठाना चाहे तो (उसको) कुर्बानी (करनी होगी) जैसी कुछ हो सकें। और जिसको कुर्बानी सुलभ न हो तो तीन रोजे हज के दिनों में (रखों) और जब वापस आओं तो सात रोजे रखों। यह पूरे दस रोजे हुए। यह (हुक्म) उसके लिये है जिसका घरबार मक्के में न हो। और अल्लाह से डरो और जाने रहो अल्लाह की सजा सख्त है। 2/196

हमने ऊपर बतलाया कि कुरान शरीफ के अनुसार चार चीजें, यानी मुर्दा जानवर का मास, खून, सूअर का मांस और अल्लाह के सिवाय किसी अन्य को भेंट किया गया मास छोड़कर अन्य सब चीजें ईमानवालों को जायज है। बिना कुरान शरीफ़ के समर्थन के किसी चीज को अपने पर हराम मानना गलत ठहराया गया है। सूर: 3 की आयत 93 में इसका विवेचन हुआ है। आयत देने के पूर्व हम इस आयत के खुलासे से संबंधित फुटनोट पहले दे रहे हैं इस फुटनोट में आता है

"यहूदी कहते थे कि ऐ मुहम्मद! तुम इब्राहीम के धर्म पर चलने का दावा करते हो, तो वह चीज क्यों खाते हो जो इब्राहीम के वंशज याकूब नहीं खाते थे, जैसे ऊँट का मास। इसका जवाब दिया गया कि तौरात उतरने में पूर्व सब चीज इब्राहीम की संतान के लिये हलाल थी यानी उनको किसी चीज का खाना मना न था। याकूब भी हर चीज खा सकते थे, पर वह बीमारी के कारण ऊँट का गोश्त न खाते थे। तौरात में कहीं नहीं लिखा है कि ऊँट का मास खाना मना है।"

उपरोक्त खुलासे से हमें आयत 3/93 का अर्थ सहज ही समझ में आ जायेगा

"कुछ चीजें जो याकूब ने (सिर्फ) अपने ऊपर (बजरूरत इलाज) हराम कर ली थीं तौरात के उतरने के पहले, उनके अलावा खाने की सब चीजें याकूब की संतान के लिए हलाल थी। (ऐ पैगम्बर) कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और खुद उसको पढ़ो देखो।" 3/93

हज यात्रा के प्रारम्भ से समापित तक मुसलमान जो एक कपड़ा पहनते हैं उसे 'एहराम" कहते हैं। "एहराम" की हालत में शिकार करना हलाल नहीं माना गया है। कुरान शरीफ़ कहते है :

"ऐ ईमानवालों (जब तुम ईमान ला चुके हो तो तुमको चाहिये कि अल्लाह के तमाम हुक्मों पर चलने का) करार पूरा करो। तुमको हलाल है (चरने वाले) चोपाये मवेशी सिवाय उनके जो (आगे) तुम्हें बताये जाते हैं। लेकिन जब तुम एहराम की हालत में हो तो तब शिकार को हलाल न समझना। बेशक अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है।" 5/1

50.6 और कुर्बानी के जानवरों के बारे में और शिकार के बारे में आगे निर्देश देते हुए कुरान शरीफ कहते हैं :

"ऐ ईमानवालों! अल्लाह की निशानियों की बेहुरमती (अनादर) न करना और न अदबवाले महीनों की और न कुर्बानी के जानवर जो मक्के को (कुर्बानी के लिए) जाय और न उनको जिनके गले में पट्टे बांध दिये गये हों, और न उनको जो इज्जतवाले घर को अपने परवरदिगार की रहमत और खुशी ढूंढ़ने जाते हो। और जब एहराम से निकलो तो शिकार करो।" 5/3

आयत 5/3,4,5 में हराम और हलाल का विस्तार से जिक्र किया गया है। और कुछ बाते दोहराई गई है। यह तीनों आयतें कुरान वर्णित हलाल-हराम के विषय को ठीक से समझने के लिये ध्यान पूर्वक पढ़ना जरूरी है।

(1) "मरा हुआ, लोहू और सूअर का मांस और जो अल्लाह के सिवाय किसी और के नाम पर चढ़ाया गया हो, और जो गला घुटने से या चोट से या गिर कर मरा हो या सींगो से मारा गया हो, यह सब चीजें तुम पर हराम कर दी गई और जिसको परिन्दों ने फाड़ खाया हो (वह भी हराम है) सिवाय जिसको तुम (उसके मारने के पहले ही) हलाल कर लो। और जो (अल्ला के अलावा) किसी स्थान पर (चढ़ाकर) जबह (बलि) किया गया हो। (हराम है और फिर जो भूख से लाचार लेकिन गुनाह की तरफ रुचि न हो तो ऐसी सूरत में हराम चीज से जान बचा लेना गुनाह नहीं) अल्लाह मेहरबान है" 5/3

(2) "तुमसे पूछते हैं कि कौन-कौन सी चीजें उनके लिए हलाल की गई हैं, सो तुम उनको समझा दो कि पाक चीजें तुम्हारे लिए हलाल है, और शिकारी जानवर जो तुमने शिकार के लिए सधा रखें हों, और जैसा तुमको अल्लाह ने सिखला रखा है वैसा ही, तुमने उनको सिखला रखा है, तो जो तुम्हारे लिए वे पकड़ रखे तो उसको खाओं, मगर (शिकारी जानवर के छोड़ते वक्त) उस पर अल्लाह का नाम ले लिया करो, और अल्लाह से डरते रहो क्योंकि अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।" 5/4

(3) "आज पाक चीजें तुम पर हलाल कर दी गई। और किताबवालों का खाना तुम्हारे लिये हलाल है और मुसलमान (पासी) बीबियां और जिन लोगों को तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है उनमें की पासी बीबियां (तुम्हारे लिए हलाल हैं) बशर्तों कि उनके मिहर उनके हवाले करो।

जैसा कि हमने ऊपर देखा कुरान शरीफ़ ने बार-बार जो चीजें ईमानवालों पर हराम की हैं उनके या तो नाम बतलायें हैं या फिर हराम माने जाने वाली चीजों की सिद्धांत निर्धारित कर दिया है जैसे कि जो चीजें अल्लाह के नाम पर कुर्बान नहीं की गई हैं वे सब हर हराम है। पर कुरान शरीफ़ ने पाक और सुथरी वस्तुओं के नाम नहीं दिये है। सिवाय इसके कि अल्लाह के नाम पर कुर्बान की गई चीजें हलाल है। इसका अर्थ यह स्पष्ट है कि हराम की कुछ चीजों को छोड़कर बाकी सब चीजें ईमानवालों के लिए हलाल है। साथ ही कुरान शरीफ ने लोगों को मनमाने ढंग से अपने ऊपर किसी चीज को हराम करना वर्जित किया है।

"ऐ ईमानवालों। अल्लाह ने जो सुथरी चीजें तुम्हारे लिए हलाल कर दी है उनको (अपने ऊपर) हराम मत करो और हद से न बढ़ों, क्योंकि अल्लाह हद से बढ़नेवालों को पसन्द नही करता।" 5/87

"और अल्लाह ने जो तुमको सुथरी चीजें हलाल की हैं उनको खाओं और अल्लाह जिस पर तुम ईमान रखते हो, उससे डरते रहो।" 5/88

50 7 आगे की दो आयतों में कुरान शरीफ़ ने हज के लिये एहराम यानी हज की यात्रा मे पहने जाने वाले वस्त्र को धारण करने के बाद शिकार में जानवर को मारना मना किया है, ऐसा होने पर प्रयश्चित या कफ्फारा का विधान दिया है तथा साथ ही यह बतलाया है कि एहराम की हालत में क्या हलाल है :

"ऐ ईमानवालों जबकि तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार मत करो। और जो कोई तुममें जान बूझकर शिकार मारेगा तो जैसे जानवर को मारा है उसके बदले में वैसा ही पशु जो तुममें के दो इंसाफ करने वाले आदमी ठहरा दें कुर्बानी करें और यह कुर्बानी काबे मे भेजें, या कफ्फारा (दे और) उसके बदले मुहताजों को खाना या उसके बराबर रोजे (रखना) ताकि अपने किये की सजा चक्खें। जो (पहले) हो चुका उसे अल्लाह ने माफ किया और जो ऐसा करेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा और अल्लाह जबरदस्त और बदला लेने में समर्थ है।" 5/95

"दरियाई शिकार और खाने की दरियाई चीजे (जो हाथ लगें) तुम्हारे लिये (एहराम की हालत में) हलाल की जाती है ताकि तुमको और मुसाफिरों को लाभ पहुंचें और जंगल का शिकार जब तक एहराम में रहो तुम पर हराम है, और अल्लाह से डरते रहो जिसके पास तुमको लौटकर जाना है" 5/96

"पस अगर तुम लोगों को उसके हुक्मों पर ईमान है तो जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उस चीज को खाओ। 6/118

"और क्या सबब है कि तुम उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, और जो चीजें अल्लाह ने तुम पर हराम कर दी हैं वह पूरी तरह तुमसे बयान कर दी हैं। 6/119

अल्लाह के हुक्म के अलावा किसी पशु या खेती की पैदावार को हराम मान लेना या हलाल मानना अल्लाह की निगाह में सख्त गुनाह है। नीचे दी गई आयतों में इस बात की विशद चर्चा है :

(1) "और कहते हैं कि यह चौपायें और खेती (की पैदावार खाना) हराम है उस शख्स के सिवाय जिसको हम अपने ख्याल के मुताबिक (देना) चाहें। और कुछ चौपायें ऐसे है कि उनकी पीठ (पर सवार होना व लदना) मना है और कुछ चौपायें ऐसे जिनको जिबह (काटने) के वक्त उन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते, (और यह सब) अल्लाह पर ही झूठ बांधते है (और कहते हैं कि उसका ऐसा हुक्म है (वह) (यानी अल्लाह) जल्दी ही इनको इस झूठ की सजा देगा।" 6/138, इसी विषय पर अन्य आयत 16/116, 117

(2) "और (ये लोग) कहते हैं कि इन चौपायों के पेट से जो बच्चा जिन्दा निकले वह हमारे मर्दों के लिये हलाल और हमारी औरतों पर हराम है और अगर मरा हुआ हो तो (मर्द और औरत) सब उसमें शरीक हैं। अल्लाह जल्दी ही इनको इन बातों की सजा देगा, वह हिकमतवाला और बेहद खबरदार है।" 6/139

(3) आयत 6/141 में अल्लाह की जकात या हक देकर फलों के खाने की इजाजत देते हुए अगली आयतों में अल्लाह का पशुओं के खाने के बारे में हुक्म होता है :

"और चौपाओं में (कुछ) बोझ उठाने वाले पैदा किये। जैसे बैल, ऊँट (और) (कोई) जमीन से लगे हुए (जो नहीं लादे जाते जैसे भेंड, बकरी) अल्लाह ने जो जो तुमको रोजी दी है उसमें से बेशक खाओ और शैतान के कदमों पर न चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।" 6/142

(4) "आठ नर और मादा (यानी चार जोड़े) पैदा किये है, भेड़ों में से दो और बकरियों मे से दो, (ऐ पैगम्बर इन लोगों से) पूछो कि अल्लाह ने दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को, या मादाओं के बच्चों को जो पेट में है। अगर तुम सच्चे हो तो मुझको (इसकी) सनद बतलाओं 6/143

"और ऊँटों से (नर व मादा) दो, और गाय से (नर व मादा) दो (पैदा किये) (ऐ पैगम्बर इनसे पूछो दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को या बच्चा जो मादीनों के पेट में है? या तुमको इन चीजों के हराम कर देने का हुक्म अल्लाह ने जब दिया था, वहा (खुद) उस वक्त तुम मौजूद थे। तो उस शख्स से बढ़कर जालिम कौन होगा जो लोगों को रास्ते से भटकाने के लिये वे समझे बूझे अल्लाह पर झूठ बांधे। 6/144

इन आयतों में अल्लाह का कोप उन मुशरिकों पर स्पष्टतः जाहिर है जो उन चीजो को हराम कहते हैं जो अल्लाह के अनुसार वास्तव में हराम नहीं है इसी बात को अल्लाह अगली आयत में इस प्रकार स्पष्ट करते हैं

(5) (ए पैगम्बर इनसे) कहो मेरी तरफ जो अल्लाह का पैगाम आया है उसमें से खाना वाला कुछ खाय, मैं तो कोई चीज हराम नहीं पाता सिवाय यह कि (वह चीज) मुरदार हो, बहता हुआ खून या सूअर का मांस, कि यह (चीजें) नापाक हैं, या उदूलहुकमी का सबब हो (जैसे) कि अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे के नाम पर जिबह किया गया हो...। 6/145

और चूंकि यह अल्लाह हुक्म है, यह कभी बदला नहीं जा सकता। आयत 6/115 इस बात को इस प्रकार स्पष्ट करती है "और तेरे परवरदिगार की बात बिल्कुल सच्ची और इंसाफ की है। कोई उसके कलाम को बदल नहीं सकता और वहीं सुनता और जानता है।"

इस विषय पर आयत 6/146 आयत महत्वपूर्ण है। इसमें अल्लाह ने यहूदियों पर अपनी नाराजगी के कारण ऐसा कई चीजें सजा देने के लिये उन पर हराम कर दी जो ईमानवालों के लिये हलाल हैं :

"और यहूदियों पर हमने तमाम (बिना चिरे हुए) नाखून जानवरों को हराम किया और गाय और बकरियों मे से उनकी चर्बी (हराम की थी) सिवाय वह (चर्बी) जो उनकी पीठ पर लगी हो या अंतड़ियों पर या हड्डी से मिली हों यह हमने उनकी शरारत की सबब सजा दी थी (कि वह इन चीजों से महरुम रहे न कि ये चीजें हराम याने निषिद्ध थी) और हम सही कहते हैं। 6/146 इसी विषय पर अन्य आयत 16/118 है।

50.8 आयत 7/32 में दो विशेष बातें हैं। पहली तो यह कि मक्का के लोग इस्लाम आने के पहले कुछ चीजें जो अपने पर हराम मानते थे वह गलत है। दूसरी बात यह कि ईमानवालो के लिये जो चीजें इस दुनिया में हलाल की गई हैं वही उनको कयामत के दिन खासकर दी जायेंगी। इस आयत के फुटनोट में इस प्रकार आता है : मक्कावालों की धारणा थी कि कुछ चीजें खाना मना है। ये ऐसी चीजें थी जैसे ऊँटनी के पेट से निकला हुआ बच्चा वगैर-वगैर"

आइये देखें आयत 7/32 क्या कहती है :

(1) "(ए पैगम्बर (इनसे) पूछो कि अल्लाह ने जो रौनक और साफ सुथरी खाने की चीजें अपने बंदों के लिये पैदा की है (वह) किसने हराम की है (और उनको) समझा दो कि दुनिया की जिन्दगी में भी ये (चीजे) ईमानवालों के लिये हैं। (और) कयामत के दिन तो खासकर उन्हीं को दी जायेगी। इसी तरह हम आयतें तफसीज के साथ बयान करते हैं उन लोगों के लिये जो इलम (समझ) रखते हैं।"

(2) नदियों की मछलियों को ताजा मांस विशेष रूप से हलाल बताये हुए अल्लाह का हुक्म होता है : "और वही है जिसने नदी को तुम्हारे अधीन लगा रखा है ताकि उसमे से मछलियां निकालकर उनका ताजा मांस खाओ...।" 16/14

अल्लाह के अनुसार चौपायों का खाना ईमानवालों के लिये हलाल है सिवाय उनके जो

यह ईमानवालों को हुक्म है कि दुनियां में पशुओं से जब तक तुम्हें दूध, सवारी आदि का लाभ पहुचाता है वह लाभ लेते रहो, तत्पश्चात उन्हें काबा में अल्लाह के नाम पर बलि कर दो

(1) तुमको चौपायों में एक खास वक्त पर फायदे हैं (जो तुम सवारी या दूध वगैर) से उठा सकते हो फिर उनको उस पुराने घर काबा तक कुर्बानी के लिये पहुंचना है। 22/33

(2) "और हर एक गिरोह के लिये हमने कुर्बानी ठहरा दी है कि ताकि अल्लाह ने जो उनको मवेशी दे रखे हैं उन पर (जबह के वक्त) अल्लाह का नाम लेवें। सो अल्लाह ही तुम्हारा एक मात्र माबूद (पूज्य) है, तो उसी के आज्ञाकारी बनो। 22/34

आयत 22/36 में अल्लाह ने ईमानवालों को ऊँट की कुर्बानी की इजाजत दी है इसी आयत में ऊँटों के कुर्बानी की विधि भी बतलाई है :

"और हमने तुम्हारे लिए (कुर्बानी के) ऊँटों को उन चीजों में कर दिया है तो अल्लाह के साथ नामजद की जाती हैं, उनमें तुम्हारे लिये फायदें हैं। तो कुर्बानी के समय उनको किबूल की ओर मुँह करके कतार में खड़ा करो और उन पर अल्लाह का नाम लो फिर जब वह किसी करवट गिर पड़ें तो उनमें से खाओ और सब्र से बैठें हुए न माँगने वालों और माँगने वालो को खिलाओ। हमने यों तुम्हारे बस में इस (जानवरों) को कर दिया है, शायद तुम अहसान मानो। 22/36

इस आयत की अन्तिम पंक्ति में यह स्पष्ट कर दिया गया है कि अल्लाह ने सब जानवरों को ईमानवालो के बस में इसलिये कर दिया है कि ईमानवाले इस उपकार के लिये अल्लाह का अहसान माने।

इस आयत के फुटनोट में ऊँट की कुर्बानी का तरीका इस प्रकार स्पष्ट किया गया है : "ऊँट को हलाल करने का तरीका यह है कि उसको काबे की ओर खड़ा करते हैं। फिर उसकी छाती में भाला मारते हैं ताकि उसका सारा खून निकल जाय और जब वह गिर पड़ता है तो जबह करते हैं।"

❑

औरतें, तलाक-मेहर

509 ग्रंथ साहिब विशुद्ध अध्यात्ममय ग्रंथ है। इसका लक्ष्य ही जीव को जन्म-मृत्यु से परे परमानन्दमय परमात्मा की प्राप्ति कराना है। सामाजिक व्यवस्था की चर्चा का ग्रंथ साहिबजी मे कोई स्थान नहीं हैं। प्राचीन परम्परा से सामाजिक व्यवस्था का कार्य स्मृतियों के अधीन रखा गया है। स्मृतियों में अध्यात्म संबंधी मार्गदर्शन के साथ-साथ एक उच्चकोटि के संसारिक जीवन यापन के लिये सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं की व्यवस्था दी गई है। किन्तु शास्त्रों और स्मृतियों की यह सामाजिक व्यवस्था कोई ईश्वरीय आदेश मानकर शाश्वत नही मानी गई है। वरन् इसे देशकाल के अनुसार परिवर्तनशील माना गया है। समाज, परिवार और व्यक्तियों के लिये जिन आचरणों का सतयुग में पालन करना अनिवार्य माना गया उन्ही आचरणों को कलियुग में अल्प सामर्थ्य के कारण पालन करना स्मृतियों ने अनावश्यक माना है। अपने परमात्म् प्राप्ति के परम लक्ष्य के साधन के रूप में ग्रंथ साहिबजी के वेदों और पुराणो के साथ-साथ स्मृतियों को भी प्रमाण माना है। चूंकि सामाजिक व्यवस्था के नियम स्मृतियो में निहित हैं इसलिये सिक्ख गुरुओं ने परमात्म प्राप्ति के साधन के प्रसंग में सामाजिक व्यवस्था के नियमों के उल्लेख की न तो कोई आवश्यकता ही मानी और न उनका महत्व ही।

इसके विपरीत कुरान शरीफ़ ने सामाजिक व्यवस्था के कई महत्वपूर्ण अंगों की केवल चर्चा ही नहीं की है बल्कि उनकी निर्णायक व्यवस्था भी दी है। इनमें मुख्यतः औरतों और मर्दो के परस्पर सम्बन्ध और कर्तव्य एवं अधिकार आदि की व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, उत्तराधिकार या मरणोपरांत सम्पत्ति की व्यवस्था, पशु-पक्षि, मछली आदि के खाने में हलाल-हराम की व्यवस्था, ब्याज लेना-देना, कफ्फारा या प्रायश्चित तथा मुसलमानों का आपसी सामाजिक सम्बन्ध आदि है। चूंकि कुरान शरीफ़ की समस्त आयतें स्वयं अल्लाह ही के हुक्म की हैं। इसलिये इस्लाम में कुरान शरीफ़ वर्णित सामाजिक व्यवस्था अपरिवर्तनीय है। दूसरे शब्दो मे कुरान शरीफ़ वर्णित सामाजिक व्यवस्था के नियम स्वयं अल्लाह के दिये हुए हैं। उन्हें कोई भी नही बदल सकता। आइये पहले हम देखें की औरतों से सम्बन्धित तलाक, मिहर आदि के बाबत कुरान शरीफ़ में क्या आदेश निहित हैं। इस सम्बन्ध में हम सूरः या अध्यायों के क्रम से आयतें प्रस्तुत करेंगे।

शुरूआत हम आयत 2/187 से करते हैं। जैसाकि इस आयत के पढ़ने से स्पष्ट होगा इस आयत के उतरने के पूर्व मुसलमानों को रोजे के दिनों में स्त्री सहवास वर्जित था। पर इस आयत में आये अल्लाह के हुक्म ने इस व्यवस्था में इस प्रकार परिवर्तन किया गया :

"(मुसलमानों) रोजों की रातों में अपनी बीबियों के पास जाना तुम्हारे लिये जायज कर दिया गया है वह तुम्हारी पोशाक हैं और तुम उनकी पोशाक हो अल्लाह ने जाना तुम

अपनी जानों से खियानत करते थे। चोरी-चोरी उनके पास आने से अपना दीनी नुकसान करते थे तो उसने तुम पर दया की दृष्टि की और तुम्हारे अपराध दरगुजर किये। पर, अब (रोजे मे रात के वक्त) उपके साथ मिलों और जो (नतीजा) अल्लाह ने तुम्हारे लिए ठहरा दिया है (यानी औलाद) उसकी चाहना करो, और खाओ-पीओ यहां तक कि (रात की) काली धाटी से सुबह की सफेद धाटी तुमको साफ दिखाई देने लगे। फिर रात (आने) तक रोजः पूरे करो। ओर जब तुम मस्जिदों में इअतिफाक की हालत में बैठे हो तब उनसे अर्थात् अपनी बीबियो से प्रसंग मत करना यह अल्लाह की बधी हुई हदें हैं—तो उनके पास भी न फटकना। इसी तरह अल्लाह अपने हुक्मों को लोगों के लिये खोल-खोलकर बयान करता है, शायद वह परहेजगार बन जायं।" 2/187

510 कुरान शरीफ़ में किसी मुसलमान के लिये किसी गैर मुसलमान औरत से जब तक वह मुसलमान न हो जाये विवाह न करने की स्पष्ट आज्ञा है। कुरान शरीफ का कहना है कि गैर मुसलमान या शिर्कवाली बीबी से मुसलमान लौंडी या दासी भली है। इसी प्रकार किसी मुसलमान को अपनी औरतों का गैर मुसलमानों से विवाह करना सख्त मना है। क्योंकि कुरान शरीफ़ के अनुसार गैर मुसलमान या शिर्कवाले मर्दो से ईमानवाला गुलाम भला है।

"और शिर्कवाली औरतें जब तक ईमान न लावें उनसे विवाह न करो। और मुसलमान लौडी शिर्कवाली बीबी से भली है, चाहे वह तुमको अच्छी लगती हो। और शिर्कवाले मर्दो से अपनी औरतों का निकाह न करो जब तक ईमान न लावें। और शिर्कवाला तुमको कैसा ही भला लगे, उससे ईमानवाला गुलाम भला। वे लोग (शिर्कवाले) दोजख की तरफ बुलाते हैं, और अल्लाह अपने हुक्म से विहिश्त और क्षमा की तरफ बुलाता है और आज्ञाऐं खोल-खोल कर वह बयान करता है, ताकि वह नसीहत हासिल करें।" 2/221

कुरान शरीफ़ ने औरतों को पुरुषों की खेतियां करके माना है, और पुरुषों को औरतो पर स्पष्ट रूप में प्रधनता दी है :

"तुम्हारी बीबियां (गोया) तुम्हारी खेतियां हैं, अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिये आइन्दा का भी बन्दोबस्त करो। और अल्लाह से डरो और जाने रहो कि उसके सामने हाजिर होना है और (ऐ पैगम्बर) ईमानवालों को खुशखबरी सुना दो।" 2/223

तलाक के बारे में अल्लाह का निर्देश कुरान शरीफ में इस प्रकार आता है :

"जो लोग अपनी बीबियों के पास जाने की कसम खा बैठें तो उनको चार महीने की मुहलत है, "और अगर तलाक (ही) की ठान लें तो अल्लाह (सब कुछ) सुनता-जानता है। 2/227 फिर (इस मुद्दत में) अगर मिल जावें तो अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है। 2/226

"और जिन औरतों को तलाक दी गई हो वह अपने आप को तीन हैज पूरे होने तक (निकाह से) रोकें। और अगर वह अल्लाह और आखिरत पर यकीन रखती हैं, तो जो कुछ भी अल्लाह ने उनके पेट में छुपा कर रखा है, उसका छिपाना उनको जायज नहीं। और उनके पति सुलह करना चाहें तो वह इस बीच में उनको वापस लेने के ज्यादा हकदार हैं। और जैसे (मर्दों का हक) औरतों पर वैसे ही दस्तूर के मुताबिक औरतों का (हक मर्दों पर) है हा पुरुषों को स्त्रियों पर प्रधानता प्राप्त है और अल्लाह बड़ा और है" 2/228

सूरः दो की आयतें 229 से 237 तक औरतों से सम्बन्धित हैं। इस्लाम के सामाजिक स्तर में औरतों के स्थान को सही परिप्रेक्ष्य में समझाने के लिये इन आयतों का विशेष महत्व है।

(1) "तलाक तो दो ही बार की है। उसके बाद या तो फिर दस्तुर के मुताबिक रख लेना या अच्छे बर्ताव के साथ छोड़ देना हैं। और जो तुम उनको दे चुके हो उसमें से तुमको कुछ भी लेना जायज नहीं, सिवाय (उस सूरत) में मियां-बीबी को डर हो कि अल्लाह ने जो हदें ठहरा दी है उनको कायम नहीं रख सकेंगे। तो अगर तुम लोगों को इस बात का डर हो कि मियां बीबी अल्लाह की हदों का कायम नहीं रख सकेंगे और औरत (अपना) पीछा छुड़ाने के बदले में कुछ दे निकले तो इसमें दोनों पर कुछ पाप नहीं। यह अल्लाह की बांधी हुई हदें हैं तो इनसे आगे मत बढो और जो अल्लाह की बांधी हुई हदों से बढ़ जायं तो यही लोग अन्यायी हैं।" 2/229

(2) "अब अगर औरत को तीसरी बार फिर तलाक दे दी जाये तो इसके बाद जब तक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न कर ले उसके लिए जायज नहीं (हो सकती) हां, अगर (दूसरा पति उससे विषय भोग करके) उसको तलाक दे दे, तो दोनों (मियां बीबी) पर कुछ पाप नही कि फिर एक दूसरे से जुड़ जायं, बशर्ते कि दोनों की आशा हों कि अल्लाह की बांधी हुई हदो को कायम रखे सकेंगे। और अल्लाह की हदें हैं जिनको उन लोगों के लिए बयान फर्माया है जो समझ रखते हैं।" 2/230

(3) "और जब तुमने औरत को (दो बार) तलाक दे दी और उनकी (मुद्दत) पूरी होने को आई तो इज्जत के साथ उनको रोक या उनको (तीसरी तलाक देकर) कायदे के मुताबिक रूखसत कर दो, और सताने के लिए उनको (अपनी स्त्री बना के) रोके न रखना कि उन पर जियादती करे। और जो ऐसा करेगा तो अपना ही नुकसान करेगा। और अल्लाह के हुक्मो को कुछ हंसी खेल न समझो, और अल्लाह ने तो तुम पर अहसान किये हैं उनको याद करो, और यह कि उसने तुम पर किताब और हिकमत की बातें उतारी जिससे वह तुमको शिक्षा देता है। और अल्लाह से डरते रहो और जान रखों कि अल्लाह सब कुछ जानता है।"

(4) "और जब औरतों को तीन बार तलाक दें दो और वह अपनी इद्दत (की मुद्दत) पूरी कर लें तो जायज तौर पर आपस में (किसी से) उनकी मरजी मिल जाने पर उनको (दूसरे) शोहरों के साथ निकाह कर लेने से न रोको। यह नसीहत तुममें से उसको की जाती है— अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है और यहीं तुम्हारे लिए बड़ी पाकीजगी और बडी सफाई की बात है। और अल्लाह जानता है कि तुम नहीं जानते।" 2/232

51 1 आयत 2/233 तलाक के बाद शिशु की दूध पिलाई और लालन-पालन की शर्तो से सम्बन्धित है :

"और माताऐं अपनी औलाद को पूरे दो बरस दूध पिलाएं अगर कोई शख्स (तलाक देने के बाद अपने बच्चे को) दूध पिलाने की मुद्दत को पूरा कराना चाहे तो (उस सूरत में) जिसका वह बच्चा है उस पर दस्तूर के मुताबिक माताओं को खाना कपड़ा देना लाजिम है। किसी को तकलीफ नहीं दी जाती मगर वहीं तक जहां तक उसकी सामर्थ्य है। ना तो माँ को उसके बच्चे की वजह से तक तकलीफ पहुँचाई जाय और न उसको जिसका बच्चा है (यानी

बाप को) उसके बच्चे की वजह से (किसी तरह की तकलीफ पहुचाई जाय) और (दूध पिलाने का खाना खुराक जैसे बाप पर है) वैसा ही (उसके न होने पर उसके) वारिस पर भी है। फिर अगर (वक्त से पहले माता पिता) दोनों अपनी मर्जी से और सलाह से (दूध) छुड़ाना चाहे तो उन पर कुछ पाप नहीं। और अगर तुम अपनी औलाद को किसी (अन्ना या दूसरी स्त्री) से दूध पिलवाना चाहो तो तुम पर कुछ पाप नहीं, बशर्ते कि जो तुमको दस्तूर के मुताबिक (उसको) देना था (उसके) हवाले कर दो। और अल्लाह से डरते रहो। कि जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है।" 2/233

पति की मृत्यु के पश्चात् मृत पुरुष की पत्नी के पुनः निकाह और उनसे निकाह के इच्छुक दूसरे पुरुषों के बारे में अल्लाह का निम्न हुक्म है :

(1) "और तुममें जो लोग मार जायं और बीबियां छोड़ मरें तो (औरतो को चाहिए कि) चार महीने दस दिन अपने को रोकें रहें। फिर जब अपनी (इद्दत की) मुद्दत को पूरी कर ले तो जायज तौर पर जो कुछ अपने हक में करें उसका तुम (मरे के वारिसों) पर कुछ पाप नही। और तुम लोग जो कुछ करते हों अल्लाह को उसकी खबर है।" 2/234

(2) "और अगर तुम किसी बात की आड़ में (प्रत्यक्ष और स्पष्ट रूप से नहीं बल्कि संकेत रूप से जैसे यह कहो कि मुझे किसी औरत से निकाह की जरूरत है) औरतों को निकाह का संदेश भेजों या अपने दिलों में छिपाये रखो तो (इसमें शी) तुम पर कुछ पाप नहीं। अल्लाह को मालूम है कि उसका ध्यान तो तुम्हें आयेगा ही मगर इनसे निकाह ठहराव चुपके से न कर बैठना, हां जायज तौर पर (चाहो तो) बात कह दो। (यानी संकेत कर दो) और जब तक इद्दत की मुकर्रर अवधि न पूरी हो जाय निकाह के बन्धन की बात पक्की न कर बैठना। और जाने रहो जो कुछ तुम्हारे जी में है अल्लाह जानता है, तो उससे डरते रहो। और जाने रहो अल्लाह बख्शनेवाला और बड़ा बदर्शश्तवाला है।" 2/235

51 2 तलाक सम्बन्धी अन्य खास बातों का खुलासा करते हुए कुरान शरीफ़ में आता है कि :

(1) "तलाक दे दो तो उसमें तुमपर कोई पाप नहीं अगर तुमने (उस समय तक उन) औरतों के साथ हमबिस्तरी न की हो और उनका मिहर न ठहराया हो। हां ऐसी औरतों के साथ कुछ सलूक करो; सामर्थ्य वाले अपनी हैसियत के अनुसार और वेसामर्थ्य वाले अपनी हैसियत के अनुसार उनको खर्च दें जैसाकि दस्तूर है। वह नेकी करने वालों पर लाजिम हैं।" 2/236

(2) "और अगर हमबिस्तर होने से पहले और मिहर ठहराने के बाद औरतों को तलाक दो तो जो कुछ तुमने ठहराया था उसका आधा देना चाहिए, सिवाय उस सूरत में कि स्त्रिया आधार मिहर भी खुद छोड़ दें या (मर्द) जिसके हाथ में निकाह के सम्बन्ध की बातें हैं वह (अपना हक) छोड़ दे। (यानी पूरा मिहर देने पर राजी हो और अपना हक छोड़ दे) तो यह परहेजगारी से जियादा क्या करीब है। और अपने बीच इस परस्पर भलाई के विचार को मत भूलो। जो करते हो निश्चय अल्लाह उसको खूब देख रहा है।" 2/237

पति के न रहने की स्थिति में औरत के भरण पोषण की व्यवस्था के बारे में कुरान शरीफ़ का कहना है :

(1) "और जो लोग तुममे से मर जायं और बीबियां छोड़ मरें तो अपनी बीबियों के

हक में एक बरस तक के बर्ताव (भोजन आदि का प्रबन्ध) और (घर से) न निकालने की वसीयत कर मरें। फिर अगर औरतें (खुद ही) घर से निकल खड़ी हों तो जाइज तौर पर जो कुछ उनके हक में (वे) करें उसका तुम पर कुछ पाप नहीं। और अल्लाह जबरदस्त और बडा हिकमतवाला है।" 2/240

(3) "और जिन औरतों को तलाक दी जाय उनके साथ (मिहर के अलावा भी) दस्तूर के मुताबिक सलूक परहेजगारों का कर्तव्य है।" 2/24।

एक से अधिक विवाह करने की अनुमति देते हुए कुरान शरीफ़ में इस प्रकार आता है :

"और अगर तुमको इस बात का डर हो कि बेसहारा (लड़कियों) में इन्साफ कायम न रख सकोगें तो जो औरतें तुम्हें पसन्द हों उनसे निकाह कर लो—दो-दो या तीन-तीन या चार-चार से। लेकिन अगर तुमको इस बात का भय हो कि (उनके साथ) बराबरी (का बर्ताव) न कर सकोगे तो एक ही (बीबी काफी है) या (लौंडी) जो तुम्हारे कब्जे में हो (उस पर संतोष करना) यह तबर्दार जियादा मुनासिब है क्योंकि उसमें अन्याय न होने की जियादा उम्मीद है।" 4/3

तलाक के समय मिहर या विवाह के समय पति द्वारा पत्नी को तलाक पर जो देय धनराशि ठहराई गई है उसके बारे में अल्लाह का निर्देश है कि वह उन्हें खुशी से दे देना चाहिये। पर औरत यदि चाहे तो अपनी मरजी से मिहर छोड़ सकती है।

"और औरतों को उनके मिहर खुशदिली से दे दिया करो। फिर अगर खुशदिली के साथ उसमें से वे कुछ तुमको छोड़ दें तो उसको खुशी और शौक से खा सकते हो।" 4/4

51.3 कुरान शरीफ़ का कहना है कि अनाथ लड़कियों का माल जब वे विवाह लायक हो जायं तो उनको लौटा देना चाहिये। हां, यदि उनके अभिभावक मुहताज हों तो वह उसके माल को मुनासिब हद तक खा सकता है :

"और अनाथों को आजमा लिया करो यहां तक कि वे निकाह (ब्याह) के लायक हो जायं। तो उस वक्त अगर उनमें समझदारी देखों तो उनके माल उनके हवाले कर दो। ऐसा न करना कि उनके बड़े होने के भय से जल्दी-जल्दी उनका माल खा डालो। और जो खुशहाल हो उसे (ऐसे माल से) बचे रहना चाहिए। और जो कोई मुहताज हो वह मुनासिब हद तक खा सकता है। फिर जब उनके माल उनके हवाले करने लगो तो उसके गवाह कर लो, और (वैसे तो) हिसाब लेने को अल्लाह काफी है।" 4/6

कुरान शरीफ़ ने माँ-बाप और रिश्तेदारों की जायदाद में लड़कियों का भी भाग निश्चित किया है जोकि लड़के से ज्यादातर आधा है। विभिन्न संतानों में किस से किस प्रकार जायदाद का बंटवारा हो इसका विवरण आयत 4/7,8,9,10,11 में आया है और संतान के न होने पर बंटवारा कैसे हो इसका निर्देश आयत 4/12, 13 और 14 में दिया गया है।

आयत 4/15 से लेकर 4/21 तक दुश्चरित्र औरतों को सजा और निरपराध औरतो के साथ जोर जबरदस्ती करने की मनाही की गई है :

(1) "और तुम्हारी औरतों में से जो औरतें बदकारी की अपराधिनी हों तो उन पर अपने लोगों) में से चार की गवाही लो फिर अगर गवाह तसदीक करें तो उन औरतों को

घरो में बंद रखो यहा तक कि मौत उनका काम तमाम कर दे या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकालें।" 4/15

(2) "ऐ ईमानवालों। तुमको जाइज नहीं कि औरतों को मिरास (बपौती) मानकर जबरदस्ती उन पर कब्जा कर लो। और जो कुछ तुमने उनको दिया है उसमें से कुछ ले लेने की नीयत से उनको कैद में रखो (कि दूसरे से निकाह न करने पावें और उनका माल तुम उड़ाओ।) सिवा उस सूरत के कि उनसे कोई खुली हुई बदकारी जाहिर हुई हो। और उनके साथ नेक सलूक से रहो, फिर तुमको वे नापसन्द हों तो अजब नहीं कि तुमको एक चीज नापसन्द हो और अल्लाह उसमें (तुम्हारे लिए) बहुत खैर बरकत दे।" 4/19

आगे की दो आयतों में बीबी बदलते समय ईमानवालों को हुक्म है कि छोड़ी जा रही बीबी को दिया माल वापस न लें :

(1) "और अगर तुम्हारा इरादा एक बीबी को बदलकर उसकी जगह दूसरी बीबी करने का हो और तुमने पहली को बहुत सा माल दे दिया हो तो उसमें से कुछ वापस न लो। क्या (झूठी) तुहमत लगाकर खुला गुनाह करके अपना दिया हुआ ले लोगे।" 4/20

(2) "और वह (दिया हुआ) कैसे ले लोगे कि तुम एक दूसरे के साथ सुहबत कर चुके हो और वह (बीबियां) तुमसे पक्का वायदा ले चुकी हैं।" 4/21

51 4 किन-किन औरतों से एक मुसलमान विवाह नहीं कर सकता या कौन-कौन सी औरतें उस पर हराम हैं, इसका निर्णय कुरान शरीफ़ में इस प्रकार आता है :

(1) "और जिन औरतों के साथ तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो तुम उनके साथ निकाह न करना, मगर जो अब तक हो चुका (सो हो चुका)। बेशक यह बड़ी शर्म और गजब की बात थी, और बुरा दस्तूर था।" 4/22

(2) "तुम्हारी माताएं और बेटियां और बहनें, तुम्हारी बुआएं और तुम्हारी मौसियां और भतीजियां, भांजियां और तुम्हारी वे माताएं जिन्होंने तुमको दूध पिलाया और दूध शरीकी बहनें और तुम्हारी सासें तुम पर हराम हैं। और तुम्हारी उन बीबियों की (पूर्व पति की) बेटियां जिन (बीबियों) के साथ तुम सुहबत कर चुके हो, और (वह बेटियां) जो तुम्हारी गोदों में परवरिश पाती हैं (हराम हैं) लेकिन (अगर इन बीबियों के साथ) तुमने सुहबत न की हो तो (पूर्व पति से पैदा लड़कियों से निकाह करने में) तुम पर गुनाह नहीं, और तुम्हारी औरत से पैदा बेटों की स्त्रियां और दो बहनों को एक साथ (निकाह में) रखना (भी तुम पर हराम है) मगर अब तक जो हो चुका सो हो चुका, बेशक अल्लाह बड़ा माफ करने वाला बेहद मेहरबान है।" 4/23

(3) "और औरतें जो (किसी के) निकाह में हैं। वे भी तुम पर हराम हैं सिवाय उनके जो (कैद होकर) तुम्हारे अधिकार में आई हों। अल्लाह के ये हुक्म तुम पर (फर्ज) हैं। और इनके सिवाय दूसरी (सब औरतें) तुम पर हलाल हैं जिनको तुम माल (मिहर) देकर कैद (निकाह) मे लाना चाहो...और (मिहर) तै होने के बाद अगर आपस में समझौते से जो और (कमी बेशी) ठहरा लो तो तुम पर इसमें कुछ पाप नहीं। बेशक अल्लाह बड़ा जानकर और बड़ा हिकमतवाला है।" 4/24

(4) "और तुममें से जिसको (आजाद) मुसलमान औरतों से निकाह करने की ताकत (मिहर आदि के कारण) न हो तो गैर ईमानवाली बांदियां ही सही जो (जंग में कैद होकर) तुम्हारे आपस में कब्जे में हो, और अल्लाह तुम्हारे ईमान को खूब जानता है।" 4/25

मर्द ही की औरतों पर प्रधानता है इसकी स्पष्ट घोषणा आयत 4/34 में इस प्रकार आती हैं :

"मर्द औरतों का सिरधरा है। कारण यह कि अल्लाह ने (इनमें से) एक को एक पर प्रधानता दी है और इसलिये भी कि मर्द अपने माल में से (उस पर) खर्च करते हैं। तो जो भली हैं वे हुक्म पर चलती हैं और उसके पीठ पीछे अल्लाह की सायें में हिफाजत करती है। और तुमको जिन बिबियों से सरकशीका खटका हो उनको समझादो, फिर उनके साथ सोना छोड दो उन्हें मारो, फिर अगर वे तुम्हारी बात मानने लगें तो उनपर तोहमत मत लगाओ क्योंकि अल्लाह सर्वोपरि है और अति महान है।" (4/34)

यहां पर यह कहना सामयिक होगा कि ग्रंथ साहिबजी में औरतों की इस प्रकार की चर्चा का कोई अंशमात्र भी नहीं है। और न ही कुरान शरीफ़ में औरतों के बारे में कही गई बातों का सिख मर्यादाओं में कोई स्थान हे। सिख समाज में नारी सम्बन्धित व्यवहार की मर्यादाएं तो शास्त्र, स्मृतियों से और गुरुओं के परम्परागत आचारों से मर्यादित हैं। या फिर वे उत्तराधिकार और तलाक के मामले मे समग्र हिन्दू समाज पर लागू कानून से नियंत्रित है। कुरान शरीफ़ का कहना है कि मनुष्य की कमजोरी के कारण मियां-बीबी के सम्बन्धों में मर्दकी तरफ से ज्यादितियां होती रहती है। और यदि कई बीबियों वाला मर्द अपनी सभी बीबियो से समान व्यवहार नहीं कर सकता। ऐसी स्थितियों में अल्लाह का हुक्म है यह बतलाते हुए कुरान शरीफ़ में आता है :

"अगर किसी औरत को अपने पति की तरफ से जियादती या दिल फिर जाने के सन्देह हो, तो दोनों पर कुछ गुनाह नहीं कि आपस में (समझौते से) मेल कर लें और मेल (सबसे) अच्छा हे। और लोभ तो सभी की तबियत में होता है, और अगर (तुम दोनों एक दूसरे के साथ) भलाई करो और (कठोरता से) बचे रहो तो अल्लाह तुम्हारे कामों से खबरदार है।" 4/128

"और तुम बहुतेरा चाहो लेकिन यह तो तुमसे नहीं हो सकेगा कि बीबियों में एक सा बर्ताव कर सको, तो बिल्कुल (एक ही तरफ) झुक भी न पड़ो कि दूसरी को छोड़ बैठो, गोया वह कहीं की न रहे। और अगर मेल कर लो और (एक दूसरे पर जियादती से) बचे रहो तो अल्लाह निश्चय ही बख्शनेवाला मेहरबान है।" 4/129

"और अगर दोनों जुदा हो जायं, तो अल्लाह अपने खजाने से दोनों को पूरा कर देगा। ओर अल्लाह बड़ा गुंजाइशवाला हिकमतवाला है।" 4/129

51.5 चौबीसवें सूरः 'नूरि' में व्यभिचारी स्त्री-पुरुषों के लिये कोड़े मारने की सजा का प्राविधान किया गया है और साथ ही अल्लाह का आदेश है कि लोग इस सजा को देखने आएं :

(1) "मर्द और औरत (कोई भी अगर) बदकारी करे तो दोनो में से हर एक के सौ कोड़े मारो और अगर अल्लाह का और आखिर दिन का विश्वास रखते हो तो अल्लाह की

आज्ञा की तामील मे तुमका उन पर तरस न आना चाहिए, आर ईमानवालो में से एक जमात को चाहिए कि जब उन पर मार पड़े तो देखेन आवें।" 24/2

(2) "और जो लोग पाक औरतों पर तुहमत लगायें और चार गवाह न ला सके तो उनको अस्सी कोड़े मारो और कभी उनकी गवाही कबूल न करो और यही लोग बदकिरदार है।" 24/4

(3) "जो लोग चाहते हैं कि ईमानवालो में व्यभिचार की चर्चा फैले उनके लिये दुनिया मे और आखिरत में दुखदाई सजा है और अल्लाह ही जानता है तुम नहीं जानते।" 24/19 और अगर अल्लाह की कृपा और दया तुम पर नहीं होती (तो न जाने क्या अजाब आता)। लेकिन अल्लाह बेहद नर्मी करने वाला बेहद मेहरबान है।" 24/20

इसी सूरः 24 में औरतों पर परदे की पाबन्दी की चर्चा इस प्रकार आती है :

"और तुममें से बैठ रहनेवाली बड़ी-बूढ़ी औरतें जिनको निकाह की उम्मीद नहीं है (वे) अपने कपड़े (दुपट्टे या चादर) उतार कर रखा करें तो उसमें उन पर कुछ अपराध नहीं बशर्ते कि उनका इरादा रूप को दिखाने का न हो, और (इतने से भी) बचाव रखें तो उनके हक में ज्यादा भला है।" 24/60

सूरः 33 पैगम्बर हजरत महम्मद की बीबियों से मुख्यतः सम्बन्धित है। स्वाभाविक है कि इस्लाम में स्त्रियों की स्थिति को बारीकी से समझने के लिये इस सूरः का बहुत अधिक महत्व है। आइये देखें कि अल्लाह के पैगम्बर की बीबियों के लिये और अपनी बीबियों से व्यवहार के सम्बन्ध में स्वयं पैगम्बर के लिये क्या निर्देश है :

(1) "ऐ पैगम्बर। अपनी बीबियों से कह दो कि अगर तुम दुनिया का जीना या यहाँ की रौनक चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दिलाकर अच्छी तरह से बिदा कर दूं।" 33/28

(2) "और अगर तुम अल्लाह और उसके पैगम्बर और आखिरत के घर को चाहनेवाली हो तो तुममें से जो नेकी पर हैं उनके लिए अल्लाह ने बड़ा अज्र (बदला) तैयार कर रखा है।" 33/29

(3) बदकारी या चरित्रहीनता के प्रति पैगम्बर की बीबियों को चेतावनी देते हुए अल्लाह कहते हैं—"ऐ पैगम्बर की बीबियों, तुममें से कोई बदकारी करेगी जाहिरा उसके लिए दोहरी सजा की मार दी जायेगी, और अल्लाह के नजदीक यह मामूली बात है।" 33/30

"और जो तुममें से अल्लाह और उसके पैगम्बर की फर्माबरदारी करेगी हम उसको उसका दुगना अज्र (प्रतिफल) देंगे। और हमने उनके लिए इज्जत की रोजी तैयार कर रखी है।" 33/31

51.6 पैगम्बर की बीबियों के लिये मर्यादाएं निश्चित करते हुए कुरान शरीफ़ में अल्लाह का हुक्म इस प्रकार है :

(1) ऐ पैगम्बर की बीबियों तुम और औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुमको परहेजगारी मंजूर है तो तुम दबी जबान (किसी मर्द के साथ) बात न किया करो, न (ऐसी कि) जिसके दिल में (बुरी वासना का) रोग है वह तुमसे (किसी तरह की) आशा पैदा कर ले और (अगर बात कहना ही है तो) तुम माकूल बात कहो " 33/32

(2) "और अपने घरों में ठहरों और (अपना बनाव श्रृंगार वगैरह) न दिखाती फिरो जैसा कि पहले नादानी के वक्त में दिखावे का चलन था, और नमाज कायम रखो और जकात देती रहो और अल्लाह और उसके पैगम्बर की फरमाबरदार रहो। अल्लाह यही चाहता है कि तुम घरवालों से नापाकी दूर रखे और तुमको खूब-साफ बनाये।" 33/33 "और तुम्हारे घरो में जो अल्लाह की आयतें और हिकमत की बातें पढ़ी जाती हैं उनको याद रखो, बेशक अल्लाह बारीक का जाननेवाला पूरी खबर रखनेवाला है।" 33/34

अरबों में इस्लाम आने के पूर्व मुंहबोला बेटा मानने की प्रथा थी। उधर हजरत मुहम्मद ने अपनी फूफी की बेटी जैनब का विवाह अपने गुलाम जैद से कर दिया था जिसे वो अपना मुँहबोला बेटा मानते थे। पर इन दोनों में पटती नहीं थी और उधर हजरत मुहम्मद अपने दिल के अन्दर जैनब से विवाह करना चाहते थे। पर अपने मुँहबोले बेटे और अपने पूर्व गुलाम की बीबी से उस सयम की प्रथा के अनुसार विवाह सम्भव नहीं था। इस विकट समस्या का समाधान अल्लाह ने आयात 33/37 और आयत 33/38 के द्वारा किया, और इन आयतों द्वारा इस्लाम में किसी को मुँहबोला बेटा बनाने की प्रथा ही समाप्त कर दी :

(1) "और (ऐ मुहम्मद) जब तू उस (जैद) से जिस पर अल्लाह ने और तूने कृपा की थी कहता था कि तू अपनी जोरू (जैनब) को अपने पास रहने दे और अल्लाह से डर और तू अपने दिल में एक बात को छिपाता था जिसको अल्लाह जाहिर कर देना चाहता था और तू लोगों से डरता था हालांकि तुझे अल्लाह से ही डरना चाहिए। फिर जब जैद को उस (बीबी) से कोई सरोकार नहीं रहा (और उसने उसको तलाक दे दी) तो हमने (ऐ मुहम्मद) तेरा निकाह उस औरत से करा दिया ताकि मुसलमानों को अपने मुँह बनाये बेटों (दत्तक पुत्रों) की जोरुओं से निकाह कर लेने में कोई तंगी (रोक) न रहे जबकि उन (मुँहबोले बेटों) को उन (बीबियों) से कोई सरोकार न रह जाय। (और अल्लाह का हुक्म पूरा होना ही था।" 33/37 "अल्लाह ने पैगम्बर के लिए जो बात ठहरा दी हो उसमें (पैगम्बर के लिये) कुछ हर्ज नहीं। जो (पैगम्बर) पहले हो चुके है उनमें भी अल्लाह का यही दस्तूर रहा है और अल्लाह का हुक्म मुकर्रर हो चुका है।" 33/38

(2) "मुहम्मद तुममें से किसी मर्द का बाप नहीं है। (तो जैद का क्यों है) बल्कि वह तो अल्लाह का पैगम्बर है और सब पैगम्बरों पर मुहर है और अल्लाह सब चीजों से जानकर है।" 33/40

51.7 पैगम्बर हजरत मुहम्मद को बीबियों के मामले में विशेष रियायतें देते हुए अल्लाह फर्माते हैं :

(1) "ऐ नबी! हमने तेरी बीबियां तुझ पर हलाल की जिनके मिहर तू दे चुका है और लौड़िया जिन्हें अल्लाह (माले गनीमत में) तेरी तरफ लाया और तेरे चचा की बेटियां और तेरी बुआ की बेटियां और तेरे मामा की बेटियां और तेरी मौसियों की बेटियां जो तेरे साथ देश त्याग कर आई हैं और वह ईमानवाली औरतें (भी) जिन्होंने अपने को पैगम्बर को दे दिया (यानी बगैर मिहर निकाह से आना चाहें) और पैगम्बर भी जिनको निकाह में लेना चाहें (तो यह हुक्म) खास तेरे ही लिए हैं आम मुसलमानों के लिए नहीं। हमने जो मुसलमानों पर उनकी बीबियों और उनके हाथ के माल यानी लौंडियों) का हक (मिहर) ठहरा दिया है (वह) हमको

मालूम है (वह उनको देना वाजिब है)। (और ऐ पैगम्बर आम मुसलमानों के मुकाबले में तुमको यह विशेषता) इसलिए है कि तुम पर (किसी तरह की) तंगी न रहे। और अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है।" 33/50

(2) "(और ऐ पैगम्बर! तुम्हारे लिए यह भी रियारत है कि) अपनी बीबियों मे से जिसको चाहो अलग रखो और जिसको चाहो अपने पास रखो। और जिनको तुमने अलग कर दिया था उनमें से किसी को फिर (अपने पास) बुलवा लो तो तुम पर कोई पाप नहीं। इस तौर पर जियादा सम्भव है कि उनकी आंखें टेढ़ी रहे और उदास न हों पर जो (कुछ भी) तुम उनको दे दोंगे उसे लेकर सबकी सब राजी रहेंगी। और जो कुछ तुम लोगों के दिलों में है, अल्लाह जानता है और अल्लाह सब कुछ जानने वाला और सहनशील है।" 33/51

(3) "(ऐ पैगम्बर इस वक्त के) बाद से (दूसरी) औरतें तुमको हलाल नहीं और न यह (दुरुस्त है) कि उनको बदलकर दूसरी बीबियां कर लो अगर्चे उनकी खूबसूरती तुम्हें अच्छी ही क्यों न लगे, मगर बांदियां (और भी आ सकती हैं) और अल्लाह हर चीज का देखने वाला है।" 33/52

हजरत मुहम्मद साहब की बीबियों से सम्बन्धित 33/50 और 33/51,52 आयतो पर दिये गये फुटनोट में पैगम्बर साहब को दी गई रियायतों के बारे में इस प्रकार आता है

"मुसलमानों पर चार बीबियों तक ही रखने की कैद थी। जब रसूल ने जैनब से निकाह किया तो इस पांचवें निकाह पर काफ़िरों व मुनाफिकों के ऐतराज पर अल्लाह ने नबी के लिये यह रियायत अता की। आयत 50 से 52 तक में अल्लाह ने बीबियों की तरफ तादाद वह उनके साथ बर्ताव में नबी को आम मुसलमानों के मुकाबले खास हक अता फरमाये है। रसूल की नौ बीबियां थीं। इससे जियादा की इजाजत उनको भी न रही न उन्हें छोड़ने या दूसरी बीबियां करने की। अलबत्ता बांदियां दाखिल हो सकती थीं।"

मुसलमानों को पैगम्बर की बीबियों से कैसा मर्यादित व्यवहार करना चाहिये, इसकी चर्चा करते हुए कुरान शरीफ़ में आता है :

(1) ...और जब पैगम्बर की बीबियों से तुम्हें कोई वस्तु मांगनी हो तो पर्दे के बाहर (खड़े होकर) उनसे मांगों। इससे तुम्हारे दिल और उनके दिल पाक रहेंगे। और तुम्हें शोभा नहीं देता कि अल्लाह के पैगम्बर को दुख दो और न तुमको यह शोभा देता है कि उनके बाद कभी उनकी बीबियों से निकाह करो। बेशक तुम्हारा ऐसा करना अल्लाह के नजदीक बड़ा (गुनाह का) काम है।" 33/53

(2) "पैगम्बर की बीबियों पर अपने बापों के और अपने बेटों के और अपने भाइयों के और अपने भतीजों के और अपने भानजों के और अपनी (जानी बुझी मेलवाली) औरतों और अपने बांदी गुलामों के सामने होने में कुछ पाप नहीं। और अल्लाह से डरती रहो। बेशक अल्लाह हर चीज का देखनेवाला है।" 33/55

पर्दे का हुक्म

पैगम्बर हजरत मुहम्मद की बीबियों, बेटियों और अन्य मुसलमान औरतों पर अल्लाह का पर्दे का हुक्म 33/59 में आया है -

"ऐ पैगम्बर! अपनी बीबियों और अपनी बेटियों और मुसलमान औरतों से कहदो कि (बाहर निकलते समय या गैरों के सामने परदा करें और) और अपनी चादरों को (मुंह तक) लटका लिया करें। इससे पहचानी जायेंगी (कि नेकबख्त हैं) और कोई शरारती न सतावे। और (भूलचूक में) अल्लाह बड़ा बख्शनेवाला बेहद मेहरबान है।" 33/59

51 8 हजरत मुहम्मद साहब के अपनी बीबियों से क्या सम्बन्ध रहते थे और इनके बीच कभी-कभी होने वाले तनाव अल्लाह के हुक्म से किस प्रकार सुलझाया जाता था इसकी एक झलक हमें सूरः 66 की पहली पाँच आयतों में मिलती है :

(1) "ऐ पैगम्बर! अपनी बीबियों को खुश करने के लिये तू अपने ऊपर उस चीज को क्यो हराम करता है जो अल्लाह ने तेरे लिए हलाल की हैं। और अल्लाह बड़ा बख्शनेवाला बेहद मेहरबान है" 66/1, "तुम लोगों के लिए अल्लाह ने तुम्हारी कसमों के (किन्हीं सूरतो में) खोल डालने का भी हुक्म रखा है। और अल्लाह ही तुम्हारा मालिक है और वह बड़ा जानकार और बेहद हिकमतवाला है।" 66/2

इन दो आयतों का खुलासा इन आयतों सम्बन्धी फुटनोट में इस प्रकार आता है, "कहते हैं कि एक दिन हजरत मुहम्मद ने अपनी बीबी जैनब के यहां शहद खा लिया था। दूसरी बीबियों में से आयशा और हफसा ने आपसे कहा कि आपके मुँह से दुर्गन्ध आती है। इस पर आपने कहा कि मैं अब भविष्य में कभी शहद न खाऊंगा। कुछ लोग कहते हैं कि बीबी हफसा को खुश करने के लिए आपने बीबी मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया था, जिस पर यह आयतें उतरीं कि यह हराम कर लेना या कसम खा लेना मुनासिब नहीं। इन्हे तोड़ दो। अल्लाह बड़ा माफ करने वाला है। अल्लाह खूब जानता है कि किन कसमों के तोडने पर तुमको पकड़े और किन कसमों को तोड़ना तुम पर वाजिब ठहराये।"

(2) "और जब पैगम्बर ने अपनी बीबियों में से किसी से एक बात चुपके से कही, फिर जब उसने (अपनी सौत पर) उसकी खबर (जाहिर) कर दी और अल्लाह ने इस बात को (जब नबी से) जाहिर कर दिया तो पैगम्बर ने कुछ बताया और कुछ टाल दिया। फिर जब (नबी ने) यह उस बीबी को जता दिया (कि तुमने हमारी छिपकर कही बात जाहिर कर दी) तो उसने (हैरत में) पूछा कि तुमको यह किसने बताया। (नबी ने) कहा मुझको उस खबर रखनेवाले और जानेवाले ने बताया।" 66/3

(3) आगे दी जाने वाली आयतें 66/4 और 66/5 को समझाने के लिये इन आयतो के फुटनोट में आता है कि "ऐसा मालूम होता है कि रसूल की इस नाराजगी और चेतावनी से वे दोनों बीबियां (यानी हफसा और आयशा) कुछ रंजीद (या कुपित) रहीं। तो आयत उतरी कि यह तुमको शोभा नहीं देता। तुम्हारा रंजीद रहना काम न आवेगा क्योंकि अल्लाह व उसके फिरिश्ते रसूल के हमेशा मददगार रहते हैं। उसे बीबियों की मुंहताजी नहीं।" आयतें 66/4 और 66/5 इस प्रकार हैं :

"अगर तुम दोनों (हफसा और आयशा) अल्लाह की तरफ तौबा करो (तो बेहतर है) क्योंकि तुम्हारे दिल झुके पड़े हैं और अगर तुम दोनों पैगम्बर पर चढ़ाई करोगी तो अल्लाह

और जिब्रील और नेकबख्त ईमानवाले उसके दोस्त हैं, और उसके बाद (दूसरे) फिरिश्ते भी उसके मददगार हैं।" 66/4

"अभी अगर (पैगम्बर) तुम सबको तलाक दे दें तो अजब नहीं कि उसका परवरदिगार तुम्हारे बदले उसको तुमसे अच्छी बीबियां दे जो हुक्म उठानेवाली, ईमानवाली, तौबा करने वाली, नमाज में खड़ी होने वाली, इबादत करने वाली, रोजे रखने वाली, ब्याही (यानी विधवा या तलाक पाई) हुई या क्वांरी हों।" 66/5

जैसा कि हमने ऊपर कहा ग्रंथ साहिबजी में औरतों और उनके तलाक या मिहर; या परमात्मा द्वारा गुरुओं या अन्य संतों के पारिवारिक सम्बन्धों के विषय में हस्तक्षेप करने आदि विषयों की कोई भी कल्पना नहीं है। और न ही व्यवहार में इन बातों की आज के सिक्ख समाज में किंचित भी मान्यता है।

औरतें, तलाक और मिहर पर कुरान शरीफ में आई निम्नलिखित आयतों में विवरण मिलता हैं :

2/222, 4/32,33,35,127, 5/5, 7/189,190, 23/5,6,7 24/3,5 से 18,23,24,25,26,33, 33/49,58, 60/10,11,12, 65/1 से 7 तक।

❑

कुरान शरीफ़
ब्याज, कफ्फ़ारा, गुलाम प्रथा-दण्ड विधान

51.9 इस्लाम में अल्लाह की ओर से, ब्याज लेने पर सख्त प्रतिबन्ध है। और साथ ही इस्लाम में भूल से इस्लामिक सिद्धान्तों के विरूद्ध कोई कार्य होने पर कर्त्ता के लिए कफ्फारा या प्रायश्चित का विधान है। अधिकतर प्रायश्चित के तौर पर किसी गुलाम को आजाद कर देने का विधान है। यह इस बात का स्पष्टतम प्रमाण है कि इस्लाम में गुलाम प्रथा कुरान अनुमोदित है। वैसे हमने काफ़िर और जिहाद के प्रकरणों में देखा कि इस्लाम वालों के हाथ पराजित हुए काफ़िरों को ओर उनकी औरतों और बच्चों को अन्य लूट के माल के साथ गुलाम बनाकर इस्लाम वालों में आपस में बांट लेने का प्रावधान कुरान शरीफ़ में कई बार किया गया है। "औरतों" के प्रकरण में भी मुसलमान बनाकर कैद में ली गई और मुसलमान गुलाम औरतों से विवाह का प्रावधान है। इसके साथ ही मुसलमान ईमानवालों या मुसलमानों को भी गुलाम बनाकर रख सकते हैं जो कुरान शरीफ़ की उन आयतों से सिद्ध होता है जिनमे ईमानवाले गुलामों को प्रायश्चित के तौर पर आजाद करने का प्रावधान है। मुस्लिम इतिहास भी इस बात का साक्षी है। आइये देखें इन विषयों पर कुरान शरीफ़ क्या कहते हैं–

(1) "जो लोग ब्याज खाते हैं (कयामत के दिन कब्रों से) इस तरह बेहवास उठेंगे जैसे किसी को शैतान ने (अपनी) चपेट से पागल कर दिया हो, यह उनके कहने की सजा है कि (लाभ की दृष्टि से) जैसे सौदा बेचने का मामला है वैसा ही ब्याज का मामला। हालांकि बेचने (व्यापार) को तो अल्लाह ने हलाल किया है और सूद को हराम। तो जिसके पास उसके परवरदीगार की तरफ से नसीहत पहुँची और उसने (ब्याज खाना) छोड़ दिया तो जो (सूद) पहले (ले चुका) वह उसका हुआ। और (कयामत में) उसका मामला अल्लाह के हवाले। और जो फिर वही काम करेगा तो ऐसे ही लोग नारकी हैं, वह हमेशा नरक ही में पड़े रहेंगे।" 2/275

(2) "अल्लाह ब्याज को मिटाता और खैरात को बढ़ाता है। और अल्लाह कुफ्र करने वाले गुनाहकार को दोस्त नहीं रखता।" 2/276

(3) "ऐ ईमानवालों। अल्लाह से डरो, और अगर तुम ईमान रखते हो तो जो सूद बाकी है छोड़ दो।" 2/278

52.0 आयत 2/279 में ब्याज लेने वालों के विरूद्ध जिहाद का युद्ध करने की हिदायत है। इससे स्पष्ट होता है कि कुरान शरीफ़ में ब्याज के विरुद्ध आदेश सम्भवतः कठोरता से ब्याज वसूलने वाली यहूदी कौम के कारण और उन्हीं के विरुद्ध हुआ। "फिर अगर (ऐसा) न करो तो अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने के लिए आगाह हो रहो (यानी तुम्हारे खिलाफ जिहाद

होगा) और अगर तौबा करते हो (और सूद छोड़ देते हो) तो तुम्हारी असल रकम तुम्हारी ही होगी...।" 2/279 "और अगर (कोई तुम्हारा कर्जदार) तंगदस्त हो तो अच्छी हालत (में आने) तक की मुहलत दो। और अगर (तुमको) समझ आ सके तो तुम्हारे हक में यह अधिक अच्छा है कि (असल कर्ज भी) छोड़ दो।" 2/280

"ऐ ईमानवालों (मूल रकम को) दुगना चौगुना (बढ़ाने के लिए) व्याज मत खाओ और अल्लाह से डरो, ताकि तुम कामयाब होओ।" 3/130 "और (नरक की) उस आग से डरते रहो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।" 3/131

"और जो तुम लोग ब्याज (पर रकम उधार देते हो ताकि (तुम) लोगों के माल म बढती हो तो (याद रहे कि ऐसा माल) अल्लाह के यहां फलता नहीं। और जो अल्लाह की रजामन्दी के लिए जकात देते हो तो जो लोग ऐसा करते हैं उन्हीं के दूने होंगे।" 30/39

कफ़्फ़ारा और गुलाम प्रथा

52.1 आयत 4/92 प्रायश्चित और गुलाम प्रथा पर यथोचित प्रकाश डालती है। इस आयत से यह भी स्पष्टतः ज्ञात हो जाता है कि इस्लाम में एक ही अपराध के लिये ईमानवालो की सजा गैर-ईमानवालों के भिन्न है। यदि एक मुसलमान किसी गैर-मुसलमान की हत्या कर दे तो उसका दण्ड उसके द्वारा एक मुसलमान की हत्या से बहुत कम है।

"किसी ईमानवाले को जेबा नहीं कि ईमानवालों का कत्ल करे सिवा गलती से। और जो ईमानवाले को गलती से मार डाले तो ईमानवाला गुलाम आजाद कर दे और कत्ल हुए के वारिसों को खून की कीमत दे, मगर यह कि उनके वारिस माफ कर दें (तो और बात है) फिर अगर कत्ल किया हुआ उन आदमियों में का हो जो तुम मुसलमानों के दुश्मन हैं, और वह (कत्ल करने वाला) खुद ईमानवाला हो जो एक ईमानवाला गुलाम आजाद करना होगा (खून की कीमत न देनी होगी) ...और जिस (हत्यारे) को यह ताकत न हो, तो लगातार दो महीने रोजे रखे कि तौबा का यह तरीका अल्लाह का ठहराया हुआ है। और अल्लाह बड़ा जानकार और बड़ा हिकमतवाला है।" 4/92

52.2 पक्की कसम खाने के बाद उसे तोड़ने पर कुरान शरीफ़ में हत्या के अपराध के लिये नियत प्रायश्चित से हल्के प्रायश्चित का प्रावधान इस प्रकार है–

"तुम्हारी फिजूल कसमों पर अल्लाह तुमको नहीं पकड़ेगा, हां पक्की कसम खा लो (और उसे फिर तोड़ दो) तो अल्लाह (तुमको जरूर) पकड़ेगा। तो इस गुनाह के कफ्फारा मे दस मुहताजों को औसत दर्जे का खाना खिला देना है जैसा घरवालों को खिलाते हो या उनके कपड़े बनवा देना है या एक गुलाम आजाद कर देना है। फिर जिसको (इसकी) ताकत न हो तो (उसके लिए) तीन दिन के रोजे हैं। यह तुम्हारी कसमों का कफ्फारा है जबकि तुम कसम खा बैठो (और उनपर पूरे न उतरो) और अपनी कसमों पर कायम रहो। इस तरह अल्लाह अपने हुक्म तुमको (खोल खोलकर) सुनाता है शायद तुम एहसान मानो।" 5/89

52.3 इस्लाम आने के पहले अरब में "जिहार" की प्रथा थी इस प्रथा में बीवी को माँ या बहन कह देने से वह बीवी उस पति पर सदा के लिये हराम हो जाती थी कुरान शरीफ़ में

इस प्रथा को कफ्फारा के द्वारा मुसलमानों के लिये इस प्रकार बदला।

"जो लोग तुममें से अपनी बीबियों को माँ कह बैठते हैं (सिर्फ कह देने से) उनकी माँ नहीं हो जाती। उनकी माताएं वहीं हैं जिन्होंने उनको जना है। और उन्होंने एक बेहूदा और झूठी बात की। और अल्लाह बेशक माफ करने वाला बख्शने वाला है।" 58/2

"और जो लोग अपनी बीबियों को (तैश में या भूल में) माँ कह बैठते हैं फिर जो कहा था उससे फिरना चाहते हैं तो एक दूसरे के हाथ लगाने से पहले (कफ्फारा यानी प्रायश्चित) मे एक गुलाम आजाद करना होगा। इससे तुमको नसीहत होगी। और अल्लाह तुम्हारे कामो की खबर रखता है।" 58/3, "फिर जिसको (गुलाम आजाद करना) मयस्सर न हो तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले दो महीने लगातार रोजे रखे और जो (किसी मजबूरी से) यह न कर सकें तो साठ गरीबों को खाना खिला दे। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ। यह अल्लाह की बांधी हुई हदें हैं और (इनसे) इन्कार करने वालो को दुखदाई अजाब है।" 58/4

52.4 ऊपर हमने देखा कि किसी दोष के प्रायश्चित में एक गुलाम को आजाद करने को रोजा रखने के भी ऊपर प्राथमिकता दी है। दूसरे शब्दों में अप्रत्यक्ष रूप में और प्रत्यक्ष भी कुरान शरीफ़ ने किसी गुलाम को आजाद करना इस्लाम में एक ऊंचे पुण्य का कार्य माना है। पर यह पुण्य का कार्य व्यक्ति विशेष के प्रायश्चित तक ही सीमित माना गया है। इसके विपरीत सामाजिक स्तर पर कुरान शरीफ़ ने गुलामी प्रथा को पूर्णतः वैध ही नहीं माना है बल्कि इसे अल्लाह प्रदत्त हुक्म माना है, अल्लाह की दी हुई व्यवस्था मानी है–

(1) "और अल्लाह ही ने तुममें से किसी को किसी पर रोजी में बढ़ती दी, तो जिनको जियाद रोजी दी गई है (वह) अपनी रोजी बांटकर अपने गुलाम को नहीं दे देते कि रोजी मे वह सब (यानी मालिक व गुलाम) आपस में बराबर हो जायं। तो क्या यह लोग अल्लाह की नियामतों से मुन्किर (विमुख) हैं।" 16/71

(2) "एक उदाहरण अल्लाह बयान करता है कि एक गुलाम है, (जो) दूसरे के माल पर किसी बात का हक नहीं रखता और एक शख्स है जिसको अपनी तरफ से अच्छी रोजी दे रखी है और वह उसमें से छिपे और खुले खजाने खर्च करता है, क्या यह (दोनों) बराबर हो सकते हैं (हरगिज नहीं) सब तारिफ अल्लाह ही को है मगर इनमें बहुतेरे यह नही समझते।" 16/75

"और अल्लाह (एक दूसरी) मिसाल देता है कि दो आदमी हैं, उनमें एक गूंगा (व बहरा) है कि खुद कुछ नहीं कर सकता और वह अपने मालिक पर बोझ है कि जहां कहीं उसको भेजे उससे कुछ भी भला नहीं होता। क्या ऐसा शख्स बराबर हो सकता है उसके जो इसाफ का हुक्म देता है और खुद भी सीधे रास्ते पर है।" 16/76

(3) "वह तुम्हारे लिए तुम्हारे बीच की ही एक मिसाल बयान करता है कि क्या तुम्हारे बादी-गुलामों में से कोई हमारी (तुमको) दी हुई रोजी में साझीदार है। और क्या तुम उसमे (उनको अपने) बराबर हकदार समझते हो। और क्या तुम उनका (वैसा ही) डर रखते हो जैसे कि तुम अपनों का डर रखते हो जो लोग समझ रखते हैं उनके लिए हम आयतों की इसी

तरह खोल-खोलकर बयान करते हैं।" 30/28

इस आयत के फुटनोट के अनुसार इस आयत का खुलासा यह है कि जिस प्रकार अधीनस्थ बांदी-गुलाम मालिक की सम्पत्ति में हिस्सेदार नहीं है और न ही उनके बराबर है उसी प्रकार अल्लाह के बनाए अन्य बन्दे और हस्तियां अल्लाह के बराबर नहीं हैं और उन्हें पूजकर तुम अल्लाह के बराबर दरजा नहीं दे सकते। फुटनोट इस प्रकार है—

"मतलब यह कि सारी रोजी साज-सामान इन्सान को अल्लाह ने ही अदा किया है। तुम्हारे गुलाम भी तुम्हारे ही जैसे इन्सान हैं। तुममें उनमें कोई फर्क नहीं सिवाय इसके कि वे तुम्हारे खरीदे माल हैं। सिर्फ इसलिए तुम अपने गुलामों को अपने माल में बराबर का हिस्सेदार नहीं बनाते न उनको अपने बराबर समझते हो। तो फिर तुमको क्या हक है कि अल्लाह के ही बनाये बन्दों और हस्तियों को अल्लाह के साथ-साथ इबादत में शरीक करते व अल्लाह के बनाये बन्दों को पूजकर अल्लाह की बराबरी का दरजा उन्हें देते हो।"

"अल्लाह ने एक मिसाल बयान की कि एक आदमी (गुलाम) उसमें कई साझी है जो आपस में खींचातानी करते हैं। और एक आदमी है कि वह एक शख्स का पूरा (गुलाम) है तो क्या इन दोनों की हालत एक सी हो सकती है। सब खूबी अल्लाह ही को है पर बहुत लोग समझ नहीं रखते।" 39/29

इस आयत के फुटनोट में इस प्रकार आता है—

"इस मिशाल का खुलासा यह है कि एक अल्लाह के पूजने वाले को जो चैन मिल सकती है वह उसको कभी नसीब नहीं हो सकती जो एक को छोड़ अनेक को पूजने और खुश करने में लगा है।"

हजरत सुलेमान पुराने पैगम्बरों में से थे। कुरान शरीफ के अनुसार अल्लाह ने हवा को उनके अधीन कर दिया था। (38/36), और साथ बेड़ियों से बंधे लोग यानी गुलाम उनको दिये थे—"और शैतान, जितने इमारत बनाने वाले और गोते लगाने वाले थे उनके काबू में कर दिये थे।" 38/37, "और कितने ही और बेड़ियों में बंधे (उनके अधीन किये)" 38/38, "(अल्लाह का फरमाना है कि) यह हमारी बख्शिश (कि तुझको देन) है, अब तू भलाई कर या अपने ही पास रखे (तुझसे) कुछ हिसाब नहीं है।" 38/39, "और बेशक सुलेमान का हमारे यहा मर्तबा और अच्छा ठिकाना है।" 38/40

दण्ड विधान या सजा

52 5 ग्रंथ साहिबजी को इस्लाम के परिप्रेक्ष्य में ठीक से समझने के लिए कुरान शरीफ वर्णित दण्ड व्यवस्था को भी समझना होगा। दण्ड व्यवस्थाएं भी आध्यात्मिक भूमिकाओं की भिन्नता दर्शाती हैं और मानवता के प्रति विभिन्न धर्मों के दृष्टिकोण की द्योतक हैं। जैसाकि हम देखेंगे इस्लाम में सजा की भावना के पीछे समान प्रतिशोध को प्रधानता दी गई है। और दण्डों में प्राण दण्ड और अंगों के काटने के माध्यम से शारीरिक यातनाएं प्रमुख हैं :

(1) "जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर से लड़ते और फसाद फैलाने की गरज से मुल्क में दौड़ते फिरते हैं उनकी सजा तो यही है कि मार डाले जाय या उनको सूली दी जाये

या उनके हाथ पांव खिलाफ जानिब से काट दिये जायं (यानी सीधा हाथ काटा जाय तो बाया पैर काटा जावे या बायां हाथ तो सीधा पैर), या उनको देश निकाला दिया जाय। यह तो दुनिया में उनकी दुर्दशा हुई और आखिरत में बड़ी कड़ी सजा (तैयार) है।" 5/33

(2) "और अगर मर्द चोरी करे (या औरत चोरी करे) तो उनके हाथ काट दो। (यह) सजा उनकी करतूत के बदले अल्लाह की ओर से है, और अल्लाह बड़ा जबरदस्त व जानकार है।" 5/38

(3) "और हमने तौरात में यहूद को तहरीरी हुक्म दिया था कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत, और (सब) जख्मों का बदला (वैसे ही जख्मों के) बराबर। फिर जो सताया हुआ शख्स बदला क्षमा कर दे तो वह उसका कफ्फारा (प्रायश्चित) होगा। और जो अल्लाह की उतारी हुई (किताब) के मुताबिक हुक्म न दे तो वही लोग बे-इन्साफ (जालिम) हैं। 5/45

(4) "ऐ ईमानवालों जो लोग मारे जावे, उनमें तुमको किसास (जान के बदले जान) का हुक्म दिया गया है। आजाद के बदले आजाद और गुलाम के बदले गुलाम, और औरत के बदले औरत। फिर जिस (हत्यारे) को (वध किये हुये कि हत्या के बदले में) उसके भाई द्वारा कोई अंश क्षमा कर दिया जाय तो (कत्ल किये गये प्राणी के) वारिसों को चाहिए कि खून का बदला उचित तरीके से मांगे और (हत्यारे को) चाहिये कि उसको (खून का बदला) खूबी के साथ अदा कर दे। यह तुम्हारे पालने वाले की तरफ से तुम्हारे हक में आसानी और मेहरबानी है।" 2/178

(5) कुरान शरीफ़ में निर्देशित कोड़े मारने की सजा की चर्चा हमनें औरतें, तलाक और मिहर वाले अध्याय में की है किन्तु प्रसंग के प्रकरण में उसे यहां दुहराना उचित रहेगा। कुरान शरीफ़ के 24वें सूरः में व्यभिचारी स्त्री-पुरुषों को कोड़े मारने की सजा का प्रावधान किया गया है। साथ ही अल्लाह का आदेश है कि लोग इस सजा को देखने आएं :

"मर्द और औरत (कोई भी अगर) बदकारी करे तो दोनों में से हर एक को सौ कोडे मारो, अगर अल्लाह का और आखिरी दिन का विश्वास रखते हो तो अल्लाह की आज्ञा की तामील में तुमको उनपर तरस न आना चाहिये। और ईमानवालों में से एक जमात को चाहिये जब उन पर मार पड़े तो देखने आवें।" (24/2)

52 6 ग्रंथ साहिबजी में सामाजिक अपराध कर सकता है। वहां इस बात की अवश्य चर्चा है कि परमात्मा को न जानने से या केवल सांसारिक मोह में फंसे रहने से जीव यथार्थ लाभ से वंचित वो नाना योनियों में जनम-मरण के चक्र में फंसकर भटकता रहता है। कुरान शरीफ़ वर्णित दण्ड व्यवस्था की वहां कोई कल्पना नहीं है।

कुरान शरीफ़ में "सजा" सम्बन्धित अन्य आयतें निम्नलिखित हैं—

5/28 से 32,34,39,40, 25/1 से 26, 42/39 से 43।

□

कुरान शरीफ़ और नैतिक सिद्धांत

52 7 कुरान शरीफ़ सम्बन्धित कर्म विधान के अध्यायों में हमने देखा कि इस्लाम में कर्म अपने मे स्वतंत्र फल नहीं रखते। बिना ईमानवाले बने किसी भी गैर ईमानवाले व्यक्ति का याने काफ़िर द्वारा किये गये अच्छे से अच्छे कर्म का इस्लाम में कोई फल नहीं है। काफ़िर होने के कारण महान से महान कर्म करने वाला या दीन दुखियों की सेवा में तन मन और धन अर्पण करने वाला व्यक्ति अंत: मरने के बाद सदा रहने वाले दोजख या नरक में ही जायेगा। कुरान शरीफ़ के अनुसार ईमानवाले के ही अच्छे कर्म किसी व्यक्ति को लोक और परलोक में अच्छे फल दे सकते है। ईमान लाने के बाद बुरे कर्म करने वाला व्यक्ति यदि तौबा कर ले तो अल्लाह ऐसे ईमान वाले व्यक्तियों की बुराईयाँ माफ़ कर उन्हें मरने के बाद बहिश्त या स्वर्ग प्रदान करेगा। और जिस ईमान वाले ने बुरे काम किये और इस्लाम सिद्धांतों का उल्लंघन किया तो ऐसा व्यक्ति तो फिर, मुन्किर या मुनाफिक हो गया और इस प्रकार काफ़िरों के मिलने वाले दण्ड का भागी हो गया।

कुराम शरीफ़ में निहित इस्लाम के कर्म सम्बन्धी इन मूल सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में ही हमे कुरान शरीफ़ में वर्णित नैतिक सिद्धांतों या मानवता वादी सी दिखने वाली आयतो का विवेचन करना होगा। नहीं तो कुरान शरीफ़ में आई कर्म सम्बन्धी आयतों और स्वतंत्र सी दिखने वाली नैतिक सिद्धांतों वाली आयतें परस्पर विरोधी आयतों का स्वरूप ग्रहण कर लेगी। किन्तु जैसाकि पाठक नीचे दी जाने वाली नैतिक सिद्धांत सम्बन्धी आयनों से देखेंगें कि वस्तुत ये सब आयतें ईमानवालों को ही सम्बोधित हैं, उनका पालन भी ईमानवालों के ही प्रति होना है और इन आयतों के पालन का फल भी केवल उन्हीं व्यक्तियों को मिलना है जो ईमान वाले है।

52 8 आइये देखें कि सार्वभौम से दिखने वाले इन नैतिक सिद्धांत सम्बन्धी आयतों का कुरान शरीफ़ में क्या स्वरूप है—

(1) "(ऐ पैगम्बर) तुमसे पूछते हैं कि हम क्या खर्च करें। तो समझा दो जो माल खर्च करो (वह तुम्हारा) माता पिता का, और नजदीक के रिश्तेदारों का, और अनाथों का और दीन दुखियों का, और मुसाफिरों का हक है। और तुम कोई भी भलाई का काम करोंगे, अल्लाह उसको पूरी तरह जानता है।" 2/215

(2) और (ऐ पैगम्बर) (यह लोग) तुमसे अनाथों के बारे में पूछते हैं। तुम समझा दो कि उनके काम का संवारना भलाई है। और अगर (अपने) साथ उनका खर्च शामिल रखो तो वह तुम्हारे भाई ही तो हैं। और अल्लाह बिगाड़ने वालों और संवारने वालों को पहचानता है। और अल्लाह चाहता तो तुमको कठिनाई में डाल देता। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, हिकमतवाला है। 2/220

(3) "(यह) अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हैं, और अच्छे काम करने को कहते हैं और बुरे से मना करते हैं और इच्छे कामों की तरफ दौड़ पड़ते हैं और यही नेक लोगों में से है 3/114 "और भलाई किसी तरह की भी करें ऐसा हरगिज न होगा कि

उसकी कदर न की जाय और अल्लाह परहेजगारों से खूब जानकार है।" 3/115

(4) "और जिन लोगों को अल्लाह ने अपनी कृपा से दिया है और वह उसमें कंजूसी करते हैं वह इसको अपने हक में हरगिज भल न सझते। बल्कि वह उनके हक में बहुत बुरा है। जिस (माल) की कंजूसी करते हैं, कयामत के दिन उसी की तौक (हंसली) बनकर उनके गले में लटकेगी...।" 3/180

(5) "और अनाथों का माल (जो तुम्हारी सुरक्षा मे है) उसको (बालिग होने पर उन्हें) दे दो और उनके अच्छे माल को (निकाल कर अपने) घटिया माल से न बदलो, और उनके माल अपने मालों में मिला जुला कर खा-पी मत डालो। यह बहुत बड़ा पाप है।" 4/2 "और माल जिसको अल्लाह ने तुम्हारे लिए सहारा बनाया है कम अक्लों (नादानों) के हवाले न कर दो, और उनमें से उनके खाने पहनने के खर्च करते रहो, और उन्हें भलाई की बात समझाते रहो।" 4/5

आयत 4/6 विशेष ध्यान से पढ़ने योग्य है—"और अनाथों को आजमा लिया करो यहा तक कि वे निकाह (ब्याह) के लायक हो जाय। तो उस वक्त अगर उनमें समझदारी देखो तो उनके माल उनके हवाले कर दो और ऐसा न करना कि उनके बड़े होने के भय से जल्दी-जल्दी उनका माल खा डालो। और जो खुशहाल हो तो उसे (ऐसे माल से) बचे रहना चाहिये। और जो कोई मुहताज हो वह मुनासिब हद तक खा सकता है। फिर जब उनके माल उनके हवाले करने लगो तो उसके गवाह कर लो, और (वैसे तो) हिसाब लेने को अल्लाह काफी है।" 4/6

"अल्लाह को पसन्द नहीं कि कोई बदजबानी करें सिवाय उनके जिस पर जुल्म हुआ हो (वह मुंह फोड़कर जालिम को बुरा कह बैठे तो लाचार है) और अल्लाह सब सुनता जानता है।" 4/148, "अगर (किसी के साथ) भलाई खुल्लमखुल्ला करो या छिपाकर करो, या (किसी की की हुई) बुराई को माफ कर दो तो अल्लाह बड़ा माफ करने वाला (बड़ी) कुदरतवाला है।" 4/149

52 9 नैतिक सिद्धांत सम्बन्धी कुछ अन्य आयतें इस प्रकार हैं—

(1) "ऐ ईमानवालों। अल्लाह के वास्ते इन्साफ के साथ गवाही देने को तैयार रहा करो और एक गिरोह की दुश्मनी के सबब इन्साफ न छोड़ो। इन्साफ पर कायम रहो, यही परहेजगारी से ज्यादा नजदीक है और अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह तुम्हारे कामों से खबरदार है।" 5/8

यह आयत स्पष्टतः ईमानवालों को सम्बोधित है।

(2) "बेशक वह लोग घाटे में हैं जिन्होंने नादानी और बेसमझी से अपनी औलादो (यानी बच्चियों) को मार डाला, और अल्लाह ने जो रोजी उनको दी थी, अल्लाह (के नाम) पर झूठ बांध कर उसको हराम कर लिया। बेशक यह लोग भटक गये और राह पर नहीं आये।" 6/140 यह आयत मुख्यतः अरब में पैदा होने के समय लड़कियों की हत्या की कुरीति के विरुद्ध है। इस सम्बन्ध में कुछ अन्य आयतें भी हैं।

(3) "....और फिजूलखर्ची मत करो, क्योंकि फिजूलखर्ची करने वालों को अल्लाह पसन्द नहीं करता।" 6/141

(4) "(ऐ पैगम्बर) कहो कि आओ मैं तुमको वह चीजें सुनाऊँ जो तुम्हारे परवरदीगार ने तुम पर हराम की है। यह कि किसी चीज को अल्लाह के शरीक मत ठहराओं और माता पिता के साथ नेकी (करते रहो) और गरीबी के कारण अपनी औलाद को न मार डालो, हम ही तुमको रोजी देते हैं और उनको भी और बेशर्मी की बातें जो जाहिर हों या छिपी हुई हों

उसके पास भी मत फटकना, और जिन जान को अल्लाह ने हर ा कर दिया है उसे कत्ल न करना सिवाय हक (शरीअत) पर (जब जरूरी हो) ये वह बातें ह जिनका हुक्म अल्लाह ने तुमको दिया है ताकि शायद तुम समझ से काम लो।" 6/151

(5) "और अनाथ के माल के पास मत जाना। सिवाय इसके कि उसकी जिस तरह भलाई हो यहां तक कि वह बालिग हो जाय। और न्याय के साथ पूरी-पूरी नाप या तौल करो। हम किसी शख्स पर उसकी ताकत से बढ़ कर बोझा नहीं डालते। और जब बात कहो तो न्याय की, चाहे रिश्तेदार ही क्यों न हो। और अल्लाह (से की) प्रतिज्ञा पूरी करो, यह वह बाते है जिनकी अल्लाह ने ताकीद की है, शायद तुम्हें ध्यान हो।" 5/152

(6) "अल्लाह इन्साफ करने और भलाई करने और सम्बन्धियों को (माली सहारा) देने की आज्ञा देता है और बेशर्मी के काम और बुरे कामों और जुल्म करने से तुमको मना करता है, तुम लोगों को शिक्षा देता है, शायद तुम ख्याल रखो।" 16/90 "और अल्लाह से किये अहद को पूरा करो और जब तुम लोग आपस में अहद करो तो कसमों को उनके पक्के किये पीछे न तोड़ों जबकि तुम (कसम के जरिये) अल्लाह को अपना जामिन ठहरा चुके हो। जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे जानकार है।" 6/91, "...अपनी कसमों को आपसी मामलो मे छल फरेब का साधन न बनाओ (इस नीयत से) कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़कर फायदा उठाये। तो अल्लाह इस (अहद) से तुम लोगों की जांच करता है। (कि कसमों की आड़ में कहीं तुम जुलम तो नहीं करते हो।... 16/92)

(7) "और तुम्हारे परवरदीगार का हुक्म है कि उस े सिवाय किसी की इबादत न करो। और माता-पिता के साथ अच्छा सलूक करो अगर (म. -पिता में से) एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जायं तो उनके आगे (जवाब देही में। हूं भी मत करना और न उनको झिड़कना और (उनके साथ) अदब के साथ बोलना।" 17/23

(8) "और जमीन में अकड़कर न चल क्योंकि न तो तू जमीन को फाड़ सकता है और न बढ़कर पहाड़ों की ऊंचाई को पहुंच सकता है।" 17/37 "यह सब बुरी बातें तुम्हारे रब को नापसन्द है।" 1738

(9) "और बीच की चाल चल और अपनी आवाज नीचे रख। बेशक बुरी से बुरी (आवाज) गधों की आवाज है। 31/18

(10) "ऐ ईमानवाले कोई गिरोह किसी गिरोह की हंसी न उड़ाये अजब नहीं कि वह उनसे भलें हों, और न औरतें औरतों की (हंसी उड़ायें) अजब नहीं कि वह उनसे भली हों। और एक दूसरे को ऐब न लगाओ और न एक दूसरे को बुरे नाम से पुकारो। ईमान ले आने के बाद बुरा नाम रखना गुनाह है। और जो न माने तो वह अन्यायी है।" 49/11

(11) "इसलिये (ऐ पैगम्बर) अल्लाह की अपने ऊपर रहमतों का ख्याल रख और तू भी अनाथ पर जुल्म न करना।" 93/9, "और (कभी) मांगने वालों को मत झिड़कना।" 93/10, "और अपने परवरदिगार के इहसानों को बयान करते रहना।" 93/11

ये तीनों आयतें विशेषकर पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब को सम्बोधित है।

अन्य आयतें—

17/27,25,26,27,28,29,30,31,33,34,35,36, 24/27, 31/14,15, 49/12, 82/1,2,3 4,5 89 17 18 19,20,21

□

आदि श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम चर्चा

(1) मुस्लिम संतों की वाणी : एक समीक्षा

(2) इस्लाम के बढ़ते अत्याचार और हिन्दुस्तान में उसके बढ़ते प्रभाव संबंधी वाणी

(3) ग्रंथ साहिबजी में इस्लामी सिद्धांतों का विवेचन

(4) ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम संबंधी आलोचनात्मक वाणी

(5) ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम का दमन-स्वरूप और उसकी भर्त्सना

(6) ग्रंथ साहिबजी "साकत"

मुस्लिम संतों की वाणी : एक समीक्षा

530 यहाँ तक की चर्चा में हमने ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ़ में आये मुख्य विषयो का विस्तार से विश्लेषण करने का प्रयत्न किया। इस अन्तिम भाग में हम ग्रंथ साहिबजी मे आई इस्लाम सम्बन्धी समस्त वाणी का भी गहराई से विवेचन करेंगे। जैसा कि आरम्भ मे ही हमने कहा था, ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम की चर्चा पृ. 5 से लेकर पृ. 1412 तक मिलती है।

इस्लाम सम्बन्धी इस चर्चा को समग्र रुप से ग्रहण करने के लिये हमने इसे चार भागो मे बांटा है। प्रथम भाग में हमने इस्लाम सम्बन्धी वे पद लिये है जिनमें इस्लाम के अत्याचारो का वर्णन है, और इन अत्याचारों के विरुद्ध सिक्ख गुरुओं ने विशेषकर गुरु नानक जी महाराज ने भगवान से शिकायत की है और उन्हे उलाहना भी दिया है। इसमें हमने उन पदो को भी लिया है, जिसमें उन हिन्दुओं की भी निन्दा है जो ऊपर से तो दिखावा कर रहे है पर अन्दर ही अन्दर इस्लामी शासकों से मिले हैं। दूसरे भाग में वे पद आते हैं जिसमें इस्लाम के मुख्य प्रतीकों जैसे "नमाज़, रोजा, हज, सुन्नत, हलाल, हराम, खुदा, अल्लाह, काजी, मुल्ला, पीर, कुरान आदि शब्दों को एक व्यापक आध्यात्मिक अर्थ देकर उनका खुले रुप में वेदात ज्ञान के साथ समन्वय स्थापित्त करने का भारी प्रयत्न किया गया है।

तीसरे भाग में वे पद हैं जिसमें इस्लाम के सिद्धांतों की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रुप से आलोचना की गई है। चौथे भाग में वे पद हैं जिसमें इस्लाम की स्पष्ट और खुले शब्दो में भर्त्सना की गई है और सबको हिन्दू ही बने रहने का आवाहन किया गया है। इसमें कबीर की वाणी प्रमुख है, और संत नाम देव जी और संत कबीर जी को मुसलमान बनाने के असफल प्रयत्न की पूरी गाथा को इस्लाम विरोधी उदाहरणों के रुप मे और हिन्दू की जय के रुप में प्रस्तुत किया गया है।

इसके पूर्व कि हम ग्रंथ साहिबजी में वर्णित इस्लाम सम्बन्धी वाणियों की चर्चा करें यह उचित रहेगा कि हम ग्रंथ साहिबजी में संकलित उन संतो की वाणियों का अवलोकन कर ले जिनका जन्म मुसलमान घरों में हुआ था। अक्सर सार्वजनिक भाषणों में और लेखों में यह दर्शाया जाता है कि ग्रंथ साहिबजी में सब धर्मों के संतों की वाणियां हैं, जिनमें मुसलमान सत भी हैं। इस प्रकार के वक्तव्यों और लेखों के पीछे साधारण जनता को यह बतलाने का उद्देश्य रहता है (या ऐसे लेख और वक्तव्य लोगों में ऐसा भ्रम पैदा करते हैं) कि ग्रंथ साहिबजी मे इस्लाम या कुरान शरीफ़ सम्बन्धी विचार भी हैं। चूंकि इस प्रकार की अवधारणा तथ्य से सर्वथा परे है और भ्रम-मूलक है इसका प्रमाण के आधार पर निराकरण करना आवश्यक है।

जैसा कि हम आरम्भ में ही कह चुके हैं कि ग्रंथ साहिबजी में कुरान शरीफ़ की न तो कोई आयत ही है और न ही किसी आयत का सार ही है। और जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में देखा कि ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ न केवल एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है बल्कि दोनों के उपदेश और मार्ग एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं। ऐसी स्थिति में यह

असम्भव है कि गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने ग्रंथ साहिबजी का संकलन और सम्पादन करते समय उसमें उन सिद्धातों को स्थान दिया होगा जिन्हें गुरुओं ने अमान्य कहा या जो उनके सिद्धातों के विपरीत रहे।

ग्रंथ साहिबजी में कुल 36 संतों, भक्तों और भाटों की वाणी है। इनमें 6 गुरुओ को मिलाकर 7 क्षत्रियों की बानी है, 5 शूद्र और एक पिछड़ी जाति के, 5 मुसलमान घरों में जन्मे और 18 ब्राहमण थे। मुसलमान कहलाने वाले पांच संत है। (1) कबीर जी (2) शेख फरीद (3) सधना कसाई (4) भक्त भीखन और (5) भाई मरदाना। ग्रंथ साहिबजी का वास्तविक भाव समझने के लिये इन पांचों मुसलमान कहे जाने वाले संतों की वाणियों का अवलोकन आवश्यक है। संत कबीर का समय 1440 से 1518 कहा जाता है। ग्रंथ साहिबजी में इनके 540 पद मिलते है। इनके कई पदों को हम अन्यत्र उद्‌धृत कर चुके है। परम संत रामानन्द जी के शिष्य संत कबीर जी अपने समय में ही ब्रह्मज्ञानी के रुप में प्रसिद्ध हो चुके थे। भगवान राम की सगुन और निर्गुन दोनों रुपों में उनके भक्ति पदों से ग्रंथ साहिब जी का भक्ति-भण्डार भरा हुआ है। प्रिया-प्रीतम भाव की उपासना में भगवान कृष्ण उनके उपास्य थे। संक्षेप में सत कबीर रचित जो भी पद ग्रंथ साहिबजी में आए हैं और उनके जो अन्य हजारों पद जो अन्यत्र मिलते हैं, उनकी एक भी पंक्ति न तो कुरान शरीफ से मेल खाती है और न ही इस्लाम को कभी स्वीकार हो सकती है। यदि यह कहा जाय कि जिसे कबीर मान्य है उसे वेदान्त भी मान्य है तो अधिक यथार्थ और सत्य होगा। ग्रंथ साहिबजी में आई संत कबीर की वाणियो के अनुसार तो इस्लाम ने उनको अपना घोर शत्रु ही माना है और मुसलमान शासकों ने उन्हें दो बार जान से मार डालने का पूरा प्रयत्न भी किया पर कबीर भगवत कृपा से जीवित बचे रहे। ग्रथ साहिबजी में कबीर जी की इस्लाम सम्बन्धी वाणियों को हम इसी अध्याय में आगे चलकर देगे। यहाँ हम केवल कबीर जी का एक पद दे रहे है जो कबीर के इस्लाम संबंधी विचारों को स्पष्टतम और कठोरतम वाणी में अभिव्यक्त करता है :

"छाडि कतेब, राम भजु बउरे, जुल्म करत है भारी ॥
कबीर पकरी टेक राम की तुरक रहे पचि हारी ॥" (477 कबीर)

कबीर का इस्लाम वालों को यह सीधा सम्बोधन है कि अरे बावरे या अज्ञानी! तू कुरान को छोड़ कर राम का भजन कर, तू कुरान पढ़ कर क्यों भारी जुल्म या अत्याचार कर रहा है। कबीर ने तो केवल राम की ही शरण ली है, राम नाम की ही टेक पकड़ी है। उनको नष्ट करने के लिये किये गये तुरकों (विदेशी आक्रमणकारी मुसलमानों को उस काल में तुरक कहा जाता था) के सारे प्रयत्न राम कृपा से व्यर्थ हो गए।

शेख फरीद

53.1 इनका समय 1175 से 1265 तक का माना जाता है। ये गुरु नानक देव जी से लगभग 300 वर्ष पूर्व हुए थे। इनका जन्म स्थान मुलतान जिले के कोठीवाल ग्राम माना जाता है। ग्रंथ साहिबजी में इनके 122 पद हैं, जिनमें चार "शब्द" है, और शेष श्लोक हैं। इस महान सूफी सत की वाणी भी वेदातमयी हैं ग्रंथ साहिबजी में सम्मिलित इनके अधिकतर पद वैराग्य

नाम स्मरण, प्रिया-प्रीतम भाव से परमात्मा से एकाकार होने की विरह वेदना और टीहन से सबधित हैं। जैसा कि हमने ऊपर के अध्यायों में दर्शाया है कुरान शरीफ़ में वैराग्य सम्बन्धी आयतें नहीं है, वहाँ तो मुख्य उद्देशय ईमानवालों को इस लोक में और परलोक में, बहिश्त मे नाना प्रकार के भोगों को उपलब्ध कराना है। ग्रंथ साहिबजी में संग्रहीत शेख फरीद के पदो मे अल्लाह, उनके पैगम्बर हज़रत मुहम्मद पर, अल्लाह की आयतों पर और कयामत पर ईमान लाने की न कोई चर्चा है और न ही कोई आवाहन। फरीद जी के वैराग्य सम्बन्धी कुछ पदो को हम नीचे दे रहे है :

"फरीदा इट सिराणे भुइ सुवण कीडा लडिओ मासि॥
केतडिया जुग वापरे इकतु पइआ पासि॥" (1381(67) फरीद जी)

"हे फरीद जब तू धरती पर सो जायेगा, तब तेरा सिरहाना ईंट होगी, भूमि तेरी सोने की जगह होगी और कीड़े तेरा मांस खाने के लिये आपस में लड़ेगें। इस तरह लेटे लेटे कितने ही युग बीत जायेगे। कोई तुझे जगाने नही आयेगा इसलिए अब जाग जा।"

शेख़ फरीद ने यहाँ "जुग" शब्द का प्रयोग काल गणना के अर्थ में किया है। सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग को मिला कर एक चतुर्युग बनती है जिसका काल लगभग 45 लाख वर्षो का होता हैं ब्रह्मा जी का एक दिन ऐसे 1000 चर्तुयुगों का होता है और उतनी बड़ी ही उनकी प्रलय की रात होती है। इस प्रकार स्पष्टतः फरीद जी वेद-शास्त्र वर्णित काल गणना में जीव के जन्म-मरन के चक्र को नाप रहे है न की कुरान वर्णित काल गणना को। फरीद जी जीव के मरन काल की गणना कयामत तक के काल के दायरे में नही कर रहें है क्योकि कुरान शरीफ़ के अनुसार उस दिन हरेक मुर्दे को उसकी कब्र से निकाल कर अल्लाह के सामने न्याय के लिये खड़ा किया जायेगा।

2. **"देखु फरीदा जि थीआ सकर होई बिसु ॥**
सांई बाझहु आपणे वेदण कहीए किसु ॥" (1378/9 फरीद जी)

हे फरीद देख क्या हुआ। (तेरी दाढ़ी सफेद हो जाने पर) युवावस्था रुपी शक्कर वृद्धावस्था रुपी विष बन गई। है भाई! सांई के अलावा यह वेदना मैं किस से कहूं।

(3) **"रुखी सुखी खाई के ठंडा पाणी पीउ।**
फरीदा देख पराई चोपडी न तरसाइ जीफ ॥" (1379/29 फरीद)

(4) **"बुढ़ा होआ सेख फरीदु कंबणि लगी देह ॥**
जे सउ वरिहआ जीवणा भी तनु होसी खेह ॥" (1379/29 फरीद)

हे शेख फरीद। बूढ़ा होने पर तेरी देह काँपने लगी है। अगर तेरा शरीर सौ वर्ष भी जीये तब भी तेरा शरीर मिट्टी हो जायेगा।

(5) **"फरीदा कोठे धुकणु केतडा पिर नीदडी निवारि ॥"**
जो दिह लधे गाणवे गए बिलाडि बीलाडि ॥ (1380/56 फरीद)

हे फरीद। कोठे पर कोई कितना दौड़ सकता है। प्रभु की ओर से जो नींद है उसे दूर कर। जीवन के जो न्नि मिले हैं वे थोड़े हैं, बिना परमात्मा की याद के वे बहुत जल्दी-जल्दी बीत रहे है

(6) "फरीदा मैं जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि ॥
ऊँचे चड़ि कै देखिआ तां घरि एहा अगि ॥" (1381/81 फरीद)

हे फरीद मैं समझता था कि दुख मुझे ही है, पर दुख तो सारे जगत के जीवों को है। जब मैनें अपने से ऊपर उठ कर देख तो पाया कि घर-घर में यही दुख की आग जल रही है।

अब हम शेख फरीद का वह वेदांत वाक्य दे रहे हैं जिसकी कुरान शरीफ़ में कोई कल्पना नहीं है :

"फरीदा खालुक खलक महि खलक बसै रब माहि ॥
मंदा किस नो आखीए जों तिसु बिनु कोई नाहि ॥" (1381 (75) फरीद)

अर्थात हे फरीद वह प्रभु समस्त संसार में रमा हुआ है सारा संसार उस प्रभु में रम रहा है। अर्थात वह घट-घट वासी परमात्मा इस समस्त सृष्टि में ऐसे ही ओत-प्रोत है जैसे बर्फ मे पानी। जब उस परमात्मा के बिना अन्य कोई है ही नहीं तो किसको मन्दा या बुरा कहें, अर्थात किसी से भी घृणा का प्रशन नहीं।

आइये शेख फरीद की उपरोक्त वाणी को ईशावास्योपनिषद के इन दो मंत्रो के परिप्रेक्ष्य में देखें :

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपशयति।
सर्व भूतेश चात्मानं त्तों न विजू गुप्सते ॥6॥

अर्थात जो समस्त भूतों को आत्मा में ही देखता है, और सम्पूर्ण भूतों में भी आत्मा को ही देखता है वह किसी से घृणा नहीं करता।

यस्मिन्सर्वाण भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तनु को मोहः कः श्लोक एकत्वमनुपशयतः॥

अर्थात जिस समय ज्ञानी पुरुष के लिए सब भूत आत्मा ही हो गये उस समय एकत्व देखने वाले उस विद्वान को क्या शोक और क्या मोह हो सकता है।

और माण्डूक्योपनिषद प्रथम का मंत्र इस समस्त ब्रह्मांड रचना को इस प्रकार परमात्ममय बतलाता है :

"ओंम इस प्रकार का यह अक्षर (अविनाशी परमात्मा) है : यह सम्पूर्ण जगत उसकी ही निकटतम महिमा का लक्ष्य कराने वाला है, भूत (जो हो चुका है), वर्तमान (और) भविष्य (जो होने वाला है) वह सबका सब जगत ओंकार ही है, तथा जो ऊपर कहे हुए तीनों कालों से अतीत दूसरा (कोई त्तव है) वह भी ओंकार (यानी परमात्मा) ही हैं।"

फ़रीद जी कहते हैं जब केवल परमात्मा के अतिरिक्त सृष्टि में और कुछ है ही नही तो तू किसे मंदा कहता है, काफ़िर कहता है। जब सारी सृष्टि और उसके प्राणी परमात्मा मे स्थित हैं तो घृणा किससे, शत्रुता किससे। शेख फरीद का यह पद इस प्रकार कुरान शरीफ़ की सभी मूल मान्यताओं को नकारता है।

शेख फरीद की दृष्टि में वह सर्वव्यापी परमात्मा घट-घट वासी है तो उसे बाहर क्यों ढूंढा जाय वह तो अतरयामी होकर ह्रदय में ही बस रहा है

1. फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कडा मोडेहि ॥
   बसी रबु हिआली ऐ जंगलु किआ ढूढे हि ॥ (1378(19) फरीद जी)

हे फरीद तू जंगल-जंगल क्यों भटक रहा है और वृक्षों की टहनियों को क्यों तोड़ रहा है। भगवानतो तेरे हृदय में बस रहा है, जंगल में क्या ढूंढ रहा है।

2. जब सबके हृदय में परमात्मा का वास है तो किसी को कटुबचन बोलना ओर उसके दिल को दुखाना कैसे सम्भव हो सकता है। फरीद जी कहते हैं :

"इकु फिका न गालाइ सभना में सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥" (1384/129)

शेख फरीद जी कहते हैं हे भाई। किसी व्यक्ति को कभी एक भी बुरा बचन न बोलो क्योकि सबके हृदय में वह सत्यस्वरूप प्रभु बसता है, इसलिये किसी का भी दिल नहीं तोडना चाहिये क्योंकि सभी जीव अमूल्य माणिक है, रत्न है।

और जब वह घट-घट वासी अन्तरजामी रूप में हृदय में बसता हुआ भी नहीं मिल पाता तो जीव रूपी प्रिया विरह वेदना में, परमात्मा से अलगाव की वेदना से तड़पती रहती है। फरीद जी कह रहे हैं :

1. "अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुडे मुडि जाइ ॥
   जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणी बिहाइ ॥" (139/30 फरीद)

हे फरीद। आज मैं अपने पति के साथ नहीं सोई इसलिये मेरे सारे अंग बार-बार टूट रहे है। हे सखी। जाकर सुहागिन से पूछो कि तुम कैसे सारी आयु रूपी रात्रि व्यतील करती हो।

2. "भिजउ सिजउ कंबली अलह बरसउ मेहु ॥
   जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥" (1378/25 फरीद)

हे फरीद बेशक मेरी ओढ़नी भीग कर पानी से लबालब भर जाये और अल्लाह और भी अधिक वर्षा कर दे, किन्तु मै अपने प्रियतम से जाकर अवश्य मिलूंगी और प्रेम का तार नहीं टूटने दूंगी।

फरीद के इस पद में उनका प्रीतम अल्लाह से भिन्न और अंतरतर है जिससे किसी भी परिस्थिति और बाधा को लांघकर फरीद मिलने को आतुर है। यहाँ अल्लाह को उन्होंने और अधिक वर्षा के द्वारा या विषयों और भागों की उपलब्धियों के द्वारा अपने प्रीतम के मार्ग मे मानों बाधा उपस्थित करने वाला दर्शाया है।

3. "जीवन जांदे ना दरां जे सह प्रीति न जाइ ॥
   फरीदा किसी जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥" (1379/34)

यदि अपने प्रीतम प्रभु से मेरी प्रीति न टूटे तो मुझे यौवन जाने का भय नहीं है। हे फरीद। प्रीतम की प्रीति बिना कितने ही यौवन सूखकर कुम्हला गये है। अर्थत प्रभु प्रेम बिना यौवन व्यर्थ है।

4. "बिरहा बिरहा आखीए बिरहा तू सुलतानु ॥
   फरीदा जितु तनि बिरहु न उपजै सो तनु जाणु मासानु ॥" (1379/36 फरीद)

हे फरीद सभी बिरह से उत्पन्न दुख की बात करते हैं पर असली बिरह तो

से वियोग की छटपटाहट है, यही बिरह दुख प्रेम जगत का राजा है। जिसमें यह बिरह उत्पन्न नही हुआ उस तन को तू श्मशान के समान समझ।

5. **"फरीदा रती रतु न निकलै जो तनु चीरै कोइ ॥**
जे तनु रते रब सिउ तिन तनि रतु न होइ ॥" (1380/51)

हे फरीद प्रभु प्रेम के बिरही के तन को कोई चीरे तो रत्ती भर भी रक्त नहीं निकलता। क्योंकि प्रभु प्रेम के बिरही का रक्त तो उसकी बिरहाग्नि में जल जाता है।

6. **"कागा करंग ढंढोलिया सगला खाइआ मासु ॥**
ऐ दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥" (1382/91)

हे काल रूपी कौवा तुम इस पींजर रूपी शरीर को चाहे नोच-नोचकर खा लेना, किन्तु मेरे इन दोनों नयनों को मत छूना क्योंकि इनसे मुझे अपने प्रीतम को देखने की आस है।

7. **"फरीदा पाडि पटोला धज करी कंबलडी पहिरेउ ॥**
जिन्ही वेसी सहु मिलै सेई वेस करेउ ॥" (1383/103 फरीद)

हे फरीद। मैं अपने प्रीतम के मिलन के लिये यदि जरूरी हो तो अपने रेशमी वस्त्र फाडकर धज्जियां कर दूं तथा कम्बली पहन लूं। जिस वेश में मेरा प्रीतम प्रभु मिले, मैं वही वेष धारण करूं।

8. **"तनु तपै तनुर जिउ बालणु हड बलन्हि ॥**
पैरी थका सिरि जुलां जे मूं पिरी मिलन्हि ॥" (1384/119)

शेख फरीद जी कहते हैं कि प्रीतम के बिरह में मेरा शरीर तन्दूर की तरह तप रहा है। ओर हड्डियां ईंधन की तरह जल रही हैं। अपने प्रीतम से मिलने के लिये मैं पैरों के थकने पर अपने सिर के बल चलूंगी।

9. **"ढूढे दीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥**
जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर ॥" (1383/114)

फरीद जी कहते हैं, हे बिरही आत्मा तू प्रभु रूपी अपने सुहाग को ढूंढती हैं, किन्तु उसे प्राप्त नहीं कर पाती, अवश्य ही तुझमें कोई खोट है, कसर है। जो सच्ची सुहागन होती है उसे अपने प्रीतम परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कोई आशा नहीं होती।

10. पद संख्या 1379/22 में फरीद जी परमात्मा को मित्र कहकर, सखा भाव से सम्बोधित करते हुए अपनी बिरह व्यथा यों व्यक्त कर रहे हैं :

"फरीद जो मैं होदा वारिआ मिता आइडिआं ॥
हेडा जलै मजीठ जिउ उपरि अंगारा ॥"

हे फरीद। जब मेरा सखा प्रीतम घर आया था, तब मैं क्यों नहीं उस पर निछावर हो गया, अब मेरा हृदय ऐसे जल रहा है जैसे अंगीठी के ऊपर अंगारे जल रहे हैं।

हम ग्रंथ साहिबजी के "प्रिया प्रीतम भाव" सम्बन्धी अध्याय में शेख फरीद के कुछ बिरह पद और उनके जीवन का परिचय दे चुके हैं। प्रसंग के महत्व के कारण उनके अन्य पदों की यहां आवृत्ति करनी पड़ी हैं। यहां फरीद जी के प्रिया-प्रीतम भाव के एक अत्यन्त भावमय शब्द को पुन: देकर इस महान संत की गाथा की समाप्ति करेंगे

"तपितपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥ बावलि होई सो सहु लोरउ ॥
तै सहि मन महि कीआ रोसु ॥ मुझु अवगन सह नाही दोसु ॥
तै साहिब की मै सार न जानी ॥ जोबनु खोइ पाछै पछुतानी ॥
काली कोइल तु किस गुन काली ॥ अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ॥
पिरहि बिहनु कतहि सुखु पाए ॥ जा होई क्रिपालु ता प्रभू मिलाए ॥
बिधन खूही मुध इकेली ॥ ना को साथी ना को बेली ॥"
करि किरपा प्रभि साध संगि मेली ॥ जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली ॥
बाट हमारी खरी उडीणी ॥ खंनिअहु तिखी बहुतु पिईणी ॥
उसु ऊपरि है मारगु मेरा ॥ सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा ॥ (794 शेख फरीद)

फरीद जी की इस भावमयी वाणी का अर्थ हम "प्रिया प्रीतम" वाले अध्याय में दे चुके है। इस "शब्द" में फरीद जी का परमात्मा के साथ एकाकार हो जाने की गहरी कसक, किसी पैगम्बर के बजाय संतों के संग से उद्धार की कामना, परमात्मा में सखा भाव और उसे प्रियतम के रूप में पाने की अदम्य लालसा, आदि भाव कुरान शरीफ की मान्यताओं के बिल्कुल विपरीत हैं, विरूद्ध हैं।

शेख फरीद जी की यह दृढ़ मान्यता है कि परमात्मा का नाम स्मरण ही उसकी प्राप्ति का सहज उपाय है। और जिन्होंने प्रभु के नाम को बिसार दिया उन्हें इस लोक और परलोक दोनों में ही दुख है, और ऐसे व्यक्तियों के दर्शन ही डरावने लगते हैं :

"फरीदा तिना मुख डरावणे जिना बिसारिओनु नाउ ॥
ऐथे दुख घणेरिआ अगै ठउर न डाउ॥" (1383/106)

भक्त सधना कसाई

53 2 इनका ग्रंथ साहिबजी में राग बिलावल में एक पद है। इनका काल तेरहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध है और ये सिन्ध प्रदेश के सेहवान ग्राम के निवासी थे। जाति के कसाई थे पर केवल मास बेचने का काम करते थे। ये भगवान विष्णु के अनन्य भक्त थे और शालिग्राम को सदैव अपने साथ रखते थे। और ये भक्ति के ऐसे भावुक थे कि तराजू का तोलन शालीग्राम की शिला से करते थे। इस पर ब्राह्मणों के क्रोधित होने पर सधना जी ने शालीग्राम उन्हें दे दिया। पर बाद में उनकी अपार भक्ति देखकर उन्होंने शालीग्राम सधना जी को लौटा दिया। तत्पश्चात ये गृह त्यागकर तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े और सारे देश में सिद्ध भक्त माने गये।

अपने इस भक्तिमय पद में उन्होंने भगवान को अपनी लाज रखने के लिये बड़े ही मार्मिक उलाहने दिये हैं। इस पद की शुरूआत एक कथा से है, जिसमें एक राजकन्या ने यह प्रण लिया कि वो भगवान विष्णु से ही विवाह करेगी। एक धूर्त बढ़ई विष्णु का वेश धारण कर उसके महल वे प्रवेश पा गया और कन्या के कहने से राजा ने उसका विवाह उस कपटवेशी विष्णु से कर दिया। उसी समय एक प्रबल शत्रु ने उस राजा पर आक्रमण किया। राजा ने अपने जमाता "कपटी" विष्णु से युद्ध में सहायता मांगी विष्णु वेशधारी बढ़ई अपनी लाज बचाने के लिये शुद्ध हृदय से भगवान विष्णु के शरण में गया उसकी प्रार्थना स्वीकार

हुई और भगवत कृपा से राजा ने अपने शत्रु पर विजय पाई। पद इस प्रकार है :

"त्रिप कंनिआ के कारनै इकु भइया भेख धारी ॥ कामारथी सुआरथी बाकी पैज सवारी ॥ तब गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै ॥ सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जंबुकु ग्रासै ॥ एक बूंद जल कारने चात्रिक दुखु पावै ॥ प्रान गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥ प्रान जु थाके थिरु नहीं कैसे बिरमावउ ॥ बूडि मुए नउका मिलै कहु काहि चढ़ावउ ॥ मै नाही कहु हउ नहीं किछु आहि न मोरा ॥ अउसर लजा राखि लेहु सधाना जनु तोरा ॥"

(858 भक्त सधना जी)

सधना भक्त कहते हैं कि भगवन! राजा की कन्या के लिये एक पुरूष ने विष्णु का वेश धारण किया था। चाहे वह कामी और स्वार्थी था तो भी हे प्रभु तुमने उसकी लाज रखी। हे जगत गुरु! तुम्हारा उपकार किस काम का यदि मेरे कर्मों के प्रभाव नष्ट न हुए। प्रभु रूपी सिह की शरण लेने से क्या लाभ यदि मुझे कर्म रूपी गीदड़ ने ही खा डाला।

स्वाति नक्षत्र की एक बूंद के कारण चातक दुख में पड़ता है। इसके मरने के पशचात यदि उसे सागर जितना जल भी मिल जाय तो वह उसके कोई काम न आवेगा।

हे प्रभु मेरे प्राण अब थिर नहीं हे अर्थात मेरी आयु अब समाप्ति पर है अब मैं कैसे धीरज धारण करूं। डूब जाने के बाद यदि नौका आये तो मैं उस पर कैसे चढुंगा।

हे परमात्मन मैं कुछ नहीं हूं, मेरे पास कुछ नहीं है और मेरा कुछ भी नही है। हे भगवन, मेरी लाज रख लो। सधना तुम्हारा अपना ही है।

भक्त भीखत

53.3 इनका काल 1480 से 1573 था। ये लखनऊ जिले के प्रसिद्ध काकोरी ग्राम के थे, और भक्तिकाल के उस युग में ये एक प्रसिद्ध मुसलमान भक्त फकीर माने जाते थे। ग्रंथ साहिबजी में इनके नाम महिमा से सम्बन्धित नीचे दिये दो पद हैं :

1. **"नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥**
   रूधा कंठु सबदु नहीं उचरै अब किआ करहि परानी ॥
   राम राइ होहि वैद बनवारी ॥ अपने संतहु लेहु उबारी ॥
   माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही ॥
   ऐसी वेदन उपजि खरी भई वा का आउखधु नाही ॥
   हरि का नामु अंम्रित जल निरमलु इह अउखधु जग सारा ॥
   गुर परसादि कहै जनु भीखतु पावउ मोख दुआरा ॥" (659 भक्त भीखत जी)

भक्त भीखन जी कहते है कि व द्धावस्था के कारण मेरी आंखों से पानी बह रहा है, शरीर दुर्बल हो गया है और बाल भी दूध जैसे सफेद हो गये हैं मेरा गला रूंध गया है उसके कारण एक शब्द भी उच्चरण नहीं होता। मेरा जैसा प्राणी अब क्या कर सकता है। हे राजा राम! हे बनवारी कृष्ण! तुम मेरे हकीम बन जाओं और अपने संतों का उद्धार करों।

मेरे सिर में पीडा है शरीर में जलन है और कलेजे में कसक है मेरे अन्दर ऐसी वेदना उठ रही है जिसकी कोई औषधि नहीं है

हरि का निर्मल नाम रूपी जल अमृत तुल्य है और यही समस्त जगत के लिये औषधि है। भक्त भीखन जी कहते हैं कि गुरु की कृपा से मैंने मोक्ष का द्वार प्राप्त कर लिया है।

इस पद में हम देखते हैं कि भीखन जी हरि नाम को ही, राम और कृष्ण नामको ही सारे जगत के दुखों के निवारण की परम औषधि मानते हैं, और गुरु कृपा से परमात्मा की प्राप्ति का द्वार अपने लिये खुला हुआ मानते है।

2. "ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुनि पदारथु पाइआ ॥
अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ॥
हरि गुरु कहते कहनु न जाई॥ जैसे गूंगे की मिठिआई ॥
रसना रमत सुनत सुखु श्रवना चित चेते सुखु होई ॥
कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखा तह सोई ॥" (656 भीखत जी)

हे भाई अपने पुण्यों के प्रताप से मैने नाम रूपी अमूल्य रतन पाया है। अनेक जतन से इसे अपने हृदय में छिपाकर रखा, पर यह नाम रूपी रत्न छिपाये नहीं छिपता।

हरि के गुणों का वर्णन करने पर भी मैं उसकी पूरी महिमा नहीं कह सकता ठीक वैसे ही जैसे गूंगा मनुष्य मिठाई खाकर उसके स्वाद का वर्णन नहीं कर सकता।

हरि के नाम को अपनी जीभ से उच्चारण करने से, कानों से सुनने से और चित्त से चिन्तन करने से मुझे अपार सुख प्राप्त होता है। भक्त भीखत जी कहते हैं कि अब मेरे नयन तृप्त हो गए हैं क्योंकि अब मैं जहाँ देखता हूँ वहाँ उस हरि को ही देखता हूँ

भाई मरदाना

53 4 ये गुरु नानक देव जी महाराज से आयु में 10 वर्ष बड़े थे और उनके बाल सहचर थे। उनका जन्म स्थान भी तलबंडी था। ये गायन वादन में निपुण थे इसलिये नानक जी के साथ रहकर गुरुवाणी के प्रचार में उनका विशेष योगदान था। गुरु नानक जी के साथ रहकर उन्ही के संग मरदाना जी भी देश-विदेश में गुरुवाणी का प्रचार करते रहें। गायन वादन के साथ-साथ ये भक्ति के भी गहरे रंग में रंग चुके थे। गुरु नानक देव जी इनको मान देते हुए 'भाई' कहकर बुलाते थे। जिस कारण ये "भाई मरदाना" नाम से प्रसिद्ध हुए। नानक जी के साथ अपनी अन्तिम यात्रा में उन्होंनें अफगानिस्तान में खुर्रम नदी के तीर पर अपना देह त्याग किया, और गुरु जी ने अपने इस प्रिय साथी और महान वादक और भक्त का अन्तिम संस्कार अपने हाथों किया।

ग्रंथ साहिबजी में "बिहागड़े की बार" में इनके 3 पद संग्रहीत है। इनमें इन्होने ससारिक विषय वासना जनित मदिरा का त्याग करके निर्दोष अध्यात्मिक भक्तिमयी मदिरा पान करने का आवाहन किया है। इनका एक पद इस प्रकार है :

"काया लाहणि आपु मदु अंम्रित तिस की धार।
सतसंगति सिउ मेलापु होइ लिव कटोरी अंम्रित
भरी पी पी करहि बिकार॥" 553-भाई मरदाना)

मरदाना जी कहते हैं कि संत महापुरूष सुकर्म करके अपने शरीर रूपी मटकी में से

आत्मबोध रूपी शराब मंथन कर नाम रूपी धारा निकालते हैं। उनके सत्संग से प्रभु प्रेम रूपी कटोरी प्रभु के अमृत रूपी नाम से भर जाती है। इस सच्ची शराब को पी-पी कर उनके विकार कट जाते हैं, अर्थात हृदय से विषय-वासनाएं समाप्त हो जाती हैं और परमानन्द प्रवाहित हो उठता है।

ऊपर हमने ग्रंथ साहिबजी में संग्रहीत उन पांच संतों की वाणियां रखीं जिनका जन्म मुसलमान घरों में हुआ था, और इसलिये जिन्हें व्यवहार में मुस्लिम संत कहा जाता है। इनमें कबीर जी के पदों को आगे चलकर यथास्थान चर्चा होगी। इन "मुस्लिम कहे जाने वाले संतों की वाणियों से पाठक यह भली-भांति समझ गये होंगे कि क्यों सिक्ख गुरूओं ने इनकी वाणियों को अपनी वाणियों के साथ ग्रंथ साहिबजी में सम्मान पूर्वक रखा।

उत्तर स्पष्ट है—इन मुस्लिम कहे जाने वाले संतों की वाणी गुरुओं की वाणी के ही अनुरूप है। मुसलमान घरों में पैदा होने के बाद भी इन मुस्लिम संतों की वाणी कुरान शरीफ की वाणी से बिल्कुल भिन्न और विपरीत है, और यही मुख्य कारण है कि व्यवहार में भी इन पांचों मुस्लिम कहे जाने वाले संतों की वाणियों का मुस्लिम समाज में कोई स्थान नहीं हैं। उधर कबीर की वाणी और शेख फरीद के तमाम पद हिन्दू समाज के जबान पर हैं, और आज भी प्रतिदिन गाये जाते हैं, और ग्रंथ साहिबजी में स्थित होने के कारण मत्था टेक के श्रद्धा से पढ़े जाते हैं।

❑

इस्लाम के अत्याचार और हिन्दुस्तान में उसके बढ़ते प्रभाव सम्बन्धी वाणी

53.5 इस्लाम के सम्बन्ध में ग्रंथ साहिबजी में किस प्रकार की वाणियां हैं, इसी की हम आगे विस्तारपूर्वक चर्चा कर रहे हैं। इन वाणियों को चार भागों में बांटते हुए पहले हम इस्लाम के अत्याचार और हिन्दुस्तान में उसके बढ़ते हुए प्रभाव सम्बन्धी वाणियों का पाठकों के सामने रख रहे हैं। पाठक शायद इस बात से अपरिचित हों कि मध्य युग के संत साहित्य में ग्रंथ साहिबजी ही एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें हिन्दु और हिन्दुस्तान शब्दों का प्रयोग आया है—और बड़े गर्व से आया है। इस्लामिक शक्तियों के, विशेषकर, बाबर के आक्रमण की (जिसके गुरु नानक जी प्रत्यक्षदर्शी थे) चर्चा करते हुए नानक देव जी भगवान को उलाहना देते हुए कहते हैं—

> "खुरासन खसमाना कीआ हिंदुस्तानु डराइआ ॥
> आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चढाइआ ॥
> एती मार पई करलाणै तैं की दरदु न आइआ ॥
> करता तूं सभना का सोई ॥
> जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥
> सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥
> रतन बिगाडि बिगोए कुतीं मुइआ सार न काई ॥
> आपे जोडि विछोडे आपे वेखु तेरी वडिआई ॥" (360 म 1)

"खुरासान खसमाना, कीआ" अर्थात हे प्रभु तूने इस्लाम को सर पर चढ़ा लिया और उसके द्वारा हिन्दूस्तान को तू भयभीत, कर रहा है। हे परमात्मन् तू तो सब में बसा हुआ अपनी लीला कर रहा है, तुझको कोई दोष न दे इसलिये इन मुगलों से तूने हिन्दूस्तान पर चढाई करवा दी, और आक्रमणकारी मुगलों ने इतने अमानुषिक अत्याचार किये, इतना रक्तपात किया तो भी तुझे दया नहीं आई।

हे सृष्टि रचयिता! तू तो सभी का स्वामी है, सबकी सुधि लेने वाला है। यदि कोई शक्तिशाली या बलवान, शक्तिशाली से युद्ध करता है और उसे मारता है तब तो मन में कोई रोश या क्रोध उत्पन्न नहीं होता। पर जब शक्तिशाली निर्बलों को मारता है, तो इसका दोष तो इन निर्बलों की रक्षा करने में समर्थ उनके मालिक पर ही जायेगा, उसी की पूछताछ होगी।

हे प्रभु इन आक्रमणकारी कुत्तों ने हीरे के समान हिन्दुस्तान को नष्ट भ्रष्ट करके बिगाड दिया, तब भी तू इस देश के मृतप्राय लोगों की सुधि नहीं लेता। हे परमात्मन्! तू ही सब बनाने वाला और बिगाड़ने वाला है, वस्तुतः तेरा यह खेल तेरी अपनी महिमा ही प्रकट करता है।

53.6 बाबर के भयानक अत्याचारों का प्रत्यक्षदर्शी और हृदयद्रावक वर्णन गुरु नानक जी ने विस्तार से प्रकट किया है

1. "जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूर ॥
ते सिर काती मुंनी अन्हि गल विचि आवै धूडि ॥
महला अंदरि होदिआ हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥ आदेसु बाबा आदेसु ॥
आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ करि करि देखहि बेस॥" (417 म 1)

नानक जी कहते हैं कि जिन स्त्रियों के सिर पर सुन्दर केशों की पट्टियाँ सुशोभित थी और मांगों में सिन्दूर था, उन स्त्रियों के सिर कैंची से मूंड दिए गये हैं और उनके गले मे धूल भरी है। जो पहले अपने महलों में रहती थीं उन्हें अब अपने महलों के निकट भी नहीं बैठने दिया जाता।

2. जदहु सीआ बीआ हीआ लाडे सोहनि पासि ॥
हीडोली चडि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥
उपरहु वाणी बारीए झूले झिमकिन पासि ॥
इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खडिआ ॥
गरी छहारे खांदिआ माणन्हि सेजडिआ ॥
तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥" (417 म 1)

जब वे नवविवाहिताएं अपने पतियों के साथ हाथी के दांतों से जड़ी पालकियों में बैठ कर आई थीं, तब उन पर उनकी सासें पानी बार कर पीती थी, तथा उनके पास जडाऊ झिलमिलाते पंखे डोलते थे। ससुराल में जिन नव-विवाहिताओं के उठने बैठने पर एक-एक लाख रुपये न्यौछावर किये जाते थे, जो स्त्रियां गरी, छुहारे आदि मेवा खती थी, और सुन्दर सेजो पर सोती थीं, अब उनके गले में रस्सियां पड़ी है और उनकी मोतियों की लड़ियां टूट चुकी है।

3. "धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥
दूता नो पुरमाइआ लै चले पति गवाई ॥
जो तिसु भावै दे वडिआई जे भवै देइ सजाइ ॥
अगो दे जो चेतीऐ तां" काइतु मिलै सजाइ ॥
साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥
बाबर वाणी फिरि गई कुइरू न रोटी खाइ ॥" (417 म.1)

उन सुंदर स्त्रियों के धन और यौवन जिनको उन्होंने बड़े सम्हाल कर रखा था उनके आज वैरी हो गये। बावर के हुक्म से उनके सिपाही उनके सारे सम्मान को नष्ट कर अपने साथ ले चले। उस प्रभु को जब भाता है तो यश देता है और जब भाता है तो दण्ड देता है। यदि ये पहिले चेत गये होते तो उन्हें यह सजा क्यों मिलती है? इन तत्कालीन राजाओ ने रगरेलियों में पड़े रह कर अपने कर्तव्यों को और परमात्मा को भुला दिया था। अब बाबर की आज्ञा से राजकुमारों को भी रोटी नहीं मिलती।

4 इस्लाम के अत्याचारों का यह हृदय द्रावक दृश्य खींचते हुए गुरु नानक देव जी आगे कहते हैं

"इकना वखत खुवाई अहि इकन्हा पूजा जाइ ॥
चउके विणु हिन्दवाणिआ किउ टिके कढाहि नाइ ॥
रामु न कबहू चेतिओं हुणि कहाणि न मिले खुदाई ॥" (417 म 1)

मुसलमानों के नमाज के समय हिन्दुओं की पूजा वर्जित हो गई या बन्द हो कर की जाती है। बिना स्नान पूजा के और बिना तिलक के हिन्दू समाज रह गया, यानी हिन्दू समाज का तिलक धारण करना बन्द हो गया। जिन्होंने कभी राम नाम की सुधि नहीं ली, उन्हें आज "खुदा" "खुदा" कह कर भी इस्लाम के अत्याचारों से छुटकारा नहीं मिलता। इसका दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि हिन्दू स्त्रियों के यह कहने पर भी कि खुदा के लिये हमें छोड दो उन्हें जालिम मुसलमानों से छुटकारा नहीं मिलता।

5. "इकि धरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख ॥
इकन्हा ए हो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख ॥
जो तिसु भवै सो थीऐ नानक किआ मानुख ॥" (417 म 1)

बाबर की कैद से जो थोड़े बहुत लोग छूट कर आये, वे या तो परस्पर मिल कर कुशाल क्षेम की बातें कर रहे हैं या फिर अपने दुखों को रो रहे है। हे नानक। जो उस "कर्ता" को भाता है वही होता है, मनुष्य का किया कुछ नहीं होता।

6. "कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई ॥
कहा सु तेगबंद गाडेरडि कहा सु लाल कवाई ॥
कहा सु आरसीआ मुंह बके ऐथे दिसहि नाही ॥
इहु जगु तेरा तू गोसाई ॥
एक घड़ी महि थापि उथापे जरू वंडि देवै माई ॥
कहां सु घर दर मंडप महला कहा सु बंकसराई ॥
कहां सु सेज सुखाली कामणि जिसे वेखि नींद न पाई ॥
कहां सु पान तंबोली हरमा होईआ छाई माई ॥" (417 म.1)

53 7 आक्रमणकारी मुसलमानों के अत्याचारों का चित्रण करते हुए गुरु देव नानक जी कहते है कि कहां गये वे खेल, अस्तबल और घोड़े? कहाँ हैं वे नगाड़े ओर बजती हुई शहनाइया? कहा हैं वे तलवारों के चलाने वाले शूरवीर और कहां हैं उनकी लाल आकर्षक और रोबीली वार्दियां? कहाँ है वे सुन्दर दर्पण और कहां हैं उनमें झांकने वाले सुन्दर मुखड़े? आज वे सब यहा कहीं नहीं दिखते।

हे परमात्मा यह सारा जगत तेरा है और तु ही इसका स्वामी है। तु एक घड़ी मे ही सबका उत्थान और पतन करता रहता है, जब तुझे भाता है तो अथाह सम्पदा दे डालता है।

नानक जी कहते है कि कहाँ है वे सुन्दर, घर, दरवाजे, मंडल और महल। और कहां है वे सुन्दर अथिति गृह? कहां है वे सुखदायी सेज और सुन्दर स्त्रियां जिन्हें उन सेजों पर भी नींद नहीं आती थी? कहां हैं वे पान और तमोलिने और वे अन्त: पुर: में रहने वाली स्त्रियां? ये सब माया की छाया के समान या

7. माया की सृष्टि की क्षणभंगुरता दिखलाते हुए और अत्याचार से पीड़ितों को आश्वासन करते हुए नानक जी कहते हैं :

इसु जर कारणि घणी बिगुती इनि जर घणी खुआई ॥
पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥
जिस नो आपि खुआर करता खुसि लए चंगिआई ॥ (417 म.1)

इस माया और धन के कारण बहुत सी जातियां नष्ट हुई हैं, बदनाम हुई हैं, बिना पाप के यह माया इकट्ठी नहीं होती और मरने के समय पापी जीव के साथ नहीं जाती। जिसे प्रभु नष्ट करना चाहता है उससे उसकी अच्छाईयां छीन लेता हैं। यहाँ गुरु महाराज जी हिन्दुओ को स्पष्ट बतला रहे हैं कि ये आक्रमणकारी मुसलमान घोर पाप कर रहे हैं और अन्तः नष्ट होगे।

इस प्रकार हम देखते है कि गुरु नानक जी स्थान-स्थान पर मुसलमानों के अत्याचारो का वर्णन करते हुए उसे अन्त में प्रभु की लीला का ही अंग मान रहे हैं, और इस प्रकार वे अप्रत्यक्ष रूप से समस्त हिन्दू समाज को इस विपत्ति से उद्धार पाने के लिये और अधिक दृढता से परमात्मा की ही ओट लेने की उनकी शरण में जाने का आवाहन कर रहे हैं। उस समय उनके ध्यान में अवश्य यह रहा होगा कि बाबर के आक्रमण को विफल करने के लिये हिन्दू समाज ने बहुत से पूजा पाठ किये होगें, जो व्यवहार में व्यर्थ हो गये। इस प्रकार प्रतिकार के लिये की गई उपासनाओं का व्यर्थ होना नानक जी ने प्रभु की लीला का ही अंग माना। पर इस कारण हिन्दू समाज कहीं दिल से हताश न हो जाय, इस निराशा से उन्हें उबारने के लिये नानक जी ने उसका ध्यान पठानों की पराजय की ओर भी दिलवाया जो इस्लाम वाले होते हुए भी, और हजारों तरह की अपने पीरों से पूजा आदि करवाते हुए भी मुगलों से पराजित हुए और उनके अत्याचारों के शिकार हुए।

पठानों के पराजय की दुर्दशा का वर्णन करते हुए गुरु नानक जी कहते है :

1. "कोटी हू पीर बरजि रहाए जा मीरु सुणिआ धाइआ ॥
धान मुकाम जले बिज मंदर मुछि मुछि कुइर रुलाइआ ॥
कोई मुगल न होआ अंधा किनै न परचा लाइआ ॥" (417/18 म 1)

जब पठानों ने सुना कि मीर बाबर आक्रमण करने आ रहा है तो उन्होनें अपने करोडो पीरो को रोक कर नमाज़ पढवाई पर एक भी नमाज़ स्वीकृत न हुई। बड़े-बड़े पक्के मकान जला दिये गये और सैकड़ों शहजादों को टुकड़े-टुकड़े कर मिट्टी में मिला दिया गया। किसी भी पीर की कोई करामात काम नहीं आई और कोई अत्याचार करता हुआ मुगल अंधा नहीं हुआ।

2. "मुगल पठाना भई लड़ाई रण महि तेग बगाई ॥
ओन्ही तुपक ताणि चलाई ओन्ही हसति चिडाई ॥
जिन्ह की चीरी दरगाह पाटी तिन्हा मरणा भाई ॥" (418 म 1)

मुगलों और पठानों में भारी लड़ाई हुई और रण में तलवारें खुल कर चली। मुगलों ने निशाना अपने तोपें और बन्दूकें चलाई और पठानों से युद्ध में अपने हाथी हूल दिये पर हे भाई जिसकी आयु रूपी चिट्ठी यम के यहाँ फाड दी गई थी उसका तो मरना निश्चित था

3. "इंक हिदवाणी अवर तुरूकाणी भटि आणी ठकुराणी ॥
इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी ॥
जिन्ह के बकें घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि बिहाणी ॥" (418 म 1)

विजेता मुगलों ने हिन्दू और पठान स्त्रियों की दुर्दशा की, मुसलमान स्त्रियों के बुरके सिर से पैर तक फाड़ दिये गये, और हिन्दू स्त्रियों को श्मशान का वास मिला, यानी वे मौत के घाट उतार दी गई। नानक जी भारी दुख मानते हुए कह रहे हैं कि जिन स्त्रियों के जवान पति युद्ध से घर नहीं लौटे वे कैसे अपने शेष जीवन रूपी रात्रि को काटेगी।

4. "आपे करे कराए करता किस नो आखि सुणईऐ ॥
दुख सुखु तेरे भाणै होवे किस थै जाइ रूआइऐ ॥
हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥" (418 म 1)

यहाँ नानक जी फिर से हिन्दू समाज को यह बतला रहे हैं कि यह सब विनाश प्रभु की लीला है, सब उसकी ईच्छा के अन्तर्गत धटित हो रहा है, किस के पास जाकर अपना दुखड़ा रोया जाय, सब जीव क्रमानुसार ही अपने सुख-दुख प्राप्त करते हैं। जैसा कि हमने ऊपर कहा हिन्दू समाज पर पड़ी इस घोर विपदा को प्रभु की लीला और जीवों के कर्मो का फल बतलाने के पीछे गुरु नानक जी का उद्देश्य, हिन्दू समाज के धैर्य को बनाये रखता था, ओर साथ ही यह भी बतलाना था कि मुगलों की इस विजय के पीछे उभरते हुए इस्लाम की कोई विशेषता नहीं थी। स्वयं पठान शासक जो इस्लाम के कट्टर अनुयायी थे, और जिन्होने मुगलों को पराजित करने के लिये इस्लाम के अनुसार तमाम मनौतियां मनायी थीं, स्वय भी बुरी तरह पराजित और अपमानित हुए।

पाठकों को शायद यह उत्सुकता होगी कि गुरु नानक जी के उपरोक्त इस्लाम सम्बन्धी वाणी के शुरू होने के पहले वाला या "पूर्व" पद क्या है और खत्म होने के बाद तत्काल "उत्तर" पद क्या है?,

"पूर्व" पद की अन्तिम पंक्ति यह है—

"नानक राम नाम सरणाई ॥ सतिगुरु रखि बंधु न पाई ॥" (416 म 1)

अर्थात मैं राम नाम की शरण लेता हूं। जिसको राम रख लेता है फिर वे माया के बधन में नहीं पड़ते। और "उत्तर" पद इस प्रकार है :

"जैसे गोइलि गोइली वैसे संसारा ॥
कड़ु कमावहि आदमी बांधहि घरबारा ॥" (418 म 1)

जैसे चरागाह में ग्वाला थोड़े समय के लिये रहता है, उसी प्रकार यह संसार चरागाह है और जीव ग्वाला है। पर बटोही की तरह रहने के बजाय आदमी घर बार में आसक्त होकर झूठ की कमाई कर रहा है।

इन "पूर्व" और उत्तर पदों से यह सिद्ध होता है कि ग्रंथ साहिबजी का मूल आधार अध्यात्म ही है। आगे दी जाने वाली इस्लाम सम्बन्धी वाणियों के भी "पूर्व" और "उत्तर" पदो से यही बात सिद्ध होगी। इससे यह प्रमाणित होता है कि ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम सम्बन्धी वाणिया सिक्ख गुरुओं ने अपने पूर्व नियोजित उद्देश्य को सिद्ध करने के लिये रखी हैं और

यह मुख्य उद्देश्य था, इस अनादि काल से चले आ रहे ऋषि-मुनियों और सिद्ध साधकों के, इस जीवनमुक्तों और गुरुओं के के पुरातन धर्म को विश्व कल्याण के लिये सुरक्षित रखना, सर्वोपरि रखना।

चारों युगों की विशेषता बतलाते हुए कलियुग के बारे में नानक जी कहते है :

"कलि महि वेदु अथरवणु हुआ नाउ खुदाई अलहु भइया॥
नील वसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठानी अमलु कीआ॥
चारे वेद होए सचिआर॥ पडहि गुणहि तिन्ह चार विचार॥
भाउ भगति करि नीचु सदाए॥ तउ नानक मोखंतरू पाए॥" (470 म.1)

इस पद में भी गुरु नानक जी का हिन्दू समाज के लिये एक गूढ़ संदेश निहित है, एक बहुत बड़ा आश्वासन विहित है। वे कहते हैं अन्तः कलियुग में अर्थववेद की प्रधानता रहेगी, चाहे इस समय खुदा और अल्लाह का नाम छाया हुआ है और नीले कपड़े पहनने वाले मुगलो और पठानों की राज्य सत्ता है। "चारे वेद होइ सचिआर", अर्थात चारों वेदों को अपने-अपने युगो में सत्य होना ही है। चारों युगों में वेद ज्ञान की सत्यता ही अन्तः सर्वोपरि रहनी है। इस बात को वही समझ सकते हैं जिन्होनें इस त्तव पर गहराई से विचार किया है। नानक जी कहते है कि नीच से नीच व्यक्ति भी भक्ति मार्ग से मोक्ष अर्थात परमात्मा को प्राप्त करेगा।

कलियुग में इस्लामिक दुराचार के प्रभाव का वर्णन करते हुए नानक जी व्याकुल होकर कहते हैं कि इस कलि के अंधकार से किस प्रकार छुटकारा मिलेगा, और फिर हरि भक्ति के प्रकाश से ही इस अंधकार से छूटने का मार्ग बतलाते है :

"कलि काती रजे कासाई धरम पंख करि उडरिआ॥
कुड़ अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चडिआ॥
हउ भालि विकुंनी होई॥ आधेरै राहु न कोई॥"
विचि हउमै करि दुखु रोई॥ कहु नानक किनि विधि गति होई॥" (145 म.1)

नानक जी स्वयं उत्तर देते हुए कहते है :

"कलि कीरति परगटु चानणु संसारि॥ गुरमुखि कोई उत्तरे पारि॥" (145 म 1)

नानक जी कहते हैं कि इस घोर कलियुग में राजा कसाइयों के समान अत्याचारी हो गये हैं, धर्म मानो पंख लगाकर उड़ गया है।, झूठ का साम्राज्य अमावस की रात्रि के समान सर्वत्र फैला हुआ है, और सत्य अमावस के चन्द्रमा की तरह कहीं दिखलाई नहीं देता। इस सत्य को ढूढ-ढूंढ कर मैं व्याकुल हो गया हूँ। हे नानक। कलियुग के इस घोर अंधकार में कैसे छुटकारा हो।

उत्तर देते हुए नानक जी कहते है कि कलियुग में हरि नाम की कीर्ति ही प्रत्यक्ष प्रकाश है, और इसे सच्चे गुरु की वाणी से प्राप्त करके अंधकार के पार जाया जा सकता है।

53 8 नीचे जो हम शब्द दे रहे हैं, उनमें गुरु नानक जी ने उन ब्राह्मण और क्षत्रियो को फटकारा है जो ऊपर से हिन्दू होने का पाखण्ड रचते हैं पर जो हर प्रकार से मुसलिम शासको के साथ मिले हुए हैं और अपने स्वार्थ के लिये हिन्दू समाज पर अत्याचार करने में मुसलमानो का साथ दे रहे है गुरु और ब्राह्मणों पर भी कर लगा रहे इन मुसलमान शासकों का साथ

देने वाले पाखण्डी हिन्दुओं की निन्दा द्वारा नानक जी इस्लाम का अत्याचारी स्वरूप भी सब के समक्ष स्पष्ट शब्दों में रख रहे हैं।

1. "गऊ बिराहमण कउ कर लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥
धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछा खाई ॥
अंतरि पूजा पडहि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥
छोडीले पांखडा ॥ नामि लइऐ जाहि तंरदा ॥" (471 म.1)

इस पद की प्रथम पंक्ति में मुसलमान शासकों के अधीन वरिष्ठ ब्राह्मण और क्षत्रिय अधिकारियों पर नानक जी ने भारी कटाक्ष किया है। साथ ही यह पंक्ति गुरु नानक जी की गऊ और ब्राह्मणों पर अपार श्रद्धा भी व्यक्त कर रही है। नानक जी कहते है :

हे भाई। तुम गऊ और ब्रह्मण पर तो कर लगा रहे हो अर्थात उनका हर प्रकार से दमन कर रहे हो, तो क्या इस स्थिति में तुम गोबर के सहारे भव सागर पार करोगे। अरे तू दिखावे के लिये धोती पहनता है, टीका लगाता है और माला जपता है पर धान तो तू मलेच्छो का ही खाता है, अर्थात तू मुसलमानों के अन्न पर अपने को पालता है। दूसरे शब्दों में नानक जी का कहना हे कि मुसलमान शासकों के आश्रय से अपना पालन करने वाला होकर तू हिन्दू समाज को केवल पीड़ित ही कर रहा है। घर के अन्दर तो दिखावे के लिये पूजा करता है, परन्तु बाहर मुसलिम शासकों को प्रसन्न करने के लिये तू उनकी किताबें यानी कुरान शरीफ आदि पढ़ता है। और मुसलमानों की रहनी रहता है। सो हे भाई। तु यह पाखण्ड छोड़ दे। परमात्मा का नाम ले तभी तू भव सागर के पार उतरेगा।

इस पद में मुसलमानों को मलेच्छ कह कर सम्बोधित करना यह दर्शाता है कि नानक जी मुसलमानों को अति निकृष्ट आचार वाला मानते हैं।

2. इस दूसरे लम्बे पद में भी नानक जी ने मुसलनानों को मलेच्छ कह कर सम्बोधित किया है और साथ ही उनकी करनी और कथनी में यह कह कर भारी कटाक्ष किया है कि "मनुष्यों को खाने वाले अर्थात अत्याचारी नमाज भी पढ़ते है" और अत्याचारी मुसलमानों का साथ देने वाले पाखण्डी हिन्दुओं की भर्तस्ना की है :

"माणस खाणे करहि निवाज ॥ छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥
तिन घरि ब्राहमण पूरहि नाद ॥ उन्हा भी आवहि ओई साद ॥
कूडी रासि कूडा वापारू ॥ कुड बोलि करहि आहारू ॥
सरम धरम का डेरा दूरि ॥ नानक कुडु रहिआ भरपूरि ॥
मथै टिका तेडि धोती कखाई ॥ हथि छुरी जगत कासाई ॥
नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ मलेच्छ धानु ले पूजहि पुराणु ॥
अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥
देके चउका कढी कार ॥ उपरि आइ बैठे कूडिआर ॥
मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अंनु असाडा फिटै ॥
तनि फिटै फेड करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥
कहु नानक सचु धिआईए ॥ सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥" (471 72 म 1

गुरु नानक जी कहते है कि हे लोगो। देखो मनुष्यों को खाने वाले अर्थात उनकी हत्या करने वाले नमाज भी पढ़ते है। और इन घोर अत्याचारी मुसलमानों का साथ देने वाले हिन्दू अपने को जनेऊ पहनने का अधिकारी मानते हैं और ऐसे पत्ति हिन्दुओं के घर जाकर जो ब्राह्मण पूजा कराते हैं और शंख बजाते हैं, वे ब्राह्मण भी उन अत्याचारियों के घर का भोजन करने के कारण भ्रष्ट हो गये है। इनकी यह झूठ की सम्पत्ति और झूठ का व्यापार व्यर्थ हे, मिथ्या है।

ऐसे सब व्यक्ति झूठ के आधार पर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं इन लोगों मे न कोई लाज रह गई है और न ही धर्म ही। हे नानक। सर्वत्र झूठ ही व्याप्त है।

मुस्लिम शासकों की सेवा में रह कर अत्याचार करने वाले ये हिन्दू अधिकारी धन सम्पदा के लालच में किस तरह का निन्दनीय आचरण कर रहे हैं, उसे धिक्कारते हुए नानक जी कह रहे है कि : उनके माथे पर टीका है और कमर में धोती पहने हैं, पर हाथों में छुरी लिये हुए जगत में कसाइयों का आचरण कर रहे हैं। वे नीले वस्त्र पहनकर तुर्क यानी मुसलमान अधिकारियों की दृष्टि में मान्यता प्राप्त कर लेते है। वे मलेच्छों से धन लेते हैं और फिर उस धन से पुराणों को पूजते है।

यही नहीं ये भ्रष्ट हिन्दू अधिकारी कलमा पढ़ कर हलाल किये हुए बकरे का मास खाते हैं, और फिर घर जाकर अपने चौके में पवित्रता का ढोंग रचाते हैं और कहते हैं "मत छुओ, मत छुओ" नहीं तो हमारा अन्न अपवित्र हो जायेगा। और वे स्वयं झूठे शरीर से भोजन करते हैं और झूठे मन से कुल्ले करते है।

गुरु नानक जी कहते है कि एक सत्य स्वरूप परमात्मा का ही ध्यान करो, शुचिता प्राप्त करके ही सत्य स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति होती है।

इस पद में नानक जी ने प्रत्यक्ष रूप से और मुसलमान शासकों के भ्रष्ट हिन्दू अधिकारियों की निन्दा के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से इस्लामी शासकों के अत्याचारों की कटुतम आलोचना की हैं, "मलेच्छों" यानी मुसलमानों के धन, उनके नीले वस्त्र, कलमा पढकर हलाल किये पशुओं के मांस आदि खाने को-सभी की नानक जी ने निन्दा की है और उन्हे त्याज्य बतलाया है।

53.9 अब हम पृष्ठ 722/23 पर तिलंग महला में आए गुरु नानक जी के वह हृदय स्पर्शी 'सबद' उद्धत करेंगे जिसमे उन्होंने इस्लाम द्वारा बहाई गई खून की नदियां और लाशों के ढेर का चित्रण अपने शिष्य लालों को संबोधित कर किया है, तथा साथ ही इस्लाम के प्रभाव का हिन्दुस्तान से समाप्त होने की और हिन्दुस्तान को एक महान राष्ट्र के रूप में उभरने की भविष्यवाणी की है। और साथ ही हम गुरु नानक देव जी की ही ग्रंथ साहिबजी के अन्तिम पृष्ठों में आयी वे पंक्तियां भी देगें जिसमें उन्होंने लाहौर शहर को शाप दिया है।

इस्लाम के सम्बन्ध में इस सबद के पूर्व सबद की अन्तिम पंक्तियां और इस सबद के बाद वाले सबद की प्रथम पंक्तियां उल्लेखनीय हैं ताकि पाठक यह समझ लें कि ग्रंथ साहिबजी का मुख्य उद्देशय जीव को परमात्मा प्राप्त कराना ही है।

ग्रंथ साहिबजी की इस्लाम सम्बन्धी वाणियों का ध्येय तो उस समय के और आज के

भी हिन्दू समाज को इस्लाम की आक्रमणकारी चोटों का सफलतापूर्वक मुकाबला करने के लिये दृढ़ता प्रदान करना है :

"पूर्व सबद अंतिम पंक्तियां :"

"आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥
ऐसै रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥
सुंदरि साइ सरूप विचखाणि कहीऐ सा सिआणी ॥" (722 म 1)

नानक जी कहते हैं कि जो जीव रूपी स्त्री अपने पति रूपी परमेश्वर को प्रिय है वही सुहागिन हैं वही पूर्ण सौभाग्यशालिनी सब की रानी है। प्रभु प्रेम में रंगी और उसके प्रेमानन्द मे डूबी सुहागिन चतुर नारी कहलाती है।

बाद के सबद की प्रथम पंक्तिंया :

"सभि आए हुकमि खसमाहु हुकमि सभ वरतनी "
"सचु साहिबु साचा खेलु सभु हरि धनी ॥" (723 म 1)

हे भाई! हर प्राणी परमात्मा के हुक्म से इस जगत में आए हैं और हर कोई उसके हुक्म से कार्य कर रहे हैं। वह साहब सच्चा है, उसका जगत रूपी खेल सच्चा है, जगत का स्वामी वह हरि सर्वत्र व्याप्त है।

ऊपर दिये सबदों के बीच में आया इस्लाम सम्बन्धी नानक जी का मुख्य सबद इस प्रकार है :

1. "जैसी मैं आवै खसम की वाणी तैसडा करी गिआनु वे लालो ॥
पाप की जंग लै काबलहु धाइआ जोरी मंगे दानु वे लालो ॥
सरमु धरमु दुइ रूपे खलोए कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ॥
काजीआ बामणा की गलि थकी अगदु पडै सैतानु वे लालो ॥
मुसलमानिआ पडहि कतेबा कसट महि करहि खुदाइ वे लालो ॥
जाति सनाती होरि हिदवाणीआ,एहि भी लेखै लाइ वे लालो ॥
खून के सोहिले गावीअहि नानक रत का कुंगू पाइ वे लालो ॥" (722/23 म. 1)

54 0 गुरु नानक देव जी अपने शिष्य "लालो" को सम्बोधित करके कहते हैं कि लालो परमात्मा की प्रेरणा से मेरे हृदय में इस समय जो वाणी उठ रही है वह ज्ञान की वाणी मैं तुम्हें बतला रहा हूँ। अत्याचारी बाबर ने काबुल से अपनी पाप की फौज लेकर हिन्दुस्तान पर धावा किया है, और बलात्कारपूर्वक भारत के शासन की सत्ता रूपी कन्या का दान मांग रहा है। इस समय लाज और धर्म दोनों ही उठ गये हैं और अब धरती पर झूठ का ही साम्राज्य हो गया है।

काजी और ब्राह्मण दोनों ही अपना सत्य खो चुके है, और अब शैतान ही सब कर्मो पर प्रधान हो गया है, या फिर काजी और ब्राह्मण दोनों ही शैतानवत हो गए है।

ऊपर हमने नानक जी के ही शब्दों में देखा कि किस प्रकार तमाम ब्राह्मण आचार भ्रष्ट होकर अन्दर ही अन्दर मुसलमान शासकों से मिल कर अपने स्वार्थ के लिये अत्याचार कर रहे है कलमा पढ़ा हुआ हलाल का मांस खा रहे हैं आदि आदि—काजियों के भ्रष्ट आचरण पर भी ग्रंथ साहिबजी ने भारी प्रहार किया है उदाहरण के लिये "कादी कूड़ु बोलि मल खाइ ॥"

(662 म.1) अर्थात काजी झूठ बोल-बोल कर हराम की कमाई रूपी गंदगी खाता हैं। **"काजी ते कवन कतेब बखानी॥ पढत गुनत ऐसे सभ मारे किन्हूं खबर न जानी ॥"** (477 कबीर जी), अर्थात काजी तू किस प्रकार कुरान की व्याख्या करता है, तू उसे पढ़ समझ कर इस प्रकार से हत्याये करता फिरता है कि किसी को खबर तक नहीं लगती। कष्ट में पडी मुसलमान औरतें भी कुरान पढकर "हाय खुदा" करके दुआएं मांग रही है। हे लालो। ऊँची जाति और नीच जाति वाली सभी हिन्दू स्त्रियां भी भारी कष्ट में हैं। नानक जी कहते है, हे लालो। यहां अब रक्त का केसर छिड़का जायेगा, और भारी रक्तपात के कारण घर-घर मे रूदन-विलाप होगा और सबके कपड़े खून से रंगे होंगे।

2. **"साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि आखु मसोला ॥**
जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वैखै वखि इकेला ॥
काइआ कपडु टुकु टुकु होसी हिन्दुस्तान समालासी बोला ॥
आवनि अठतरै जानि सतानवै होरू भी उठसी वरद का चेला ॥
सच की वाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥" (723 म.1)

बाबर या मुसलमान शासकों के हत्याकाण्ड के फलस्वरूप मनुष्यों की लाशों से पटी नगरी में नानक प्रभु गुण गाते हुए यह आख्यान करते हैं कि इस नाना रूपों और रंगों वाली सृष्टि की रचना करके परमात्मा अपनी इस रंगमयी रचना का समस्त भयावह व्यवहार एक दृष्टा की तरह निर्लिप्त भाव से देख रहा है। वह परमात्मा सत्य स्वरूप है उसका न्याय भी सत्य हैं, और वह सच्चे न्याय का आदेश भी करता है।

और उसी सत्य के आश्रय से नानक सत्य की वाणी इस सत्य सुनाने की बेला या घडी मे "लालों" को सुनाकर कह रहे हैं कि इन घोर अत्याचारी मुगल और पठानों को उनके पाप कर्मो का फल भी वैसा ही मिलेगा, और उनके देह रूपी वस्त्र टुकड़े-टुकड़े होकर नष्ट हो जायेगें। और यह हिन्दुस्तान "समालसी" अर्थात समरस होकर एक महान राष्ट्र के रूप मे बोलेगा, उठा खड़ा होगा। और लालो! यह सब आने वाले संवतसरों में घटित होगा और हिन्दुस्तान में वीर पुरुष फिर उठ खड़ें होगें।

उपरोक्त सबद की एक पंक्ति का यहां विश्लेषण आवश्यक है : यह पंक्ति है .

"आवनि अठतरै जानि सतानवै होरू भी उठसी मरद का चेला ॥"

इसका अर्थ कई विद्वान इस प्रकार देते हैं मुगल संवत 1578 में आयेंगें और 1597 मे हिन्दुस्तान से चले जायेगे। तब एक मरद का चेला (शेरशाह सूरी) उठा खड़ा होगा, जिसने हुमायूं को हरा कर हिन्दुस्तान से बाहर निकाल दिया था। पर मेरे विचार से इस प्रकार का अर्थ सर्वथा तथ्य से परे और अमान्य है। इसे मानने का अर्थ होगा कि गुरु नानक जी और अन्य सिख गुरुओं को केवल "मुगलों" को छोड़ कर अन्य अरब और पठान शासकों द्वारा आचरित इस्लाम मान्य था, और उनकी दृष्टि में हुमायूं को भारत के बाहर खदेड़ देने वाला शेरशाह सूरी भारत का सबसे बड़ा सपूत था।

54 1 किन्तु जैसा कि हम अभी तक दिये और आगे के तमाम सबदों से देखगें सिक्ख गुरुओं ने बारबार इस्लाम को धिक्कारा हे और उसकी निन्दा की है फिर ग्रय साहिबजी में

वर्णित संत नाम देव जी और संत कबीर पर हुए पठान शासकों के अत्याचार और इन दोनों महान संतों को उनके मारने के प्रयत्न सम्बन्धी वाणी व्यर्थ हो जायेगी। फिर तो नामदेव जी (ई. 1270 से ई. 1350) कबीर जी (ई. 1398 से ई. 1485) और संत रविदास जी (ई. 1384 से ई. 1514) की ग्रंथ साहिबजी में संकलित इस्लाम विरोधी वाणी व्यर्थ हो जायेगी। ये सभी संत बाबर के आक्रमण के बहुत पहले हो चुके थे।

ऊपर के सबद में गुरु नानक जी ने जो भारत में इस्लाम के भावी पराभव की जो घोषणा की थी वह उनके त्रिकालदर्शी स्वरूप के अनुरूप थी। कोई यदि यह कहना चाहे कि गुरु नानक जी की योग दृष्टि केवल 1578 से 1597 तक के मुगलों के प्रथम चक्र की अल्पकालीन सत्ता तक ही सीमित थी, तो यह कहना सर्वथा अनुचित होगा। सभी जानते हे, कि शेरशाह सूरी से हार के कुछ वर्ष बाद ही हुमायूं विजेता के रूप में ईरान से लौटा और पठानों को बुरी तरह पराजित कर मुगलशासन की पुनः स्थापना की, जिसका शासनकाल लगभग अगले 200 वर्ष तक चला। जिन गुरु नानक देव जी ने जो भगवान राम के बड़ें पुत्र कुश के वंशज माने जाते हैं, त्रेतायुग में यानी लगभग 10 लाख वर्ष पहले अपने कुल भाई भगवान राम के छोटे पुत्र लव के वंशजों से राज ग्रहण करते समय उनको यह वर दिया था कि जब हम कलियुग में (यानी त्रेतायुग से लगभग 10 लाख साल बाद) नानक नाम से आयेगें तो चौथी गुरु गद्दी तुम लोगों के अधीन कर देगें, उन्हीं नानक जी के बारे में कोई यह कहे कि वो मुगल शासकों का भविष्य केवल 19 साल आगे तक देख पाये थे, तो यह बडी हास्यासपद बात होगी। सो "आवनि अठतरै जानि सतानवै होरू भी उठसी मरद का चेला" इस पक्ति में गुरु नानक जी ने केवल "78" और "97" ही के अंकों का प्रयोग किया है, ये किस शताब्दी से सम्बन्ध रखते हैं, यह नहीं बतलाया है। इसलिए इन अंकों को केवल आने वाले सवत्सर काल के रूप में ही मानना चाहिए। इसी प्रकार मरद का चेला इस सबदों को शेरशाह सूरी का प्रतीक मानना एक तथ्य रहित कल्पना मात्र है। इस सम्पूर्ण पंक्तिका सही अर्थ यही घटित होता है कि गुरु नानक जी यह भविष्यवाणी कर रहे है कि आने वाले काल में वीर पुरुषों के हाथों इस्लाम का हिन्दुस्तान से परभव होगा। और इतिहास साक्षी है कि ऐसा हुआ भी, और हिन्दू समाज के (जिसमें सिक्ख समाज के बलिदान भी शमिल हैं) अकथ बलिदानों और शौर्य से इस्लामिक सत्ता का अन्त हुआ। और इस्लाम के पराभव का यह चक्र अभी भी चल रहा है, समाप्त नही हुआ।

नानक जी के समय के हिन्दुस्तान के भौगोलिक क्षेत्र के तीन हिस्से में बंटा इस्लाम अपने भारी पराभव के बाद भी आज एक समर्थ शत्रु के समान हिन्दू समाज से स्थायी शत्रुता बाधे हुए है। और आज भी अवसर मिलने पर वह हिन्दू समाज को गहरी से गहरी चोट पहुचाने में नहीं चूकता। देखना है कि इन त्रिकालदर्शी योगी सतगुरु नानक जी की इस्लाम सम्बन्धी भविष्य वाणी का भावी स्वरूप क्या होगा।

कलियुग के परिवेश में हिन्दुस्तान पर छाये इस्लाम के कुप्रभाव का वर्णन करते हुए आगे चलकर नानक जी कहते है

"कलि कलवाली सरा निबेडी काजी क्रिसना होआ ॥
बाणी ब्रह्मा बेदु अथरवणु करणी कीरति लहिआ ॥
कलि परवाणु कतेब कुराणु ॥ पोथी पंडित रहे पुंराण ॥
नानक नाउ भइआ रहमाणु ॥ करि करता तू सको जाणु ॥" (903 म.1)

54 2 नानक जी कहते है कि अब समाज का सारा व्यवहार मुसलमानी शरीयत के अनुसार निपटाया जाता है और नीले वस्त्र पहनकर काजी ही कृष्ण बना बैठा है, और ब्रह्मा जी की वाणी अथर्ववेद जो कलियुग में प्रमाण होनी चाहिये थी उसकी जगह इस्लामिक करनी ही सब पर छाई है। अब इस घोर कलियुग में कुरान ही प्रमाणिक ग्रंथ बन गया है। और पोथी (गुरु अर्जुन देव जी द्वारा 1604 में ग्रंथ साहिबजी के सम्पादन के पूर्व गुरुओं की वाणी को पोथी कहा जाता था) पण्डित या ब्राह्मण और पुराण अमान्य हो गए है। नानक जी कहते हैं कि अब परमात्मा का नाम "रहमान" पड़ गया हैं। किन्तु नानक जी यहां समझाते हुए कहते हैं कि हे भाई! समझ ले कि समस्त सृष्टि का रचने वाला एक ही कर्ता है–इस अन्तिम पंक्ति के माध्यम से नानक जी इस्लाम की भेदभाव वाली दृष्टि को जिसके द्वारा सारी सृष्टि मानो "ईमानवाले" और "काफ़िरों" में बटी हुई है, उसको एकत्व का उपदेशा दे रहे है।

और इस्लाम के कलियुगी प्रभाव का चित्रण करते हुए नानक जी कहते है :

"जो को सतु करे सो छीजै तप घरि तपु न होई ॥
जो को नाउ लाए बदनामी कलि के लखण एई ॥" (902 म 1)

अर्थात, इस काल में जो सत्कर्म करता है वह अपमानित होता है, तप करने वालों के घर में तप पूरा नहीं होने दिया जाता है, और जो कोई हरि का नाम जपता है उसे बदनामी या सजा मिलती है, नानक जी कहते हैं ये कलियुग के लक्षण है। और हिन्दू समाज को धीरज बधाते हुए नानक जी कहते है :

"आखा गुंगा कलि आईए ॥
तिहु जुग केरा रहिआ तपावसु जे गुण देहि न पाईऐ ॥" (903 म 1)

हे भाई। हरि के ही गुण गा क्योंकि कलियुग आ गया है और पिछले तीनों युगों का न्याय समाप्त हो गया है, अब हरि के जप से ही कलियुग के इन भयानक कुप्रभावो से छुटकारा मिल सकता है।

इस प्रकार हमने नानक जी की इन वाणियों में देखा कि जहाँ मुस्लिम प्रशासन मे कुरान, शरियत, और काजी सर्वोपरि हो गए हैं, और वेद, पुराण, ब्राह्मणों के आचार सत्य और तप आदि का पालन दुष्कर हो गया है, केवल हरि नाम ही हिन्दू समाज की रक्षा का आश्रय है, इसी हरि नाम जप से इसका निस्तार है।

इस्लाम के अत्याचार सम्बन्धी इस उप-अध्याय में हम गुरु नानक देव जी द्वारा दर्शाये इस्लाम के अत्याचार और देश और धर्म पर उसके बढ़ते प्रभाव और दबाव से सम्बन्धी वाणियां हम दे रहे है। इन वाणिंयों में नानक देव जी की वे वाणियां भी शामिल हैं जिनमे उन्होंने इस्लाम के पराभव को अवशयम्भावी बतलाया है और वे वाणियाँ भी जिनमें उन्होने के इस भयावह समय में रक्षा का उपाय एक मात्र हरि नाम ही है

गुरु नानक जी की वाणी में इस्लाम के बढ़ते प्रभाव और अत्याचारो के प्रति जिस गहन पीड़ा और टीहन की अभिव्यक्ति होती हे, उससे सम्बन्धित हम उनका ग्रंथ साहिबजी से आखिरी पद उध त कर रहे है :

"आदि पुरख कउ अलहु कहीऐ सेखां आई बारी ॥
देवल देवतिया करू लागा ऐसी कीरति चाली ॥
कूजा बांग निवाज मुसला नील रूप बनवारी ॥
घरि घरि मीआ समना जीआ बोली अवर तुमारी ॥
जे तू मीर महीपति साहिब कुदरति कउण हमारी ॥
चारे कुंट सलामु करहिगे घरि-घरि सिफति तुम्हारी ॥
तीरथ सिंम्रिति पुंन दान किछु लाहा मिलै दिहाड़ी ॥
नानक नामु मिलै वडिआई मेका घडी सम्हाली ॥" (1191 म 1)

54 3 गुरु नानक जी कहते है कि अब आदि पुरुष यानी पारब्रह्म परमात्मा को अल्लाह कहकर सम्बोधन किया जाता है, और मुस्लिम शेखों की बारी आ गई है अर्थात उनका ही हर जगह बोलबाला है। अब मन्दिरों और देवालयों पर भी कर लगाने का रियाज चल पड़ा है। हे बनवारी। हे कृष्ण। अब सब लोग उजू करने के लिये हाथों में लोटा रखते हैं, मुसल्ले पर बैठ कर नमाज़ पढ़ते हैं, और नीले वस्त्र धारण करते है। अब घर-घर में सबकों "मियां भिया" कह कर बुलाते हैं, हे प्रभु अब तुम्हारी बोली भी बदल गई है।

हे प्रभु जब तूने इस्लाम वालों को ही महीपति यानी शासक बना दिया तो अब मेरा कौन जोर चल सकता है। किन्तु मैं सब ओर से तुम्हें ही प्रणाम करूंगा और तुम्हारे ही गुणगान करूगा। गुरु नानक जी कहते हैं कि इस घोर विपदा के काल में केवल एक घड़ी हरि नाम स्मरण से वही फल मिलता है जो पिछले युगों में तीर्थ यात्राओं, स्मृति-शासत्रों के अध्ययन और दान पुण्य से मिलता था।

ऊपर दिये गये पदों से हम इस्लाम के कारण नानक जी के हृदय में उत्पन्न हुई तीव्र पीडा और रोष का अनुमान लगा सकते हैं, और साथ ही इस आपदकाल में हम उनके असीम धैर्य, हिन्दू धर्म के पुनः उद्भव के प्रति उनका अटूट विशवास, और परमात्मा में उनकी अडिग भक्ति का भी दिग्दर्शन कर सकते है।

गुरु अमर दासजी की वाणी में भी नानक जी की वाणी की तरह इस्लाम के प्रति क्षोभ मिलता है—

"काजी होइ के बहै निआइ ॥ फेरे तसबी करे खुदाई ॥
बढ़ी लै कै हकु गवाए ॥ जे को पूछै ता पाडि सुणाए ॥"
तुरक मंत्रु कनि रिदै समाहि ॥ लोक मुहावहि चाडी खाहि ॥
मुसलमानु करे बडि आई ॥ विणु गुर पीरै को थाइ न पाई ॥
राहु दसाइ ओथै को जाई ॥ करनी बाझहु भिसति न पाई ॥ (951/52 म 3)

मुसलमान न्याय के लिये काजी के आसन पर बैठ्ता है वह हाथ में माला फेरता है और खुदा-खुदा करता है परन्तु वह रिश्वत लेकर सच्चाई को गवाँ देता है यदि कोई उससे

न्याय की बात पूछता है तो उसे कोई न कोई कलमा पढ़ कर सुना देता है और कुछ हिन्दू तुरकों का मंत्र यानी कलमा कानों और हृदय में इसलिये बसाते हैं ताकि वे लोगों को लूट सके और ऊपर-चुगली खा सकें।

मुसलमान अपने धर्म की बड़ाई करता है किन्तु गुरु रूपी पीर से ज्ञान ग्रहण किये बिना खुदा के दरबार में स्वीकृत नहीं हो सकता। सही राह बतला भी दी जाय तो कोई बिरला ही वहां पहुंचता है, बिना शुभ कर्मो के किसी को स्वर्ग की प्राप्ति नहीं हो सकती।

अपनी इस आखिरी पंक्तियों में गुरु अमर दास जी कुरान शरीफ़ के दो मुख्य सिद्धांतो की आलोचना कर रहे है। पहला यह कि गुरु के बिना खुदा की प्राप्ति नहीं हो सकती जबकि इस्लाम में गुरु की कोई कल्पना नहीं है, और दूसरा यह कि शुभ कर्मो के बिना बहिशत या स्वर्ग में नहीं जाया जा सकता, जबकि कुरान शरीफ़ के अनुसार अच्छे काम के साथ-साथ यह अनिवार्य है कि वह व्यक्ति ईमानवाला भी हो। जैसा कि हम ऊपर कई स्थानों पर बतला चुके है, जिसने अल्लाह और उसके पैमम्बर हजरत मुहम्मद को माना, मुहम्मद साहब के माध्यम से भेजी गई अल्लाह की आयतों को माना, और आखिरत यानी कयामत को माना, वह ईमानवाला है और केवल वह ही बहिशत का अधिकारी है।

इस्लाम के अत्याचार सम्बन्धी ग्रंथ साहिबजी की वाणी की चर्चा का समापन हम गुरु नानक जी की ही वाणी से कर रहे है। पृष्ठ 1412 पर आई यह वाणी ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम सम्बन्धी अन्तिम वाणी है। भगवत गुणगान सम्बन्धी वाणी के मध्य यह अकस्मात प्रकट हुई इस्लाम सम्बन्धी वाणी स्पष्ट शब्दों में अत्याचार के प्रतीक लाहौर शहर को अभिशापित.कर रही है :

"लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु ॥" (1412 म 1)

अर्थ स्पष्ट है : सवा पहर विष बरसाने वाले लाहौर शहर पर कहर गिरे, बज्रपात हो। दूसरे शब्दों में भयानक विष के समान यह लाहौर नगर बज्रपात से नष्ट होगा। और इस पद की अगली पंक्ति है :

"लाहौर सहरु अम्रित सरु सिफती दा घरु ॥"

अर्थात फिर वही लाहौर शहर अमृत स्वरूप होकर परमात्मा की पूजा का घर बन जायेगा।

❏

ग्रंथ साहिबजी में इस्लामी सिद्धांतों का विवेचन

54 4 इस शीर्षक के अन्तर्गत ग्रंथ साहिबजी में आई उन वाणियों को दे रहे हैं जिनमे इस्लाम के मुख्य बिन्दुओं का, मुख्य आयामों का, वेदांत के परिपेक्ष्य में विवेचन किया गया है, और इस प्रकार इस्लामी सिद्धांतों को एक सार्वभौम स्वरूप प्रदान कर दोनों में समरसता लाने का एक बहुत ही गम्भीर प्रयास किया गया है। परन्तु इस प्रयास का असफल होना अवश्यम्भावी था। ऊपर कुरान शरीफ़ के विस्तृत अध्ययन में हमने इस्लाम के मूल सिद्धातो को उनकी पूरी गहराई में निरखा और परखा है। इन इस्लामी सिद्धांतों में परिवर्तन असम्भव है—इनमें परिवर्तन का अर्थ है इस्लाम में ही, कुरान शरीफ़ में ही मूल परिवर्तन। इनमें सिक्ख गुरुओं के साथ-साथ कबीर जी की वाणी भी प्रमुखता से शामिल है। इस्लाम की कट्टरता को देखते हुए इस प्रकार का खुला प्रयत्न अपने में ही एक बड़े साहस और जोखिम का काम था। आइये देखें इस विषय पर ग्रंथ साहिबजी क्या कहते हैं :

"सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु॥" (5 जपजी पौड़ी 22)

गुरु नानक जी कहते है कि "कतेब" यानी कुरान आदि का कहना कि 18000 दुनिया है। परन्तु सही बात यह है कि इन सब सृष्टियों के मूल में एक ही "असल धातु" यानी एक ही परम सत्य निहित है, जिसके कारण यह सब सृष्टियां ऊपर से अलग-अलग दिखती हुई भी मूलतः अभिन्न है।

"अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सचि की आब नित देहि पाणी ॥
होई किरसाणु ईमान जमाई लै भिसतु दोजकु मूडे एवं जाणी ॥
मतु जाणसहि गली पाइआ ॥
माल कै माणै रूपकी सोभा इतु विधि जनमु गवाइआ ॥" (23/24 म.1)

गुरु नानक जी कहते हैं कि हे मुल्ला! तू अपने शरीर को शुभ कर्मों की धरती बना और उसमें गुरु के दिये हुए सबद को बीज बनाकर डाल दे। और इस खेती में सत्य की नदी का जल सींच। इस प्रकार आध्यात्म के क्षेत्र का किसान बन कर तू ईमान की खेती उगा। हे मूढ बहिश्त (स्वर्ग) और दोजख (नरक) दोनों ही शुभ और अशुभ कर्मों के अधीन है। तू यह मत समझ कि परमात्मा की प्राप्ति केवल बातों से हो जाती है। तूने व्यर्थ ही धन और रूप के अभिमान में अपना जीवन गवां दिया है।

हमने ऊपर कुरान शरीफ़ के प्रमाण से यह सिद्ध किया है कि इस्लाम में न तो गुरु की ही कल्पना है और न ही कर्म विधान की ही। इस प्रकार गुरु नानक जी के उपरोक्त दोनो ही उपदेश इस्लाम में मूल परिवर्तन के संदेश वाहक है।

"तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मति कटि जाई ॥
नानक आखै राहि पै चलणा मालु धनु किसक संजिआही ॥" 24 म 1

नानक जी कहते है कि अरे मुल्ला चाहे तुमने तीस रोजे रखे हों या हर रोज पाचों

नमाजों को अपना साथी बनाया हो, पर याद रख कि यदि तू माया में आसक्त है प्रभु में नही, तो जिसका नाम तुमने "शैतान" रखा है वह तुम्हारी नमाज और रोजों के फल को कहीं काट नहीं दे। नानक जी पूछते है कि जब तुम्हें अन्तः मृत्यु के मार्ग पर चलना है तो तूने धन माल किस लिये जमा किये हैं, यह धन माल तो तुम्हारे साथ नहीं चलेगें।

कुरान शरीफ़ के अध्ययन में हमने यह भी दर्शाया है कि इस्लाम में लक्ष्य अल्लाह की प्राप्ति नहीं है, "केवल स्वर्ग प्राप्ति ही परम लक्ष्य है इसलिये इस्लाम में या कुरान शरीफ मे (वैराग्य) की कोई कल्पान नहीं है।"

"सोई मउला जिनि जगु मउलिया, हरिआ कीआ संसारो ॥
आब खाकु जिनि बंधि रहाई धंनु सिरजणहारों ॥
मरणा मुला मरणा ॥ भी करतहु डरणा ॥
ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई ॥
जे बहेतेरा पडिआ होवहि को रहै न भरिऐ पाई ॥
सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारों ॥
है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारों ॥" (24 म. 1)

गुरु नानक जी कहते है कि सच्चा मुल्ला वह है जो सारे जगत को प्रफुल्लित करताहै, सारे जगत को हरा भरा बनाता है। वह परमात्मा धन्य है जिसने पंचभूतों के विरोधी तत्वो (अग्नि, जल आदि) को भी एक सूत्र में बांधकर नियम-बद्ध रख है। किन्तु हे मुल्ला। तुझको निश्चित ही मरना है, इसलिये बुरी करनी करते समय तू परमात्मा से डर।

तुम सच्चे मुल्ला और सच्चे काजी तभी बन सकते हो जब तुम खुदा के सच्चे स्वरूपो, उसके सच्चे नाम को जान लो। तुम कितना ही पढ़ लो मरने से नहीं बच सकते, वैसे ही जैसे पाई-पनगडी जिसके नीचे छेद होता है जब उसमें पानी भर जाता है, वह स्वयं जल में डूब जाती है।

पाठक यहां ध्यान दे कि नानक जी काजी और मुल्लाओं को कह रहे हैं कि वे खुदा को जाने। जैसा कि हम ऊपर विस्तार से बतला चुके हैं, कि कुरान शरीफ़ में अल्लाह को जानने का नहीं, मानने का ही आदेश है। रूह द्वारा अल्लाह को जानने की कोई भी कल्पान कुरान शरीफ़ में नहीं है। केवल वेद, शास्त्रों में और ग्रंथ साहिबजी और अन्य हिन्दू संतो की वाणी में ही जीव को पग-पग पर परमात्मा को जानने का उपदेश दिया गया हैं, और यह बतलाया गयाहै कि परमात्मा को जाने बिना भव सागर को पार नहीं किया जा सकता है।

नानक जी कहते हैं कि असली काजी वही है, जिसने अहंभाव को त्यागकर, शरीर मे आत्मभव को छोड़कर परमात्मा के नाम को ही एकमात्र आधार बना लिया है, उस परमात्मा के नाम को जो जन्म-मरन से परे है तीनों काल में सर्वदा विद्यमान है, और समस्त सृष्टि की रचियता है।

"पंज बखत निवाज गुजारहि पडहि कतेब कुराणा ॥
नानक आखे गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥" (24 म.1)

नानक जी कहते हैं कि हे मुल्ला काजी। तू चाहे पांच वक्त नमाज पढ़ किन्तु जब तक तूने शरीर के अहभाव से हटकर नाम को आधार नहीं बनाया और को नहीं

जाना तो सब व्यर्थ है। हे मुल्ला! तुझे कब्र बुला रही है और कह रही है कि अब तेरा खाना पीना समाप्त हो गया है, अर्थात अब तेरी मृत्यु निकट है।

54 5 कुरान शरीफ़ में वर्णित अल्लाह के लक्षणों को हमने इस लेख के आरम्भ में विस्तार से देखा है। कुरान शरीफ़ में अल्लाह के प्रमुख लक्षण जो बार-बार विभिन्न आयतों में आते है, इस प्राकर है: "सारे संसार का पालनहार, बेहद मेहरबान, जजा (अन्तिम न्याय या किमायत) के दिन का मालिक, बेहद समाईवाला और सब कुछ बख्सनेवाला, हर चीज पर काबू रखने वाला, सजा देने में तेज, जल्द हिसाब लेने वाला, सख्त मार देने वाला, बड़ा माफ करने वाला, काफ़िरों का दुश्मन, ईमानवालों का दोस्त, आदि आदि। परन्तु कुरान शरीफ़ वार्णित अल्लाह के लक्षणों में यह कहीं भी नहीं बतलाया गया है कि अल्लाह सर्वव्यापी है, या घट-घट वासी है, या जड़ चेतनमयी इस समस्त सृष्टि में अंतरयामी रूप से व्याप्त है, या वह सत्य स्वरूप है और सभी प्राणियों में बिना भेदभाव के समभाव से बिराज रहा है, या वो सभी प्राणियों का मित्र और उनका परम कल्याण करने वाला है या यह समस्त जड-चेतनमयी सृष्टि मे परमात्मा रूप में स्थित है। उधर ग्रथ साहिबजी के अनुसार वह परमात्मा जड़-चेतन और कीट पंतग में अन्तर्यामी रूप से बिराज रहा है, वह सत्य स्वरूप, सभी प्राणियों का परम कल्याण करनेवाला है। ग्रंथ साहिबजी के अनुसार सभी जीव प्रेम और भक्ति के द्वारा उस परमात्मा को प्राप्त कर सकते है। चूंकि ग्रंथ साहिबजी के अनुसार परमात्मा सभी प्राणियो मे अन्तरयामी रूप से विराज रहा है, इसलिए वहां कुरान शरीफ़ वार्णित काफ़िर शब्द की कोई भी कल्पना नहीं है।

उधर कुरान शरीफ़ में एक बात बार-बार आती है कि बिना ईमानवाला बने कोई भी व्यक्ति फिर चाहे वह कितने ही अच्छे काम करनेवाला क्यों न हो अल्लाह की रहमत और बरकत नहीं पा सकता। ऐसा व्यक्ति अल्लाह की निगाह में काफ़िर है, वह अल्लाह का घोर शत्रु है, और इसलिए उसे इस लोक में अल्लहा के प्रकोप के कारण भारी सजा मिलनी है और परलोक में सदा रहने वाला दुखदायी नरक।

अल्लाह सम्बन्धी उपरोक्त बातें हमने यहाँ इसलिये दोहराई हैं ताकि हम ग्रथ साहिबजी वर्णित इस्लाम सम्बन्धी वाणी के मर्म को सही परिप्रेक्ष्य में समझ सकें।

नानक जी की वाणी में हम अब इस्लाम सम्बन्धी चर्चा पुनः आगे बढ़ाते हैं :

"बाबा अलहु अगम अपारू॥ पाकी नाई पाक थाइ सचा परवरदिगारू" (53 म 1)

हे बाबा! अल्लाह अगम और अपार है वह सत्य स्वरूप है और सभी का पालन-पोषण करने वाला है। इस पद में नानक जी निश्चित ही अल्लाह के लक्षणों को कुरान वर्णित लक्षणों से परे वेदांत वर्णित ब्रह्म के लक्षणों की व्यापकता प्रदान कर रहे हैं।

"पीर पैकामर सालक सादक सहुदे और सहीद॥
सेख मसाइक काजो मुला दि दरवेस रसीद॥
बरकाते तिन कउ अगली परदे रहने दरूद॥" (53 म.1)

इस पद में नानक जी मुस्लिम समाज में सम्माननीय और अल्लाह के नजदीकी माने जाने वाले धर्मिक व्यक्तियों जैसे पीर पैगम्बर शेख फकीर काजी मुल्ला दरवेश आदि के बारे

मे कहते हैं कि इनमें से कोई अल्लाह के गुणों को नहीं पा सकता। केवल उन्हीं को उसकी कृपा मिलती है जो उसकी भक्ति में लगे हैं।

इस पद में नानक जी ने पैगम्बर तक को परमात्मा के गुणों से अनजान बतलाकर परमात्मा की भक्ति को ही प्रधानता देते हुए मुसलमानों को उसे ही अपनाने की सलाह दी है। इसमें नानक जी ने कुरान वर्णित ईमानवाला बनने के सर्वोच्च इस्लामी सिद्धांत को कोई महत्व नही दिया है।

जैसा कि हमने कुरान शरीफ़ के कयामत वाले अध्याय में देखा कि कयामत के दिन सभी मुर्दे अपनी-अपनी कब्रों से फिर उठाये जायेगे और वे अल्लाह के सामने जजा (अन्तिम न्याय) के लिये पेश होगे। उनमें जो ईमान लाये वे सदा रहने वाले बहिश्त या स्वर्ग में भेजें जायेगे, और ईमान न लाने वाले काफ़िर सदा रहने वाले दोजख या नरक में। कुरान शरीफ में ग्रंथ साहिबजी वर्णित सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय की कोई कल्पना नहीं। ग्रंथ साहिबजी के अनुसार महाप्रलय में स्वर्ग-नरक सहित समस्त ब्रह्मांड अपने कारण में (अपनी पुन उत्पत्तिकाल के समय तक) लीन हो जायेगें, केवल परब्रह्म परमात्मा ही अपने सत्य स्वरूप मे सदैव स्थित रहता है। निम्न पद में गुरु नानक जी "अल्लाह" को परब्रह्म के इसी स्वरूप मे प्रस्तुत कर रहें हैं, और समस्त सृष्टि कों, पंच महाभूतों, सूर्य, चन्द्र, और तारागण को नशवर बतला रहे हैं, और इस प्रकार वह इस्लाम को वेदांत के एक नये कलेवर में प्रस्तुत कर रहे है

अलाहु अलखु अगंम कादरू करणहारू करीमू ॥ सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एक रहीमु ॥ मुकामु तिसनो आखीऐ जिसु सिसि न होवी लेखु ॥ असमानु धरती चलसी मुकामु एही एकु॥ दिन रवि चलै निसि ससि तारिका लख पलोइ ॥ मुकामु ओही एकु ॥ है नानका सचु बुगोइ ॥

(64 म.1)

"मुकामु ओही एकु" इन शब्दों में नानक जी स्पष्टतम रूप से परमात्मा की प्राप्ति को ही परम लक्ष्य बतला रहे हैं। यह सिद्धांत कुरान शरीफ़ के लक्ष्य से बिलकुल भिन्न है। नानक जी ने यहां पर यह लक्ष्य परमात्मा को "अल्लाह" नाम करके दिया है।

कुरान शरीफ के मूल शब्दों को एक व्यापक वेदांतिक स्वरूप प्रदान करते हुए नानक जी कहते है—

"मिहर मसीति सिदुक मुसला हकु हलालु कुराणु ॥ सरम सुनति सीलु रोजा होउ मुसलमाणु ॥ करणी कावा सचु पीरू कलमा करम निवाज ॥ तसवी सा विस भावसी नानक रखै लाज ॥"

(140/41 म.1)

हे प्रिय! तू दया की मस्जिद में बैठ, श्रद्धा की चटाई बिछा और न्याय और हलाल का कुरान पढो। तुम लज्जा को सुन्नत मानों, शील स्वभाव का रोजा रखों, जब इस प्रकार का जीवन बनाओं तब मुसलमान हो सकते हो। हे प्रिय! तुभ-करणी को "काबा" बनाओ, सच्चाई को पीर मान और शुभ कर्मों को ही कलमा तथा नमाज बनाओं। परमात्म इच्छा को माला बना। नानक जी कहते हैं कि ऐसे मुसलमान की लाज स्वयं खुदा रखता है।

इस वाणी का एक-एक शब्द इस्लाम के बाह्य स्वरूप को एक प्रबल आन्तरिक और स्वरूप प्रदान करने का आवाहन करता है

2 "पंजि निवाजा बखत पंजि पंजे नाउ॥ पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ॥
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ॥ करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ॥
नानक जेते कूडिआर कूडै कूडी पाइ॥" (141 म 1)

इस वाणी में नानक जी इस्लाम में प्रतिदिन की जाने पांचों नमाजों को एक नया अध्यात्मिक कलेवर प्रदान कर रहे है। इस्लाम में इन पाचों नमाजों के अलग-अलग नाम है · नमाजे सुबह, 2. नमाजे पेशीन, 3. नमाज दीगर, 4. नमाजे शम और 5. नमाजे खुफतन।

नानक जी कहते है असली नमाजें इस प्रकार हैं : पहली नमाज सत्य बोलने की है, दूसरी हक की कमाई की, तीसरी नमाज खुदा से सबके लिये भला मांगने की, चौथी नमाज साफ नीयत रखने की है और पांचवी नमाज परमात्मा के गुण गान करने की है। नानक जी कहते हैं कि इन पांच नमाजों के साथ जब ऊँची करणी का कलमा भी पढ़े तभी कोई अपने आपको मुसलमान कहलवा सकता हैं। नानक जी कहते है इस प्रकार की नमाजों से रहित जो प्राणी है वे सब झूठे हैं और झूठ से केवल झूठ की ही प्रतिष्ठा होती है।

54 6 यह नानक जी एक बहुत बड़ी निर्भयता भरी वाणी है, जो अपने में इस्लाम के प्रति एक चुनौती भी संजोए है। वे कहते हैं कि तीसरी नमाज खुदा से सब के लिये भला मागने की है। परन्तु कुरान शरीफ में तो सबके भले की कोई कल्पना ही नहीं है। वहाँ तो, जो अल्लाह पर पूरा ईमान न लाये तो वे सब काफ़िर, मुन्किर, मुनाफिक या मुशरिक हैं, और इस प्रकार अल्लाह के कोप भाजन है। जैसा कि हमने कुरान शरीफ़ के विवेचन सम्बन्धी आयतो मे देखा, अल्लाह ने इन काफ़िरों के लिये हर कदम पर (इस लोक और परलोक दोनों में ही) भारी दण्ड की व्यवस्था की है, उन्हें कत्ल करने का हुक्म दिया है। और यही नहीं नानक जी कहते है कि ऊँचे कर्मों को, सबके लिये कल्याणकारी कर्मों को तू कलमा मान। तो इस्लाम मे तो ऊँचें कर्मों की अपने में कोई स्वतन्त्र सत्ता ही नहीं है, और न ही ईमान लाये बिना शुभ कार्यो का कोई फल ही है। सो नानक जी की ये दोनों ही बातें इस्लाम के मूल सिद्धांतो के विपरीत है। और यह स्थिति होते हुए भी नानक जी कहते हैं कि जो इन सब बातों को माने वही अपने को मुसलमान कहलवा सकता है, और जिनमें ये बातें नहीं हैं, या जो इन बातो को नही मानते वे झूठे या असत्यवादी हैं, और इन झूठों से झूठ ही बढ़ेगा।

मुसलमान शब्द को पुनः परिभाषित करते हुए नानक जी कहते हैं :

"मुसलमाणु कहावणु मुसकलु जा होइ ता मुसलमाणु कहावै॥
अवलि अउलि दीनु करि मिठा मसकलमाना मालु मुसावै॥
होइ मुसलिमु दीन मुहाणै मरन जीवण का भरमु चुकावै॥
रब की रजाई मंने सिर उपरि करता मंने आपु गवावै॥
तउ नानक सरब जीआ मिहरंमति होइ त मुसलमाणु कहावै॥" (141 म. 1)

नानक जी कहते हैं कि मुसलमान कहलाना मुशिकल काम है, जिसमें ये गुण हों वही मुसलमान कहला सकता है। सबसे पहले वह संतों के धर्म को मीठा करके माने, अर्थात संतो के मार्ग पर चलें दूसरे अपने धन को गरीबों पर लुटा दें तीसरी अपने अहंकार को मूल से नष्ट कर दें फिर जन्म मरण के भ्रम को समाप्त कर दे तभी वह सच्चा मुसलमान बने सर्व

व्यापी परमात्मा को सर्वोपरि माने, और परमात्मा के सभी जीवों का कल्याण करें, उन पर दया करे, तभी ऐसा व्यक्ति अपने को मुसलमान कहावे।

पर कुरान शरीफ़ में तो पैगम्बर साहब द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने का आदेश है, संतों के धर्म को मानने की तो वहां कोई कल्पना नहीं हैं "जन्म और मरण" अज्ञानता से उत्पन्न केवल भ्रम मात्र हैं ये तात्विक विचार तो ग्रंथ साहिबजी के हैं, वेद, शास्त्रों के है– कुरान शरीफ़ में अल्लाह को सर्वव्यापी या घट-घट वासी दर्शाने वाली कोई आयत नही है, जबकि नानक जी सर्वव्यापी परमात्मा को मानने वाले को ही मुसलमान घोषित करते हैं। और न ही कुरान शरीफ़ में मनुष्य जाति को छोड़कर अन्य प्राणियों में आत्मा की सत्ता ही है, तो इस्लाम में उन पर मेहरबानी या दया करने को कोई प्रश्न ही नहीं उठता। अन्य सब प्राणी तो कुरान शरीफ़ के अनुसार अल्लाह ने इंसान के भोग के लिये बनाए है। नानकजी द्वारा एक सच्चे मुसलमान में उपरोक्त गुणों की अनिवार्यता बतलाने का एक ही उद्देश्य हो सकता था, और वह यह कि वो इस्लाम को भी एक सार्वभौम धर्म के धरातल पर लाना चाहते थे। पर शायद वो जानते थे कि यह कार्य अत्यन्त कठिन है। इसलिये उन्होंने अपनी वाणी के शुरू मे ही "मुसलमान कहावण्द मुसकल", शब्दों का प्रयोग किया।

"संत कबीर जी कहते हैं कि हे काजी! न्याय करना ही नमाज पढ़ना है, मन और इन्द्रियों से परे अल्लाह को जानना ही कलमा पढ़ना है, कामादि पांच विकारों को अपने वश मे करके रखना ही मुसल्ला यानी बैठने का आसन है, तभी तू सच्चे धर्म को पहचान सकेगा.

"निवाज सोई जो निआउ विचारै कलमा अकलहि जानै ॥
पाचहु मूसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥" (480 कबीर जी)

यहां भी, ग्रंथ साहिब ही कबीर जी की वाणी के माध्यम से काजी को न्यायवान बनाकर अल्लाह और सच्चे दीन या धर्म को पहचानने का उपदेश दे रहे हैं, पर जैसा हम बार-बार कहते आये हैं कि कुरान शरीफ़ में इन बातों की कोई कल्पना नहीं है।

कबीर जी यहां इस्लामवालों को स्पष्टतम शब्दों में उपदेश देते हुए कहते है :

"अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी ॥
हिंदू तुरक दुहू महि एकै कहै कबीर पुकारी ॥" (483 कबीर जी)

संत कबीर जी कहते हैं, कि अल्लाह सब प्राणियों के हृदय में वास करता है। यह बात तू अपनी बुद्धि से अच्छी प्रकार से सोच समझ ले। हिन्दू और मुसलमान दोनों में एक ही अल्लाह निवास करता है।

परन्तु जैसा कि कुरान शरीफ़ के अध्ययन से ज्ञात होता है वहाँ अल्लाह का स्वरूप घट-घट वासी का है ही नहीं, मनुष्यों से भिन्न प्राणियों में तो आत्मा ही नहीं है, सो वहा अल्लाह के होने का तो प्रशन ही नहीं उठता। निश्चय ही कबीर का सर्व व्यापी घट-घट वासी अल्लाह कुरान शरीफ़ के अल्लाह से एक दम भिन्न है। कबीर का घट-घट वासी अल्लाह तर्क सिद्ध भी है, इसीलिये तो कबीर जी काजी को सलाह दे रहे हैं कि यदि अपनी बुद्धि से और हृदय से अल्लाह मे स्वरूप पर विचार करेगा तो तू उसे घट-घट वासी पायेगा इस पद के तकाल आगे के पद में कबीर जी कहत हैं

"किओ सिंगार मिलन के ताई ॥ हरि मेरो पिरू हउ हरि की बहुरिआ ॥
धन पिर एकै संगि बसेरा ॥" (483 कबीर जी)

अर्थात जीव और परमात्मा एक ही स्थान में वास कर रहे हैं, हरि मेरा प्रीतम है और मे उनकी प्रियतम, मैनें हरि से मिलन के लिये ही सिंगार किया यानी यह देह धारण की है।

केवल बाहरी उपचारों में लगे हिन्दुओं और मुसलमानों की निन्दा करते हुए कबीर जी उन्हे अन्तर्मुखी होकर राम नाम लेने का उपदेश दे रहे है :

"बुत पूजि-पुजि हिन्दू मुए तुरक मूए सिरू नाई ॥
ओइ ते जरि ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥"
"राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा ॥
हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥" (654)

कबीर जी कहते है, कि हिन्दू मूर्ति पूजा कर-कर के और मुसलमान नमाज में सिर झुका-झुकाकर मर गए, हिन्दू अपने मृतकों को जलाते हैं और मुसलमान गाड़ते हैं, परन्तु इन्ही बाह्य आचारों में लगे दोनों ही परम गति नहीं पासकते। कबीर जी कहते है, कि अपने भीतर झाककर देख, राम नाम के बिना जीव दुर्गति पाते है। कबीर जी का यही उपदेश है कि केवल हरि नाम से मोक्ष प्राप्ति सम्भव है।

54 7 नमाज इस्लाम का एक प्रमुख स्तम्भ है और मरने के बाद मुर्दो को जमीन में गाडना भी इसलिये इस्लाम का प्रमुख अंग है कि कयामत के समय सभी मुर्दे अपनी-अपनी कब्रो मे से उठाये जायेंगे। पर यहां ग्रंथ साहिबजी इनको कुछ महत्व नहीं दे रहे हैं, ग्रंथ साहिबजी के अनुसार तो परमगति केवल राम नाम से ही, हरि नाम से ही, सुलभ है।

इस्लामी मान्यताओं को एक नया कलेवर प्रदान करने के प्रयत्न में हम यहां नानक जी की यह गम्भीर वाणी प्रस्तुत कर रहे है :

"सो जोगि जो जुगति पछाणै ॥ गुर परसादी एको जाणै ॥
काजी सो जो उलटी करे ॥ गुर परसादी जीवतु मरै ॥
सो ब्रह्मणु जो ब्रह्मु बीचारे ॥ आपि तरै सगले कुल तारै ॥
दानसबंदु सोई दिलि धोवे ॥ मुसलमाणु सोई मलु खोवै ॥
पडिआ बूझै सो परमाणु ॥ जिसु सिरि दरगह का नीसाणु ॥" (662 म 1)

असली योगी वह है जो परमात्मा से मिलने की युक्ति जानता है, और जो गुरु की कृपा से सर्वत्र एक परमात्मा को ही देखता है। और असली काजी वह है जो माया की ओर से मुंह फेर कर अन्तर्मुखी हो जाता है, और जो गुरु कृपा से ज्ञान प्राप्त कर संसार के प्रति जीते जी ही मृतक के समान आचरण करता है, या संसार से पूर्ण रूप से विरक्त हो जाता है। और ब्राह्मण वही है जो ब्रह्म का ही चिंतन करता है और इस प्रकार अपने साथ अपने समस्त कुल को भी संसार सागर के पार पहुंचा देता है।

नानकजी कहते हैं कि बुद्धिमान वही है जो अपने हृदय के मल को धोता है और मुसलमान वही हे जो अपने पापों को धो देता है और हरि के यहां वहीं जीव स्वीकृत होता है जिसने प्रामाणिक धर्म ग्रंथों को कर उन पर किया है

द में नानकजी काजियों को योगियों और ब्रह्म ज्ञानियों की श्रेणी में बैठने रह हैं। पर इसका अधिकारी होने के लिये काजी को अपने वर्तमान के सारा त अध्यात्म मार्ग पर चलना होगा, और अपनी सभी मान्यताओं को तिलाज उन्हें मारना होगा।

"अलह अगम खुदाई बंदे ॥ छोडि खिआल दुनिआ के धंधे ॥
होइ पैखाक फकीर मुसाफरू इहु दरवेसु कबूलु दरा ॥
सचु निवाज यकीन मुसला ॥ मनसा मारि निवारिहु आसा ॥
देह मसीति मनु मउलाणा कलम खुदाई पाक खरा ॥
सरा सीअति ले कंमावहु ॥ तरीकति तरक खोजि टोलावहु ॥
मारफति मनु मारहु अबदाला मिलहु हकीकति जिसु फिरि न मरा ॥
कुराणु कतेब दिल माहि कमाही ॥ दस अउरात रखहु बद राही ॥
पंच मरद सिदकि ले बाधहु खैरि सबूरी कबूल परा ॥
मका मिहर रोजा पैखाका ॥ भिसतु पीर लफज कमाइ अंदाजा ॥
हूर नूर मुसकु खुदाइआ बंदगी अलह आला हुजरा ॥
सचु कमावै सोई काजी ॥ जो दिलु सोधे सोई हाजी ॥
सो मूला मलऊन निवारै सो दरवेसु जिसु सिफति धरा ॥
सभै वखत सभै करि वेला ॥ खलकु यादि दिलै महि मउला ॥
तसबी यादि करहु दस मरदनु सुंनति सीलु बंधानि बर ॥
दिल महि जानहु सभ फिलहाला ॥ खिलखाना बिरादर हमू जंजाला ॥
मीर मलक उमरे फानाइआ एक मुकाम खुदाई दरा ॥
अवलि सिफति दूजी साबरी ॥ तीजै हलेमी चउथै खैरी ॥
पजवै पंजे इकतु मुकामै एहि पंजि वखत तेरे अपरपरा ॥
सगली जानि करहु मउदीफा ॥ बद अमल छोडि करहु हथि कूजा ॥
खुदाइ एकु बुझि देवहु बांगा बुरगू बरखुरदार खरा ॥
हकु हलालु बखोरहु खाणा ॥ दिल दरी आउ धोवहु मैलाणा ॥
पीरु पछाणै भिसती सोई अजराईलु न दोजठरा ॥
काइआ किरदार अउरत यकीना ॥ रंग तमासे माणि हकीना ॥
नापाक पाकु करि दूरि हदीसा साबत सूरति दसतार सिरा ॥
मुसलमाणु मोम दिलि होवै ॥ अंतर की मलु दिल ते धोवै ॥
दुनिआ रंग न आवै नेडै जिउ कुसम पाटु घिउ पाकु हरा ॥
जा कउ मिहर मिहर मिहरवाना ॥ सोई मरदु मरदु मरदाना ॥
सोई सेखु मसाइकु हाजी सो बंदा जिसु नजरि नरा ॥
कुदरति कादर करण करीमा ॥ सिफति मुहबति अथाह रहीमा ॥
हकु हुकमु सचु खुदाइआ बुझि नानक बंदि खलास तरा ॥" 1083/84

पंद्रह पदों में सिक्खों के पांचवें गुरु अर्जुनदेव जी महाराज की यह इस्लाम सम्बन्धी वाणी ऐतिहासिक रूप से भी अत्यन्त महत्त्व रखती है। इन्होंने ही सन् 1601 में अमृतसर मे रामसर के किनारे बैठकर ग्रंथ साहिबजी का सम्पादन कार्य शुरू किया और उसे 1604 में पूर्ण किया। गुरु अर्जुनदेव जी की अद्भुत काव्य प्रतिभा और उनकी असीम भक्ति का इसीसे अनुमान लगा सकते है कि ग्रंथ साहिबजी में आए 6 गुरुओं के 5249 पदों मे से 2216 पद इन्हीं के रचे हुये हैं। और ग्रंथ साहिबजी का सम्पादन कार्य पूर्ण होने के दो वर्ष के भीतर ही 30 मई सन 1606 में नृशंस मुसलमान बादशाह जहांगीर ने अपनी धर्मान्धता में गुरु अर्जुनदेव जी की लाहौर में रावी के तट पर क्रूरता से हत्या करा दी। उस समय उनकी आयु 43 वर्ष एक महीना और 15 दिन की थी। और यहीं से सिक्ख समाज में धर्म के लिये बलिदानों की एक महान परम्परा शुरू हुई जिसका अन्त मुस्लिम साम्राज्य के अन्त के साथ ही हुआ।

मेरे स्वयं के विचार से ग्रंथ साहिबजी में संकलित इस्लाम सम्बन्धी वाणियों को मुस्लिम समाज और मुस्लिम शासक सहन नहीं कर सके, और परिणाम स्वरूप इसका मूल्य गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने अपने अमूल्य जीवन का दधीचि के समान बलिदान देकर चुकाया।

54.8 गुरु अर्जुन देव जी के इस्लाम सम्बंधी पंद्रह पदों के अर्थ क्रमानुसार यहाँ प्रस्तुत है—

1. हे अल्लाह और अगम्य खुदा के बंदे तू समस्त सांसारिक धंधों को छोड़ कर परमात्मा के भक्तों की चरण धूलि बनकर एक विरक्त यात्री के समान जीवन यापन कर। ऐसा फकीर ही परमात्मा के द्वारा स्वीकृत होता है।

2. हे खुदा के बंदे। तू परमात्मा के नाम को ही अपनी नमाज बना, मन को जीत कर ससार की आशा का निवारण कर, अपने शरीर को उपासना का घर बना, और मन को उसमे मुल्ला बना, मन की यह पवित्रता ही तुम्हारे लिये खुदा का कलमा है।

3. हे खुदा के बंदे। खुदा के नाम की ही कमाई करो, यही सच्ची शरीयत यानी धार्मिक मर्यादा है, अपने अहं को त्यागकर अपने भीतर स्थित परमात्मा को खोजो जिससे तुम्हारा मन सदा पवित्र रहेगा। और हे अवदाल फकीर! अपने अन्दर स्थित परमात्मा से मिले रहो यही सच्चा ज्ञान है।

4. हे खुदा के बंदे। अपने मन में खुदा के नाम की स्मृति ही कुरान है, अपनी दसो इन्द्रियों को कुमार्ग पर जाने से रोको और पांच काम, क्रोधादि शत्रुओं को पकड़कर बांधकर रखो। फिर तुम संतोष और दान की सहायता से परमात्मा द्वारा कबूल हो जाओगे।

5. हे खुदा के बंदे। सब के लिये दया ही तुम्हारे लिये मक्का है, अपने को सबके पाव की धूल समझना ही सच्चा रोजा है, गुरु के वचनों के अनुसार चलना ही तुम्हारे लिये स्वर्ग है, परमात्मा के ज्ञान का प्रकाश ही नूर है, खुदा की बंदगी ही कस्तूरी की दिव्य गंध और परमात्म भक्ति का एकान्तवास है।

6. हे खुदा के बंदे। जो सच्चा कर्म करता है वही काजी है, जो हृदय को पवित्र रखता है वही हाजी यानी हज करने वाला है, जो अपने मन से विकारों को दूर रखता है वही मुल्ला है और केवल परमात्मा पर ही भरोसा रखने वाला फकीर है।

7 हे खुदा के बंदे हर क्षण का स्मरण करते रहो दसों इन्द्रियों को वश में

रखकर परमात्मा को याद करना ही माला फेरना है, सभी वासनाओं से शील धारण करना ही सुन्नत है।

8. हे खुदा के बंदे। सारी रचना को नश्वर समझो, यह परिवार आदि का मोह फसाने वाले जाल के समान है, शासक और धनवान सभी नाशवान हैं, केवल खुदा का घर ही स्थायी मुकाम है।

9. हे खुदा के बंदे। परमात्मा का गुणगान तेरी पहली नमाज है, संतोष दूसरी नमाज है, तीसरी में नम्रता धारण करो, चौथी नमाज सबकी कल्याण कामना है, कामादि पांच शत्रुओं को वश में रखना पांचवीं नमाज है-ये ही पांच अध्यात्मिक नमाजें हैं जो जीवन को उच्च स्तर पर ले जायेगीं।

10. हे खुदा के बंदे। खुदा सारी सृष्टि में व्याप्त है यह जानकर हर समय उसे स्मरण रखो, सब बुरे काम छोड़ दो, यही हाथ के लौटे से शरीर को स्वच्छ रखना है, और सृष्टि मे केवल खुदा मात्र ही है इसी की बांग दिया करो। हे फकीर! खुदा के अच्छे पुत्र बन कर उसका नित्य गान किया करो।

11. हे खुदा के बंदे। न्याय की कमाई खाया कर-यही हलाल है, अपने हृदय के कलुष को धोकर उसे समुद्र के समान विशाल बनाओ, जो अपने गुरु की आज्ञा धारण करता है, वही स्वर्ग का अधिकारी बनता है और वह नरक में नहीं जाता।

12. हे खुदा के बंदे। अपने इस शरीर को विकारों से मुक्त कर इसे परमात्मा के साथ दिव्य मिलन की लीलाओं में लीन रहो। हे अल्लाह के बंदें अपने तन-मन को पवित्र कर के परमात्मा से मिलन के यत्न को शरियत मानो।

13. हे खुदा के बंदे। मोम के समान कोमल हृदय वाला ही मुसलमान कहलाता है अर्थात असली मुसलमान वही है जो कठोर न होकर दूसरों के दुखो से दयाद्र होकर उन्हे दूर करने का प्रयत्न करता है, और अपने अंतर के मैल को धो डालता है, वह दुनिया की रंग-रलियों से अलिप्त रहता हुआ इस प्रकार पवित्र रहता है जैसे पुष्प, रेशाम, घी, और मृगछाल पवित्र रहते है।

14. हे खुदा के बंदे। जिस पर कृपालु प्रभु की दया दृष्टि रहती है, उसे विषय-वासना पराजित नहीं कर सकते, ऐसा ही परमात्मा का भक्त सही माने में शेख, मसाइक और हाजी है। वही असली खुदा का बंदा है जिस पर स्वयं खुदा की कृपा दृष्टि बनी रहती है।

15. गुरु नानक देव जी की ज्योति अपने में संजोये गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं कि हे खुदा के बंदे। इस सृष्टि को भली भांति समझ कर परमात्मा की अपने जीवो पर सदा रहने वाली प्रीति को जानकर और परमात्म ज्ञान से परमात्मा को जानकर जीव की माया-मोह के बंधन से सदैव के लिये मुक्ति हो जाती है और वह संसार समुद्र के पार उतर जाता है।

अब हम यहां यह भी देख लें कि गुरु अर्जुनदेव जी की इस्लाम संबंधी इस समस्त वाणी का पूर्व पद क्या है और उत्तर पद क्या है

पूर्व पद :

"तेरी गति मिति तू है जाणहि ॥ तु आपे कथहि तै आपि बखाणहि ॥
नानक दासु दासन को करीअहु हरिभावै दासा राखु संगा ॥" (1083 म 5)

हे प्रभु अपने स्वरूप को केवल आप ही जानते हो और केवल आप ही उसका बखान कर सकते हो। अर्थात आप मन और वाणी के परे हो। नानक जी का तो यही निवेदन है कि उन्हे तो आप अपने भक्तों की सेवा का अवसर प्रदान करे, हे हरि नानक को तो अपने भक्तो की संगति प्रदान करो।

उत्तर पद :

"पारब्रह्मु सभ ऊच बिराजे॥ आपे थापि अथापे साजे ॥
प्रभु की सरणि गहत सुखु पाईऐ किहु भउ न बिआपै बालका ॥" (1084 म.5)

हे भाई! परमात्मा इस समस्त जड़-चेतनमई सृष्टि से परे है, वही सबको उत्पन्न करता हे तथा उनका संहार करता है। उस परमात्मा की शरण ग्रहण करने से जीव पर माया का बाल बराबर यानी किंचित मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ सकता है।

इन पदों से यही प्रतीत होता है कि ग्रंथ साहिबजी का मुख्य विषय अध्यात्म ही हे। इन अध्यात्मयी वाणी के बीच-बीच में इस्लाम सम्बन्धी वाणो का तात्पर्य गुरुओं द्वारा ईस्लाम के सिद्धातों को अपने आध्यात्मिक मापदण्डों द्वारा तौलना है, मापना है।

अन्त में कबीर के पदों के साथ हम ग्रंथ साहिबजी में आई इस्लाम सम्बन्धी उस वाणी का समापन कर रहे हैं जिनमें इस्लामी सिद्धांतो का वेदांत के परिप्रेक्ष्य में विवेचन किया गया हे

1. **"सो मुलां जो मन सिउ लरै ॥ गुर उपदेसि काल सिउ जुरै ॥**
काल पुरख का मरदै मानु ॥ तिसु मुला कउ सदा सलामु ॥" (1159 कबीर जी)

कबीर जी कहते है कि असली मुल्ला वह है जो अपने मन से युद्ध करता है अर्थात जो मन को जीतने का प्रयास करता है, जो गुरु के उपदेशों से काल की गति को समझता है, और मृत्यु को जीतने का उत्साह रखता है। कबीर जी कहते हैं कि वो ऐसे आचरण वाले मुल्ला को नमस्कार करते हैं।

2. **"है हजूरि कत दूरि बतावहु ॥ दुंदर बाधहु सुंदर पावहु ॥"** (1159/60) कबीर जी

हे मुल्ला परमात्मा तो हर स्थान पर वर्तमान है तू उसे दूर सावतें आसमान पर बैठा क्यों बतलाता है। यदि तुझे उस सुंदर रब से मिलना है तो अपने कामादि विकारों को बाध करके रख।

3. **"काजी सो जु काइआ बीचारै ॥ काइआ की अग्नि ब्रह्मु परजारै**
सुपनै बिंदु न देई झरना ॥ तिसु काजी कउ जरा न मरना ॥" (1160 कबीर जी)

सच्चा काजी वही है जो शरीर में स्थित अन्तरआत्मा को खोजता है और हृदय में ब्रह्म की ज्योति को प्रकाशित करता है, जो स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य को भंग नहीं होने देता। कबीर जी कहते हैं कि ऐसा काजी बुढ़ापे और मृत्यु के भय से दूर हो जाता है।

ऊपर हमने सिक्ख गुरुओं और कबीर जी की वाणी में इस्लाम के सभी पहलुओं का विस्तार पूर्वक वैदांतिक विवेचन देखें जिन्होंने ग्रंथ साहिबजी का और कुरान शरीफ का

गहराई से अध्ययन किया है उन्हें ये दो बातें बिल्कुल स्पष्ट हो गयी होगी कि (1) कुरान शरीफ को उपरोक्तवाणी का एक भी भाव स्वीकार नहीं हो सकता, क्योंकि ये सभी भाव कुरान शरीफ़ की मान्यताओं से या तो परे हैं, या फिर बिल्कुल भिन्न और विपरीत हैं, और (2) उपरोक्त वाणी ग्रंथ साहिबजी के भावों के सर्वथा अनुकूल है।

54.9 इस्लाम सम्बन्धी उपरोक्त वाणी में पाठकों के ध्यान में यह बात अवश्य आई होगी कि इस समस्त वाणी में कहीं भी पैगम्बर हजरत मुहम्मद, अल्लाह द्वारा पैगम्बर मुहम्मद को भेजी गई आयतें और कयामत या आखिरत की चर्चा नहीं मिलती। कुरान शरीफ़ के अनुसार ईमानवाला या मुसलमान कहलवाने के लिये यह अनिवार्य है कि अल्लाह के साथ-साथ इन तीनों पर भी ईमान लाया जाय। ग्रंथ साहिबजी ने स्पष्टतः इन तीनों की पूरी उपेक्षा कर दी है। और न ही इन तीनों को कोई आध्यात्मिक जामा पहनाना चाहा। केवल अल्लाह या खुदा को प्रधानता देते हुए उन्हें सर्वव्यापी और घट-घट वासी परमात्मा के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। और यहाँ भी "खुदा" और "रब" शब्दों का "अल्लाह" शब्द से अधिक प्रयोग किया है। इससे स्पष्ट होता है कि सिक्ख गुरुओं और संत कबीर जी कुरान शरीफ से भलिभांति अवगत थे, वे जानते थे कि कुरान शरीफ़ मे अल्लाह ही शब्द का प्रयोग हुआ है। और इस्लाम का जो भी स्वरूप उनके सामने था और जो भी उसके विभिन्न पहलू थे वे सब कुरान शरीफ़ में दिये गये अल्लाह के आदेश के अनुसार थे और आज भी इस्लाम की ऐसी ही अटल मान्यता है। कुरान शरीफ़ का प्रत्येक शब्द अल्लाह का हुक्म होने के कारण तब भी अपरिवर्तनीय था और आज भी अपरिवर्तनीय है।

जैसा कि हमने ऊपर कहा ग्रंथ साहिबजी पैगम्बर, हज़रत मुहम्मद पर अल्लाह द्वारा भेजी गई आयतें (या कुरान और किताब) और कयामत के विषयों पर मौन हैं। और अल्लाह या खुदा को ग्रंथ साहिबजी ने केवल ब्रह्म के लक्षणों के साथ ही परमात्मा के रूप में उपासना का आधार माना है। ऊपर दिये पदों में ग्रंथ साहिबजी ने अल्लाह को बार-बार घट-घट वासी, सर्वव्यापी, सभी प्राणियों का कल्याण करने वाला, इत्यादि लक्षणों से सम्बोधित किया है। परन्तु कुरान शरीफ़ में कहीं भी ये अल्लाह के लक्षणों के रूप में नहीं बतलाये गये हैं। ग्रंथ साहिबजी द्वारा वर्णित अल्लाह या खुदा भक्ति, ज्ञान और सत्संग द्वारा, सभी जीवों की प्राप्ति का लक्ष्य है, जबकि कुरान शरीफ़ में रूह द्वारा अल्लाह की प्राप्ति या रूह द्वारा मोक्ष को प्राप्त कर अल्लाह के साथ एक हो जाने की कोई भी कल्पना नहीं है। कुरान शरीफ़ में तो रूह का लक्ष्य ईमानवाले बन कर, कयामत के बाद बहिश्त में दाखिल होने का है। इस प्रकार ग्रंथ साहिबजी वर्णित अल्लाह के लक्षण कुरान वर्णित अल्लाह के लक्षणों से बिल्कुल भिन्न है। ग्रंथ साहिबजी के अनुसार और वेदशास्त्रों के अनुसार भी उस सर्वव्यापी परब्रह्म परमात्मा को किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है, बशर्ते कि लक्ष्य सर्वव्यापी परमात्मा ही हो। इसलिये सिक्ख गुरुओं कबीर आदि अन्य संतो को, या कहिये कि समस्त हिन्दु समाज को इस बात पर कोई आपत्ति करने का प्रश्न ही नहीं उठता है कि परब्रह्म परमात्मा को अल्लाह कह कर क्यों पुकारा गया- बशर्ते लक्ष्य सर्वव्यापी घट-घट वासी और सब प्राणियों का सहज रूप से परम कल्याण करने वाली सत्ता का ही हो

परन्तु जब सर्वव्यापी को पैगम्बर आदि के माध्यम से सीमित कर दिया जाता है तो वही नाम सीमित लक्ष्य भी धारण कर लेता है और राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि से युक्त हो जाता है। इस बात को हम देवताओं के राजा इन्द्र के उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। परमात्मा को शास्त्रों ने बार-बार इन्द्र नाम से भी पुकारा गया है, वहां उन पर परब्रह्म के लक्षण घटित होते है। और वहीं "इन्द्र" देवताओं के स्वामी के रूप में सारी सृष्टि में अपने कार्य का संचालन करते हुए भी एक सीमित शक्ति के रूप में हमारे सामने होते हैं—उस समय इन्द्र ब्रज में अपनी पूजा रोक दिये जाने पर क्रोध और ईर्ष्या से ग्रसित हो उसे भयानक वृष्टि से डुबाने का प्रयत्न करते है, कामासक्त हो अहिल्या का सतीत्व नष्ट करने हैं। देवराज के रूप में "इन्द्र" को कभी परमात्मा मानने की कल्पना ही हिन्दू समाज में नहीं है।

ठीक इसी प्रकार अल्लाह या खुदा नाम का प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी उपासना करते समय हम उसको किन लक्षणों से युक्त मानते है।

सिक्ख गुरुओं और कबीर, नामदेव जी, आदि संतों ने अपने ही काल में यह समझ लिया था कि कुरान शरीफ़ द्वारा प्रतिपादित इस्लाम को सार्वभौमिकता प्रदान करना, उसको गैर-मुसलमानों के प्रति उदार और सहनशील बनाना और इस्लामी सिद्धांतों को अध्यात्म की व्यापक परिभाषाओं में बांधना सम्भव नहीं है। इसलिये दवा की कड़वी घूंट के ईलाज के समान सिक्ख गुरुओं और कबीर आदि संतों ने इस्लाम को खुले रूप में अपनी तीव्र आलोचना की खरी कसौटी पर भी कसा। वर्तमान विश्व में इस्लाम की असहनशीलता के वातावरण से हम समझ सकते हैं कि उस समय के मुस्लिम शासन काल में यह कितना कठिन और प्राणों के लिये कितना जोखिम भरा कार्य रहा होगा। और इन संतों ने और ऐसे अनेक संतों ने इस कार्य में अपने प्राणों की बाजी लगाई। इसी की विस्तृत झांकी हम ग्रंथ साहिबजी की ही वाणी में आगे देखगें।

□

ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम संबंधी आलोचनात्मक वाणी

55 0 गुरु नानक देव जी मुसलमानों को सम्बोधित कर रहे हैं :

जो रतु लगै कपड़े जामा होइ पलीतु ॥
जे रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
नानक नाउ खुदाइ का दिल हछै मुखि लेहु ॥
अवरि दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेहु ॥ (140 म 1)

नानक जी कहते हैं कि पहनने के वस्त्र में थोड़ा सा भी खून लग जाये तो वह परिधान अपवित्र हो जाता है, जो लोग मनुष्यों का खून पी रहे हैं (यानी जो निरीह प्रजा पर शारीरिक और मानसिक अत्याचार कर इनका प्रत्यक्ष शोषण कर रहे हैं) उनका चित्त कैसे निर्मल रह सकता है। और अपवित्र मन से पढ़ी गई नमाज कैसे स्वीकार हो सकती है। इसलिये हे मुल्ला। शुद्ध हृदय और मुख से खुदा का नाम लो। भगवान के नाम के अतिरिक्त सभी दुनियावी काम मात्र दिखावा ही है, और तुम तो झूठे ही कर्मों में लिप्त हो।

हकु पराइआ नानका उसु सुआर उसु गाइ ॥
गुर पीरु हामा तो भरे ता मुरदार न खाई ॥
गली भिसाति ने जाईए छुटै सचु कमाई ॥
मारण पाहि हराम महि होइ हलालु न जाइ ॥
नानक गली कूड़ीई कूड़ो पलै पाइ ॥ (141 म 1)

गुरु नानक जी कहते हैं कि पराये हक को खाना या हड़प लेना मुसलमान के लिये सुअर के मांस के समान है, हिन्दु के लिये गऊ मांस के समान। गुरु रूपी पीर उसी जीव का अनुमोदन करते हैं जिसे बेइमानी की कमाई मुर्दे के मांस के समान अभक्ष्य है। सत्य की कमाई के बिना यानी जीवन में सत्य के आचरण किये बिना कोई भी बहिशत या स्वर्ग में नही जा सकता। दूसरों की हत्या से प्राप्त हराम का माल कभी "हलाल" नहीं हो सकता। नानक जी कहते है कि झूठ या असत्य का मार्ग पकड़ने से झूठ ही पल्ले पड़ता है।

"हिन्दू तुरक कहा से आए किनि एह राह चालाई ॥
दिल महि सोचि विचारि कवादे भिसत दोजक किनि पाई ॥
काजी तै कवन कतेब बखानी ॥
पढ़त गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥" (477 कबीर जी)

कबीर जी कहते है कि हे काजी! तू दिल में अच्छी तरह से सोच विचार कर देख कि इस जगत में हिन्दू और मुसलमान दोनों कहां से आये हैं इन दोनों के भिन्न-भिन्न मार्ग किसने चलाए है। और स्वर्ग और नरक किसे प्राप्त होना है। अर्थात जब एक परमात्मा से ही सारी सृष्टि उत्पन्न हुई है तो तू इतने द्वेष भाव से क्यों ग्रसित है क्योंकि केवल मुसलमान होने से जन्नत या स्वर्ग नहीं मिल सकता और केवल हिन्दू होने से उसे नरक में नहीं भेजा जा सकता

है। हे काजी! बता तू कुरान की ऐसी व्याख्या क्यों कर रहा है कि हिन्दुओं को केवल नरक और मुसलमानों को केवल स्वर्ग मिलेगा। हे काजी! तू व्यर्थ ही अपने को पढ़ा-लिखा और विचारवान मानता है, क्योंकि तू वास्तविक ज्ञान को नहीं जानता तू भी निश्चित ही काल के वश में है।

55 1 इस्लाम में "सुन्नत" करवाना मूल संस्कारों में है, इसलिये विजेता मुसलमान गैर मुसलमानों का धर्म परिवर्तन करवाते समय जबरदस्ती उनकी सुन्नत भी कराते थे। "सुन्नत" अर्थात पुरुष जन्ननेद्रिय की अग्र भाग की कटी हुई खाल मुसलमान होने की या अल्लाह का बदा होने की एक बाहरी अमिट छाप थी। सुन्नत की इस बुनियादी इस्लामी मान्यता पर भारी चोट करते हुए ग्रथ साहिबजी कबीर जी की वाणी में कहते है :

1. **"सकति सनेहु करि सुंनति करीए मैं न बदउगा भाई ॥**
जउ रे खुदाई मोहि तुरक करैगा आपन ही कटि जाई ॥" (477 कबीर जी)

कबीर जी कहते है कि हे काजी! सुन। मैं तेरे द्वारा जोर जबरदस्ती से की गई सुन्नत को नहीं मानता। अर्थात जो तू बलपूर्वक सुन्नत करके लोगों को मुसलमान बनाता है वह मुझे बिल्कुल स्वीकार नहीं है। यदि वास्तव में केवल सुन्नत करने मात्र से ही कोई तुरक या मुसलमान हो जाता है, और यदि तेरे खुदा को सभी को ही केवल मुसलमान बनाना होता तो पैदा होते ही सबकी जन्नेद्रियों की खाल अपने आप ही कट जाती, अर्थात सबकी अपने आप ही सुन्नत हो जाती।

2. **"सुनति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ ॥**
अरध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिंदू ही रहीए ॥" (477 कबीर जी)

55 2 कबीर जी की वाणी के माध्यम से ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि यदि केवल सुन्नत मात्र के करने से ही कोई तुरक या मुसलमान हो जाता है तो हे भाई बतला ऐसी परिस्थिति में औरत का क्या होगा। क्योंकि उसकी तो सुन्नत नहीं हो सकती। अर्थात यदि औरत की सुन्नत नहीं हुई तो वह मुसलमान भी कभी नहीं हुई। फिर जब औरत पुरुष का आधा अग है, अर्थात वे जब एक दूसरे के लिये अनिवार्य है, पूरक हैं, तो केवल पुरुष की ही सुन्नत होने से वह तो आधा ही मुसलमान हुआ। इसलिये चूंकि औरत से पुरुष की अलग सत्ता सम्भव ही नहीं है तो ऐसी स्थिति में आधा ही मुसलमान बनने से हिन्दू ही बने रहना चाहिए। अर्थात किसी भी हिन्दू को जोर और जुल्म के वश में होकर इस्लाम को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

इस पद के माध्यम से ग्रंथ साहिबजी हिन्दुओं को खुले शब्दों में यह स्पष्टतम आदेश दे रहे हैं कि वे अत्याचारों के आगे झुककर कदापि इस्लाम को स्वीकार न करे और हिन्दू ही बने रहें।

इसी बात को कबीर जी की वाणी में और स्वयं कबीर के ही उदाहरण से आगे बढ़ाते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि यदि राम नाम की टेक पकड़ली तो तुरकों यानी मुसलमानों के भारी से भारी जुल्म तुम्हारा कुछ भी नही बिगाड़ सकेंगे। इसी पद के आरम्भ में मुसलमानों का भी ग्रंथ साहिबजी अपनी निर्भय वाणी में आवाहन कर रहें है कि वे कुरान शरीफ का त्याग कर दें और रामनाम का ही भजन करें क्योंकि "कतेब" या कुरान के प्रभाव वश ही वे हिन्दुओं

पर बड़े-बड़े जुल्म ढा रहे है :

"छाडि कतेब राम भजु बउरे जुल्म करत है भारी ॥
कबीर पकरी टेक राम की तुरक रहे पचि हारी ॥" (477 कबीर जी)

कबीर जी कहते है कि हे तुरकों या मुसलमानों! तुम कतेब यानी "किताब" या कुरान को छोड़ कर राम को भजो, क्योंकि तुम भारी जुल्म कर रहे हो। कबीर ने तो केवल राम की ही टेक या शरण पकड़ रखी है, और तुरकों ने उनको इस अपराध के लिये हर प्रकार से मारने की कोशिश भी की किन्तु इस दिशा में उनके द्वारा किये गये सब प्रयत्न राम कृपा से व्यर्थ हो गये।

हम आगे चल कर ग्रंथ साहिबजी की ही वाणी में मुसलमान शासकों द्वारा कबीर जी को मारने के प्रयत्नों और परमात्मा द्वारा उनकी रक्षा की चर्चा करेगें।

ऊपर दिये गये कबीर जी के तीनों पदों के बाद तत्काल आए पद की अन्तिम पंक्ति है

"रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई ॥
तूं राम नामु जपि सोई ॥" (477 कबीर जी)

और पूर्व पद की पंक्ति है :

"सभ जोतगण राम नामु है जिस का पिंडु पराना" ॥

मुसलमानों को घट-घट व्यापी ब्रह्म का स्पष्ट उपदेश देते हुए कबीर जी उन्हे अत्याचारों से वर्जित करते हुए कहते है :

1. **"हम मसकीन खुदाई बंदे तुमरा जसु मनि भावै ॥**
अलह अवल दीन को साहिबु जोरू नहीं फुरमावै ॥
काजी बोलिआ बनि नहीं आवै ॥
रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई ॥
सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥
निवाज सोई जो निआउ विचारै कलमा अकलहि जानै ॥
पाचहु मूसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥" (480 कबीर जी)

हे काजी। हम भी खुदा के पैदा किये बन्दे हैं, परन्तु अभिमान से रहित है, और तुम राजसत्ता के बल और रजोगुण के कारण अहंकार के वश हो। किन्तु यह अच्छी तरह समझ लो कि "सहिब" को यानी परमात्मा को दीन जन ही प्यारे हैं, न कि जोर-जुल्म करने वाले, अल्लाह को जोर-जुल्म कतई नहीं भाता। हे काजी। तुम जोर जुल्म करने वालों को इस विषय में कुछ भी बोलने का अधिकार नहीं।

पाठक यहां स्मरण करेगें कि सारे कुरान शरीफ में अल्लाह ने गैर-ईमानवालों के लिये दण्ड का विधान किया है और ईमानवालों के लिये यह हिदायत दी है कि वे काफिरों को जिहाद के माध्यम से नेस्तनाबूद और नष्ट कर दे। परलोक में तो कयामत के बाद अल्लाह उन्हें स्वयं दण्डित करेगा ही। इसलिये कबीर का यह कहना कि "अल्लाह को जोर नहीं भाता" यह उनका अल्लाह को अलग से दिया गया अपना ही लक्षण है—कुरान शरीफ का इस लक्षण से कोई सरोकार नहीं है

2. ऊपर दिये गये कबीर के पदों की अन्तिम पंक्तियों का अर्थ भी स्पष्ट है। कबीर जी कहते हैं कि हे काजी! तुझे केवल रोजा रखते, नमाज अदा करने और कलमा पढ़ने से बहिश्त या स्वर्ग नहीं मिलेगा। जब तू यह समझ लेगा कि "काबा" यानी परमात्मा का निवास स्थान तेरे "घट" यानी हृदय में ही है, तभी तू वास्तविकता को, सत्य को, समझ सकेगा। न्याय की नमाज पढ़ना और तत्व रूप से परमात्मा को जानना ही कलमा है। जब तू अपने काम-क्रोधादि विकारों को जीत कर और उनको अपना आसन बनाने या अपने अधीन करके परमात्मा का ध्यान करेगा तभी तू सच्चे "दीन" यानी धर्म को पहचानने वाला बनेगा।

55.3 पाठक ध्यान से देखेंगे कि ऊपर दिये गये पद "काजी" को सम्बोधित हैं। इस्लाम में काजी कुरान और शरीयत का पूरा ज्ञाता और मुसलमानों में सबसे अधिक विद्वान माना जाता है, और वही मुस्लिम शासन में न्यायाधीश और धर्म के विषय में उनका प्रधान सलाहकार होता है। इसलिये "काजी" के प्रति किये ये आलोचनात्मक सम्बोधन और कुरान शरीफ द्वारा प्रतिपादित मूल सिद्धांतों को चुनौती ग्रंथ साहिबजी द्वारा एक प्रकार से समस्त इस्लाम को दी गई खुली चुनौती के समान है। इसी चर्चा को बढ़ाते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं—

1. "खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणीकरि फीकी ॥
आपु जनाइ अवर कउ जाने तब होई भिसत सरीकी ॥" (480 कबीर जी)

हे काजी! तू अपने खसम यानी स्वामी को सही रूप में पहचान और उसे सब प्राणियों में व्याप्त समझ कर सभी जीवों पर रहम कर, और अपने मन में व्याप्त अहंकार को नष्ट कर दे। जिस तरह तू अपने आपको जानता है उसी तरह तू औरों को भी जान, तभी तू बहिश्त अर्थात स्वर्ग का हकदार बन सकता है।

उपरोक्त पद में ग्रंथ साहिबजी ने जिन सिद्धांतों का निरूपण काजी या इस्लाम के सामने किया है वे तो कुरान शरीफ को सर्वथा अमान्य हैं—ऐसा हम ऊपर कुरान शरीफ सम्बन्धी अध्यायों में सप्रमाण देख चुके हैं। सब प्राणियों में परमात्मा की व्याप्ति, अपने और दूसरों के दुखों को समान समझना और प्राणियों पर दया भाव इनका कुरान शरीफ के सिद्धान्त में कोई भी स्थान नहीं है। पाठकों को स्मरण होगा कि कुरानशरीफ के अनुसार खून, सूअर का मांस, मुर्दा मांस और ऐसे पशु का मांस जिसके वध के समय उस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, शेष सभी प्रकार के पशु, पक्षी और मछली आदि प्राणी ईमानवालों के लिये हलाल हैं और उनके भोजन और भोग की वस्तुएं हैं। और काफ़िर अल्लाह के दुश्मन होने के नाते ईमानवालों के वध्य हैं, अतएव उनके और ईमानवालों के सुख-दुख को समान मानने की इस्लाम में कोई कल्पना ही नहीं हो सकती।

2. "माटी एक भेख धरि नाना ता महि ब्रहमु पछाना ॥
कहै कबीर भिसत छोडि कर दोजक सिउ मनु माना ॥" (480 कबीर जी)

इस पद में ग्रंथ साहिबजी काजी को स्पष्टतम शब्दों में वेदांत के विशुद्धतम सिद्धांत को अपनाने का आग्रह कर रहे हैं। कबीर की वाणी में वे इस्लाम को बतला रहे हैं कि जिस प्रकार मिट्टी के बने नाना प्रकार के भाजन तत्वतः मिट्टी ही हैं उसी प्रकार तत्वतः यह समस्त सृष्टि और उसमें रहने वाले सभी प्राणी ब्रह्म से उत्पन्न होने के कारण ब्रह्म ही हैं। इसलिये हे

काजी! तू घट-घट में व्याप्त उस परब्रह्म परमात्मा को पहचान। परन्तु हे काजी! तू घट-घट वासी उस ब्रह्म को न पहचान सकने के कारण सब पर अत्याचार कर रहा है, इससे यह लगता है कि तूने स्वर्ग के मार्ग को छोड़कर नरक के मार्ग से अपने मन को जोड़ लिया है।

इसी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए ग्रंथ साहिबजी काजी को सम्बोधित करते हुए कहते हैं :

"रोजा धरै मनावै अलहू सुआदति जीअ संघारै ॥
आपा देखि अवर नहीं दखै काहे कउ झख मारै ॥" (483 कबीर जी)

हे काजी! तू अल्लाह को मनाने करने के लिये रोजा रखता है किन्तु अपनी जीभ के स्वाद के लिये तू पशुओं की हत्या करता है। तू अपने स्वार्थ के लिये दूसरों के दुख को नहीं देखता, हे काजी! तू क्यों ऐसे बुरे कर्म करता है।

नीचे दिये पदों में मुसलमानों की कठोरतम आलोचना करते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते है :

"काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सेचि विचारि न देखै ॥
खबरि न करहि दीन के बउरे ताते जनमु अलेखै ॥" (483 कबीर जी)

हे काजी! तू अच्छी तरह सोच विचार करके देख ले, सब में एक ही परमात्मा व्याप्त है, और वही तेरे अन्दर भी है। किन्तु हे काजी! तू महजब के, इस्लाम के मद में पागल होने के कारण सोच विचार नहीं करता। हे काजी! इस सत्य के अभाव में तेरा जीवन व्यर्थ है।

2. "साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नहीं कोई॥
पढ़े गुने नाही कछु बउरे जउ दिल महि खबरि न होई॥" (483 कबीर जी)

हे काजी! सत्य का प्रतिपादन करने वाली धर्मिक पुस्तकें तो कहती है कि अल्लाह यानी परमात्मा न तो स्त्री है और न पुरुष ही है, वह तो सब भेदों में परें विशुद्ध सतचिदानन्दमयी सत्ता है। हे बावले, तू जो कुछ पढ रहा है और जो कुछ बखान करता है वह हृदय में परमात्मा को स्थित समझे बिना व्यर्थ का ही ज्ञान है।

3. "अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु विचारी"
हिंद तुरक दुहूं महि एकै कहै कबीर पुकारी ॥ (483 कबीर जी)

कबीर जी पुकार-पुकर कर कह रहे हैं कि हे काजी। तू भलीभांति अपने हृदय मे विचार कर देख कि "अल्लाह" सभी प्राणियों के हृदय में विराजमान है। इसलिये हे काजी। हिन्दू और मुसलमान दोनों के ही हृदय में परमात्मा विराज रहा है, अर्थात जब एक ही परमात्मा सब के ह्रदय में विराजमान है तब तू हिन्दू या गैर मुसलमान के प्रति क्यों द्वेष रखता है।

उपरोक्त पदों के तत्काल बाद कबीर जी का निम्न सबद है :

"कीओ सिंगार मिलन के ताई ॥ हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥
हरि मेरो पिरू हउ हरि की बहुरीआ ॥ राम बडे मैं तनक लहुरीआ ॥" (483 कबीर जी)

और इन पदों के आरम्भ का पूर्व सबद है :

"सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद विवादा ॥
कहि कबीर मैं पूरा पाइआ भए राम परसादा ॥" (483 कबीर जी)

55.4 कुरान शरीफ के अध्ययन में हमने देखा कि जो ईमानवाले नहीं है उनके लिये अल्लाह ने हर कदम पर रोष पूर्वक अनेक प्रकार की भारी सजाओं का प्रावधान किया है। ईमान वाला बनने के लिये केवल अल्लाह को ही मानना पर्याप्त नहीं है, इसके लिये उनके पैगम्बर हजरत मुहम्मद को, पैगम्बर के माध्यम से भेजी गई आयतों को और कयामत पर भी ईमान लाना उतना ही अनिवार्य है। ग्रंथ साहिबजी के अनुसार परमात्मा को किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है। बशर्ते उस नाम में परमात्मा के लक्षणों की भावना दृष्टिगत रहे। दूसरे शब्दों में ग्रंथ साहिबजी के अनुसार परमात्मा की उपासना "अल्लाह", "खुदा," "रब" आदि नामों से भी इन नामों में परमात्म भावना या ब्रह्म भावना रखते हुए की जा सकती है। परन्तु यदि किसी नाम विशेष में यदि ब्रह्म के लक्षणों का अभाव है तो इस प्रकार की उपासना ग्रंथ साहिबजी की निगाह में सीमित उपासना ही है। साथ ही ग्रंथ साहिबजी को परमात्म प्राप्ति के मार्ग में किसी भी माध्यम की अनिवार्यता स्वीकार नहीं है, गुरु को तो इस मार्ग में एक महान सहायक के रूप में ही स्वीकार किया गया है, मुख्य लक्ष्य तो परमात्म प्राप्ति ही है। किसी पैगम्बर आदि को अनिवार्य रूप में स्वीकार करने की तो ग्रंथ साहिबजी में कल्पना ही नहीं है।

नीचे हम ग्रंथ साहिबजी से ऐसे दो पद दे रहे हैं जिनमें यह दर्शाया गया है कि यदि कोई व्यक्ति हृदय से केवल अल्लाह का नाम परमात्म रूप में ले रहा है, तो उस पर अल्लाह क्यों गुस्सा करेगा--उसके गुस्से का कोई भी कारण नहीं बनता क्योंकि सभी उसके पुत्र है--अपने पुत्रों पर गुस्सा कैसा? ऐसा व्यक्ति नरक में क्यों जायेगा? उसके नरक में जाने का भी कोई कारण नहीं बनता। अप्रत्यक्ष रूप से इन दो पदों के माध्यम से ग्रंथ साहिबजी यह घोषणा करते है कि परमात्मा का कोई भक्त यदि पैगम्बर हजरत मुहम्मद को, आयतों को और कयामत आदि को नहीं मानता, और केवल परमात्मा की भक्ति में ही लगा हुआ है तो उनको न किसी दण्ड का भय है और न नरक का ही।

1. ग्रंथ साहिबजी के पृष्ठ 25 में गुरु नानक देव जी महाराज कह रहे हैं :

"तेरे जीअ जीआ का तोहि॥ कित कउ साहिब आवहि रोहि॥
जे तू साहिब आवहि रोहि॥ तू ओना का तेरे ओही॥" (25 म 1)

हे साहिब! सब जीव तेरे ही हैं और तू सब जीवों का है फिर तू उन जीवों पर क्यो कुपित होता है तुझे क्यों उन पर रोष आता है। यदि वास्तव में उन पर रोष करता है तो भी तू उन जीवों का है और वे तेरे है।

गुरु नानक जी का यह पद स्पष्टतया अल्लाह को दिया गया प्रेम भरा उलाहना है जिन्हें कुरान शरीफ ने काफ़िरों के प्रति कदम-कदम पर कुपित होता दिखलाया है।

2. उधर पृष्ठ 724 पर गुरु अर्जुन देव जी महाराज कह रहे हैं :

"खुदि खसम खलक जहान अलह मिहरबान खुदाइ॥
दिनसु रैणि जि तुधु अराधे सो किउ दोजकि जाइ॥" (724 म 5)

अर्थात हे मेरे मेहरबान या कृपालु खुदा! तुम स्वयं ही सब जीवों के मालिक हो। ऐसी स्थिति में जो रात दिन तुम्हारी आराधना में लगे हैं वे नरक में क्यों जायेगें. अर्थात ऐसे भक्त कभी नरक में नहीं जायेगें

ग्रंथ साहिबजी का यह पद कुरान शरीफ़ में वर्णित नरक मिलने के कारणों को स्पष्ट चुनौती है।

नीचे दिये गये पद में काजी को अपनी काया में परब्रह्म परमात्मा की ज्योति जगाने का उपदेश दिया गया है, साथ ही महान ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का उपदेश देते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि जिस काजी का ब्रह्मचर्य स्वप्न में भी भंग नहीं होता वही काजी जन्म और मृत्यु के पार जासकता है :

"काजी सो जुं काइआ बीचारै ॥ काइआ की अग्नि ब्रह्मु परजारै ॥
सुपनै बिंदु न देई झरना ॥ तिसु काजी कउ जरा न मरना ॥" (1160 कबीर जी)

हमने इस लेख में बार-बार यह स्पष्ट किया है कि कुरान शरीफ़ के अनुसार अल्लाह पर ईमान लाना, अल्लाह के भेजे पैगम्बर हजरत मुहम्मद और उनके माध्यम से भेजी गई अल्लाह की आयतों पर निर्विवादित रूप से ईमान लाना या उनको मानना और कयामत या आखिरत के घटित होने पर अटूट विश्वास होना इस्लाम के मूलभूत शाश्वत सिद्धांत है। इनको मानने वाले ही ईमानवाले कहलाते है। और केवल उन्हीं के लिये ही अल्लाह ने बहिश्त या स्वर्ग बनाया है जिसमें वे सदा के लिये रहेगे। हमने कुरान शरीफ़ से सप्रमाण यह भी दिखलाया है कि इस्लाम में "ईमान" लाये बिना अच्छे कर्मों का अपने में कोई भी महत्व नही है। जकात, रोजा रखना, हज के लिये काबा जाना, "हलाल" के तरीके से मारे गये पशुओं आदि का मांस खाना इत्यादि भी इस्लाम के पवित्र और अनिवार्य अंग है। परन्तु ग्रंथ साहिबजी को यह "ईमान" भर लाने वाला सिद्धांत श्रेष्ठ कर्मों के अभाव में कतई स्वीकार नही है। और न ही ग्रंथ साहिबजी को कुरान शरीफ़ प्रतिपादित "रूह" और अल्लाह के परस्पर सम्बन्धों का तात्विक रूप स्वीकार है। परमात्मा और अल्लाह के लक्षणों की विवेचना में हमने यह भी स्पष्ट किया है कि जहाँ ग्रंथ साहिबजी के अनुसार परमात्मा प्रत्येक प्राणी के हृदय मे वास करता है, यही नहीं वह जड़ प्रतीत होने वाले सभी पदार्थो में भी पूर्ण रूप से व्याप्त है, वहां अल्लाह के बारे में कुरान शरीफ़ में ऐसी कोई भी कल्पना नहीं है। संत कबीर की खुली वाणी के माध्यम से ग्रंथ साहिबजी इस्लाम के इन मुख्य सिद्धांतों की सीधी आलोचना करते हुए कहते है :

1. **"बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न विचारै ॥**
   जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ कित मुरगी मारै ॥"
   मुला कहहु निआउ खुदाई ॥ तेरे मन का भरम न जाई ॥"(1350 कबीर जी)

कबीर जी कहते हैं कि वेद और कुरान को झूठा क्यों कहते हो। झूठा तो वह है जिन्होंनें तत्वतः इनका विवेचन नहीं किया है। सो हे मुल्ला! यदि तू कहता है कि खुदा सभी प्राणियों में है तो तू खुदा के नाम पर हलाल कर मुर्गी जैसे निरीह प्राणी की हत्या क्यों करता है। हे मुल्ला यह तेरे खुदा का कौन का न्याय है कि वह मुर्गी जैसे प्राणियों को अपने नाम पर हलाल करवाता हैं। हे मुल्ला! अभी तक तेरे मन का भ्रम नष्ट नहीं हुआ है। अर्थात खुदा के नाम पर पशुओं के वध के कारण तू अभी में ही भ्रमित रहा है

यहा हम पाठकों का ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट करेंगे कि इस्लाम के संदर्भ में

ग्रथ साहिबजी ने वेद और कतेब तथा हिन्दू और मुसलमान शब्दों की साथ-साथ चर्चा की है। इस साथ-साथ की चर्चा के पीछे छिपे मर्म की चर्चा हम आगे चलकर अलग से करेगे।

2. "पकरि जीउ आनिआ देह बिनासी माटी कउ बिसमिलि कीआ ॥
जोति सरूप अनाहत लागी कहु हलाल किआ कीआ ॥" (1350 कबीर)

हे मुल्ला। तुमने बलपूर्वक पशु को पकड़ कर छुरी से उसकी देह नष्ट कर दी अर्थात उसे अल्लाह के नाम पर बिसमिल कर हलाल कर दिया, तो तुमने अपने इस क्रूर कार्य से केवल मिट्टी को ही हलाल किया है। अरे मुल्ला ज्योति स्वरूप आत्म तो अन्य देह में चली गई, ओर मिट्टी-मिट्टी में मिल गई, सो बतलाओ तुमने क्या हलाल किया।

इस पद में ग्रंथ साहिबजी प्रत्येक जीव के पुर्नजन्म के सिद्धांत का भी प्रतिपादन कर रहे हैं जिसकी इस्लाम में कोई भी कल्पना नहीं है।

3. "किआ उजू पाक कीआ मुहु धोइआ किआ मसीति सिरू लाइआ ॥
जउ दिल महि कपटु निवाज गुजारहु किआ हज काबे जाइआ ॥"
(1350 कबीर)

हे मुल्ला। जल से हाथ, मुंह आदि धोकर यानी वजू करके पाक हुए तो क्या हुआ? यदि मस्जिद में जाकर धरती पर सिर लगाया तो क्या हुआ? तेरे दिल में कपट है तो तब तक नमाज पढने और हज करने के लिये काबा जाने से क्या हुआ? अर्थात जब तक हृदय पवित्र नहीं हुआ तब तक मस्जिद में जाकर नमाज पढ़ना और काबा जाकर हज की रसम पूरी करना व्यर्थ हे।

4. "तूं नापाक पाक नहीं सूझिआ तिस का मरमु न जानिआ ॥
कहि कबीर भिसति ते चूका दोजक सिउ मनु मानिआ ॥" (1350 कबीर जी)

ऊपर दिये इस्लाम सम्बन्धी चार पदों के तत्काल बाद ही ग्रंथ साहिबजी में कबीर जी कहते है।

"सुन संधिआ तेरी देव देवाकर अधपति आदि समाई ॥
सिध समाधि अंतु नहीं पाइआ लागि रहे सरनाई ॥
लेहु आरती हो पुरख निरंजन सतिगुर पूजहु भाई ॥
ढाठा ब्रह्मा निगम विचारै अलखुन लखिआ जाई ॥
ततु तेल नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥
जोति लाई जगदीस जगाइआ बूझै बूझनहारा ॥"
पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी ॥
कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरवानी ॥ (1350 कबीर जी)

555 कबीर जी कह रहे हैं कि हे देवाधिदेव परमात्मा! मैं अपने मस्तक की सुन्न समाधि में तेरी आरती कर रहा हूँ। हे प्रभू बड़े-बड़े सिद्ध अपनी समाधि में तुम्हारा अन्त नहीं पा पाते, इसलिये वे आपकी शरण में होकर रहते हैं। हे भाई! परम परमात्मा की आरती करो, उनका ज्ञान कराने वाले सदगुरु की आरती करो। स्वयं जगतपिता ब्रह्मा जी उनके द्वार पर खड़े वेदों के ज्ञान द्वारा उनका चिंतन करते रहते हैं, किन्तु तब भी उस अलख परमात्मा को लख नहीं पाते।

हे भाई मैंने तो तत्व ज्ञान रूपी तेल और नाम रूपी बाती बनाकर अपने देह रूपी

दीपक को प्रकाशित किया है, मैने परमात्मा में लौ लगाकर अपनी ज्ञान की ज्योति जलाई है। इस तत्व को कोई ज्ञानवान ही जान सकता है। मेरे अन्दर पांचों नाद अनहद वाणी के रूप मे बज रहे है। अब मैं सारंगपाणि भगवान विष्णु के साथ वास कर रहा हूँ। हे सर्वमय प्रभु इस प्रकार कबीर ने आपकी आरती की है।

इस्लाम के सम्बन्ध में पुनः आलोचनात्मक दृष्टि लिये ग्रंथ साहिबजी पृष्ठ 1374 पर कहते है :

1. **"कबीर मुला मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ॥**
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ॥"

भक्त कबीर जी कहते हैं कि हे मुल्ला! तू मीनार पर ऊँचे चढ़कर क्यों बांग दे रहा है। परमात्मा बहरा नहीं है। तू जिसे ऊँची आवाज में बांग देकर पुकार रहा है उसे तू अपने हृदय में ही सदैव विराजमान देख।

हम कुरान शरीफ के विश्लेषण में देख चुके हैं कि वहां दिल में अल्लाह के वास करने की कोई कल्पना नहीं है।

2. **"सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबे जाइ॥**
कबीर जा की दिल साबति नहीं ता कउ कहां खुदाइ॥"

हे संतोष से रहित शेख! तू हज करने के लिये क्यों काबा जाता है? जिसका हृदय शुद्ध नही है उसे भला खुदा कैसे मिल सकता है, उसके लिये खुदा कहीं भी नहीं है।

कुरान शरीफ के अध्ययन में हमने देखा कि न तो वहां रूह द्वारा अल्लाह से मिलने की कोई कल्पना है और न ही चित्त शुद्धि से अल्लाह की प्राप्ति की ही कोई कल्पना है।

3. **'कबीर अलह की करि बंदगी जिह सिमरत दुख जाइ॥**
दिल महि सोई परगटै बुझै बलंती नाइ॥' (1374)

कबीर जी कहते हैं कि अल्लाह की बंदगी कर जिसका स्मरण करने से दुख दूर हो जाते हैं। जब दिल में परमात्मा प्रकट हो जाता है तो दुख रूपी अग्नि बुझ जाती है। यहाँ ग्रंथ साहिबजी वर्णित अल्लाह के लक्षण कुरान वर्णित अल्लाह के लक्षणों से बिल्कुल भिन्न और विपरीत है, क्योंकि कुरान शरीफ में अल्लाह के किसी प्राणी के हृदय में प्रकट होने कोई कल्पना नहीं है।

4. **'कबीर जोरी कीए जुलमु है कहता नाउ हलालु॥**
दफतरि लेखा मांगीऐ तब होइगो कउनु हवालु॥' (1374)

कबीर जी कहते हैं कि अरे मुल्ला! जो तू बलपूर्वक की गई पशुओं की हत्या के जुल्म को हलाल कहता है तो बतला अब तेरे मरने के बाद तेरे कर्मों का हिसाब मांगा जायेगा तो तेरा क्या हाल होगा? अर्थात हलाल के नाम पर जो तू हत्यायें कर रहा है उसके लिये तू परलोक में भारी रूप से दण्डित होगा।

इस पद में इस्लाम के एक मुख्य सिद्धांत हलाल की स्पष्ट रूप में निन्दा की गई है, और साथ ही कर्म विधान की स्वतंत्र रूप में स्थापना की गई है जो कुरान शरीफ की मान्यता के विरुद्ध है

5. **कबीर खुबु खाना खीचरी जामहि अंम्रित लोनु ॥**
हेरा रोटी कारने गला कटावै कउनु ॥ (1374)

कबीर जी कहते हैं कि केवल नमक के साथ खिचड़ी का भोजन अमृत के समान है, पर हे मुल्ला यदि तू हलाल के नाम पर पशुओं का गला काटकर उनके मांस से अपने को तृप्त करेगा तो निश्चय ही ऐसा करने से दण्ड के रूप में तेरा भी गला काटा जायेगा। अर्थात तू हलाल के नाम पर की जाने वाली इस पशु हत्या से बच।

इस पद में भी "हलाल" की निन्दा और कर्म विधान की स्थापना की गई है।

पृष्ठ 1374 पर आये उपरोक्त इस्लाम सम्बन्धी पदों के तत्काल बाद के पद में ग्रंथ साहिबजी हरि और राम नाम की महिमा बतलाते हुए कहते हैं :

"कबीर गुरु लागा तब जानीऐ मिटै मोहु तन ताप ॥
हरख सोग दाझै नहीं तब हरि आपहि आपि ॥
कबीर राम कहन महि भेदु है तामहि एकु विचारू ॥
सोई रामु सभै कहहि सोई कउतकहार ॥ (1374 कबीर जी)

पृष्ठ 1375 पर पुनः कबीर जी की वाणी के माध्यम से ग्रंथ साहिबजी कुरान वर्णित हज के लिये काबा जाने, हलाल तथा इस्लाम के नाम पर दूसरों पर जुल्म करने के कुरान के सिद्धांतो की तीव्र आलोचना करते हुए कहते हैं :

1. **"कबीर हज काबे हउ जाइ था आगे मिलिआ खुदाइ ॥**
साई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किन्हि फुरमाई गाइ ॥" (1375)

कबीर जी कहते हैं कि मै तो हज करने के लिये काबा जा रहा था कि आगे मार्ग मे खुदा मिल गया। मुझे अपने से मिलने जाते देख साई (खुदा) मुझे लड़ पड़ा अर्थात मेरी अज्ञानता पर अप्रसन्न हो गया और कहा कि किसने तुझसे कहा है कि में के [illegible] काबा मे ही रहता हूं, तथा अन्य स्थानों पर वास नहीं करता।

इस पद में परमात्मा की सर्व व्यापकता का उपदेश है और सीमित उपासना की निन्दा है। कुरान शरीफ में परमात्मा के सर्वव्यापी और घट-घट वासी होने की कोई कल्पना नही है। साथ ही इस पद में हज को एक मुख्य सिद्धांत मानने की कठोर आलोचना भी है।

2. **"कबीर हज काबै होइ होइ गइआ केती बार कबीर ॥**
सांई मुझ महि किआ खता मुखहू न बोले पीर ॥"

कबीर जी कहते हैं कि मैं कई बार काबा हज करने गया, लेकिन हे प्रभु, मेरा क्या अपराध हो गया कि जो आप मुझसे बात नहीं करते।

इस पद में पिछले पद के मुकाबले काबे की हज यात्रा की तीव्र आलोचना है, क्योंकि यहा हज यात्रा के बाद परिणाम यह निकला कि खुदा अधिक निकट आने के बजाय उसने इस प्रकार की सीमित उपासना वाले, अपने मानने वालों से, बोलना ही बंद कर दिया। यानि उनसे मानो और भी दूर हो गया।

3. **"कबीर जीअ जु मारहि जोरु करि कहते हहि जु हलालु॥**
दफतरु दई जब काढिहै होइगा कउनु हवालु॥"

4. "कबीर जोरू कीआ सो जुलसू है लेइ जबाब खुदाइ॥
दफतरि लेखा नीकसै मार मुहै मुहि खाई॥" (1375)

55 6 ऊपर दिये दोनों पदों का अर्थ स्पष्ट है, कि दोनों में ही हलाल द्वारा पशु हत्या और दूसरों पर जुल्म की निन्दा की गई है और साथ इन दोनों अपराधों के लिये परलोक में भारी दण्ड मिलने की बात भी दर्शायी गई है। पृष्ठ 1374 और पृष्ठ 1375 पर इन्हीं भावों के पदो की पुनरावृत्ति इस बात को पूरी तरह स्पष्ट करती है कि गुरुओं को कुरान शरीफ वर्णित बलि प्रथा कतई स्वीकार नहीं है।

ग्रंथ साहिबजी के पृष्ठ 1364 से लेकर पेज 1377 तक में कबीर जी के 243 श्लोक आये हैं जिनमें उपरोक्त इस्लाम सम्बन्धो पद भी शामिल है। इनमें एक अन्तिम श्लोक बडा मार्मिक है। इसमें स्पष्ट कहा है कि जो हरि नाम को छोड़ कर अन्य किसी की आस करते हैं वे अवश्य ही दोजख में जायेगें। इस पद की गम्भीरता हम इस बात से आंक सकते है कि इसमें कबीर जी संत रविदास जी के सत्य वचन को प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत कर रहे है।

"हरि सा हीरा छाडि कै करहि आन की आस॥
ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास॥"

(1377 कबीर जी लोक नं. 242)

जहां कुरान शरीफ में अल्लाह को न मानने वालों के लिये केवल दोजख या नरक का विधान है, वहां कबीर जी के इस पद के अनुसार श्री हरि को छोड़ कर जो सांसारिक वस्तुओं की आस लगाते हैं वे अवशय नरक में जायेगें अपनी इस बात के समर्थन में कबीर जी कहते है कि संत रविदास जी ने भी यही सत्य बात कहीं है। इस शुद्ध वैष्णव भावयुक्त पद में नरक के स्थान पर दोजख शब्द के प्रयोग से यह सिद्ध होता है कि यह श्लोक कुरान शरीफ वार्णित ईमानवालों या मुसलमानों को ही सम्बोधित है।

अब हम ग्रंथ साहिबजी मे आए इस्लाम सम्बन्धी उन पदों को दे रहे है जिनका वास्तविक अर्थ कुछ और है, परन्तु जो सरसरी निगाह से पढ़ने पर ऐसे लगते हैं मानों उनमे इस्लाम की प्रशंसा की गई हो, या फिर मानों सिक्ख गुरुओं और अन्य संतों ने इन पदों मे वेद शास्त्रों और कुरान को एक ही सम धरातल पर रख दिया हो, किन्तु बात इनके बिल्कुल विपरीत हैं हम इन पदों को कुरान शरीफ में वर्णित इस्लामी सिद्धांतों की कसौटी पर कस कर देखेगें और साथ ही इन पदों का वेदांत के सिद्धांतों के आधार पर भी गहराई से विश्लेषण करेगे।

ऊपर हमने कुरान शरीफ के विस्तार पूर्वक विश्लेषण में देखा कि किताब या कुरान शरीफ में आई आयतें स्वयं अल्लाह की ही वाणी या आदेश हैं, उनमें सिवाय स्वयं अल्लाह के और कोई भी व्यक्ति या शक्ति परिवर्तन नहीं कर सकती। इनको न मानने वाला कोई भी व्यक्ति ईमानवाला या मुसलमान नहीं कहला सकता। ऐसा व्यक्ति काफिर ही कहलायेगा और इस लोक में सजा पाने का दोषी होने के अलावा उसे अल्लाह की तरफ से भारी सजा के तौर पर हमेशा के लिये दोजख या नरक में यातना सहनी पड़ेगी। दूसरे शब्दों में कुरान शरीफ में वर्णित जो भी रोजा, नमाज, हज, हलाल, आदि के नियम हैं तथा जो भी पैगम्बर हजरत मुहम्मद के लिये मर्यादाए बनाई गई है वे सब अल्लाह के आदेश होने के कारण शाश्वत हैं

जो भी सृष्टि की उत्पत्ति और कयामत के सिद्धांत हैं, जो दोजख और बहिश्त के स्वरूप कुरान शरीफ़ में वर्णित हैं, जो रूह और अल्लाह के बीच आपसी मर्यादाएं कुरान शरीफ़ ने स्थापित की हैं, जो कुछ भी रूह के अन्तिम लक्ष्य रूप में बहिश्त या दोजख के बारे में कहा गया है वह सब कुरान शरीफ़ के अनुसार अपरिवर्तनीय है। अपने इस लेख में कुरान शरीफ़ के विशलेषण में जो-जो बातें अल्लाह ने अपनी आयतों के माध्यम से स्थापित की हैं वे सभी अपरिवर्तनीय हैं, और शाश्वत हैं। इस्लाम की इन मान्यताओं को यदि कोई परिवर्तनीय बतलाता हैं, उनको अपनी ओर से नये अर्थ प्रदान करता है या उनको अन्य धर्मों की मान्यताओं के समकक्ष रखता है तो ये सभी कुरान शरीफ़ की दृष्टि में अक्षम्य और दण्डनीय अपराध है, और इस प्रकार की बात कहने वाला व्यक्ति एक दुष्ट काफ़िर के समान इस्लाम का प्रबल शत्रु है।

55 7 दूसरी ओर जैसा कि स्वामी विवेकानन्द ने बार-बार कहा है कि वेद ही इस विश्व में ऐसा धर्म-ग्रंथ है जो कहता है कि मेरे से ऊपर उठो। वेद परमात्म मार्ग में निष्काम एवं विशुद्ध कर्मों के द्वारा चित्त शुद्धि में सहायक है, तत्वज्ञान की प्राप्ति में सहायक हैं। किन्तु ब्रह्म ज्ञान उदय हो जाने के पश्चात वेद शास्त्रों का ऐसे ज्ञानी पुरुष के लिये अपने आप में कोई महत्व नही रह जाता है। जैसा कि महोपनिषद के अध्याय तीन में आता है :

"ज्ञानी पुरुष के लिये शास्त्र भारस्वरूप हैं, रागी पुरुष के लिये ज्ञान भारस्वरूप है, अशान्त पुरुष का मन भारस्वरूप होता है, और जो आत्मज्ञ नहीं हैं उनके लिये यह शरीर भाररूप है।"

गीता के द्वितीय अध्याय में इस गूढ़ विष्य को भगवान कृष्ण ने इस प्रकार स्पष्ट किया है -

"हे अर्जुन! सब वेद तीनों गुणों के कार्य रूप संसार को विषय करने वाले है इसलिये तु सुख-दुख आदि द्वन्द्वों से रहित, सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति और उसकी रक्षा को चाहने वाला न बन, तू तो केवल आत्मवान यानी आत्मपरायण बन। क्योंकि सब ओर से परिपूर्ण जलाशय के प्राप्त होने पर मनुष्य का जितना प्रयोजन छोटे जलाशय में रह जाता है, उसी प्रकार ब्रह्म को जानने वाले व्यक्ति का भी वेदों में उतना ही प्रयोजन रह जाता है। अर्थात जैसे बड़े जलाशय के प्राप्त हो जाने पर जल के लिये छोटे जलाशय की आवश्यकता नही रह जाती, वैसे ही ब्रह्मज्ञान से उत्पन्न ब्रह्मानन्द की प्राप्ति होने पर सुख के लिये वेदों की आवश्यकता नहीं रह जाती है।" (गीता : अध्याय दो-श्लोक 45, 46)

परम भागवात श्री रामानुजाचार्य ने अपने गीता भाष्य में दूसरे अध्याय के श्लोक 46 का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया है।

"जैसे सबके लिये बनाये हुए और सब ओर से परिपूर्ण जलाशय में प्यासे मनुष्य का जितना प्रयोजन होता है, वैसे ही वेदार्थ जानने वाले ब्रह्मण को, वैदिक मुमुक्ष को सब वेदों मे से जितना मोक्ष साधन विषयक वर्णन है, उतना ही ग्रहण करना चाहिये, दूसरा नहीं है।"

गीता के आठवें अध्याय के अन्तिम श्लोक 28 में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को पुन. ब्रह्मज्ञान की महिमा बतलाते हुए कहा

"योगी पुरुष ज्ञान के रहस्य को तत्व से जानकर अर्थात भगवान के माहात्म्य को तत्वतः समझकर वेदों, यज्ञों और तपों तथा दानों में जो पुण्य फल दिखलाया गया है, उन सबको लांघ जाता है अर्थात उनसे ऊपर उठकर परम आदि स्थान को प्राप्त हो जाता है"

वेद और शास्त्र परमात्म की प्राप्ति में साधन मात्र हैं, और लक्ष्य की प्राप्ति के बाद इनका कोई विशेष प्रयोजन नहीं रह जाता, यह बात मुण्डकोपनिषद में इस प्रकार आती है :

"ब्रह्म को जानने वाले इस प्रकार निशचय पूर्वक कहते आये हैं कि दो विद्याएं ही जानने योग्य हैं, एक परा और दूसरी अपरा भी।" (मुण्डकोपनिषद 1/1/4)

"उन दोनों में से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्वेद शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष ये (सब तो) अपरा विद्या (के अन्तर्गत हैं) तथा जिससे अविनाशी परब्रह्म तत्व से जाना जाता है वह परा विद्या है।" (मुण्डकोपनिषद 1/1/5)

558 बार-बार वेद शास्त्रों मे और पुराणों में, आता हैं कि केवल शास्त्र ज्ञान से परमात्मा को नहीं प्राप्त किया जा सकता है। इन सबकी सहायता से जब वैराग्य, भक्ति, तप, और गुरु कृपा से ज्ञान का उदय होता है तभी परम पद की प्राप्ति होती है। उस अवस्था में ब्रह्म भाव को प्राप्त जीव सर्वज्ञ हो जाता है और उसकी दृष्टि में वेद शास्त्रों का तात्विक दृष्टि से कोई महत्व नहीं रह जाता है। इस विषय को और अधिक स्पष्ट करने के लिये हम टेलीफोन का लौकिक उदाहरण ले सकते हैं। अपने से दूर अवस्थित प्रिय से सम्बन्ध स्थापित करने मे टेलीफोन बहुत ही आवश्यक होता है और स्वयं में बड़ा प्रिय भी। उसकी घंटी की आवाज भी बड़ी प्रिय लगती है, शायद प्रिय का ही संदेश आया हो। परन्तु जब प्रिय ही अपने पास विराज गया हो तब प्रिय की प्राप्ति में टेलीफोन निर्रथक हो गया, उस समय तो उसकी बजती घंटी कटु लगने लगती हैं, अपने और पिय के बीच एक व्यर्थ की सी मानों बाधा हो जाती है। ठीक यही गति ब्रह्मज्ञान के बाद वेद शास्त्रों की हो जाती हैं और यह बात स्वयं वेद बार-बार समझाते है—फल प्राप्ति के पश्चात उस पेड़ के पत्तों को गिनने से क्या लाभ।

वेद-ज्ञान की इस परम्परा को भारत के सभी सिद्ध-साधकों और संतों ने सदैव अपनाया है, और इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये अपनाया है कि साधक शास्त्र वासना मे, पाडित्य में न डूब जाय और इस प्रकार अपने परमात्म प्राप्ति के मार्ग से भटक न जाये।

इसलिये ग्रंथ साहिबजी में सिक्ख गुरुओं और अन्य संतों ने जब-जब अपने शिष्यो और जन साधारण को शास्त्र वासना से सावधान किया, या जाति, कुल वर्ण और अपने सम्प्रदाय, या हिन्दू नाम आदि में मिथ्या अभिमान के प्रति आगाह किया तो वह सर्वथा शास्त्रानुकूल था, वेदानुकूल था। क्योंकि इस प्रकार की संकीर्ण मानसिक अवस्था से परमात्मा की प्राप्ति असम्भव है। परन्तु जब ग्रंथ साहिबजी वेद-शास्त्रों की इस अवधारणा को कतेब यानी कुरान शरीफ पर भी लागू करते हैं, कुरान प्रतिपादित सिद्धांतों पर आरोपित करते हैं तब वह निशचय ही व्यवहार में और स्वतः इस्लाम की भारी आलोचना का स्वरूप धारण कर लेते है। यह इसलिये कि हम इस समस्त आलेख में यह सप्रमाण दिखला चुके हैं कि ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ में प्रतिपादित सिद्धांत एक दूसरे के अत्यन्त विपरीत है।

इस विषय की चर्चा हम "जपजी" से आरम्भ कर लें गुरु नानक देव जी महाराज

रचित जपुजी से ही ग्रंथ साहिबजी की शुरूआत होती है, और आज लाखों श्रद्धालु इसका नित्य प्रति पाठ करते है। भगवत चर्चा से ओतप्रोत जपुजी में इस्लाम चर्चा इस प्रकार आती है·

"सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥" (5 जपुजी)

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि कुरान, इंजेल, तौरात आदि मुसलमान, ईसाई और यहूदी धर्म ग्रंथों में जो अलग-अलग 18000 सृष्टियों की कल्पना है वह सही नहीं है। असली, या सत्य बात तो यह है कि एक परमात्म-तत्व (असुलू इकु धातु) ही इन सब में पूर्ण रूप से व्याप्त है, एक परम सत्य ही इन सब सृष्टियों के रूप में सजा हुआ विविध लीलायें कर रहा है।

55 9 ग्रंथ साहिबजी में कबीर जी का एक इस्लाम सम्बन्धी बहुत ही प्रचलित पद है, जिसका गायन पाठकों ने सुना भी होगा। अक्सर यह पद इस्लाम की प्रशसा के रूप में लिया जाता है। परतु वास्तविकता में यह प्रशनात्मक पद कुरान के सिद्धांतों की खुली आलोचना है। आइये इस्लाम सम्बन्धी इस महत्वपूर्ण पद का विशलेषण करें। पद इस पकार है—

"अवलि अलह नूर उपाइआ कुदरति के सब बंदे ॥
एक नूर से सभु जगु उपजिआ कउनु भले को मंदे ॥
लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥
खालिक खलक खलक महि खालिकु पूरि रहियो सब ठांई ॥
माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै ॥
ना कछु पोच माटी के भांडे न कछु पोच कुंभारै ॥
सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ॥
हुकमु पछानै सु एको जाने बंदा कहीऐ सोई ॥
अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुड़ु दीना मीठा ॥
कहि कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजनु डीठा ॥ (1349/50 कबीर जी)

पाठक देखेंगे कि यह पद आरम्भ से अंत तक ब्रह्मज्ञान के सिद्धांत से पूरित है। इस पद के पूर्व के इस्लाम सम्बन्धी पद कबीरजी द्वारा काजी को सम्बोधित हैं। इस पद में कबीर जी प्रश्न उठाते हुए कहते हैं कि हे काजी! यदि अल्लाह के नूर से उत्पन्न कुदरत के ही पैदा किये सब मनुष्य या बंदे हैं, तो फिर एक ही नूर से समस्त जगत की उत्पत्ति होने के कारण कौन भले या ऊंचे हैं। और कौन मंदे या नीचे हैं। या दूसरे शब्दों में ईमानवाला या मुसलमान ऊचा कैसे हुआ और गैर ईमानवाला या काफिर मंदा या नीचा कैसे हुआ। इस पद की दूसरी पक्ति में आया "कउनु" शब्द इस समस्त पद को प्रश्नात्मक बना देता है।

हे मेरे काजी भाई! तुम भ्रम में मत भूलो, क्योंकि परमात्मा समस्त सृष्टि में उसके अन्तरयामी रूप में पूर रहा है और समस्त सृष्टि परमात्मा में पूर रही हे अर्थात परमात्मा इस सृष्टि में ओत-प्रोत है। परमात्मा और सृष्टि के एक दूसरे में पूरित होने का अर्थ है कि सृष्टि परमात्मा से भिन्न नहीं है, बल्कि तत्वतः परमात्म रूप ही है, ठीक उसी प्रकार जैसे जल, तरग, फेन और बुदबुदा जल से भिन्न नहीं होते। ग्रंथ साहिबजी कहते है :

"जल तरंग अरू फेन बुदबुदा जल से भिन्न न होइ ॥
इह परपचु पारब्रहमु की लीला बिचरत आन न कोई ॥" 485

"मै बहु विधि पेखिओ दूजा नाही रे कोऊ ॥" (535)

इस प्रकार कबीर के इस पद के दूसरे चरण का अर्थ कुरान शरीफ़ की मान्यता से तत्वतः बिलकुल भिन्न और विपरीत है।

इस पद के तीसरे चरण का अर्थ भी शुद्ध वेदान्तिक है। ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि जिस प्रकार कुम्हार एक ही मिट्टी से अनेक प्रकार के मिट्टी के बर्तन बनाता है उसी प्रकार सृष्टिकर्ता ने समस्त सृष्टि एक ही तत्व से निर्मित की हैं, और वह तत्व भी परमात्मा से भिन्न न होने के कारण परमात्म रूप ही है। इसलिये हे काजी। तू न तो सृष्टि में ही और न ही उसके बनाने वाले में ही कोई दोष दर्शन कर।

हे भाई! सब में वह सत्य स्वरूप परमात्मा विद्यमान है, जो इस समस्त सृष्टि का संचालन कर रहा है। जो इस परम सत्य को तत्वतः जानता है वही सच्चे अर्थ में भगवत जन कहलाने योग्य हैं :

हे काजी! यह सर्वव्यापी अल्लाह मन और इन्द्रियों की पहुचँ से परे होने के कारण अलख हैं, इन्द्रियगम्य नहीं है। कबीर जी कहते हैं कि हे काजी! मुझे तो अपने गुरु से यह मीठे गुड़ के समान अमृतमय ज्ञान मिला है जिससे मेरी समस्त शंकाएं दूर हो गई हैं, और मेरे सब भ्रम नष्ट हो जाने से, मेरा अज्ञान नष्ट हो जाने से अब मैं सर्वत्र और सब प्राणियों में उस निरंजन परमात्मा के दर्शन कर रहा हूँ।

इस पद के विशलेषणात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह पद वेदांत का पुरजोर प्रतिपादन कर रहा है, और साथ ही साथ इस्लाम की आलोचना भी। इस पद के अन्तिम चरण में तो कबीर जी अप्रत्यक्ष रूप से इस्लाम वालों का आवाहन कर रहे हैं कि वो उनके गुरु द्वारा दिये गये मीठे गुड़ रूपी ज्ञान को ग्रहण करके अल्लाह को सर्वव्यापी रूप में ही देखें। निश्चित ही इस पद में वर्णित अल्लाह के लक्षणों का कुरान शरीफ़ में कोई स्थान नहीं है। यह बात इस पद के तत्काल पहले आए पूर्व पद से और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है

"एते अउरत मरदा साजे ए सभ रूप तुम्हारे ॥
कबीर पूंगरा राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥
कहत कबीर सुनहु नर नरवै परहु एक की सरना ॥
केवल नामु जपहु रे प्रानी तब ही निहचै तरना ॥" (1349)

जैसा कि हमने कुरान शरीफ़ के अध्ययन में देखा कि इस्लाम में यह असम्भव है कि कोई ईमानवाला यह कहे कि वह अल्लाह का बंदा है और राम या अन्य किसी और का भी है, ऐसा कहने वाला तो वहां काफ़िर कहलायेगा और दण्ड का पात्र होगा। और न ही इस्लाम में कोई गुरु ही स्वीकार है और न भगवत नाम जप के आसरे इस भव सागर से तरने की कोई कल्पना है।

56.0 हमने वेद प्रमाण से ऊपर बतलाया कि केवल मात्र वेद-शास्त्रों के पढ़ने मात्र से परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती, मुक्ति नहीं हो सकती, मुक्ति ज्ञान के अधीन है। वेद शास्त्र चित्त शुद्धि के द्वारा तप और दम द्वारा और निष्काम कर्म द्वारा ज्ञान प्राप्ति में मुख्य साधन हैं इसमें प्रमाण स्वरूप हमने मुण्डकोपनिषद के प्रथम मुण्डक के प्रथम खण्ड के चौथे

और पांचवे मंत्रों को उधृत किया था। इन मंत्रों के अनुसार वेद-शास्त्र आदि "अपरा" विद्या के अन्तर्गत आ जाते हैं, "तथा जिससे वह अविनाशी परब्रह्म तत्व से जाना जाता है वह परा विद्या है।" (मुण्डकोपनिषद1/1/5)

इसलिये जब ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि केवल वेद, शास्त्र और स्मृतियों के पढ़ने से मुक्ति नहीं हो सकती तो तब वो वेद सम्मत बात ही कह रहे है। किन्तु जब ग्रंथ साहिबजी यह कहते है कि कतेब पढ़ने से भी मुक्ति नहीं होती तो यह बात कुरान सम्मत नहीं है। पहली बात तो यह है कि कुरान शरीफ में, जैसा कि हमने कुरान शरीफ के अध्ययन से ऊपर देखा मुक्ति या जीव द्वारा अल्लाह की प्राप्ति की कोई भी कल्पना नहीं है। दूसरी बात यह कि यदि कुरान शरीफ वार्णित जीव के अन्तिम लक्ष्य बहिश्त की प्राप्ति को मुक्ति मान लें तो भी यह असम्भव है कि यह बहिश्त अल्लाह या कुरान और पैगम्बर को मानने वाले को न मिले। जब ग्रथ साहिबजी कतेब को मानने वाले और उसके अध्ययन करने वालों को यह कहते है कि कुरान मानने से तुम्हारी मुक्ति नहीं हो सकती तो यह स्पष्टतः इस्लाम की तीव्रतम आलोचना है। गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते है :

1. **"वेद कतेब सिम्रित सभि सासत इन्ह पडिया मुकित न होई ॥**
   एक अखरू जो मुखि जापै तिस की निर्मल सोई ॥" (747 म 5)

यही नहीं इस पद की दूसरी पंक्ति में गुरु अर्जुन देव जी तो निर्णय पूर्वक यह कह रहे है कि ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति तो गुरु से प्राप्त भगवत नाम जप के द्वारा ही सम्भव है। और जैसा कि ऊपर बार-बार कह चुके हैं इस बात की कुरान शरीफ में कोई भी कल्पना नहीं है।

2. **"वेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरू न जाइ ॥**
   टुकु दमु करारी जउ करहु हाजिर हजुरि खुदाइ ॥" (727 कबीर जी)

ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि वेद, कुरान आदि के पढ़ने से मन की चिन्ता या द्वद समाप्त नहीं होता। यदि जीव क्षण मात्र के लिये अपने मन को एकाग्र करले तो उसको खुदा प्रत्यक्ष दिखाई देगा।

यह पद भी कुरान से खुदा की प्राप्ति सम्भव नहीं दिखलाता, इसलिये आलोचनात्मक हैं। दूसरी पंक्ति में यह पद मन की एकाग्रता द्वारा खुदा के प्रत्यक्ष दर्शन को सुलभ बतला रहा है, परन्तु यह बात तो कुरान शरीफ को कतई स्वीकार नहीं है।

3. **"अलाह पाक पाक है सक करउ जे दूसर होइ ॥**
   कबीर करमु करीम का उहु करै जानै सोइ ॥" (727 कबीर जी)

56 1 हे भाई! अल्लाह पवित्रतम हैं। सन्देह तो तब करूँ यदि उसके अतिरिक्त अन्य कोई हो। भक्त कबीर जी कहते हैं कि कृपालु प्रभु की कृपा से ही कोई व्यक्ति इस रहस्य को समझ सकता है।

निःसंदेह इस सिद्धांत का कुरान शरीफ में कोई स्थान नहीं है, यह तो उसकी मान्यता के विपरीत है। यहां ग्रंथ साहिबजी वेदांत के या अपने इस मूल भूत सिद्धांत की, कि ब्रह्म की सत्ता के अतिरिक्त अन्य कोई सत्ता ही नहीं है. स्थापना कर रहे है। यहां अल्लाह शब्द कुरान शरीफ के "अल्लाह" शब्द से बिल्कुल भिन्न है यहां अल्लाह शब्द ब्रह्म के लक्षण ग्रहण किये

हुए हैं। जैसा कि ग्रंथ साहिबजी कहते हैं :

"करण कारण प्रभु एक है दूसर नाहीं कोइ ॥"
"नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महि अलि सोइ ॥" (276)
"इह परपंचु पारब्रह्म की लीला विचरत आन न कोइ ॥" (485)
"तुझ बिनु दुजा अवरू न कोई सभु तेरा खेलु अखाडा जीउ ॥" (103)
"हम किछु नाही एकै ओही ॥ आगे पाछे एको सोई ॥" (391)
"थानि थनतरि तू है तू है इको इक वरतावणिआ ॥" (131)

56.2 कुरान शरीफ के अध्ययन से हम देख चुके हैं कि इस्लाम में न तो जीव द्वारा अल्लाह की प्राप्ति की कोई कल्पना है और न ही ज्ञान द्वारा उसे साथ अभेद हो जाने की। परन्तु कबीर जी ने ग्रंथ साहिबजी में दिये अपने "बाबन अखरी" पदों में अल्लाह का वेदान्तिक स्वरूप ग्रहण किया है। संस्कृत की वर्णमाला के बावन अक्षरों के "अ" अक्षर पर अपने तीन पदों में कबीर जी ने अल्लाह शब्द की और इस्लाम की चर्चा इस प्रकार की है :

1. "अलह लहउ तउ किआ कहउ त को उपकार ॥
बटक बीज महि रवि रहिओ जा को तीन लोक बिसथार ॥" (340 कबीर जी)

कबीर जी कहते हैं यदि मैं अल्लाह को प्राप्त कर लूं तो इसके बारे में लोगों को क्या बतलाऊं। अर्थात परमात्म तत्व अनिर्वचनीय है, वह बतलाने में नही आ सकता। और यदि मैं अपना आत्मानुभव बतलाउं भी तो उसे बतलाने में किसी का क्या उपकार या भला हो सकता है। अर्थात अनुभूति का विषय होने के कारण आत्म ज्ञान का यह गूढ़ विषय केवल सुनने मात्र से समझ में नही आ सकता। जैसे बटका विशाल वृक्ष अपने नन्हें से बीज में समाया हुआ है वैसे अल्लाह हृदय में स्थित होने के साथ ही समस्त त्रिलोक अर्थात पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक में भी समाया हुआ है।

इस पद में वर्णित परब्रह्म के लक्षणों को ही कबीर जी ने अल्लाह नाम पर उतारा है। इनका कुरान वर्णित अल्लाह के कतई सम्बन्ध नहीं है।

वेदों में आता है परमात्मा सूक्ष्म से अति सूक्ष्म और महान से भी महान है।

"अणोरणीयान्महतो महीयायानात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।"

(कठोपनिषद्। 2/20)

2. "वह चलते हैं, वह नहीं चलते, वह दूर से भी दूर है, वह अत्यन्त समीप हैं, वह इस समस्त जगत के भीतर परिपूर्ण है, और वह इस जगत के बाहर भी है।" (ईशावास्योपनिषद-5)

3. ऊपर दिये गये में वट बीज के उदाहरण का मूल छान्दोग्यपनिषद के छटे अध्याय के बारहवें खण्ड में है। "तत्त्वमसि" के महावाक्य का रहस्य पुनः-पुनः समझाते हुए महर्षि आरुणि अपने पुत्र श्वेतकेतु से कहते हैं कि तू इस सामने वाले वट वृक्ष का फल ले आ, और इसे फोड़। फल के फोड़ने पर श्वेतकेतु से पूछते हैं कि तू "इसमें क्या देखता है।" श्वेतकेतु कहता है कि "भगवन। इसमें ये अणु के समान दाने हैं।" पिता कहते हैं "अच्छा वत्स। इनमें से एक को फाड़।" श्वेतकेतु कहता है—फोड दिया भगवान पिता पूछते हैं "तू इसमें क्या

देखता है।" श्वेतकेतु उत्तर देता है—"कुछ नहीं भगवन।" तब उससे पिता आरुणि कहते है—"हे सोम्य। इस वट वृक्ष की जिस अणिमा को तू नहीं देखता सोम्य! उस अणिमा का ही इतना बड़ा वट वृक्ष खड़ा हुआ है। हे सौम्य, तू (इस कथन में) श्रद्धा कर। वह यह जो अणिमा है श्वेतकेतु, वही तू है।" (छान्दोग्यपनिषद् 6/12/1-3)

इस प्रकार "वटक बीज महि रवि रहिओ जा को तीन लोक बिसथार" ॥ यह जो ग्रथ साहिबजी की ऊपर दी गई वाणी कह रही है कि जो वट वृक्ष के नन्हें से दाने में है वही परमात्मा तीनों लोकों में भी व्याप्त है और वही मनुष्यों के हृदय में भी स्थित है, सो इस गूढ रहस्य को प्रत्येक व्यक्ति को कैसे समझाया जाय। सो अल्लाह का इस पद में वर्णित स्वरूप कुरान वर्णित अल्लाह के स्वरूप से बिल्कुल भिन्न होने के कारण इस्लाम को सर्वथा अमान्य है या यह कहिये कि गुरुओं ने कुरान शरीफ वर्णित अल्लाह के लक्षणों को न स्वीकार करके अल्लाह को वेदांत वर्णित लक्षणों के साथ ही स्वीकार किया है।

बाबन अखरी में "अ" अक्षर पर इस्लाम सम्बन्धी दूसरा पद इस प्रकार है :

"अलह लहंता भेद छै कहु कछु पाइओ भेद ॥
उलटि भेद मनु बेधिओ पाइओ अभंग अछेद ॥" (340 कबीर जी)

56 3 कबीर जी कहते हैं कि जब अल्लाह की प्राप्ति हुई तो मेरी भेद-बुद्धि या द्वैत-भाव नष्ट हो गया और मुझे यथार्थ ज्ञान का भेद यानी रहस्य ज्ञात हो गया। जब मन ब्रह्म विषयों से हट कर अन्तर हृदय में स्थित परमात्मा की ओर ऊलट कर उसके प्रेम बंधन में बंध जाता है तब उसे उस अविनाशी और सब भेदों से परे परम पद की प्राप्ति हो जाती है।

इस प्रकार जीव द्वारा सब भेदों से परे अल्लाह की प्राप्ति और उसके साथ उसका एकाकार हो जाना कुरान वर्णित सिद्धांतो के सर्वथा विपरीत है।

"अ" अक्षर के अन्तर्गत अपने तीसरे पद में संत कबीर जी कहते हैं :

"तुरक तरीकति जानीऐ हिंदू वेद पुरान ॥
मन समझावन कारने कछुअक पडीए ज्ञान ॥ 340 कबीर जी

मुसलमान कहते हैं कि कुरान और शरीयत को जानो और हिन्दु कहते हैं कि वेद पुराणों को। परन्तु कबीर जी कहते हैं कि मेरे विचार से मन को वश में करने के लिये सबके परमार्थ ज्ञान का आश्रय लेना चाहिये।

इस पद में ग्रंथ साहिब धर्म ग्रंथों को इसलिये नकार रहे हैं कि इनके द्वारा मन को वश में नहीं किया जासकता। मन को जीतने के लिये तो ब्रह्म ज्ञान का ही आश्रय लेना होगा। इसके बाद का 'उत्तर' पद इस प्रकार है :

ओअंकार आदि में जाना ॥ लिखि अरू मेटे ताहि न माना ॥
ओअंकार लखै जउ कोई ॥ सोई लखि मेटणा न होई ॥ (340 कबीर)

इस्लाम के नाम पर हिन्दुओं का बलपूर्वक धर्म परिवर्तन मुस्लिम शासन काल में एक दैनिक घटना बन गई थी। दोनों समाजों में एक नित्य का घोर संघर्ष छिड़ा हुआ था—मुसलमानों की ओर से अपनी धर्मान्धता के कारण और हिन्दुओं की ओर से अपना सभी कुछ बचाने के प्रयास में ऐसे घोर और परम जोखिम भरे काल में सिक्ख गुरुओं और कबीर जैसे सतो ने

इस्लाम वालों को समझाने के लिये जहाँ निर्भय होकर इस्लाम के सिद्धांतो को एक व्यापक स्वरूप प्रदान करने का प्रयत्न किया वहाँ वे मुसलमानों को परमात्मा ज्ञान का आश्रय लेकर स्वयं कुरान शरीफ़ से ऊपर उठने का, मुसलमानियत से ऊपर उठने का उपदेश देने में भी नही हिचके।

जैसाकि हमने शास्त्र प्रमाण से बतलाया ज्ञान होने पर तो स्वयं ज्ञान मार्ग का उपदेश देने वाले शास्त्र निरर्थक हो जाते हैं, और जाति, कुल, गोत्र, विद्या, ज्ञान आदि मानों कोई अर्थ नहीं रखते, मानों स्वप्न के समान जागने पर अपने में ही लीन हो जाते हैं।

56 4 जहां तक हिन्दु नाम का प्रश्न है, यह सर्वविदित है कि यह नाम कोई वेद-शास्त्रों का दिया हुआ नही है। पुराणों में कभी यह देश आर्यावर्त के नाम से, कभी जम्बूद्वीप के नाम से, कभी सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी क्षत्रियों के नाम से जाना जाता रहा है। महाभारत के अनुसार दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र महायशस्वी एवं शौर्यसम्पन्न भरत के नाम से यह देश अपने वर्तमान भारत नाम से विख्यात हुआ। और लगभग 2000 से 2500 वर्ष पूर्व से विदेशियों के कारण ही यहां के लोग "हिन्दु" नाम वाले कहलाये और इस देश का भारत के समान ही 'हिन्दुस्तान' नाम पड़ा।

परन्तु बदलते नामों की इस युग-कल्प गाथा में भारतवासियों की एक अमिट और अक्षुण्ण पहचान हर काल में रही है और आज भी है। और वह यह कि यह देश ऋषि-मुनियों का देश है, सिद्ध-साधकों का देश है, यह वह धरती है जहां प्रत्येक जीव को परमात्मा का सनातन एवं अभिन्न अंग माना जाता है, और जहां प्रत्येक जीव को परमात्मा तक पहुंचने का स्पष्ट संदेश एवं आदेश है। इस देश में अधम से अधम कहलाने वाला ऐसा कोई भी हिन्दु नही है जिसका गोत्र किसी न किसी महान ऋषि के नाम पर न हो, या यों कहें कि वह गर्वपूर्वक अपने को इन ब्रह्मज्ञानियों की संतान न मानता हो। हिन्दु की यही एक अमिट पहचान रही है और ऋषि पद प्राप्त करना ही उसके जीवन का मुख्य ध्येय रहा है।

हिन्दु नाम की इस पृष्ठभूमि से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वयं में "हिन्दु" नाम का कोई आध्यात्मिक महत्व नहीं है और न ही "हिन्दु" नाम धारण करने मात्र से कोई परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। महत्व तो इस बात का रहा है कि हिन्दु घर में पैदा होकर इस जन्म में ही परमात्मा को प्राप्त करने का पूरा प्रयत्न करे, और ब्रह्मज्ञान उदय होने पर "हिन्दु" अपने नाम के साथ जुड़े सभी अहंभाव से ऊपर उठ जाय।

56.5 परन्तु "मुसलमान", मुस्लिम, "मोमिन", या "ईमानवाले", या "तुरक", शब्द (जिसका प्रयोग उस समय में तुरकों के प्रभाव के कारण मुसलमान शब्द के स्थान पर ग्रंथ साहिबजी में बार-बार हुआ है) के लिये यह नहीं कहा जा सकता। इस्लाम के पूर्व अरब जातियों के लिये यह कोई प्रचलित नाम नहीं था। यह नाम कुरान शरीफ़ में स्वयं अल्लाह की देन है। "मुस्लिम" कौन है। यह परिभाषित करते हुए कुरान शरीफ़ में अल्लाह कहते हैं :

1. "तो (पैगम्बर) तुम न तो मुर्दो को सुना सकते हो और न बहरों को (अपनी) आवाज़ सुना सकते हो जबकि वह पीठ फेरकर विमुख हो जायं।" 30/52 "और तू न अन्धों को उलटे रास्ते से सीधे रास्ते पर ला सकता है तू तो बस उन्हीं लोगों को सुना सकता है

जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, सो वही मुस्लिम है।" 30/53

इन आयतों से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह की आयतों या कुरान शरीफ़ पर ईमान लाने वाला ही मुसलमान कहला सकता है, और जो कुरान शरीफ़ पर ईमान नहीं लाता वह मुर्दे के समान है, वह बहरे और अन्धे के समान है, फिर वह चाहे ईमानवाला मुसलमान ही क्यों न रहा हो। दूसरे शब्दों में कुरान शरीफ़ वर्णित अल्लाह के दिये मापदण्डो पर ईमान लाने वाले मुस्लिम को छोड़कर शेष मनुष्य मृत के समान है, और जैसा कि हमने "काफ़िर" सम्बन्धित अध्याय में देखा वह हर प्रकार के दण्ड का पात्र हैं।

2. यही नहीं अल्लाह के हुक्म से मुसलमान होने के नाते उन्हें अन्य सब मनुष्यों पर वरिष्ठता प्राप्त हैं।

"तुम लोग सबसे श्रेष्ठ उम्मत (संगत) हो जो लोगों के लिये पैदा की गई है :

3. ईमान वालों को मुस्लिम नाम स्वयं अल्लाह ने दिया है और साथ ही मुस्लिम होने के नाते उनके मुख्य कर्तव्य भी स्वयं अल्लाह ने निर्धारित किये हैं, इसका स्पष्टतम वर्णन सूर. 22 की आयत 78 में इस प्रकार आता है :

"(और लोगों) उसने तुम्हारा नाम पहले (यानि पहली किताबों में भी) मुस्लिम रखा था और इस (कुरान) में भी। (तो उसके रास्ते में मेहनत और जिहाद करो) ताकि पैगम्बर तुम्हारे मुकाबले में गवाह हो। बस नमाज कायम रखो और जकात दो और अल्लाह का सहारा मजबूती से पकड़ो, वही तुम्हारा दोस्त है, सो खूब ही दोस्त है और खूब ही मददगार ह।" 22/78 "और ईमानवाले वह हैं जो और उसके पैगम्बर पर ईमान लायें और शक मे (डावाडोल) नहीं हुए और अल्लाह की राह में भी अपनी जानों और मालों से जिहाद किया। यही सच्चे (ईमानवाले) हैं।" 49/15

4. मुसलमान होने के संदर्भ में अल्लाह हजरत मुहम्मद को ढाढस देते हुए कहते हैं "तो (ऐ पैगम्बर) अल्लाह के दीन पर तू सब्र से कायम रह, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और ऐसा न हो कि जो लोग यकीन नहीं रखते वे तुझको (ईमान से) डगमगा दें।" 30/60

इस लेख के "मुसलमान या ईमानवाले" अध्याय का सार तत्व भी ऊपर दी गई आयतों में आ जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मुसलमान नाम स्वयं अल्लाह ने उनको दिया है जो अल्लाह की आयतों पर ईमान लायें। ऐसी स्थिति ग्रंथ साहिबजी जब मुसलमानो को कुरान से या मुसलमान नाम से ऊपर उठने को कहते हैं या फिर नमाज, रोजा, बहिश्त आदि की अनित्यता बतलाते हैं, या फिर कुरान और वेद पुराण को एक ही माप दण्ड से मापते है और मुसलमान को कुरान से ऊपर उठकर ज्ञान का आश्रय लेने को कहते हैं, तो यह बात निश्चित रूप से दर्शाती है कि सिक्ख गुरुओं को या फिर कबीर, नामदेव जी रविदास जी आदि संतो को कुरान शरीफ़ वर्णित सिद्धांत कतई स्वीकार नहीं है। और न ही वे कुरान शरीफ़ के माध्यम से परमात्मा की प्राप्ति सम्भव मानते हैं। और दूसरी तरफ कुरान शरीफ़ का आश्रय छोड़ते ही, मुस्लिम नाम का त्याग करते ही मुसलमान कुरान शरीफ़ के अनुसार काफ़िर हो जाता है और फिर काफ़िर होकर कुरान वर्णित दण्डों का भागी हो जाता है

परन्तु साहिबजी ने अपनी वाणी म किस प्रकार हिन्दु और मुसलमान को अल्लाह और

ब्रह्म को, वेद और कुरान को एक ही धरातल पर रखते हुए बार-बार मुसलमानों से ब्रह्म ज्ञान का आश्रय लेने के लिये आवाहन किया, यह एक रोचक विषय है।

56.6 अल्लाह और परब्रह्म एक ही स्वरूप हैं, अल्लाह कुरान शरीफ़ से परे हैं, अलक्ष्य और अपार है आदि लक्षणों से विभूषित करते हुए गुरु अर्जुन देव जी महाराज साथ ही साथ अल्लाह को "ॐ" नमो भगवत गुसाई॥ खलक रवि रहिआ सरब ठाई॥ "पूरन सर्वत्र मुकद" "वासुदेव बसत सभ ठाई" आदि वेदांत के परम वाक्यों के मध्य संजोते हुए किस प्रकार कुरान शरीफ़ से भिन्न एक प्रत्यक्ष वेंदातिक स्वरूप प्रदान कर रहे हैं वह उनके रामकली राग मे निबद्ध इन पदों से लक्षित होता है :

1. "कारन-करन करीम॥ सरब प्रतिपाल रहीम॥
   अलह अलख अपार॥ खुदि खुदाइ बड बेसुमार॥
2. ओनमो भगवत गुसाई॥ खालक रवि रहिआ सरब ठाई॥
3. जगन्नाथ जग जीवन माधो॥ भउ भंजन रिद माहि अराधो॥
   रिखिकेस गोपाल गोविंद॥ पूरन सर्वत्र मुकंद॥
4. मिहरवान मउला तूही एक॥ पीर पैकांबर सेख॥
   दिला का मालकु करे हाकु॥ कुरान कतेब ते पाकु॥
5. नाराइण नरहर दइआल॥ रमत राम घट घट आधार॥
   वासुदेव बसत सब ठाइ॥ लीला किछु लखी न जाइ॥
6. मिहर दइया करि करनैहार॥ भगति बंदगी देहि सिरजनहार॥
   कहु नानक गुरि खोए भरम॥ एको अलहु पारब्रह्म॥" (896/97 म.5)

ग्रंथ साहिबजी में अल्लाह परब्रह्म का ही एक स्वरूप है, उससे भिन्न नहीं है, प्रत्यक्ष रूप से बतलाने वाला यह अकेला ही पद है। "कारन करन करीम" यानी वह अल्लाह सृष्टि का कारण भी है और कार्य भी है, (यानी सृष्टि रुप में भी वही सजा हुआ है)। यह कुरान शरीफ़ वर्णित अल्लाह के लक्षणों से एक दम भिन्न है।

"ओनमो भगवंत गुसाई॥ खालुक रवि रहिआ सरब ठाई॥"

इस पद में ओंकार को नमन करते हुए यह बतलाया गया है कि खालुक यानी अल्लाह सब स्थानों यानी जड़ चेतन में व्याप्त है, "ठाई" शब्द का प्रयोग जड़ वस्तु के ही संदर्भ में होता है। जीव को कभी "ठाई" या ठांव या "स्थान" नाम से सम्बोधित नहीं किया जाता। उधर कुरान शरीफ़ के अध्ययन में हमने देख कि वहां सर्वव्यापी का घट-घट व्यापी या जड़ चेतन मे समान रूप से व्याप्त अल्लाह की कोई भी कल्पना नहीं है। यहां ग्रंथ साहिबजी में परब्रह्म से अभेद अल्लाह के लक्षण गुरु अर्जुन देव जी महाराज दे रहे हैं न कि कुरान शरीफ़ वर्णित

यह ग्रंथ साहिबजी की ही महिमा है कि जिसने इतनी निर्भयता से कुरान वर्णित अल्लाह को एक सर्वव्यापक सार्वभौम वेद-शास्त्र वर्णित परब्रह्म का स्वरूप प्रदान करके सर्वमान्य रूप से दर्शाने का प्रयत्न किया। और साथ ही वह प्रत्यक्ष रूप से घोषित भी किया कि उसे कुरान वर्णित अल्लाह के लक्षण और स्वरूप स्वीकार नहीं है। और न ही इस्लाम को अल्लाह के स्थान पर "परब्रह्म" "रिषिकेस" "गोपाल" "गोविंद" "मुकुंद" "नाराइण" और "वासुदेव" आदि परमात्मा के नाम स्वीकार हो सकते हैं।

यहां उचित होगा कि हम पाठकों के विशेष ध्यान के लिये उपरोक्त इस्लाम सम्बन्धी पद के "पूर्व" और "उत्तर" पदों को इस स्थान पर दें।

पूर्व पद :

अनुदिनु धिआईऐ नामु ॥ सफल नानक इहु कामु ॥ (896 म 5)

उत्तर पद :

कोटि जनम के बिनसे पाप ॥ हरि हरि जपत नाही संताप ॥
गुर के चरन कमल मनि बसे ॥ महा विकार तन से सभि नसे ॥ (897)

पाठक इन 'पूर्व' और 'उत्तर' पदों से और भी अधिक स्पष्टता से समझ सकते है कि ग्रंथ साहिबजी के अध्यात्म की मुख्य धारा क्या है और उसके इस्लाम सम्बन्धी पदों का सार क्या है।

56 7 यहां हम गुरु अर्जुन देव जी का वह पद रहे हैं, जिसमें उन्होंने खुदा के संदर्भ में समस्त सृष्टि को और इस्लाम के सभी स्तम्भों को तुच्छ और नशवर दिखलाया है। कुरान शरीफ के सिद्धांत के विरूद्ध चौरासी लाख योनियों की चर्चा की है और अन्त में इन सबके विलीन होने पर एक खुदा रूपी निश्चल तत्व बच रह जायेगा, या उसका भक्त बचेगा जो कि जन्म-मरण के चक्र में नही आता :

"धरति आकासु पातालु है चंदु सूर बिनासी ॥ बादिसाह साह उमराव खान ढाहि डेरे जासी ॥ रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥ काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी ॥ पीर पैकांबर अउलीए को थिरु न रहासी ॥ रोजा बांग निवाज कतेब विणु बुझे सभ जासी ॥ लख चउरासीह मेदनी सभ आवै जासी ॥ निहचलु सचु खुदाइ एक खुदाइ बंदा अविनासी ॥"

(1100 म 5)

इस्लाम की कठोर आलोचना करने वाले पदों में यह प्रमुख पद है। ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि धरती, आकाश, पाताल, चंद्र, सूर्य आदि सभी नाशावान हैं। बादशाह आदि सब अपने महलों के साथ नश्वर हैं। गरीब और अमीर आदि सब इस लोक से चले जायेंगे। काजी सेख आदि भी यहां से कूच कर जायेंगे।

बड़े-बड़े पैगम्बर पीर और अन्य महजबी लोग भी इस संसार में नहीं रहेंगे। रोजा, नमाज, और कुरान आदि भी इस संसार से चले जायेगें। इस जगती के चौरासी लाख प्राणी भी नष्ट होंगे। सत्य स्वरूप खुदा ही अविनाशी तत्व है, और उस परम सत्य से जुड़ा हुआ उसका बंदा या भक्त ही अविनाशी है

यहां प्रकृति की नश्वरता के साथ इस्लाम के मुख्य आधार पैगम्बर कुरान रोजा और

नमाज के भी अन्तः नष्ट होने की चर्चा है। परन्तु जैसा कि हमने "कयामत" के अध्याय में देखा कुरान शरीफ़ में ग्रंथ साहिबजी वर्णित प्रलय की कोई कल्पना नहीं है। कुरान शरीफ़ के कयामत वर्णन में आकाश, पृथ्वी, आदि नष्ट होकर अपने कारण में लीन नहीं होते, और न ही इस पंचभूतों की प्रलय के बाद उनकी पुनः उत्पत्ति होती है जैसी कि ग्रंथ साहिबजी और वेद-शास्त्रों की मान्यता है। न ही कुरान शरीफ़ में चौरासी लाख योनियों की कोइे कल्पना है न ही उनके सृष्टि के संहार और सृजन काल में पुनः लय और उत्पत्ति की चर्चा है, जब कि ये सब ग्रंथ साहिबजी की मूल सिद्धांतो में हैं।

56 8 इस्लाम में कुरान शरीफ़ अल्लाह की भेजी होने के कारण नश्वर नहीं मानी जाती और न ही पैगम्बर और ईमानवाले ही नशवर हैं जो कयामत के बाद हमेशा रहने वाले स्वर्ग मे रहेगे। इस प्रकार इस मान्यता के अनुसार न तो कुरान वर्णित स्वर्ग ही और न ही काफ़िरो को मिलने वाला दोजख ही नाशवान है। परन्तु ग्रंथ साहिबजी के अुनसार स्वर्ग और नरक और उनमें मिलने वाले भोग और कष्ट, कर्म फल पर आश्रित होने के कारण नाशवान है, और यह सृजन और विनाश का चक्र निरंतर रहता है। इससे तो सभी छुटकारा मिल सकता है जब जीव ब्रह्मज्ञानी होकर परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

इस पद में "निहचलु सचु खुदाइ" के शब्दों द्वारा खुदा को सत्य स्वरूप कहा है। परन्तु कुरान शरीफ़ में अल्लाह का यह लक्षण वर्णित नहीं है। उधर ग्रंथ साहिबजी तो शुरू से अन्त तक परमात्मा को सत्य स्वरूप और आनन्दमूल कह कर बार-बार बखान करते हैं। और सत्य स्वरूप परमात्मा से उत्पन्न सृष्टि परमात्मा से उत्पन्न होने के कारण स्वयं भी तत्वतः परमात्ममयी है।

इस पद के अन्त में खुदा के बंदे को भी अविनाशी कहा है। कुरान शरीफ़ के अनुसार तो सभी ईमानवाले इस संसार की एक मौत मर कर फिर स्वर्ग या बहिश्त में जायेंगे जो सदा रहने वाला है। कुरान शरीफ़ के अनुसार दोजख भी जिसमें काफ़िरों को रहना है, अविनाशी है। इस प्रकार काफ़िर भी अविनाशी हुआ। दूसरी तरफ ग्रंथ साहिबजी के अनुसार परमात्मा के अंश होने के कारण सभी जीव अविनाशी हैं। परन्तु मायावश और अपनी अज्ञानता के कारण वह जन्म-मृत्यु के चक्र में भ्रमता रहता है। जब कोई बिरला जीव अपने निष्काम शुभ कर्मो, गुरु कृपा और परमात्म भक्ति के द्वारा आत्म साक्षात्कार कर लेता है तो वह अपने वास्तविक सत्य स्वरूप को अपने अविनाशी स्वरूप को तत्वतः प्राप्त कर सदैव के लिये जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है।

इस प्रकार यदि उपरोक्त पद का हम गहराई से विशलेष्ण करते हैं तो पायेगें कि यह पद ग्रंथ साहिबजी द्वारा मान्य एवं प्रतिपादित सिद्धांतो की ही प्रतिष्ठा करता है। पद के अन्त में प्रभु, परमात्मा, या ब्रह्म राम आदि नाम का प्रयोग न करके खुदा नाम का प्रयोग किया है। यह शायद इसलिये कि इस पद के माध्यम से ग्रंथ साहिबजी मुसलमानों को अपना सही संदेशा सहजता से पहुंच सकें, और इसी संदर्भ में इस्लाम के मुख्य सिद्धांतो से अपने गहन मतभेद का भी सर्व साधारण के सामने प्रतिपादन कर सकें।

इस पद के भाव को पूर्ण रूप से ह्रदयंगम करने के लिये यह उचित रहेगा कि हम इसके 'पूर्व' और 'उत्तर' पदों का भी अवलोकन कर लें

पूर्व पद :

सजन सचु परखि मुखि अलावणु थोथरा ॥
"मन मझाहू लखि तुधहु दूरि न सू पिरी" (1199 म 5)

हे मित्र! मुख से बोलना व्यर्थ है। तू अपने प्रियतम सत्य स्वरूप प्रभु को अपने हृदय मे ही देख। वह तुम्हारा पति परमेश्वर तुम से दूर नहीं है, तेरे अंदर ही बसा है।

उत्तर पद :

"डिठी हम ढंढोलि हिकसु बाझु न कोई ॥
आउ सजण तू मुखि लगु मेरा तनु मनु ठंडा होइ ॥ (1100 म 5)

हे प्रियतम। आकर मुझे दर्शन दो। तुम्हारे दर्शन से मेरे तन मन में ठंडक पहुंचती है। मैंने सारी सृष्टि खोज कर देखी है, एक तुम्हारे दर्शन के बिना मुझे किसी भी पदार्थ से शान्ति नही मिल सकती।

उपरोक्त "पूर्व" और "उत्तर" पदों में निहित भाव कुरान शरीफ के सिद्धांतो से बिल्कुल भिन्न है।

56.9 कुरान शरीफ की यह अटल मान्यता है कि अल्लाह और उसके पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब के अलावा अन्य किसी को मानने वाला मुशरिक या बहुदेव पूजक माना जायेगा और इस प्रकार वह काफ़िर होकर इस लोक और परलोक में कठोर दण्ड और यातना का भागी होगा। किन्तु ग्रंथ साहिबजी को यह मत कतई स्वीकार नहीं है। उनकी यह दृढ़ मान्यता है कि परमात्मा को चाहे किसी भी नाम से पुकारो या भिन्न भिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आचरण करो, जीव और सृष्टि का रहस्य तो परमात्मा को तत्व से जानकर ही जाना जा सकता है। इस संदर्भ में गुरु अर्जुन देव जी का इस्लाम की तीव्र आलोचना करने वाला यह प्रसिद्ध पद हम नीचे दे रहे हैं :

"कोई बोलै राम-राम कोई खुदाइ ॥ कोई सेवै
मुसईआ कोई अलाहि ॥ कारण करण करीम ॥ किरपा धारि रहीम ॥
कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ ॥ कोई करै पूजा कोई सिरु निवाइ ॥
कोई पढै वेद कोई कतेब ॥ कोई ओढै नील कोई सुपेद ॥
कोई कहै तुरकु कोई कहै हिन्दु ॥ कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदू ॥
कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ॥ प्रभु साहिब का तिनि भेद जाना ॥ (885 म 5)

संक्षेप में इस्लाम के प्रति सम्बोधन में ग्रंथ साहिबजी इस पद में कह रहे हैं कि चाहे तुम खुदा या अल्लाह कहो, या तुम हज करो और नमाज पढ़ो, तुम चाहे कुरान शरीफ का अध्ययन करो और बहिश्त की कामना करो, तुम तब तक उस प्रभु साहिब के रहस्य को नही समझ सकते जब तक तुम उस प्रभु को तत्वतः नहीं जान लेते। ग्रंथ साहिबजी और वेद-शास्त्रों की यह दृढ़ मान्यता है कि परमात्मा को जान कर ही परमात्मा तक पहुंचा जा सकता है।

और दूसरी तरफ हमने कुरान शरीफ के अध्ययन में देखा कि यहां अल्लाह को तत्वतः जानने की या उसको प्राप्त करने की कोई भी कल्पना नहीं है परन्तु इस पद में ग्रंथ साहिबजी का साफ कहना है कि बिना प्रभु को तत्व से जाने अल्लाह या खुदा को मानना

कुरान शरीफ़ पढ़ना, हज करना और नमाज अदा करना आदि सब व्यर्थ है।

इसी प्रकार किसी हिन्दू के लिये तीर्थ पूजा, वेदाध्ययन करना और राम नाम जपना बिना परमात्मा को जाने व्यर्थ है। यहां हिन्दू को दिया गया उपदेश तो हिन्दु की मान्यता के अनुसार है। परन्तु मुसलमानों को दिया गया यही उपदेश कुरान शरीफ़ की मूल मान्यताओ के विपरीत है।

इस्लाम के सिद्धांतों की स्पष्ट आलोचना करने वाले इस महत्वपूर्ण पद के "पूर्व" और उत्तर पदों को पढ़ने से इस पद के अर्थ पर और अधिक प्रकाश पड़ेगा।

पूर्व पद :

"जेको अपने ठाकुर भावै ॥ कोटि मधि एहु कीरतनु गावे ॥
साधसंगति की जावउ टेक ॥ कहु नानक तिसु कीरतनु एक ॥" (885 म 5)

उत्तर पद :

"पवनै महि पवनु समाइआ ॥ जोति महि जोति रलि जाइआ ॥
माटी माटी होईएक ॥ रोवनहारे की कवन टेक ॥
...कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ ना कोई मरै न आवै जाइआ ॥" (885 म 5)

जैसे हमने ऊपर चर्चा की मध्यकाल के उस भयावह समय में जब इस्लाम सत्ता के बल पर हिन्दु धर्म पर हावी होने का भरपूर प्रयत्न कर रहा था, उस काल में संतों ने इस्लाम के सिद्धांतो का प्रतिकार करने के लिये प्रत्यक्षतः ज्ञानमयी निर्गुन उपासना का आश्रय लिया था— आर इसी संदर्भ में गुरुओं ने सभी बाह्य उपासनाओं की जिसमें इस्लाम की उपासनाए भी शामिल हैं, उनकी उपेक्षा की, और उन्हें ज्ञान मार्ग के सामने अत्यन्त तुच्छ दिखलाया।

57 0 जहां तक हिन्दू धर्म का प्रश्न है वहां वेद-शास्त्रों ने स्वयं कभी भी इन बाहरी उपासनाओं को महत्व नहीं दिया। इन बाहरी पूजा उपचार आदि को अज्ञानियों को समझाने को आरम्भिक पाठ मात्र माना है। परन्तु यह बात इस्लाम पर लागू नहीं होती जहां उपासना का हर अंग कुरान के आदेशों से बंधा है। इस परिप्रेक्ष्य में संत नामदेव जी के इस पद का अवलोकन करें :

"हिन्दु अन्हा तुरक काणा। दूहा से गिआनी सिआणा ॥
हिन्दु पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीत ॥ नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥
(875 नामदेव)

"नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥" अर्थात

नामदेव तो उस सर्वव्यापी परब्रह्म की उपासना करता है जहां बाह्य पूजा के स्थल ठाकुर द्वारा, मस्जिद का कोई स्थान नहीं है, कोई सत्ता नहीं है।

जाबालदर्शनोपनिषद में भगवान दत्तात्रेय अपने शिष्य मुनिवर सांकृति को योग मार्ग का उपदेश देते हुए कहते हैं :

"शिव स्वरूप परमात्मा इस शरीर में ही प्रतिष्ठित है, इसको न जाननेवाला मूढ़ मनुष्य तीर्थ, जप, दान, यज्ञ, काठ और पत्थर में ही सर्वदा शिव को ढूंढ़ा करता है। सांकृति! जो अपने भीतर नित्य निरन्तर स्थित रहने वाले मुझ परमात्मा की उपेक्षा करके केवल बाहर की

स्थूल प्रतिमा का ही सेवन करता है वह हाथ मे रखे हुए अन्न के ग्रास को फेंककर केवल अपनी कोहनी चाटता है। योगी पुरुष अपनी आत्मा में ही शिव का दर्शन करते हैं। प्रतिमाओं मे नहीं। अज्ञानी मनुष्यों के हृदयों मे भगवान के प्रति भावना जाग्रत करने के लिये ही प्रतिमाओं की कल्पना की गई है।" (जाबालदर्शनोपनिषद 4/57,58,59)

ऊपर दी गई वेदवाणी से यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ साहिबजी ने जहां कहीं भी बाह्य उपासनाओं आदि को तुच्छ दिखलाया है वहां उन्होंने मात्र वेद-शास्त्रों के दिखलाये मार्ग का ही अनुसरण किया है। परन्तु जहां...इस्लामिक बाह्य उपासनाओं और कुरान शरीफ तथा पैगम्बर को भी ज्ञानमयी उपासना के सम्मुख तुच्छ बतलाया है तो वहां निश्चय ही इस्लाम की उपासना विधि की कठोर आलोचना है, और कुरान शरीफ में बतलायी गई उपासना विधि को अपनी (यानि ग्रंथ साहिबजी की) उपासना विधि से बिल्कुल भिन्न बतलाना है।

ग्रंथ साहिबजी के उपरोक्त दृष्टिकोण को हम इस निम्न सबद में देखें :

बरत न रहउ न मह रमदाना ॥ तिसु सेवी जा रखै निदाना ॥
एकु गुसाई अलहु मेरा ॥ हिन्दु तुरक दुहां नेबेरा ॥
हज काबै न जाउ तीरथ पूजा ॥ एको सेवी अवरू न दूजा ॥
पूजा करउ न जाउ निवाज गुजारउ ॥ एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ ॥
न हम हिंदू न मुसलमान ॥ अलह राम के पिंड परान ॥
कहु कबीर इहु कीआ बखाना ॥ गुरु पीर मिलि खुदि खसमु पछाना ॥ (1136 म.5)

इस पद में ज्ञानमयी उपासना ही प्रधान है। यहां ग्रंथ साहिबजी में गुरु अर्जुनदेव जी संत कबीर के विचार उद्धृत करते हुये उस परमात्मा की उपासना कर रहे हैं जो सभी प्राणियों का मित्र और उनकी रक्षा करने वाला है, "तिसु सेवी जो रखै निदाना," और किसी नाम के पीछे न जाकर (यानी हिन्दु के मुख से निकलनेवाला "प्रभु" "गुसाईं" नाम और मुसलमानों द्वारा कहे जाने वाला "अल्लाह" खुदा आदि नाम) परमात्मा की जो प्रत्येक जीव के हृदय मे बस रहा है, उसकी उपासना कर रहे हैं :

"एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ"। और फिर इस के अंत में वाणी कहती है कि मैंने गुरु रूपी पीर से ज्ञान प्राप्त कर लिया है, **"गुरु पीर मिलि खुदि खसमु पछाना"**।

इस पद में परमात्मा की प्राप्ति का जो मार्ग निर्देशित किया गया है, वह कुरान शरीफ की विचारधारा से विपरीत है।

यदि हम इस पद के "पूर्व" पद का अवलोकन करें तो यह बात पूरी तरह से स्पष्ट हो जाती है :

पूर्व पद :

राखा एकु हमारा सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥
सोइ अचिंता जागि अचिंता ॥ जहां कहां प्रभु तू बरतंता ॥
घरि सुखि वसिआ बाहरि सुखु पाइआ ॥ कहु नानक गुरि मंत्रु दृड़ाइआ ॥

1136 म 5

अर्थात सब प्राणियों के हृदय में अन्तरयामी रूप से वास करने वाला ही

सबकी रक्षा करने वाला है। जब जीव परमात्मा के इस स्वरूप को समझ लेता है कि हर स्थान पर परमात्मा का ही वास है, तब वह इस संसार में सुख से जागता है और सुख से सोता है, अर्थात संसार के सभी द्वंदो से ऊपर उठकर अपनी सहज आत्मिक स्थिति को प्राप्त कर लेता है।

जैसाकि कुरान शरीफ़ में हमने देखा कि वहां वेदांतिक प्रलय की कोई कल्पना नही है जिसमें समस्त सृष्टि अपने कारण में लीन हो जाती हैं और सृष्टिकाल में पुनः उत्पन्न होती है। कुरान शरीफ़ की "कयामत" में सृष्टि लय-प्रलय को नहीं प्राप्त होती वहां कयामत की मुख्य क्रिया से मनुष्य जाति को अपनी-अपनी कब्रों से उठकर अल्लाह के सामने पेश होना है। और फिर कयामत के आख़िरी फैसले में मुसलमान या ईमानवाले सदा रहने वाले स्वर्ग में रहेंगे और गैर ईमानवाले या काफिर नरक में।

परन्तु जब ग्रंथ साहिब दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि स्वर्ग, आकाश, सूर्य, चंद्रमा, और तारों सहित, पृथ्वी, जल, अग्नि तथा दिन और रात आदि सहित, और हिन्दु, मुसलमानों, पशु-पक्षी आदि जीवों के सहित यह जो कुछ भी दृश्यमान सृष्टि है वह सब नाश को प्राप्त होगी, तो इस्लाम को, या कुरान शरीफ़ को यह बात स्वीकार होना असम्भव है कि मुसलमान और उसके स्वर्ग नाश को प्राप्त होगें। परन्तु ग्रंथ साहिबजी यही बात कह रहे हैं :

"गिरि तर धरणि गगन अरू तारे ॥ रवि ससि पवणु पावक नीरारे ॥
दिनसु रैणि बरत अरू भेदा ॥ सासत सिमृति बिनसहिगे बेदा ॥
जाति बरन तुरक अरू हिन्दू ॥ पसु पंखी अनिक जोनि जिंदू ॥
सगल पासरू दीसै पासारा ॥ बिनसि जाइगो सगल आकारा ॥" (237 म.5)

तो इस सृष्टि में कौन बचेगा, और कौन सा शाश्वत तथा निश्चल स्थान है इसका तत्काल आगे ग्रंथ साहिबजी उत्तर देते हैं :

"सहज सिफति भगति तु गिआना॥ सदा अनंदु निहचलु थाना॥
तह भउ भरमा सोगु न चिंता॥ आवणे जावणु मिरतु न होता॥
तह सद अनंद अनहत आखारे॥ भगत बसहि कीरतन आधारे॥
पारब्रहु को अतुं न पारू॥ कउन करै ता का बीचारू॥
कहु नानक जिसु किरपा करै॥ निहचल थानु साध संगि तरै ॥" (237 म.5)

इस सम्पूर्ण पद के प्रथम चरण में मुसलमान सहित सभी का नाश होना दिखलाया है, और इस अन्तिम पंक्तियों में कौन बचेगा और क्या बचेगा यह बतलाते हुए कहते हैं कि तत्व ज्ञान में स्थित भक्त बचेगा, और वह स्थान बचेगा जहां आनन्दमय परमात्मा का सहज भाव से चिंत्त मनन हो रहा है। वहां न भय है और न ही भ्रम, शोक और चिन्ता है, और न ही वहा कोई जन्म-मरण का चक्र है। वहां तो भक्त जन परमात्मा के कीर्तन को आधार बनाकर परमात्मा की अनहत वाणी या नाद के आधार पर सदा परमानंद में रत हैं। वह परब्रह्म परमात्मा अनन्त और अपार है। साधु यानी ज्ञानी पुरुषों के सत्संगति द्वारा बिरले इस निश्चल स्थान को प्राप्त होते हैं।

57 1 इस प्रकार ग्रंथ साहिबजी इस पद में परमात्मा के ध्यान कीर्तन में लगे हुए लोगों के अमरत्व का प्रतिपादन कर रहे हैं फिर चाहे ऐसा व्यक्ति किसी भी जाति या कुल में क्यों न

जन्मा हो, या वह हिन्दु या मुसलमान कहलाने वाले किसी भी घराने का क्यों न हो। परन्तु कुरान शरीफ की कसौटी पर ऐसी मान्यता वाला व्यक्ति नरक का ही अधिकारी होगा।

इसी ज्ञानमयी स्थिति की चर्चा करते हुए कबीर जी कहते हैं :

हमारा झगरा रहा न कोऊ॥ पंडित मूला छाड़े दोऊ॥

पंडित मुला जो लिखि दीआ॥ छाड़ि चले हम न लीआ॥ (1158/59 कबीर)

यह पद भी बड़े महत्व का है। इसका सहज अर्थ यही है कि पंडित और मुल्ला द्वारा प्रतिपादित बाहरी पूजा और कर्म काण्ड कबीर को स्वीकार नहीं है। जहां तक पंडित द्वारा प्रतिपादित पूजा और कर्म काण्ड की सारी प्रक्रिया का संबंध है, उसका न तो ग्रंथ साहिबजी ने और न ही वेद-शास्त्रों ने कभी भी और कहीं भी ज्ञान और भक्ति के मार्ग में कोई महत्व दिया है और न तत्वतः उनका कभी कोई महत्व रहा है। परन्तु मुल्ला द्वारा प्रतिपादित जो कुरान वर्णित प्रकियायें हैं वे तो मुसलमानों को मानना अनिवार्य हैं। कोई भी मुसलमान कुरान शरीफ वर्णित सिद्धांतों से ऊपर उठने की कल्पना भी नहीं कर सकता। और यदि वह ऐसा करता है तो वह तत्काल काफ़िर की श्रेणी में माना जायेगा। इसके विपरीत पंडित के कर्म काण्ड से ऊपर उठने वाला ज्ञान मार्ग में स्थित हिन्दु ग्रंथ साहिबजी और वेद शास्त्रों की दृष्टि में ब्रह्मज्ञानी माना जायेगा और वह सबका पूज्य हो जायेगा।

मुल्ला को संबोधित करते हुये ग्रंथ साहिबजी कहते है :

"मनु करि मका किबला करि देही॥ बोलनहारू परम गुरु एही॥

कहु रे मुला बांग निवाज॥ एक मसीति दसै दरवाज॥

मिसमिल तामसु भरमु कदूरी॥ भाखि ले पंचे होइ सबूरी॥

हिन्दू तुरक का साहिबु एक॥ कह करे मुला कह करै सेख॥ (1158 कबीर जी)

अर्थात हे मुल्ला! तु शुद्ध हृदय को मक्का और शरीर को किबला बनाओ। और इनको वश में करने के लिये तू परमात्मा को गुरु मान। हे मुल्ला! इस दस दरवाजे वाले शरीर को ही मस्जिद मान, और इसमें बैठकर अन्तरमुखि होकर तुम बांग दो और नमाज पढ़ो और हे मुल्ला! पशुबलि के स्थान पर तू अपने काम, क्रोध, लोभ आदि पांच शत्रुओं को नष्ट कर। हे मुल्ला! तू अच्छी तरह से समझ ले कि केवल मुल्ला या शेख बन जाने से तुझे प्रभु के दरबार में कोई विशिष्ट स्थान नहीं मिल जायेगा, क्योंकि हिन्दू और मुसलमान दोनों का स्वामी एक ही परमात्मा है।

सो ज्ञान मार्ग में स्थिति कबीर जी की उपासना क्या है। यह बतलाते हुए वे कहते है

पारस के संग तांबा बिगरिओ॥ सो तांबा कंचनु होइ निबरिओ॥

संतन के संग कबीरा बिगरिओ॥ सो कबीरू रामै होइ निबरिओ॥

लोग कहैं कबीरू बउराना॥ कबीर का मरमु राम पहिचाना॥

गुर सेवा से भगति कमाई॥ तब इह मानस देही पाई॥

इस देही कउ सिमरहि देव॥ सो देही भजु हरि की सेव॥

भजहु गोविंद भूलि मत जाहु॥ मानस जनम का एही लाहु॥

इही तेरा अवसरू इह तेरी बार॥ घट भीतरि तू देखु बिचारि॥

कहत कबीरू जीति कै हारि॥ बहु विधि कहिओ पुकारि पुकारि॥
निज पद ऊपरि लागे धिआनु॥ राजा राम नामु मोरा ब्रह्म गिआनु॥

(1158/59 कबीर)

57.2 कबीर जी कहते हैं कि जैसे पारस की संगति से तांबा सोना हो जाता है वैसे संतों के संग कबीर राममय हो गया। लोग कहते हैं कि कबीर पागल हो गया है, किन्तु कबीर को वास्तव में क्या हो गया है, इसका रहस्य तो राम के सिवा कोई नहीं जानता। मैंने गुरु की कृपा से पिछले जन्म में जो भक्ति की कमाई की थी, उसी के फलस्वरूप मुझे यह दुर्लभ मानव देह मिली। मानव देह में जन्म के लिये देवता भी तरसते हैं। सो हे भाई! इस मानव देह को पाकर तू हरि का भजन कर, उसी का ध्यान कर। तू गोविंद का ही भजन कर क्योंकि मनुष्य जीवन का सबसे परम लाभ यही है। हे भाई! अपने उद्धार का तेरा यही स्वर्णिम अवसर है। तू अपने हृदय में भलिभांति विचार ले, मनुष्य जीवन की बाजी बिछी हुई है, चाहे तो तू इसे परमात्मा की प्राप्ति द्वारा जीत या फिर मोह-माया में फंसकर इसे हार। यह बात मैं पुकार-पुकार के तुम्हारे हित में कह रहा हूँ। परमात्मा के चरणों में ही मेरा ध्यान लगा हुआ है। हे भाई भगवान राजा राम का नाम अपने हृदय में बसाना ही मेरा ब्रह्म ज्ञान है। मुल्ला और पण्डित के बतलाये कर्म-काण्डों से परे जो मार्ग ग्रंथ साहिबजी को स्वीकार है वह उपरोक्त पद मे बड़े स्पष्ट रूप से बतला दिया गया है। हिन्दु और मुसलमान का झगड़ा और उनका भेद मिटाने के लिये ग्रंथ साहिबजी ने इसी मार्ग को ही श्रेष्ठ माना है।

ग्रंथ साहिबजी में आए इस्लाम सम्बन्धी आलोचनात्मक पदों के क्रम में ग्रंथ के अन्तिम पृष्ठों में इसी भाव का प्रतिपादन करने वाले शेष पदों को भी हम पाठकों के सामने रख इस विषय को समाप्त करते हैं। पद संत कबीर जी के ही हैं :

"अलहु एकु मसीति बसतु है अवरू मुलखु किस केरा ॥
हिंदू मूरतिनाम निवासी दुह महि ततु न हेरा ॥
अलह राम जीवउ तेरे नाई ॥ तू करि मिहरामति साई ॥
दखन देसि हरि का वासा पछिमि अलह मुकामा ॥
दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु एही ठउर मुकामा ॥
ब्रहमन गिआस करहि चउबीसा काजी मह रमजाना ॥
गिआरह मास पास कै राखे एकै माहि निधाना ॥
कहा उडीसे मजनु कीआ किआ मसीति सिरू नाएं ॥
दिल महि कपटु निवाज गुजारै किआ हज काबै जांए ॥
एते अउरत मरदा साजे ए सभ रूप तुमहारे ॥
कबीर पूंगरा राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥
कहत कबीर सुनहु नर नरवै परहु एक की सरना ॥
केवल नामु जपहु रे प्रानी तब ही निहचै तरना ॥ (1349 कबीर जी)

ऊपर दिये गये पदों के कुछ अंश हम पहले दे चुके हैं, यहां प्रसंगवशही उनकी आवृत्ति की गई है। कबीर जी कहते हैं :

यदि अल्लाह का निवास केवल मस्जिद या काबा में ही है तो यह पृथ्वी किसकी है, क्या बाकी स्थान में अल्लाह नहीं है। इसी प्रकार केवल मूर्ति में ही प्रभु को देखने वाला हिन्दु भी अज्ञानता से घिरा है। इस प्रकार अल्लाह और परमात्मा को सीमित रूप में देखने वाला मुसलमान और हिन्दु प्रभु को तत्वरूप से नहीं जानते।

हे सर्वव्यापी अल्लाह और राम मैं तो तुम्हारे नाम के आसरे ही जी रहा हूं। हे परमात्मा तुम मेरे पर कृपा करो।

यह कहना कि हरि का निवास दक्षिण दिशा में है और अल्लाह का पश्चिम में है, इन दोनों पर ही विचार करो। और हे भाई। हृदय में ही परमात्मा को खोजो क्योंकि वह परमात्मा प्रत्येक प्राणी के हृदय में निवास करता है।

ब्राह्मण वर्ष में चौबीस एकादशियों का व्रत रखते हैं, काजी रमजान के तीस दिनों का। क्या ये दोनों यह समझते हैं कि बचे ग्यारह माह में परमात्मा की उपासना का कोई महत्व नहीं, क्या एक ही माह की उपासना में सब निधियों का खान परमात्मा उन्हें प्राप्त हो जायेगा।

अरे भाई! यदि तूने उड़ीसा जाकर जगन्नाथ जी के तीर्थ में स्नान ध्यान किया, या फिर मस्जिद में जाकर सिर झुका कर नमाज पढ़ी तो उससे क्या हुआ। हे काजी! यदि तेरे दिल में कपट है तो हज करने और काबे जाने का तुझे क्या फल है। अर्थात यदि तू हृदय में कपट रखता है तो तेरा हज करना और काबा जाना व्यर्थ है।

हे प्रभु! सभी नर-नारी तुम्हारे ही स्वरूप हैं। कबीर जी कहते हैं कि तत्वतः जो राम और अल्लाह का एक अभिन्न परमात्म रूप है वे उन्हीं एक राम के बालक हैं। और ज्ञानी गुरु और पीर मेरे पूज्नीय हैं।

कबीर कहते हैं कि हे नर और नारियों! तुम सब एक परमात्मा की ही शरण पकड़ो। हे प्राणी! केवल परमात्मा का ही नाम जप, केवल नाम जप से ही तू भवसागर से तर जायेगा।

ऊपर दिये गये पदों के बारे में इतना कहना ही यथेष्ट होगा कि इनमें निहित सभी सिद्धांत हिन्दू को मान्य और मुसलमानों को अमान्य हैं।

❑

ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम का दमन-स्वरूप और उसकी भर्त्सना

57.3 अन्त में हम ग्रंथ साहिबजी में आई वह वाणी प्रस्तुत कर रहे हैं जिनमें अपने पाशविक बल के बूते दमन और अत्याचाररत इस्लाम को असफल होते और इस्लाम से जूझते हिन्दू धर्म को, विजयी और अजय होते दिखलाया गया है। इस उप-अध्याय में हम रविदास जी का एक, कबीर जी के तीन, नामदेव जी का एक और सिक्ख गुरुओं के तीन पद देंगे।

आरम्भ हम संत रविदास जी के पद से कर रहे हैं, जिसे अन्य संदर्भ में एक बार पहले भी दे चुके हैं।

संत रविदास जी

"जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानी अहि सेख सहीद पीरा॥
जा के बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा॥"

(1293 रविदास जी)

भक्त रविदास जी कह रहे हैं कि जिसके कुल में ईद और बकरीद के त्यौहारों पर गाय के बध जैसा घोर पाप कर्म होता था, "गऊ रे बधु करहि" यहाँ इस्लाम में पाप की चरम सीमा दिखलाते हुए संत रविदास जी गाय की हत्या की बात कह रहे हैं। यह पंक्ति स्पष्टतया निन्दात्मक है क्योंकि कुरान शरीफ के अनुसार सूअर आदि का अपवाद छोड़कर अल्लाह के नाम पर पशुओं को हलाल करना और उनका मांस खाना एक बहुत पवित्र कार्य है।

सो रविदास जी कह रहे हैं कि जिस कबीर के कुल में मुसलमानी त्यौहारों पर गाय हत्या तक का पाप कर्म होता था, और जिस घर में लोग शेख, शहीदों और पीरों को मानते थे, (यहाँ पुनः संत रविदास जी और ग्रंथ साहिबजी की दृष्टि में शेख, शहीदों और पीरों को मानना भी अज्ञानता के कारण अत्यन्त निम्न श्रेणी का कर्म था।) अर्थात जिस कबीर के कुल में घोर पाप और अज्ञानता का वास था और जिसका बाप इन्हीं निकृष्ट कर्मो के लिप्त था, "जा कै बाप वैसी करी" का यही स्पष्ट अर्थ बनता है।

ऐसे पाप कर्म लिप्त कुल में पैदा कबीर ने परमात्मा की उच्चकोटि की भक्ति के आसरे ऐसी निभाई "पूत ऐसी सरी" कि अपनी कुल की निकृष्टता को पार कर उससे ऊपर उठ कर उनकी कीर्ति तीनों लोकों में छा गई।

यहाँ कबीर के कुल को निमित्त बनाकर समस्त इस्लाम में प्रचलित गऊ-हत्या और शेख, शहीदों और पीरों की मान्यता की पद्धति की भर्त्सना की गई है।

भक्त कबीर जी

सत कबीर किस प्रकार भक्त प्रल्हाद के समान घोर विपदा से ग्रस्त एक कट्टर

इस्लामिक परिवार में और इस्लामिक शासन के अधीन संकटतय जीवन व्यतीत करते थे, और उनके उस आपद्काल में प्रह्लाद के समान भगवान ने उनकी कैसे रक्षा की, यह उन्हीं के वाणी मे हम नीचे देखें। वाणी का आरम्भ कबीर अपनी माँ के इन शब्दों से कर रहे है :

"हमारे कुल कउने रामु कहिओ।
जब की माला लई निपूते तब से सुख न भइओं।
सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरजु एकु भइओ।
सात सूत इनि मुंडींए खोए इहु मुडीआ किउ न मुइओ॥" (856)

कबीर की माँ अपनी जेठानी और अपनी देवरानी आदि अपने कुल की स्त्रियों से कह रही हैं कि मुसलमान कुल में भला किसी न आज तक राम का नाम लिया है, परन्तु बहनो। जब से मेरे इस कुपुत्र कबीर ने हाथ में माला लेकर राम का नाम जपना शुरू किया है तब से मेरे घर का सुख समाप्त हो गया है। हे मेरी जिठानियों और देवरानियों! यह कितने बड़े अचरज की बात है कि मेरे इस कुपूत ने सातों सूत्रों को बिसरा दिया है और तब भी यह अभी तक मरा नहीं जीवित है। "सात सूत इनि मुडींए खोंए।" इन शब्दों का अर्थ सूत बिनने का काम बंद कर देना नहीं है, क्योंकि कबीर जी अपने जीवन के अन्त तक वस्त्र बीनने का लौकिक कार्य करते रहे। यहां "सात सूत" का अर्थ इस्लाम के सात मुख्य सिद्धांत हैं–(1) अल्लाह पर ईमान लाना, (2) अल्लाह के पैगम्बर हजरत मुहम्मद पर ईमान लाना, (3) अल्लाह के अपने पैगम्बर मुहम्मद साहब के माध्यम से भेजे गये कुरान पर ईमान लाना, (4) कयामत या आखिरत पर ईमान लाना, (5) नमाज, (6) हज और (7) रोजा।

मुसलमान के घर पलने पर भी इस्लाम के इन सात मुख्य सिद्धांतों की अवहेलना करके भी कबीर क्यों नहीं मरा? इसका उत्तर कबीर जी इसी पद में आगे इस प्रकार देते हैं–

**"सरब सुखा का एकु हरि सुआमी सो गुरि नामु दइओ॥
संत प्रह्लाद की पैज जिनि राखी हरनाखसु नख बिदरिओ॥
घर के देव पित्तर की छोड़ी गुरु को सबदु लइओ॥
कहत कबीर सगल पाप खंडन संतह लै उधरिओ॥"** (856)

अर्थात सब आनन्दों का मूल हरि नाम मैंने अपने गुरु से लेकर अपने हृदय में धारण किया है। मैं उसी हरि कि शरण में हूं जिन्होंने भक्त प्रह्लाद की उसके पिता हिरण्यकश्यप से रक्षा की थी, और प्रह्लाद को मारने को तत्पर हिरण्यकश्यप को अपने नखों से बिदीर्ण कर मार दिया था।

कबीर जी आगे कहते हैं कि अब मैंने अपने कुल के देव यानी शेख, शहीद और पीरों को मानना छोड़ दिया है, और न ही अब मैं अपने पितरो के धर्म को यानी कुल की परम्परा मे माने जाने वाले धर्म इस्लाम को मानता हूं। कबीर जी कहते हैं कि अब तो मैंने सब पापों को नष्ट करने वाला हरि नाम संतों से लेकर धारण कर लिया है, अब मैं इसी हरि नाम के आसरे भवसागर से तर गया हूँ।

"इहु मुंडीआ किउ न मुइऔ" पद के प्रथम चरण की इस अन्तिम पंक्ति का उत्तर ही कबीर जी ने ऊपर अपने **शेष पद में दिया है**

उस समय के प्रसिद्ध संत रामानन्द जी से कबीर ने राम नाम का महामंत्र ग्रहण किया था। उनकी अपार भक्ति की गाथा घर-घर की चर्चा बन चुकी थी। और इसी के साथ उस समय के मुसलमान शासक अब यह निर्णय ले चुके थे कि इस्लाम विरोधी वाणी के कारण कबीर को सरेआम प्राण दण्ड दिया जाय। आइये, ग्रंथ साहिबजी में आई कबीर की वाणी से ही यह प्रसंग सुनें। कबीर जी को यह बात ज्ञात हो गयी थी कि बादशाह उन्हें प्राण दण्ड देने को तत्पर है। पर कबीर रामभक्त भी भयभीत नहीं थे। उनकी प्राण दण्ड सम्बन्धी कथा देने के तत्काल के "पूर्व" पद में कबीर जी की ही वाणी में गुरु ग्रंथ साहिबजी कहते हैं–

पूर्व पद: "हरि महि तनु है तनि महि हरि है सरब निरंतरि सोई रे ॥
कहि कबीर राम नाम न छोडउ सहजे होई सु होइ रे ॥" (870 कबीर जी)

संत कबीर जी कहते हैं कि मेरा मन हरि में बसा है और हरि मेरे तन और मन में बस रहे हैं, यानी कबीर जीव के साथ एकाकार हो रहे हैं और हरि सभी में निरंतर और सदैव ही विराज रहे हैं। कबीर जी कहते हैं कि मैं कभी भी राम नाम नहीं छोड़ूंगा। राम नाम छुड़ाने के लिये जिसको जो करना हो सो करे या जो होना है सो हो।

इसके बाद पृष्ठ 870/71 पर मुख्य पद इस प्रकार आता है :

1. "भुजा बांधि भिला करि डारिओ ॥ हसती क्रोपि मूंड महि मारिओ ॥
हसति भागि कै चीसा मारै ॥ इआ मूरति कै हउ बलिहारै ॥"

37.4 कबीर जी कहते हैं मेरे हाथ बांधकर और मुझे गठरी बनाकर हाथी के सामने डाल दिया, और महावत ने क्रोधपूर्वक हाथी को उसके सिर पर अंकुश मार मुझे कुचलने के लिये मेरी ओर बढ़ाया। पर हाथी चीत्कार करते हुए भाग जाता है, और मानो यह कहता है, "मैं तो इस (भक्त कबीर की) मूर्ति पर बलिहारी जाता हूं।"

2. "आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोरु ॥ काजी बकिबो हसती तोरु ॥
हसति न तोरै धरै धिआनु ॥ वा कै रिदै बसै भगवानु ॥" (870/72 कबीर जी)

कबीर जी कहते हैं कि हे मेरे ठाकुर! मुझे तो तुम्हारे ही बल का आसरा है। हाथी को प्रहार करने के बजाय भागते देख काजी झुंझला कर महावत को फटकारते हुए कहने लगा कि तू हाथी को कबीर पर शीघ्र चला क्यों नहीं देता। परन्तु महावत के लाख प्रयत्नों के बाद भी हाथी आगे नहीं बढ़ता। मानों हाथी भी परमात्मा के ध्यान में मग्न हो गया, क्योंकि कबीर का हरि उसके हृदय में भी बस रहा है।

3. "किआ अपराधु संत है कीन्हा ॥ बांधि पोट कूंचर कउ दीन्हा ॥
कूंचर पोट लै लै नमस्कारै ॥ बूझी नहीं काजी अंधियारै ॥" (871 कबीर जी,

यह रोमांचकारी दृश्य देख कर लोग कहने लगे कि संत कबीर का अपराध क्या है जो उसे बांध कर हाथी के आगे मारने के लिये डाला दिया गया है। उधर हाथी सूंड उठा कर बंधन में पड़े और गठरी में बंधे कबीर जी को बार-बार नमस्कार कर रहा है पर अज्ञान रूपी अंधकार से अंधा काजी इस रहस्य को समझ नहीं पा रहा है।

4. "तीनि बार पतीआ भरि लीना ॥ मन कठोर अजहू न पतीना ॥
कहि कबीर हमरा गोबिंदु ॥ चउथे पद महि जन की जिंदु ॥" (871 कबीर जी

काजी ने ती बार कबीर को मारने की परीक्षा ली, किन्तु फिर भी उसके अज्ञानता भरे कठोर दिल को यह विश्वास नहीं हुआ कि प्रभु अपने भक्तों की स्वयं रक्षा करता है। कबीर जी कहते हैं कि गोविंद मेरा रक्षक है। तुरीय अर्थात चौथी अवस्था में स्थित, भक्तों का जीवन परमात्मा में स्थिर होता है, और परमात्मा में ही सत्त स्थित होने के कारण वे सांसारिक भयो से परे हैं।

इस्लाम के नाम पर कबीर जी को तीन प्रकार से मारने का काजी ने प्रयत्न किया था। हाथी के नीचे कुचलवा कर, अग्नि में जलाकर और गंगा में डुबो कर। ग्रंथ साहिबजी में अग्नि मे जलाने के प्रयत्न की कथा वर्णित नहीं है, पर गंगा में डुबा कर मारने के प्रयत्न का वर्णन आया है, जिसे हम आगे दे रहे हैं।

उत्तर पद : ऊपर दिये गये सम्पूर्ण पद के उत्तर पद की अन्तिम पंक्तियां इस प्रकार है

"गुर प्रसादि मैं डगरो पाइआ ॥ जीवन मरनु दोऊ मिटवाइआ ॥
कहु कबीर इहु राम की अंसु ॥ जस कागद पर मिटै न मंसु ॥" (871 कबीर जी)

कबीर जी कहते हैं—गुरु कृपा से मैंने परमात्मा की प्राप्ति का सहज मार्ग प्राप्त कर लिया है, अब मेरा जीवन और मरन दोनों ही मिट गये हैं, अर्थात परमात्मा के ज्ञान से मैं जीवन और मरन से परे हो गया हूँ। मैं तो राम का अंश हूँ अर्थात आत्मा तो परमात्मा का सन्तान अंश होने से उससे अभिन्न ही है, उसी प्रकार जैसे कागज पर लिखी स्याही कागज से पृथक अस्तिव नहीं रखती।

हाथी द्वारा संत कबीर को मारने के असफल प्रयत्न के बाद हम ग्रंथ साहिबजी मे वर्णित उस प्रसंग को दे रहे हैं जिसमें कबीर जी जंजीरों से बांधकर डुबोकर मारने के लिये गगाजी के फेंक दिया जाता है :

"गंग गुसाइनि गहिर गंभीर ॥ जंजीर बांधि करि खरे कबीर ॥
मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥ चरन कमल चितु रहिओ समाई ॥
गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर ॥ म्रिगछाला पर बैठे कबीर ॥
कहि कबीर कोऊ संग न साथ ॥ जल थल राखन है रघुनाथ ॥"
(1162 कबीर जी)

कबीर जी "गहिर गंभीर" शब्दों का प्रयोग कर यह बतलाते हैं कि अगाध जल से भरी गगा के बीच में लोहे की जंजीरों से जकड़कर मुझे डुबाने के लिये खड़ा किया गया। किन्तु मेरा मन तो भगवान रघुनाथ के चरण कमलों में समाया हुआ है, उन्हीं के चरणों में लीन है, इसलिये मैं इस भयावह स्थिति में भी अडिग और भय रहित हूँ, रघुनाथ जी के शरण में होने के कारण अब मुझे किसी का डर नहीं।

कबीर जी कहते है, कि भगवान राम की कृपा से गंगा जी की लहरों से मेरी जंजीरें टूट गई, और गंगा के जल पर मैं इस प्रकार स्थिर होकर बैठ गया मानों आसन लगाकर मृगछाला पर बैठा हुआ हूँ।

कबीर जी कहते हैं कि इस संसार में विपदा में कोई किसी का साथी नहीं है, विपदा में तो केवल रघुनाथ जी ही एक मात्र सहायक हैं जो अपने भक्तों की जल में और पृथ्वी पर हर प्रकार से रक्षा करते हैं

घोर आपद्काल में अन्य कोई भी सहायक नहीं होता, केवल रघुनाथ ही सहायक होते हे, यह भाव ग्रंथ साहिबजी के अन्तिम पृष्ठों मे गुरु तेगबहादुर जी की वाणी में इस प्रकार व्यक्त किया है।

"संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथ॥
कहु नानक इह बिपत्ति में टेक एक रघुनाथ॥
राम नाम उर मैं गहिओ जा के सम नहीं कोई॥
जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ॥" (1429 म. 9)

ऊपर दिये कबीर के स्पष्टतम शब्दों में इस्लाम के अत्याचारी एवं दमनकारी स्वरूप को असफल होते दिखलाया है, और इसके साथ ही इन पदों में यह भी दर्शाया गया है कि हरि का भक्त, राम का भक्त नष्ट नहीं किया जा सकता, उसकी जय निश्चित है।

कबीर की वाणी के अन्तिम पद में हमने देखा कि किस प्रकार मुसलमान धार्मिक नताओं और शासकों ने उन्हें गंगा में डुबाकर मारने का प्रयत्न किया। आइये देखें कि इस कथा के "पूर्व" और "उत्तर" पदों में कबीर जी क्या कहते हैं :

पूर्व पद : **"भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी काल भै फांसी॥**
दास कबीर चढ़ियो गढ़ ऊपरी राजु लिओ अबिनासी॥ (1162 कबीर जी)

अर्थात संतों की संगति और नाम सिमरन के आसरे मैंने काल का मृत्युमय फंदा काट दिया है। अब तो दास कबीर आत्मज्ञान के किले पर आरूढ़ हो गया है। और उसने अमृत्तव का अविनाशी राज्य प्राप्त कर लिया है।

उत्तर पद : **"इहु जीउ राम नाम लिव लागै॥**
जरा मरनु छुटै भ्रमु भागै॥" (1162 कबीर जी)

अर्थात जब वह जीव राम नाम की लौ लगा लेता है, तब उसका समस्त "भ्रम" यानी अज्ञान भाग जाता है और वह बुढ़ापे और मृत्यु के चक्र से छुट जाता है।

सत नाम देव जी (1270–1350 ई.)

57 5 अब हम ग्रंथ साहिब के पृष्ठ 1165 और 1166 पर आये 28 चरणों वाले इस्लाम के निरकुश अत्याचार से सम्बन्धित संत नामदेव जी के पद की चर्चा करेंगे। कथा सम्बन्धित यह पद आकार में सबसे बड़ा है और विस्तार से हिन्दुओं पर हो रहे मुस्लिम शासकों के अत्याचार और उनके द्वारा तलवार के बलबूते पर धर्म परिवर्तन की, पर साथ ही उसकी असफलता की भी अभूतपूर्व झांकी प्रस्तुत करता है। यह कथा सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक और संत नाम देव जी सीधी टकराहट और सुलतान की परजय का वर्णन करती है। कथा देने से पूर्व यहा कथा का "पूर्व" पद देना उचित रहेगा। नाम देव जी की इस अपनी कथा के पहले ग्रंथ साहिबजी नाम देव जी ही की वाणी में भक्त प्रह्लाद की कथा देते हैं, जिसमें अपने नरसिंह अवतार में प्रह्लाद की रक्षा करते हुए भगवान हिरण्यकश्यप का वध कर देते हैं। इस कथा का अन्तिम चरण इस प्रकार है :

पूर्व पद **"हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुर नर किए सनाथा॥**
कहि नामदेव हम नरहरि धिआवह रामु अभै पद दाता॥" 1165 नामदेव जी)

भक्त नामदेव जी कहते हैं, कि जिन श्री राम ने अपने नरसिंह रूप में हिरण्यकश्यप को अपने नखों से विदीर्ण कर मार डाला था, और इस प्रकार देवताओं और मनुष्यों को अभय कर दिया था, मैं उसी नरसिंह रूपी राम का ध्यान करता हूं जो कि अभय पद देने वाला है।

तत्पश्चात नामदेव जी की इस्लाम सम्बन्धी गाथा ग्रंथ साहिबजी इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं :

"सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥ देखउ राम तुम्हारे कामा ॥
नामा सुलताने बाधिला ॥ देखउ तेरा हरि बीठूला ॥" 1

सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा संत नामदेव जी के प्रति "सुनु बे नामा" शब्दों का प्रयोग बतलाता है कि बादशाह नामदेव जी के प्रति कितने अपमानजनक और घृणा मिश्रित भरे शब्दों का प्रयोग कर रहा है।

सुलतान कहता है अबे नामा। सुन, मैं तेरे राम के काम देखना चाहता हूं। सुलतान ने नामे को बन्धन में जकड़वा दिया और उससे कहने लगा कि मैं तेरा हरि, तेरे विठ्ठल की कृपा को देखना चाहता हूँ।

"बिसमिलि गऊ देहु जी जीवाइ ॥ नातरू गरदनि मारउ ठाइ ॥ 2

सुलतान कहता है कि नामदेव या तो बिसमिलि कहकर मेरी यह मरी गाय जीवित कर दे, नहीं तो मैं तुझे अभी और इसी स्थान पर मार डालूँगा।

"बादिसाह ऐसी किउ होई ॥ बिसमिल कीआ न जीवै कोइ ॥" 3

नामदेव जी कहते हैं कि हे बादशाह! ऐसी बात कैसे सम्भव है। बिसमिल कहने से कोई मेरा कैसे जीवित हो सकता है।

"मेरा कीआ कछू न होइ ॥ करि है रामु होइ हैं सोइ ॥" 4

नामदेव जी कहते हैं कि हे सुलतान! मेरे कहने से या किसी व्यक्ति के करने से कुछ नही होता। होता वही है जो मेरे प्रभु राम जी चाहते हैं।

"बादसाहु चढियो अहंकारि ॥ गज हसती दीनो चमकारि ॥" 5

नामदेव जी कहते हैं कि मेरी बात सुन कर बादशाह अहंकार से भर उठा और मुझ पर हाथी बढ़ाकर मारने का हुक्म दिया।

"रूदन करै नामे की माइ ॥ छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥" 6

यह देख वहाँ उपस्थित नामदेव जी की माँ विलाप करने लगीं और नामदेव जी से कहने लगीं कि बेटा! तू राम का नाम छोड़ कर खुदा का नाम क्यों नहीं जपने लगता है, अर्थात हे पुत्र तू अपनी प्राणों की रक्षा के लिये हिन्दू धर्म को छोड़ कर मुसलमान क्यों नहीं हो जाता।

"न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ ॥ पिंडु पडै तउ हरि गुन गाइ ॥" 7

माँ के ऐसा कहने पर नामदेव जी क्षुब्ध होकर कहते हैं कि हे माँ! न तो अब मैं तेरा पुत्र हूँ, न तू मेरी माँ है। यदि मेरा पिंड या शरीर नष्ट भी हो जाय तो भी हरि नाम नहीं छोडूंगा।

"करै गजिंदु सुंड की चोट ॥ नामा उबरै हरि की ओट ॥" 8

नामदेव जी द्वारा इस प्रकार हरि नाम न छोड़ने के संकल्प को सुन कर हाथी को उन पर छोड़ दिया जाता है हाथी बार-बार नामदेव जी पर सूंड से प्रहार करता है परन्तु नामदेव

जी कहते हैं कि "हरि की ओट" यानी परमात्मा की शरण में होने के कारण हाथी के प्रहार से मैं बच गया हूँ।

"काजी मुला करहि सुलामु ॥ इनि हिंदू मेरा मलिआ मान ॥" 9

इस अलौकिक दृश्य को देखकर काजी और मुल्ला जैसे कट्टर मुसलमानों के अगुआ भी नामदेव जी को सलाम करने लगे, और सुलतान बोल उठा कि इस हिन्दू ने तो सार्वजनिक रूप से मेरी इज्जत, मेरा मान, मिट्टी में मिला दिया।

"बादिसाह बेनती सुनेहु ॥ नामे सर भरि सोना लेहु ॥" 10

"माल लेउ तउ दोजकि परउ ॥ दीनु छोडि दुनिआ कउ भरउ ॥" 11

संत नामदेव जी का यह अद्भुत प्रभाव देख वहाँ के हिन्दू जन मिल कर बादशाह के पास आये और कहने लगे कि हे बादशाह! हमारी विनती सुनो। नामदेव के वजन के बराबर हमसे सोना ले लो और संत को छोड़ दो। बादशाह ने उत्तर दिया कि अगर मैं नामदेव के बदले मे सोना लेता हूँ तो मैं इस्लाम की मान्यता से गिर जाऊँगा और इस प्रकार दोजख या नरक मे पड़ूँगा।

इस पद से स्पष्ट है कि बादशाह द्वारा नामदेव जी की हत्या का प्रयत्न उन्हें एक खतरनाक काफिर समझकर कुरान शरीफ की मान्यताओं के अनुसार ही किया जा रहा था।

"पावहु बेडी हाथ हु ताल ॥ नामा गावै गुन गोपाल ॥" 12

"गंग जमुन जउ उलटी बहै ॥ तउ नामा हरि करता रहै ॥" 13

हिन्दुओं की प्रार्थना अस्वीकार करके सुलतान नामदेव जी के पावों में बेड़ी डाल कर बन्द करने का हुक्म देता है। इस पद में नामदेव जी कह रहे हैं कि मेरे पावों में बेड़ी पड़ी है पर मैं तो हाथों से ताली देकर गोपाल यानी भगवान कृष्ण का गुणगान करता हूँ। यदि गंगा और यमुना भी उल्टी बहने लगें, यानी यदि दुनिया में असम्भव भी सम्भव होने लगे तो भी मैं हरि के गुण गाता रहूंगा।

इस पद द्वारा नामदेव जी हरि मार्ग से विमुख होना कभी भी संभव नहीं है, ऐसी घोषणा कर रहे हैं।

"सात घड़ी जब बीती सुणी ॥ अजहु न आइओ त्रिभवन धणी ॥" 14

जब सात घड़ी समय बीत गया तो कैद में पड़े नामदेव जी सोचने लगे कि अभी तक मुझे त्रिलोकी नाथ भगवान कृष्ण ने दर्शन नहीं दिये। इस पद से प्रतीत होता है कि सुलतान ने हाथी द्वारा नामदेव जी की असफल हत्या के प्रयास के बाद उन्हें मरी गाय को जीवित करने के लिये शायद सात घड़ी समय और दिया था।

"पाखंतण बाज बजाइला ॥ गरुड़ चढ़े गोविंद आइला ॥" 15

बसी उसी क्षण नामदेव जी को पंखों के फड़फड़ाने की आवाज आई, और गरुड़ पर आसीन भगवान विष्णु ने उन्हें दर्शन दिये।

"अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥ गरूड़ चढ़े आए गोपाल ॥" 16

इस प्रकार अपने भक्त नामदेव जी की रक्षा के लिये गरुड़ पर चढ कर भगवान जा

"कहहि त धरणि इकोडी करउ ॥ कहहि त ले करि ऊपरि धरउ ॥" 17

"कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ ॥ समु कोई देखै पतिआइ ॥" 18

भगवान नामदेव जी से कहने लगे कि तुम कहो तो मैं इस धरती को टेढ़ी कर दूगा तेरी इच्छा हो तो इसे पकड़ कर उल्टी टांग दूं या कहो तो इस मृत गाय को जीवित कर दू। और उसे यहाँ पुनः जीवित देखकर सबको विश्वास हो जाय।

"नामा प्रणवै सेलमसेल ॥ गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥" 19

भगवान की इस कृपा से गाय जीवित हो जाती है और नामदेव जी उन्हें प्रणाम करता है। तत्पश्चात् नाम देवजी ने लोगों से कहा कि गाय को बछड़ा लगा दो और गाय का दूध दूहो।

"दुधहि दुहि जब मटुकी भरी ॥ ले बादशाह के आगे धरी ॥" 20

लोगों ने पुनः जीवित गाय के दूध से भरी मटकी बादशाह के सामने रख दी।

"बादिसाहु महल महि जाइ ॥ अउघट की घट लागी आइ ॥" 21

तत्पश्चात् बादशाह उठकर महल में चला गया। परन्तु महल में जाकर वह इतना बीमार पड़ गया कि "अउघट की घट" मौत के घाट लग गया, यानी उसकी मृत्यु निकट आ गई।

"काजी मुला बिनती फुरमाइ ॥ बखस हिंदू मैं तेरी गाइ ॥" 22

अपनी मृत्यु निकट आई देख बादशाह ने काजी और मुल्लाओं के माध्यम से नामदेव जी को अपनी यह विनती भेजी कि हे हिंदू! तू मुझे भी अपनी गाय मानकर जीवन दान दे, तू मुझे "बख्स" दे, क्षमा कर दे।

"नामा कहै सुनहु बादिसाह ॥ इहु किहु पतीआ मुझै दिखाई ॥" 23

नामदेव जी कहते हैं कि हे बादशाह! सुनों पहले तुम मुझे एक वचन दो।

"इस पतीआ का इहै परवानु ॥ साचि सीलि चालहु सुलितानु ॥" 24

और इस वचन का प्रमाण यह रहेगा कि तुम सत्य के मार्ग पर चलोगे, शील यानी अपनी इन्द्रियों को वश में रखोगें और सबमें परमात्मा का वास समझकर दूसरों के प्रति नम्रता का व्यवहार करोगें।

"नामदेउ सभ रहिआ समाई ॥ मिली हिन्दू सभ नामे पहि जाहि ॥" 25

नामदेव जी के साथ घटी इस अलौकिक घटना को देखकर घर-घर नामदेव जी की चर्चा होने लगी। और हिन्दू अपने समूह बनाकर नामदेव जी के पास आने लगे।

"जउ अबकी बार न जीवै गाइ ॥ त नामदेव का पतीआ जाइ ॥" 26

"नामे की कीरति रही संसारि ॥ भगत जनां ले उधरिआ पार ॥" 27

"सगल कलेस निदंक भइआ खेद नामे नाराइन नाही भेदु ॥" 28

(1165/66 नामदेव जी)

लोग कहने लगे कि यदि अबकी बार गाय नहीं जीवित होती तो भक्त नामदेव की प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती। परन्तु नामदेव जी की कीर्ति संसार में प्रतिष्ठित रही। परमात्मा ने नामदेव जी और अन्य भक्तों का उद्धार किया। इसका दूसरा सहज अर्थ यह भी है। नामदेव जी ने अपने साथ अन्य भक्तों की भी प्रतिष्ठा रखी

नामदेव जी की इस महान कीर्ति से सभी निंदकों को दुख और क्लेश हुआ। परन्तु यह उनकी अज्ञानता के कारण है। तत्वतः नामदेव और नारायण में कोई भी भेद नहीं है। दूसरे शब्दों में जो भी परमार्थ ज्ञान के आसरे परमात्मा से अभिन्नता प्राप्त कर लेगा वह नामदेव जी की तरह ही दुष्ट शक्तियों पर विजयी होगा और उसकी कीर्ति सारे संसार में फैलेगी।

इस समस्त शब्द का उत्तर पद इस प्रकार है :

उत्तर पद : "जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि ॥
जउ गुरदेव त उतरै पारि ॥
जउ गुरदेव त बैकुंठ तरै ॥
जउ गुरदेव त जीवत मरै ॥" (1166 नामदेव जी)

यदि सच्चे गुरु मिल जायं तो जीव भगवान कृष्ण को प्राप्त कर लेता है, वह भव सागर को पार कर जाता है, बैकुंठ यानी परम धाम को प्राप्त कर लेता है, और वह संसार में व्यवहार करते हुए भी उसकी विषय-वासना के प्रति मृतवत रहता है।

57.6 संत नामदेव जी का ग्रंथ साहिबजी में विशिष्ट स्थान है। ग्रंथ साहिबजी में वर्णित यही एक संत हैं जिनके बारे में यह दिखलाया गया है कि भगवान ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिये। उपरोक्त पद में यह भगवत दर्शन की कथा विस्तार से कही गई है, जिसमें नामदेव जी और भगवान का वार्तालाप भी शामिल है। यही नहीं, नामदेव जी के उपरोक्त इस्लाम सम्बन्धी कथन के पूर्व ग्रंथ साहिबजी नामदेव की ही वाणी में उनकी अत्यन्त भक्तिमयी एक बाल कथा भी देते हैं जिसमें स्वयं गोविंद ने, नारायण ने, उनके हरि ने, उनको दर्शन दिये और उनके द्वारा भोग में अर्पित दूध पिया। यह भाव-भीनी कथा ग्रंथ साहिबजी में इस प्रकार आती है .

"दूध कटोरै गडवै पानी ॥ कपल गाइ नामे दुहि आनी ॥
दूध पीउ गोबिंदे राइ ॥ दूध पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥
नाही त घर को बापु रिसाइ ॥
सोइन कटोरी अम्रित भरी ॥ लै नामै हरि आगै धरी ॥
एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥ नामे देखि नराइनु हसै ॥
दूध पीआइ भगतु घरि गइआ ॥ नामे हरि का दरसनु भइआ ॥"
(1163-64 नामदेव जी)

भक्त नामदेव कहते हैं, हे मेरे गोविंद! कपिला गाय का दूध दुहकर लाया हूँ, हे मेरे गोविंद! मैं तुम्हारे लिये कटोरे में दूध और लोटे में पानी लेकर आया हूँ। तुम मेरे लाये इस दूध को पीओ, और मेरे मन को प्रसन्नता प्रदान करो। हे गोबिंद! देखो यदि तुम मेरे इस दूध को नहीं पीओगे तो मेरे पिता मुझसे कुपित होंगे। यह कह कर नामदेव ने अमृतमय दूध से भरी कटोरी हरि के आगे रख दी। भक्त का यह अपूर्व भाव देखकर नारायण हंस पड़े और कहने लगे कि भक्त तो मेरे हृदय में ही बसता है। नामदेव को हरि का दर्शन मिला, और वह उनको दूध पिलाकर अपने घर गया। हरि दर्शन कर नामदेव धन्य हो गया।

ग्रंथ साहिबजी में आई नामदेव जी की परम भक्ति की एक दूसरी कथा भी हमने अन्य संदर्भ में दी है यह कथा इस प्रकार है कि एक नामदेव जी जी को मन्दिर

मे नीच जाति का होने के कारण वहाँ पुजारियों से अपमानित होना पड़ा और वह तब मन्दिर के पिछवाड़े जा कर वहाँ बैठ गए। इस पर भगवान जगन्नाथ अपना मुख मन्दिर के मुख्य द्वार से फेर लेते हैं और अभिमान से ग्रस्त पुजारियों की ओर अपनी पीठ कर देते हैं। इस कथा का महत्त्व हम इसी बात से समझ सकते हैं कि यह कथा ग्रंथ साहिबजी में दो बार आई है। हमने जो कथा "वर्ण व्यवस्था" सम्बन्धी अध्याय में दी है वह ग्रंथ साहिबजी में पृष्ठ 1292 पर आई है। परन्तु इसके पहले यह कथा नामदेव जी के ऊपर दिये इस्लाम सम्बन्धी पद के पूर्व आई भक्त प्रह्लाद की कथा से पहले पृष्ठ 1164 पर आती है। नामदेव जी के भावपूर्ण शब्द इस प्रकार हैं :

> "हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ॥ भगति करत नामा पकरि उठाइआ ॥
> हिनडी जाति मेरी जादिम राइआ ॥ छीपे का जनमि काहे कउ आइआ ॥
> लै कमली चलिओ पलटाइ ॥ देहुरै पछि बैठा आइ ॥ जिउ जिउ नामा हरि
> गुण उचरै ॥ भगत जना कउ देहुरा फिरै ॥ (1164 नामदेव जी)

हे प्रभु मैं हंसते खेलते अर्थात बड़े चाव और उत्साह के साथ तुम्हारे मन्दिर आया था। परन्तु पुजारियों ने मुझे नीच जाति का मानकर मुझे पकड़ कर तुम्हारे मन्दिर से बाहर निकाल दिया। हे यदुनाथ! बताओ मैंने छीपे के घर क्यों जन्म लिया। लोग मुझे नीच जाति का कहते है। मैं अपनी कमली लेकर हे प्रभु अब तुम्हारे मन्दिर के पिछवाड़े आकर बैठ गया हूं। नामदेव जी कहते हैं कि प्रभु ने अपने अद्‌भुत कौतुक से भक्त की लाज रखी। जैसे-जैसे नामा (अर्थात नामदेव) हरि गुण गाने लगा, भगवान का मन्दिर भक्त की ओर फिर गया।

नामदेव जी की इन तीनों कथाओं से स्पष्ट है कि उनकी अतुलित प्रभु भक्ति सर्व मान्य थी। ग्रंथ साहिबजी उनकी सुल्तान से हुई सीधी भिड़ंत में नामदेव जी की पूर्ण विजय दिखलाकर धर्म की ही इस्लाम पर विजय दर्शायी है।

ग्रंथ साहिबजी में वर्णित नामदेव जी की यह कथा अपने में अभूतपूर्व है, और इस्लाम के प्रति सिक्ख गुरुओं के दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है। संत नामवेद जी गुरु नानक देव जी से तीन सौ वर्ष पहले हुए थे। और कबीर जी का जन्म नानम जी से 71 वर्ष पूर्व हुआ था और उनका इस्लाम के साथ खुला संघर्ष ऊपर के पदों में प्रत्यक्ष है। और गुरुओं ने इन दोनों की इस्लाम के साथ संघर्ष सम्बन्धी वाणियों को ग्रंथ साहिबजी में उस समय स्थान दिया था, जब स्वयं गुरुओं का संघर्ष अभी दूर था। इस प्रकार सिक्ख गुरुओं ने इन दोनों संतों (यानी नामदेव जी और कबीर जी) की इस्लाम सम्बन्धी वाणियों को ग्रंथ साहिबजी में प्रमुख स्थान देते हुए मानो अप्रत्यक्ष रूप से इस्लाम के विरूद्ध अपने संघर्ष की भी घोषणा कर दी थी। और यह संघर्ष लम्बा और गुरुओं के और उनके अनुयायियों के बलिदानों से भरपूर था। गुरु अर्जुन देव जी महाराज, गुरु हरगोविंद जी, गुरु तेगबहादुर जी, गुरु गोविंद सिंह जी के दोनों बच्चा और बन्दा बैरागी के अनुपम बलिदानों की गाथाएं तो आज भी सारे हिन्दू समाज की प्रेरणा स्रोत बनी हुई है। गुरु गोविंद सिंह जी द्वारा 1699 में "खालसा" की स्थापना के साथ समस्त हिन्दू समाज को इस लोमहर्षक संघर्ष में शामिल होने का खुला अवसर मिला। और इसका

अंत 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पंजाब में मुसलमानों की पूर्ण पराजय और वहाँ सिक्खों के शासन की स्थापना से हुआ।

इस्लाम के शासन काल में उन प्रभावशाली और वरिष्ठ हिन्दू नेताओं के सामने, जिनसे इस्लाम को आशंका होती थी, तीन विकल्प रखे जाते थे—(1) या तो वे कोई अलौकिक चमत्कार दिखलावें, (2) या वे इस्लाम स्वीकार करें और (3) नहीं तो तीसरे विकल्प के रूप में उन्हें मृत्यु दण्ड भोगना अनिवार्य था। संत नामदेव जी के सामने रखें गये ये तीनों विकल्प हमने स्पष्टतया उनकी उपरोक्त वाणी में देखें। किन्तु यहाँ न तो नामदेव जी को और न आगे चलकर कबीर जी को मुस्लिम शासक मारने में सफल हो सके। और भगवान की कृपा से इन मुस्लिम शासकों की पराजय के साथ ही नामदेव जी और कबीर जी का इस्लाम के साथ तत्कालिक संघर्ष मानों समाप्त हो गया। पर सिक्ख गुरुओं को लगता है कि इस्लाम के साथ यह मूलभूत संघर्ष समाप्त होना स्वीकार नहीं था। गुरु तेगबहादुर के सामने रखे गये इन तीनो विकल्पों का तो स्वयं इतिहास साक्षी है। गुरु अर्जुन देव जी और गुरु तेगबहादुर जी ने किसी चमत्कार दिखलाने की बात ही स्वीकार नहीं की, वरण उन्होंने भयानकतम कष्टों के साथ अपनी मौत स्वीकार की। और यही मार्ग गुरु गोविंद सिंह जी के बालकों, बन्दा बैरागी और गुरुओं के हजारों अन्य अनुयायियों ने अपनाया। गुरुओं के इस आत्म बलिदान के मार्ग से उनका एक ही संदेश स्पष्ट होता है और वह यह कि इस्लाम के साथ संघर्ष जब तक जारी रखा जाय जब तब कि उसमें गैर मुसलमानो के प्रति हिंसा और शत्रुता की भावना निहित है। गुरुओं की अभी तक इस्लाम के प्रति दी गई जितनी भी वाणियाँ हमने ऊपर उधृत की है, उनमें इस्लाम के प्रति उनका यही संदेश हमें मिलता है। नीचे हम उनकी तीन अन्य वाणियाँ दे रहे हैं।

इन तीन पदों में पहला पद गुरु नानक देव जी का है और इस्लाम के मूल सिद्धांतों पर सीधी और भारी चोट करता है। इस्लाम के सिद्धांतों में हमने देखा कि सब मनुष्यों को चाहे वह ईमानवाला हो या काफ़िर, कयामत के दिन सशरीर अपनी अपनी कब्र से उठना पड़ेगा, और अन्तिम फैसले के (यानी उन्हें बहिश्त या स्वर्ग मिला है, या फिर उन्हें दोजख या नर्क मिलना है) लिये अल्लाह के सामने हाजिर होना पड़ेगा। कुरान शरीफ़ में स्पष्ट कहा है कि पहली मौत के बाद ईमानवालों की कोई दूसरी मौत नहीं होगी और कयामत के बाद उनका अल्लाह पर और उनके पैगम्बर हजरत मुहम्मद पर, और अल्लाह की आयतों और कयामत पर ईमान होने के कारण सदा रहने वाले कुरान वर्णित स्वर्ग में नहरों और बागो मे हूरा, फल, मेवे आदि के साथ सुख से रहेंगे। कुरान शरीफ़ ने मरने के बाद कयामत तक काफ़िर की भी कोई दूसरी मौत नहीं दिखलाई, इसलिये इस बीच के काल में उसके भी जन्म का कोई प्रश्न नहीं उठता। जैसाकि हमने कुरान शरीफ़ के अध्ययन में देखा कि कयामत के दिन अल्लाह के फैसले के अनुसार काफ़िर हमेशा भारी कष्ट के साथ दोजख में रहेंगे, और वहा उन्हें मांगने पर भी दोजख से मुक्ति नसीब नहीं होगी। पर नानक जी कहते हैं :

"मिटी मुसलमान की पैडे पई कुमिहआर ॥
घडि भांडे इटा किआ जलदी करे पुकार॥

जलि जलि रोवै बपुडी झडि झडि पवहि अंगिआर ॥
नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥" (466 म. 1)

नानक जी कहते हैं कि मुसलमान का शरीर जब कब्र में लम्बे काल के बाद मिट्टी बन जाता है तो वह मिट्टी कुम्हार के हाथ या उसके घर बरतन बनाने के लिये आती है : कुम्हार उस मिट्टी को गढ़ कर बरतन और ईंटें बनाता है। साँचें में पड़ी और आग में पकने पर मुसलमान की वह मिट्टी मानो जलती हुई पुकारती है, वह बेचारी जल-जल कर रोती है और उस पर जलते अंगारे झड़-झड़ कर पड़ते हैं। नानक जी कहते हैं कि जिस सृष्टिकर्ता ने इस रचना को बनाया है केवल वही जानता है कि इस मिट्टी को न जानें कितनी बार और जलना है।

पूर्व पद : "जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥
औइ जि आखहि सुतूं है जाणहि तिना भि तेरी सार ॥
नानक भगता मुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥
सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पाछारु ॥" (466 म 1)

नानक जी कहते हैं कि जल और थल में विभिन्न लोकों और पुरियों में अनगिनत जीव है, वे जो कुछ भी बोलते करते हैं हे सृष्टिकर्ता! तू जानता है, और तू ही उनकी देखभाल करता है। भक्तों को केवल तेरी स्तुति करने की ही भूख है, केवल तेरे नाम का ही आसरा है। वे तो सदा ज्ञानीजनों के चरणों की धूल बन कर सदा आनन्द में रहते हैं।

उत्तर पद : "बिनु सतिगुर किनै न जाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणइआ ॥
सतिगुर मिलिऐ सदा मुक्तु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥
उत्तमु एहु विचारु है जिन सचे सिउ चितु लाइआ ॥
जग जीवन दाता पाइआ ॥" (466 म 1)

नानक जी कहते हैं कि सतगुरु के बिना कोई परमात्मा को नहीं पा सकता, किसी ने अभी तक नहीं पाया है, क्योंकि सतगुरु में प्रभु प्रत्यक्ष वास करता है, और गुरु की वाणी मे प्रभु की वाणी प्रकट रूप में बसती है। सतगुरु के मिलने पर जीव मुक्त हो जाता है क्योंकि सतगुरु की वाणी उसके सांसारिक मोह को नष्ट कर देती है। यही परमपद प्राप्ति का उत्तम मार्ग है। जिसने उस सत्य स्वरूप परमात्मा में अपने चित्त को लगाया, उसी ने उस जग जीवन दाता परमात्मा को पाया है।

इस्लाम सम्बन्धी दूसरा पद गुरु अर्जुन देव जी का है। इसमें धर्म के घोर निंदक और शत्रु सुलही खां की पराजय और परब्रह्म की कृपा से उसके वध का वर्णन है :

"निंदकु गुर किरपा ते हाटिओ ॥
पारब्रह्म प्रभ भाए दइआला सिव के बाणि सिरु काटिओ ॥
कालु जालु जमु जोहि न साकै सच का पंथु थाटिओ ॥
खात खरचत किछु निखुटत नाही राम रतनु धनु खाटिओ ॥
भसमा भूत होआ खिन भीतरि अपना कीआ पाइआ ॥
आगम निगमु कहै जनु नानक देखै लोकु सबाइआ ॥" 714 म 5

57.7 ऊपर दिये कबीर और नामदेव जी के पदों और गुरु अर्जुनदेव जी के इस पद में एक बड़ा स्पष्ट अन्तर है। नामदेव जी और कबीर जी को मारने के प्रयत्न करने वाले मुस्लिम शासक इन दोनों संतों को मारने में सफल नहीं हो सके, दोनों ही संत हरि कृपा से बच गये, पर इनको मारने का प्रयत्न करने वाले का कुछ नहीं बिगड़ा। यहाँ ऊपर दिये गुरु अर्जुन देव जी के पद में उन्हें मारने का प्रयत्न करने वाले मुस्लिम शासक का नाश स्वयं परब्रह्म के हाथों शिव के बाण द्वारा होता दिखलाया है, और वह क्षण भर में भस्मीभूत हो जाता है।

पद का सहज अर्थ इसी प्रकार है :

निदंक (सुलही खां) गुरु की कृपा से दूर हट गया। परब्रह्मम परमात्मा दयालु उठे और उन्होंने भगवान शिव के बाण से उसका सिर काट दिया। मैंने सत्य का मार्ग अपनाया है। इसलिये काल मुझे अपने जाल में नही फंसा सकता और न यमराज मेरी ओर देख सकता है, मेने राम नाम का अनमोल रत्न रूपी धन प्राप्त कर लिया है जो खाने और खरचने पर भी कम नहीं होता। क्षण भर में वह निदंक भस्म रूप हो गया और इस प्रकार उसने अपने बुरे कर्म का फल पाया। नानक तो वेद शास्त्रों के ही प्रमाण की बात कहता है जो सम्पूर्ण ससार को विदित है।

तीसरा पद गुरु रामदास जी का है। इसमें उन्होंने धर्म विरोधी और संत विरोधी निदक को पापी कहा है जो इस लोक और परलोक में अपने विष के समान बुरे कर्मो का मृत्युरूप फल जायेंगे और स्वयं श्री हरि अपने भक्तों की रक्षा करेंगे :

"हरि भगता नो नित नावै दी वडि आई बखसी अनु नितु चड़ै सवाई ॥
हरि भगता नो थिरू घरी बहालिअनु अपनी पैज रखाई ॥
निदंका पासहु हरि लेखा मंगसी बहु देह सजाई ॥
जेहा निदंक अपणै जीइ कमावदे तेहो फलु पाई ॥
भगत जनां का राखा हरि आपि है किआ पापी करीऐ ॥
गुमानु करहि मुड गुमानी आ विषु खाधी मरीऐ ॥
आइ लगे नी दिह थेडडे जिउ पका खेतु लुणीऐ ॥
जेहे करम कमावेद तेवेहो भणीऐ ॥
जन नानक का खसमु बड़ा है सभना दा धणीऐ ॥" (316 म॰ 4)

गुरु रामदास जी कहते हैं कि हरि ने अपने भक्तों को नित्य ही अपने नाम की बडाई या महिमा दी है जो प्रतिदिन सवाई ही होती है, अर्थात बढ़ती ही रहती है। हरि भक्त हरि कृपा से सदैव ही परमात्मा में ही उनके स्वरूप में ही स्थित रहते हैं। इस प्रकार भक्तों को अपने ओट में लेकर हरि ने अपने नाम की लाज रखी है।"

"हरि जब निदंकों से हिसाब मांगेगा तो उनके बुरे कर्मों के कारण उन्हें भारी सजा देगा। निदंक जिस तरह अपने पाप कमाते हैं और बुरे कर्म करते हैं वैसा ही फल प्राप्त करेंगे।"

"हरि स्वयं भक्तजनों के रक्षक हैं इसलिये ये पापी हरि भक्तों का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। हे मूढ़ अहंकारी निदंक! तू किस बात का अहंकार करता है। विष खाने से तो मृत्यु निश्चित है अर्थात जो तू अभिमानपूर्वक हरि भक्तों को पीड़ा पहुचा रहा है वह तेरे लिये

विषपान के समान है। जीवन के दिन थोड़े ही होते हैं और पके खेत के समान कट कर समाप्त हो जाते हैं। हे निदंक! तू निश्चय ही यह जान ले कि जैसा कोई कर्म करता है वैसा ही वह कहलाता है, यानी कर्म के अनुसार ही वह अच्छा और बुरा कहलाने लगता है। नानक जी कहते हैं कि उनका हरि सबसे बड़ा है और सभी का स्वामी है।"

हरि निदंकों के संदर्भ में ग्रंथ साहिबजी में आई ये वाणियाँ स्पष्टतया इस्लाम के अनुयायियों को सम्बोधित हैं। ये वाणियाँ हरि निदंकों के पूर्ण पराभव और उनके नष्ट होने की घोषणा करती है और हरि भक्तों को उनकी रक्षा का पूरा आश्वासन देती हैं।

ग्रंथ साहिबजी "साकत"

57.8 ग्रंथ साहिबजी में एक शब्द जो बार-बार आया है, या कहिये कि सारे ग्रंथ में पृष्ठ 13 से शुरू होकर लगभग आखिर तक स्थान-स्थान पर आया है, परन्तु जिसकी ओर विद्वानो का बहुत कम ध्यान गया है वह शब्द है "साकत"।

ग्रंथ साहिबजी में साकत को सुअर और कुत्ते से भी नीचे गिरा हुआ दिखलाया गया है। साकत को साक्षात 'निदंक' करके सम्बोधित करते हुए उसे हरि, राम और विष्णु विरोधी बतलाते हुए सबसे 'अधम' और चौरासी लाख नरकों को भोगने वाला माना है। साकत को हरि विरोधी, संत विरोधी और शास्त्र विरोधी मानते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं :

"साकत की ऐसी रीति ॥ जो किछु करै सगल विपरीत ॥" (195 म. 4)

अर्थात साकत की परम्परा यह है कि वह सब काम शास्त्र मान्यताओं के विपरीत करता है, उसके सब काम उल्टे होते हैं।

ग्रंथ साहिबजी के इस कथन को कि "साकत" जो कुछ करता है वह विपरीत या उल्टे काम करता है हम गीता में आए भगवान कृष्ण के वचनों से स्पष्ट करना चाहेंगे। हम पहले भी कई स्थानों पर कह आये हैं कि ग्रंथ साहिबजी की वाणी शास्त्रानुकूल है, इसे हम गीता से प्रमाण देकर सिद्ध करना चाहेंगे।

गीता के अठारहवें अध्याय में भगवान कृष्ण ने बुद्धि, ज्ञान, धृति, (धारण शक्ति) कर्म, कर्त्ता आदि का प्रकृति के तीन मूल गुणों सत, रज और तम के अनुसार भेदों का सविस्तार वर्णन किया है। और बुद्धि के तीन भेद बतलाती हुई गीता कहती हैं :

1. "प्रवृत्ति और निवृत्ति, कार्य और अकार्य और भय और अभय तथा बंधन और मोक्ष इन सबको जो बुद्धि जानती है, पार्थ, वह बुद्धि सात्विकी है।" (गीता 18/30)

2. "जिस बुद्धि से मनुष्य धर्म और अधर्म को तथा कार्य और अकार्य को यथार्थ नही जानता है, पार्थ, वह बुद्धि राजसी है।" (गीता 18/31)

3. "तमोगुण रूपी अंधकार से ढकी हुई जो बुद्धि अधर्म को धर्म, ऐसा मानती है, और सब बातों को या अर्थों को विपरीत मानती है, हे पार्थ! वह बुद्धि तामसी है।" (गीता 18/32)

श्री रामानुजाचार्य जी ने अपने गीता भाष्य में इस श्लोक का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया है : "तामसी बुद्धि जो तमोगुण (अंधकार) से आवृत्त होने के कारण सब बातों को विपरीत ही मानती है, यानी अधर्म को धर्म और धर्म को अधर्म अच्छी वस्तु को बुरी और बुरी वस्तु को अच्छी, परम तत्त्व को तुच्छ और तुच्छ को परमतत्व इस प्रकार सब कुछ विपरीत मानती है।"

इस प्रकार गीता के अनुसार जब बुद्धि तमोगुणी हो जाती है तो ऐसे बुद्धिवाले लोगों के समस्त आचरण विपरीत होने लगते हैं

तमोगुणी ज्ञान का लक्षण गीता इस प्रकार बतलाती है :

जिस ज्ञान के द्वारा मनुष्य एक कार्य रूप शरीर में ही आसक्त है, (अर्थात जिस ज्ञान से शरीर के द्वारा प्राप्त भोग में ही आसक्ति है, तथा जो बिना युक्तिवाला, तत्व से रहित और तुच्छ है वह (ज्ञान) तामस कहा गया है।" (गीता 18/22)

गीता के अनुसार तमोगुणी धारण वाले पुरुष का लक्षण इस प्रकार है :

"हे पार्थ! दुष्ट बुद्धिवाला मनुष्य जिस धारणा के द्वारा निद्रा, भय, शोक, विषाद या दुख एवं उन्मत्ता को नहीं छोड़ता वह धारणा तामसी है।" (गीता 18/36)

57.9 वेद शास्त्रों का यह आदेश है कि मनुष्य को शोक और दुख से कभी अभिभूत नहीं होना चाहिए क्योंकि शोक करने से और दुख मानने से शोक और विषाद बढ़ते ही हैं, घटते कभी नहीं। अभिमन्यु का वध कितने बड़े अन्याय से हुआ था, पर शास्त्रों ने या हिन्दु समाज ने इस कभी इसको शोक का शाश्वत बिंदु नहीं माना। इसी प्रकार हमारे निकट के भूतकाल मे गुरु अर्जुन देव जी, गुरु तेगबहादुर जी और गुरु गोविन्द सिंह जी के दोनों बच्चों की मुसलमान शासकों द्वारा अन्यायपूर्ण और क्रूरतम हत्यायें कभी भी हिंदू और सिक्ख समाज को चिर विषाद के समुद्र में नहीं डुबा सकीं। बल्कि आत्मा के अमरत्व के सिद्धांत की कसौटी पर कस कर ये सभी हत्यायें दधीचि के बलिदान में रूपांतर हो हमारी प्रेरणा स्रोत बनी रही है।

परन्तु इसके विपरीत ईसा मसीह की हत्या के शोक और विषाद से आज भी ईसाई जगत पर वर्ष बुरी तरह से ग्रसित हो उठता है। आज भी मुस्लिम समाज हजरत मुहम्मद के नवासों की मृत्यु तिथि पर हर वर्ष भारी शोक और विषाद में डूबकर अपनी छाती तक पीटने से पीछे नहीं हटता।

और यह सर्वमान्य सिद्धांत है कि शोक और विषाद सदैव घृणा, क्रोध और हिंसा को जन्म देते हैं और उनको बढ़ाते है।

इस प्रकार तमोगुण से ग्रसित मनुष्यों की गति बतलाते हुए गीता कहती है :

"तमोगुण से आवृत होकर मरने वाला मनुष्य मूढ़ योनियां यानी कीट, पतंग और पशु आदि योनियों में जन्म लेता है।" (गीता 14/15) "और वे तमोगुणी और आसुरी सम्पदा से युक्त पुरुष जन्म-जन्म में आसुरी योनियों को प्राप्त होते हैं और भगवान को न पाकर अति नीच गति को ही प्राप्त होते हैं, अति घोर नरकों में पड़ते हैं।" (गीता 16/20)

ग्रंथ साहिबजी ने अपनी वाणियों में "साकत" की ऐसी गति का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

> "जिन कउ प्रीति नाही हरि सेती ॥ ते साकत मूढ़ नर काचे ॥
> जिन कउ जनमु मरणु अति भारी बिखि बिसटा भरि भरि पाचे ॥" (169 म. 4)

जिसकी हरि से प्रीति नहीं है ऐसे मनुष्य "साकत" है। और यह साकत मूढ़ और कच्चे यानी हर प्रकार से अज्ञानता से परिपूर्ण है। ऐसे मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में पड़े भारी दुख भोगते हैं और विष्ठा यानी मल के कीड़े के समान पच-पच कर मरते रहते हैं।

हरि भक्त और साकत का मार्ग बिल्कुल विपरीत है यह बात गुरु नानक देव जी इस प्रकार अपनी वाणी में कहते है

"अनत तरंग भगति हरि रंगा ॥ अनु दिनु सूचे हरि गुण संगा
मिथिआ जनमु साकत संसारा ॥ राम भगति जनु रहै निरारा ॥"

हरि रंग में डूबे भक्त भक्ति की अनन्त तरंगों में रमें हैं। वे हरि के गुणों की संगति के कारण सदैव पवित्र रहते हैं। किन्तु राम भक्ति से विमुख साकत का जन्म इस संसार मे मिथ्या है। केवल राम भक्त ही माया के प्रभाव से बचा रहता है।

58) कबीर के अनुसार तो घोर तमोगुण से ग्रसित साकत को राम नाम का उपदेश या हरि नाम सुनाना उसी प्रकार व्यर्थ है जिस प्रकार कुत्ते को शास्त्र सुनाना, कौवे को कपूर चुगाना और नीम को अमृत से सींचना या विषधर सर्प को दूध पिलाना है।

"कहा सुआन कउ सिमृति सुनाए ॥ कहा साकत पहि हरि गुन गाए ॥
राम रामराम रमे रमि रहीऐ ॥ साकत सिउ भूलि नहीं कहिए ॥
कऊआ कहा कपूर चराए ॥ कह बिसीअर कउ दूध पीआए ॥
साकत सुआन सभु करे कराइआ ॥ जो धुरि लिखिआ सु करम कमाइआ ॥
अंमृतु लै लै नीमु सिंचाई ॥ कहत कबीर उआ को सहजु न जाइ ॥"
(481 कबीर)

ऊपर दिये पद की चतुर्थ पंक्ति का अर्थ है कि कुत्ते के समान साकत अपने पिछले जन्मों के कर्मों के अनुसार ही जो जन्म से ही उसके ललाट पर लिखे हैं, कर्म करता है। अर्थात साकत जन्म से नीच प्रकृति का है।

हरि नाम विमुख होने के कारण साकत तृष्णा की आग में जलता हुआ माया के चक्र मे सदैव वैसे ही दुख पाता हुआ घूमता रहेगा यानी जन्मता व मरता रहेगा, जैसेकि तेली का बैल कोल्हू का बोझ लादे चक्र में घूमता रहता है,

"साकत मूड माइआ के बधिक विचि माइआ फिरहि फिरदे ॥
त्रिसना जलत किरत के बांधे जिउ तेली बलद भंवदे ॥" (800 म. 4)

साकत विपरीत मार्ग पर चलने के कारण सदैव चौरासी लाख योनियों में भटकता रहेगा, इस बात को दर्शाते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं :

"जो भलाई सो बुरा जानै ॥ साचु कहै सो बिखै समानै ॥
जाणै नाही जीत अरु हार ॥ इहु बलेवा साकत संसार ॥
जो हलाहल सो पीवै बउरा ॥ अंम्रितु नामु जानै करि कउरा ॥
साध संग कै नाहि नेरि ॥ लख चउरासी भ्रमता फेरि ॥" (180 म. 5)

जिन कर्मों में जीव की भलाई निहित है साकत उन्हें बुरा समझता है। सत्य बात उसे विष के समान लगती है। वह जीत और हार, यानी किसमें आत्मा का कल्याण है और किस मे नहीं, इसे नहीं जानता। इस प्रकार अज्ञानता से ग्रसित साकत के सब व्यवहार विपरीत होते हैं। साकत पुरुष पागल व्यक्ति के समान है, वह विषय भोग रूपी हलाहल विषको तो अमृत और हरि नाम रूपी अमृत को विष सा मानता है। वह कभी संतों के निकट भी नहीं फटकता इस प्रकार साकत सदैव चौरासी लाख योनियों में मारा मरा भ्रमता रहता है

इस प्रकार विपरीत मार्ग के कारण हरि के भक्त और साकत में कोई भी आप सम्बन्ध सम्भव नहीं है :

"हरि के दास सिउ साकत नहीं संगु ॥ ओई बिखई ओसु राम को रंगु ॥
मन असवार जैसे तुरी सीगारी ॥ जिउ कापुरखु पुचारै नारी ॥
बैल कउ नेत्रा पाइ दुहावै ॥ गउ चरि सिंघ पाछै पावै ॥
गाडर ले कामधेनु करि पूजी ॥ सउदे को धावै बिनु पूंजी ॥" (198 म. 5)
नानक राम नामु जपि चीत ॥ सीमरि सुआमी हरि सा मीत ॥

58 1 हरि भक्तों और साकत का संग संभव नहीं है। साकत विषयों में डूबा है और हरि का दास राम के रग में लगा है। भला मन की कल्पना से तुर्की घोड़े की सवारी कैसे की जा सकती है, नपुसंक कैसे नारी का संग कर सकता है। बैल के पांव में रस्सी बांधकर उसे कैसे दुहा जा सकता है। गाय पर चढ़कर कैसे सिंह का पीछा किया जा सकता है। भेड़ को कामधेनु गाय मानकर कैसे पूजा जा सकता है और बिना पूंजी के कैसे सौदा खरीदा जा सकता है। अर्थात जेसे उपरोक्त बातें असम्भव हैं वैसे ही साकत के द्वारा परमपद की प्राप्ति असम्भव है। इसलिये नानक कहते हैं कि हे प्राणी, तू अपने चित्त में, अपने मन में अपने हरि जैसे स्वामी ओर सच्चे मित्र का सदा स्मरण कर।

हरि नाम सिमरन से विमुख साकत को धिक्कारते हुए ग्रंथ साहिबजी उसे सर्प, कौआ, वेश्या के पुत्र, कुत्ता, गधा और आत्म-हत्यारे के समान वतलाते हैं। और एक पल के लिये हरि को सिमरन करने वाले के लिये मानों सदा रहने वाला परम पद सहज है।

"बिनु सिमरन जैसे सरप आरजारी ॥ तिउ जीवहि साकत नामु बिसारी
एक निमख जो सिमरन महि जीआ ॥ कोटि दिनस लाख सदा थिरु थीआ ॥
बिनु सिमरन भए कूकर काम ॥ साकत बेसुआ पूत निनाम ॥
बिनु सिमरन जैसे सीङ छतारा ॥ बोलहि कूक साकत मुखु कारा ॥
बिनु सिमरन गरधब की निआई ॥ साकत थान भरिसट फिराही ॥
बिनु सिमरन कूकर हरकाइआ ॥ साकत लोभी बंधु न पाइआ ॥
बिनु सिमरन है आतम घाती ॥ साकत नीच तिसु कुलु नही जाती ॥"
(239 म. 5)

अर्थात हरि नाम विहीन साकत मानों एक विषधर सर्प के समान जीता है, परन्तु एक पल के लिये भी हरि स्मरण करने वाला मानों लाखों-करोड़ों दिन जीने को सार्थक करता है, वह तो उस पल भर के हरि स्मरण मात्र से शाश्वत जीवन का अधिकारी बन जाता है।

58 2 बिना हरि स्मरण के जीने वाले साकत के सभी कर्म धिक्कार योग्य हैं, उसका उन कर्मों में वास वैसा ही है जैसे कि कौवे की चोंच मलमें वास करती है। हरि सिमरन विहीन साकत कामी कुत्ते के समान है, बिना पिता के नामवाले वेश्या पुत्र के समान है। बिना सिमरन के साकत सींगों वाले भेड़ा होता है। और वह झूठ बोलने वाला होकर अपने मुख पर कालिख ही पुतवाता है।

बिना हरि सिमरन के साकत गधे की तरह जीवन यापन करते हैं आर मलिन स्थानों

मे मारे-मारे फिरते हैं। बिन हरि सिमरन के लोभ से ग्रसित साकत पागल कुत्ते की तरह हर एक को काटते फिरते हैं और उनका कोई साथी नहीं होता। हरि नाम को सिमरू नहीं करने वाला साकत आत्म हत्यारा होता है। ऐसे नीच पुरुष की न तो कोई जाति ही होती है ओर न कुल ही।

इसकी आगे वाली पंक्ति में नानक जी कहते हैं कि सिमरन करने वालों को प्रभु कृपा से संतसंगति मिलती है और वह गुरु कृपा से भवसागर तर जाता है।

अमृत रूपी हरि नाम से विमुख साकत नरक में यमराज द्वारा बांधा जाकर दुख पायेगा। ये साकत चोर के समान हैं जिन्होंने हीरा जैसा हरि नाम भुला कर जीवन व्यर्थ कर दिया

"मेरे मन नाम बिना जो दूजै लागे ते साकत नर जमि घुटिऐ॥
ते साकत चोर जिना नामु बिसारिआ मन तन कै निकटि न भिटिए॥"

(170 म. 4)

नानक जी कहते हैं कि ऐसे नाम विहीन साकत के पास मन के द्वारा भी निकट नही बैठना चाहिए, और न ही उसका स्पर्श करना चाहिये।

"साकत मुठे दुरमती हरि रस न जाणन्हि॥ जिन्ही अम्रित भरमि लुटाइआ॥
बिखु सिउ रचहि रंचन्हि॥ दुसटा खेती पिरहडी जन सिउ बाहु करन्हि॥
नानक साकत नरक महि जमि बधे दुख सहीन्हि॥" (854 म. 4)

ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि नाम रूपी अमृत की अवहेलना करने वाले दुर्मति साकत उसका रस नहीं जानते। अपने अन्तर में अज्ञानधंकार से पूर्ण ये साकत विषय वासना रूपी विष का सेवन करने में ही लीन रहते हैं। नानक जी कहते हैं कि साकत यम के फाँस में बँध कर नरक में दुख पायेंगे।

साकत का और स्पष्ट परिचय देते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते है :

"साकत माइआ कउ बहु धावहि॥ नामु बिसरि कहा सुखु पावहि॥
त्रिहु गुण अंतरि खपहि खपावहि॥ नाहीं पारि उतारा है॥
कूकर सूकर की अहि कुड़िआरा॥ भउकि मरहि भउ भउ भउ हारा॥
मनि तनि झूठे कूड कमावहि दुरमति दरगह हारा है॥" (1029 म. 1)

58 3 माया से ग्रसित साकत चारों ओर भोग विषयों की तरफ दौड़ता है, किन्तु हरि नाम विना कैसे सुख को पा सकता है। भगवान की इस त्रिगुणमयी माया में लीन साकत कैसे संसार सागर के पार उतर सकता है। वह तो कुत्ते और सूअर के समान है, वह सब ओर से भय ग्रसित होकर भोंकता-भोंकता मर जाता है। साकत तन और मन दोनों से झूठा है और झूठ की ही कमाई करता है, और अपनी ही दुर्मति के कारण परमात्मा के मार्ग पर चलने में हार जाता है।

"साकत कूड कपट महि टेका॥ अहिनिसि निंदा करहि अनेका॥
साकत जम की काणि न चूकै॥ जम का डंडु न कबहु मूकै॥
बिनु गुर साकतु कहहु को तरिआ॥" 1030 म. 1

गुरु नानक देव जी कहते हैं कि साकत झूठ और कपट में ही टेक लगाये रहता है, या लिपटा रहता है, इसलिये उसके सर पर यम का दण्ड सदैव मंडराता रहता है, इसलिये भला इस दुखद स्थिति से साकत का उद्धार सतगुरु की कृपा बिना कैसे हो सकता है।

साकत को सिक्ख गुरुओं ने अत्यन्त हीन दृष्टि से देखा है क्योंकि जैसाकि हमने ऊपर के पदों में देखा, साकत उनकी निगाह में हरि विरोधी है। गुरुओं को न तो साकत का भोजन ग्राह्य है, और न ही उनके वस्त्र, और न ही उन्हें साकत की मित्रता वांछनीय है।

"संतन का दाना रूखा सो सरब निधान ॥ ग्रिहि साकत छतीह प्रकार ते बिमुख समान ॥ भगत जना का लूगरा ओढि नगनन होई ॥ साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई ॥ साकत सिउ मुख जोरिए अध बीचहु टूटै ॥ हरि जन की सेवा जो करे इत ऊतहि छूटै ॥"
(811 म. 5)

संतों की रूखी रोटी सर्व कल्याणकारी है, परन्तु साकत के छत्तीस प्रकार के श्रेष्ठ व्यञ्जन विष के समान नष्ट करने वाले हैं। भक्तजनों के फटे कपड़े पहनकर भी जीव नग्न नहीं होता, परन्तु साकत के दिये रेशमी वस्त्र पहनकर भी वह अपनी प्रतिष्ठा गंवा देता है। साकत के साथ की गई मित्रता बीच में ही टूट जाती है, परन्तु हरिजन की सेवा करके मनुष्य इस लोक और परलोक दोनों में ही बंधन रहित रहता है।

साकत के साथ संगति के भयावह परिणाम की ओर सचेत करते हुए ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि

**"संता सेती रंगु न लाए ॥ साकत संगि विकरम कमाए ॥
दुरलभ देह खोई अगिआनी जड अपुणी आपि उपाडी जीउ ॥"** (105 म 5)

अर्थात जो संतों का समागम नहीं करता, परन्तु साकत के साथ कुकर्म करता है, उसने दुर्लभ मानव देह पाकर भी सब कुछ अज्ञानतावश गंवा दिया, और इस प्रकार मानों अपने हाथों उसने अपनी ही जड उखाड़ दी, यानी अपने हाथों अपने को नष्ट कर दिया।

साकत को हरि भक्ति के आनन्द की कल्पना भी नहीं है।

**"साकत हरि रस सादु न जानिआ तिन अंतरि हउमै कंडा है ॥
जिउ जिउ चलाई चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा है ॥"** (13 म.4)

58.4 साकत के चित्त में सदैव देहाभिमान का कांटा गड़ा रहने के कारण वह हरि रस के आनद को नहीं जानता। इस अहंकार के कांटे के साथ जब वह कर्म में प्रवृत्त होता है तो वह कांटा उसे और अधिक गहराई से चुभता है और वह साकत इसमें भारी दुख पाता है। और अन्त समय में तो साकत को यम के दण्ड की मार झेलनी पड़ती है।

जैसाकि हमने आरम्भ में कहा ग्रंथ साहिबजी ने साकत की निन्दात्मक चर्चा बड़े ही स्पष्ट शब्दों में स्थान-स्थान पर की है। गुरुओं की वाणी में साकत सम्बन्धी कुछ पद हम आगे दे रहे हैं।

**"साकत कूडे सचु न भावै ॥ दुविधा बाधा आवै जावै ॥
लिखिआ लेखु न मेटै कोई गुरमति मुकुति करावणिआ ॥"** (109 म 5

साकत स्वभाव से ही असत्य का उपासक होता है उसे सत्य तो भाता ही नहीं है संशय से ग्रसित साकत के चक्र में पड़ा रह कर नष्ट होता जाता है साकत को इस दुर्भाग्य पूर्ण लेख से केवल गुरु का दिया हुआ ज्ञान ही मुक्त करा सकता है।

गीता के चौथे अध्याय के 40वें श्लोक में आता है, "संशयात्मा विनश्यति" अर्थात् संशययुक्त पुरुष परमार्थ से भ्रष्ट होकर नष्ट हो जाता है, उसके लिये न सुख है न यह लोक है और न परलोक ही।

जिन कउ गुरु सतिगुरु नही भेटिआ ते साकत मूड दिवाने ॥
तिन के करम हीन धूरि पाए दीपकु मोहि पचाने ॥ (170 म. 4)

जिस ने सत्गुरु से भेंट नहीं की, वह साकत मूर्ख और पागल है। उनके समस्त कार्य व्यर्थ है, वे पतंग की भांति माया-मोह रूपी दीपक पर जल कर क्षण भर में नष्ट हो जाते है।

"मेरे मन नाम बिना जो दूजै लागे ते साकत नर जमि घुटीए ॥
ते साकत चोर जिना नामु बिसारिआ मन तिन के निकटि न भिटिऐ ॥"
(170 म. 4)

हे मेरे मन! जो हरि नाम त्याग कर अपनी सीमित उपासना के कारण सर्व व्याप्त परमात्मा को छोड़कर उसे अपने से भिन्न मानकर द्वैत भाव में रचे-पचे हैं वे साकत यमराज के अधीन होकर घुटते हैं, पीड़ित होते हैं। ये साकत हरि नाम का विस्मरण करने वाले चोर है। रे मन तु उने निकट न बैठ और न ही उनका स्पर्श कर।

"साकत बधिक माइआधारी तिन जम जोहनि लागे ॥
उन सतिगुर आगै सीसु न बेचिआ ओइ आवहि जाहि अभागे ॥" (172 म.4)

माया के भोगों में आसक्त साकत बधिक यानी कसाई के समान है, ऐसे हत्यारे साकत को अब यम ने देख लिया है, यानी वह शीघ्र ही यम के दण्ड का भागी होगा। साकत अहंकार त्याग कर सत्गुरु की शरण में नहीं आया है, इसलिये वह अभागा जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहेगा।

"रे मन बिनु हरि जह रचहु तह तह बंधन पाहि ॥
जिह बिधि कतहू न छूटीए साकत तेऊ कमाहि ॥" (252 म. 5)

अरे मन तू भली प्रकार से समझ ले कि तू हरि का आसरा लिये बिना जिस जिस काम में लगेगा, वे सब तुम्हारे बंधन के ही कारण बनेंगे। साकत तो सदैव वही कर्म करता है या जिस विधि से कर्म करता है उसके कारण उसका कभी बचाव नहीं हो सकता। अर्थात साकत स्वयं अपने ही निकृष्ट कर्म के कारण बंधन को ही कमाता है।

"थाके बहु बिधि घालते तृपति न तृसना लाथ ॥
संचि संचि साकत मुए नानक माइआ न साथ ॥" (252 म. 5)

अपनी वासना से बंधे साकत अनेक प्रकार के परिश्रम पूर्ण कर्म करते हुए थक गए परन्तु तो भी वे कभी तृप्त नहीं हुए, और न ही उनकी तृष्णा की ही निवृत्ति हुई। संचय करते-करते साकत मर कर चले गए, पर हे नानक यह माइआ उनके साथ नहीं गई।

"हउ हउ करत विहानीआ साकत मुगध अजान ॥
डडकि मूए जिउ तृखंवत नानक किरति कमान ॥" (250 म. 5)

माया से मुग्ध अज्ञानी साकत की समस्त आयु भोग पदार्थों की प्राप्ति की हाय-हाय मे बीत जाती है, नानक जी कहते हैं कि इस प्रकार भोगों से अतृप्त साकत उन भोगों की ही तृखा में तड़प कर मरते हैं उन्होंने केवल पाप रूपी कर्मों की कमाई की है।

मनु मैगलु साकतु देवाना ॥ बंनखंडि माइआ मोहि हैराना ॥
इत उत जाहि काल के चापे ॥ गुरुमुखि लहै घरू आपे ॥ (415 म. 1)

साकत का मन दिवाने हाथी के समान निरंकुश रहता है, इस कारण साकत माया रूपी बन में हैरान हुआ दिशा विहीन मारा-मारा फिरा करता है। साकत इस प्रकार काल के वशीभूत भटक रहा है। परन्तु ऐसा साकत भी गुरु से ज्ञान प्राप्त कर अपने सहज घर यानी अपने आत्म स्वरूप को प्राप्त कर लेता है।

अपनी अन्य वाणी में गुरु नानक देव जी महाराज साकत के विषय में इस प्रकार के वचन कहते हैं :

"जिउ मीना बिनु पानीरै तिउ साकतु मरै पिआस ॥
तिउ हरि बिनु मरीऐ रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥
साकत प्रेमु न पाईऐ हरि पाईए सतिगुर भाइ ॥" (597 म. 1)

जैसा मछली पानी बिना तड़प कर मर जाती है। वैसे ही विषय भोग में लगा हरि रस बिना प्यासा ही इस संसार से मर कर जाता है। हे मन! तुझे भी मछली के समान बिना हरि रस के तड़पना चाहिए, रे मन यदि तुम्हारी एक भी सांस बिना हरि स्मरण के जाती है तो वह व्यर्थ है। साकत बिना सतुरु की कृपा से हरि के प्रति नहीं पा सकता। जब दुख दूर करने वाला और परमात्मा सुख का दाता गुरु मिल जाता है तो मनुष्य परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

"साकती पाप करि कै बिखिआ धनु संचिआ तिना इक बिख नालि न जाई ॥
हलतै विचि साकत दुहेले भए हथहु छुडकि गइआ अगै पलति साकतु हरि दरगाह ढोई न पाई ॥" (734 म. 4)

58.5 गुरु रामदास जी कहते हैं कि साकत नाना प्रकार के पाप के कर्म करके विषय भोग के लिये धन संचय करता है, किन्तु यह धन क्षण भर के लिये भी उसके साथ नहीं आता। इस लोक में धन के नष्ट होने पर वे दुखी रहते हैं, और अपने आसुरी कर्मो के कारण उन्हे परलोक में परमात्म प्राप्ति की तो आशा ही नहीं है।

"साकत नर होछी मति मधिम जिन्ह हरि हरि सेव न करा ॥
ते नर भागहीन दुहचारी ओइ जनमि मुए फिरि मरा ॥" (798 म.4)

साकत तुच्छ और छोटी बुद्धि वाले हैं, उन्होंने कभी हरि की सेवा नहीं की है, वे अभागे ओर दुराचारी हैं और आवागमन के चक्र में पड़े हैं।

"इकि भरमि भूले साकता बिनु गुर अंध अंधार ॥
धुरि होवना सु होइआ को न मेटण हार ॥" 986 म 5)

भ्रम में भूले साकत गुरु के बिना अज्ञान रूपी अंधकार में अंधे हुए भूले फिरते हैं उनकी इस अवश्यमभावी गति को कौन टाल सकता है।

"चउरासीह नरक साकतु भोगाइऐ ॥ जैसा कीचै तैसो पाईऐ ॥
सति गुर बाझहु मुकति न कोई किरति बाधा ग्रासि दीना है ॥" (1028 म.1)

साकत माइआ कउ बहु धावहि ॥ नाम बिसारि कहा सुखु पावहि ॥
त्रिहु गुण अंतरि खपहि खपावहि नाही पारि उतारा है ॥ (1029 म.1)

कूकर सूकर कही अहि कूडिआरा ॥ भउकि मरहि भउ भउ भउ हारा ॥
मनि तनि झूठे कूडि कमावहि दरगह हारा हे ॥ (1029 म. 1)

साकुत फांसी पडै इकेला ॥ जम वसि कीआ अंधु दुहेला ॥
राम नाम बिनु मुकति न सूझै आजु कालि पचि जाता है ॥ (1031 म.1)

गुरु नानक देव जी महाराज के उपरोक्त साकत सम्बन्धी चारों पदों का अर्थ सहज और सीधा है। साकत चोरासी नरकों में दुख भोगेगा और इस प्रकार अपने ही कर्मो का फल पायेगा। बिना सत्गुरु की कृपा के वह मुक्त नहीं हो सकता। अपने पूर्व के बुरे कर्मों के कारण ही साकत यम के वश में पड़ता है।

साकत माया की ओर ही दोड़ता है, भला हरि नाम भुलाकर वह कहां सुख पा सकता है। जो व्यक्ति त्रिगुणमयी माया में खपा या रमा हुआ है वह संसार सागर के पार नहीं उतर सकता। साकत कुत्ते और सूअर के समान मूढ़ है और जीवन भर विषयों के पीछे पडा भोंक-भोंककर मर जाता है। वह तन और मन से झूठा साकत पाप की ही कमाई करता हुआ परम पद को नहीं पा सकता। साकत अकेला ही यम के फंदे या फांसी में पड़ता है, यम के फास में पड़ा वह अंधा और अज्ञानी साकत दुखी होता है। राम नाम के बिना उसकी मुक्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं है। राम नाम के अभाव में वह आज कल में अर्थात शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा।

गुरु महाराज जी आगे पुनः कहते है :

"साकत नरि सबद सुरति किउ पाइऐ ॥ सबद सुरति बिनु आईऐ जाईऐ ॥
नानक गुरमुखि मुकति पराइणु हरि पूरै मार्ग मिलाइआ ॥" (1042 म. 1)

अर्थात साकत को नाम की स्मृति कैसे आ सकती है, बिना शब्द या हरि नाम की स्मृति बिना वह नाना योनियों में भटकता रहता है। नानक जी कहते हैं कि गुरु के दिये ज्ञान से ही मनुष्य साधना या मुक्ति के मार्ग पर बढ़ता है, और जब परम भाग्य होता है तभी हरि मनुष्यों को ऐसे ज्ञानी गुरुओं से मिलता है।

"साकत ठउर नाही हरि मंदर जनम मरै दुखु पाइआ ॥" (1043 म.1)

जीउ पिंड तनु धनु सभु प्रभु का साकत कहते मेरा ॥
अहंबुधि दुरमति है मैली बिनु गुर भवजलि फेरा ॥ (1139 म. 5)

इन पदों के भाव अपने में स्पष्ट हैं। अन्तिम पंक्ति के अनुसार शरीर को ही सब कुछ मान लेने के कारण (यानी यह शरीर ही सब कुछ है और इस शरीर के द्वारा ही लोक और

परलोक के भोग भोगने हैं) साकत की बुद्धि सदैव मलिन रहती है। बिना गुरु के साकत इस ससार में फेरा लगाता रहता है।

अब अन्त में हम साकत सम्बन्धी कुछ पद कबीर और गुरु रामदास की वाणी मे दे रहे है।

1. **"कहत कबीर हउ कहउ पुकार॥ समझि देखु साकत गावार॥**
   दूजै भाइ बहुत घर गाले॥ राम भगत हे सदा सुखाले॥" (1160)

भक्त कबीर जी पुकार कर कहते है, कि हे मुर्ख साकत! तुम समझ कर देखो। "दूज भाई" यानी परमात्मा से अन्य से प्रीति रखने वाले, या सांसारिक भोगों में आसक्त तुम्हारे जैसे अनेक जीव नष्ट हो गए। केवल राम भगत ही सदा सुखी रहते हैं।"

2. **"कबीर साकतु ऐसा है जैसी लसन की खानि॥**
   कोने बैठे खाइऐ परगट होई निदान॥" (1365)

कबीर जी कहते हैं कि साकत लहसुन के समान दुर्गन्ध से भरे हैं, अर्थात भोग और वासना से पूर्ण है। जैसे कोई व्यक्ति किसी कोने में छिपकर भी यदि लहसुन खाता है तब भी उसकी दुर्गन्ध सब पर प्रकट हो जाती है, वैसे ही साकत व्यक्ति का दुष्टता भरा चरित्र और दुष्कर्म छिपाने से छिप नहीं सकता। दूसरे शब्दों में साकत को उसकी दुष्टता के कारण लहसुन की दुर्गन्ध के समान तुरन्त पहचाना जा सकता है।

"कबीर वैसनउ की कूकरि भली साकत की बुरी माइ॥
ओह नित सुनै हरि नाम जसु उह पाप बिसाहन जाइ॥" (1367)

यह पद हरि भक्त तथा साकत में अंतर को बड़े ही स्टीक ढंग से प्रस्तुत करता है। कबीर जी कहते है कि हरि भक्त की कुतिया तो भली है लेकिन साकत की मां बुरी है। क्योंकि हरि भक्त की कुतिया तो नित्य हरि का नाम श्रवण करती रहती है, पर साकत की माँ तो नित्य पाप का व्यापार करती है।

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि कबीर जी ने कुते जैसे पशु को भी यहाँ संस्कार के अधीन माना है, यानी यह दर्शाया है कि हरि नाम के प्रभाव से पशु भी संस्कार वश पशु योनी से ऊँचे उठेगा। परन्तु जैसाकि हमने कुरान शरीफ के अध्ययन में देखा इस्लाम मे तो पशु में आत्मा की सत्ता है ही नहीं।

"कबीर संगति साध की दिन दिन दूना हेतु॥
साकत कारी कांबरी धोए होइ न सेतु॥" (1369)

कबीर के इस पद के माध्यम से भी ग्रंथ साहिबजी हरि भक्त के और साकत के मार्ग की विपरीत दिशाओं की ओर ध्यान आकृष्ट कर रहे हैं। कबीर जी कहते हैं कि साधु की सगति से दिनों दिन हरि प्रेम बढ़ता है, परन्तु साकत तो काली कंबली है जो बार-बार धोने पर भी श्वेत नहीं होती।

"कबीर साकत संगु न कीजिए, दूरहि जाई ऐ भागि॥
वासन कारो परसीऐ तउ कछु लागै दाग॥" 1371

अर्थात साकत का संग कभी नहीं करना चाहिए, उससे दूर ही रहना चाहिए। जैसे काले बर्तन को छूने से कुछ न कुछ दाग अवश्य लग जाता है, वैसे ही साकत का संग करने से उसका कुछ न कुछ आसुरी संस्कार संग करने वाले में आ ही जाते हैं।

"कबीर साकत से सूकर भला, राखै आछा ::
उहु साकतु बपुरा मरि गइआ कोई न लेहै नाउ ॥"

कबीर जी कहते हैं कि साकत से सुअर ही भला है, अच्छा है, जो गांव को साफ रखता है परन्तु साकत का नाम तो उसके मरने के बाद कोई नहीं लेता।

ग्रंथ साहिबजी के अन्तिम भाग में चौथे गुरु रामदास जी महाराज की साकत सम्बन्धी वाणी मिलती है।

"साकत नर सतिगुरु नहीं कीआ ते बेमुख हरि भरमावैगी ॥
लोभ लहरि सुआन की संगति बिखु माइआ करंगि लगावैगो ॥
राम नामु सभ जग का तारकु लगि संगति नामु धिआवैगो ॥
नानक राखु राखु प्रभ मेरे सतसंगति राखि समावैगो ॥" (1211/12 म.4)

अर्थात साकत ने सतगुरु नहीं किया है। इसलिए वह हरि से विमुख है। वह भ्रम से ग्रसित रहेगा। साकत में कुत्ते की वृत्ति वाली लोभ की लहर सदैव चलती रहती है, इसलिये वे कुत्ते ही की तरह विषय भोग रूपी मुरदों को ही खाने में लगे रहते हैं। हे भाई! नाम ही संसार से उद्धार करने वाला है, पर नाम का ध्यान सत्संगति से ही प्राप्त होता है। नानक जी कहते है कि हे प्रभु! तू मुझे सत्संगति में ही रख, क्योंकि सत्संगति के कारण हे प्रभु मैं आप मे ही समा जाऊंगा, यानी आपको प्राप्त करूंगा।

"साकत नर प्रानी सद भूखे नित भूखन भूख करीजै ॥
धवतु धाइ धावहि प्रीति माइआ लख कोसन कउ विथि दीजै ॥
हरि हरि हरि हरि जन ऊतम किआ उपमा तिन्ह दीजै ॥
राम नाम तुलि अउरू न उपमा जन नानक क्रिया करीजै ॥" (133/24 म.4)

38.6 भोगों की तृष्णा के कारण सदा भूखा ही रहता है और नित ही भूख-भूख करता रहता है। वह माया के पीछे दौड़ते रहता है, परन्तु माया उसे दौड़ा-दौड़ा उसको उसके लक्ष्य परमात्मा से बहुत दूर (लाखों कोस) ले जाती है। हे भाई! हरि, हरि, हरि गान ही सर्वोत्तम उपाय है, मैं उसकी किससे उपमा दूं। नानक जी कहते हैं कि राम नाम के समान अन्य कोई उपमा नही है। हे प्रभु! कृपा करके मुझ सेवक को अपनी कृपा प्रदान करो।

"आनि आनि समधा बहु कीनी पलु बैसंतर भसम करीजै ॥
महा उग्र पाप साकत नर कीने मिलि साधू दीजै ॥
साकत सूतु बहु गुरझी भरिआ किउ करि तानु तनीजै ॥
तंतु सूतु किहु निकसै नाही साकत संगु न कीजै ॥" (1324 म. 1)

जिस प्रकार बहुत से इकट्ठे किये हुए ईंधन को अग्नि क्षण भर में भस्म कर देती है उसी प्रकार साकत द्वारा संचित किया गया समस्त पाप रूपी ईंधन साधु की सत्संग रूपी चिनगारी से जल कर भस्म हो जाता है।

साकत के जीवन रूपी सूत की गांठ उसकी हरि विमुखता के कारण बहुत उलझ जाती है। अब भला साकत कैसे अपना ताना अर्थात अपना जीवन सफल करें? साकत के जीवन रूपी उलझे सूत से कुछ भी नहीं बन सकता, अर्थात साकत का सारा जीवन व्यर्थ है, इसलिए कभी उसका संग नहीं करना चाहिए।

"नाम बिना नकटे नर देखहु तिन घसि नाक बढ़ीजै ॥
साकत नर अहंकारी कही अहि बिनु नावे ध्रिगु जीवीजै ॥" (1325 म. 4)

हरि नाम विहीन इन नकटे साकतों को देखो, परलोक में भी घिस-घिस के उनकी नाक काटी जायेगी अर्थात वे अपमानित होंगे। इन अहंकारी साकत पुरुषों को धिक्कार है कि वे हरि नाम के बिना जीते हैं।

"साकत कउ दिनु रैनि अंधारी मोहि फाथे माइआ जाल ॥
खिनु पलु हरि प्रभु रिदै न बसिओ रिनि बांधे बहु विधिबाल ॥" (1335 म 4)

अज्ञानता के कारण साकत के लिये दिन और रात अंधकार ही हैं वे अज्ञान के कारण माया-मोह के जाल में फंसे हैं। इन्होंने क्षण भर के लिये भी अपने हृदय में हरि का नाम नहीं बसाया, इसलिए इनका रोम-रोम कर्ज में बंधा हुआ है।

"जो नर भरमि भरमि उदिआने ते साकत मूड मुहे ॥
जिउ म्रिग नाभि बसै वासु बसना भ्रम भ्रमिओ झार गाहे ॥" (1336 म.4)

अपनी अज्ञानता के कारण भ्रमित साकत काम, क्रोध, लोभ आदि ठगों से लूटे जाते है। अज्ञानता के कारण अपनी आत्मा, अपने वास्तविक स्वरूप से अपरिचित साकत संसार में ऐसे ही भटकता रहता है जैसे अपनी नाभि में बसी कस्तूरी की सुगंधि से अपरिचित मृग उसे पाने के लिये बन-बन भटकता फिरता है।

गुरु रामदासजी के चार पदों को देकर हम साकत सम्बन्धी विषय की विवेचना करेंगे ·

"राम नाम की पैज बडेरी मेरे ठाकुरि आपि रखाई ॥
ये सभि साकत करहि बखीली इक रती तिलु न घटाई ॥"
जन की उसतति है राम नाम दह दिसि सोभा पाई ॥
निंदकु साकतु खवि न सकै तिलु अपने घरि लूकी लाई ॥
जन कउ जनु मिलि सोभा पावै गुण महि गुण परगासा ॥
मेरे ठाकुर के जन प्रीतम पिआरे जो होवहि दासनि दासा ॥
आपे जल अपरंपरू करता, आपे मेलि मिलावै ॥
नानक गुरमुखि सहजि मिलाए जिउ जलु जलहि समावै ॥" (1191 म. 4)

587 ग्रंथ साहिबजी कहते हैं कि राम नाम की महान महिमा है, जो स्वयं मेरे ठाकुर राम जी ने स्थापित की है। यदि सभी साकत एक साथ मिलकर भी राम नाम की निन्दा करें या उससे ईर्ष्या करे तो भी इसकी प्रतिष्ठा में तिल की भी कमी नहीं होगी।

दसों दिशाओं में भक्तों की कीर्ति, और शोभा राम नाम जपने के कारण ही होती है ये निंदक राम भक्तों की प्रतिष्ठा तिल भर भी सहन नहीं कर सकते हैं. लेकिन अपनी इस द्वेष वृत्ति के कारण साक्तों ने स्वय अपने ही घरों में आग की चिंगारी लगा ली है

भक्त जन भक्तजन से मिल कर शोभा पाते हैं, क्योंकि संगत में भक्तों के मिलने उनके गुणों का प्रकाश और अधिक बढ़ जाता है। मेरे ठाकुर को तो अपने भक्तों के सेवक और अधिक प्रिय लगते हैं।

यह अपरम्पार परमात्मा स्वयं ही नाम रूपी जल है, और वह स्वयं ही भक्त को न से मिलाता है। नानक जी कहते हैं कि गुरु से ज्ञान की प्राप्ति होने पर भक्त भगवान से सहज रूप में इसी प्रकार मिल जाता है, जैसे जल में जल मिल जाता है।

प्रश्न उठता है कि ग्रंथ साहिबजी में इतने स्पष्ट और भावनात्मक रूप में वर्णित यह 'साकत" कौन है। क्या वह मध्य युग में विशेष कर पूर्वी भारत में गुप्त रूप से प्रचलित "शाक्त" सम्प्रदाय का द्योतक है? क्या "साकत" इस्लाम धर्म का अनुयायी मुसलमान है। जो उस काल में हिन्दू धर्म और संतों द्वारा स्थापित विभिन्न पंथों को नष्ट करने पर पूरी तरह से कटिबद्ध था? तथ्य के आधार पर हम इन प्रश्नों का उत्तर पाने का प्रयत्न करेंगे।

"साकत" शब्द "शाक्त" सम्प्रदाय का वाचक इसलिए नहीं माना जा सकता क्योंकि ग्रंथ साहिबजी के "साकत" सम्बन्धी पदों में शाक्त सम्प्रदाय के पांच में से एक भी लक्षण का वर्णन नहीं है। उस समय "शाक्त" सम्प्रदाय निम्न कोटि के भोगवाद के पांच लक्षणों से ज्ञात था। वे लक्षण थे मद, मांस, मत्स्य, मदिरा और मैथुन। जैसाकि हमने ऊपर दिये "साकत" सबधी पदों में देखा या जो अन्य साकत सम्बन्धी पद हमने विस्तार भय से नहीं दिये हैं, उनमे इस "शाक्त" सम्प्रदाय सम्बन्धी चिह्नों का कहीं भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वर्णन नहीं है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि ग्रंथ साहिबजी में आये "साकत" शब्द का "शाक्त" सम्प्रदाय से बिल्कुल भी कोई सम्बन्ध नहीं है। शाक्त सम्प्रदाय उस समय में भी बड़ा ही निन्दित था, और न ही उसका जन साधारण में कोई प्रवेश था। ऐसी स्थिति में यदि गुरुओ को उसकी निन्दा की आवश्यकता प्रतीत हुई होती तो उसके लिये मदिरा, मांस आदि की निन्दा के समान एक-दो पदों में "शाक्त" की भी निंदा करने यह लक्ष्य पूरा किया जा सकता था। ग्रंथ साहिबजी में कबीर की वाणी में भांग, मछली खाने और सुरापान की निन्दा इस प्रकार की गई है :

"कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खाहि ॥
तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातल जाहि ॥" (1377)

अर्थात जो कोई भी व्यक्ति भांग, मछली और शराब का सेवन करते हैं, चाहे फिर वे कितने भी तीर्थ व्रत आदि नियमों का पालन करें, वे निश्चय ही सब के सब रसातल यानी नरक में जायेंगे।

परन्तु ग्रंथ साहिबजी ने साकत की जिस विस्तार से चर्चा की हे, जो जो लक्षण बतलाये है और जिन कठोर शब्दों में निन्दा की है, उससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रंथ साहिबजी का "साकत" शाक्त सम्प्रदाय से भिन्न और अन्य है।

58.8 तो क्या फिर "साकत" ग्रंथ साहिबजी में स्थान-स्थान पर आये "मनमुख" शब्द का पर्यायवाची है जैसीकि कुछ विद्वानों की धारणा है। यदि हम ग्रंथ साहिबजी में आये "साकत" और "मनमुख" शब्दों का गहराई से विवेचन करें तो पायेंगे कि गुरुओं ने और कबीर जी ने

इन दोनों शब्दों को बिल्कुल भिन्न भावों में ग्रहण किया है।

'मनमुख' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द 'मनोन्मुख' से बताई जाती है तो आत्मोन्मुख शब्द के भाव के बिल्कुल विपरीत अर्थवाला है। आत्मोन्मुख शब्द का अर्थ ही है जीव का परमात्मा की ओर उन्मुख होना, आत्माधीन होना, हरि भक्ति में लीन होना, राम, गोबिंद, मुरारी, कृष्ण आदि नामों का गुणगान करना, सतगुरु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना आदि, और यही ग्रंथ साहिबजी तथा वेद-शास्त्रों की मुख्य शिक्षा, उनका मुख्य लक्ष्य है।

मनोन्मुख या "मनमुख" शब्द का अर्थ है मन अर्थात इन्द्रियों के प्रति उन्मुख होना। मन के अधीन होकर संसार की विषय वासना की ओर दौड़ना, परलोक में स्वर्ग सुख को लक्ष्य बनाकर उसके निमित्त अच्छे और पुण्य कार्य करना। परन्तु जैसा कि ग्रंथ साहिबजी ने "मनमुख" की चर्चा में बार-बार दर्शाया है, मनोन्मुख या "मनमुख" व्यक्ति चाहे कितना भी महान कर्म कर ले, कितने भी पुण्य कर्मों का सम्पादन कर ले, या बड़े-बड़े यज्ञ, तप आदि कर ले, भोग का लक्ष्य करके कामनावश किये गये इन सब कर्मों का फल अंततः सीमित ही है। ऐसा मनमुख व्यक्ति भोगों के पीछे जन्म-मरण के चक्र में घूमता हुआ अनेकों कल्पों तक नाना लोकों और योनियों में भ्रमता रहता है, नाना लोकों में वास करता हुआ अंततः भारी कष्ट मे ही पड़ा रहता है। ग्रंथ साहिबजी के शब्दों में ऐसे व्यक्ति का उद्धार तो सत्गुरु की शरण मे जाकर ज्ञान प्राप्ति से ही सम्भव है, हरिगुन गान से, राम भजन से ही सम्भव है। आइये नीचे हम ग्रंथ साहिबजी में आये "मनमुख" सम्बन्धी कुछ पदों का संक्षेप में अवलोकन करें :

"मनमुखि गणत गणवली करता करे सु होइ ॥
...गुरमति होइ त पाइऐ सचि मिलै सुखू होइ ॥" (60 म. 1)

589 गुरु नानक जी कहते हैं कि मन के पीछे चलने वाला जीव अपने पुण्यों की बार-बार गिनती गिनता रहता है। यदि उसे गुरु से ज्ञान मिल जाय तो वह सच्चे मार्ग को यानी परमात्मा के मार्ग को प्राप्त कर सुख प्राप्त कर सकता है।

"मनमुख जाणै आपणे धीआ पूत संजोगु ॥
नारी देख बिगासीअहि नाले हरखु सु सोगु ॥
गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरिरसु भोगु ॥" (63 म. 1)

पुत्रियां और पुत्र तो संजोग से मिलते हैं, किन्तु "मनमुख" मनुष्य उन्हें अपना जानता है, वह स्त्री को देखकर प्रसन्न होता है, परन्तु यह स्त्री पुत्रादि से मिलने वाली प्रसन्नता हर्ष और शोक में मिश्रित रहती है। यदि कोई गुरु के बतलाए मार्ग पर चले तो उसे हरिरस से उत्पन्न रात दिन रहने वाला आनन्द प्राप्त होता है।

"मनमुख ऊभे सुकि गए ना फलु तिंना छाउ ॥
बिना पासि न बेसीऐ ओना घरु न गिराउ ॥
गुरमुखि नामु धिआईऐ मनमुखि बूझ न पाइ ॥
गुरमुखि सदा मुख ऊजले हरि वसिआ मनि आइ ॥" (66 म. 1)

मनमुख व्यक्ति सूखे वृक्ष के समान होता है, उसमें न हरि भक्ति रूपी फल लगता है और न शुभ कर्मों की छाया ही होती है ऐसे व्यक्तियों के पास नहीं बैठना चाहिए, क्योंकि

उनके पास कोई ठिकाना नहीं होता। गुरु से हरि ध्यान का ज्ञान प्राप्त किये बिना मनसुख को सही मार्ग नहीं मिल सकता। हृदय में हरि का वास होने से गुरु मुख व्यक्तियों का मुख सदा उज्जवल रहता है।

"मनमुख सदा दुहेले ॥ जिनी पूरा सतिगुरु सेविआ से दरगह सदा सुहेले ॥ (78 म.4)

अर्थात मनमुख सदा दुखी रहते हैं। किन्तु जिन्होंने पूर्ण यानी ज्ञानी गुरु की सेवा की है, वे सदा हरि के दरबार मे सुखी रहते हैं।

"मनमुखि किछू न सूझै अंधुले पूरबि लिखिआ कमाइ ॥
पूरै भागि सतिगुरु मिलै ॥ सुखदाता नामु बसै मनि आइ ॥" (85 म. 4)

मनमुख अज्ञानता के कारण अंधों के समान है, या अंधकार में भटकते हैं, यह उनके पूर्व कर्मों का फल है। परन्तु सत्गुरु भाग्य से ही मिलता है, और ऐसे व्यक्ति के हृदय में सुखदाता परमात्मा का नाम बसता है।

"मनमुखि मनहठि हारिआ कूड कुसतु कमाइ ॥
गुर परसादी मनु जिणै हरि सेती लिव लाइ ॥" (87 म. 4)

हठी अर्थात बलवान मन के अधीन बने मनमुख अपने झूठे और कुत्सित कर्मों के कारण इस जीवन की बाजी को हार जाते हैं। परन्तु गुरु प्रसाद से मन को जीत कर मनमुख भी हरि से लौ लगा लेता है, प्रेम का नाता जोड़ लेता है।

"मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ॥
पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ॥
नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडि भतारि ॥" (89 म. 4)

इस पद का संक्षेप में अर्थ है कि मनमुख व्यक्ति एक कुलक्षणी स्त्री के समान है। परमात्मा रूप अपने पति को त्याग कर भोग-वासना रूप पर पुरुष से विहार करती हैं परमात्मा के नाम के बिना ही वह कुरूप यानी अवगुणों से ग्रसित है।

"तू अपने गुरमुखि मुकति कराइहि ॥
तूं आपे मनमुख जनमि भवाइहि ॥" (97 म. 5)

अर्थात हे प्रभु! तुम ही गुरुमुखों को मुक्ति प्रदान करते ही और तुम्ही मनमुखो के जन्म-मरन के चक्र में भ्रमाते हो।

"मनमुख भूला ठउरु न पाए ॥ जम दरि बंधा चोटा खाए ॥
बिनु नावै को संगि न साथी मुकति नामु धिआवणिआ ॥" (109 म. 1)
मनमुख पढहि पंडित कहावहि ॥ दूजे भाई महा दुखु पावहि ॥
बिखिआ माते किछु सूझै नाही फिरि फिरि जूनी आवणिआ ॥" (122 म. 3)

इन पदों का अर्थ स्पष्ट है।

"मनमुखु मुदा बगु मैला हउमै मलु लाई ॥
जीवत मरै गुर सबदु बीचारै हउमै मैलु चुकावणिआ ॥" (128 म. 5)

मनमुख बगुले के समान है और वह अहंकार रूपी मैल से आवृत्त है। जिसने गुरु ज्ञान से जीते जी अपने अहंकार को मार दिया तो वह इस अह रूपी मैल से मुक्त होकर धन्य है

इस पद में ग्रंथ साहिबजी वेद प्रमाण देते हुए मनमुख व्यक्ति के बारे में कहते हैं

"वेद पुकारे त्रिविध माइआ ॥ मनमुख न बुझहि दूजै भाइआ ॥
त्रैगुण पडहि हरि एकु न जाणहि बिनु बूझे दुखु पावणिआ ॥" (128 म. 5)

वेद पुकार-पुकार के बतला रहे हैं कि यह त्रिगुणमयी माया बंधन में डालती हैं पर मनमुख इस पर ध्यान न देकर माया में लगा है। इस त्रिगुणमयी माया के वश में मनमुख हरि को नहीं जानते और ये अज्ञानता के कारण दुख पाते हैं।

"मनमुखि नामु चिति न आवै बिनु नावै बहु दुखु पावणिआ ॥" (129 म.3)

"मनमुखु करम करे अहंकारी ॥ जूऐ जनमु सभी बाजी हारी ॥" (130 म 4)

भगवान के नाम में मन न लगाने के कारण मनमुख व्यक्ति बहुत दुख पाता है। अहकार के अधीन कर्म करता हुआ मनमुख अपने इस बहुमूल्य जीवन की बाजी हार जाता है।

"मनमुखि गरबि न पाइओ अगिआन इआणे ॥
सतिगुर सेवा ना करहि फिरि फिरि पछुताणे ॥" (165 म. 3)

59 0 गुरु अमरदास जी कहते हैं कि मनमुख अहंकार के कारण परमात्मा को नहीं पा सकते, वे बेसमझ और अज्ञानी है। उन्होंने कभी सतुरु की सेवा नहीं की, वे बार-बार जन्म-मरण के चक्र में पड़कर पछताते हैं।

"मनमुख करम करे बहुतु अभिमाना ॥ बग जिउ लाइ बहै नित धिआना ॥
जमि पकडिआ तब ही पछुताना ॥ बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥
गुर परसादी मिलै हरि सोई ॥" (230 म. 3)

मनमुख व्यक्ति अभिमान पूर्वक विषय वासना सम्बन्धी कर्मों में ही लगा रहता है। बगुले के समान वह भोगों के ही ध्यान में रत है। वह मृत्यु के अधीन होने पर पछताता है। सतुरु की सेवा बिना मुक्ति सम्भव नहीं है। गुरु कृपा से ही वह परमात्मा को प्राप्त कर सकता है।

"मनमुखि प्राणी भरमु गवाइ ॥ सहज धुनि उपजै हरि लिव लाइ ॥" (231 म.3)

अर्थात हे मनमुख प्राणी तू अपने भ्रम को दूर कर। यदि तू हरि में प्रेम लगा ले तो तू अपनी सहज आत्मिक अवस्था को प्राप्त कर लेगा, याने तू सहज भाव से अनहद नाद मे रम जायेगा।

"मनमुख मूलहु भुलिहा विचि लबु लोभु अहंकारु ॥" (316 म.4)

मनमुख अपने मूल यानी परमात्मा को भूला हुआ है, इस कारण वह लोभ और अहकार से ग्रसित है।

"मनमुख तोटा नित है भरमहि भरमाए ॥ मनमुख अंधन चेतई किउ दरसनु पाए ॥
गुर भेटे पारसु भए जोती जोति मिलाए ॥" (421 म.1)

मनमुख नित्य घाटे में रहता है, और वह मोह में भ्रम रहा है। हे प्रभु! अन्तर चेतना से विहीन ये अज्ञानी मनमुख तुझे कैसे पा सकते हैं? उत्तर में नानक जी कहते हैं कि सतगुरु के मिलने से मनमुख पारस हो उठते हैं, यानी वे पारस के समान समर्थ होकर दूसरों को भी पवित्र कर देते हैं गुरु कृपा से उनकी आत्म ज्योति परम ज्योति से मिल जाती है

"मनमुख फिरहि न चेतहि मूडे लख चउरासीह फेरू पइआ ॥" (434 म. 1)

नानक जी की इस वाणी का अर्थ स्पष्ट है।

"मुंध इआणी मनमुखी फिरि आवण जाण अंगु ॥
हरि प्रभु चिति न आइओ मनि दूजा भाउ सहलंगु ॥" (732 म.4)

जपु तप संजम बरत करे पूजा मनमुख रोगु न जाई ॥
अंतरि रोग महा अभिमाना दूजे भाइ खुआई ॥ (732 म.4)

"मनमुखि मुगधु नरू कोरा होइ ॥ जे सउ लोचे रंगु न होवे कोइ ॥" (733 म.4)

इस तीनों पदों के अर्थ इस प्रकार है : मूठ मनमुख बार-बार जन्म लेता और मरता है। हरि प्रभु में उसका चित्त नहीं जाता क्योंकि उसका मन बाह्य पदार्थों में आसक्त है।

मनमुख पुरुष जप, तप संयम, व्रत पूजा आदि तो करता है लेकिन उसका रोग नष्ट नहीं होता। उसके अन्तर का रोग तो महाभिमान है, इस कारण वह नित्य क्षय को प्राप्त हो रहा है।

मनुमुख हरि प्रेम के रंग से कोरा ही, अछूता ही रहता है। वह सौ बार भी इच्छा करे तो भी हरि रंग उसे प्राप्त नहीं होता। सो आगे की पंक्तियों में इसका उपाय बतलाते हुए कहते है .

"नदरि करे तो सतिगुरु पावै ॥ नानक हरि रसि हरि रंगि समावै ॥" (732 म.4)

"मनमुख बोलि न जाणन्ही ओना अंदरि कामु क्रोध अहंकारू ॥" (1248 म.4)

अर्थात काम, क्रोध और अहंकार के कारण मनमुख परमात्मा के नाम से अनजान है। ग्रंथ साहिबजी आगे कहते हैं कि गुरु की शरण में जाने पर हरि स्वयं गुरु बनकर उनको उबार देते हैं—

"नानक गुर सरणाई उबरे हरि गुर रखवालिया ॥" (1248 म.4)

"मनमुख जनमु भइआ है बिरथा आवत जात लजाई ॥
कामि क्रोधि डूबे अभिमानी हउमै विचि जलि जाई ॥"
गुर बिहून महा दुखु पाइआ जम पकरे बिललाई ॥ (1265 म. 4)

मनमुख का जन्म व्यर्थ जाता है, वे जन्मते-मरते लज्जित होते हैं। वे अभिमानी जीव काम और क्रोध में डूबे हैं। और अपने अहं में जल रहे है। गुरु के बिना उन्हें महान दुख प्राप्त होता है, तथा वे यम की पकड़ में पड़ कर विलाप करते हैं।

परन्तु इन मनमुखों के उद्धार और आनन्द की प्राप्ति का मार्ग गुरु से हरि नाम की प्राप्ति है :

"नामु निधानु बसिआ घट अंतरि रसना हरि गुण गाई ॥
सदा अनंदि रहै दिनु राती एक सबदि लिव लाई ॥
नामु पदारथु सहजे पाइआ इह सतिगुर की वडि जाई ॥"

हमने जो ऊपर "मनमुख" सम्बन्धी पद विस्तार से दिये हैं, उनसे पाठक स्वय ग्रंथ साहिबजी वर्णित "साकत" और "मनमुख" शब्दों का अन्तर समझ सकते हैं। "मनमुख" मूलत: मन की कामनाओं से ग्रसित वे व्यक्ति हैं जिनका मन संसार के भोगों में आसक्त है और जो परलोक में भी इन्हीं भोगों की प्राप्ति के लिये नाना प्रकार के दान पुण्य आदि अच्छे

कर्म करते है। परन्तु ऐसे व्यक्ति ग्रंथ साहिबजी के अनुसार और वेद शास्त्रों के अनुसार भी परमार्थ के, आत्म कल्याण के, या परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग पर कदापि नहीं बढ़ सकते। ऐसा "मनमुख" या मनोन्मुख व्यक्ति इन भोगों के पीछे और उनकी प्राप्ति के लिये जनम-मरण के चक्र में पड़ा रहेगा।

ग्रंथ साहिबजी ने, जैसाकि हमने ऊपर देखा, इन मनमुखों के उद्धार का एक ही सरल उपाय माना है, वह है सतगुरु की शरण में जाना, और उनसे परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करना, या हरि और राम नाम का मंत्र पाना। जिस प्रकार की कठोर वाणी का प्रयोग ग्रंथ साहिबजी ने साकत के प्रति किया है, या जिन शब्दों में साकतों की निन्दा की है, उसका अंश मात्र भी मनमुख के प्रति नहीं किया है। यदि ध्यान से देखा जाय तो गुरुओं की वाणी में "मनमुख" के प्रति करूणा का ही भाव अधिक है। उनकी दृष्टि में यदि मनमुख व्यक्ति जरा भी अन्तोन्मुख हो जाय तो, वह अपना जीवन धन्य कर सकता है। "मनमुख" और "साकत" सम्बन्धी पदों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि "मनमुख" भी "साकत" नहीं है, और न ही "मनमुख" शब्द "साकत" शब्द का पर्यायवाची है।

59 1 अब हमें इस पर विचार करना है कि क्या ग्रंथ साहिबजी वर्णित 'साकत' इस्लाम का अनुयायी मुसलमान है? ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ के समस्त विश्लेषण के आधार पर हमारी अपनी यह मान्यता है कि संत कबीर जी और सिक्ख गुरुओं ने अपनी वाणी में साकत शब्द का जो प्रयोग किया है वह इस्लाम के अनुयायियों के बारे में ही है। इसके समर्थन में तीन मुख्य प्रमाण है।

1. ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम सम्बन्धी जितनी भी वाणी आई है उसमें इस्लाम के सिद्धांतों की सीधी और कठोर आलोचना है। ग्रंथ साहब जी में उन काजियों और मुल्लाओं की कठोर निंदा है जो अपने अनुयायियों के माध्यम से विश्व में इस्लाम की मान्यताओं का बलपूर्वक अनुपालन कराते हैं। हमने यह भी देखा कि किस प्रकार ग्रंथ साहिबजी और संत कबीर जी ने इस्लाम के मुख्य सिद्धांतों हज, नमाज, रोजा आदि को और स्वयं अल्लाह के स्वरूप को सार्वभौमिक जामा पहनाने का, अल्लाह को घट-घट वासी और सर्वव्यापी तथा अन्तरयामी दर्शाने का एक गम्भीर प्रयास किया।

ग्रंथ साहिबजी में इस्लाम के अमानुषिक अत्याचारों और नामदेव जी और संत कबीर की हत्या के प्रयास और हरि कृपा से उनकी रक्षा की गाथाएं स्थान-स्थान पर विस्तार से मिलती है। मुसलमान को हरि-निंदक कहकर सम्बोधित किया गया है। मुसलमान या इस्लाम को धर्मविरोधी दिखलाया गया है।

इसी प्रकार ग्रंथ साहिबजी में 'साकत' को हरि निंदक कहकर उसे धर्म विरोधी दर्शाया है। 'साकत' के प्रति पापी, सूअर, पागल कुत्ता, सर्प, गधा, मल का कीड़ा, चोर, आत्मघाती, दुराचारी, हत्यारा, भागहीन, नकटा, झूठा, विष पीने वाला जैसे कठोर शब्दों का सम्बोधन इस बात को प्रमाणित करते हैं कि कबीर जी और गुरुओं ने 'साकत' को धर्म का शत्रु और विरोधी माना है।

2 साकत के संदर्भ में ग्रंथ साहिबजी ने के जिन नामों की मुख्यत चर्चा की

है व हैं हरि, राम और गोविंद, और साकत को इन नामों का सतत और कट्टर विरोधी बतलाया है। सर्वव्यापी, घट-घट वासी और अन्तरयामी परब्रह्म की उपासना के नाते ग्रंथ साहिबजी की यह मान्यता रही है कि परमात्मा को किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है बशर्ते साधना की क्रिया में लक्ष्य उसके 'सर्व' रूप का हो। इसी मान्यता के आधार पर ही कई स्थानों पर ग्रंथ साहिबजी ने परब्रह्म को अल्लाह और खुदा नाम से भी सम्बोधन किया है। परन्तु जब हम 'साकत' सम्बन्धी पदों का विश्लेषण करते हैं, तो ग्रंथ साहिबजी ने कहीं भी इन पदो मे "हरि", "राम", "गोविंद" आदि नामों के स्थान पर "अल्लाह", "खुदा" शब्दों का 'अल्लाह' या 'खुदा' शब्दों के पर्यायवाची के रूप में प्रयोग नहीं किया है। दूसरे शब्दों में यदि कोई यह कहे "साकत" शब्द का प्रयोग केवल प्रभु विरोधी के रूप में किया गया है फिर वह व्यक्ति चाहे हरि या राम का विरोधी हो या फिर अल्लाह या खुदा का तो यह तथ्य पर आधारित नहीं होगा। क्योंकि जैसा कि हमने अभी बतलाया साकत सम्बन्धी पदों में परमात्मा के नाम के रूप में अल्लाह या "खुदा" शब्द का प्रयोग कहीं भी नहीं हुआ है।

3. गुरुओं ने 'साकत' को सभी काम विपरीत करने वाला दिखलाया है :

"साकत की ऐसी है रीति ॥ जो किछु करै सगल विपरीत ॥" (195 म. 4)

हमने ग्रंथ साहिबजी और क़ुरान शरीफ़ के समग्र अध्ययन में देखा कि जो भी विषय और भाव ग्रंथ साहिबजी और क़ुरान शरीफ़ में आए हैं वे सब एक दूसरे के विपरीत है, उनमे एक भी ऐसा विषय या भाव नहीं जिनमें कहीं भी समरसता हो। सम्भवतः यही कारण है कि 'साकत' सम्बन्धी पदों में ग्रंथ साहिबजी ने अपने अनुयायियों को 'साकत' से दूर रहने को कहा है। ग्रंथ साहिबजी की यह मान्यता है कि 'साकत' को सुधारना असम्भव है, उसको शास्त्र या राम नाम सुनाना व्यर्थ है :

"कहा सुआन कउ सिम्रति सुनाए ॥ कहा साकत पहि हरिगुन गाए ॥
राम राम रमे रमि रहिए ॥ साकत सिउ भूलि नहीं कहिए ॥
कउआ कहा कपूर चराए ॥ कह बिसीअर कउ दूध पीआए ॥" (481)

जिस प्रकार कुत्ते को 'स्मृति' सुनाने से कोई लाभ नहीं, उसी प्रकार साकत को हरिनाम सुनाने का लाभ नहीं, राम नाम स्वयं लेते रहो पर साकत को भूल कर भी मत सुनाओ क्योंकि कऊवे को कपूर चुगाने से भी वह दुर्गन्धपूर्ण चीज खाने की अपनी आदत नहीं छोड़ सकता और न ही सर्प को दूध पिलाने से वह अपना विष का त्याग करेगा।

यदि हम यह स्वीकार भी कर लें "साकत" शब्द का अर्थ इस्लाम के अनुयायियो के सदर्भ में नहीं माना जा सकता, तो इसमें तो कोई भी दो राय नहीं हो सकतीं कि "साकत" शब्द का प्रयोग ग्रंथ साहिबजी में स्पष्टतः हरि विद्रोही या राम द्रोही के रूप में हुआ है, फिर वह व्यक्ति चाहे हिन्दू हो या मुसलमान या वह कोई अन्य मत पर विश्वास करने वाला हो। किसी भी स्थिति में "परब्रह्म" की सर्वव्यापी सत्ता में विश्वास नहीं रखने वाला व्यक्ति, हरि नाम या राम नाम का विरोध करने वाला व्यक्ति, उसको न मानने वाला व्यक्ति, ग्रंथ साहिबजी को स्वीकार नहीं है। ऐसा व्यक्ति ग्रंथ साहिबजी की निगाह में मात्र 'साकत' ही है वह गुरुओं की निगाह में आत्मघाती हत्यारा भाग्यहीन और झूठा है वह उनकी निगाह में

कूकर-सूकर आदि के समान हैं, निंदक है, वे उनकी निगाह में गुरु विहीन पागल है।

संक्षेप में हमारी यह मान्यता है कि ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ़ में वर्णित विषय और भाव, वाच्यार्थ, भावार्थ, तत्वार्थ और लक्ष्यार्थ इन सभी दृष्टियों से एक दूसरे के बिलकुल विपरीत हैं। यही नहीं वे सब परस्पर विरोधी भी हैं। इन दोनों ग्रंथों में तमाम ऐसे विषय और भाव हैं, जिनकी एक दूसरे के ग्रंथों में कोई कल्पना ही नहीं हैं। उदाहरण के लिये ग्रंथ साहिबजी के प्रबल विषय और भावों में 'गुरु' का जो स्थान है, जो प्रिया-प्रीतम भाव की प्रेमा भक्ति का स्थान है, उसकी कल्पना तक कुरान शरीफ़ नें नहीं है। उधर कुरान शरीफ़ में जो स्थान पैगम्बर हजरत मुहम्मद को दिया गया है, या जो महत्ता कयामत, काफ़िर, फरिश्ते आदि को दी गई है उसकी ग्रंथ साहिबजी में कल्पना भी नहीं है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं माननी चाहिए, वरन इसको सहज ही मानना चाहिये क्योंकि ग्रंथ साहिबजी और कुरान शरीफ़ द्वारा प्रतिपादित उपासनाओं के मार्ग और विधियां अपने उद्गम स्थल से ही विपरीत मार्ग पर जाने वाली है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार वेदों ने श्रेय और प्रेय, और 'विद्या' ओर अविद्या', 'परा' और 'अपरा' मार्गों को एक दूसरे से बिलकुल भिन्न और विपरीत रूप में दर्शाया है। यहा पर यह बतलाना आवश्यक है कि वेद वर्णित "प्रेय" "अविद्या "मार्ग" और 'अपरा' जो परमात्मा की प्राप्ति के विपरीत इह लोक और परलोक के भोग को ही प्रधानता देने वाले मार्ग है, भी इस्लाम से बिलकुल भिन्न है। इनमें वही अन्तर है जो ग्रंथ साहिबजी वर्णित "मनमुख" ओर "साकत" के मार्गो में है। साकत ओर ईमानवालों का मार्ग बिलकुल विपरीत मार्ग है जो अन्यों के प्रति घृणा, हिंसा शत्रुता पर आधारित है, और जो अपने लिये इह लोक और परलोक म देह पर आधारित भोगों तक ही सीमित है। इस्लाम का मार्ग स्वभावत ही गैर इस्लामवालों के प्रति घोर विरोध और शत्रुता का मार्ग है। यह मार्ग ग्रंथ साहिबजी द्वारा प्रतिपादित सभी मान्यताओं का विरोधी है।

यही नहीं, यदि ग्रंथ साहिबजी के प्रणेता गुरु नानक देव जी महाराज और इस्लाम के प्रणेता हजरत मुहम्मद साहब के जीवन गाथाओं का अवलोकन और विश्लेषण करें तो उन्हें भी हम विपरीत दिशाओं में जाने वाला पायेंगे। हदीसों और खलीफाओं के द्वारा दिये गये फतवों में उभरा इस्लाम का व्यावहारिक रूप, और सिक्ख गुरुओं की परम्परा में उतरा गुरु नानक जी का उपदेश बिलकुल भिन्न और विपरीत है। दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज द्वारा खालसा की स्थापना और खालसा के उद्देश्यों ने इस भिन्नता और विपरीतता को प्रत्यक्ष घोषणा के रूप में मुहरबन्द किया है।

परिशिष्ट

गुरु अमरदासजी का महाप्रयाण

59.2 ग्रंथ साहिबजी में आए विभिन्न विषयों की चर्चा ग्रंथ साहिबजी में वर्णित तीसरे गुरु अमरदास जी के महाप्रयाण की चर्चा के बिना अधूरी रह जायेगी। सिक्ख गुरुओं में इन्होंने ही सबसे लम्बी 95 वर्ष की आयु पाई थी। बहत्तर वर्ष की बड़ी आयु में गुरु अंगददेव जी महाराज ने इन्हें गुरु गद्दी पर आसीन किया था। अपनी मृत्यु का समय निकट आया देख उन्होंने गुरु गद्दी का उत्तराधिकारी अपने दो पुत्रों में से किसी को न बना कर अपने दामाद, सोढी वंशी, "भाई जेठा" को घोषित किया और उनका नाम "रामदास" रखा और अपने सामने ही रामदास जी को गुरु गद्दी पर विधिवत आसीन किया। साथ ही गुरु महाराज ने अपने परिवारवालों और शिष्यों को बुलाकर अपने मरणोपरांत किये जाने वाले संस्कारों और क्रियाओं के बारे में भी स्पष्ट निर्देश दिये। यह प्रसंग अपने में बड़ा ही मार्मिक और वर्तमान अवस्था में सारे समाज द्वारा अनुकरणीय होने के अतिरिक्त गुरु अमरदास जी की शास्त्र विधि में अपार श्रद्धा और उनकी अपार आध्यात्मिक शक्ति का भी द्योतक है। इस छोटे से मार्मिक और महत्वपूर्ण प्रसंग को हम ज्यों का त्यों दे रहे हैं :

"जगि दाता सोइ भगति बछलु तिहु लोइ जीउ ॥
गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोई जीउ ॥
अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे ॥
परसादि नानक गुरु अंगद परम पदवी पावहे ॥
जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुर भगति ते हरि पाइआ ॥1॥"

(923 सदु बाबा सुन्दर)

वह परमात्मा जगत की उत्पत्ति करता है, भक्त वत्सल है जो गुरु उपदेशानुसार उस परमात्मा में लीन रहते हैं वे किसी अन्य को नहीं जानते और एक नाम का ही ध्यान करते हैं। गुरु अमर दास जी ने गुरु नानक और गुरु अंगद देव जी की कृपा से परम पद को प्राप्त किया है। जब उनका संसार से महाप्रस्थान करने का बुलावा आया तो उन्होंने हरि नाम में लीन होकर इस जगत में ही, इस देह में ही, उस अटल, अमर, अतुलनीय पुरुषोत्तम हरि को प्राप्त कर लिया।

"हरि भाणा गुर भाइआ गुर जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥
सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥
पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो ॥
अति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो ॥
सतिगुरु की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ ॥
हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥2॥"

(923 सदु. बाबा सुन्दर)

59.3 गुरु अमर दास जी को महाप्रयाग का बुलावा भला लगा। उन्होंने हरि में ध्यान लगाकर उनसे प्रार्थना की कि वे अपने भक्त के सम्मान की रक्षा करें और उसे अन्त समय में अपना निरंजन नाम प्रदान करें। परमात्मा ने गुरु महाराज की प्रार्थना को सुना और उनका साधुवाद करते हुए उन्हें अपने साथ मिला लिया।

गुरु अमरदास जी अपने शिष्यों और परिवार को निकट बुलाकर कहते हैं :

"मेरे सिख सुणहु पुत भाइहो मेरे हरि भाणा मैं पासि जीउ ॥
हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभु करे सावासि जीउ ॥
भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावाए ॥
आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए ॥
तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥
धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ ॥3॥"

(923 सद्, बाबा सुन्दर)

हे मेरे शिष्यों, पुत्रों और भाइयों! मैं हरि के हुक्म से उनके पास जा रहा हूं। गुरु को हरि का हुक्म प्रिय लगा और हरि ने गुरु का साधुवाद किया! सच्चा सद्गुरु और हरि भक्त तो वही है जिसको हरि इच्छा प्रिय लगती हो। ऐसे भक्त के हृदय में अनहद नाद की आनन्दमयी वाणी झंकृत हो उठती है और स्वयं हरि उसे अपने गले लगा लेते हैं। अपने प्रियजनों को धीरज बंधाते हुए गुरु अमरदास जी कहते हैं कि हे मेरे पुत्रों, भाइयों और परिवार के सदस्यों तुम अपने मन में निश्चय करके देखो, परमात्मा का आदेश अमिट है, और अब मैं हरि के पास जा रहा हूं।

"सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ ॥
मत मै पिछै कोई रोवसी सो मैं मूलि न भाइआ ॥
मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावाए ॥
तुसी वीचारि देखहु पूत भाहि हरि सतिगुरु पैनावए ॥
सतिगुरु परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ ॥
सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ ॥4॥" (924 सद्,बाबा सुन्दर)

59.4 सद्गुरु अमरदास जी ने अपने सारे परिवार को अपने पास बुलवाकर बिठाया और कहा कि मेरे शरीर त्याग के बाद मेरे पीछे मुझे कोई भी न रोए। तुम सब मेरे मित्र समान हो। मित्र को तो मित्र की इज्जत प्रिय लगती है और उसकी मान-प्रतिष्ठा में प्रसन्नता का अनुभव करता है। तो हे मेरे पुत्रों! हे मेरे भाइयों! तुम सभी विचार करके देखो कि जब परमात्मा मुझे बुलाकर मान-प्रतिष्ठा प्रदान कर रहा है तो ऐसे अवसर पर तुम्हारा रोना उचित नहीं होगा। तत्पश्चात गुरु अमरदास जी ने अपने समक्ष ही गुरु रामदास जी को अपने पास बैठाकर गुरु गद्दी का टीका लगाया अर्थात उन्हें गुरु गद्दी प्रदान की। उस समय उन्होंने अपने सभी शिष्यों, भाइयों, पुत्रों आदि को गुरु रामदास जी के चरणों में लगा दिया।

"अते सतिगुर बोलिआ मैं पीछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥
केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराण जीउ

हरि कथा पढ़ीए हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रंगु गुर भावए ॥
पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए ॥
हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥
रामदास सोढी तिलकु दीआ गुरु सबदु सचु नीसाणु जीउ ॥5 ॥"

(924 सद्दु-बाबा सुन्दर)

तत्पश्चात गुरु अमरदास जी अपने शिष्यों, पुत्रों आदि से बोले मेरे इस लोक से प्रस्थान करने के बाद सब भगवत नाम का कीर्तन करना। और पंडित केशव गोपाल को बुलवाकर पुराणों से हरि कथा करवाना। पिंड दान देना तथा शास्त्रविधि से अन्य मृतक संस्कार जैसे दीप जलाने, भोजन की पत्तलों का दान आदि करना, और मेरे पार्थिव देह के फूल देव नदी गंगा में प्रवाहित कर देना। गुरु अमरदासजी ने ये निर्देश हरि इच्छानुसार ही दिये, और वे देह त्याग कर परम पुरुष श्री हरि के साथ अभेद हो गए। इस प्रकार गुरु अमरदास जी ने सोढी वंशी गुरु रामदास जी को गुरु गद्दी का तिलक देकर उनके हृदय में गुरु मन्त्र के रूप में परमात्मा का सच्चा नाम प्रकाशित कर दिया।

"सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुर सिखा मनि लई रजाइ जीउ ॥
मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाई जीउ ॥
सभ पवै पैरी सतिगुरु केरी जिथै गुरु आपु रखिआ ॥
कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरु आणि निवाइआ ॥
हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाई जीउ ॥
कहै सुंदरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरीपाइ जीउ ॥6 ॥ (924 सद्दु-बाबा सुन्दर)

जिस प्रकार सद्गुरु अमरदास जी ने निर्देश दिया था, शिष्यों ने यथावत उनकी आज्ञा का पालन किया अर्थात उनकी इच्छा को शिरोधार्य किया। सर्वप्रथम उनका पुत्र मोहरी उनके सामने खड़ा हुआ और गुरु देव ने उसे गुरु रामदास जी के चरणों में लगा दिया। इस प्रकार अन्य सभी गुरु रामदास जी के चरणों में लगे जिनमें स्वयं गुरु अमरदास जी ने अपनी ज्योति प्रकाशित कर दी थी। यदि उस समय कोई ईर्ष्यावश नहीं झुका सद्गुरु ने बाद में उसे गुरु रामदास जी के चरणों में झुका दिया। गुरु अमरदास जी ने हरि इच्छानुसार ही गुरु रामदास जी को यह प्रतिष्ठा प्रदान की। क्योंकि परमात्म-लेख प्रारम्भ से ही लिखा हुआ था। बाबा सुन्दर कहते हैं कि हे संतों सुनो, इस प्रकार सारा जगत ही गुरु रामदास जी के चरणों की शरण में आ गया।

59.5 आध्यात्म क्षेत्र में गुरु शिष्य की परम्परा का किस प्रकार निर्वाह होता हैं, ग्रंथ साहिबजी में वर्णित गुरु रामदास जी का गुरु गद्दी पर तिलकाभिषेक इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस तिलक के साथ ही यानी गुरु रामदास जी के साथ ही गुरु नानक देवी जी गुरु गद्दी सोढी वंश में चली गई। और यहीं से सिक्ख इतिहास में गुरुओं के बलिदान की अनुपम गाथा शुरू हुई जो गुरु अर्जुनदेव जी के बलिदान से शुरू होकर, गुरु हरगोविंद सिंह जी ओर गुरु तेगबहादुर जी से होती हुई गुरु गोविंद सिंह जी महाराज के साथ समाप्त हुई। स्वयं गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने सामने ही गुरु गद्दी को ग्रंथ साहिबजी के अधीन कर अपने पश्चात सिक्ख परम्परा में देहधारी गुरु की परिपाटी भी समाप्त कर दी।

पाठकों को यहां "दसम ग्रंथ" के उस प्रसंग का स्मरण दिलाना प्रासंगिक होगा जहां गुरु गोविन्द सिंह ने अपना वंश परिचय देते समय गुरु नानक देव जी को भगवान राम के बडे पुत्र कुश का वंशज बतलाया है जो आगे चलकर 'बेदी' कहलाये और अपने को लव के वंश सोढी कुल का बतलाया। यहां गुरु गोविन्द सिंह द्वारा वर्णित वह प्रसंग भी स्मरण करना उचित होगा जब त्रेता युग में सोटियों से अपना पैत्रक राज ग्रहण करते हुए बेदियों के कुलाधिपति ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा था कि जब हम कलियुग में नानक नाम से आयेंगे तो चौथी गुरु गद्दी तुम्हारे कुल के अधीन कर देंगे। सौढी वंशी गुरु रामदास जी के गुरु गद्दी पर आसीन होने पर कुशवंशी वेदियों के त्रेता युग में अर्थात लगभग 11 लाख वर्ष पूर्व दिये गये वरदान की पूर्ति हुई। और साथ ही गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज द्वारा स्थापित "खालसा" के जन्म के साथ इस भारत राष्ट्र के निर्माण के अध्याय में एक नई सामर्थ्यशाली कड़ी जुड़ गई।

गुरु अमरदास जी के महाप्रयाण के इस मार्मिक प्रसंग से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि सिक्ख गुरुओं ने मृत संस्कार में शास्त्रीय परम्परा का श्रद्धा से निर्वाह किया। और ग्रंथ साहिबजी में निहित होने के कारण यह प्रसंग समस्त सिक्ख समाज के लिए सदैव ही प्रासंगिक रहेगा। इतिहास साक्षी है कि महाराजा रणजीत सिंह के समस्त अन्तिम संस्कार शास्त्रीय विधि से ही हुए थे और उनके फूल विधिपूर्वक हरिद्वार में गंगा में प्रवाहित किये गये थे।

59.6 ग्रंथ साहिबजी का यह महाप्रयाण सम्बन्धी प्रसंग कुरान शरीफ़ की मान्यताओं से बिल्कुल भिन्न और विपरीत है। यहां गुरु महाराज अपने ज्ञान और भक्ति के सम्बल से परमात्मा के साथ सहर्ष एकाकार हो रहे हैं, सदा के लिये जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो रहे हे। मृत्यु मानो यहां उनके लिये परमात्मा मिलन का माध्यम सी बन गई हैं, प्रारब्ध से मिला शरीर का यह आवरण सदा के लिये इस प्रकार अलग हो रहा है जैसे सर्प की केंचुली उनसे सदा के लिये अलग हो जाती है। यहां कुरान शरीफ की मान्यतानुसार ईमानवालों की तरह उनको कयामत तक कब्र में नहीं पड़ा रहना है, और न ही कयामत के समय अपने इस पंचभूत से निर्मित शरीर के साथ पुनः कब्र से उठना है।

यहां तो गुरु महाराज और उनके शिष्य मानो यही अन्तिम समय की वैदिक प्रार्थना कर रहे हैं जिसमें भक्त भगवान से यह निवेदन कर रहा है : "हे भगवान! अब ये प्राण और इन्द्रियां अविनाशी समष्टि वायु तत्व में प्रविष्ट हो जायं, वह स्थूल शरीर अग्नि में जलकर भस्मरूप हो जाय, हे सच्चिदानन्द भगवान आप मुझे भक्त को स्मरण करें, मेरे द्वारा किये हुए कर्मों का स्मरण करें।"

वायुरनिल ममृत मथेंद भस्यान्ताशरीरम्
ॐ क्रतो स्मर कृत स्मर कृत स्मर ॥17॥ (ईशावास्योपनिषद-17)

यहां गुरु महाराज की साक्षात परब्रह्म परमात्मा से मिलन की उत्कृष्ट कामना ऊपर दिये गये शब्दों में छलकी पड़ रही है। और वहां कुरान शरीफ़ में रूह की अल्लाह से मिलन की या अल्लाह के साथ एकाकार होने की कल्पना ही नहीं है।

❑❑❑